कुर्आन का पैग़ाम

तफ़्सीर फ़ारूक़ी

कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या

भाग-6

सन्देश

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद

अबुल हसन अली हसनी नदवी (अली मियाँ रह०)

अनुवाद एवं व्याख्या

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न,

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ–20 (यू0पी0) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)
अनुवाद और व्याख्या-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
कम्पोज़ीटर-	इरफ़ान अह़मद
संस्करण-	तीसरा संस्करण
पुस्तक संख्या-	3000
वर्ष-	2019
हदिया (मूल्य)-	500
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न

Name	**Tafseer Farooqui (Part-6)**
Writer	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi** (Acharya)
S. No.	**3000**
Publisher:	**Jamiat Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India-20**
Website.	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियात, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522–2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522–2741539)
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुह़ल्ला, जबलपुर, मध्य प्रदेश (9424708020)
5. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर (9935044343)
6. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ (9198621671)

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

इस (तफ़्सीर फ़ारुक़ी भाग-6) में पारा नं० 22 सूरः अल् फ़ातिर आयत नं (12) से पारा नं० 27 सूरः हृदीद आयत नं० (19) तक की पूरी तफ़्सीर है।

पवित्र क़ुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

क़ुर्आन के व्याख्या की शुरुआ़त पेज नं० 23 से 544 तक है। उस से पहले विषय सूची और उ़लमा के संक्षिप्त लेख और प्राक्कथन है।

इस तफ़्सीर के भाग-एक में विश्व प्रसिद्ध उ़लमा के संक्षिप्त सन्देश जैसे-हृज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हृसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहृम्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुहृम्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहृम्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़्मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहृमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहृमान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अहृमद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साहृब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह हृसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ मौजूद है और प्राक्कथन में क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। इन सब का मुकम्मल लेख भाग-एक के अन्त में दिया गया।

दो शब्द

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

यह अनुवाद एवं व्याख्या इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं दाअ़ी-ए-इस्लाम मुफ़स्सिरे क़ुर्आन 'ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो हिन्दी और अ़रबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इनकी दीनी शिक्षा क़ारी, आ़लिम, फ़ाज़िल व मुफ़्ती की है और संस्कृत से आचार्य हैं। जिनके क़लम से लगभग 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें उर्दू भाषा में लफ़्ज़ी (शाब्दिक) तर्जुमः और हिन्दी में तीस्वें पारः की तफ़्सीर और यह सात भागों में 'तफ़्सीर फ़ारूक़ी' क़ाबिले ज़िक्र है, जिसे हर तब्क़े के लोगों ने इस की आसान भाषा की वजह से पसन्द किया, जो घरों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है। जिसके कई एडीशन प्रकाशित करने का शर्फ़ ह़ासिल हो चुका है। इस के तर्जुमः व तफ़्सीर की मुख्य विशेषता इस तरह़ हैं:-

तर्जुमः की विशेषता-

इस के तजुर्मे में 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' का वह मक़्बूल तर्जुमः है जिसके 2016 तक बीस एडीशन से ज़्यादा छप चुके हैं, इसकी भाषा बहुत सरल है जिसको मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, कम पढ़ा हो या ज़्यादा हर वर्ग आसानी से समझ लेता है।

तफ़्सीर की विशेषता-

(1) यह तफ़्सीर मुस्लिम हो या व ग़ैर दोनों को सामने रखते हुए आ़म बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें।

(2) तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (अथैन्टिक) उ़लमा की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।

(3) इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर अलग-अलग आयतों की तफ़्सीर बयान की गई है।

(4) इस में पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर, जिसमें सबसे पहले उस आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उस आयत से सम्बन्धित ह़दीस, और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम, और साइंसी तह़क़ीक़ के साथ ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब और उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

नोट- इस तरह यह एक मुफीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों की रहनुमाई के लिए पेश किया जाता है जिस पर चन्द मशहूर उ़ल्मा जैसे- ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़्मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्‌दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश संक्षेप में मौजूद हैं।

02-02-2019

प्रकाशक

विषय सूची

विषय — पृष्ठ सं०

मुफ़क्किरे इस्लाम, 'हज़रत मौलाना सय्यद अबुल् हसन अ़ली नदवी' (रह०) के क़लम से 11

प्रख़्यात विश्व विद्वानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख जैसे 13

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़्मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अतीक़ अहमद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साहब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुलू आ़ली।

प्राक्कथन 19

विषय — पृष्ठ सं०

भाग-35
सूर-ए-फ़ातिर
आयत नं० 12 से पूरी सूरः

अनुवाद *(आयत नं० 12 से 31 तक)* 24
व्याख्या *(आयत नं० 12 से 31 तक)* 25

अनुवाद *(आयत नं० 32 से 45 तक)* 30
व्याख्या *(आयत नं० 32 से 45 तक)* 31

भाग-36
सूर-ए-यासीन

तफ़्सीर सूरः यासीन 37

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 21 तक)* 38
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 21 तक)* 39

अनुवाद *(आयत नं० 22 से 47 तक)* 44
व्याख्या *(आयत नं० 22 से 47 तक)* 45

अनुवाद *(आयत नं० 48 से 70 तक)* 51
व्याख्या *(आयत नं० 48 से 70 तक)* 52

अनुवाद *(आयत नं० 71 से 83 तक)* 56
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 83 तक)* 56

विषय — पृष्ठ सं०

भाग-37
सूर-ए-साफ़्फ़ात

तफ़्सीर सूरः साफ़्फ़ात 60

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 32 तक)* 61
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 32 तक)* 62

अनुवाद *(आयत नं० 33 से 70 तक)* 67
व्याख्या *(आयत नं० 33 से 70 तक)* 68

अनुवाद *(आयत नं० 71 से 107 तक)* 71
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 107 तक)* 72

अनुवाद *(आयत नं० 108 से 146 तक)* 76
व्याख्या *(आयत नं० 108 से 146 तक)* 77

अनुवाद *(आयत नं० 147 से 182 तक)* 82
व्याख्या *(आयत नं० 147 से 182 तक)* 83

भाग-38
सूर-ए-साद

तफ़्सीर सूरः साद 89

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 25 तक)* 90
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 25 तक)* 91

विषय	पृष्ठ सं०
खुशख़बरी	94
हज़रत दाऊद (अ़लै०) का फ़ैसला	95
दाऊद के क़िस्से में हक़ीक़त	96
हज़रत दाऊद (अ़लै०) का इस्तिग़फार	97
साझीदारों का आ़म तरीक़ा	98
हज़रत दाऊद (अ़लै०) की एक दुआ़	98
सूरः साद का सज्दः	99
अनुवाद *(आयत नं० 26 से 44 तक)*	100
व्याख्या *(आयत नं० 26 से 44 तक)*	101
हज़रत दाऊद (अ़लै०) की ख़िलाफ़त	101
इच्छापूर्ति की मज़म्मत	101
हीले बहाने न करना	102
इच्छाओं की पैरवी	102
सख़्त अ़ज़ाब के हक़्दार	103
मुफ़्सिदीन, मोमिनीन और फ़ुज्जार	103
हज़रत सुलेमान (अ़लै०) का ज़िक्र	104
घोड़ों का पेश किया जाना	105
शैतानों को काम में लगाना	105
इन्शाअल्लाह की फ़ज़ीलत	106
हवा पर क़ाबू	106
हज़रत अय्यूब (अ़लै०) की बीमारी	107
हज़रत अय्यूब (अ़लै०) का ख़ास ज़िक्र	108
दुआ़ की क़ुबूलियत और बरकात	110
अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला	111
अनुवाद *(आयत नं० 45 से 70 तक)*	113
व्याख्या *(आयत नं० 45 से 70 तक)*	114
हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक और हज़रत याक़ूब (अ़लै०) का ज़िक्र	114
हज़रत इस्माईल, अल्यसअ़ और ज़ुल्किफ़्ल अ़लैहिमुस्सलाम	115
मुत्तक़ी हज़रात की नेअ़मतों का ज़िक्र	115
दोज़ख़ी दोज़ख़ में एक दूसरे से बेज़ार होंगे	116
अहले दोज़ख़ को हैरत	117
अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार है	118
अनुवाद *(आयत नं० 71 से 88 तक)*	120
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 88 तक)*	120
इब्लीस की बनी आदम को वरग़लाने की क़सम	121
इब्लीस और उसके मानने वालों के लिए दोज़ख़	123
हक़ की दअ़वत पर किसी बदले का मुतालबा नहीं	124

भाग-39
सूर-ए-ज़ुमर

विषय	पृष्ठ सं०
तफ़्सीर सूरः ज़ुमर	127
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 9 तक)*	128
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 9 तक)*	129
अनुवाद *(आयत नं० 10 से 22 तक)*	133
व्याख्या *(आयत नं० 10 से 22 तक)*	134
अनुवाद *(आयत नं० 23 से 31 तक)*	138
व्याख्या *(आयत नं० 23 से 31 तक)*	138
अनुवाद *(आयत नं० 32 से 45 तक)*	142
व्याख्या *(आयत नं० 32 से 45 तक)*	143
अनुवाद *(आयत नं० 46 से 59 तक)*	147
व्याख्या *(आयत नं० 46 से 59 तक)*	148
अनुवाद *(आयत नं० 60 से 75 तक)*	153
व्याख्या *(आयत नं० 60 से 75 तक)*	154

भाग-40
सूर-ए-मोमिन

विषय	पृष्ठ सं०
तफ़्सीर सूरः मोमिन	160
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 12 तक)*	161
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 12 तक)*	162
अनुवाद *(आयत नं० 13 से 27 तक)*	166
व्याख्या *(आयत नं० 13 से 27 तक)*	167
अनुवाद *(आयत नं० 28 से 41 तक)*	171
व्याख्या *(आयत नं० 28 से 41 तक)*	172
अनुवाद *(आयत नं० 42 से 56 तक)*	177
व्याख्या *(आयत नं० 42 से 56 तक)*	178

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 57 से 74 तक)* 182
व्याख्या *(आयत नं० 57 से 74 तक)* 183

अनुवाद *(आयत नं० 75 से 85 तक)* 188
व्याख्या *(आयत नं० 75 से 85 तक)* 189

भाग-41
सूर-ए-ह़ामीम सज्दः

तफ़्सीर सूरः ह़ामीम सज्दः 193

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 18 तक)* 194
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 18 तक)* 195

क़ुर्आन अ़रबी में है 195
आप फ़रमा दीजिए मैं तुम्हारे ही जैसा बशर हूँ ... 196
दो दिन में ज़मीन व आसमान 198
क़ुरैश का इन्कार व हठधर्मी 199
ह़क़ से मुँह मोड़ने वालों की बर्बादी 201

अनुवाद *(आयत नं० 19 से 32 तक)* 204
व्याख्या *(आयत नं० 19 से 32 तक)* 205

अनुवाद *(आयत नं० 33 से 46 तक)* 209
व्याख्या *(आयत नं० 33 से 46 तक)* 210

अनुवाद *(आयत नं० 47 से 54 तक)* 215
व्याख्या *(आयत नं० 47 से 54 तक)* 215

भाग-42
सूर-ए-शूरा

तफ़्सीर सूरः शूरा 220

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 11 तक)* 221
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 11 तक)* 222

अनुवाद *(आयत नं० 12 से 19 तक)* 225
व्याख्या *(आयत नं० 12 से 19 तक)* 226

अनुवाद *(आयत नं० 20 से 29 तक)* 230
व्याख्या *(आयत नं० 20 से 29 तक)* 231

अनुवाद *(आयत नं० 30 से 43 तक)* 235
व्याख्या *(आयत नं० 30 से 43 तक)* 236

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 44 से 53 तक)* 239
व्याख्या *(आयत नं० 44 से 53 तक)* 240

भाग-43
सूर-ए-ज़ुख़्रुफ़

तफ़्सीर सूरः ज़ुख़्रुफ़ 245

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 19 तक)* 246
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 19 तक)* 247

अनुवाद *(आयत नं० 20 से 35 तक)* 250
व्याख्या *(आयत नं० 20 से 35 तक)* 251

अनुवाद *(आयत नं० 36 से 56 तक)* 255
व्याख्या *(आयत नं० 36 से 56 तक)* 256

अनुवाद *(आयत नं० 57 से 73 तक)* 260
व्याख्या *(आयत नं० 57 से 73 तक)* 261

अनुवाद *(आयत नं० 74 से 89 तक)* 265
व्याख्या *(आयत नं० 74 से 89 तक)* 266

भाग-44
सूर-ए-दुख़ान

तफ़्सीर सूरः दुख़ान 270

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 16 तक)* 270
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 16 तक)* 271

अनुवाद *(आयत नं० 17 से 42 तक)* 275
व्याख्या *(आयत नं० 17 से 42 तक)* 276

अनुवाद *(आयत नं० 43 से 59 तक)* 280
व्याख्या *(आयत नं० 43 से 59 तक)* 280

भाग-45
सूर-ए-जासिया

तफ़्सीर सूरः जासिया 285

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 15 तक)* 286
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 15 तक)* 287
अनुवाद *(आयत नं० 16 से 26 तक)* 291
व्याख्या *(आयत नं० 16 से 26 तक)* 292
अनुवाद *(आयत नं० 27 से 37 तक)* 296
व्याख्या *(आयत नं० 27 से 37 तक)* 296

भाग-46
सूर-ए-अह़क़ाफ़

तफ़्सीर सूरतुल् अह़क़ाफ़ 300
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 10 तक)* 300
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 10 तक)* 301
अनुवाद *(आयत नं० 11 से 20 तक)* 305
व्याख्या *(आयत नं० 11 से 20 तक)* 306
वालिदैन के बारे में वसीयत 307
दूध पिलाने का ज़माना 308
काफ़िरों के लिए ज़िल्लत 311
अनुवाद *(आयत नं० 21 से 35 तक)* 313
व्याख्या *(आयत नं० 21 से 35 तक)* 314
क़ौमे आ़द का इन्कार, फिर हलाकत 314
अ़ज़ाब की सूरत 315
जिन्नात को रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत 318
लैलतुल् जिन्न 318
जिन्नात का खाना 318
रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली 320

भाग-47
सूर-ए-मुह़म्मद

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 14 तक)* 323
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 14 तक)* 324
अल्लाह तआ़ला की राह से रोकने वालों की बर्बादी 324
जिहाद व क़िताल की तर्ग़ीब 325

विषय पृष्ठ सं०

बन्दियों के साथ मामला 326
दुनिया में चल फिर कर नसीह़त 328
अल्लाह तआ़ला अहले ईमान का मौला है 328
अहले ईमान का इनआ़म और कुफ़्फ़ार की बदहाली 328
अहले मक्का को तम्बीह 329
अहले ईमान और अहले कुफ़्र बराबर नहीं 329
अनुवाद *(आयत नं० 15 से 28 तक)* 330
व्याख्या *(आयत नं० 15 से 28 तक)* 331
जन्नतियों और जहन्निमयों के पीने की चीज़ें 331
जन्नतुल फ़िरदौस 332
दोज़ख़ का खाना 332
मुनाफ़िक़ों की बाज़ ह़रकतें 333
तौह़ीद पर जमे रहने का फ़ायदा 334
मुनाफ़िक़ीन की बद्ह़ाली 335
तदब्बुर क़ुर्आन की अहमियत 337
मौत के वक़्त काफ़िर की बद्ह़ाली 338
अनुवाद *(आयत नं० 29 से 38 तक)* 340
व्याख्या *(आयत नं० 29 से 38 तक)* 341
मुनाफ़िक़ीन के दिलों का मर्ज़ 341
काफ़िर के आ़माल बर्बाद कर दिये जाएँगें 342
नफ़्ली नमाज़ या रोज़ः फ़ासिद होने के बाद 343
कमज़ोर न बनो 343
बुलन्द रहोगे अगर मोमिन हो 344
दुनियावी ज़िन्दगी 344
दीन से फिरने पर दूसरी क़ौम 346
तब्दील होने वाली क़ौम 346
ग़ैर अ़रब की दीनी ख़िद्मत 346

भाग-48
सूर-ए-फ़तह़

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 14 तक)* 349
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 14 तक)* 350
फ़तेह़ मुबीन का वादा 350
सुलह़ हुदैबिया का वाक़िआ़ 351
हुदैबिया पहुँचना 352

विषय	पृष्ठ सं०
आप (सल्ल०) के मोअ़जिज़ात	352
सहा़बा की मुह़ब्बत	353
बैअ़त रिज़वान का वाक़िआ़	354
सुलह हुदैबिया की शर्तें	354
ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) का सवाल व जवाब	356
ह़लक़ (सर मुँडाना) और ज़ब्ह (क़ुर्बानी) करना	357
ह़ज़रत अबू बसीर और उनके साथी	357
अहले ईमान और अहले शिर्क	359
शाहिद, मुबश्शिर और नज़ीर	360
रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैअ़त	361
देहातियों की बद्‌गुमानी	362
अनुवाद *(आयत नं० 15 से 23 तक)*	365
व्याख्या *(आयत नं० 15 से 23 तक)*	366
हुदैबिया न जाने वालों की बद्‌ह़ाली	366
फ़रमाँबरदारों और नाफ़रमानों का ठिकाना	368
बैअ़त-ए-रिज़वान वालों की फ़ज़ीलत	369
अनुवाद *(आयत नं० 24 से 29 तक)*	373
व्याख्या *(आयत नं० 24 से 29 तक)*	374
एक दूसरे पर ह़मला	374
मस्जिदे ह़राम से रोकना	375
सुलह़	377
सहा़बा-ए-किराम (रज़ि०) की फ़ज़ीलत	379

भाग-49
सूर-ए-हुजू़रात

सूरः हुजू़रात का संक्षिप्त परिचय	384
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 10 तक)*	384
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 10 तक)*	385
रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अ़ज़्मत	385
फ़ासिक़ की ख़बर	388
दिलों में इत्मिनान	389
मोमिन आपस में भाई-भाई हैं	390
अनुवाद *(आयत नं० 11 से 18 तक)*	393
व्याख्या *(आयत नं० 11 से 18 तक)*	394
ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा	394
दूसरी नसीह़त	395
किसी को बुरे नाम से न बुलाए	396
तीसरी नसीह़त	396
चौथी नसीह़त	397
बद्‌गुमानी से बचना	397
पाँचवीं नसीह़त	397
किसी की टोह में न पड़े	398
छठी नसीह़त	398
सातवीं नसीह़त	399
आठवीं नसीह़त	402
नवीं नसीह़त	402
दस्वीं नसीह़त	403
केवल ज़बानी इस्लाम का दावा	404

भाग-50
सूर-ए-क़ाफ़

सूरः क़ाफ़ का संक्षिप्त परिचय	409
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 19 तक)*	410
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 19 तक)*	411
अनुवाद *(आयत नं० 20 से 45 तक)*	416
व्याख्या *(आयत नं० 20 से 45 तक)*	417

भाग-51
सूर-ए-ज़ारियात

सूरः ज़ारियात का संक्षिप्त परिचय	425
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 30 तक)*	425
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 30 तक)*	426
अनुवाद *(आयत नं० 31 से 60 तक)*	430
व्याख्या *(आयत नं० 31 से 60 तक)*	431

विषय पृष्ठ सं०

भाग-52
सूर-ए-तूर

सूरः तूर का संक्षिप्त परिचय 436
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 28 तक)* 436
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 28 तक)* 437
अनुवाद *(आयत नं० 29 से 49 तक)* 442
व्याख्या *(आयत नं० 29 से 49 तक)* 443

भाग-53
सूर-ए-नज्म

सूरः नज्म का संक्षिप्त परिचय 450
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 32 तक)* 451
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 32 तक)* 452
अनुवाद *(आयत नं० 33 से 62 तक)* 461
व्याख्या *(आयत नं० 33 से 62 तक)* 462

भाग-54
सूर-ए-क़मर

सूरः क़मर का संक्षिप्त परिचय 467
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 22 तक)* 467
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 22 तक)* 468
अनुवाद *(आयत नं० 23 से 55 तक)* 473
व्याख्या *(आयत नं० 23 से 55 तक)* 474

भाग-55
सूर-ए-रह़मान

सूरः रह़मान का संक्षिप्त परिचय 481
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 34 तक)* 482
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 34 तक)* 483

विषय पृष्ठ सं०

इन्सान को बयान करना सिखाया 483
फ़ज़ाइले क़ुर्आन 484
बयान करने की नेअ़मत 485
चाँद और सूरज एक ह़िसाब से चलते हैं 485
नज्म और दरख़्त सज्दः करते हैं 485
आसमान की बुलन्दी 485
इन्साफ़ के साथ वज़न करने का हुक्म 486
इन्सान को मिट्टी से और जिन्नात को आग से 487
जिन्नात की पैदाइश 487
उसी का हुक्म चलता है 487
दो मश्रिक़ व दो मग़्रिब 488
ज़मीन पर जो कुछ है सब फ़ना होने वाला है 489
अनुवाद *(आयत नं० 35 से 78 तक)* 491
व्याख्या *(आयत नं० 35 से 78 तक)* 492
क़ियामत के दिन मुजरिमों की ख़ास पहचान 492
अहले तक़्वा की दो जन्नतें 495
परहेज़गारों के बिस्तर 496
दोनों जन्नतों के फल क़रीब होंगे 497
अहले जन्नत की बीवियाँ 497
एह़सान का बदला एह़सान 498
दूसरे दर्जे की जन्नतों का ज़िक्र 499
शब्द मुद्‌हाम्मतान की तह़क़ीक़ 499
ख़ूब जोश मारने वाले दो चश्मे 499
जन्नती बीवियों का ज़िक्र 500
ज़ीनत 501

भाग-56
सूर-ए-वाक़िअ़ः

सूरः वाक़िअ़ः का संक्षिप्त परिचय 506
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 40 तक)* 507
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 40 तक)* 508
क़ियामत के दिन के ह़ालात 508
क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होने वालों की तीन क़िस्में 509
साबिक़ीन अव्वलीन 510

विषय पृष्ठ सं०

साबिक़ीन अव्वलीन के लिए सबसे बड़ा इनूआ़म 510
साबिक़ीन अव्वलीन की नेअ़मतें 511
नाग़वार कलिमात न सुनेंगे 512
अस्हाबुल् यमीन की नेअ़मतें 512
बूढ़ी मोमिनात जन्नत में जवान बना दी जाएँगी 514
एक बूढ़ी सहाबिया औ़रत का क़िस्सा 514
अनुवाद *(आयत नं० 41 से 74 तक)* 516
व्याख्या *(आयत नं० 41 से 74 तक)* 517
अस्हाबुश्शिमाल का अ़ज़ाब 517
दुनिया में काफ़िरों की ऐ़श परस्ती 517
आदम की पैदाइश 519
खेती उगाने की नेअ़मत 521
बारिश बरसाने की नेअ़मत 521
आग भी नेअ़मत है 521
मुसाफ़िर के लिए नेअ़मत 522
अनुवाद *(आयत नं० 75 से 96 तक)* 523
व्याख्या *(आयत नं० 75 से 96 तक)* 523
क़ुर्आन रब्बुल् आ़लमीन की तरफ़ से है 523
क़ुर्आन मजीद को पढ़ने और छूने का तरीक़ा 526
मौत के वक़्त रुह़ को रोकना 527
मुक़र्रबीन और सालिह़ीन का इनूआ़म 528
झुठलाने वालों का अ़ज़ाब 528

भाग-57
सूर-ए-ह़दीद

सूरः ह़दीद का संक्षिप्त परिचय 531
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 11 तक)* 532
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 11 तक)* 533
अनुवाद *(आयत नं० 12 से 19 तक)* 539
व्याख्या *(आयत नं० 12 से 19 तक)* 540

सन्देश

विश्व इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा प्रसिद्ध श्रेष्ठ विचारक (मुफ़क्किरे इस्लाम) हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) के शुभ क़लम से-

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन, मुहम्मदिन व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन

मुसलमानों के ज़िन्दगी की तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूकून है जिसे दिन में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है। अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअ़रीफ़ और बेशुमार नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ को ज़िन्दगी और रिज़्क़ देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रहम करने वाला है। उसी ने तमाम मख़्लूक़ को अपनी क़ुदरत से पैदा किया और उसी का हुक्म सब पर जारी होता है।

इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुहताज है,वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं,वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह सूरः फ़ातिहा को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे क़ुर्आन मजीद के पैग़ाम की रुह और ख़ुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सानी तब्क़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर गिरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और ख़ुशख़बरी है उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है, हर तरफ़ से तक्लीफ़ों और आ़ज़्माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल, कुव्वत, मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। महबूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती। ऐसा कमज़ोर व मुहताज इन्सान सूरः फ़ातिहा पढ़ कर अपने दिली एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद माँगता है जो तमाम मख़्लूक़ का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का हक़्दार है, वही सीधी राह दिखाता है।

जहाँ तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मर्क़ज़ों के लिए और मदारिस और फ़ायदे उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअ़लीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए बहुत सी किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था 'माला बुद्दमिन्हु' जैसी किताबें लिखी गईं फिर 'तअ़लीमुल् इस्लाम' के नाम से

कई मुस्तनद उ़ल्मा ने बहुत सी कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे ह़ल्क़ों में रायज और मक़्बूल हैं, और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअ़दाद के लोगों ने फ़ायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीक़ा सिखाया, और मुस्लिम दाअ़ीयाने इस्लाम की कोशिश और ख़ुद फ़ित्ऱते सलीम के तक़ाज़ा और हिदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत सी जगह हज़ारों की तअ़दाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा व अख़्तियार और अपने क़द्रो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अ़ज़ीज़ुल क़द्र 'मोलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' ने अन्जाम दिया और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़्हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तक़ाज़ा पूरा किया। इससे पहले बहुत से किताबचे इनके क़लम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल हुई।

इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बकस्रत तैयार की जाएँ, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब,अक़ायद,तहज़ीब व तारीख़ से वाक़िफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियाँ दूर हों और प्रेम व मुह़ब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा हो।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले क़ुर्आन मजीद का तआ़र्रुफ़ इख़्तिसार से कराया है और बताया है कि क़ुर्आन ही एक ऐसी मह़फ़ूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन की ह़िफ़ाज़त का ख़ुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दगी से उसका तअ़ल्लुक़, फिर सूरः के तआ़रुफ़ के साथ उसके मफ़्हूम और उसकी तश्रीह़ की है, उम्मीद है कि यह मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अ़ज़ीज़ेग्रामी की इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए।

ابوالحسن علی ندوی

अबुल ह़सन अ़ली नदवी

18 जमादिल् अव्वल **1419** हि०

नोटः- ल्ह़म्दुलिल्लाह क़ुर्आन मजीद के काम को मैंने ह़ज़रत मौलाना के मश्वरह से **1996** ई० में ही शुरु कर दिया था और आप की ज़िन्दग़ी में सूरः फ़ातिह़ा और तीस्वें पारे की तफ़्सीर छप चुकी थी। ऊपर की तह़रीर ह़ज़रत मौलाना ने उसी के मुक़द्दमे में यह दुआ़इया कलिमात तह़रीर फ़रमाये थे, जिसे शुरु में पेश कर दिया गया है और बाक़ी उ़लमा की तहरीरें आख़ीर में शामिल की गई हैं।

प्रख़्यात विश्व विद्धानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और दुरुद व सलाम की बारिश हो मोह़सिने आ़ज़म सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर, जिन्होंने क़ुर्आन मजीद की तअ़लीम दी और अल्लाह की रह़मतें नाज़िल हों तमाम सह़ाब-ए-किराम व आज तक के रावियों और उम्मत के उ़ल्मा-ए-किराम पर जिन्होंने क़ुर्आन करीम की तअ़लीम को अगली नस्ल तक मुन्तक़िल किया।

अल्लाह तआ़ला की मुझ पर बेशुमार नेअ़मतें हैं जिन में सब से बड़ी नेअ़मत यह है कि उस ने क़ुर्आन मजीद के समझने, सीखने, पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

अल्ह़म्दु लिल्लाह "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी" (रह़०) के मशवरे से मैंने 1996 ई० में ही क़ुर्आन मजीद का काम शुरु कर दिया था और लगभग 18 साल से इस काम में मुसलसल मश्गूल हूँ।

इस में सबसे पहले सूरः फ़ातिह़ा की तफ़्सीर प्रकाशित की गई, फिर तीस्वें पारे के अलग-अलग सूरतों की तफ़्सीर, फिर तीस्वें पारे की मुकम्मल तफ़्सीर, फिर पूरे क़ुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद "क़ुर्आन का पैग़ाम" नाम से प्रकाशित हुआ, उसके बाद जैसे-जैसे तफ़्सीर का काम होता रहा, एक-एक भाग "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा, जिस पर विश्व प्रसिद्ध क़ुर्आनी उलूम के माहिरीन से मुफ़ीद मश्वरे लिये जाते रहे और नाचीज़ की दरख़्वास्त पर वह अपने सन्देश से ह़िम्मत अफ़्ज़ाई भी फ़रमाते रहे।

अब जबकि अल्हम्दु लिल्लाह किसी ह़द तक तफ़्सीर का काम पाँच भागों में आने वाला है, इसलिए हम अपने असातिज़ा व मुह़सिनों के पैग़ामात को भाग पाँच में मुकम्मल तौर से, जो अलग-अलग भागों पर अलग-अलग तारीख़ों में लिखे गये थे, उसे भी शामिल कर रहे हैं, जिस से मुतालअ़ करने वालों को रहनुमाई भी होगी और हमारे सभी मुह़सिनों को उसका अ़ज्र भी मिलेगा।

चूंकि पैग़ामात की सूची लम्बी है इसलिए शुरु में केवल "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अली ह़सनी नदवी" (रह़०) के सन्देश को पूरा शामिल करने के बाद हर एक के सन्देश से कुछ पंक्ति दर्ज की गई है। उस के बाद सभी बुज़ुर्गों के सन्देश आख़ीर में मुकम्मल तौर से दिये गये हैं जिस से मुतालअ़ करने वाले मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

यहाँ केवल नाम और उनके सन्देश की एक पंक्ति दर्ज की जाती है, जिससे इस की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसे-

(1) इस्लामी जगत के प्रख़्यात विद्वान एवं श्रेष्ठ विचारक ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी मद्‌दज़िल्लहुलूआ़ली के क़लम से-

'नाज़िम,' दारुलू उ़लूम, नदवतुल उ़लूमा, लखनऊ, व 'अध्यक्ष,' मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (इण्डिया)

"हमारे अज़ीज़ 'मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो एक फ़ाज़िल शख़्स और अ़रबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक़िफ़यत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर क़ुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेह़नत व क़ाबिलियत से तैयार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे व तफ़्सीर से सह़ी फ़ायदा उठाएँगे।" मुसलमान ह़ज़रात तो अ़मल करने के लिए और

उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और क़ुर्आन की सही ह़क़ीक़त और तालीमात से वाक़्फ़ियत ह़ासिल करने के लिए। मेरी दुआ है कि यह तफ़्सीर मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

(2) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी मद्दज़िल्लहुलुआ़ली के क़लम से-

मुहतमिम, दारुल उलूम देवबन्द

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी के हिन्दी तर्जुमे पर मुल्क के मुतअ़द्दिद अकाबिर अहले इ़ल्म ने गहरी नज़र से तर्जुमः को देखकर अपनी पसन्दीदग़ी का इज़्हार भी किया है, इसलिए उम्मीद है कि यह तर्जुमः न सिर्फ़ हिन्दीदाँ मुसलमानों के लिए; बल्कि उन बिरादराने वतन के लिए भी "क़ुर्आन के पैग़ाम" को समझने में मदद देगा, जो संजीदा और इन्साफ़ पसन्द हैं और क़ुर्आन पाक के पैग़ाम को समझना चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला इन की ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद दीनी ख़िद्मत की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(3) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

मोहतमिम, "दारुल् उलूम वक़्फ़", देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

"पेशे नज़र तफ़्सीर "क़ुर्आन का पैग़ाम, "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" बज़बान हिन्दी और इस तफ़्सीर के ज़रिये दअ़वत "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी" ने इ़ल्मी ज़ौक़-ए-सलीम, वक़ीअ़ दीनी सलाहियत, वसीअ़ मुतअ़ला और उ़लूमे क़ुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवल्लिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुक़र्रिरीन और मुदर्रिसीन के लिए एक क़ीमती इ़ल्मी तोह़फ़ा साबित होगी"।

(4) प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना सय्यद अरशद मद्नी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़ ह़दीस, दारुल उ़लूम, देवबन्द व अध्यक्ष- जमअ़ीयतुल् उ़लम-ए-हिन्द (भारत)

"अब जबकि हिन्दी भाषा हमारे मुल्क की सरकारी भाषा है और उम्मत का एक बहुत बड़ा तब्क़ा उर्दू से दूर है। इस बात की सख़्त ज़रुरत है कि इस्लामी उ़लूम को हिन्दी भाषा में भी किया जाए।

यह बात क़ाबिले क़द्र है कि "मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साह़ब" ने इस ज़रुरत को मह़सूस किया और ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा में क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमः व तफ़्सीर किया है, अगरचे यह फ़क़ीर अपनी मस्रूफ़ियत की वजह से इसको एक-एक शब्द नहीं देख सका, लेकिन ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखना इस तर्जुमे व तफ़्सीर की सिक़ाहत (प्रमाण) के लिए काफ़ी है"।

(5) प्रख़्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद सई़दी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरुल् उ़लूम (वक़्फ़) सहारनपुर (यू०पी०) इण्डिया

"मुझे यह मालूम होकर ख़ुशी हुई कि दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़लमा, लखनऊ के एक आ़लिमे दीन "जनाब मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी" ग़ैर मुस्लिमों में दअ़वत व तब्लीग़ के लिए कोशाँ और फ़िक्रमन्द हैं, इस सिल्सिले में उन्होंने मुख़्तलिफ़ किताबें और किताब्चे भी मुरत्तब व शाया किये हैं।

इसी तरह़ उन्होंने क़ुर्आन करीम के दअ़वती उस्लूब को मद्देनज़र रखते हुए हिन्दी ज़बान में "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से बाबरकत सिल्सिला शुरु किया है, जिस का भाग एक मेरे पास बग़र्ज़ तक़रीज़ पहुँची है। अल्लाह तआ़ला मौलाना मोह़रत की इस कोशिश व काविश को शर्फ़ क़ुबूल और मक़ामे क़ुबूलियत अ़ता फ़रमाए"।

(6) प्रख़्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सई़दुर्रह़मान आज़्मी नदवी मद्दज़िल्लहुल्आ़ली के क़लम से-

मुहतमिम- दारुल् उलूम नद्वतुल उ़ल्मा, लखनऊ व चान्सलर- इन्टीग्रल यूनिर्वसिटी, लखनऊ

"हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम के तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाए (प्रकाशित) हो कर मक़्बूल हो चुके हैं।

"लेकिन अभी तक किसी ऐसे आ़लिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह़ उबूर ह़ासिल हो और वह अ़रबी ज़बान की रुह़ को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाह़ियत (योग्यता) रखता हो, कोई काम न हो सका था"।

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत ख़ुशी हो रही है कि हमारे ह़लक़-ए-नद्वतुल् उ़लमा की तरफ़ से यहाँ के आ़लिमे दीन 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' जो अ़रबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आ़लिम और सह़ाफ़ी (पत्रकार) क़ुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही क़ाबिले उसूक़ और अ़रबी ज़बान की रुह़ से क़रीब तर हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर पेश कर रहे हैं।

(7) प्रख़्यात इस्लामी विश्व विद्वान ह़ज़रत मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

नाज़िम अल् मअ़हदुल् आ़ली इस्लामी हैदराबाद व जनरल सेक्रेट्री इस्लामिक फ़िक़ः अकेडमी, इण्डिया व सेक्रेट्री आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

क़ुर्आन को एक पैग़ाम की शक्ल में, दअ़वती उस्लूब और आसान अन्दाज़ में पेश करने की ज़रुरत थी, चुनाँचे मुह़िब्बी फ़िल्लाह जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' (सदर जमई़यत पयामे अम्न, लखनऊ) ने इसी अन्दाज़ में क़ुर्आन पाक के तर्जुमे व तशरीह़ की कामियाब कोशिश की है।

इस तफ़्सीर में सब से पहले "सूरः का तआ़र्रुफ़" के उ़न्वान (शीर्षक) से हर रुकूअ़ का ख़ुलासा पेश किया है, फिर आयतों के तर्जुमे और हर आयत के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर, अस्बाबे नुज़ूल, फ़ज़ीलत, ज़रुरी मसायल और आयत के पैग़ाम को बयान किया गया है। तफ़्सीर के दौरान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ीअ़ साह़ब (रह़०) की "मआ़रिफ़ुल् क़ुर्आन" के अ़लावा अस्लाफ़ की मुतअ़द्दिद कुतुब तफ़्सीर से इस्तिफ़ादा

हैं। एक ख़ास बात इस तफ़्सीर की यह है कि हर आयतों के अलग-अलग नम्बर डाल कर आयतों की तशरीह़ की गई है, ताकि लोग थोड़ा-थोड़ा वक़्त निकाल कर आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकें और तल्बा व तालिबात भी अलग-अलग सबक़ के तौर पर इसे पढ़ सकें।

(8) ह़ज़रत मौलाना सय्यद वाज़ेह़ रशीद ह़सनी नदवी मद्‌दज़िल्लहुल्‌आ़ली के क़लम से-

(शिक्षा महासचिव (मुअतमद तअ़लीम) दारुल्‌ उलूम, नदवतुल्‌ उलमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब' जो आ़लिमे दीन होने के साथ-साथ हिन्दी के भी सनद याफ़्ता आ़लिम हैं। मौलाना सरवर साह़ब बहुत सी हिन्दी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, और इससे पहले बहुत सी किताबों के तर्जुमे भी कर चुके हैं और अब तफ़्सीर का काम भी पूरा कर चुके हैं। अल्लाह तआ़ला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसको क़ुर्आन फ़हमी का ज़रिया बनाए और हिदायत के मिलने का उनवान बनाए।

(9) ह़ज़रत मौलाना अब्दुल्‌ क़ादिर साह़ब नदवी मज़ाहिरी गुजराती के क़लम से-

नायब मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ

हमारे अ़ज़ीज़े गिरामी 'मुफ़्ती मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' ने जो नदवा से सनद याफ़्ता होने के साथ हिन्दी से भी वाक़िफ़ हैं, वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि मुसल्‌सल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाक़िफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तक्मील तक पहुँचा कर इस के चार हिस्से शाए भी किया और अब पूरे क़ुर्आन की तफ़्सीर शाया करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तह़िक़ हैं।

(10) मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी मद्‌दज़िल्लहुल्‌ आ़ली के क़लम से-

रुक्न तासीसी (फ़ाउन्ड मेम्बर) आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड व सदर-दारुस्सलाम इस्लामी मर्कज़, मलियर कोटला पंजाब, अल्‌ हिन्द

यह नाचीज़ "मोह़तरम मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब" को इस अ़ज़ीम ख़िद्‌मत पर दिली मुबारकबाद पेश करते हुए उम्मीद रखता हूँ कि इन्शाअल्लाह इन की इस ख़िद्‌मत से हिन्दी जानने वाले तब्क़े को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना की यह ख़िद्‌मते शर्फ़ क़ुबूलियत ह़ासिल करे।

(11) ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से-

भूतपूर्व सहसम्पादक 'अर्राइद' व उस्तादे ह़दीस, दारूल उलूम नदवतुल उलमा (लखनऊ)

"हिन्दी में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में क़ुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीदाँ जो अ़रबी से भी वाक़िफ़ हो इस काम को अन्जाम देता।

बड़ी खुशी की बात है कि 'दारुल उलूम नदवतुल उलमा' के फ़ाज़िल "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी

साहब नदवी" ने मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालन्धरी के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है। अल्लाह तआ़ला इस तर्जुमानी व तफ़्सीर को क़बूल फ़रमाये और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाए"।

(12) ह़ज़रत मौलाना शम्सुल ह़क़ साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली

(प्रधान सम्पादक, तअ़मीर-ए-ह़यात व उस्ताज़ दारुल उ़लूम, नद्वतुल उ़लूमा, लखनऊ)

हमें निहायत खुशी व मसर्रत है कि नद्वतुल उ़ल्मा जिसकी बुनियाद ही इस पर पड़ी थी कि ह़ालात के रुख़ और माह़ौल को सामने रखकर काम किया जाए और उसके फ़ाज़िलों को वक़्त की ज़बान में बात करने का सलीक़ा सिखाया जाए ताकि वह दीन की ख़िद्मत का ह़क़ अदा कर सकें। इसके एक फ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी ने अच्छी आसान हिन्दी ज़बान में कुर्आन करीम का तर्जुमः कर दिया है जो हमारी नई नस्ल के लिए ज़रुरी है और बिरादराने वतन तक, जिसकी रौशनी पहुँचाने का भी ज़रिया है। हमारी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(13) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ज़करिया नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ ह़दीस व अ़मीद कुल्लियतुश्शरीआ़, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ)

अल्लाह ने मोह़तरम "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी" को हिन्दी से वाक़्फ़ियत को इनके लिए इतना मुफ़ीद बना दिया है जिस का अन्दाज़ा करना इनकी किताबों और हिन्दी तर्जुमः कुर्आन पाक और हिन्दी "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" को पढ़े बग़ैर मुश्किल है। कुर्आन मजीद की तफ़्सीर व तर्जुमः का काम ख़ासतौर से हिन्दी में बहुत मुश्किल है। हिन्दी पढ़ने वालों के मज़हब ज़ौक़ व मिज़ाज को सामने रखते हुए यह काम करना जितना ज़रूरी है उतना ही मुश्किल है लेकिन बस तौफ़ीक़ की ज़रूरत है जिस ने मौलाना से इतना बड़ा काम ले लिया है। इसके बहुत अच्छे नतीजे सुनने में आए हैं। अल्लाह तआ़ला मुफ़्ती साह़ब की उ़म्र और काम में बरकत अ़ता फ़रमाये और इनकी मेह़नत और कोशिशों को मज़ीद बार आवर करे।

(14) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ फ़िक़ः-दारुल उलूम नदवतुल उ़ल्मा, लखनऊ व नाज़िम मअ़हदुश्शरीआ़, लखनऊ)

हिन्दी ज़बान में इस्लामियात पर काम करने वालों में एक मोअ़तबर नाम जनाब "मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी" का है, जो दारुल उलूम नद्वतुल उ़लूमा के होनहार फ़ाज़िल और हिन्दी ज़बान में बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मुतवाज़ेअ़, मिलनसार और धुन के पक्के हैं, इन्होंने कुर्आन करीम का हिन्दी तर्जुमः किया है जिस के मुतअ़द्दिद एडीशन शाया कर चुके हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना मौसूफ़ की यह दीनी ख़िद्मात अल्लाह की बारगाह में मक़्बूलियत ह़ासिल करें और बन्दगाने ख़ुदा को इन से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचे।

(15) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी नदवी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़, ह़दीस, दारुल उलूम नदवतुल उ़ल्मा, लखनऊ व सदर जमअ़ीयतुल मआ़रिफ़, लखनऊ

अल्लाह का लाख-लाख एह़सान व करम है कि इस अहम ज़रुरत को पूरा करने के लिए हमारे फ़ाज़िल 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने एक मुकम्मल तफ़्सीर बज़बान हिन्दी में बड़ी मेह़नत व लगन से तैयार

की है और हिन्दुस्तानी माहौल को सामने रखते हुए सलफ़-ए-सालिहीन के तरीक़े को पेशे नज़र रखते हुए हिन्दुस्तानी लोगों की ख़िद्मत में एक नादिर व नायाब क़ुर्आनी तोह़फ़ा पेश किया है।

(16) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती नियाज़ अहमद साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली-

(उस्ताज़ ह़दीस व फ़िक़ः व वकील कुल्लियतुश्शरीआ़ अर्थात सदर मुफ़्ती दारुल उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब' जो उलूम-ए-शरीआ में माहिर, नदवे के होनहार फ़ाज़िल जिन की क़ुर्आनी उलूम पर अच्छी निगाह है। यह हिन्दू मज़हबी किताबों से भी वाक़िफ़ियत रखते हैं और हिन्दू भाईयों के दर्मियान ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान को ज़रिया बना कर दअ़वत का काम कर रहे हैं। इससे पहले इनका हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन का पैग़ाम नाम से कई एडीशन छप चुके हैं जो इनके मक़्बूलियत की दलील है।

चूँकि मैं इन्हें लगभग पन्द्रह बीस साल से दअ़वत के कामों में मशग़ूल देख रहा हूँ जो एक अच्छी फ़िक्र के हामिल हैं और अल्लाह तआ़ला इनके इसी जज़्बे की वजह से इन से बहुत से काम ले रहा है, जिसमें मदारिस, मकातिब और नौजवानों की तर्बियत भी शामिल है।

उम्मीद है कि हिन्दी जानने वालों के लिए यह तफ़ासीर मराज़ेअ़ की ह़ैसियत रखेगी। अल्लाह तआ़ला इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(17) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहीबुल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

(मुबल्लिग़ मदरसः रह़मानिया, दरभंगा, बिहार)

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में ख़ुशी हो रही है कि "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब" एक आ़लिमी इदारे दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़लमा से फ़ारिग़ होने के साथ संस्कृत और हिन्दी ज़बान से वाक़िफ़ हैं। जो बराबर तमाम इन्सानों को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में ले जाने का काम करते हैं, जिसके लिए उन्होंने बड़ी तअ़दाद में इस्लामी लिट्रेचर तैयार किया है, जो एक सह़ाफ़ी और जमअ़ीयत पयामे अम्न के सदर हैं।

जनाब मौलाना 'मुफ़्ती सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने ख़ासतौर से इस मुल्क के हिन्दी तब्क़े वालों की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तह़िक़ हैं, जिन्होंने इन्सानी हिदायत का एक बड़ा तोह़फ़ा तैयार किया है।

(17) मोहतरम जनाब अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी साह़ब के क़लम से-

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर, एम०पी०

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' साह़ब ने हिन्दी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआ़ला इन के इस प्रयास को सफ़ल बनाये यह हमारी दिली दुआ़ है और मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सभी लोग इससे लाभ उठाएँगे।

नोट- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारे और हमारी नस्ल और पूरी उम्मत के लिए क़ुर्आन मजीद की तिलावत, ख़िद्मत और इशाअ़त को ज़िन्दगी का मक़्सद बना दे, ज़िन्दगी गुज़ारे तो बस क़ुर्आन और शारेअ़ क़ुर्आन के साये में और मौत आए तो इसी ख़िद्मत को अन्जाम देते हुए।

10 मुहर्रम 1436 हिज्री

मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल् उ़लूम नद्वतुल् उ़ल्मा, लखनऊ
04–11–2014

प्राक्कथन

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे कुर्आन के रुप मे जाना जाता है। इसके विभिन्न अनुवाद व व्याख्याएँ हुयीं जिसमें इस कुर्आन के पैग़ाम की विशेषता संक्षेप में इस तरह़ हैः-

"कुर्आन का पैग़ाम" (अनुवाद) की ख़ुसूसियत

1- कुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें, अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं। जैसे रह़मत, मग्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।

2- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो कुर्आन के शब्द है और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे- ज़ालिम= अत्याचारी, करीब=समीप, अ़ज़ाब=यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किये गये हैं जो कुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।

3- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अ़रबी से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो, कहीं-कहीं ज़रुरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे, मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।

4- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अ़रबी कुर्आन, फिर अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

तफ़्सीर फ़ारुक़ी की ख़ुसूसियात

यह तफ़्सीर ख़ासतौर पर आ़म मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम लोगों के लिए तैयार की गई है। इसलिए ऐसे शब्द जो अ़वाम की समझ से बाहर हों नहीं लिखे गये और कोशिश इस तरह़ की गई है कि दर्स के तौर पर रोज़ाना एक-एक सबक़ पढ़ा जा सके। तफ़्सीर व तशरीह़ में मोअ़तबर उ़लम-ए-मोह़क़्क़िीन और सलफ़ व सालिह़ीन की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है ।

1- यह आसान हिन्दी भाषा में सात भागों पर आधारित तफ़्सीर है।

2- यह तफ़्सीर मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों को सामने रखते हुए आम भाषा में लिखी गई है ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी फ़ायदा उठा सकें।

3- तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (Authentic) उ़लमा की तफ़्सीरों से फ़ायदा उठाया गया है।

4- इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर बयान की गई है।

5- इस में सबसे पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों

का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर जिसमें सबसे पहले उसी आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उसी आयत से सम्बन्धित ह़दीस और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम और उसी आयत से सम्बन्धित नई साइंसी तह़क़ीक़ और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब के साथ उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

6- इसमें अक्सर आयतों का शाने नुज़ूल ज़िक्र किया गया है ताकि ग़ैर मुस्लिम भाईयों के लिए क़ुर्आन के समझने में आसानी हो, लेकिन शाने नुज़ूल ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं कि वह आयत केवल उसी समय या उन्हीं लोगों के लिए है बल्कि जब भी कहीं उस तरह़ के ह़ालात हों तो वह आयत रहनुमाई करेगी। इसलिए कि क़ुर्आन क़ियामत तक हर ज़माने के तमाम इन्सानों के लिए है। किसी भी आयत के शाने नुज़ूल (क़ुर्आन के अवतरित होने का कारण) से यह न समझा जाए कि यह तो केवल उसी ज़माने के लिए है और अब हम से यह बात नहीं कही जा रही है।

इसी तरह़ अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ जनाब आ़रिफ़ अलाना साह़ब और उन सभी ह़ज़रात को जिन्होंने किसी भी तरह़ का तआ़उन किया हो, अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए और क़ुर्आन के ख़ादिमों में ह़िस्सा अ़ता फ़रमा कर क़ुर्आन की शिक्षानुसार अ़मल करने और सारी इन्सानी बिरादरी तक क़ुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की मुझे और मेरी नस्ल व पूरी उम्मत को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल् उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
4 रबीउस्सानी, 15-01-2016

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

(भाग-35)

सूर-ए-फ़ातिर (सूरः नं. 35)

आयत नं० 12 से पूरी सूरः

आयत नं० 12 से 31 तक

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۖ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ
وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۝ إِنْ
تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ۝ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا
النُّورُ ۝ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۝ إِنْ أَنْتَ
إِلَّا نَذِيرٌ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ
وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَنْ تَبُورَ ۝ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ
شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

अनुवाद-

(12) और दो दरिया एक तरह के नहीं हैं, एक का पानी मीठा पीने में स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला, और एक का पानी खारा कड़वा, और दोनों में से ताज़ा गोश्त (मछलियाँ) खाते और ज़ेवर (आभूषण) निकालते हो, जिसको पहनते हो, और तुम देखते हो, कि नवकाएँ नदियों में (पानी को) चीरती चली जाती हैं, ताकि तुम अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (13) वही रात को दिन में दाख़िल करता है, दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है हर एक निर्धारित समय तक चलता रहेगा, यही अल्लाह तुम्हारा 'रब' है उसी की हुकूमत है, और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी अधिकार नहीं रखते। (14) अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनेंगे भी नहीं, और अगर सुन भी लें तो तुम्हारा कहना न कर सकेंगे, और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इन्कार कर देंगे, पूरी ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की तरह तुम्हें कोई न बताएगा। (15) ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मुहताज हो, और अल्लाह बेपरवाह ह़म्द (ख़ूबियों) वाला है। (16) अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें हटा दे और एक नई मख़्लूक़ (सृष्टि) ला बसाए। (17) और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं। (18) और कोई (आदमी) किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, और अगर

कोई बोझ से दबा हुआ अपना बोझ उठाने के लिए पुकारेगा तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, चाहे कितना ही क़रीबी रिश्तादार क्यों न हो, आप तो केवल उन्हीं को सचेत कर सकते हैं, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो व्यक्ति अपने को संवारता है तो अपने ही लिए संवारता है, और लौट कर जाना तो अल्लाह ही की ओर है। (19) और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं, (20) और न अन्धेरा और न उजाला, (21) और न छाया और न धूप, (22) और न ज़िन्दे और न मुर्दे बराबर हो सकते हैं, अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हैं; (23) आप तो केवल सचेत करने वाले हैं। (24) 'हमने' आप को ह़क़ के साथ खुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है, और कोई उम्मत नहीं कि जिसमें सचेत करने वाला न गुज़रा हो। (25) और अगर यह आप को झुठलाएँ तो जो लोग इनसे पहले थे, वे भी झुठला चुके हैं, उनके पास उनके रसूल निशानियाँ और ज़बूर और रोशन किताबें लेकर आते रहे। (26) फिर 'मैंने' (उन लोगों को,) जिन्होंने इन्कार किया, धर पकड़ा, तो फिर कैसा रहा 'मेरा' इन्कार! (27) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये 'हमने' फल निकाले, जिनके रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं? और पहाड़ों में भी विभिन्न रंगतों के टुकड़े जिनमें सफेद, लाल, और काले भुजंग भी हैं। (28) और इसी तरह आदमियों और जानवरों, और चौपायों के रंग भी विभिन्न प्रकार के हैं, अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं जो इल्म रखते हैं, बेशक अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) माफ़ करने वाला है। (29) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दे रखा है उसमें से छिपा कर और खुले तौर पर खर्च करते हैं, वह ऐसे व्यापार की उम्मीद लगाए बैठे हैं जो कभी तबाह नहीं होगा। (30) यह कि अल्लाह उनको उनका पूरा- पूरा बदला देगा अपने (कृपा) से, और उनको ज़्यादा भी देगा, वह बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है। (31) और जो किताब हमने तुम्हारी ओर वह़्य की है, वही ह़क़ है, अपने से पहले (की किताबों) की पुष्टि करती है। बेशक अल्लाह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।

आयत नं० 12 से 31 तक की व्याख्या

12 وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَمِن كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا
وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

कुफ़्र और इस्लाम बराबर नहीं, ख़ुदा कुफ़्र को मग़्लूब ही करेगा अगरचे तुम को दोनों से फ़ायदा मिलेगा। मुसलमानों से कुव्वत दीन, काफ़िरों से जिज़्या ख़िराज और पानी मीठे, खारी दोनों दरियाओं से निकलता है यानी मछली और गहना (ज़ेवर) मोती, मूंगा और जवाहर अक्सर खारी से निकलते हैं"।

अक्सर बड़ी-बड़ी तिजारतें जहाज़ों के ज़रिये से होती हैं उन से जो फ़ायदा ह़ासिल होता है यही अल्लाह का फ़ज़्ल है। इन तमाम इनूआमात पर इन्सान को चाहिए कि अपने मालिक का शुक्र अदा करे।

13 يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ

यह विषय पहले कई जगह गुज़र चुका है "यानी रात दिन की तरह़ कभी कुफ़्र ग़ालिब है, कभी इस्लाम और सूरज चाँद की तरह़ हर चीज़ की मुद्दत तय है जिसमें देरी या जल्दी नहीं होती।" इसी तरह़ ह़क़ का ग़ल्बा अपने वक़्त पर होगा यानी जिस की सिफ़ात ऊपर बयान हुई। ह़क़ीक़त में यह तुम्हारा सच्चा परवरदिग़ार और पूरी ज़मीन व आसमान का बादशाह बाक़ी जिन्हें तुम ख़ुदा क़रार देकर पुकारते हो वह मिस्कीन बादशाह तो क्या होते, खजूर की गुठली पर जो बारीक झिल्ली सी होती है उस के भी मालिक नहीं।

14 إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ
بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

यानी जिन मअ़बूदों (उपास्यों) का सहारा ढूँढ़ते हो वह तुम्हारी पुकार नहीं सुनते और तवज्जोह करते भी तो कुछ काम न आ सकते, बल्कि क़ियामत के दिन तुम्हारी मुश्रिकाना ह़रकतों से एलानिया बेज़ारी का इज़्हार करेंगे और बजाय मददगार बनने के दुश्मन साबित होंगे।

यानी अल्लाह से ज़्यादा ह़ालात कौन जानने वाला है। वह फ़रमाता है कि यह साझीदार ग़लत हैं जो कुछ काम नहीं आ सकते, ऐसी ठीक और पक्की बातें और कौन बतलाएगा।

15-16 يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

यानी सब लोग उसी अल्लाह के मोह़ताज हैं जिसे किसी की ज़रूरत नहीं, क्योंकि तमाम ख़ूबियाँ और कमालात उस की ज़ात में जमा हैं, बस वही अ़िबादत व मदद का ह़क़्दार हुआ।

17 وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

यानी तुम न मानोगे तो वह क़ादिर है कि तुम को हटा कर दूसरी मख़्लूक़ आबाद कर दे, जो उस की फ़रमाँबरदार हो। जैसे आसमानों पर फ़रिश्ते और ऐसा करना अल्लाह को कुछ मुश्किल नहीं, लेकिन उस की ह़िक्मत यह है कि ज़मीन पर सब सिल्सिले चलते रहें और आख़िर में हर एक अपने नेक व बद् अ़मल का बदला पाएगा तो इस तरह़ उस की सिफ़ात ज़ाहिर होंगी।

18-20 وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ
إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى
اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾

यानी न कोई दूसरे का बोझ अपने सर रखेगा कि उस के गुनाह अपने ऊपर ले ले और न दूसरे के पुकारने पर उस का कुछ हाथ बटा सकेगा चाहे क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो। सब को अपनी पड़ी होगी, केवल अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व रह़मत ही से बेड़ा पार होगा।

यानी आप के डराने से वही अपना रवैय्या दुरुस्त रख कर नफ़ा उठाएगा जो ख़ुदा से बिना देखे डरता हो और डरकर उस की बन्दग़ी में लगा रहता हो। जिस के दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ ही न हो वह इन धमकियों से कहाँ मुतास्सिर होगा।

यानी आप की नसीह़त सुनकर जो शख़्स मान ले और अपना ह़ाल दुरुस्त कर ले तो कुछ आप पर या ख़ुदा पर एह़सान नहीं, बल्कि उसी का फ़ायदा है और यह फ़ायदा पूरी तरह़ उस वक़्त ज़ाहिर होगा जब सब लोग अल्लाह के यहाँ लौट कर जाएँगे।

21 وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿۲۱﴾

यानी मोमिन जिस को अल्लाह ने दिल की आँखें दी हैं, ह़क़ के उजाले और वह़्य की रौशनी में बे-खटक रास्ता बताता हुआ जन्नत के बाग़ों और रह़मते इलाही के साये में जा पहुँचता है। क्या उस की बराबरी वह काफ़िर कर सकेगा जो दिल का अन्धा और ख़ुराफ़ात की अँधेरियों में भटकता हुआ जहन्नम की आग और उस की झुलसा देने वाली लौवों की तरफ़ बेतह़ाशा चला जा रहा हो? हरगिज़ नहीं, ऐसा हो तो यूँ समझो कि मुर्दा और ज़िन्दा बराबर हो गया।

ह़क़ीक़त यह है कि मोमिन व काफ़िर में इस से भी ज़्यादा फ़र्क़ है, जो एक ज़िन्दा तन्दुरुस्त आदमी और मुर्दा लाश में होता है। असली और हमेशा की ज़िन्दगी सिर्फ़ रुह़ ईमान से मिलती है, इस से इन्सान को हज़ार मुर्दों से बद्तर मुर्दा समझना चाहिए।

22-23 وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴿۲۲﴾
إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿۲۳﴾

यानी अल्लाह चाहे तो मुर्दों को भी सुना दे, यह क़ुद्रत औरों को नहीं। इसी तरह़ पैग़म्बर का काम ख़बर पहुँचाना और भले बुरे से आगाह कर देना है। कोई मुर्दा दिल काफ़िर उन की बात न सुने तो यह उनके बस की बात नहीं।

24 إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿۲۴﴾

डर सुनाने वाला चाहे नबी हो या नबी का क़ायम मक़ाम जो उस की राह की तरफ़ बुलाये।

25 وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿۲۵﴾

यानी रौशन तअ़लीमात या खुले-खुले मोअ़जिज़ात लेकर आये और उन में से बाज़ को मुख़्तसर छोटे सह़ीफ़े दिये गये, बाज़ को बड़ी किताबें।

26 ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿۲۶﴾

यानी जब झुठलाने से बाज़ न आए तो देख लो अन्जाम क्या हुआ, वही तुम्हारा भी हो सकता है।

27-28 أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ
بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ
كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿۲۸﴾

यानी तरह़-तरह़ के मेवे, फिर रंग बिरंग के फल पैदा किये ज़मीन, पानी। पानी और हवा से इतनी

चीज़ें पैदा करना अ़जीब व ग़रीब क़ुद्‌रत को ज़ाहिर करता है।

यानी सफ़ेद में भी कई दर्जे (कोई बहुत ज़्यादा सफ़ेद कोई कम, कोई उस से कम) और सुर्ख़ भी कई दर्जे और काले यानी बहुत गहरे काले कव्वे के पर की तरह़।

यह सब बयान है क़ुद्‌रत की निशानियों का। बस जिस तरह़ नबातात, जमादात और ह़ैवानात में रंग बिरंग की मख़्लूक़ है, इन्सानों में भी हर एक जुदा है। मोमिन और काफ़िर एक दूसरा सा हो जाए और सब इन्सान एक ही रंग अख़्तियार कर लें यह कब हो सकता है। इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी गई कि लोगों के इख़्तिलाफ़ से ग़मग़ीन न हों।

यानी बन्दों में निडर भी हैं और अल्लाह से डरने वाला भी, मगर डरते वही हैं जो अल्लाह की अ़ज़्मत व जलाल, आख़िरत के बक़ा और दुनिया की बेवक़्ती को समझते हैं और अपने परवरदिग़ार के अह़काम व हिदायत का इ़ल्म ह़ासिल कर के भविष्य की फ़िक्र करते हैं। जिस में यह समझ और इ़ल्म जिस दर्जे का होगा उसी दर्जे में वह ख़ुदा से डरेगा, जिस में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं वह ह़क़ीक़त में आ़लिम कहलाने का ह़क़्दार नहीं।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं "यानी सब आदमी डरने वाले नहीं, अल्लाह से डरना समझ वालों का गुण है और अल्लाह का मामला भी दो तरह़ का है वह ज़बरदस्त भी है कि हर ख़ता पर पकड़े और माफ़ी भी कि गुनाहगार को बख़्शे" बस दोनों ह़ैसियत से बन्दा को डरना चाहिए।

29 إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ

यानी जो अल्लाह से डरकर उस की बातों को मानते और उस की किताब को अ़क़ीदत के साथ पढ़ते हैं, बद्‌नी व माली अ़िबादात में कोताही नहीं करते, वह ह़क़ीक़त में ऐसे ज़बरदस्त व्यापार के उम्मीदवार हैं जिस में घाटे का कोई सन्देह नहीं। बिलाशुब्हा जब ख़ुदा ख़ुद उनके आ़माल का ख़रीदार है तो नुक़्सान का अन्देशा किसी तरफ़ से नहीं हो सकता।

30 لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ

यानी बहुत से गुनाह माफ़ फ़रमाता है और थोड़ी सी बात की क़द्र करता है और क़ानूनी तौर से जो सवाब मिलना चाहिए बतौर इन्आ़म उस से ज़्यादा देता है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक शख़्स ने एक कुत्ता देखा जो प्यास के मारे गीली मिट्टी चाट रहा था, उस ने अपना मोज़ा उतारा और उस में पानी भर-भर कर उसको पिलाना शुरु कर दिया यहाँ तक कि वह सेर हो गया। अल्लाह ने उसके इस काम की क़द्र की और उसे जन्नत अ़ता फ़रमाई"। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक मर्तबः एक शख़्स कहीं जा रहा था कि उस ने रास्ते में कांटों वाली एक टहनी देखी जिसे उस ने राह से हटा दिया। अल्लाह तआ़ला को उसका यह काम बहुत पसन्द आया और उसे बख़्श दिया। **(बुख़ारी)**

31 وَالَّذِیٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝

यानी बन्दों के हालात को ख़ूब जानता है, ठीक मौक़े पर यह किताब उतारी।

आयत नं० 32 से 45 तक

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ
الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۗ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا
لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ
يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۗ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۗ
فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي
الْاَرْضِ ۗ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۗ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ
مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ
مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾ اِسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۗ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۗ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ
لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا
مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

अनुवाद–

(32) फिर 'हमने' अपने बन्दों में से उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिनको हमने चुना, फिर उनमें से कुछ तो अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं और कुछ उनमें से बीच की चाले चल रहे हैं, और कुछ उनमें से अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में आगे बढ़ रहे हैं, यही बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है; (33) कि वहाँ 'हमेशा' रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे दाख़िल होंगे, वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जाएगा, और वहाँ उनका वस्त्र (कपड़ा) रेशम का होगा। (34) और वे कहेंगे, ''सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हम को ग़म से दूर कर दिया है, बेशक हमारा रब बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है।'' (35) जिसने हमको अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से हमेशा रहने के घर (जन्नत) में उतारा यहाँ न हमें कोई तकलीफ़ पहुँचती है और न हमें कोई थकान ही आती है। (36) और जिन्होंने इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएँ और न उनसे उनका अ़ज़ाब ही कुछ हल्का किया जाएगा, हम ऐसा ही बदला हर नाशुक्रे को दिया करते हैं। (37) और वे उसमें चिल्लाएँगे, ''ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले, हम अच्छे अ़मल करेंगे, वैसा नहीं जैसा हम पहले करते रहे, ''क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिसमें कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला

भी आया था, अब मज़ा चखते रहो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (38) बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है, 'वह' तो सीनों तक की बात जानता है। (39) 'वही' तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया, तो जो कोई इन्कार करेगा, उसका वबाल उसी पर होगा इन्कार करने वालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल अ़ज़ाब ही को बढ़ाता है, और इन्कार करने वालों का इन्कार करने की वजह से घाटा ही होता चला जाता है। (40) कह दीजिए, ''भला तुम देखो तो अपने साझीदारों को, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में कौन सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उनका कुछ साझा है?'' या 'हमने' उनको कोई किताब दी है कि उसका कोई स्पष्ट प्रमाण उनके पास हो, (नहीं,) बल्कि ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से केवल धोखे का वादा कर रहे हैं। (41) अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और अगर वे टल जाएँ तो उसके बाद कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके, बेशक (निःसन्देह) वह बहुत ह़लीम (सहनशील), माफ़ करने वाला है। (42) और ये अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें खाया करते हैं कि अगर उनके पास कोई सचेत करने वाला आएगा तो यह ज़रूर हर एक उम्मत (गिरोह) से ज़्यादा अच्छी राह पर होंगे फिर जब सचेत करने वाला आ गया, तो उससे उनकी नफ़रत और बढ़ गयी। (43) ज़मीन में घमंड करना और बुरी चालें चलना और बुरी चाल का वबाल उसके चलने, वाले ही पर पड़ता है ये अगले लोगों के रवय्ये (रीति) के सिवा और किसी चीज़ के इन्तिज़ार में नहीं, तुम अल्लाह के दस्तूर (नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे और न तुम कभी अल्लाह के नियम को टलते ही पाओगे। (44) क्या वे धरती में चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का क्या अंजाम हुआ जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे, अल्लाह ऐसा नहीं कि आसमानों में कोई चीज़ उसे हरा सके, और न धरती ही में, वह जानने वाला, कुदरत वाला (सामर्थ्यवान) है। (45) और अगर अल्लाह लोगों को उनके हर कामों के बदले में पकड़ने लगे तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, मगर वह एक निश्चित समय तक मोहलत देता है, तो जब उनका निश्चित समय आ जाएगा तो अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

आयत नं० 32 से 45 तक की व्याख्या

32 ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

पैग़म्बर के बाद इस किताब का वारिस उस उम्मत को बनाया जो तमाम उम्मतों से बेहतर व बरतर है। हाँ, उम्मत के सब लोग यकसाँ नहीं, उन में वह भी हैं जो बावजूद ईमान सह़ीह़ के गुनाहों में मुब्तिला हो जाते हैं। (ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ हुए) और वह भी हैं जो दर्मियानारवी से रहते हैं। न गुनाहों में फँसते हैं, न बड़े बुज़ुर्ग और वली (उन को 'मुक़्तसिद' फ़रमाया) और वह बन्दे जो अल्लाह के फ़ज़्ल व तौफ़ीक़ से आगे बढ़-बढ़ कर नेकियाँ समेटते और आगे निकल जाते हैं, वह मुस्तह़ब चीज़ों को भी नहीं छोड़ते और गुनाह के ख़ौफ़ से मकरुह तन्ज़ीही बल्कि बाज़ मुबाह़ात तक से परहेज़ करते हैं। बड़े दर्जे की बुर्ज़ुगी और फ़ज़ीलत तो उन को है, वैसे चुने हुए बन्दों में एक हैसियत से सब को शुमार किया क्योंकि दर्जे बदरजे जन्नती सब

हैं। गुनाहगार भी अगर मोमिन है तो बहरहाल किसी न किसी वक़्त ज़रूर जन्नत में जाएगा।

हदीस में फ़रमाया कि गुनाहगार को आख़िरकार माफ़ी मिलेगी।

33 جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “सोने चाँदी में न खाओ, न पियो और रेशम न पहनो, न ही दीबाज़ पहनो। उन के लिए यह दुनिया में है, जबकि तुम्हारे लिए आख़िरत में”। (बुख़ारी व मुस्लिम)

34 وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿۳۴﴾

यानी दुनिया का और महशर का ग़म दूर किया, गुनाह बख़्शे और फ़रमाँबरदारी क़ुबूल फ़रमाई।

35 الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं, रहने का घर दुनिया में इस से पहले कोई ऐसा न था। हर जगह ख़तरा और रोज़ी का ग़म, दुश्मनों का डर और रंज व हालात, मगर जन्नत में पहुँचकर सब ख़त्म हो जाएँगे।

36 وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿۳۶﴾

“काफ़िरों को न जहन्नम में मौत आएगी कि उस से तक्लीफ़ का ख़ात्मा हो जाए और न अ़ज़ाब की तक्लीफ़ किसी वक़्त हल्की होगी, ऐसे नाशुक्रों की हमारे यहाँ यही सज़ा है”।

37 وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ
تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿۳۷﴾

काफ़िर कहेंगे कि दुनिया में तो उसी को भला समझते थे पर अब वह काम न आएँगे और कहेंगे, ज़रा दोज़ख़ से निकाल दीजिए तो हम ख़ूब नेकियाँ समेट कर लाएँगे और फ़रमाँबरदार बनकर हाज़िर होंगे।

यह जवाब दोज़ख़ियों को दिया जाएगा यानी, हम ने तुम को अ़क़्ल दी थी, जिस से समझते और काफ़ी उ़म्र दी जिस में सोचना चाहते तो सब सही व ग़लत सोचकर सीधा रास्ता अख़्तियार कर सकते थे। यहाँ तक कि तुम में के बहुत से तो साठ सत्तर बरस दुनिया में ज़िन्दा रहकर मरे। फिर ऐसे लोगों को हमने भेजा जो बुरे अन्जाम से डराते रहे, क्या इस के बाद भी कोई उ़ज़्र बाक़ी रहा? अब अ़ज़ाब का मज़ा चखते रहो और किसी तरफ़ से मद की उम्मीद न रखो।

हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जब अहले जन्नत, जन्नत में और अहले जहन्नम, जहन्नम में चले जाएँगे तो मौत को (मेढ़े की शक्ल में) लाकर ज़ब्ह कर दिया जाएगा। फिर एक पुकारने वाला पुकारेगा, ऐ अहले जन्नत! हमेशगी है मौत नहीं। ऐ अहले जहन्नम! हमेशगी है मौत नहीं”। (बुख़ारी व मुस्लिम)

38 إن الله عالم غيب السماوات والأرض إنه عليم بذات الصدور ۝

यानी उसे बन्दों के सब खुले छुपे हालात और दिलों के भेद मालूम हैं। किसी की नियत और योग्यता उस से छुपी हुई नहीं, उसी के अनुसार मामला करता है और वह यह भी जानता है कि जो लोग अब शोर मचा रहे हैं कि हमें छोड़ दो, फिर ऐसी ख़ता न करेंगे वह अपने दावे में झूठे हैं। अगर सत्तर दफ़ा लौटाए जाएँ तब भी शरारत से बाज़ नहीं आ सकते। ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وإنهم لكاذبون (सूरः अन्आम आयत नं० 28)

39 هو الذي جعلكم خلائف في الأرض فمن كفر فعليه كفره ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم
إلا مقتا ولا يزيد الكافرين كفرهم إلا خسارا ۝

यानी अगली उम्मतों की जगह तुम को ज़मीन पर आबाद किया और उन के बाद सत्ता दी। चाहिए तो यह था कि उस का हक़ अदा करते।

यानी कुफ़्र व नाशुक्री और अल्लाह की आयात के इन्कार से उस का कुछ नुक़्सान नहीं, वह हमारे हम्द व शुक्र से बरी है। अल्बत्ता नाशुक्री करने वाले पर उस के कर्म का वबाल पड़ता है। कुफ़्र का अन्जाम सिवाय इस के कुछ नहीं कि अल्लाह की तरफ़ से बराबर नाराज़ी और बेज़ारी बढ़ती जाए और काफ़िर के नुक़्सान व ख़सारे में रोज़ बरोज़ बढ़ौत्तरी होती रहे।

40 قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله أروني ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك
في السماوات أم آتيناهم كتابا فهم على بينت منه بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا ۝

यानी अपने मअ़बूदों (उपास्यों) के हालात में ग़ौर कर के मुझे बतलाओ कि ज़मीन का कौन सा हिस्सा उन्होंने बनाया या आसमानों के बनाने और थामने में उन की कितनी शिरकत है। अगर कुछ नहीं तो आख़िर ख़ुदा किस तरह बन बैठे, कुछ तो अ़क़्ल से काम लो।

यानी अ़क़्ली नहीं तो कोई मोअ़तबर नक़्ली दलील पेश करो, जिस की सनद पर मुश्रिकाना दावा करते हो।

यानी अ़क़्ली या नक़्ली दलील कोई नहीं, बात सिर्फ़ इतनी है कि उन में से बड़े छोटों को और अगले पिछलों को शैतान के अगुवा से यह वादा करते चले आए कि هؤلاء شفعاؤنا عند الله (यह मूर्तियाँ वग़ैरह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी बनेंगे) और उस का क़ुर्ब अ़ता करेंगे। हालांकि यह ख़ालिस धोका और फ़रेब है। यह तो क्या सिफ़ारिशी बनते, बड़े से बड़ा मुक़र्रब भी वहाँ कुफ़्फ़ार की सिफ़ारिश में ज़बान नहीं हिला सकते।

41-42 إن الله يمسك السماوات والأرض أن تزولا ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده إنه كان
حليما غفورا ۝ وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم فلما جاءهم
نذير ما زادهم إلا نفورا ۝

यानी उसी की क़ुद्रत है जो इतने बड़े निज़ाम को अपनी जगह से हटने और अपने मक़ाम से इधर-उधर सरकने नहीं देता।

अगर बिल्फ़र्ज़ यह चीज़ें अपनी जगह से टल जाएँ तो फिर सिवाय ख़ुदा के किस की ताक़त है कि इन को क़ाबू में रख सके। चुनाँचे क़ियामत में जब यह सारा निज़ाम अल्लाह तआ़ला दरहम-बरहम करेगा तो कोई क़ुव्वत उसे रोक न सकेगी।

यानी लोगों के कुफ़्र व हठधर्मी की वजह से होना तो यह चाहिए था कि सारा निज़ाम उलट दिया जाए लेकिन यह उस के सब्र व बुर्दबारी (संयम) से थमा हुआ है। उस की बख़्शिश न हो तो सब दुनिया वीरान हो जाए।

43 استكبارا في الارض ومكر السيء ولا يحيق المكر السيء الا باهله فهل ينظرون الا سنت الاولين
فلن تجد لسنت الله تبديلا ولن تجد لسنت الله تحويلا ﴿٤٣﴾

अ़रब के लोग जब सुनते कि यहूद वग़ैरह दूसरी क़ौमों ने अपने नबियों की यूँ नाफ़रमानी की तो कहते कि अगर हम में नबी आए तो हम उन क़ौमों से बेहतर नबी की फ़रमाँबरदारी कर के दिखलाएँगे। जब अल्लाह ने नबी भेजा जो सब नबियों से ज़्यादा शान में बढ़कर है तो उस का इन्कार कर दिया और दुश्मनी पर कमरबस्ता हो गये और तरह़-तरह़ की योजनाएँ और दांव घात शुरु कर दिये, मगर याद रहे कि बुरा दांव ख़ुद दांव करने वालों पर उलटेगा।

यानी चन्द रोज़ अपने दिल में ख़ुश हो लें कि हम ने योजनाएँ कर के यूँ नुक़्सान पहुँचा दिया, लेकिन अन्जामकार देख लेंगे कि ह़क़ीक़त में नुक़्सान किस को उठाना पड़ा। फ़र्ज़ करो दुनिया में टल भी गया तो आख़िरत में तो यक़ीनन यह मुशाहिदा होकर रहेगा।

यानी यह इसी के इन्तिज़ार में हैं कि जो पिछले मुजरिमों के साथ मामला हुआ उन के साथ भी हो। सो बाज़ न आए तो वही होकर रहेगा। अल्लाह का जो दस्तूर सज़ा देने का रहा है न वह बदलने वाला है कि बजाय सज़ा के ऐसे मुजरिमों पर इन्आ़म व इक्राम होने लगा और न टलने वाला कि मुजरिम से सज़ा टलकर ग़ैर मुजरिम को दे दी जाए।

44 اولم يسيروا في الارض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا اشد منهم قوة وما كان الله
ليعجزه من شيء في السموت ولا في الارض انه كان عليما قديرا ﴿٤٤﴾

यानी बड़े-बड़े ज़ोर आवर मुद्दई अल्लाह की गिरफ़्त से न बच सके। जैसे- आ़द व समूद वग़ैरह। यह बेचारे क्या चीज़ हैं। ख़ूब समझ लो कि आसमान और ज़मीन की कोई ताक़त अल्लाह को बेबस नहीं कर सकती।

45 ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابة ولكن يؤخرهم الى اجل
مسمى فاذا جاء اجلهم فان الله كان بعباده بصيرا ﴿٤٥﴾

यानी लोग जो गुनाह कमाते हैं अगर उन में से हर गुनाह पर गिरफ़्त कर दे तो कोई जानदार ज़मीन में बाक़ी न रहे, नाफ़रमान तो अपनी नाफ़रमानी की वजह से तबाह कर दिये जाएँ और फ़रमाँबरदार जो ‌आ़मतौर से बहुत थोड़े होते हैं कमी की वजह से उठा लिये जाएँ क्योंकि दुनिया का निज़ाम कुछ ऐसे अन्दाज़ पर क़ायम है कि महज़ चन्द इन्सानों का यहाँ रहना ख़िलाफ़े ह़िक्मत है। फिर जब इन्सान आबाद न रहे तो हैवानात क्यों रखे जाएँगे, उन का वजूद बल्कि पूरी दुनिया की हस्ती तो इसी इन्सान के लिए है।

यानी एक मुक़र्रर समय तक अल्लाह ने ढ़ील दे रखी है कि हर एक के जुर्म पर फ़ौरन गिरफ़्त नहीं करता। जब वक़्त आ जाएगा तो याद रखो सब बन्दे उस की निगाह में हैं, किसी का एक ज़र्रह भर बुरा या भला अ़मल उसके इ़ल्म से बाहर नहीं, बस हर एक का अपने इ़ल्म के मुताबिक़ ठीक-ठीक फ़ैसला फ़रमा देगा। न मुजरिम कहीं छुप सकेगा न फ़रमाँरदार का ह़क़ मारा जाएगा।

اَللّٰھُمَّ اجعلنا ممن یطیعک واغفرلنا ذنوبنا اِنَّکَ انت الغفور الرحیم

(भाग–36)

सूर–ए–यासीन

(सूरः नं. 36)

तफ़्सीर सूरः यासीन

नाम– इस सूरः के शुरुआ़त में यह शब्द 'यासीन' आया है। इसलिए इस का नाम 'यासीन' है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः सब के नज़्दीक मक्की है, सिर्फ़ एक आयत وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ के बारे में बाज़ लोगों का ख़याल है कि यह मदीना में नाज़िल हुई थी। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) और ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि यह सूरः मक्की है।

फ़ज़ीलत–

'इमाम अह़मद', अबूदाऊद, नसई, इब्ने माजा और तब्रानी ने 'मअ़किल बिन यसार' से रिवायत नक़्ल की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, यासीन 'कल्बुलु क़ुर्आन' यानी यह सूरः क़ुर्आन का दिल है। यह उसी तरह़ है जिस तरह़ सूरः फ़ातिह़ा को 'उम्मुलु क़ुर्आन' फ़रमाया है। फ़ातिह़ा को उम्मुलु क़ुर्आन नाम देने की वजह यह है कि इस में क़ुर्आन मजीद की पूरी तअ़लीम का खुलासा (संक्षेप) आ गया है और यासीन को क़ुर्आन का दिल इसलिए फ़रमाया कि इस में क़ुर्आन की दअ़वत को ज़ोरदार अन्दाज़ से पेश किया गया है।

दूसरी मक्की सूरतों की तरह़ इस में भी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को कुफ़्र व शिर्क, इन्कारे रिसालत और इन्कारे आख़िरत के अन्जाम से डराया गया है।

आयत नं० 1 से 21 तक

يٰسٓ ۝ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝
لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ
سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ
الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۗ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاضْرِبْ
لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْا مَاۤ
اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّاۤ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَيْنَاۤ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ۝ قَالُوْۤا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالُوْا طٰٓئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ
قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) यासीन, (2) क़सम है क़ुर्आन की जो हिकमत से भरा है। (3) (ऐ मुहम्मद) बेशक, आप रसूलों में से हैं; (4) सीधी राह पर। (5) (और यह क़ुर्आन) बड़ी ताक़त वाले, रहमत वाले का उतारा हुआ है। (6) ताकि आप ऐसे लोगों को सचेत करें, जिनके बाप-दादा को सचेत नहीं किया गया था, (इस वजह से) वह ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। (7) उनमें से अक्सर लोगों पर यह बात पूरी हो चुकी है कि वे ईमान नहीं लाएँगे। (8) 'हमने' उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिये हैं जो उनकी ठोड़ियों से लगे हैं, तो उनके सिर ऊपर को उठे हुए हैं। (9) और 'हमने' उनके आगे भी एक दीवार बना दी है और एक दीवार उनके पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे सकता। (10) और उनके लिए बराबर है कि तुम उनको नसीहत करो या न करो, वे ईमान लाने वाले नहीं। (11) आप तो केवल उस व्यक्ति को नसीहत कर सकते हैं जो नसीहत पर चले और बिना देखे रहमान से डरे, तो उसको माफ़ी और अच्छे बदले की ख़ुशख़बरी सुनाओ। (12) बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और जो कुछ आगे भेज चुके हैं और जो निशानी पीछे छोड़ चुके हैं वह सब हम लिखते जाते हैं, और हर चीज़ को 'हमने' एक स्पष्ट किताब (लौहे महफ़ूज़) में दर्ज कर रखी है। (13) और उनसे मिसाल के तौर पर एक बस्ती का हाल बयान कीजिए, जबकि उनके पास पैग़म्बर (दूत) आए; (14) जब 'हमने' उनकी ओर दो (पैग़म्बर) भेजे, तो उन्होंने उनको झुठला दिया, तब हमने तीसरे के ज़रिये मदद पहुँचायी, तो उन्होंने कहा, ''हम तुम्हारी ओर पैग़म्बर होकर आए हैं।'' (15) वे बोले, ''तुम तो बस हमारे ही जैसे इन्सान हो, रहमान ने तो कोई भी चीज़ नाज़िल नहीं की है, तुम केवल झूठ बोलते हो।'' (16) उन्होंने कहा, ''हमारा 'रब' जानता है कि हम तुम्हारी ओर (सन्देश लेकर) भेजे गये हैं; (17) और 'हमारी' ज़िम्मेदारी तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देने की है।'' (18) वे बोले, ''हम तो तुमको मन्हूस समझते हैं अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें पथराव (संगसार) कर के मार डालेंगे, और तुम्हें ज़रूर हमारी ओर से दुःख देने वाला अ़ज़ाब पहुँचेगा।'' (19) उन्होंने कहा, ''तुम्हारी मन्हूसियत तो तुम्हारे अपने ही साथ है, क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि तुम लोग हद को पार करने वाले हो?'' (20) और

शहर के दूर के सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! पैग़म्बरों की पैरवी करो,
(21) ऐसे लोगों के कहने पर चलो जो तुमसे बदला नहीं चाहते और सीधी राह पर हैं।''

आयत नं० 1 से 21 तक की व्याख्या

1 يٰسٓ ۝

शब्द 'यासीन' के बारे में उ़लूम-ए-तफ़्सीर की बहुत सी रायें हैं। एक राय यह है कि यह 'ऐ इन्सान' के मअ़ने में है। ह़ज़रत 'सअ़ीद बिन जुबैर' और कुछ दूसरे ह़ज़रात का ख़याल यह है कि यह शब्द नबी करीम (सल्ल०) का एक नाम है और इस की दलील इस के बाद अल्लाह का क़ौल إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ है। यानी ऐ यासीन! आप यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, हर चीज़ का एक दिल है, क़ुर्आन का दिल सूरः यासीन है। जिस ने 'सूरः यासीन' पढ़ी अल्लाह तआ़ला उसके बदले दस बार क़ुर्आन पढ़ने का सवाब लिखेगा। **(तिर्मिज़ी)**

2 وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝

आगे जो बात कही जाने वाली है उस की ताकीद के लिए अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन की क़सम खाई है, जो ह़िक्मतों का ख़ज़ाना है।

3-6 إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝

बाज़ लोगों का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) के सिवा किसी दूसरे नबी के नुबूव्वत की तस्दीक़ के लिए अपनी किताब की क़सम नहीं खाई है और ऐसा आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम के लिए किया गया है। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आप (सल्ल०) से कहा करते थे कि तुम अल्लाह के पैग़म्बर नहीं हो। जैसा कि सूरः रअ़द आयत नं० (43) में उन का क़ौल नक़्ल किया गया है لَسْتَ مُرْسَلًا इसी को रद्द करते हुए अल्लाह तआ़ला ने यहाँ फ़रमाया कि आप बेशक मेरे भेजे हुए रसूल हैं और आप मेरी सीधी राह (दीने इस्लाम) पर हैं और यह क़ुर्आन ऐसे की तरफ़ से नाज़िल किया गया है जो हर ह़ाल में सब पर ग़ालिब (प्रभावी) और बेह़द रह़म करने वाला है और यह आप (सल्ल०) पर इसलिए नाज़िल किया गया है, ताकि इसे पढ़कर मुश्रिकीने क़ुरैश को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराएँ।

जिन के पास बहुत समय से यानी इस्माईल (अ़लै०) के बाद से कोई नबी नहीं भेजा गया, जिसकी वजह से वह लोग ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के हुक़ूक़ को भूल गये और कुफ़्र व फ़साद और आख़िरत के इन्कार जैसी बुराईयों में मुब्तिला हो गये हैं।

7 لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

इब्ने जरीर ने इस का मतलब यह बयान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म के मुताबिक़

'लौहे़ मह़फ़ूज़' में यह बात लिख दी है कि अक्सर कुफ़्फ़ारे कुरैश ईमान नहीं लाएँगे और पूरी ज़िन्दगी कुफ़्र पर इस्रार करेंगे और इसी ह़ाल में उन की मौत आ जाएगी।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यहाँ 'क़ौल' से सूरः साद आयत नं० (85) لَاَمۡلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنۡكَ وَمِمَّنۡ تَبِعَكَ मुराद है। जिस में अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से कहा है कि मैं यक़ीनन जहन्नम को तुम से और तुम्हारे मानने वालों से भर दूँगा। अल्लाह तआ़ला ने यहाँ यह फ़रमाया कि जो बात मैंने इब्लीस को उस के मानने वालों के बारे में कही थी वह बात उन काफ़िरों के ह़क़ में साबित हो गई है कि यह लोग जहन्नम के ईधन बनेंगे।

8 إِنَّا جَعَلۡنَا فِيٓ أَعۡنَٰقِهِمۡ أَغۡلَٰلٗا فَهِيَ إِلَى ٱلۡأَذۡقَانِ فَهُم مُّقۡمَحُونَ۝

मुश्रिकीने कुरैश का जो ह़ाल ऊपर बयान किया गया, कि वह ईमान नहीं लाएँगे और कुफ़्र की ह़ालत पर ही उन की मौत होगी, इसी बात को और ताकीद के तौर पर कहा जा रहा है कि इन्कारे ह़क़ में उन का ह़ाल उन लोगों जैसा है जिन के हाथों में बेड़ियाँ डाल कर उन की गर्दनों से बाँध दिया गया हो और उन के हाथ ठुड्डी के नीचे गर्दनों में इस तरह़ अटक गये हों कि उन के सर बिल्कुल ऊपर की तरह़ उठ गये हों, न नीचे की तरफ़ देख पाते हों और न ही इधर-उधर देख सकते हों, तो जिस तरह़ ऐसे लोग कभी भी नीचे की तरफ़ देखकर राहे रास्त पर नहीं चल सकते, उसी तरह़ मुश्रिकीने कुरैश भी अल्लाह की हिदायत से लाखों कोस दूर हैं और कभी भी ह़क़ की तरफ़ मायल नहीं हो सकते हैं।

'फ़र्रा' और 'ज़िह़ाक' का ख़याल है कि यह एक मिसाल है जिस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला यह बताना चाहते हैं कि हम ने काफ़िरों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोक दिया है। जैसा कि सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (29) में आया है وَلَا تَجۡعَلۡ يَدَكَ مَغۡلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ "आप अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रखिये" यानी अल्लाह की राह में ख़र्च करने से न रुकिये।

9 وَجَعَلۡنَا مِنۢ بَيۡنِ أَيۡدِيهِمۡ سَدّٗا وَمِنۡ خَلۡفِهِمۡ سَدّٗا فَأَغۡشَيۡنَٰهُمۡ فَهُمۡ لَا يُبۡصِرُونَ۝

कुफ़्फ़ारे कुरैश की दूसरी मिसाल उन लोगों की है जिन के आगे और पीछे रुकावटें खड़ी कर दी गई हों और वह कुछ भी न देख सकते हों। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हम ने उन के ईमान की राह में रुकावटें खड़ी कर दी हैं, इसलिए वह कुफ़्र के दलदल से निकलकर ईमान में कभी भी दाख़िल न हो सकेंगे।

उन के आगे दुनिया रुकावट बनी हुई है कि वह इस के सिवा कुछ भी नहीं देख पाते और उन के पीछे इन्कारे आख़िरत की रुकावट है। वह समझते हैं कि क़ियामत नहीं आएगी, इसलिए उन्हें तौबः की तौफ़ीक़ नहीं होती और यह कि अल्लाह तआ़ला ने उन की आँखों पर रसूल-ए-करीम (सल्ल०) और दीने इस्लाम से नफ़रत और बुग्ज़ की पट्टी बांध दी है, इसलिए वह मह़रूम हो चुके हैं। वह ह़क़ को बिल्कुल नहीं देख पा रहे हैं।

10-11 وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَأَنذَرۡتَهُمۡ أَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ۝ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلذِّكۡرَ وَخَشِيَ ٱلرَّحۡمَٰنَ بِٱلۡغَيۡبِۖ فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٖ وَأَجۡرٖ كَرِيمٍ۝

मक्का के मुजरिमों के बारे में आप (सल्ल०) को ख़बर दी गई है कि आप चाहे उन्हें डराएँ या न

डराएँ यह ईमान लाने वाले नहीं है, इसलिए आप उन्हें उन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए और अपनी दअ़वत व तब्लीग़ का रुख़ उन की तरफ़ फेर दीजिए।

जिन के बारे में उम्मीद हो कि वह दअ़वते ह़क़ को क़ुबूल कर लेंगे और यह वह लोग हैं जो क़ुर्आन करीम पर ईमान रखते हैं, इस की आयात में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और दुनिया की ज़िन्दग़ी में अल्लाह को बिना देखे उस से डरते हैं और जब तन्हाई में होते हैं तो उन्हें कोई नहीं देख रहा होता, तब भी उस से डरते हुए गुनाह नहीं करते।

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप ऐसे लोगों को गुनाहों से मग़्फ़िरत और अज्र करीम यानी जन्नत की बशारत दे दीजिए। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुल्क आयत नं० (12) में फ़रमाया हैः

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ "बेशक जो लोग अपने रब से ग़ायबाना तौर पर डरते हैं, उन के लिए गुनाहों से मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है"।

12 إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि इस में ज़र्रह बराबर भी शुब्हा नहीं कि वह क़ियामत के दिन तमाम मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि इस में इस तरफ़ इशारा है कि वह काफ़िरों में से जिन के दिलों को चाहता है ईमान के ज़रिये ज़िन्दा कर देता है जिन पर गुमराही की वजह से मौत तारी हो चुकी थी, वह ह़क़ को क़ुबूल कर लेते हैं, अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के तमाम अच्छे और बुरे अ़ामाल को लिख लेता है और उन की उन अच्छी और बुरी बातों को भी लिख लेता है जो उन के ज़रिये दुनिया में जारी हो जाती हैं और उन्हें उन का सवाब या गुनाह मिलता रहता है।

सह़ाबा और ताबिअ़ीन की एक जमाअ़त की राय है कि यहाँ 'आसार' से मुराद नमाज़ के लिए मसाजिद की तरफ़ जाने वालों के क़दमों के निशान हैं।

बाज़ लोगों ने कहा कि इसमें इब्ने आदम के तमाम अच्छे और बुरे अ़ामाल दाख़िल हैं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया है कि हम ने 'लौह़े मह़फ़ूज़' में हर चीज़ और हर अ़मल को गिन रखा है। बाज़ ने 'इमाम मुबीन' से इन्सानों के नाम-ए-आ़माल मुराद लिये हैं यानी आदमी का हर अ़मल उस के सह़ीफ़े अ़ामाल (के रजिस्टर) में दर्ज कर लिया जाता है।

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि "बनू सल्मा मदीना के एक मुह़ल्ले में रहते थे, चुनाँचे उन्होंने मस्जिदे नबवी के क़रीब मुन्तक़िल होने का इरादा किया तो यह आयत नाज़िल हुई। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम्हारे क़दमों के निशानात भी लिखे जाते हैं, लिहाज़ा तुम (मस्जिद के क़रीब) मुन्तक़िल न हो"। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब इन्सान को मौत

आ जाती है तो उसका अ़मल रुक जाता है, मगर तीन चीज़ें सद्क़ः-ए-जारिया हैः वह इ़ल्म जिस से लोगों को फ़ायदा हो या नेक औलाद, जो उसके लिए दुआ़ करे।" (मुस्लिम)

13-17
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا
بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا إِنَّآ إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْا مَآ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
تَكْذِبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि वह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को एक बस्ती वाले का क़िस्सा सुना दें, जहाँ के रहने वालों ने कुफ़्र व शिर्क पर उसी तरह़ इस्रार किया था जिस तरह़ यह लोग कर रहे हैं और अल्लाह के रसूलों के साथ वैसा ही सुलूक किया था जैसा यह लोग आप के साथ कर रहे हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक कर दिया। कहीं ऐसा न हो कि इन क़ुरैशियों का अन्जाम भी उसी बस्ती वालों जैसा हो।

'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक वह बस्ती 'इन्ताकिया' थी और मुफ़स्सिरीन ने यह भी लिखा है कि 'रसूलों' से मुराद ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के ह़वारिय्यीन थे, जिन्हें 'इन्ताकिया' वालों को तौह़ीद की दअ़वत देने के लिए भेजा गया था। 'इब्ने अ़ब्बास', क़तादा, इक्रिमा, और 'वह़ब बिन मुनब्बा' वग़ैरह से यही मरवी है।

लेकिन बहुत से मुफ़स्सिरीन की यह राय नहीं है। जैसे ह़ाफ़िज़ 'इब्ने कसीर' और 'जलालुद्दीन' साह़ब का ख़याल है कि वह बस्ती इन्ताकिया नहीं कोई और थी, जिस का नाम और ज़माना सह़ी रिवायात से मालूम नहीं है।

इसलिए कि 'इन्ताकिया' वह पहला शहर है जहाँ के रहने वाले सब से पहले ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर ईमान लाये थे। इसी तरह़ क़ुर्आन करीम के ज़ाहिरी शब्द बताते हैं कि जो लोग उस बस्ती वालों को तौह़ीद की दअ़वत देने गये थे वह अल्लाह के रसूल थे, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उन लोगों की हिदायत व रहनुमाई के लिए मब्ऊ़स किया था। अगर वह ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के अस्ह़ाब होते तो अ़िबादात उसी के मुताबिक़ होती और उन की बात रद्द करते हुए बस्ती वाले यह नहीं कहते कि तुम तो हमारे ही जैसे इन्सान हो। उन रसूलों ने बस्ती वालों से कहा होगा कि हम अल्लाह के रसूल हैं, तो काफ़िरों ने उन की बात को रद्द करते हुए कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे इन्सान हो यानी तुम नबी नहीं हो।

इस बस्ती के रहने वाले कुफ़्र व शिर्क में मुब्तिला थे और दूसरे गुनाहों में भी मुब्तिला करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन की हिदायत के लिए पहले दो नबी भेजे, जिन्हें उन्होंने मारा और जेल में डाल दिया, तो उन की तस्दीक के लिए तीसरा नबी भेजा। कहा जाता है कि उन के नाम सादिक़, मस्दूक़ और श्लोम था।

एक दूसरा क़ौल (कथन) है कि उन के नाम समअ़ान, यह़्या और बोलस थे, बहरह़ाल उन के नाम जो भी रहे हों इन तीनों ने बस्ती वालों को यक़ीन दिलाना चाहा कि वह वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं, तो लोगों ने उन को झुठलाया और कहा कि तुम नबी कैसे हो सकते हो, तुम तो हमारे ही जैसे इन्सान हो और अल्लाह ने किसी को नबी बनाकर उस पर आसमान से कभी भी कुछ नहीं उतारा है, यह तुम्हारा

झूठ है। जब उन का इन्कार बढ़ा तो रसूलों ने कहा कि हमारा रब ख़ूब जानता है कि हम बिलाशुब्हा तुम्हारे लिए रसूल बनाकर भेजे गये हैं और हमारी ज़िम्मेदारी इस से ज़्यादा कुछ नहीं कि हम अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुँचा दें।

18 قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

काफ़िरों ने रसूलों की यह बात सुनकर कहा कि हम तो तुम्हारे आने को अपने लिए बद्शगूनी समझ रहे हैं, जब से तुम लोगों ने इस शहर में क़दम रखा है बारिश रुक गई है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि वह तीनों रसूल उन्हें दस साल तक अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाते रहे, लेकिन हक़ की तरफ़ मायल होने के बजाय उन का घमण्ड बढ़ता गया और एक दिन बस्ती वालों ने रसूलों से कहा कि अगर तुम अपनी दअ़वत से बाज़ न आए और अपनी तह़रीक बन्द न की तो हम लोग तुम्हें संगसार कर देंगे और सख़्त सज़ा देंगे।

19 قَالُوْا طَاۗىِٕرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَىِٕنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝

रसूलों ने कहा कि तुम्हारी शामत और परेशान ह़ाली तुम्हारे कुफ़्र और रसूलों को झुठलाने की वजह से है, बारिश का रुक जाना और क़हतसाली (सूखा पड़ जाना) तुम्हारे गुनाहों की वजह से है।

क्या तुम लोग सिर्फ़ इसलिए हमारे वजूद से बद्शगूनी ले रहे हो कि हम ने तुम्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाया है और उस के एक होने की दअ़वत दी है। ह़क़ीक़त यह है कि तुम लोग कुफ़्र व गुनाह में ह़द से गुज़र गये हो।

20-21 وَجَاۗءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔــلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

उस बस्ती के एक किनारे पर एक नेक मर्द रहता था जिस का नाम बाज़ मुफ़स्सिरीन ने 'ह़बीब बिन मूसा नज्जार' बताया है। जब उस ने सुना कि बस्ती वाले अल्लाह के रसूलों के ख़िलाफ़ क़त्ल की साज़िश कर रहे हैं तो वह रसूलों और बस्ती वालों के लिए ख़ैर ख़्वाही करते हुए बस्ती में आया और कहा कि तुम लोग अल्लाह के भेजे हुए रसूलों के मानने वाले बन जाओ, जो अपनी तौह़ीद की दअ़वत पर तुम से कोई बदला नहीं चाहते हैं और वह हिदायत और सीधे रास्ते पर हैं जो बा अख़्लाक़ और बा-कमाल लोग हैं।

आयत नं० 22 से 47 तक

पारा नं०-23

* وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا
يُنقِذُونِ ۝ إِنِّيٓ إِذًا لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝ إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَٰلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝ بِمَا غَفَرَ لِي
رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝ وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ۝ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً
فَإِذَا هُمْ خَٰمِدُونَ ۝ يَٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ
أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ
يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَٰبٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِۦ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا
يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَٰنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَٰجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۢبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا
هُم مُّظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَٰهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ
يَنۢبَغِي لَهَآ أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَءَايَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝
وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِۦ مَا يَرْكَبُونَ ۝ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَٰعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ ءَايَةٍ مِّنْ ءَايَٰتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَآءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُۥٓ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝

अनुवाद-

(22) और मुझे क्या हुआ है कि मैं 'उसकी' इबादत न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया, और 'उसी' की ओर तुम को लौट कर जाना है। (23) क्या मैं 'उसके' सिवा किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) बनाऊँ? कि अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न मुझको वे छुड़ा ही सकें, (24) तब तो मैं खुली हुई गुमराही में पड़ गया, (25) मैं तो आप के 'रब' पर ईमान ले आया, तो मेरी बात सुनो।'' (26) हुक्म हुआ, ''दाख़िल हो जन्नत में'' उसने कहा, ''क्या ही अच्छा होता कि मेरी क़ौम जानती, (27) कि मेरे 'रब' ने मुझे माफ़ कर दिया और मुझको इज़्ज़त वालों में शामिल कर लिया।'' (28) और उसके बाद उसकी क़ौम पर 'हमने' आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी और न 'हम' इस तरह उतारते हैं। (29) वह तो बस एक चिंघाड़ (चीख़) थी तो वे उसी समय बुझ कर रह गये। (30) बन्दों पर अफ़सोस! है कि उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं। (31) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को 'हमने' तबाह कर दिया अब वह उनकी ओर पलट कर कभी नहीं आएँगी? (32) और जितने भी हैं सब 'हमारे' सामने हाज़िर किये जाएँगे। (33) और इनके लिए मुर्दा ज़मीन एक निशानी है, 'हमने' उसको ज़िन्दा किया और उससे अनाज निकाला फिर ये उसी में से खाते हैं। (34) और 'हमने' उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें स्रोत जारी किये। (35) ताकि वे उनके फल खाएँ, हालाँकि यह सब कुछ उनके हाथों का बनाया हुआ नहीं है, तो क्या ये शुक्र नहीं करते? (36) 'वह'

ज़ात पाक (महिमावान) है जिसने सब (चीज़ों) के जोड़े पैदा किये, ज़मीन जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी, और खुद उनकी अपनी जाति में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते। (37) और एक निशानी उनके लिए रात है कि 'हम' उसमें से दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अन्धेरा छा जाता है। (38) और सूरज अपने एक निश्चित ठिकाने के लिए चला जा रहा है, यह बड़ी ताक़त वाले इल्म वाले का (निश्चय किया हुआ) अन्दाज़ा है। (39) और चाँद के लिए 'हमने' मंज़िलें ठहरा दीं, यहां तक कि फिर वह ऐसा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (40) न तो सूरज ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े, और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है, और सब अपने दायरे (कक्ष) में तैर रहे हैं। (41) और एक निशानी उनके लिए यह है कि 'हमने' उनकी नस्ल को भरी हुई नाव में सवार किया। (42) और उनके लिए उसी के समान वैसी ही चीज़ें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं। (43) और अगर 'हम' चाहें तो उन्हें डुबो दें, फिर न तो कोई उनकी चीख़-पुकार सुनने वाला हो और न उन्हें बचाया जा सके। (44) मगर यह तो बस 'हमारा' रहम है, और एक निश्चित समय तक के लिए सुख का सामान है। (45) और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो, जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुम पर रहम किया जाए! (46) और उनके पास उनके 'रब' की आयतों (निशानियों) में से जो आयत (निशानी) भी आती है, वे उससे कतरा जाते हैं। (47) और जब उनसे कहा जाता है अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से खर्च करो, तो जिन्होंने इन्कार किया है, वे उन लोगों से जो ईमान लाए, कहते हैं, ''क्या हम उन लोगों को खाना खिलाएँ जिनको अगर अल्लाह चाहता तो खुद ही खिला देता, तुम तो बस खुली हुई गुमराही में हो?''

आयत नं० 22 से 47 तक की व्याख्या

22-25 وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ۝ إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝ *

फिर उस मर्द मोमिन ने दअ़वत के लिए ह़कीमाना तरीक़ा अपनाते हुए जो बात लोगों से कहनी थी, उस का मुख़ातब अपने आप को बताते हुए कहा कि आख़िर क्या वजह है कि मैं उस ज़ात की अ़िबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया यानी क्या वजह है कि तुम लोग उस अल्लाह के क़ायल नहीं होते हो जो तुम्हारा पैदा करने वाला है और मरने के बाद जिस के पास तुम्हें लौट कर जाना है।

क्या यह बात किसी तरह़ अ़क़्ल में आती है कि मैं उस ख़ालिक़ व मालिक को छोड़कर ऐसे बेजान मूर्तियों की पूजा करूँ कि अगर अल्लाह मुझे किसी तक्लीफ़ में मुब्तिला कर दे तो वह मेरे किसी काम न आएँगे, न वह अल्लाह के पास सिफ़ारशी बन सकते हैं और न ही ख़ुद उस तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं यानी यह कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी होगी कि जिन मूर्तियों को मैं अपने हाथों से तराशूँ उन्हीं के सामने सज्दः करूँ। अगर मैं ऐसा करूँगा तो खुल्लम खुल्ला गुमराही में मुब्तिला हो जाऊँगा। लोगों! सुन लो कि तुम्हारे रब पर ईमान ले आया जो हम सब का ख़ालिक़ व राज़िक़ और मालिक है यानी गवाह रहो कि मैं रब्बुल् आ़लमीन पर ईमान रखता हूँ और मूर्तियों का इन्कार करता हूँ।

26-27 قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि जब उस ने यह बात कही तो सब ने मिलकर उस पर ह़मला कर दिया और उसे क़त्ल कर दिया। बाज़ ने लिखा है कि उसे एक ख़न्दक़ में ज़िन्दा गाड़ दिया गया और बाज़ ने लिखा है कि जब उन्होंने उसे मारना चाहा तो अल्लाह तआ़ला ने उसे आसमान पर उठा लिया, फिर उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया। जब उस ने जन्नत और उस की नेअ़मतों को देखा तो कहा ऐ काश! मेरी क़ौम अल्लाह पर ईमान और अ़क़ीद-ए-तौह़ीद को समझ जाती और उसे अपना लेती जिस के ज़रिये अल्लाह ने मेरे तमाम गुनाहों को माफ़ कर दिया है और मुझे शोहदा और सालिह़ीन का मक़ाम देकर मुकर्रम बनाया है, ताकि वह भी उसी राह पर चलकर जन्नत में आ़ला मक़ाम ह़ासिल कर लेते।

ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "शहीदों की रुहें सब्ज़ परिन्दों में होती हैं जिन के लिए अ़र्श से क़न्दीलें लट्की रहती हैं। यह जन्नत में जहाँ चाहें सैर करती रहती हैं।" **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते हैं कि इस मर्द मोमिन ने अपनी क़ौम के लिए ज़िन्दगी में इख़्लास व मुह़ब्बत का सुबूत दिया कि उन्हें रसूलों पर ईमान लाने की नसीह़त की और मरने के बाद भी तमन्ना की कि काश! वह लोग मुसलमान हो जाते, ताकि अल्लाह के अ़ज़ाब से बच जाते और जन्नत के ह़क़दार बन जाते।

28-29 وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٨﴾ إِنْ كَانَتْ
إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ﴿٢٩﴾

मर्द 'ह़बीब बिन मूसा' नज्जार के क़त्ल किये जाने के बाद उस काफ़िर व ज़ालिम क़ौम का हलाक किया जाना अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक साबित हो गया, जिस के लिए उस ने आसमान से कोई फ़ौज नहीं नाज़िल की और न ही इस की ज़रूरत थी। वह तो एक चीख थी जिस के असर से सभी हलाक हो गये और अपने तमाम गुनाहों के साथ उचक लिये गये, ताकि क़ियामत के दिन उन का बोझ लिए मैदान-ए-मह़शर में अपने रब के पास खड़े हों और उन का बदला चखें।

30 يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٠﴾

अल्लाह के रसूलों और उस के दीन की तरफ़ बुलाने वालों का जो लोग इस दुनिया में मज़ाक़ उड़ाते हैं और उन को तक्लीफ़ देने पर रहते हैं, उन्हें क़ियामत के दिन उस वक़्त सख़्त नदामत उठानी पड़ेगी जब अल्लाह तआ़ला उन के उन आ़माले मुजरिमाना पर उन से पूछेगा, तो उस वक़्त उन्हें जिस हलाकत व बर्बादी का सामना होगा उसे देखकर उन की ह़ालत ऐसी होगी कि आसमान व ज़मीन के तमाम रहने वाले भी उस पर अफ़्सोस करें तो कम होगा।

31 أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

कुफ़्फ़ारे मक्का और दूसरे काफ़िरों के ह़ाल पर ह़ैरत है कि उन से पहले जो काफ़िर क़ौमें थीं अल्लाह ने कुफ़्र व शिर्क की वजह से उन्हें हलाक कर दिया और उन में से कोई क़ौम भी दोबारा दुनिया में नहीं पाई गई, तो क्या यह नसीह़त ह़ासिल करने के लिए काफ़ी नहीं है।

क्या अहले मक्का को इस से सबक़ नहीं लेना चाहिए?

32 وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ

इस आयते करीमा में बड़ी ताकीद है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के तमाम बन्दे उस के सामने ह़ाज़िर किये जाएँगे, एक शख़्स भी न कहीं छुप सकेगा और न भाग सकेगा।

33-36 وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚۖ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ
نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝
سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

जिस अ़क़ीदा की बात अभी गुज़री है उस की अ़क़्ली दलील यह है कि बारिश न होने की वजह से ज़मीन मुर्दा हो जाती है, उस में कोई पौधा नहीं उगता। फिर अल्लाह तआ़ला बारिश भेजकर उसे ज़िन्दा करता है, उस में दाने उगाता है जिसे लोग खाते हैं, उस में खजूरों और अंगूरों के बहुत से बाग़ात पैदा करता है और जो पानी ज़मीन में चला जाता है अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुद्रत से उसे चश्मों की सूरत में दोबारा ज़मीन पर बहाता है।

आदमी इन तमाम नेअ़मतों से फ़ायदा उठाता है, फलों और दानों को खाता है और उन फलों में से किसी का रस निकालता है, तो किसी को सुखा लेता है यानी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से उन्हें इस्तेमाल करता है। यह नेअ़मतें क्या बन्दों से कहती नहीं हैं कि वह अपने ख़ालिक़ व मालिक का शुक्रिया अदा करें और क्या यह सारी बातें इस बात की दलील नहीं हैं कि अल्लाह तआ़ला इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

आयत नं० (36) में फिर अल्लाह तआ़ला ने इस ऐ़ब और आ़जिज़ी से अपनी पाकी बयान की कि वह इन्सानों को दोबारा पैदा नहीं कर सकता, क्योंकि वह तो क़ादिरे मुतलक़ है जिस ने तमाम नबातात और इन्सान को जोड़ा-जोड़ा यानी मुज़क्कर व मुवन्नस (Male, Female) पैदा किया, आसमानों और ज़मीन में पाई जाने वाली बहुत सी दूसरी चीज़ों को भी जोड़ा-जोड़ा पैदा किया, जिन की हमें ख़बर नहीं है।

37-39 وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ښ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝

मरने के बाद उठाये जाने की दूसरी दलील यह है कि अल्लाह तआ़ला दिन को रात से अलग कर देता है यानी दिन रुख़सत हो जाता है, रात अपना अंधेरा लाती है और हर चीज़ को ढ़ांक लेती है।

रात और दिन का इस तरह़ तर्तीब व इन्तिज़ाम के साथ एक दूसरे के बाद आते रहना और उस में ज़रा भी ख़लल न होना इस बात की दलील है कि वह ज़मीन व आसमान का मालिक इन्सानों को दोबारा

ज़िन्दा करने पर क़ादिर है।

तीसरी अ़क़्ली दलील सूरज का निकलना और डूबना है और 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' की ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से मरवी ह़दीस के मुताबिक़ दिन अ़र्श के नीचे जाकर रब्बुल् आ़लमीन को सज्दः करता है और नये दिन के लिए अपनी गर्दिश जारी रखने की इजाज़त माँगता है। जिस ग़ालिब (प्रभावी) व अ़लीम ज़ात ने उस सूरज के निज़ाम को क़ायम कर रखा है, जिस से सूरज मुँह नहीं मोड़ सकता वरना पूरा निज़ाम दरहम बरहम होकर दुनिया बर्बाद हो जाती। क्या वह इस पर क़ादिर नहीं है कि वह अपने ही हाथों पैदा किये हुए इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा न कर सके?

ह़ज़रत अबी ज़र (रज़ि०) से मरवी है कि "आप (सल्ल०) ने उन से पूछा जबकि सूरज डूब रहा था जानते हो कि यह कहाँ जाता है? मैंने जवाब दिया कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) बेहतर जानते हैं। फ़रमाया कि यह जाकर अ़र्श इलाही के नीचे सज्दः करता है और इजाज़त तलब करता है तो उसे इजाज़त दे दी जाती है। क़रीब है कि वह सज्दः करेगा मगर क़ुबूल न होगा तो उसे कहा जाएगा कि जिधर से आए हो उधर ही लौट जाओ तो वह मग़्रिब से तुलूअ़ होगा।" **(बुख़ारी)**

चौथी दलील ज़मीन के चारों ओर सूरज की गर्दिश है, जिस के मुताबिक़ वह अपने मुक़र्ररह अट्ठाईस मनाज़िल में पूरी पाबन्दी और तर्तीब व इन्तिज़ाम के साथ घूमता रहता है जिस की वजह से दिन, हफ़्ता, महीना और साल का ह़िसाब मालूम होता रहता है।

शुरु में चाँद पतूला होता है, फिर आहि़स्ता-आहि़स्ता बड़ा हो जाता है यहाँ तक कि चौदहवीं तारीख़ को पूरा बन जाता है। इस के बाद फिर छोटा होना शुरु हो जाता है यहाँ तक कि महीना के आख़िर में खजूर की पतूली सूखी और ज़र्द शाखों की तरह़ हो जाता है, जो ज़ात चाँद की इस ह़ैरत अंगेज़ गर्दिश पर क़ादिर है वह यक़ीनन तमाम इन्सानों को मौत के घाट उतार कर दोबारा ज़िन्दा करने और उन के आ़माल का ह़िसाब लेने पर क़ादिर है।

40 لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ

इस में अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़ज़ीम क़ुद्रत को इस तरह़ स्पष्ट किया है। यह नामुम्किन है कि सूरज और चाँद दोनों एक जगह जमा हो जाएँ और दोनों एक दूसरे के अ़मल में दख़्ल अन्दाज़ होने लगें। यह नामुम्किन है कि रात अपने मुक़र्रर वक़्त से पहले निकल कर दिन से आगे बढ़ जाए या दिन रात से आगे बढ़ जाए बल्कि दोनों अल्लाह की तद्बीर व ह़िक्मत के मुताबिक़ हमेशा एक दूसरे के बाद आते रहते हैं।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि सूरज, चाँद और सितारे आसमान के मदारे अ़ज़ीम में तैरते रहते हैं, वह आपस में टकराते नहीं हैं वरना क़ायनात के परखचे उड़ जाते और यह दुनिया तबाह व बर्बाद हो जाती।

41 وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ

अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुदरत की एक दलील यह भी है कि उस ने समुद्रों को इस क़ाबिल बनाया है कि उन में माल व अस्बाब से लदी हुई कश्तियाँ तैरती हुई एक शहर से दूसरे शहर जाती हैं।

पहली नाव ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की नाव थी, जिस में उन्होंने अल्लाह के हुक्म से अपने मोमिन पैरोंकारों को और उस वक़्त सरज़मीन पर पाये जाने वाले तमाम ह़ैवानात को सवार कर लिया था और तूफ़ान के अ़ज़ाब से उन के सिवा कोई नहीं बचा था।

42 وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝

मुजाहिद, क़तादा, इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और बहुत से मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि इस से मुराद ऊँट है, जिस के ज़रिये लोग ख़ुश्की (ज़मीनी) का रास्ता तय करते हैं।

पहले के ज़माने में अ़रब के लोग ऊँट को ख़ुश्की (ज़मीनी सफ़र) की नाव कहते थे। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का एक दूसरा क़ौल है कि इस से मुराद वह कश्तियाँ हैं जो कश्ती-ए-नूह़ के बाद बनाई गईं और क़ियामत तक बनी रहेंगी।

43-44 وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

इसमें अल्लाह तआ़ला ने बन्दों पर एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया है कि अगर वह चाहता तो उन्हें और उन की कश्तियों को मौजों के ह़वाले कर देता और चीख़ व पुकार की मोहलत न देता, लेकिन उस का करम कि वह उन्हें नहीं डुबोता और सलामती के साथ किनारे तक पहुँचाता रहता है, ताकि अपनी बाक़ी उ़म्रें ज़मीन पर गुज़ार कर दुनिया से रुख़सत हों।

45 وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

इसमें मुशिरकीन का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि जब उन से कहा जाता है कि तुम लोग जिन आफ़ात के दर्मियान घिरे हुए हो और जो ह़ालात भविष्य में तुम पर आने वाले हैं, उन से डरते हुए ईमान ले आओ तो वह लोग मुँह फेर कर चल देते हैं।

आयत की एक तफ़्सीर यह भी की गई है कि पिछले ज़मानों में जिन क़ौमों ने रसूलों को झुठलाया और जिस की वजह से उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ, उसी जैसे अ़ज़ाब से तुम लोग भी डरते रहो ओर आख़िरत के अ़ज़ाब से भी डरते रहो, तो मुशिरकीन इस धमकी पर कोई परवाह नहीं करते हैं।

46 وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मुशिरकीन का हमेशा से यह तरीक़ा रहा है कि जब भी उन के रब की तरफ़ से रसूलों के सच्चाई की दलील आई तो उन्होंने उस को झुठला दिया और ईमान लाने से इन्कार कर दिया।

मुशिरकीने मक्का का भी यही ह़ाल है कि उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत और दअ़वते तौह़ीद

की सच्चाई की हर दलील को पीठ पीछे कर दिया और अपने कुफ़्र व शिर्क पर ऐसे डटे हुए हैं कि उन के दिल पत्थर के हैं, उन में ख़ैर की कोई बात दाख़िल ही नहीं होती है।

47 وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ
إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

हसन बसरी (रह०) कहते हैं कि इस आयते करीमा में الَّذِينَ كَفَرُوا से मुराद यहूद हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने माल व दौलत से नवाज़ा था। जब उन से कहा जाता है कि वह मदीना के फ़क़ीरों और मुहताजों पर ख़र्च करें तो कहते हैं कि क्या हम उन्हें खिलाएँ जिन्हें अल्लाह चाहता तो खिलाता? यह तो खुली हुई गुमराही है कि हम से अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ करने को कहा जाता है।

बाज़ लोगों का ख़याल है कि इन से मुराद कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश हैं। हज़रत आ़स बिन वायल सहमी (रज़ि०) से जब कोई ग़रीब मुसलमान कुछ माँगता तो कहता कि अपने रब के पास जाओ, जिस पर ईमान लाये हो। ख़ाज़िन ने अपनी तफ़सीर में नक़्ल किया है कि अल्लाह ने तो उसे महरूम बना रखा है और मैं उसे खाने के लिए दूँ।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह यहूद मदीना, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश या दोनों ही क़िस्म के लोग ऐसी बात मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाने के लिए किया करते थे।

आयत नं० 48 से 70 तक

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً
وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ٚ
هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ
نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِىْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَلَمْ
اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِىْ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَضَلَّ
مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۚ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اَلْيَوْمَ
نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ
فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۗ
اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ۚ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(48) और कहते हैं कि ''यह वादा कब तक (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो।'' (49) यह तो बस एक चीख़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन्हें आ पकड़ेगी, जबकि आपस में झगड़ रहे होंगे। (50) फिर न तो वसीयत कर पाएँगे और न अपने घर वालों के पास लौट ही सकेंगे। (51) और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो अपनी क़ब्रों से (निकल कर) अपने 'रब' की ओर दौड़ पड़ेंगे। (52) कहेंगे, ''अफ़सोस उन! पर किसने हमें सोते हुए जगा दिया, यह वही चीज़ है जिसका रह़मान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था।'' (53) बस एक ज़ोर की चिंघाड़ होगी, फिर क्या देखेंगे कि सबके सब 'हमारे' सामने आ हाज़िर होंगे। (54) उस दिन किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा और तुम्हें वही बदला मिलेगा, जो तुम करते थे। (55) जन्नत वाले उस दिन अपने किसी न किसी काम में व्यस्त हो कर आनन्द ले रहे होंगे। (56) वे और उनकी पत्नियाँ छाए में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (57) उसमें उनके लिए मेवे होंगे, और जो चाहेंगे, (वह उन्हें मिलेगा) (58) उनको सलाम कहलाया जाएगा, बड़े रह़म वाले 'रब' की ओर से। (59) ''और ऐ मुजरिमों! आज तुम अलग हो जाओ। (60) क्या 'मैंने' तुमको ताकीद नहीं की थी, ''ऐ आदम की औलाद! शैतान की इबादत न करना वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।'' (61) और यह कि 'मेरी' ही इबादत करना यही सीधा रास्ता है। (62) और उसने तुममें से बड़ी आबादी को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते थे?'' (63) ''यह वही जहन्नम है जिसका तुम से वादा किया जाता रहा है। (64) जो इन्कार तुम किया करते थे, उसके बदले में आज इसमें दाख़िल हो जाओ।'' (65) आज 'हम' उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उनके हाथ हमसे बयान कर देंगे, और उनके पाँव गवाही देंगे, (66) और अगर 'हम' चाहें तो उनकी आँखें मिटा दें फिर वे रास्ते की ओर बढ़ें तो उन्हें कहां सुझाई देगा? (67) और अगर 'हम'. चाहें तो उनकी जगह उनके रूप बिगाड़ कर रख दें, फिर न यह आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।

(68) और जिसको 'हम' लम्बी उम्र देते हैं, उसको 'हम' उसकी ख़ल्क़त (संरचना) में उल्टा फेर देते हैं, तो क्या ये अक़्ल से काम नहीं लेते? (69) और 'हमने' इन (रसूल) को शेअ़र (कविता) नहीं सिखाया और न यह उनकी शान के मुनासिब (अनुकूल) है, यह तो एक याद दिहानी और स्पष्ट क़ुर्आन है; (70) ताकि 'वह' उस व्यक्ति को ख़बरदार कर दे जो ज़िन्दा हो, और इन्कार करने वालों पर हुज्जत (सत्यापित) हो जाए।

आयत नं० 48 से 70 तक की व्याख्या

48-49 وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝

इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाने के लिए यह भी कहा करते थे कि तुम लोग जो क़ियामत और जन्नत व जहन्नम की बात किया करते हो और हमें धमकियाँ देते हो, तो वह क़ियामत कब आएगी? यानी यह बात सिरे से ग़लत है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है, तो अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (49) में उन के इस मज़ाक का यह जवाब दिया कि वह तो एक चीख होगी जो उन्हें अचानक पकड़ लेगी, जबकि वह अपनी आ़दत के मुताबिक़ ख़रीद व फ़रोख़्त में लगे होंगे और एक दूसरे के साथ कारोबारी मामलात तय करने के लिए लड़ रहे होंगे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस चीख़ से मुराद पहला सूर है, जिसे ज़मीन पर रहने वाला हर आदमी सुनेगा और जो जहाँ होगा उस के असर से वहीं मर जाएगा।

50 فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝

इसीलिए इस में कहा गया है कि लोगों को इतनी भी मोहलत नहीं मिलेगी कि किसी को कोई वसीयत कर सकें या अपने बाल बच्चों के पास जाकर उन का ह़ाल मालूम कर सकें।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दूसरे मुह़द्दिसीन ने ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत अचानक आ जाएगी इस तरह कि दो आदमी कपड़ा फैला कर ख़रीद व फ़रोख़्त करना चाहते होंगे, न उसे ख़रीद व फ़रोख़्त कर पाएँगे, न ही उसे लपेट पाएँगे और क़ियामत क़ायम हो जाएगी जबकि आदमी पानी का हौज़ दुरुस्त कर रहा होगा, लेकिन वह इस में अपने जानवरों को पानी नहीं पिला सकेगा और क़ियामत आ जाएगी, जबकि आदमी अपनी ऊँटनी का दूध हाथ में लिए होगा और उसे पी न सकेगा और क़ियामत क़ायम हो जाएगी जबकि आदमी अपना खाना मुँह की तरफ़ ले जा रहा होगा और उसे खा न सकेगा"।

51-52 وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝

जब दूसरा सूर फूंका जाएगा तो सारे लोग दोबारा ज़िन्दा होकर मैदाने मह़शर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' की हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से मरवी ह़दीस के मुताबिक़ दोनों सूरों (आवाज़ो) के

दर्मियान चालीस साल का ज़माना होगा।

जो लोग दुनिया में क़ियामत और मरने के बाद उठाये जाने पर यक़ीन नहीं रखते थे, जब अपने आप को दोबारा ज़िन्दा पाएँगे और जिस अ़ज़ाब को झुठलाते थे उसे अपनी आँखों से देख लेंगे तो घबराहट से होश खो देगें और मारे दहशत के कहेंगे कि ऐ हमारी बद्नसीबी! हमें हमारी क़ब्रों से किस ने निकाला है कि जहन्नम जैसा ख़तरनाक और हैबतनाक अ़ज़ाब हमारी आँखों के सामने है? तो उन से मोमिनीन या फ़रिश्ते कहेंगे कि यह तो वही दिन है जिस का अल्लाह ने तुम से वादा किया था और जिस की ख़बर तुम्हें उस के सच्चे रसूलों ने दी थी और उसे तुम झुठलाते थे।

53-54 إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا
وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

यह वही दूसरा सूर होगा जिस का ज़िक्र अभी ऊपर आ चुका है और मक़्सूद यह बयान करना है कि अल्लाह तआ़ला के लिए इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करना और उन्हें मैदाने मह़शर की तरफ़ हांक कर ले जाना बहुत ही आसान है।

पहली चीख़ के ज़रिये तमाम ज़िन्दा लोग मौत के घाट उतार दिये जाएँगे और दूसरी चीख़ के ज़रिये दोबारा ज़िन्दा होकर मैदाने मह़शर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे, जहाँ काफ़िरों को उन के कुफ़्र का बदला दिया जाएगा और उन पर ज़र्रह बराबर भी जुल्म नहीं होगा, बल्कि दुनिया में उन्होंने जो कुफ़्र व शिर्क और जुल्म व गुनाह किया होगा उसी का पूरा-पूरा बदला उन्हें चुका दिया जाएगा।

55-58 إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝
لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ۝

काफ़िरों का ह़ाल व अन्जाम बयान करने के बाद अब अहले जन्नत पर अल्लाह का जो इन्अ़ाम व इक्राम होगा उसे बयान किया जा रहा है और इस के मुख़ातब भी काफ़िर होंगे, ताकि उन के लिए तैयार किये हुए अ़ज़ाबे अलीम को देख लेने के बाद जब अहले जन्नत के लिए तैयार किये हुए इन्अ़ामात का ज़िक्र सुनें तो उन का गम सख़्त हो जाए और उन की परेशानी आखिरी हद को पहुँच जाए।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस दिन अहले जन्नत अल्लाह की दी हुई नेअ़मतों से फ़ायदा उठाने में इस तरह़ मशगूल होंगे कि वह काफ़िरों और उन के बुरे अन्जाम से बिल्कुल ग़ाफ़िल हो जाएँगे चाहे वह उन के करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों। वह अपनी बीवियों के साथ दरख़्तों के साये में तकियों पर टेक लगाये आराम करेंगे, वहाँ उन्हें तरह-तरह के फल और हर वह नेअ़मत मिलेगी जिस की वह ख़्वाहिश करेंगे और बेह़द रह़म करने वाले रब की तरफ़ से उन्हें सलाम का पैग़ाम पहुँचेगा यानी अल्लाह तआ़ला उनकी तअ़ज़ीम के लिए उन्हें सलाम करेंगे।

59 وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला जब अहले जन्नत के लिए जन्नत का और अहले जहन्नम के लिए जहन्नम का

हुक्म दे देगा तो काफ़िरों से कहेगा कि ऐ वह लोगों! जिन्होंने कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों की वजह से अपने आप पर ज़ुल्म किया था, अब तुम लोग अहले जन्नत से अलग हो जाओ। अल्लाह तआ़ला ने अपने इस फ़ैसले को क़ुर्आन करीम की बहुत सी आयतों में बयान फ़रमाया है।

सूरः यूनुस की आयत नं० (28) में हैः

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ

"और वह दिन भी क़ाबिले ज़िक्र है जिस रोज़ हम उन सब को जमा करेंगे, फिर मुशरिकीन से कहेंगे कि तुम और जिन को तुम ने शरीक ठहराया था अपनी जगह ठहरो, फिर हम उन के आपस में फूट डाल देंगे"।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस फूट से मुराद यह है कि जब मोमिनीन जन्नत में भेज दिये जाएँगे तो काफ़िरों को इकट्ठा कर के बड़ी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ जानवरों की तरह़ जहन्नम की तरफ़ हांक कर ले जाया जाएगा और उस में ढ़केल दिये जाएँगे।

60-61 أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝

फिर अल्लाह तआ़ला उन से सज़ा के तौर पर कहेगा कि क्या मैंने अपने रसूलों की ज़बानी तुम्हें यह नसीह़त नहीं की थी कि तुम लोग शैतान की अ़िबादत न करो? इसलिए कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है, सिर्फ़ मेरी अ़िबादत करो, यही सीधी राह है। यही वह दीने इस्लाम है जो अपने मानने वालों को जन्नत तक पहुँचाता है।

62-64 وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

इस में इन्सानों से शैतान की दुश्मनी बयान करते हुए फ़रमाया गया है कि उस मरदूद ने तो बेशुमार लोगों को गुमराह किया है, इसलिए वह तुम्हारा दोस्त कैसे बन सकता है? क्या इतनी सी बात तुम्हारे दिल व दिमाग़ में नहीं आती है।

आयात नं० (63/64) में कहा गया कि ऐ अहले कुफ़्र व शिर्क! अब अपने अन्जाम को भुगतोगे और उस जहन्नम में दाख़िल हो जाओ जिस को तुम तमाम ज़िन्दग़ी भर झुठलाते रहे।

65 الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

कियामत के मैदान में काफ़िरों के एक ह़ाल को बताया गया है। जब काफिर अपने रब के पास पेश किये जाएँगे और अपने गुनाहों का इन्कार करने लगेंगे, तो अल्लाह तआ़ला उन के मुँह पर मुहर लगा देगा और उन के हाथों और पाँव को बोलने की ताकत दे देगा, जो उन के एक-एक करतूत की गवाही देंगे और उन जुर्मों की ख़बर देंगे जिन को वह दुनिया की ज़िन्दग़ी में करते रहते थे।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः हामीम सज्दः आयत नं० (21) में फ़रमाया हैः

وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ

"और वह लोग अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ शहादत क्यों दी? वह कहेंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताकत अ़ता फ़रमाई है जिस ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी है"।

66-67 وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला की रह़मत दुनिया में काफ़िर व मोमिन सब के लिए आ़म है, इसीलिए कुफ़्र व शिर्क के बावजूद अल्लाह काफ़िरों और मुश्रिकों को रोज़ी देता है और उन्हें दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी गुज़ार लेने का मौक़ा देता है।

अगर वह कुफ़्र व शिर्क पर दुनिया ही में उन की गिरफ़्त करता तो उन की आँखें छीन लेता, फिर वह अपने जाने पहचाने रास्तों पर भी न चल पाते और उन की सूरतों को बदल देता, न आगे जा पाते और न पीछे लौट पाते, लेकिन उस ने अपनी रह़मत की वजह से ऐसा नहीं किया।

68 وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝

जिसकी उ़म्र जितनी लम्बी होती जाती है, उस की ह़ालत दिन-ब-दिन उतनी ही खराब होती जाती है, उस का जिस्म घुलता जाता है, ज़ाती और अ़क़्ली कैफ़ियत बदलती जाती है यहाँ तक कि वह उस बच्चे की तरह़ हो जाता है जो अपनी पैदाईश के वक़्त जिस्मानी और अ़क़्ली तौर से मह़रूम होता है। तो जो क़ादिरे मुत्लक़ इन्सान को पैदाईश, बचपन, जवानी और बुढ़ापे के ह़ालात से गुज़ार कर मौत के घाट उतारने की कुद्रत रखता है तो क्या वह इस की कुद्रत नहीं रखता कि उसे दोबारा ज़िन्दा कर सके? अ़क़्लमन्दी की तो बात यही है कि वह यक़ीनन इस पर क़ादिर है।

69-70 وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ۝ لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

मुश्रिकीन कहा करते थे कि मुह़म्मद शायर है और क़ुर्आन उस की शायरी का नतीजा है। इस आयते करीमा में इन्हीं दोनों बातों को रद्द किया गया है कि न मुह़म्मद शायर हैं और न क़ुर्आन उन का बनाया हुआ है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने उन्हें शायरी नहीं सिखाई है कि वह शेअ़र कह सकें और न उन के मक़ामे नुबूव्वत के लिए यह मुनासिब है।

मन्सबे नुबूव्वत को शायरी पर क़यास (कल्पना) नहीं किया जा सकता है, क्योंकि शोअ़रा (कवि) तो झूठ बोलते हैं मुबालिग़ा (बड़ा चढ़ा कर) और ख़िलाफ़ वाक़िया बातें बयान करते हैं, जबकि क़ुर्आन अल्लाह की किताब है जिस से मक़्सूद यह है कि बन्दों को उन के पैदा करने वाले की बन्दग़ी की तरफ़ बुलाया जाए और कुफ़्र व सरकशी के बुरे अन्जाम से डराया जाए।

इसीलिए आयत नं० (70) में कहा गया है कि क़ुर्आन करीम नबी करीम (सल्ल०) पर इसलिए नाज़िल किया गया है ताकि वह ईमान व यक़ीन के ज़रिये ज़िन्दा और आबाद दिलों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराएँ और काफ़िरों के लिए उन के कुफ़्र व सरकशी की वजह से आख़िरत का अ़ज़ाब साबित हो जाए।

आयत नं० 71 से 83 तक

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا
مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ يُنْصَرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ
مُحْضَرُونَ ۝ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ
خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ
عَلِيمٌ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ۝ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ
مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

अनुवाद–

(71) क्या यह लोग ग़ौर नहीं करते कि 'हमने' अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से चौपाए पैदा किये, तो यह उनके मालिक हैं। (72) और उनको, उनके क़ाबू में कर दिया है, तो उनमें से कुछ तो उनकी सवारी के काम में आते हैं, और कुछ का ये (गोश्त) खाते हैं। (73) और उनके लिए उनमें कितने ही फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी फिर क्या ये शुक्र नहीं करते? (74) और उन्होंने अल्लाह के सिवा कितनों को मअ़बूद बना लिया, कि शायद उनको मदद पहुँचे; (75) (मगर) वे उनकी मदद नहीं कर सकते, हालाँकि वे उनके लश्कर की हैसियत से हाज़िर कर दिये जाएँगे। (76) तो उनकी बातें तुम्हारे लिए ग़म का कारण न बनें, 'हम' इनकी उन बातों को भी जानते हैं जो यह छिपाते हैं और उनको भी जो खुले तौर पर करते हैं। (77) क्या इन्सान ने देखा नहीं कि 'हमने' उसे नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया? फिर क्या देखते हैं कि वह खुला हुआ झगड़ालू बन गया; (78) और 'हमारे' लिए मिसालें बयान करता है, और अपनी पैदाइश को भूल जाता है, कहता है, ''हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है, जब कि वह बोसीदा (चूर-चूर) हो चुकी होंगी?'' (79) कह दीजिए, ''उनको 'वही' ज़िन्दा करेगा 'जिसने' उनको पहली बार पैदा किया था, और 'वह' हर एक की पैदाइश को खूब जानता है; (80) (वही है) 'जिसने' तुम्हारे लिए हरे भरे वृक्ष से आग पैदा की, फिर तुम उससे आग जलाते हो।'' (81) क्या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात की क़ुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखता, कि इन जैसों को पैदा करे? क्यों नहीं, और 'वह' तो बड़ा पैदा करने वाला, इल्म वाला है? (82) 'उसकी' शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे हुक्म देता है, कि 'हो जा' तो 'वह' हो जाती है। (83) तो पाक (महिमावान) है 'वह' जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है, और 'उसी' की ओर तुम लौट कर जाओगे।

आयत नं० 71 से 83 तक की व्याख्या

71-73 أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ
وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला के इन्आ़मात व एह़सानात का तक़ाज़ा यह है कि बन्दे सिर्फ़ रब्बुल् आ़लमीन की अ़िबादत करें और उस के सिवा किसी के सामने अपना सर न झुकाएँ। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने यहाँ फ़रमाया है कि चौपायों को हम ने पैदा किया है, हमारे सिवा कोई उन की पैदाइश पर क़ादिर नहीं, फिर हम ने उन्हें बन्दों के लिए मुसख़्ख़र कर दिया है, जिस तरह़ चाहते हैं बहैसियत मालिक उन में तसर्रुफ़ करते हैं।

बाज़ जानवरों को सवारी के तौर पर इस्तेमाल करते हैं और बाज़ का गोश्त खाते हैं। चमड़े, बाल और ऊन से फ़ायदा उठाते हैं और बाज़ जानवरों का दूध भी पीते हैं। इन तमाम नेअ़मतों का तक़ाज़ा यह है कि बन्दे अपने ख़ालिक़ व मालिक का शुक्र अदा करें, उसी की अ़िबादत करें और उस के सिवा दूसरों को अपना ह़ाजत रवा और मुश्किल कुशा न समझें।

74-75 وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ۝

लेकिन उस की बेअ़क़्ली का ह़ाल यह है कि वह रब्बुल् आ़लमीन के सिवा दूसरों को मअ़बूद (उपास्य) बनाते हैं और गुमान करते हैं कि मुसीबतों के वक़्त वही काम आएँगे। जबकि ह़क़ीक़त यह है कि वह उन के मदद की ज़र्रह बराबर भी क़ुद्रत नहीं रखते हैं, बल्कि उन पुजारियों को शैतान ने उन की ख़िद्मत, देखभाल और अ़िबादत के लिए मुक़र्रर कर दिया है।

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ۝ का एक मअ़ना यह भी बयान किया गया है कि जहन्नम में उपास्यों के बाद उन के पुजारी भी डाल दिये जाएँगे।

76 فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) की तसल्ली के लिए कहा जा रहा है कि मुशिरकीने मक्का लोगों को आप से दूर करने के लिए आप के बहुत से नाम रखते हैं, कभी शायर कहते हैं तो कभी जादूगर और कभी काहिन कहते हैं और कभी कहते हैं कि ऐ मुह़म्मद! तुम अल्लाह के रसूल नहीं हो, तो आप को उन की इन मज़ाक वाली बातों से ग़मग़ीन नहीं होना चाहिए हम उन के तमाम करतूतों से वाक़िफ़ हैं, वह हम से बचकर कहाँ जाएँगे, हम उन के कुफ़्र व शिर्क और घमण्ड का बदला उन्हें चुका कर रहेंगे।

77-79 أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ
قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِيْٓ أَنْشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝

इब्ने जरीर, इब्ने अल् मुन्ज़िर, इब्ने अबी ह़ातिम और ह़ाकिम ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है (और ह़ाकिम ने उसे सह़ी कहा है) कि "आ़स बिन वायल सहमी" एक गली सड़ी हड्डी लिये हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और उसे अपनी चुट्की से मसल कर फेंक दिया और कहा, ऐ मुह़म्मद! क्या अब इसे अल्लाह दोबारा ज़िन्दा करेगा? तो आप ने फ़रमाया, हाँ! इसे दोबारा उठाएगा और तुम्हें भी वह मौत देगा, फिर ज़िन्दा करेगा, फिर जहन्नम में दाख़िल कर देगा।

इसी वाक़िये के बाद सूरः यासीन की यह आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं।

अल्लाह तआ़ला इन्सान को एक ह़क़ीर नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा करता है, फिर उसे बड़ा करता है यहाँ तक कि वह भरपूर जवान आदमी बन जाता है, लेकिन वह अपने घमण्ड के नशे में अपनी ह़क़ीक़त को भूल जाता है, अल्लाह तआ़ला के साथ दूसरों को भी साझीदार बनाने लगता है और कहने लगता है, यह कैसे मुम्किन है कि मर जाने के बाद लोग क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे। ह़ालांकि उसे सोचना चाहिए कि जिस मालिक ने उसे पहली बार एक ह़क़ीर नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा किया है वह यक़ीनन इस पर क़ादिर है कि उसे दोबारा पैदा करे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत का अ़त्फ़ आयत नं० (71) أَوَلَمْ يَرَوْا पर है और दोनों का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने नेअ़मतें पैदा कीं, ताकि इन्सान अपने रब का शुक्र अदा करे, लेकिन उस ने उस की नाशुक्री की और उस ने इन्सान को ह़क़ीर पानी के एक क़त्रे से पैदा किया ताकि वह अपने रब के लिए झुके, लेकिन उस ने घमण्ड से काम लिया और शुब्हा करने लगा।

80 الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ۝

मौत के बाद उठाये जाने की एक दलील यह भी है कि अल्लाह तआ़ला दरख़्त को पानी से पैदा करता है जो बढ़कर हरा-भरा हो जाता है, फिर आखिर में ज़माने के साथ सूखी लकड़ी बन जाता है और ईधन के काम आता है। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला जो चाहता है करता है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है, उसे कोई उस के किसी काम से रोक नहीं सकता है।

'क़तादह' कहते हैं कि जो अल्लाह तआ़ला दरख़्त से आग पैदा करने पर क़ादिर है, वह यक़ीनन इन्सान को दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है कि इस से मुराद वह पेड़ हैं जिस की दो शाखों के आपस में टकराने से आग पैदा हो जाती है तो जो ख़ालिक़े कायनात हरे पेड़ से आग निकाल सकता है वह यक़ीनन इन्सान को दोबारा पैदा करने पर कुद्रत रखता है।

81-83 أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ
إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

मरने के बाद उठाये जाने की एक तीसरी दलील आसमानों और ज़मीन की पैदाइश है यानी जो ज़ात आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर क़ादिर है वह यक़ीनन इस इन्सान को दोबारा पैदा करने पर कुद्रत रखता है। वह तो वह है जो शब्द **'कुन'** से जो चाहता है पैदा करता है।

वह ज़ात अकेली है जो हर चीज़ का मालिक है और जिस चीज़ में चाहता है अपनी मर्ज़ी और इरादे के मुताबिक़ करता है, वह हर चीज़ से पाक है और हर ख़ूबी और अच्छाई के साथ है और जब क़ियामत आएगी तो सब को दोबारा ज़िन्दा होकर उसी के पास लौट कर जाना है ताकि वह ख़ालिक़े क़ायनात हर एक को उस के किये का बदला दे।

(भाग–37)

सूर–ए–साफ़्फ़ात

(सूरः नं. 37)

तफ़्सीर सूरः साफ़्फ़ात

नाम-

सूरः की पहली आयत में शब्द **'अल् साफ़्फ़ात'** आया है, यही इस का नाम रख दिया गया है। 'साहिबे मुहासिनुल् तन्ज़ील' ने नक़्ल किया है कि इस आयते करीमा में फ़रिश्तों की सिफ़ात और अल्लाह तआला की तौहीद ज़िक्र की गई है। इसी से इस सूरः का नाम **'अल् साफ़्फ़ात'** रख दिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

कुर्तुबी लिखते हैं कि यह सूरः सब के नज़्दीक मक्की है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का यही कहना है।

आख़िरी मक्की दौर की सूरतों की तरह इस में भी कुफ़्फ़ारे मक्का की मुख़ालिफ़त उरूज पर नज़र आती हैं। नबी करीम (सल्ल०) और सहाबा-ए-किराम बड़े हालात से दो चार थे, उस वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का को धमकी दी जा रही है और उन से कहा जा रहा है कि एक दिन आएगा कि नबी और उन के सहाबा ग़ालिब (प्रभावी) होंगे और मक्का वालों को ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा। धमकी के साथ कुर्आन करीम ने अपने ख़ास अन्दाज़ में तौहीद व आख़िरत का अक़ीदा भी बयान किया है और मुख़्तलिफ़ तरीक़े से उन्हें ईमान की तर्ग़ीब भी दिलाई है।

आयत नं० 1 से 32 तक

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا
السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۣالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا
وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ
لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۝ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝ وَاَقْبَلَ
بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ
مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۤ اِنَّا لَذَآىِٕقُوْنَ ۝ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝

अनुवाद-

(1) क़तार बाँध कर (पंक्ति बद्ध) खड़े होने वाले (फरिश्तों) की क़सम; (2) फिर झिड़क कर डाँटने वालों की; (3) फिर ज़िक्र (क़ुर्आन की) तिलावत करने वालों की; (4) कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही है। (5) जो आसमानों और ज़मीन और इनके बीच की चीज़ों का रब है और सूरज के निकलने की जगहों का भी रब है। (6) बेशक 'हमने' ही दुनिया के आसमान को सितारों की ज़ीनत से सजाया, (7) और हर सरकश शैतान से उसकी हिफ़ाज़त की। (8) "वे मल-ए- आ़ला'' (सर्वोच्च दरबार) की ओर कान न लगा सकें और हर ओर से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं। (9) वे धुत्कारे जाते हैं, और उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अ़ज़ाब है। (10) मगर, (यह और बात है कि) जो कोई कुछ चोरी से उचक लेना चाहता है (फ़रिश्तों की कोई बात को) तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है। (11) तो उनसे पूछिए, क्या उनको पैदा करना मुश्किल है या जितनी खल्क़त (सृष्टि) हमने बनाई है उनका? 'हमने' उनको लेसदार मिट्टी से पैदा किया है। (12) बल्कि तुम तअ़ज्जुब (आश्चर्य) में हो और यह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (13) और जब उनको नसीहत की जाती है, तो नसीहत क़ुबूल नहीं करते, (14) और जब कोई निशानी देखते हैं तो उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं, (15) और कहते हैं, ''यह तो खुला हुआ जादू है।'' (16) क्या जब 'हम' मर जाएँगे मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे? (17) और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी? (जो गुज़र चुके हैं) (18) कह दीजिए,''हाँ! और तुम ज़लील भी होगे।'' (19) तो वह बस एक ही डाँट होगी, तो उस वक़्त ये देखने लगेंगे। (20) और कहेंगे, ''हम पर अफ़सोस! यह तो बदले का दिन है।'' (21) यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे, (22) इकट्ठा करो, उन लोगों को जो ज़ुल्म करते थे और उनके जोड़ीदारों को भी, और उनको भी जिनकी यह इबादत किया करते थे; (23) अल्लाह को छोड़ कर, फिर इन सबको जहन्नम की राह दिखाओ। (24) और उनको ठहराए रखो कि उनसे (कुछ) पूछना है; (25) ''क्या बात है, ''कि तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते हो?'' (26) बल्कि वे तो आज बड़े फरमांबरदार बन गये

हैं। (27) और एक-दूसरे की ओर रुख़ करते हुए पूछेंगे; (28) कहेंगे, ''तुम तो हमारे पास दाएँ (और बाएँ) से आते थे।'' (29) वे कहेंगे, ''(नहीं,) बल्कि तुम तो खुद ही ईमान लाने वाले न थे। (30) और हमारा तो तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम सरकश लोग थे। (31) तो हम पर हमारे 'रब' का हुक्म पूरा हो कर रहा, अब हम मज़े चखेंगे। (32) तो 'हमने' तुम को भी बहकाया (और) हम तो खुद ही बहके हुए थे।

आयत नं० 1 से 32 तक की व्याख्या

1 وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ

अल्लाह तआला ने इस सूरः के शुरु में फ़रिश्तों की क़सम खाकर अपनी ज़ात को साबित किया है।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, मुजाहिद और क़तादा वग़ैरहुम का ख़याल है कि **'अल् साफ़्फ़ात'** से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो आसमान में अपने रब के सामने सफ़ें (क़तार) बाँध कर खड़े रहते हैं।

'मुस्लिम' की रिवायत में है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या तुम लोग उसी तरह़ सफ़ें नहीं बाँधे होगे, जिस तरह़ फ़रिश्ते अपने रब के पास सफ़ें बाँधते हैं? लोगों ने पूछा, फ़रिश्ते अपने रब के सामने किस तरह़ सफ़ें बाँधते हैं? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगली सफ़ों को पूरी करते हैं और सफ़ में एक दूसरे से मिले रहते हैं।"

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम लोग ऐसे सफ़ (क़तार) बाँधा करो जैसे फ़रिश्ते बारगाहे इलाही में सफ़ बाँधे रहते हैं। तुम लोग सब से पहले अगली सफ़ पूरी किया करो और सफ़ में ख़ूब मिलकर खड़े हुआ करो"। **(मुस्लिम)**

'अल् जाज़िरात' से मुराद तो वह फ़रिश्ते हैं जो बादलों को हांकते हैं या वह जो लोगों के दिलों में नेकी और भलाई का इल्हाम कर के गुनाहों से रोकते हैं। **'अल् तालियाति ज़िक्रा'** से मुराद वह फ़रिश्ते हैं, जो अम्बिया (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़ कर सुनाते हैं।

2-5 فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۗ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۗ

फ़रिश्तों की क़सम खाकर इन्सानों के उ़र्फ़े आ़म के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने उन के ज़ेहनों में यह बात बिठानी चाही कि अल्लाह एक है, उस का कोई साझी नहीं, वही हर एक का पैदा करने वाला और सब को रोज़ी देने वाला है, वही आसमानों और ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ का रब और वही मश्रिक़ व मग़्रिब का रब है।

आसमान और ज़मीन का वजूद और जब से दुनिया क़ायम है शम्स व क़मर का मुकम्मल इन्तिज़ाम अच्छे ढंग से चलते रहना और उस में ज़र्रह बराबर फ़र्क़ न आना इस बात की खुली दलील है कि इन का पैदा करने वाला मौजूद है और वह एक है जो मालिके कुल है और वही अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ इन में तसर्रुफ़ करता है, किसी दूसरे का कोई दख़ल नहीं है।

6-9 إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝ لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝

अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत और उस के इ़ल्म व ह़िक्मत की निशानी में से यह भी है कि उस ने आसमाने दुनिया को सितारों से सजा दिया है। यह सितारे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हैं, उन में से कुछ एक जगह जमे हैं, कुछ छोटे हैं और कुछ बड़े। यह सितारे रात के वक़्त देखने में रौशन और चमकदार नज़र आते हैं और आसमाने दुनिया को ज़ीनत बख़्शते हैं और अंधेरी रातों में देखने में भले नज़र आते हैं।

इन सितारों का दूसरा मक़्सद यह है कि इन के ज़रिये शैतान को मारकर आसमान की बातें सुनने से उन्हें दूर रखा जाता है, ताकि ग़ैब की बातें सुनकर ज़मीन पर रहने वाले काहिनों को न बताएँ। शयातीन जब भी इस की कोशिश करते हैं, फ़रिश्ते उन्हें आसमान के हर ओर से अंगारों के ज़रिये मारते हैं ताकि उन्हें आसमान की बातें सुनने से दूर रखें, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उन शैतानों को हमेशा का अ़ज़ाब दिया जाएगा।

10 إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि शयातीन आसमान के क़रीब पहुँच जाते और फ़रिश्ते जो बातें आपस में करते उन्हें सुनने की कोशिश करते और उन की बाज़ बातें सुनकर जान जाते कि दुनिया में क्या होने वाला है। फिर काहिनों (नुजूमी) को आकर वही बातें बता देते और कहते कि वह ग़ैब की बातें जानते हैं, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें आसमान के क़रीब तक पहुँचने से अंगारों के ज़रिये रोक दिया यानी वह जब भी ऐसी कोशिश करते हैं, उन्हें अंगारों के ज़रिये मारा जाता है जिन की वजह से कभी तो जल जाते हैं और कभी नहीं तो बाज़ बातें काहिनों को बता देते हैं।

बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि शयातीन वह़्य इलाही को हरग़िज़ नहीं सुन पाते, बल्कि कभी फ़रिश्तों की बाज़ दूसरी बातें सुन लेते हैं। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः शुअ़रा आयत नं० (212) में फ़रमाया है إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ "श्यातीन वह़्य इलाही को सुनने से रोक दिये गये"।

सूरः मुल्क आयत नं० (5) में फ़रमाया है وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِّلشَّيَاطِينِ "हम ने सितारों को शयातीन के मारने का ज़रिया बनाया है"।

सूरः ह़िज्र आयत नं० (17/18) में फ़रमाया है وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۝ "हम ने उसे हर मरदूद शैतान से मह़फ़ूज़ रखा है। हाँ, मगर जो चोरी छुपे सुनने की कोशिश करे तो उस के पीछे दहकता हुआ शोला लगता है।"

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार आप (सल्ल०) सह़ाबा के साथ बैठे हुए थे कि अचानक एक सितारा टूटा और रौशनी हो गई। आप (सल्ल०) ने सह़ाबा से पूछा कि जाहिलियत के दौर में जब ऐसा होता था तो तुम क्या कहते थे? सह़ाबा कहने लगे हम तो यही कहते थे कि कोई बड़ा आदमी मर गया या पैदा हुआ है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह किसी की ज़िन्दगी

या मौत की वजह से नहीं टूटता, बल्कि हमारा रब किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो अ़र्श को उठाने वाले अ़र्श तस्बीह़ करते हैं, फिर आसमान वाले फ़रिश्ते जो उनके क़रीब होते हैं, फिर उन से क़रीब वाले तस्बीह़ करते हैं यहाँ तक कि ‘सुब्ह़ानल्लाह’ की आवाज़ उस आसमान तक पहुँचती है। फिर छठे आसमान वाले सातवें आसमान वालों से पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया, वह उन्हें ख़बर देते हैं।

इस तरह़ हर निचले आसमान वाले ऊपर आसमान वालों से पूछते हैं यहाँ तक कि यह ख़बर आसमाने दुनिया तक पहुँचती है और शैतान उचक कर सुनना चाहते हैं तो उनको मार पड़ती है और वह कुछ बात लाकर अपने यारों (काहिनों) पर डाल देते हैं, वह ख़बर तो ह़क़ होती है मगर वह उसे बदल कर घटा बढ़ा देते हैं।” **(तिर्मिज़ी)**

11 فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि आप मुश्रिकीन से पूछिये जो मरने के बाद उठाये जाने का इन्कार करते हैं कि जिस्मानी ताक़त में वह ज़्यादा हैं या आसमान व ज़मीन और पहाड़?

इस का जवाब इस के सिवा उन के पास कुछ नहीं कि वह वाक़ई कमज़ोर जिस्म रखते हैं और आसमानों व ज़मीन और पहाड़ उन से कहीं ज़्यादा मज़बूत और बड़े हैं जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है और यह बात उन्हें इस ह़क़ीक़त के एतिराफ़ पर मजबूर करती है कि अल्लाह की क़ुद्रत से कोई चीज़ जुदा नहीं है, इसलिए इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करना भी उस के लिए बेहद आसान है।

आयत के आख़िर में इन्सानों के कमज़ोरी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा गया है कि हम ने तो उसे चिकनी और कमज़ोर मनी (वीर्य) से पैदा किया है। वह अपनी इस ह़क़ीक़त को आसमान व ज़मीन और पहाड़ों की क़ुव्वत को मद्देनज़र रखते हुए क्यों नहीं ईमान लाता कि जो अल्लाह इन आसमानों, ज़मीनों और पहाड़ों को पैदा करने पर क़ादिर है वह यक़ीनन इन्सानों को दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है।

12-19 بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ۝
فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि मुश्रिकीने मक्का के इन्कार और मरने के बाद दोबारा उठाये जाने पर आप को इसलिए तअ़ज्जुब हो रहा है कि दलायल की रौशनी में यह बात स्पष्ट है, लेकिन उन की आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ है। इसीलिए इतनी स्पष्ट ह़क़ीक़त का इन्कार कर रहे हैं और आप का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं और जब उन्हें नसीह़त की जाती है कि मरने के बाद दोबारा उठाये जाने के अ़क़ीदे का इन्कार करें तो उन पर इस का कोई असर नहीं पड़ता और जब उन्हें क़ायनात में मौजूद कोई ऐसी निशानी दिखाई जाती है कि मरने के बाद उठाये जाने के अ़क़ीदे का इन्कार न करें तो उन पर इस का कोई असर नहीं पड़ता और जब उन्हें क़ायनात में मौजूद कोई ऐसी निशानी दिखाई जाती है जो अल्लाह की इस क़ुद्रत पर दलालत करती है तो उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं और कहते हैं कि मुह़म्मद की हर बात

और उस का हर अ़मल जादू है, भला यह भी कोई अ़क़्ल से लगती हुई बात है कि जब हम मर जाएँगे और गल सड़कर मिट्टी में मिल जाएँगे और हमारी हड्डियाँ रह जाएँगी तो हमें और हमारे बाप दादों को दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा।

आयात नं० (18/19) में अल्लाह तआ़ला ने उन की इस हैरत आमेज़ बात का जवाब दिया है कि हाँ, तुम यक़ीनन उठाये जाओगे और उस वक़्त तुम्हें ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा और कोई दलील व हुज्जत तुम्हारे काम नहीं आएगी। वह तो एक चीख़ होगी जो इन्सानों के दोबारा ज़िन्दा होने के लिए हुक्मे इलाही से तअ़बीर होगी, तो सारे इन्सान अचानक ज़िन्दा होकर अपने रब के पास खड़े हो जाएँगे और क़ियामत की हौलनाकियों को देखने लगेंगे।

20-23 وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝

क़ियामत का इन्कार करने वालों को जब उस दिन अपनी हलाकत व बर्बादी का यक़ीन हो जाएगा और सब कुछ अपनी आँखों से देख लेंगे तब मरने के बाद दोबारा उठाये जाने का यक़ीन हो जाएगा और मौत का एतिराफ़ करते हुए कहेंगे कि यही है बदले का वह दिन जिस का हम दुनिया में इन्कार करते थे और फ़रिश्ते और मोमिनीन उन से नाराज़गी के तौर पर कहेंगे कि हाँ, यही वह दिन है जिस को तुम लोग दुनिया में झुठलाया करते थे और अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से कहेगा कि ले जाओ इन ज़ालिमों को और इन जैसे तमाम मुजरिमीन को और इन तमाम झूठे उपास्यों को जिन की यह लोग अल्लाह के सिवा अ़िबादत (पूजा) करते थे और इन सब को जहन्नम की राह पर डाल दो।

24-28 وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से कहेगा कि इन मुजरिमों को मैदाने महशर में रोक लो, ताकि इन से इन के अ़क़ायद व आ़माल के बारे में पूछा जाए। फिर इन से नाराज़गी के तौर पर पूछा जाएगा कि तुम लोग दुनिया की तरह यहाँ भी एक दूसरे की मदद क्यों नहीं कर रहे हो? उन के पास इस का कोई जवाब न होगा, उस दिन तो ज़िल्लत व रुस्वाई से इन की गर्दनें झुकी होंगी और इन में से जो कमज़ोर लोग दुनिया में घमण्डियों की पैरवी करते रहे थे, उन घमण्डियों से पूछेंगे कि तुम लोग दुनिया में हमें अपनी पैरवी पर मजबूर करते थे तो आज क्यों नहीं हमारी मदद के लिए आगे बढ़ते और जहन्नम का अ़ज़ाब हम से टाल देते हो?

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह कुछ तैयार कर रखा है जो न किसी आँख ने देखा होगा और न ही किसी कान ने सुना होगा, न ही किसी इन्सान के दिल में इस का गुमान गुज़रा होगा"।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

29-32 قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾ فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

शयातीन या कुफ़्र के सरदार जवाब देंगे कि तुम मोमिन (ईमान वाले) कब थे कि हम ने तुम्हें कुफ़्र पर आमादा किया और नेक कब थे कि हम ने तुम्हें बुराई की राह पर डाल दिया और अहले तौह़ीद कब थे कि हम ने तुम्हें शिर्क पर मजबूर किया? तुम लोग हमारे अधीन नहीं थे कि हम तुम्हें ताक़त के बलबूते पर कुफ़्र से निकाल कर ईमान में दाख़िल कर देते, तुम तो ज़ुल्म व शिर्क और कुफ़्र में ह़द से बढ़े हुए थे, इसलिए आज अल्लाह का वादा हम सब के लिए साबित हो गया कि لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ

"ऐ इब्लीस! हम तुझ से और तेरी पैरवी करने वालों से जहन्नम को भर देंगे।" **(सूरः साद आयत नं० 85)**

अब हम सब को उस अ़ज़ाब का मज़ा चखना है जिस की धमकी अल्लाह ने हमें दे रखी थी और अपनी मुजरिमाना ह़रकतों का एतिराफ़ करते हुए कहेंगे कि हाँ! हम ने तुम्हें गुमराह किया था, हम चूंकि गुमराह थे इसलिए चाहा कि तुम भी हमारे जैसे हो जाओ, लेकिन हम ने तुम्हें मजबूर नहीं किया था, बल्कि कुफ़्र व शिर्क की राहों को तुम्हारे लिए सुन्दर बना दिया था, ताकि तुम उन पर हमारे साथ चल पड़ो।

आयत नं० 33 से 70 तक

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ
أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ۝ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۝
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۝ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝
كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَكْنُونٌ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ
الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَئِنَّا لَمَدِينُونَ ۝ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ
تَاللَّهِ إِنْ كِدْتَ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۝ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً
لِلظَّالِمِينَ ۝ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ۝ فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ۝ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ۝ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝ فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝

अनुवाद-

(33) इस तरह उस दिन वे सब अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझीदार होंगे। (34) 'हम' मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (35) उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि ''अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं तो ये घमंड में आ जाते थे।'' (36) और कहते थे, ''क्या हम एक दीवाने शायर के कहने पर अपने मअ़बूदों को छोड़ दें?'' (37) बल्कि वह सत्य लेकर आए हैं और रसूलों की पुष्टि करते हैं। (38) बेशक अब तुमको दुःख देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखना है। (39) और तुमको उसी का बदला दिया जाएगा जो कुछ तुम करते रहे हो। (40) मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं। (41) यही लोग हैं जिनके लिए निश्चित रोज़ी है। (42) स्वादिष्ट फल होंगे, और उन्हें सम्मानित किया जाएगा। (43) नेअ़मत के बाग़ों में, (44) तख़्तों पर आमने-सामने (बैठे होंगे;) (45) बहती हुई शराब की जाम उनके बीच गर्दिश करवाई जाएगी; (46) बिल्कुल सफेद पीने वालों के लिए स्वाद ही स्वाद। (47) न उससे सर दर्द होगा, और न उससे मदहोश होंगे। (48) और उनके पास औ़रतें होंगी जो निगाहें नीची रखती होंगी और आँखें बड़ी-बड़ी। (49) मानो वे सुरक्षित अंडे हैं। (50) फिर वे एक-दूसरे की ओर रूख कर के सवाल करेंगे। (51) उनमें से एक कहने वाला कहेगा ''मेरा एक साथी था; (52) (जो) कहा करता था, ''क्या तुम भी तस्दीक़ करने वालों में से हो? (53) क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये तो क्या हमें वास्तव में बदला दिया जाएगा? (54) वह कहेगा, ''क्या तुम झाँक कर देखना चाहते हो?'' (55) फिर वह झाँकेगा तो उसे दोज़ख़ के बीच में देखेगा। (56) कहेगा, ''अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे तबाह ही कर देने वाले थे। (57) और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) न होता तो मैं भी उन लोगों में से होता जो हाज़िर किये गये हैं। (58) क्या (यह बात नहीं है कि) अब हम मरने वाले नहीं हैं। (59) अतः पहली मौत थी जो आ चुकी, और अब हमें

कोई अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा। (60) बेशक यही बड़ी कमियाबी है। (61) ऐसी ही (नेअ़मतों के लिए) अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए। (62) क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क्कूम (काँटेदार) का वृक्ष? (63) 'हमने' उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए फ़ित्ना बना रखा है। (64) वह एक वृक्ष है (जो) जहन्नम के निचले हिस्से में ऊगेगा। (65) उसके गाभे ऐसे होंगे मानों शैतानों के सर, (66) तो वे उसी को खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। (67) फिर उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी दिया जाएगा (68) फिर उनको जहन्नम की ओर लौटाया जाएगा। (69) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया। (70) तो वे उन्हीं के नक़्शे क़दम (पद चिन्हों) पर दौड़े चले जा रहे हैं।

आयत नं० 33 से 70 तक की व्याख्या

33-37 فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ۝ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने शैतानों, इन्कार करने वालों के सरदारों और उन की पैरवी करने वालों के बारे में ख़बर दी है कि जिस तरह़ दुनिया में यह तमाम लोग गुमराही में शरीक थे आज अ़ज़ाबे इलाही का मज़ा चखने में भी शरीक रहेंगे। हम कुफ़्र व शिर्क करने वाले मुजरिमों के साथ ऐसा ही बर्ताव किया करते हैं।

मुश्रिकीने कुरैश से जब हमारे नबी कहते थे कि तुम लोग इस बात का इक़रार कर लो कि अल्लाह के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं तो घमण्ड से उन की गर्दनें अकड़ जाती थीं और आपस में एक दूसरे से कहते थे कि क्या हम एक पागल की शायराना बातों में आकर जिसे वह 'कुर्आन' का नाम देता है अपने मअ़बूदों (उपास्यों) से अलग हो जाएँ?

आयत नं० (37) में अल्लाह तआ़ला ने उन काफ़िरों की बात का रद्द किया और अपने नबी की तस्दीक़ करते हुए फ़रमाया कि मेरे नबी जो कुछ तुम्हें पढ़कर सुनाते हैं वह शायर नहीं, बल्कि अल्लाह की किताब है और इसी दअ़वते तौह़ीद को लेकर मब्अूस हुए हैं जो तमाम नबियों और रसूलों की दअ़वत रही है।

38-39 إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

मैदाने मह़शर में अल्लाह तआ़ला उन काफ़िरों और मुश्रिकों से कहेगा जिन के बारे में जहन्नम का फ़ैसला हो चुका होगा कि अब तुम जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब में हमेशा के लिए मुब्तिला कर दिये जाओगे और यह अन्जामे बद् तुम्हारे बुरे आ़माल ही का नतीजा है।

40-47 إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝
عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۝ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ۝ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۝ لَا فِيهَا غَوْلٌ
وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝

उस आग के अज़ाब से अल्लाह तआ़ला ने अपने उन मोमिन बन्दों का अलग कर दिया है जो केवल उसी की अिबादत करते हैं, उन्हें उन का रब जन्नत में दाख़िल कर देगा और बेशुमार नेअ़मतों से नवाज़ेगा। उन नेअ़मतों में से यह भी है कि उन्हें बिला नाग़ा सुबह़ व शाम उ़म्दह और पाकीज़ह रोज़ी मिलती रहेगी।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः मरयम की आयत नं० (62) में फ़रमाया हैः

وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝

"वहाँ उन्हें सुबह़ व शाम रोज़ी मिलती रहेगी"।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (42) में فَوَاكِهُ से इस तरफ़ इशारा है कि अहले जन्नत का खाना-पीना भूक और प्यास की वजह से नहीं, बल्कि केवल लज़्ज़त ह़ासिल करने के लिए होगा और वहाँ वह बहुत ही बाइ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, वह आमने-सामने आरामदे कुर्सियों पर बैठे होंगे और उन्हें शराब की जारी नहरों से प्याले भर कर पेश किये जाएँगे। ऐसी शराब जिस से उन्हें न कोई बीमारी होगी न ही दर्दे सर और न उस की वजह से उन की अ़क़्ल ही मारी जाएगी।

48-49 وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَكْنُونٌ ۝

अहले जन्नत इतने ज़्यादा ख़ूबसूरत होंगे कि उन की बीवियाँ उन के सिवा दूसरे मर्दों पर निगाह नहीं डालेंगी। वह बीवियाँ बड़ी ख़ूबसूरत और बड़ी आँखों वाली होंगी और इतनी ख़ूबसूरत और गोरी होंगी जैसे शुतुरमुर्ग के साफ़ सुथरे अण्डे होते हैं।

50-57 فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝ يَقُولُ أَإِنَّكَ لَمِنَ
الْمُصَدِّقِينَ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ۝ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُطَّلِعُونَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ
فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كِدْتَ لَتُرْدِينِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝

अहले जन्नत आमने-सामने कुर्सियों पर बैठकर शराब पिएँगे, बातें करेंगे और दुनिया में उन पर जो बीतती थी एक दूसरे से बयान करेंगे। जन्नत में ख़िद्मत गुज़ार उन के सामने आ जा रहे होंगे और तरह़-तरह़ की ऐसी नेअ़मतें पेश कर रहे होंगे जिन्हें दुनिया में से किसी आँख ने न देखा था, न किसी कान ने सुना था और न किसी दिल में उन का ख़याल तक गुज़रा था।

उस वक़्त उन में से एक जन्नती कहेगा कि एक मुश्रिक मेरे साथ दुनिया में कभी बैठता था, वह आख़िरत को झुठलाते हुए कहता था कि क्या तुम इस बात को मानते हो कि हम जब मर कर गल सड़ जाएँगे और मिट्टी में मिल जाएँगे तो हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे और हमें हमारे आ़माल का बदला चुकाया जाएगा? तो आज हमारे रब ने अपना वादा सच कर दिखाया, हमें जन्नत में दाख़िल कर दिया है और मेरे उस साथी को जहन्नम में ढ़केल दिया है।

क्या तुम लोग उसे जहन्नम में देखना चाहते हो? फिर वह जन्नती जहन्नम में झांकेगा तो उसे बीच जहन्नम में देखेगा और हैरत व दहशत के मिले जुले जज़्बात से मुतास्सिर होकर उस जहन्नमी को पुकारेगा और उस से कहेगा कि अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तुम मुझे जहन्नम में पहुँचा देते और अगर मुझ

पर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम न होता तो आज मैं भी तुम्हारे साथ जहन्नम में नज़र आता।

58-70 أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ۝ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِمِثْلِ
هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۝ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ۝ إِنَّهَا
شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ۝ فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ
مِنْهَا الْبُطُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ۝ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ۝ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا
آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝ فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝

फिर वह जन्नती अपने अहले जन्नत साथियों से मुख़ातब होकर ख़ुशी से कहेगा कि दोस्तो! हम ने दुनिया में मौत का जो मज़ा चखा था, उस के बाद हमें यहाँ जन्नत में मौत नहीं आएगी। यहाँ की ज़िन्दगी हमेशा की है और इस की नेअ़मतें हमेशा की हैं, बेशक मर्द मोमिन की यही सब से बड़ी कामियाबी है जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है और लोगों को इसी के ह़ासिल करने के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में कोशिश करते रहना चाहिए।

अहले जन्नत का ह़ाल ज़िक्र करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अहले जहन्नम का ह़ाल ज़िक्र किया है कि ऊपर अहले जन्नत के लिए जिन नेअ़मतों का ज़िक्र हुआ वह बेहतरीन नेअ़मत होगी या बद्तरीन कड़वे ज़क्कूम का दरख़्त होगा जिसे हम ने ज़ालिम कुफ़्फ़ारे कुरैश की आज़्माईश का सबब बना दिया है, जो कहते हैं कि भला यह भी अ़क़्ल में आने वाली बात है कि कोई ऐसा भी दरख़्त है जो आग में पैदा होता है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, हाँ 'ज़क़्कूम' ऐसा पेड़ है जो जहन्नम की तह में पैदा होता है, जिस की शाखें आग में लहलहाती हैं और जिस के फल शैतानों के सरों की तरह़ बड़े और बुरे मालूम होते हैं। जहन्नमी जब भूक की शिद्दत में तड़पेंगे तो अपने आगे सिवाय ज़क़्कूम के कुछ भी खाने के लिए न पाएँगे, वह इसी को खाएँगे और अपने पेट भरेंगे और खाने के बाद जब उन्हें प्यास लगेगी तो पीने के लिए पीप और ग़न्दगी मिला हुआ तेज़ गर्म पानी दिया जाएगा, जो उन की आंतों को काट कर बाहर निकाल देगा।

हर ह़ाल में उन का ठिकाना जहन्नम ही होगा, जहाँ भड़कती हुई आग के शोले उन के जिस्मों को जलाते रहेंगे। जैसा कि सूरः रह़मान आयात नं० (43/ 44) में आया हैः

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝

"यह वह जहन्नम है जिसे मुजरिम झूठा जानते थे, मुजरिमीन उस के और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान चक्कर लगाएँगे"।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अहले जहन्नम इस सख़्त अ़ज़ाब में इसलिए डाले गये कि उन्होंने अपने बाप-दादों को हिदायत की राह से भट्का हुआ पाया तो उन्हीं के पीछे हो लिए और शिर्क व कुफ़्र और गुमराही में उन की पैरवी करने लगे।

आयात नं० (69/70) में यह बात बयान की गई है कि मुश्रिकीने मक्का बिना ग़ौर व फ़िक्र के अपने बाप दादों की पैरवी में जमे रहे।

आयत नं० 71 से 107 तक

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ ۝ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ
الْمُخْلَصِينَ ۝ وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ
فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝
وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝ أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝
فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝ فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝ مَا
لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ ۝ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ۝ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۝
قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۝ وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ رَبِّ هَبْ
لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ
يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝ وَنَادَيْنَاهُ أَن يَا إِبْرَاهِيمُ ۝ قَدْ صَدَّقْتَ
الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ۝

अनुवाद-

(71) और उनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी अक्सर गुमराह ही हुए थे (72) और 'हमने' उनमें सचेत करने वाले भेजे। (73) तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ, जिन्हें सचेत किया गया था। (74) मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं। (75) और नूह ने 'हमको' पुकारा था, तो हम कैसे अच्छे हैं पुकार को सुनने वाले। (76) और 'हमने' उन्हें और उनके घर वालों को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया। (77) और 'हमने' उनकी नस्ल को ऐसा किया कि वह बाक़ी रह गये। (78) और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका अच्छा ज़िक्र छोड़ा, (79) ''सलाम हो नूह पर तमाम जहान वालों में।'' (80) हम अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (81) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (82) फिर 'हमने' दूसरों को डुबो दिया। (83) और उन्हीं गिरोह में से इब्राहीम भी थे (84) (याद करो), जबकि वह अपने रब के समक्ष भला-चंगा दिल लेकर आए; (85) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''तुम किस चीज़ की पूजा करते हो?'' (86) क्या अल्लाह को छोड़ कर मनगढ़त मअ़बूदों (उपास्यों) को चाह रहे हो? (87) तो तुमने सारे संसार के रब के बारे में क्या गुमान (समझ) कर रखा है? (88) फिर उन्होंने एक नज़र तारों पर डाली, (89) और कहा, ''मैं तो बीमार (निढ़ाल) हूँ।'' (90) तो वे उनसे पीठ फेर कर लौट गये। (91) फिर (इब्राहीम) चुपके से उनके देवताओं के पास गये और कहा, ''तुम खाते क्यों नहीं?'' (92) तुम्हें क्या हुआ, तुम बोलते भी नहीं?'' (93) फिर उन पर टूट पड़े और दाहिने हाथ से उन पर चोटें लगाईं। (94) तो वे लोग झपटते हुए उसकी ओर आए। (95) उन्होंने कहा, ''क्या तुम लोग ऐसों को पूजते हो, जिन्हें खुद ही तराशते हो, (96) हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उन्हें भी, जिन्हें तुम बनाते हो?'' (97) वे कहने लगे ''इसके लिए एक इमारत (अग्नि कुण्ड) तैयार करो फिर उसे भड़कती हुई आग

में डाल दो!'' (98) तो उन लोगों ने उनके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया। (99) और (इब्राहीम ने) कहा, ''मैं अपने रब की ओर जाता हूँ, वह मेरी रहनुमाई करेगा। (100) ऐ रब! मुझे (औलाद) अ़ता कर सआ़दतमंदों में (भाग्यशाली) से।'' (101) तो 'हमने' उनको एक बड़े ह़लीम (सहनशील) लड़के की ख़ुशख़बरी दी, (102) तो जब वह उसके साथ चलने -फिरने की उम्र को पहुंचा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ बेटे! मैं, सपने में देखता हूँ कि ''मैं तुमको ज़ब्ह़ (बलि) कर रहा हूँ, तो तुम्हारी क्या राय है'' उन्होंने कहा, ''अब्बा जान! कर गुज़रिए जिसका हुक्म आप को दिया जा रहा है, आप इन्शाअल्लाह मुझे सब्र (धैर्य) करने वाला पाएँगे'' (103) फिर जब दोनों ने अपने आप को (रब के सामने) झुका दिया और उन्होंने उसे (इस्माईल को) कनपटी के बल लिटा दिया। (104) और 'हमने' उनको पुकारा,''ऐ इब्राहीम! (105) आपने सपने को सच कर दिखाया, 'हम' भले लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।'' (106) बेशक, यही खुली आज़माइश थी। (107) और 'हमने' फ़िद्या (मुक्तिप्रतिदान) दिया उनको, एक बड़ी क़ुर्बानी देकर।

आयत नं० 71 से 107 तक की व्याख्या

71-74 وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ ۝ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मुश्रिकीने मक्का से पहले भी बहुत सी क़ौमें गुमराह हुईं और हम ने उन्हें उन के बुरे आ़माल से डराने के लिए अम्बिया व रसूल भेजे और जिन्होंने उन की दअ़वत को क़ुबूल नहीं किया उन्हें हलाक कर दिया और अपने उन नेक बन्दों को उस अ़ज़ाब से बचा लिया।

75-77 وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝

इस में सात अम्बिया-ए-किराम और उन की क़ौमों के वाक़िआ़त बयान किये गये हैं।

सब से पहला वाक़िआ़ ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) और उन की क़ौम का है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नूह ने हमें अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मदद के लिए पुकारा (जैसा कि सूरः मूमिनून आयात नं० (26 और 39) में आया है قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ

"नूह़ ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर और सूरतुल् क़मर आयत नं० (10) में आया है فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ "नूह़ ने अपने रब से दुआ़ की कि मैं मग़्लूब हूँ तू मेरी मदद फ़रमा"।

तो हम ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली (इसलिए कि हमारे सिवा कौन किसी परेशान ह़ाल की पुकार सुन सकता है) उन्हें और उन के ख़ानदान वालों को (उन की बीवी और बेटे के सिवा) तूफ़ाने अ़ज़ीम से बचा लिया और उन की नस्लों को दुनिया में बाक़ी रखा। चुनाँचे क़ौमे नूह़ की हलाकत के बाद दोबारा पूरी दुनिया नूह़ के तीन बेटों साम, ह़ाम और याफ़िस की औलाद से आबाद हुई।

78-81 وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने नूह़ के बाद आने वाली क़ौमों में उन का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा कि सब उन का नाम इ़ज़्ज़त व एह़तिराम के साथ लेते हैं और उन के लिए सलामती व रह़मत की दुआ़ करते हैं और क़ियामत तक उन का ज़िक्र क़ौमों में बाक़ी रहेगा और फ़रमाया कि हम अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का नेक काम यह था कि उन्होंने अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने की पूरी कोशिश की और अपनी क़ौम को साढ़े नौ साल तक अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाते रहे।

इसीलिए आयत नं० (81) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नूह़ हमारे सच्चे ईमान वाले बन्दों में से थे। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा से ईमान की फ़ज़ीलत व अहमियत साबित होती है, इसीलिए ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) जैसे अ़ज़ीम नबी की तअ़रीफ़ के लिए उन की इसी सिफ़त को बतौर ख़ास बयान किया गया है।

82 ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝

आयत नं० (82) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन के और उन के अहले ईमान रिश्तेदारों और मानने वालों के सिवा बाक़ी तमाम काफ़िरों को हम ने तूफ़ान में डिबो दिया।

ह़ज़रत समुरह (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के तीन बेटे थे, ह़ाम, साम और याफ़िस। ह़ाम, ह़ब्श का बादशाह था, साम अ़रब का और याफ़िस रूम का”। **(तिर्मिज़ी)**

83-87 وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝
أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

दूसरा वाक़िआ़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इब्राहीम ईमान और तौह़ीद की तरफ़ लोगों को बुलाने में नूह़ की राह पर ही थे। वह भी अपने रब की तरफ़ ऐसे दिल के साथ मुतवज्जेह हुए थे जो शिर्क व शक की ख़ुराफ़ात से पाक और फ़ित्री तौर पर तौह़ीद की तरफ़ मुकम्मल तौर से मायल था।

इसीलिए उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम की बुत परस्ती पर रोक लगाई और उन से कहा कि क्या तुम अल्लाह के ख़िलाफ़ रोक लगाते हुए अपने लिए उस के सिवा दूसरों को मअ़बूद बनाते हो और अब रब्बुल् आ़लमीन की अ़िबादत छोड़कर दूसरों की पूजा करते हो? ह़ालांकि यह बात तुम्हारे लिए वहम व गुमान में भी नहीं आनी चाहिए कि उस के सिवा कोई दूसरा अ़िबादत का ह़क़्दार हो सकता है।

88-96 فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝ فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۞ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۞ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ۞ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ۞
وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۞

मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि वह लोग इ़ल्म नुजूम (सितारा परस्त) के क़ायल थे, इसीलिए ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने सितारों की तरफ़ देखकर कहा कि मुझे ऐसा लगता है कि अगर मैं तुम्हारे साथ मेले में शरीक हूँगा तो बीमार पड़ जाऊँगा, ताकि लोग उन्हें मेले में शिरकत से मअ़ज़ूर समझें, चुनाँचे ऐसा ही हुआ लोगों ने उन्हें उन के ह़ाल पर छोड़ दिया और मेले में शिरकत के लिए चले गये।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) मूर्तियों के पास पहुँचे और उन का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि अगर तुम अ़िबादत के ह़क़्दार हो तो तुम्हारे सामने इतने सारे खाने रखे हैं उन्हें क्यों नहीं खाते हो? लेकिन मूर्तियों ने न खाना खाया और न उन की बात का जवाब दिया, तो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) कहने लगे कि ऐ मूर्तियों! तुम बोलते क्यों नहीं हो? फिर अपने दाएँ हाथ में मौजूद कुल्हाड़ी से उन्हें मार-मार कर उन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। मुशिरकीन जब शाम को वापस आए और अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को देखा तो फ़ौरन ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के पास पहुँचे और उन से पूछताछ करने लगे।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कहा कि यह कैसी तुम्हारी बेअ़क़्ली है कि जिन मूतिर्यों को तुम अपने हाथों से तराशते हो उन्हीं की पूजा करते हो, ह़ालांकि तुम्हारा और तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) का ख़ालिक़ अल्लाह है, इसलिए अ़िबादत का ह़क़्दार भी सिर्फ़ वही है।

97-98 قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۞ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۞

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की क़ौम के पास जब अपने शिर्क व कुफ़्र की कोई दलील बाक़ी नहीं रही और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की स्पष्ट दलील ने उन्हें लाजवाब कर दिया तो उन्होंने ज़ुल्म व ज़ोर की राह अपनाई, जो ह़क़ की आवाज़ को दबाने के लिए ज़ालिमों का हमेशा से तरीक़ा रहा है। उन्होंने तय किया कि एक बहुत बड़ी आग जलाकर इब्राहीम को उस में डाल दिया जाए।

आयत नं० (98) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन्होंने इब्राहीम के ख़िलाफ़ साज़िश की और उन को नीचा दिखाना चाहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें ही ज़लील व रुस्वा किया, उन की साज़िश नाकाम रही और आग इब्राहीम के लिए ठंडी और सलामती बन गई।

99 وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۞

आग से निजात पाने के बाद ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने वतन से हिज्रत का फ़ैसला कर लिया और वहाँ से निकलकर शाम के इलाक़े ह़र्रान पहुँच गये और जाते हुए अपने रब से इस उम्मीद का इज़्हार किया कि वह उन्हें उन के मक़्सद में कामियाब करेगा और उन्हें ईमान व तौह़ीद पर साबित क़दम रखेगा।

100-107 رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۞ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۞ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ

فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ
مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ
إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने शाम की सरज़मीन में पहुँचने के बाद दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मुझे एक बेटा अ़ता फ़रमा जो अजनबी जगह में मेरे दिल बहलाने का सामान बने और तेरी फ़रमाँबरदारी व बन्दगी में मेरी मदद करे। अल्लाह ने उन की दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और हाजरा के पेट से हज़रत इस्माईल (अ़लै०) पैदा हुए।

फिर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से माँ और बेटे को एक वीरान जगह पर पहुँचा दिया, जहाँ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से 'आबे ज़मज़म' मुहैया कर दिया और 'क़बीला जुर्हुम' को लाकर बसा दिया। हज़रत इस्माईल (अ़लै०) जब जवान हुए तो अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को ख़्वाब में बज़रिये वह्य हुक्म दिया कि वह अपने रब की रज़ामन्दी के लिए अपने चहीते बेटे की क़ुर्बानी दें, उन्होंने अपना ख़्वाब बेटे से बयान किया और उन से मश्वरह तलब किया तो बेटे ने कहा, अब्बा जान! आप को जो हुक्म हुआ है उसे कर गुज़रिये इन्शा अल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) बेटे को साथ लेकर मिना की तरफ़ चल पड़े और जमरात की जगह पहुँचकर उन्हें पेशानी के बल लिटा दिया और छुरी उन की गर्दन पर रख दी, अचानक देखते क्या हैं कि वहाँ एक मेंढ़ा खड़ा है, एक ग़ैबी आवाज़ आई कि आप बेटे को छोड़ दीजिए और मेंढ़े को ज़ब्ह़ कीजिए।

आयत नं० (104) से आगे तक यही बयान किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को आवाज़ दी और कहा कि आप ने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया और बन्दगी और अ़ज़ीम तरीन सब्र की दलील पेश कर दी। अब आप बेटे को ज़ब्ह़ न कीजिए हम एहसान और अ़मल करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं, बेशक यही वह खुली और साफ़ आज़्माईश है जिस के ज़रिये मुख़्लिस लोगों की पहचान हो जाती है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं आयते करीमा (106) में इस तरफ़ इशारा किया गया है कि ख़्वाब पर अ़मल में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का इम्तिहान था, ताकि वह अपने अ़ज़ीज़ तरीन बेटे की क़ुर्बानी देकर अल्लाह से अपनी मुहब्बत और बन्दगी का सुबूत दें, चुनाँचे जब वह इस इम्तिहान में कामियाब हो गये तो अल्लाह ने एक मेंढ़ा भेज दिया, ताकि बेटे के बदले उसे ज़ब्ह़ करें।

आयत नं० 108 से 146 तक

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ
نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝
وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۝ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝ اللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝
وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ۝ وَبِاللَّيْلِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ
الْمُدْحَضِينَ ۝ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝ لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ
سَقِيمٌ ۝ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ۝

अनुवाद–

(108) और 'हमने' छोड़ दिया उनका ज़िक्र, पीछे आने वालों में। (109) ''सलाम हो इब्राहीम पर।'' (110) इसी तरह 'हम' भले काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। (111) बेशक, वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (112) और 'हमने' उनको इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी भी दी (कि वह) नबी और नेक लोगों में से (होंगे); (113) और 'हमने' उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल की थीं, और उन दोनों की नस्लों में कुछ मुहसिन (भले) भी हैं, और कुछ अपने आप पर खुला ज़ुल्म करने वाले भी है। (114) और 'हमने' मूसा और हारून पर फ़ज़्ल (उपकार) किया। (115) और 'हमने' उनको और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत से निजात दिया, (116) और उनकी मदद की, तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे। (117) और 'हमने' उन दोनों को स्पष्ट किताब दी, (118) और 'हमने' उन्हें सीधा रास्ता दिखाया। (119) और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ा। (120) सलाम हो मूसा और हारून पर। (121) बेशक हम भले लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं, (122) वे दोनों हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (123) और इल्यिास भी रसूलों में से थे। (124) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''क्या तुम डर नहीं रखते?'' (125) क्या तुम 'बअ्ल' (देवता) को पुकारते हो, और सबसे बड़े पैदा करने वाले को छोड़ देते हो? (126) अल्लाह को, जो तुम्हारा रब है, और तुम्हारे बाप-दादा का भी; (127) फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो वे हाज़िर किये जाएँगे। (128) मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे (कि अज़ाब में नहीं डाले जाएँगे); (129) और 'हमने' बाद में आने वालों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ दिया। (130) 'सलाम' हो इल्यिास पर। (131) 'हम' भले लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (132) वे 'हमारे' ईमान वाले बंदों में से थे। (133) और लूत भी रसूलों में से थे। (134) जब 'हमने' उनको और उनके सभी साथियों को (अज़ाब से) नजात दी। (135) सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने

वालों में से थी। (136) फिर बाक़ी सबको 'हमने' तहस-नहस करके रख दिया। (137) और तुम उन (की बस्तियों) पर से गुज़रते रहते हो सुबह को भी; (138) और रात को भी, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? (139) और यूनुस भी रसूलों में से थे। (140) जब वह भाग कर एक भरी हुई नाव में जा पहुँचे। (141) उस समय उन लोगों ने क़ुरअ (पर्ची) डाला, तो वह उसमें परास्त हो गये। (142) फिर मछली ने उनको निगल लिया, (इस हाल में कि) और वह अपने आप को ही मलामत कर रहे थे। (143) तो अगर वह तस्बीह़ (गुणगान) करने वालों में से न होते, (144) तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक वह उसके पेट में रहते। (145) फिर 'हमने' उनको एक चटियल ज़मीन में डाल दिया, इस ह़ाल में कि वह निढ़ाल थे। (146) और 'हमने' उन पर एक बेलदार वृक्ष उगाया।

आयत नं० 108 से 146 तक की व्याख्या

108-111 وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने इब्राहीम के बाद आने वाली क़ौमों में उन का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा। यहूदी, नसरानी और मुसलमान सभी उन का नाम इ़ज़्ज़त व एहतिराम के साथ लेते हैं, उन के लिए सलामती और रह़मत की दुआ़ करते हैं और क़ियामत तक उन का अच्छा ज़िक्र क़ौमों में बाक़ी रहेगा।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम नेक अ़मल करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का नेक अ़मल यह था कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ अपनी क़ौम को बुलाने की वजह से उन्हें आग में डाल दिया गया, जिस से अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल ख़ास से उन्हें निजात दी। इसीलिए आयत नं० (111) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इब्राहीम हमारे सच्चे ईमान वाले बन्दों में से थे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा से ईमान की फ़ज़ीलत व अहमियत साबित होती है, इसलिए कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) जैसे अ़ज़ीम नबी की तअ़रीफ़ के लिए उन की इसी सिफ़त को बयान किया गया है।

112-113 وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) जब बूढ़े हो गये और उन की बीवी 'सारह' भी बूढ़ी हो गईं, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस्ह़ाक़ (अ़लै०) की बशारत दी। यह बशारत वह फ़रिश्ते लेकर आये थे जो क़ौमे लूत की बस्ती को उलटने के लिए भेजे गये थे। फ़रिश्तों ने जब दोनों को बशारत दी तो सारह (अ़लै०) अपनी और अपने शौहर के बड़े उ़म्र होने की वजह से तअ़ज्जुब से कहने लगीं ءَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَٰذَا بَعْلِي شَيْخًا "क्या मुझे बच्चा होगा ह़ालांकि मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ और मेरे शौहर भी बूढ़े हो चुके हैं"। **(सूरः हूद आयत नं० 72)**

आयात नं० (112/113) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने इब्राहीम को इस्ह़ाक़ की बशारत

दी, जो बड़े होकर नेक और नबी होंगे और हम ने इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपनी बरकतें नाज़िल कर दीं यानी उन की औलाद खूब बढ़ेगी, उन में अम्बिया का सिल्सिला जारी रहेगा, उन में कुछ लोग बादशाह होंगे और हम उन्हें ऐसी नेअ़मतें देंगे जो दूसरों को नहीं मिलेंगी।

अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि इब्राहीम व इस्हाक़ की औलाद में कुछ तो नेक मोमिनीन होंगे और कुछ लोग कुफ़्र व गुनाह कर के अपने आप पर खुला ज़ुल्म करने वाले होंगे।

उ़ल्मा का इख़्तिलाफ़ है कि ज़बीह़ कौन थे, इस्माईल या इस्ह़ाक़?

'कुर्तुबी' और कुछ दूसरे लोगों का ख़याल है कि ज़बीह़ इस्ह़ाक़ थे, लेकिन अक्सर उ़लमा का यही कहना है कि वह 'इस्माईल' थे। यह यहूद व नसारा की चाल है कि उन्होंने झूठी रिवायात गढ़ कर मुसलमानों में फैला दिया, ताकि नबी करीम (सल्ल०) से दो ज़बीह़ों, इस्माईल और अ़ब्दुल्लाह का बेटा होने का शर्फ़ छीन लें।

ह़ाफ़िज़ इब्ने अल् क़य्यिम (रह़०) ने अपनी किताब 'ज़ादुल मआ़द' में लिखा है कि सह़ीह़ क़ौल के मुताबिक़ सह़ाबा व ताबिअ़ीन और दूसरे उ़ल्मा के नज़्दीक ज़बीह़ इस्माईल हैं। इस्ह़ाक़ का ज़बीह़ होना बीस वजह से ग़लत है। यह क़ौल यहूद व नसारा से लिया गया है, ह़ालांकि यह दावा ख़ुद उन की किताब के ए़तिबार से ग़लत है। तौरेत में है, अल्लाह ने इब्राहीम को हुक्म दिया कि वह अपने इकलौते बेटे को ज़ब्ह़ करें और अहले किताब और मुसलमान सभी जानते हैं कि इस्माईल ही उन के इकलौते थे। इस्ह़ाक़ को ज़ब्ह़ कहने वालों को इस बात से धोका हुआ है कि उन के पास मौजूद तौरेत में है कि (आप अपने बेटे इस्ह़ाक़ को ज़ब्ह़ कीजिए) ह़ालांकि यह झूठ और यहूद का संशोधन है।

यहूद ने ह़सद करते हुए यह आरोप लगाया है ताकि औलाद इस्माईल को यह शर्फ़ ह़ासिल न हो। इस्ह़ाक़ ज़बीह़ कैसे हो सकते हैं, अल्लाह तआ़ला ने तो उम्मे इस्ह़ाक़ को इस्ह़ाक़ और याक़ूब की बशारत एक साथ दी थी।

فَبَشَّرنَا هَا بِاِسْحَاقَ وَّمِنْ وَرَاءِ اِسْحَاقَ يَعْقُوبَ

"हम ने सारह को इस्ह़ाक़ की बशारत दी और इस्ह़ाक़ के बाद उन के बेटे याक़ूब की" यह बात मुह़ाल है कि उन्हें इस्ह़ाक़ के बेटे याक़ूब की बशारत दी जाए, फिर इस्ह़ाक़ को ज़ब्ह़ करने का हुक्म दिया जाए।

इस में कोई शुब्हा नहीं कि ज़बीह़ मक्का में थे, इसीलिए दस तारीख़ को कुर्बानी, सफ़ा व मरवह के दर्मियान सअ़ी और रमि जिमार जैसे आ़माल ह़ज ज़बीह़ और उन की माँ की याद में मक्का मुकर्रमा में अदा किये जाते हैं और इस में कोई शुब्हा नहीं कि मक्का में इस्माईल और उन की माँ हाजिरा थीं न कि इस्ह़ाक़ और उन की माँ सारह़।

यही वजह है कि ज़ब्ह़ करने की जगह और ज़माना (बैत-ए-ह़राम) के क़रीब है, जिसे इब्राहीम व इस्माईल ने बनाया था और मक्का में कुर्बानी करना ह़ज बैतुल्लाह के शआ़यर में से क़रार पाया, जिसे दोनों बाप बेटे ने बनाया था। अगर ज़ब्ह़ करने का अ़मल शाम में हुआ होता तो ह़ज व कुर्बानी के शआ़यर मक्का के बजाय शाम में अदा होते।

114-116 وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

चौथा वाक़िआ हज़रत मूसा व हारून (अ़लै०) का है।

अल्लाह तआ़ला ने उन्हें नुबूव्वत व रिसालत और दूसरी अ़ज़ीम नेअ़मतों से नवाज़ा, उन्हें और उन की क़ौम बनी इस्राईल को फ़िरऔन और फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्म और उन की ग़ुलामी से निजात दी और उन पर उन्हें ग़ल्बा अ़ता किया, इस तौर पर कि फ़िरऔ़न ने जब एक बड़ी फ़ौज के साथ उन का पीछा किया तो अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल को बचा लिया और फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज को समुद्र में डिबो दिया।

हज़रत मूसा और हारून (अ़लै०) और उन की क़ौम पर एक बड़ा एह़सान यह था कि अब तक जो फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्म की चक्की में पिसे जा रहे थे, उन्हें अल्लाह तआ़ला ने इ़ज़्ज़त व ग़ल्बा दिया और ज़ालिम फ़िरऔ़नियों को समुद्र में डुबो दिया।

117-122 وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा व हारून पर यह भी एह़सान किया कि उन्हें तौरेत जैसी अ़ज़ीम किताब अ़ता की, जिस में शरीअ़त के अह़काम खोल कर बयान कर दिये गये थे और उन्हें सीधी राह पर डाल दिया यानी दीने इस्लाम का पैरोंकार बना दिया जो तमाम अम्बिया का दीन रहा है और उन दोनों का ज़िक्र-ए-ख़ैर आने वाली क़ौमों में बाक़ी रखा कि यहूदी व नसूरानी और मुसलमान सभी उन का नाम इ़ज़्ज़त व एह़तिराम से लेते हैं और उन के लिए सलामती व रह़मत की दुआ़ करते हैं।

आयत नं० (121) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम नेक अ़मल करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं और आयत नं० (122) में फ़रमाया कि वह दोनों हमारे सच्चे ईमान वाले बन्दों में से थे।

123-132 وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

पाँचवाँ वाक़िआ़ हज़रत इलियास (अ़लै०) का है, जिन का नाम 'बनी इस्राईल' की किताबों में 'ईलिया' आया है। उन का ज़माना हज़रत सुलेमान (अ़लै०) के बाद का था, उन्हें अल्लाह ने शहर 'बअ़लब्बैक' और उस के आस-पास रहने वाले 'बनी इस्राईल' के लिए उस वक़्त नबी बनाकर भेजा था जब उन में मूर्ति पूजा आ गई थी, लोग अल्लाह के बजाय मूर्तियों की पूजा करते थे और हर क़िस्म का नज़र व नियाज़ और क़ुर्बानी उन्हीं के नाम से करते थे और तौरेत के अह़काम को पीठ पीछे डाल दिया था।

हज़रत इलियास (अ़लै०) ने उन से कहा कि क्या तुम अल्लाह के अ़ज़ाब से डरते नहीं कि उस के

बजाय मूर्तियों की अ़िबादत करते हो? क्या तुम इस क़दर भोले हो गये हो कि अपने बड़े मूर्ति (बअ़ल) की पूजा करते हो और अल्लाह को भुला बैठे हो जो तुम्हारे और तुम्हारे पिछले बाप दादों का रब है?

लेकिन उन पर इस तक़रीर का कोई असर नहीं हुआ, उन्होंने अल्लाह के मानने का इक़रार नहीं किया और कुफ़्र की ह़ालत में ही मर गये तो अन्जामकार जहन्नम हुआ सिवाय उन चन्द नेक लोगों के जिन्होंने उन के ईमान की दअ़वत को क़ुबूल कर लिया था और उन की पैरवी की थी, उन्हें अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में दाख़िल कर दिया।

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने उन का ज़िक्र ख़ैर आने वाली क़ौमों में बाक़ी रखा कि हर साह़िबे ईमान उन का नाम इ़ज़्ज़त व एह़तिराम से लेता है, उन के लिए और उन के मानने वालों के लिए सलामती व रह़मत की दुआ़ करता है।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम नेक अ़मल करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं और इलियास हमारे सच्चे ईमान वाले बन्दों में से थे।

133-135 وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝

छठा वाक़िआ़ ह़ज़रत लूत (अ़लै०) का है, यह भी अल्लाह के रसूलों में से थे। इन्होंने भी अपनी क़ौम को तौह़ीद की दअ़वत दी और उन्हें उन के बद्तरीन अ़मल, अ़मल लवातुत (Homo Sex) से रोका, लेकिन उन की दअ़वत का उन पर कोई असर नहीं हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने तमाम बद्कारों को हलाक कर दिया, उन की बस्तियों को उलट दिया और ह़ज़रत लूत (अ़लै०) और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया सिवाय उन की बुढ़िया बीवी के जो काफ़िरों के साथ रह गई थी तो वह भी उन के साथ हलाक कर दी गई।

136-138 ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ۝ وَبِاللَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने लूत और उन के मोमिन साथियों के सिवा बाक़ी तमाम को हलाक कर दिया यानी उन की बस्ती को उलट दिया और ऊपर से पत्थरों की बारिश कर दी।

आयात नं० (137/138) में अहले मक्का से कहा गया कि तुम लोग उन बस्तियों के पास से कभी सुबह़ के वक़्त, कभी शाम के वक़्त गुज़रते हो और अ़ज़ाबे इलाही के जो आसार अब तक बाक़ी हैं उन्हें देखते हो, तो क्या तुम्हें यह बात समझ में नहीं आती कि अगर तुम भी अपने कुफ़्र व शिर्क पर जमे रहोगे तो तुम्हारा अन्जाम भी उन्हीं जैसा हो सकता है?

139-142 وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝
فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

सातवाँ वाक़िआ़ ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) का है। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ईराक़ के शहर नैनवा वालों के लिए नबी बनाकर भेजा था। उस ज़माने में नैनवा एक बड़ा शहर था, जहाँ एक लाख से ज़्यादा बनी

इस्राईल के लोग रहते थे, जिन्हें 'आशूरी' क़ैद कर ले गये थे। अल्लाह तआला ने उन्हीं की हिदायत के लिए 'हज़रत यूनूस' (अ़लै०) को नबी बनाकर फ़िलिस्तीन से 'नैनवा' भेजा था।

हज़रत यूनुस (अ़लै०) ने उन्हें ईमान की दअ़वत दी, लेकिन उन्होंने कुबूल नहीं किया तो हज़रत युनूस (अ़लै०) ने उन्हें अ़ज़ाब की धमकी दी और जब अ़ज़ाब आने में देर हुई तो हज़रत यूनुस (अ़लै०) नाराज़ और तंग दिल होकर शहर से निकलकर समुद्र की तरफ़ चल पड़े। जब बन्दरगाह पहुँचे तो वहाँ एक कश्ती कहीं रवाना होने के लिए तैयार थी, उस पर सवार हो गये। चूंकि उस का वज़न ज़्यादा था इसलिए समुद्र में जाकर रुक गई।

नाव खेने वाले की राय हुई कि कश्ती का वज़न कम करना ज़रूरी है वरना सारे लोग डूब जाएँगे, कुरअ़ अन्दाज़ी में हज़रत यूनुस (अ़लै०) का ही नाम निकला, चुनाँचे उन्हें लोगों ने समुद्र में फेंक दिया और एक बड़ी मछली ने आकर निगल लिया, इसलिए कि वह अपने रब की इजाज़त के बग़ैर अपनी क़ौम के पास से भाग गये थे।

143-146 فَلَوْلَآ أَنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلْمُسَبِّحِينَ ۝ لَلَبِثَ فِى بَطْنِهِۦٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَنَبَذْنَٰهُ بِٱلْعَرَآءِ وَهُوَ
سَقِيمٌ ۝ وَأَنۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हज़रत यूनुस (अ़लै०) चूंकि इस आज़्माईश से पहले कसरत से नमाज़ पढ़ते थे और हमेशा तस्बीह़ व तहलील और ज़िक्र व अ़िबादत में मशग़ूल रहते थे, इसीलिए अल्लाह ने उन पर रह़म किया और उन्हें لا اِلٰہَ اِلاّ انت سبحانک انی کُنتُ مِنَ الظّالِمِینَ के पढ़ने का हुक्म दिया। जिस की बरकत से मछली ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें समुद पर लाकर डाल दिया वरना क़ियामत तक मछली के पेट में ही रहते।

मछली के पेट में रहने की वजह से हज़रत यूनुस (अ़लै०) बीमार हो गये थे। अल्लाह तआ़ला ने उन की हिफ़ाज़त का यह सामान किया कि वहाँ फ़ौरन एक दरख़्त उग आया जिस के पत्ते उन पर साया करने लगे और उन्हें धूप और मक्खी से बचाने लगे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि अल्लाह ने उन के लिए एक दूध देने वाली हिरनी को मुसख़्ख़र कर दिया जो सुबह़ व शाम उन्हें दूध पिलाने के लिए उन के पास आ जाया करती यहाँ तक कि वह बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गये और अपनी क़ौम के पास वापस गये तो देखा कि वह सब मुस्लिम हो चुके हैं और उन के जाने के बाद उन्होंने अपने गुनाहों से तौबः कर ली थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन से अ़ज़ाब को टाल दिया था।

आयत नं० 147 से 182 तक

وَأَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝ فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَٰهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ۝ أَمْ خَلَقْنَا
الْمَلَٰٓئِكَةَ إِنَٰثًا وَهُمْ شَٰهِدُونَ ۝ أَلَآ إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ۝ وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ۝ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ۝
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ سُلْطَٰنٌ مُّبِينٌ ۝ فَأْتُوا بِكِتَٰبِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ
الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝ سُبْحَٰنَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَٰتِنِينَ ۝ إِلَّا مَنْ
هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّونَ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۝ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ۝ لَوْ أَنَّ عِندَنَا
ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَكَفَرُوا بِهِۦ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۝ إِنَّهُمْ لَهُمُ
الْمَنصُورُونَ ۝ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَٰلِبُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ فَإِذَا نَزَلَ
بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ۝ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ سُبْحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝
وَسَلَٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ۝

अनुवाद-

(147) और उनको भेजा एक लाख या उस से भी अधिक लोगों की ओर। (148) तो वे ईमान लाए
सो 'हम' भी उनको एक समय तक फ़ायदे देते रहे। (149) अब उनसे पूछो, ''क्या तुम्हारे रब के लिए तो
बेटियां हों और उनके अपने लिए बेटे? (150) या 'हमने' फ़रिश्तों को औ़रतें बनाया, और वह (उस वक़्त)
मौजूद थे? (151) सुनो, यह अपनी मनगढ़त बातें कहते हैं। (152) कि ''अल्लाह के औलाद है! और निश्चय
ही यह बिल्कुल झूठे हैं। (153) क्या उसने बेटों के मुक़ाबिले बेटियों को पसंद किया है। (154) तुम्हें क्या
हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (155) तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (156) या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट
प्रमाण है। (157) तो लाओ अपनी किताब, अगर तुम सच्चे हो? (158) और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों
के बीच नाता जोड़ रखा है, हालांकि जिन्नों को भली-भाँति मालूम था कि वे ज़रूर हाज़िर किये जाएँगे। (159)
अल्लाह पाक (महान) है उन बातों से, जो ये बयान करते हैं। (160) मगर अल्लाह के ख़ास बन्दें (अज़ाब
में नहीं डाले जाएँगे)। (161) तो तुम और वे, जिनकी तुम पूजा करते हो। (162) उससे किसी को बहका
नहीं सकते, (163) मगर उसको जो जहन्नम में जाने वाला है। (164) और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हममें
से हर एक का एक मक़ाम (ठिकाना) निश्चित है। (165) और हम ही सफ़बंदी (पंक्तिबद) करते हैं। (166)
और तस्बीह़ (पाकी बयान) करने वाले हैं। (167) और ये लोग कहा करते थे; (168) कि ''अगर हमारे
पास पहले के लोगों की शिक्षा होती। (169) तो हम अल्लाह के खास बन्दे होते,'' (170) मगर उन्होंने
उसका इन्कार कर दिया तो वे जल्द ही उनको जान लेंगे। (171) और 'हमारे' अपने बन्दों (के हक़) में जो
रसूल बना कर भेजे गये, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है, (172) कि वही मदद किये हुए हैं। (173)
और 'हमारी' फ़ौज ही ग़ालिब (विजई) हो कर रहेगी। (174) तो इनकी ओर से अपना ध्यान हटा लीजिए,
एक समय तक के लिए। (175) और उन्हें देखते रहिए, वे भी बहुत जल्द देख लेंगे। (176) क्या यह
'हमारे' अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं? (177) तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी

सुबह होगी जिन्हें सचेत किया जा चुका है। (178) और उनकी ओर से ध्यान हटा लीजिए एक समय तक के लिए। (179) और देखते रहिये, ये भी बहुत जल्द देख लेंगे। (180) पाक (महान) है तुम्हारा रब्बुल इज़्ज़त (प्रताप का स्वामी) उन बातों से जो कुछ ये बयान करते हैं। (181) और सलाम हो रसूलों पर; (182) और सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं (जो) सारे संसार का रब है।

आयत नं० 147 से 182 तक की व्याख्या

147-148 وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۝ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝

इस में बताया गया है कि ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) जिस क़ौम के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे उन की तअ़दाद एक लाख या उस से ज़्यादा थी, वह लोग अल्लाह पर ईमान ले आये, इस्लाम को बहैसियत दीन क़ुबूल कर लिया। ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) की नुबूव्वत व रिसालत पर ईमान ले आये और शिर्क व कुफ़्र से तौबः की तो अल्लाह ने उन से अ़ज़ाब को टाल दिया और उन्हें एक वक़्त मुक़र्रर तक दुनिया की नेअ़मतों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दे दिया।

149-152 فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

अ़रब के कुछ क़बीले अल्लाह तआ़ला के बारे में यह बद्तरीन आरोप लगाते थे कि अल्लाह ने जिन्नों के साथ शादी का रिश्ता कर लिया, जिस के नतीजे में फ़रिश्ते पैदा हुए जो अल्लाह की बेटियाँ हैं। यह बहुत बड़ी गुमराही थी जिस में शैतान ने उन्हें फंसा दिया था, यहाँ अल्लाह तआ़ला ने उन के इसी आरोप पर उन की तम्बीह के लिए अपने रसूल से कहा, कि ज़रा इन से पूछिये तो सही, क्या इन्हें शर्म नहीं आती कि अपने लिए तो बेटा साबित करते हैं जिसे अपनी इ़ज़्ज़त व शर्फ़ का ज़रिया समझते हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ साबित करते हैं जिन्हें अपने लिए ज़िल्लत व रुस्वाई का ज़रिया मानते हैं?

क्या जब हम ने फ़रिश्तों को पैदा किया था तो यह मौजूद थे और इन के इ़ल्म में यह बात आ गई थी कि फ़रिश्ते मुवन्नस (Female) हैं? यक़ीनन ऐसी कोई बात नहीं है, यह लोग केवल आरोप लगाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह की औलाद है। विलादत तो उन के लिए है जो फ़साद को क़ुबूल करते हैं और अल्लाह तो हर नक़्स व ऐ़ब से पाक है, इसलिए इन के झूठा होने में कोई शुब्हा नहीं है।

153-157 اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

इस में और इस के आगे फ़रमाया कि अल्लाह ने बेटों के बजाय अपने लिए बेटियाँ चुन ली हैं? तुम्हारी अ़क़्लों को क्या हो गया है और तुम्हारा यह फ़ैसला कैसा है कि अल्लाह तआ़ला के मक़ामे आ़ला की तरफ़ कमतर को बताते हो। क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं है कि उस की ज़ात बीवी (पत्नी) और औलाद

से पाक है।

आयत नं० (156) में अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे अ़रब को मुख़ातब किया है कि क्या तुम्हारे पास अपने दावे के सुबूत में कोई स्पष्ट दलील है? अ़क़्ली तौर पर तो यह मुहा़ल है, इसलिए तुम लोग अगर सच्चे हो तो बताओ क्या यह बात तुम्हारे पास मौजूद किसी आसमानी किताब में है?

यह बात भी सही़ नहीं है इसलिए कि जो किताबे इलाही तुम्हारी हिदायत के लिए नाज़िल हुई है यानी क़ुर्आन करीम, उस का तो तुम इन्कार कर चुके हो। मालूम हुआ कि तुम्हारी बात अल्लाह के ख़िलाफ़ केवल आरोप है।

158 وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ

आयत नं० (149) में कुफ़्फ़ारे अ़रब की जिस बात को रद्द किया गया है और जिस पर उन को तम्बीह की गई है उसी को यहाँ साफ़ तौर पर इन्कार किया गया है कि वह लोग अल्लाह और जिन्नों के दर्मियान रिश्ता-ए-इज़्दिवाज (पति-पत्नी का) बताते हैं, हा़लांकि शयातीन जिन्न जानते हैं कि क़ियामत के दिन उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

अगर अल्लाह से उन का रिश्ता होता तो वह उन्हें आग का अ़ज़ाब कैसे देता, रिश्तेदारी का तो तक़ाज़ा यह था कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न देता।

मालूम हुआ कि अल्लाह के बारे में यह बद्तरीन झूठ है। बहुत से मुफ़स्सिरीन ने यहाँ **'अल् जिन्नह'** से मुराद फ़रिश्ते लिए हैं और आयत की तफ़्सीर में यह बयान किया गया है कि कुफ़्फ़ारे अ़रब अल्लाह और फ़रिश्तों के दर्मियान रिश्ता बताते हैं, यह बात अल्लाह के ख़िलाफ़ आरोप है। फ़रिश्ते भी जानते हैं कि कुफ़्फ़ार ऐसी बात कहते हैं जिन का ठिकाना जहन्नम होगा।

159-163 سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ۝ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۝ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने उस आरोप से अपनी पाकी बयान करते हुए फ़रमाया कि उस की ज़ात विलादत व नसब जैसे ऐ़ब व कमज़ोरी से पाक है। आयत नं० (160) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस के बहुत से बन्दे अपने रब की तरफ़ इस क़िस्म के ऐ़ब नहीं लगाते हैं।

दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि अहले ईमान जिन जहन्नम में दाख़िल नहीं किये जाएँगे, उस तफ़्सीर के मुताबिक़ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ का तअ़ल्लुक़ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ से होगा यानी अहले जिन्नों के सिवा दूसरे शयातीन अल् जिन्न जहन्नम में डाल दिये जाएँगे।

काफ़िरों को आ़मतौर से या कुफ़्फ़ारे मक्का को ख़ासतौर पर मुख़ातब कर के कहा जा रहा है कि तुम और तुम्हारे झूठे उपास्य अल्लाह के नेक बन्दों को गुमराह नहीं कर सकते सिवाय उन लोगों के जो तुम्हारी तरह़ गुमराह हैं और जिन की क़िस्मत में जहन्नमी होना लिख दिया गया है, ऐसे लोग वही काम करेंगे जो उन्हें जहन्नम में पहुँचा देगा और वही लोग तुम्हारी राह पर चलेंगे।

164-166 وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلصَّآفُّونَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ ٱلْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों की ज़बानी उन के बन्दग़ी के एतिराफ़ को बयान किया है और इस से मक़्सद उन लोगों का रद्द है जो फ़रिश्तों की अ़िबादत करते हैं। फ़रिश्ते ख़ुद अपनी ज़बान से अल्लाह के लिए अ़िबादत का एतिराफ़ करते हैं, फिर वह मअ़बूद (उपास्य) कैसे हो सकते हैं।

यह क़ौल ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) और दूसरे फ़रिश्तों का है जो उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) से कहा है और जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन की ज़बान में बयान किया है कि बन्दग़ी और अल्लाह के हुक्मों को मानने में हम से हर फ़रिश्ते की एक ह़द मुक़र्रर है, जिस से वह आगे नहीं बढ़ सकता और तमाम फ़रिश्ते अल्लाह के पास सफ़ बनाकर खड़े होते हैं और हर वक़्त उस की पाकी बयान करते हैं।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से मरवी है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हमें दूसरों पर तीन बातों के ज़रिये फ़ज़ीलत दी गई हैः हमारी सफ़ें फ़रिश्तों की सफ़ों की तरह़ हैं, ज़मीन हमारे लिए मस्जिद बना दी गई है और उस की मिट्टी हमारे लिए पाकी ह़ासिल करने का ज़रिया बना दी गई है।"

167-170 وَإِن كَانُوا۟ لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾
فَكَفَرُوا۟ بِهِۦ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

मुशिरकीने अ़रब कहा करते थे कि अगर तौरेत व इन्जील की तरह़ हमें भी कोई किताब मिली होती तो उस पर अ़मल कर के हम भी अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे होते और उस के साथ दूसरों को शरीक न बनाते, लेकिन जब अल्लाह ने उन के लिए क़ुर्आन करीम नाज़िल फ़रमाया जो उस की अ़ज़ीम किताब है, तो उस पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया।

मालूम हुआ कि उन की बात केवल झूठी तमन्ना थी, इसलिए उन्हें अ़न्क़रीब मालूम हो जाएगा कि क़ुर्आने करीम को झुठलाने का अन्जाम क्या होता है।

मुशिरकीने अ़रब की इस झूठी तमन्ना को अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में कई दूसरी आयतों में भी बयान किया है।

सूरः फ़ातिर आयत नं० (42) में फ़रमाया हैः

وَأَقْسَمُوا۟ بِٱللَّهِ جَهْدَ أَيْمَـٰنِهِمْ لَئِن جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى ٱلْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا

"और काफ़िरों ने बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले हों, फिर जब उन के पास एक पैग़म्बर आ गया तो उन की नफ़रत में इज़ाफ़ा हुआ"।

सूरः अन्‌आ़म आयात नं० (156/ 157) में फ़रमाया हैः

أَن تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أُنزِلَ ٱلْكِتَـٰبُ عَلَىٰ طَآئِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَـٰفِلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا۟ لَوْ أَنَّآ أُنزِلَ عَلَيْنَا ٱلْكِتَـٰبُ
لَكُنَّآ أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِـَٔايَـٰتِ ٱللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ

"कहीं तुम लोग यह न कहो कि किताब तो हम से पहले जो दो फ़िर्क़े थे उन पर नाज़िल हुई थी और हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे, या यूँ न कहो कि अगर हम पर कोई किताब नाज़िल हुई होती तो हम उन से भी ज़्यादा राहे रास्त पर होते।

सो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट किताब, रहनुमाई का ज़रिया और रहमत आ चुकी है। अब उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो हमारी इन आयतों को झूठा बताये और उस से रोके"?

171-173 ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ۝ إنهم لهم المنصورون ۝ وإن جندنا لهم الغالبون ۝

क़ुर्आन के झुठलाने पर मुश्रिकीन को धमकी देने के बाद अब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इत्मिनान दिलाया जा रहा है कि अल्लाह उन की मदद ज़रूर करेगा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने अपने जिन बन्दों को इन्सान की हिदायत के लिए रसूल बनाकर भेजा उन से हमारा वादा है कि हम उन की ज़रूर मदद करेंगे और बिआख़िरकार ग़ल्बा (जीत) उन्हीं को ह़ासिल होगा जो अल्लाह की फ़ौज बनकर इस्लाम और मुसलमानों की सरबुलन्दी के लिए जिहाद करते हैं।

174-175 فتول عنهم حتى حين ۝ وأبصرهم فسوف يبصرون ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि आप अभी मुश्रिकीन से एराज़ कीजिए, उन की बातों का जवाब न दीजिए और सब्र से काम लीजिए यहाँ तक कि ह़ालात आप के लिए साज़गार हो जाएँ या उन के बारे में अल्लाह का कोई हुक्म आ जाए या अल्लाह उन्हें किसी आज़्माईश में मुब्तिला कर दे और आप उन्हें बता दीजिए कि कुफ़्र व सरकशी का अन्जाम क्या होता है और दलायल के ज़रिये इस्लाम की ह़क़ीक़त, उन की मदद और गुमराही उन पर खोल दीजिए। अगर अब न समझे तो जब अल्लाह की मदद और फ़तेह़ व कामियाबी आप को ह़ासिल हो जाएगी तब ख़ुद ही सब कुछ समझ जाएँगे।

176-182 أفبعذابنا يستعجلون ۝ فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين ۝ وتول عنهم حتى حين ۝
وأبصر فسوف يبصرون ۝ سبحان ربك رب العزة عما يصفون ۝ وسلام على
المرسلين ۝ والحمد لله رب العالمين ۝

मक्का के इन्कारी अपने घमण्ड के नशे में नबी करीम (सल्ल०) और सहाबा-ए-किराम से कहा करते थे कि जिस अ़ज़ाब का हम से वादा किया जाता है वह कब आएगा? तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें धमकी दी और फ़रमाया कि क्या यह नादान लोग हमारे अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं? हमारा अ़ज़ाब तो ऐसा है कि जब वह आ जाता है तो उस बद्नसीब क़ौम की सुबह़ बड़ी बुरी होती है, हलाकत व तबाही उन्हें हर तरफ़ से घेर लेती है।

'बुख़ारी व मुस्लिम' ने ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ैबर

का मुहासिरा किया और यहूद मुसलमानों की फ़ौज देखकर चीख पुकार करने लगे, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः

"الله أكبر خربت خيبر، إنَّا إذ انزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين"

"आज ख़ैबर की बर्बादी का दिन आ गया, हम जब किसी क़ौम के मैदान में पहुँच जाते हैं तो उन की सुबह़ बड़ी बुरी होती है"।

नबी करीम (सल्ल०) से दोबारा कहा जा रहा है कि आप अभी मुश्रिकीन से ए़राज़ (दरगुज़र) कीजिए और इन्कार व सरकशी का अन्जाम उन्हें बता दीजिए और अगर अब न समझे तो जब अल्लाह की नुस्रत, फ़तेह़ व कामियाबी बन कर आप को ह़ासिल होगी तब ख़ुद ही सब कुछ उन्हें समझ में आ जाएगा।

इन आख़िरी आयतों में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के उन गुणों से अपनी पाकी बयान की है जिन के साथ मुश्रिकीन अल्लाह को पुकारा करते थे और अपने रसूलों पर सलामती भेजी है जिन्हें उस ने अपने बन्दों की रहनुमाई के लिए भेजा था, उन में से एक आप भी हैं और आख़िर में तमाम तअ़रीफ़ों को केवल अपनी ज़ात के लिए साबित किया है जो सारे जहान का पालनहार है और जो अपने नेक बन्दों की मदद करता है और अपने दुश्मनों को हलाक करता है।

(भाग–38)

सूर–ए–साद

(सूरः नं. 38)

तफ़्सीर सूरः साद

नाम- इस सूरः की शुरुआत में शब्द 'साद' आया है, यही इस का नाम है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः सब के नज़्दीक मक्की है। 'इब्ने अबी शैबा' अह़मद, तिर्मिज़ी, नसई और ह़ाकिम वग़ैरह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि अबू जेहल और दूसरे सरदारे कुरैश अबू तालिब की मौत के वक़्त उन के पास गये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शिकायत की कि वह हमारे उपास्यों को बुरा कहता है, इसलिए मुनासिब है कि आप अपनी ज़िन्दग़ी में उसे इस बात से मना कर दीजिए।

अबू तालिब ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा तो आप ने फ़रमाया कि यह लोग एक बात कह दें तो सारा अ़रब व अ़जम उन के अधीन हो जाएगा। काफ़िरों ने पूछा वह कौन सा कलिमा (शब्द) है? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः कलिमा **'लाइलाह इल्लल्लाह'** है तो तमाम काफ़िर अपना कपड़ा झाड़ते हुए घबराकर उठ गये और कहने लगे कि यह तो बहुत से मअ़बूदों (उपास्यों) के बजाय एक मअ़बूद (उपास्य) की बात करता है, यह तो बड़ी अ़जीब बात है तो इस सूरः की आयात नं० (1) से (8) तक आयतें नाज़िल हुईं।

(तिर्मिज़ी और ह़ाकिम ने इस ह़दीस को सह़ीह़ कहा है।)

आयत नं० 1 से 25 तक

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ۝1 بَلِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝2 كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ۝3
وَعَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ؗ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝4 اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝5 وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ
مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰۤی اٰلِهَتِكُمْ ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۝6 مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۖۚ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝7 ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ
الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝8 اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِیْزِ الْوَهَّابِ ۝9 اَمْ لَهُمْ
مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا ۫ فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ۝10 جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝11 كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ
وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝12 وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔیْكَةِ ؕ اُولٰٓىٕكَ الْاَحْزَابُ ۝13 اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝14 وَمَا یَنْظُرُ
هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝15 وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ یَوْمِ الْحِسَابِ ۝16 اِصْبِرْ عَلٰی مَا یَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا
دَاوٗدَ ذَا الْاَیْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝17 اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ یُسَبِّحْنَ بِالْعَشِیِّ وَالْاِشْرَاقِ ۝18 وَالطَّیْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝19 وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ
وَاٰتَیْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝20 وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝21 اِذْ دَخَلُوْا عَلٰی دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰی
بَعْضُنَا عَلٰی بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَیْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ اِلٰی سَوَآءِ الصِّرَاطِ ۝22 اِنَّ هٰذَاۤ اَخِیْ ۫ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِیَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۫
فَقَالَ اَكْفِلْنِیْهَا وَعَزَّنِیْ فِی الْخِطَابِ ۝23 قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰی نِعَاجِهٖ ؕ وَاِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ بَعْضُهُمْ عَلٰی بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِیْلٌ مَّا هُمْ ؕ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۝24 فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا
لَزُلْفٰی وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝25

अनुवाद-

(1) साद, क़सम है! कुर्आन की जो नसीहत देने वाला है; (2) मगर जिन्होंने इन्कार किया, वे गर्व और विरोध में पड़े हुए हैं। (3) 'हमने' उनसे पहले कितने ही गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर डाला, तो वे पुकार उठे! और वह समय बचने का न था। (4) और उन लोगों ने आश्चर्य किया कि उन ही में का एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा, ''यह जादूगर है बड़ा झूठा; (5) क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!'' (6) और उनमें के कितने ही सरदार यह कहकर चल पड़े, ''चलते रहो और अपने उपास्यों पर जमे रहो (यह बात जो मुहम्मद समझाता है), बेशक इसमें इसका कुछ इरादा है।'' (7) यह बात तो 'हमने' पिछले धर्म में सुनी ही नहीं, यह तो बस मनगढ़त है। (8) क्या हममें से चुनकर इसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है? बल्कि ये 'मेरी' नसीहत के बारे में सन्देह में हैं, बल्कि उन्होंने अभी तक 'मेरे' अ़ज़ाब का मज़ा चखा ही नहीं है। (9) क्या तुम्हारे, 'उस' ज़बर्दस्त और बख़्शने वाले रब की रहमत (दयालुता) के ख़ज़ाने उनके पास हैं; (10) या आसमानों और ज़मीन में, और जो कुछ उनके बीच है, उन सब पर बादशाही उन्हीं की है? फिर तो चाहिए कि रस्सियों के ज़रिये (आसमानों पर) चढ़ जाएँ! (11) यहाँ हारे हुए लश्करों में से, यह भी एक लश्कर है; (12) इनसे पहले नूह़ की क़ौम, और आ़द, और मेंखों वाले, फ़िरऔ़न, ने भी झुठलाया था; (13) और समूद, और लूत की क़ौम, और ''ऐका'' वाले (बन वाले) भी- यही वे गिरोह हैं (14) इनमें से हर एक ने रसूलों

को झुठलाया, तो 'हमारा' अ़ज़ाब उन पर लागू हो गया; (15) और इन्हें तो बस एक चीख़ का इन्तिज़ार है, जिसके बाद ज़रा-सा भी मौक़ा न मिलेगा। (16) और कहते हैं, ''ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा जल्द हमें दे दे।'' (17) (ऐ नबी) यह जो कुछ कहते हैं सब्र से काम लीजिए और ज़ोर व शक्ति वाले दाऊद को याद कीजिए (फिर भी), बेशक वह (अल्लाह की ओर) रुजूअ़ करने वाले थे; (18) 'हमने' पहाड़ों को उनके कब्ज़े में कर रखा था कि सुबह-शाम उनके साथ तस्बीह करते थे, (19) और परिन्दे को भी जमा रखते थे, सब उनके फ़रमाँबरदार थे; (20) और 'हमने' उनके राज्य को मज़बूत कर दिया था और उनको हिकमत (तत्वदर्शिता) और फ़ैसला करने की योग्यता दी थी। (21) और क्या तुम्हें उन झगड़ने वालों की ख़बर पहुँची है? जब वे दीवार पर चढ़ कर मेहराब में आ पहुँचे; (22) जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वे उनसे सहम गये, उन्होंने कहा, ''डरिए नहीं, हम दो विवादी हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो आप हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए, और बात को दूर न डालिए, और हम को सीधी राह बता दीजिए; (23) यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे भेड़ें हैं, और मेरे पास एक ही भेड़ है, अब इसका कहना है कि 'अपनी भेड़ भी मुझे सौंप दे' और बात-चीत में इसने मुझे दबा लिया। (24) उन्होंने कहा, ''बेशक यह तुम पर ज़ुल्म करता है कि तुम्हारे भेड़ अपनी भेड़ों से मिलाने के लिए तुम से मांग करता है, और बहुत से साथ मिल कर रहने वाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन (लोगों) के जो ईमान लाए और भले काम किये, किन्तु ऐसे लोग थोड़े ही होते हैं।'' और दाऊद समझ गये कि 'हमने' उन्हें इम्तिहान में डाला है, तो उन्होंने अपने रब से माफ़ी मांगी और झुक कर (सज्दे में) गिर गये और रूजूअ़ हुए; (25) तो 'हमने' उनको माफ़ कर दिया, और बेशक 'हमारे' पास उनकी निकटता और अच्छा ठिकाना है।

आयत नं० 1 से 25 तक की व्याख्या

1-2 صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ۝ بَلِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝

शब्द साद ''ص'' मुक़त्तआ़त (अलग-अलग शब्द) में से है। अल्लाह को ही मालूम है कि इस से मुराद क्या है। अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन करीम की क़सम खाई है जो तमाम इन्सानों के लिए अपने अन्दर बेशुमार नसीहत की बातें लिए हुए है, और बताया कि मामला ऐसा नहीं है जैसा मुश्रिकीन समझते हैं कि मुहम्मद जादूगर हैं, शायर और झूठे हैं बल्कि उन के घमण्ड व ग़ुरूर और नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों के साथ उनकी गहरी दुश्मनी ने उन्हें आरोप पर उभारा है, वरना उन्हें ख़ूब मालूम है कि आप (सल्ल०) न जादूगर हैं, न शायर हैं, न आप को जुनून है और न ही झूठ बोलना आप की आ़दत है।

3-5 كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ۝ وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ؗ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝

पिछली काफ़िर व मुश्रिक क़ौमों का जो अन्जाम हुआ उसे बयान कर के कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को धमकी दी जा रही है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने अहले मक्का से पहले बहुत सी क़ौमों को उन के घमण्ड व ग़ुरूर और कुफ़्र व शिर्क की वजह से हलाक कर दिया और जब अ़ज़ाब आया तो फ़रियाद रसी

के लिए चीखने और पुकारने लगे, लेकिन उस वक़्त की चीख़ व पुकार से उन्हें क्या फ़ायदा पहुँच सकता था, उस वक़्त न तो वह लोग भाग सकते थे, न ही उन्हें कोई बचा सकता था।

इन वाक़िआत से कुफ़्फ़ारे मक्का को नसीहत हासिल करनी चाहिए थी, लेकिन उन से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा और हैरत व तअ़ज्जुब करने लगे कि उन्हीं में का एक आदमी अल्लाह का रसूल होने का दावा कर रहा है और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि यह तो जादूगर और झूठा है। यह कैसे हो सकता है कि बहुत से मअ़बूदों (उपास्यों) के बजाय सिर्फ़ एक मअ़बूद (उपास्य) हो, यह तो बड़ी अ़जीब व ग़रीब बात है और यह बात उन्होंने इसलिए कही कि उन के बाप-दादा इसी अ़क़ीदे वाले थे और यह बात उन के रग-रग में बस गई थी।

इसलिए यह भी उन की अन्धी पैरवी में इसी अ़क़ीदे पर ज़ोर दे रहे हैं, शिर्क ने उन के दिल की आँखों को अन्धा कर दिया है और हक़ बात क़ुबूल करने की क्षमता उन से छिन गई है।

6-8 وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ ۖ
إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝ أَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي ۖ بَلْ لَمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ۝

आयात नं० (1) से (8) तक में लिखा जा चुका है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कलिमा **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** का मुताल्बा किया तो वह अबू तालिब के पास से दामन झाड़ कर उठ गये और वापस जाते हुए एक दूसरे को मूर्ति पूजा पर जमे रहने की ताकीद करते हुए कहने लगे कि लोगों! अपने बाप-दादा के तरीक़े पर क़ायम रहो और मुहम्मद हमारे और हमारे उपास्यों के बारे में जो चाहे कहता रहे, हमें इन बातों की परवाह नहीं है और अपने उपास्यों की अ़िबादत नहीं छोड़नी है।

मुहम्मद की सारी तद्बीरों और कोशिशों का मक़्सद यही तो है कि हम अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को छोड़ दें, जिस तौहीद (एकेश्वरवाद) की बात की जा रही है और जिस पर ईमान लाने की हमें दअ़वत दी जा रही है, वह तो ईसाइयों के यहाँ भी मौजूद नहीं है।

इसलिए मालूम हुआ कि यह मुहम्मद की गढ़ी हुई बातें है जिस की दलील उस के पास इस किताब के सिवा कुछ नहीं जिसे वह क़ुर्आन कहता है और दावा करता है कि यह अल्लाह की वह्य है और यह बात इसलिए भी क़ाबिले हैरत है कि हमारे दर्मियान इस से ज़्यादा मालदार और साहिबे हैसियत लोग मौजूद हैं तो इस के बजाय किसी और को नुबूव्वत क्यों नहीं दी गई है?

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन की इस बात से उन के सीनों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ छुपा बुग्ज़ व हसद ज़हिर होता था, उन के दिलों में आग लगी थी कि अल्लाह ने उन के बजाय मुहम्मद को नुबूव्वत से क्यों नवाज़ दिया।

आयत नं० (8) के दूसरे हिस्से में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को मेरे क़ुर्आन के बारे में शुब्हा है कि यह मेरी तरफ़ से नाज़िल की हुई किताब है या नहीं और उन का यह शक इसलिए ख़त्म नहीं हो रहा है कि क़ुर्आन पर उन्हें अब तक सज़ा नहीं मिली है, अगर इस की वजह से उन पर

अ़ज़ाब आ गया हो तो सारा शक व ह़सद ख़ुद-ब-ख़ुद दूर हो गया होता।

9 أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आप के रब के ख़ज़ानों के मालिक हैं (जिन में नुबूव्वत और दूसरी नेअ़मतें शामिल हैं) कि वह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जिसे चाहें दें और जिसे चाहें न दें? जब ऐसी कोई बात नहीं है तो उन्हें कहाँ से यह ह़क़ ह़ासिल है कि नबी करीम (सल्ल०) के मन्सबे नुबूव्वत पर एतिराज़ करें।

सूरः अल् अन्आ़म आयत नं० (124) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः

اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ

"अल्लाह बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत का मन्सब (पद) किस को सौंपे"।

10-11 أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝ جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की चीज़ों के मालिक हैं? अगर ऐसी बात है तो फिर मन्ज़िल-ब-मन्ज़िल चढ़ते हुए सातवें आसमान पर पहुँच जाएँ और नबी करीम (सल्ल०) पर आने वाली वह़्य को रोक दें।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की बेवक़ूफ़ी और उन की बेबसी का बयान है।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (11) में फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का ह़क़ीर लश्कर अ़न्क़रीब ही बुरी तरह़ नाकाम और हमेशा के लिए उन का ज़ोर टूट जाएगा। इसलिए ऐ मेरे नबी! आप उन की परवाह न कीजिए। आप के ख़िलाफ़ उन की हर साज़िश धरी की धरी रह जाएगी, चुनाँचे मैदाने बद्र में बुरी तरह़ क़त्ल किये गये और जो बच गये क़ैद कर लिये गये और फ़तेह़ मक्का के दिन रही सही कमी पूरी हो गई और बड़े ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ नबी करीम (सल्ल०) के सामने आकर अपने जान बचाने की भीख माँगी?

12-14 كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۝
إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝

पिछली क़ौमों के कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार और उन की हलाकत व बर्बादी के क़िस्से बयान कर के कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को धमकी दी जा रही है कहीं उन का अन्जाम भी उन्हीं क़ौमों जैसा न हो और साथ ही साथ उन्हें तौबः और अल्लाह की ओर पलटने की दअ़वत भी दी जा रही है, ताकि अल्लाह उन्हें माफ़ कर दे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप की क़ौम से पहले ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की क़ौम और क़ौमे आ़द यानी हूद की क़ौम और फ़िरऔ़न ने अल्लाह के नबियों को झुठलाया और क़ौमे समूद, क़ौमे लूत और ऐका वालों ने भी अपने-अपने ज़माने के नबियों को झुठलाया और वह क़ौमें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश

के मुक़ाबिले में तअ़दाद, क़ुव्वत और माल व दौलत में बहुत आगे थीं, लेकिन जब अल्लाह का अ़ज़ाब आ गया तो उन में से कोई क़ौम भी हज़ार कोशिशों के बावजूद उस से न बच सकी।

आयत नं० (12) में फ़िरऔ़न का गुण 'मेख़ों वाला' बताया गया है। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि या तो इस से मुराद यह है कि उस की हुकूमत बहुत ही क़वी (Strong) थी। जैसे ज़मीन में मेख़ें (कीलें) गाड़ दी गई हों या यह कि उस के लश्कर की संख्या इतनी ज़्यादा थी कि जहाँ ठहरता, ख़ेमों की कसूरत से ज़मीन भर जाती थी या मतलब यह है कि फ़िरऔ़न जब किसी को अ़ज़ाब देता तो उस के हाथ पांव में मेख (कीलें) ठोक देता था।

15 وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में कहा जा रहा है कि उन्हें अब केवल उस का इन्तिज़ार है जो क़ियामत के क़रीब फूंका जाएगा और उस आवाज़ के साथ हर जानदार हलाक हो जाएगा, केवल अल्लाह की ज़ात बाक़ी रह जाएगी यानी जहन्नम के अ़ज़ाब और उन के दर्मियान केवल इस्राफ़ील है।

16 وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश पर अ़ज़ाब की धमकी का उल्टा ही असर हुआ, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहने लगे कि क़ियामत तक क्यों इन्तिज़ार किया जाए इसी दुनिया में ही हमारे हिस्से का अ़ज़ाब हम पर भेज दिया जाए।

'इब्ने जरीर' का ख़याल है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) और क़ियामत का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि क़ियामत का क्या इन्तिज़ार करना है, ख़ैर व शर, जिस के भी हम हक़दार हैं इसी दुनिया में ही हमें दे दिया जाए।

17 اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ

ख़ुशख़बरी–

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (सल्ल०) को काफ़िरों की तक्लीफ़ पर सब्र की तल्क़ीन की और दूसरे नबियों के वाक़िआ़त सुना कर ख़ुशख़बरी दी कि उन की तरह़ बहरहाल फ़तेह़ व कामियाबी आप को ही मिलेगी। सब से पहले आप हमारे बन्दे दाऊद की ज़िन्दगी को अपने सामने रखिये जो अपने रब की बन्दगी, अमानत की अदायगी और अल्लाह की दअ़वत के कामों में बड़े ही क़वी (Strong) थे और अल्लाह से उन का रिश्ता इतना मज़बूत था कि अपने तमाम दीनी और दुनियावी कामों में उसी की तरफ़ पलटते थे, उस का ख़ौफ़ हर वक़्त उन के दिल पर तारी रहता था और हर ह़ाल में उसी की बन्दगी में लगे रहते थे।

नबी करीम (सल्ल०) ने उन के बारे में फ़रमाया कि वह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते, आधी रात तक नमाज़ पढ़ते और जब दुश्मन से मुठभेड़ हो जाती तो मैदान छोड़कर नहीं भागते थे।

18-19 إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۝ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) पर बड़े इनआ़मात किये थे, उन्हीं का ज़िक्र किया जा रहा है ताकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पैरवी का शौक पैदा हो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने पहाड़ों को उन के अधीन कर दिया थ। जब वह अ़स्र के बाद से सूरज डूबने के वक़्त तक और सुबह़ के वक़्त अल्लाह की तस्बीह़ पढ़ते तो आस-पास के पहाड़ और चिड़िया आदि उन तस्बीह़ात को दोहराते।

आयत नं० (19) के आख़िर में फ़रमाया कि दाऊद, पहाड़ और चिड़िया सब अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने वाले थे, सब उस की तस्बीह़ पढ़ते और उसी की बन्दगी में लगे रहते थे।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के लिए पहाड़ों को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया था, जो सुबह़ व शाम उन के साथ अल्लाह की तस्बीह़ पढ़ते थे, इसी तरह़ चिड़िया भी उन के साथ तस्बीह़ पढ़ती थीं। जब वह हवा में तैरते वक़्त ज़बूर की तिलावत करते तो चिड़ियाँ उन की आवाज़ सुनकर हवा में रुक जातीं और उन के साथ तस्बीह़ पढ़ने लगतीं।

20 وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने फ़ौजों और जंगी सामानों के ज़रिये दुश्मनों के दिलों में उन का रोअ़ब व दबदबा बैठा कर और मैदाने जंग में फ़तेह़ व मदद देकर उन की हुकूमत की जड़ों को मज़बूत बना दिया था और हम ने उन्हें नुबूव्वत और समझ अ़ता की थी, इसीलिए उन का कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता था और हम ने लोगों के दर्मियान फ़ैसला करने का ख़ास गुण दिया।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें जो (ज़बूर) अ़ता किया था, वह ह़िक्मतों का ख़ज़ाना था और वह लोगों के दर्मियान इतना सही़ फ़ैसला करते थे कि सारे लोग उन से मुह़ब्बत करते और कोई उन की मुख़ालिफ़त न करता था।

21-25 وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا
عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝ إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً
وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ
كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ وَظَنَّ
دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۝ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ۝

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) का फ़ैसला

इन आयात में ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) का क़िस्सा बयान फ़रमाया गया है और इस के बाद वाली आयात में यह बताया गया है कि हम ने दाऊद को ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाने का एलान किया था और उन्हें हुक्म दिया था कि आप इन्साफ़ के साथ लोगों में फ़ैसला करें।

यहाँ जो क़िस्सा ज़िक्र फ़रमाया वह यह है कि दो व्यक्ति अपना मुकद्दमा लेकर ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०)

की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और आये भी किस तरह़? दरवाज़ा से आने के बजाय दीवार फ़ांद कर आये और तन्हाई में उन के पास पहुँच गये, उन्होंने अ़िबादत के लिए एक जगह बना रखी थी जिसे 'मेह़राब' कहा जाता था, वह उस समय अ़िबादत में लगे हुए थे।

जब उन दोनों पर नज़र पड़ी तो इन्सानी मिज़ाज की वजह से घबरा गये, उन दो शख़्सों ने उन की घबराहट को मह़सूस कर लिया और कहने लगे कि आप हम से डरिये नहीं, हम कोई चोर डाकू नहीं है, हम अपना मुक़द्दमा लेकर हाज़िर हुए हैं, हम में एक मुद्दई है और दूसरा मुद्दआ़ अ़लैहि यानी दावा करने वाला और जिस पर दावा किया गया है एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है। आप हमारा मुक़द्मा सुन लीजिए और इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और फ़ैसला में बेइन्साफ़ी न कीजिए और हम को सीधी राह बता दीजिए।

फिर उन में से एक बोला कि यह मेरा (दीनी) भाई है, इस के पास निन्यानवें यानी एक कम सौ दुम्बिया (बकरे की तरह़ की एक मिस्ल) हैं और मेरे पास एक ही दुम्बी (बकरी या भेड़) है। अब यह कहता है कि वह भी मुझे दे दे और कहने में भी वह तरीक़ा नहीं अपनाया जो सवाल करने वालों का होता है, बल्कि मुझे इस सख़्ती के साथ कहना और इस का यह सवाल करना ज़ुल्म है।

इस तरह़ ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) ने उन दोनों के मुकद्दमे का फ़ैसला फ़रमाया और साथ ही आ़म लोगों का मिज़ाज, रिवाज और तरीक़ेकार भी बयान फ़रमा दिया और यह कि बहुत से लोग जो शरीक होते हैं उन का यह तरीक़ेकार होता है कि एक दूसरे पर ज़ुल्म व ज़्यादती करते हैं। हाँ, अहले ईमान और नेक आ़माल वाले लोग एक दूसरे पर ज़्यादती नहीं करते, ऐसे लोग बहुत कम हैं।

पहले तो यह समझना चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के वाक़िये को اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ के साथ शुरु फ़रमाया है। जिस से मालूम हो रहा है कि ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) को किसी ऐसी बात में मुब्तिला फ़रमाया था जिस में सब्र की ज़रूरत थी।

दाऊद के क़िस्से में नसीह़त-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म हुआ कि आप अपने लोगों की बातों पर सब्र करें और दाऊद के क़िस्से को याद करें। इस के बाद यह बात फ़रमाई कि वह अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ में मश्ग़ूल रहते थे, फिर यह क़िस्सा बयान फ़रमाया कि दो शख़्स उन के पास दीवार फलांग कर आ गये और दोनों ने अपना मुक़द्दमा पेश किया, उन्होंने उन को फ़ैसला सुना दिया। इस में यह बात तलाश करने की है इसमें सब्र करने की कौन सी बात थी।

इस बारे में रिवायात ह़दीस से कोई बात स्पष्ट नहीं होती, अल्बत्ता इतनी बात क़ुर्आन मजीद के बयान से मालूम हो रही है कि जो दो शख़्स उन के पास तन्हाई में पहुँच गये थे वह वक़्त उन की अ़िबादत करने का वक़्त था, फिर वह दोनों दीवारें कूद कर आये।

जब दाऊद (अ़लै०) को उन से घबराहट हुई तो उन्होंने तसल्ली दे दी कि आप घबराइये नहीं, लेकिन बेवक़्त पहुँचे, फिर दीवार कूद कर आये और साथ ही यूँ कह दिया कि فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ कि आप हमारे बीच

हक़ के साथ फ़ैसला कीजिए और मज़ीद यूँ कहा कि बेइन्साफ़ी न कीजिए और साथ ही यूँ भी कह दिया कि सीधी राह बता दीजिए। इन बातों से एक तरह की बेअदबी ज़ाहिर होती थी जिस से शक होता था कि हज़रत दाऊद (अ़लै०) नाहक़ फ़ैसला भी कर सकते हैं और ज़्यादती भी कर सकते हैं।

हज़रत दाऊद (अ़लै०) नबी होने के साथ-साथ जलीलुल क़द्र बादशाह भी थे, मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैहि (जिस पर दावा किया जाए) की बातें सुनकर सब्र से काम लिया। इन लगातार गुस्ताख़ियों पर कोई पकड़ नहीं फ़रमाई, बल्कि बड़ी नर्मी के साथ उन का मुक़द्दमा सुना और फ़ैसला फ़रमा दिया।

हज़रत दाऊद (अ़लै०) का इस्तिग़फ़ार-

अब रही यह बात कि हज़रत दाऊद (अ़लै०) ने जब सब्र के साथ मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैहि की बात सुनी और फ़ैसला फ़रमा दिया जो सहीह़ फ़ैसला था तो इस में वह कौन सी बात थी जो उन के इम्तिहान का कारण बन गई?

इस के बारे में कुछ हज़रात ने यह फ़रमाया है कि हज़रत दाऊद (अ़लै०) ने मुद्दआ़ अ़लैहि (जिस पर दावा किया गया) से दर्याफ़्त किये बग़ैर जो यह फ़रमा दिया कि इस शख़्स ने तुझ पर ज़ुल्म किया है कि अपनी दुम्बियों में मिलाने के लिए तेरी दुम्बी मिलाने का सवाल किया। इस पर दोनो लोगों में से एक की ओर झुकाव मालूम होता है, जो आदाबे क़ज़ा के ख़िलाफ़ है।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि मुद्दआ़ अ़लैहि (जिस पर दावा किया गया) ने इस बात का इक़रार कर लिया था कि वाक़ई मैंने इस शख़्स से यह सवाल किया है कि अपनी दुम्बी मुझे दे दे। अगर यह सूरत हो तो फिर भी यह बात रह जाती, कि नियम के मुताबिक़ मुद्दआ़ अ़लैहि (जिस पर दावा किया गया) से फ़रमाना चाहिए था कि तूने इस पर ज़ुल्म किया, बजाय उस से ख़िताब कर के मुद्दई से फ़रमाया कि इस शख़्स ने तुझ पर ज़ुल्म किया, यह भी एक क़िस्म के मुद्दई की थोड़ी सी तरफ़दारी हुई। जब यह ख़याल आया तो उन्होंने उसे इम्तिहान की बात समझा।

बड़ों की बड़ी बाते हैं मामूली बात में भी उनकी गिरफ़्त हो जाती है, इसलिए वह इस्तिग़फ़ार की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और सज्दः में गिर पड़े। अल्लाह तआ़ला ने उन को माफ़ फ़रमा दिया और यह भी फ़रमा दिया कि उन के लिए हमारे यहाँ अच्छा अन्जाम है।

हज़रत दाऊद (अ़लै०) जिस फ़ित्ने में मुब्तिला किये गये उस के बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से यूँ नक़्ल किया गया है, जिसे 'हाकिम' ने 'मुस्तदरक' में लिखा है कि हज़रत दाऊद (अ़लै०) उनकी ख़ुद पसन्दी ने इम्तिहान में मुब्तिला किया। जिस की सूरतेहाल यूँ बन गई कि उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या अल्लाह! रात और दिन में कोई भी ऐसी खाली घड़ी नहीं गुज़रती जिस में आले दाऊद से कोई शख़्स नमाज़, तस्बीह़ या तक्बीर और दूसरी अ़िबादात में मश्गूल न होता हो।

अल्लाह तआ़ला को उनकी यह बात नागवार हुई और इर्शाद फ़रमाया, कि ऐ दाऊद! यह सब कुछ मेरी ही मदद से है। अगर मेरी मदद शामिले हाल न हो तो तुम्हें इस अ़िबादात पर क़ुद्रत न हो। क़सम

है मेरे जलाल की मैं एक दिन तुझे तेरे ही सुपुर्द करता हूँ। हज़रत दाऊद (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया कि ऐ रब! मुझे वह दिन बता दीजिएगा, उस के बाद उस ख़ास दिन में वह फ़ित्ना में मुब्तिला कर दिये गये।

(मुस्तदरक हाकिम पेज नं० 433 भाग 2)

इसमें फ़ित्ना के ज़रिये का तो ज़िक्र है, लेकिन फ़ित्ना का ज़िक्र नहीं। बाज़ लोगों ने फ़रमाया है कि जितनी देर फ़रिश्तों से बातचीत हुई उतनी देर में चूंकि अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहे इसलिए उन्होंने उसे फ़ित्ना समझ लिया यानी क़ज़ा का काम और फ़ैसले दुनिया में भी अ़िबादत है, चूंकि अ़िबादत बिला वास्ता यानी तस्बीह़ व तहलील से ग़फ़लत हुई, इसलिए उन्होंने उसे अपने ह़क़ में फ़ित्ना समझ लिया। वल्लाहु तआ़ला आ़लम।

साझीदारों का आ़म तरीक़ा-

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) ने दो शख़्सों के दर्मियान जो फ़ैसला फ़रमाया सिर्फ़ उसी पर बस नहीं किया, बल्कि उस के साथ ही आ़म साझीदारों की एक ह़ालत भी बता दी जिन्हें इर्शाद फ़रमाया कि इस दुनिया में बसने वाले लोग जो आपस में मिलजुल कर रहते हैं जिन में वह लोग भी हैं जिन का तिजारत या माल के दूसरे तरीक़ों में साझा रहता है। आ़मतौर से वह लोग एक दूसरे पर ज़्यादती करते रहते हैं जो ख़यानत वग़ैरह की सूरत में होती है, आ़मतौर से लोगों का यही ह़ाल है। हाँ, अल्लाह तआ़ला के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जो अहले ईमान और नेक आ़माल वाले हैं, यह लोग अपने साझीदारों पर ज़्यादती नहीं करते लेकिन ऐसे लोग ज़्यादा नहीं हैं, यह लोग कम पाये जाते हैं।

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) ने बहुत काम की बात बताई और साझीदारों का एक मिज़ाज बता दिया और शिरकत में कोई व्यापार करना बहुत बड़े इम्तिह़ान में पड़ने का ज़रिया है, बात-बात में झगड़े भी उठते रहते हैं और ख़यानत के मौक़े भी सामने आते रहते हैं। जो शख़्स ख़यानत से बच गया बहुत ही मुबारक है।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि दो साझीदारों में 'मैं' तीसरा होता हूँ (यानी मेरी तरफ़ से उनकी मदद रहती है) जब तक उन में से कोई एक ख़यानत न करे, फिर जब दोनों में से कोई साझीदार ख़यानत कर लेता है तो मैं दर्मियान से निकल जाता हूँ। **(रवाहु अबूदाऊद)** यानी अल्लाह तआ़ला की मदद ख़त्म हो जाती है।

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) की एक दुआ़-

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) बहुत बड़े अल्लाह का ज़िक्र करने वाले व अ़िबादत करने वाले थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादा मह़बूब दाऊद (अ़लै०) की नमाज़ थी। वह आधी रात सोते थे और तिहाई रात नमाज़ में खड़े रहते थे और आख़िरी छठे ह़िस्से में सो जाते थे और एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन बिना रोज़े के रहते थे। **(रवाहुल बुख़ारी भाग-1 पेज नं० 486)**

ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) की दुआ़ओं में से एक यह दुआ़ भी थीः

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ اللّٰھُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَمَالِیْ وَاَھْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ

(ऐ अल्लाह! मैं आप से आप की मुहब्बत का और उन लोगों की मुहब्बत जो आप से मुहब्बत करते हैं और उस अ़मल की मुहब्बत का सवाल करता हूँ जो मुझे आप की मुहब्बत तक पहुँचा दे। ऐ अल्लाह! आप अपनी मुहब्बत को मुझे इतनी ज़्यादा महबूब बना दीजिए जो मेरी जान से, मेरे माल से, मेरे अहल व अ़याल से और ठंडे पानी से बढ़कर मुझे महबूब हो। **(रवाहु तिर्मिज़ी व मिश्कात पेज 220)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) का ज़िक्र करते तो यह बात बयान फ़रमाया करते थे कि वह इन्सानों में सब से बढ़कर अ़िबादत गुज़ार थे।

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) अपने हाथ के हुनर से कमाते और उसी से खाते थे। ***(रवाहुल् बुख़ारी मरफ़ूअ़न)***

उनके ज़रिये कमाई यह थी कि लोहे की ज़रहें बनाते थे, उन्हें बेच कर अपना ख़र्चा भी चलाते थे और फ़क़ीर व मिस्कीनों पर भी ख़र्च करते थे।

सूरः साद का सज्दः

सूरः साद में शाफ़अ़ी मस्लक के नज़्दीक सज्दः-ए-तिलावत नहीं है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक यहाँ सज्दः-ए-तिलावत है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सूरः साद में सज्दः-ए-तिलावत अदा किया और फ़रमाया कि दाऊद ने तौबः के तौर पर सज्दः किया था और हम उस सज्दे को बतौर शुक्र अदा करते। **(रवाहु नसई कमा फ़िल् मिश्कात-94)**

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) से सम्बन्धित बहुत से ऐसे क़िस्से इस्राईली रिवायत से लिये गये हैं जो ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की शान के ख़िलाफ़ भी है और किसी सही सनद से साबित नहीं है, जिन से एह़तियात करनी चाहिए।

आयत नं० 26 से 44 तक

يٰدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ إِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِيَدَّبَّرُوا
آيٰتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبٰبِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمٰنَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ إِنِّي
أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَأَلْقَيْنَا عَلٰى
كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً
حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَإِنَّ لَهُ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۘ إِذْ نَادٰى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ
وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبٰبِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا
وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

अनुवाद-

(26) ''ऐ दाऊद! 'हमने' ज़मीन में आप को ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है, तो लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला किया करिये और अपनी इच्छा पर न चलिए कि वह आपको अल्लाह की राह से भटका दे; जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं, उन के लिए कड़ी सज़ा है, क्योंकि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया? (27) और 'हमने' आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, उनको बेकार नहीं पैदा किया है, यह उन का गुमान है जिन्होंने इन्कार किया, तो ऐसे इन्कार करने वालों के लिए आग (जहन्नम) की तबाही है। (28) या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक काम किये, क्या हम उनको उनके समान कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं, या हम परहेज़गारों को फ़ाजिरों (दुराचारियों) जैसा कर देंगे? (29) यह एक बरकत वाली किताब है, जिसे 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल (अवतरित) किया है, ताकि लोग इसकी आयतों में सोच-विचार करें, और ताकि अक़्ल वाले नसीहत ह़ासिल करें। (30) और 'हमने' दाऊद को सुलेमान प्रदान किया, वह कितने अच्छे बन्दे थे, बहुत रुजूअ़ रहने वाले थे। (31) जब उनके सामने शाम के वक़्त सधे हुए तेज़ दौड़ने वाले घोड़े हाज़िर किये गये; (32) तो कहने लगे, ''मैंने अपने 'रब' की याद पर (इन घोड़ों की मुहब्बत अर्थात) माल की मुहब्बत अख़्तियार की, यहाँ तक कि (सूरज) पर्दे में छिप गया, (33) (बोले) उनको मेरे पास वापस लाओ! फिर वह उनकी पिडुंलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे।'' (34) और 'हमने' सुलेमान को भी इम्तिहान में डाला, और 'हमने' उनके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर वह रुजूअ़ हुए; (35) कहा, ''ऐ रब! मुझे माफ़ कर दे और मुझे वह राज्य दे, जो मेरे बाद किसी को मुनासिब (अर्थात उपयुक्त) न हो बेशक, 'तू ही' बड़ा दाता है।'' (36) फिर 'हमने' हवा को उनके क़ाबू में कर दिया, जो उसके हुक्म से, धीरे-धीरे चलती, जिधर का वह इरादा करते (37) और शैतानों को भी (उसके क़ाबू

में कर दिया) हर प्रकार के निर्माता और गोता खोर को; (38) और दूसरे को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे; (39) यह 'हमारी' बेहिसाब देन है, अब एहसान करो या रोक लो; (40) और बेशक, उन (सुलेमान) के लिए 'हमारे' यहाँ मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (41) और 'हमारे' बन्दे, अय्यूब, को याद करो, जब उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा, "शैतान ने मुझे तकलीफ़ पहुँचा रखी है।" (42) (हमने कहा) "अपना पैर ज़मीन पर मारो, यह ठंडा पानी है नहाने के लिए भी और पीने के लिए भी।" (43) और 'हमने' उनको और उनकी पत्नी, और उनके साथ उतने ही और भी अता किये, अपनी रह़मत के तौर पर और (यह) समझ रखने वालों के लिए नसीह़त थी। (44) "और ('हमने' अय्यूब से कहा) तिन्कों का एक गुच्छा अपने हाथ में लो और (अपनी बीवी को) उससे मारो और क़सम न झूठी होने दो।" बेशक 'हमने' उनको (अय्यूब को) सब्र करने वाला पाया, बहुत अच्छे बन्दे थे, बेशक वह रुजूअ़ (इ़बादत) करने वाले थे।

आयत नं० 26 से 44 तक की व्याख्या

26 يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) की ख़िलाफ़त

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ दाऊद! हम ने तुम्हें ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया सो आप लोगों के दर्मियान ह़क़ के साथ फ़ैसला करें और ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न कीजिए वरना यह ख़्वाहिश आप को अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। यूँ तो हर हुक्म पर लाज़िम है कि फ़ैसला करने में इन्साफ़ को सामने रखे, लेकिन ख़ासतौर पर जिसे अल्लाह ने अपना ख़लीफ़ा बनाया और नुबूव्वत भी अ़ता की हो उस की ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ जाती है कि वह ह़क़ और इन्साफ़ पर क़ायम रहे।

इच्छा पूर्ति की मज़म्मत-

यह भी फ़रमाया कि आप इच्छा पूर्ति से परहेज़ करें यानी इच्छा की पैरवी न करें वरना वह आप को अल्लाह के रास्ते से हटा देंगे। अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ से जो अ़मल करने के लिए हुक्म हो वह हिदायत है उस की पैरवी करना ज़रूरी है। जो चीज़ अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की तरफ़ से न हो अपने नफ़्स के मुताबिक़ हो, अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की हिदायत के ख़िलाफ़ हो उस की पैरवी करना जायज़ नहीं है।

यह इच्छा की पैरवी ही तो है जो बन्दों को अह़कामे शरअ़िया से रोकता है। जो लोग जज और ह़ाकिम (अधिकारी) हैं और जज में ख़िलाफ़े शरीअ़त फ़ैसले करते हैं, रिश्वते लेते हैं या अपने रिश्तेदारों के ह़क़ में फ़ैसला कर देते हैं यह अपने इच्छा की पूर्ति ही है। सूरः निसा **(आयत नं० 135)** में फ़रमायाः

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ

فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

(ऐ ईमान वालों ! इन्साफ़ पर ख़ूब क़ायम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले रहो चाहे अपनी ही ज़ात पर हो या वालिदैन या दूसरे रिश्तेदारों के मुक़ाबिले में हो। वह शख़्स अगर अमीर हो तो और ग़रीब हो तो, दोनों के साथ अल्लाह तआला का ज़्यादा सम्बन्ध है सो तुम ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी मत करना कि तुम हक़ से हट जाओ।)

और बहुत से अधिकारी किसी की दुश्मनी में ज़ालिमाना फ़ैसला दे देते हैं, जिसे सूरः माइदा में इसी को फ़रमायाः

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۚ

(और किसी क़ौम का बुग्ज़ तुम्हें इस बात पर आमादह न कर दे कि तुम इन्साफ़ न करो।)

हीले बहाने न करना-

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सवाल किया, क्या तुम जानते हो कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला की तरफ़ पहले पहुँचने वाले कौन हैं? अर्ज़ किया अल्लाह और उस का रसूल ख़ूब जानते हैं।

फ़रमाया यह वह लोग हैं कि जब उन्हें हक़ दिया जाए तो क़ुबूल कर लें और जब उन से हक़ का सवाल किया जाए तो पूरी तरह़ दे दें और लोगों के लिए उसी तरह़ फ़ैसले करें जैसे अपने लिए फ़ैसला करते हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 322)**

यह मन की पैरवी ही क़ुर्आन व ह़दीस के हुक्मों से रोकती है। ज़कात न देने के लिए ह़ीले और बहाने तराशता है, बेपर्दगी और सूद को ह़लाल करने के लिए ऐसे लोगों की तह़रीरों की आड़ लेता है जो इख़्लास से खाली हैं, तक़्वा से दूर हैं, नंगे पहनावे, नाच रंग, नफ़्स व नज़र की ह़राम लज़्ज़त, जाह व शोहरत की तलब और ज़्यादा माल की चाहत शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल करने पर आमादह करना मन की पैरवी ही का नतीजा है।

किसी भी मरने वाले की मीरास (माल व जायदाद) शरई वारिसों को न देना, बहनों को बाप के तर्का से न देना, मज़दूर से काम लेकर मज़दूरी न देना यह और इसी तरह़ की सैकड़ों चीज़ें हैं जिन्हें इन्सान मन की इच्छा की वजह से अख़्तियार करता है और शरई हुक्मों से मुँह मोड़ता है। जो लोग हिदायत की पैरवी करते हैं वह अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्ल०) के हुक्म पर चलने ही को ज़िन्दगी का मक़्सद क़रार देते हैं और जो हुक्म सुनते हैं मान लेते हैं।

इच्छाओं की पैरवी-

यह जो फ़रमाया فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ इसमें यह बता दिया कि ख़्वाहिशों की पैरवी करना अल्लाह तआला के रास्ते से हटा देता है। जिस तरह़ दुनियावी हुक्मों में नफ़्स की इच्छाओं के पीछे चलने की वजह से शरई

क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी होती है उसी तरह नाम दीन का और बुर्जुगी का होता है, लेकिन काम शरीअ़त के ख़िलाफ़ होते हैं। यह क़ब्र परस्ती, झूठी पीरी मुरीदी अपनी तरफ़ से बनाई हुई अ़िबादतें है और लोगों को अ़ामतौर पर सुन्नत की पैरवी से ज़्यादा बिद्अ़ात पर चलना ज़्यादा पसन्दीदा होता है, क्योंकि वह उनकी अपनी निकाली हुई है और शैतान भी उनको बिद्अ़ात (नये-नये तरीक़े) पर उभारता है।

ह़दीस शरीफ़ में है कि इब्लीस ने कहा कि मैंने लोगों को गुनाहों पर डालकर हलाक कर दिया और उन्होंने मुझे इस्तिग़फ़ार (तौबः) के साथ हलाक कर दिया (यानी मैं गुनाह करवाता हूँ वह गुनाह कर के इस्तिग़फ़ार (तौबः) कर लेते हैं, जिस से मेरी मेह़नत पर पानी फिर जाता है) लिहाज़ा मैंने यह किया कि उन के लिए वह चीज़ें निकाल दीं जो काम उनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ हों, उन्हें वह नेकी समझ कर करते हैं, लिहाज़ा वह उन चीज़ों से तौबः नहीं करते। **(अलू तर्ग़ीब वलू तरहीब लिलू हाफ़िज़ अलू मुन्ज़री)**

(जब ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी करेंगे और उन अ़ामाल को उन्हें नेकी समझ कर करेंगे तो तौबः न करेंगे, लिहाज़ा अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और शैतान का मक़्सद पूरा होगा।)

सख़्त अ़ज़ाब के ह़क़्दार

إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ

(बिलाशुब्हा जो लोग अल्लाह की राह से हटते हैं उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, ह़िसाब के दिन को भूल जाने की वजह से।)

इसमें अल्लाह की राह से हटने वालों के लिए तम्बीह की गई है और यह भी बता दिया गया कि यह लोग इसलिए अ़ज़ाब में होंगे कि दुनिया में रहते हुए ह़िसाब के दिन को भूल गये थे।

इस में नसीह़त है कि इच्छा पूर्ति की वजह से कोई शख़्स अल्लाह तअ़ाला की राह से हटा हो या और किसी वजह से वह सख़्त अ़ज़ाब का ह़क़्दार हुआ हो। उन गुमराहों में अ़ामतौर से वही लोग मुब्तिला (Involve) होते हैं जो क़ियामत को नहीं मानते या मानते तो हैं लेकिन वहाँ की ह़ाज़िरी का ख़याल नहीं रखते और उसे भूल भुलैया बना देते हैं, इसलिए वहाँ के लिए तैयारी नहीं करते और अपनी जान को अ़ज़ाब का ह़क़्दार बनाते रहते हैं।

27-29 وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ۝ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۝ كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

मुफ़्सिदीन, मोमिनीन और फ़ुज्जार

यह तीन आयात का तर्जुमः है। इन से पहले ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) का ज़िक्र हो रहा था और जल्द ही ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) और उनके बाद ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) का ज़िक्र आ रहा है।

इन तीन आयात ने तौह़ीद, रिसालत और मरने के बाद उठाये जाने को बयान फ़रमा दिया गया है।

यही तीनों चीज़ें जिनकी तरफ़ क़ुर्आन करीम बराबर दअ़्वत देता है और इनके मानने पर आख़िरत की भलाई का वादा करता है।

अल्लाह तआ़ला ने आसमान और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और उन दोनों के दर्मियान जो कुछ है यह सब यूँ ही बिना हिक्मत के नहीं हैं, इनके वजूद को देखकर पहले तो उस मालिक का पता चलता है और फिर यह भी कि इन चीज़ों के पैदा करने में हिक्मत क्या है?

दुनिया में इन्सान भी है और दूसरी चीज़ें भी, आपस में रह़म भी है, ज़ुल्म भी, लड़ाई झगड़े भी हैं, मौत भी है और ह़यात भी, यह कारख़ाने जो जारी और सारी है उस मालिक ने इन्हें क्यों पैदा फ़रमाया?

अगर इस बात में ग़ौर किया जाए तो समझ में आ जाएगा कि इस कारख़ाने में जो कुछ भी है सब अल्लाह तआ़ला की हिक्मत से है। ईमान व कुफ़्र, ख़ैर व शर का सिल्सिला जारी है, लेकिन एक दिन यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी, क़ियामत क़ायम होगी, सब ह़ाज़िर होंगे, उस वक़्त अहले ईमान को ईमान का बदला और अहले कुफ़्र को कुफ़्र की सज़ा दी जाएगी। जो लोग क़ियामत पर ईमान नहीं रखते उनके नज़्दीक मौत के बाद अच्छे या बुरे आ़माल का बदला मिलने वाला नहीं है।

उनकी बात का ह़ासिल यह है कि जो लोग मोमिन हैं, गुनाहों से बचते हैं और जो बड़े-बड़े गुनाहगार हैं बराबर हो जाएँगे यानी न उन्हें कोई सवाब मिलेगा, न उन्हें कोई अ़ज़ाब मिलेगा, उन लोगों की यह बात गलत है जो उन के लिए हलाकत और बर्बादी का सबब है और वह बर्बादी यह होगी कि यह लोग दोज़ख़ में दाख़िल कर दिये जाएँगे। अल्लाह तआ़ला के यहाँ अहले ईमान और नेक आ़माल वाले बन्दों का बड़ा मर्तबः है, यह ह़ज़रात जन्नती होंगे और ज़मीन में फ़साद करने वाले दोज़ख़ में जाएँगे।

अगर इन काफ़िरों और फ़सादियों ने यह समझा है कि अहले ईमान को नेअ़मतें न मिलेंगी और वह हमारी तरह़ ही होंगे, मर कर ख़त्म हो जाएँगे या यह समझा है कि जो नेअ़मतें उन्हें मिलेंगी हमें भी मिल जाएँगी, यह उन की ख़याली बातें है।

इस के बाद फ़रमाया कि हम ने आप की तरफ़ एक किताब नाज़िल की है, जो मुबारक है उसके मानने और पढ़ने-पढ़ाने और उस पर अ़मल करने में दुनिया और आख़िरत की ख़ैर है। आप के ज़रिये जिन लोगों तक पहुँचे उन को चाहिए कि उसकी आयात में ग़ौर करें और अ़क़्ल वाले उस से नसीह़त ह़ासिल करें, ताकि शरई़ हुक्मों को जानें और उन पर अ़मल करें।

30-33 وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ اِنِّىْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) का ज़िक्र

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के बेटे थे, उनको भी अल्लाह तआ़ला ने नुबूव्वत के साथ माल व दौलत, मुल्क और हुकूमत से नवाज़ा था।

पहले उन के बारे में फ़रमाया نِعْمَ الْعَبْدُ कि वह अच्छे बन्दे थे और साथ ही اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ भी फ़रमाया यानी

वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बहुत ज़्यादा रुजूअ़ (पलटने वाले याद करने वाले) करने वाले थे।

घोड़ों का पेश किया जाना-

इस के बाद ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) का एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाया और वह यह कि उन के पास घोड़े बन्धे हुए थे। अन्दाज़ा यही है कि यह घोड़े जिहाद की ज़रूरत के लिए पाल रखे थे, घोड़े भी उ़म्दह थे।

साफ़िन उस घोड़े को कहते हैं जो सामने के एक पांव को मोड़ कर बाक़ी तीन पांव पर खड़ा रहे, अस्ल घोड़ों का यह गुण बताया जा रहा है।

एक दिन ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) ने घोड़ों को तलब किया कि आप उनके देखने में इतना मशगूल (Busy) हुए कि सूरज छुप गया। इस से पहले जो फ़र्ज़ या नफ़्ल नमाज़ पढ़ा करते थे वह रह गई (अगरचे फ़र्ज़ नमाज़ भूलने की वजह से गुनाह में शुमार नहीं होती ख़ासतौर से जबकि ह़ाज़िरीन में से किसी ने याद भी न दिलाया हो और अगर नफ़्ल नमाज़ हो तब तो उस के छूट जाने में गुनाह था ही नहीं, लेकिन उन्होंने हर ह़ाल में उस नमाज़ को छूटने को अच्छा न समझा और घोड़ों की मश्गूलियत भी अल्लाह तआ़ला ही के लिए थी, लेकिन फिर भी चूंकि ज़िक्र ह़क़ीक़ी से ग़ाफ़िल होने का ज़रिया बन गया, इसलिए जब नमाज़ के छूट जाने का एह़सास हुआ तो फ़रमाया कि इन घोड़ों को वापस करो।

जब घोड़ें वापस लौटाये गये तो उन्हें ज़ब्ह़ करना शुरु कर दिया, उनकी गर्दनें तो काटी ही थीं पिन्डुलियाँ भी काट दीं और फ़रमाया कि माल की मुह़ब्बत ने मुझे अपनी तरफ़ इतना लगाया कि अपने रब की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो गया।

यह ज़ब्ह़ करना माल ज़ाया करने के तौर पर नहीं था, बल्कि बतौर क़ुर्बानी के था। अल्बत्ता यह सवाल पैदा होता है कि पिन्डुलियों को क्यों काटा? यह तो जानवर को बिलावजह तक्लीफ़ देना हुआ।

मुम्किन है कि गर्दनें काटने के बाद पिन्डुलियाँ काटी होंगी जब कि उन की जान निकल चुकी होगी और घोड़े में चूंकि पिन्डुली ही अस्ल चीज़ है जिस से घोड़ा दौड़ता है इसलिए ग़ैरत के जोश में पिन्डुलियाँ भी काट दीं यानी इस काम में जल्दी कर दी वरना खाने-पीने के लिए तो काटना ही था। इसलिए यह सवाल पैदा नहीं होता कि आयते शरीफ़ा में पहले पिन्डुलियों का ज़िक्र है। यहाँ शब्द अल् आ़नाक़ को बाद में लाया गया है। जैसा कि सूरः ताहा में رَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى फ़रमाया और दूसरी जगह رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ फ़रमाया है।

34-40 وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ
مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ۝ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ
وَّغَوَّاصٍ ۝ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَاِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝

शैतान को कामों में लगाना

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि सुलेमान इब्ने

दाऊद (अ़लै०) ने कहा कि आज की रात मैं सत्तर (70) औ़रतों के पास जाऊँगा (यानी उन से सोहबत करुँगा) उन में हर औ़रत ह़ामिला होगी और हर औ़रत से एक शहस्वार (घुड़सवार मुजाहिद) पैदा होगा, जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेगा। वहाँ जो उन के पास फ़रिश्ता मौजूद था उस ने कहा कि 'इन्शाअल्लाह' कह लीजिए लेकिन उन्होंने (फिर भी इन्शाअल्लाह न कहा और दिल में यक़ीन ख़ालिस था कि सब कुछ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से होता है उसी को काफ़ी समझा) इस के बाद यह हुआ कि उन औ़रतों में से सिर्फ़ एक औ़रत को ह़मल क़रार पाया, उस से अधूरा बच्चा पैदा हुआ जिस का एक तरफ़ का धड़ न था।

यह बयान फ़रमाकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर वह इन्शाअल्लाह कह लेते तो (सब सही व सालिम लड़के पैदा होते जो अल्लाह की राह में जिहाद करते।)

(रवाहुल् बुख़ारी पेज नं० 487 भाग 1)

इन्शाअल्लाह की फ़ज़ीलत-

इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने यह वाक़िआ़ नक़्ल किया है और बताया है कि इस आयत में जो ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) के इम्तिह़ान में डालने का ज़िक्र है, उस से यही इम्तिह़ान मुराद है कि उन्होंने इन्शाअल्लाह न कहा था और जो अधूरा बच्चा पैदा हुआ था उसी के बारे में फ़रमाया है कि जब उन्हें अपनी इस ग़ल्ती का एह़सास हुआ (कि इन्शाअल्लाह न कहा था) तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ पलटे और इस्तिग़्फ़ार किया।

इस्तिग़्फ़ार भी किया और आइन्दा के लिए अल्लाह तआ़ला से ऐसी हुकूमत और सल्तनत की दुआ़ की जो उन के सिवा और किसी को न मिले। दुआ़ के आख़िर में إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ कहा कि ऐ अल्लाह! आप बहुत बड़े देने वाले हैं। यह दुआ़ के आदाब में से है कि दुआ़ के अव्वल व आख़िर अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात बयान की जाएँ अल्लाह तआ़ला ने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई।

पहले तो घोड़े ही क़ाबू में थे अब हवा को भी क़ाबू में कर दिया और उन के अधीन बना दिया, वह जहाँ जाना चाहते थे, हवा उन्हें वहाँ लेकर चली जाती थी।

सूरः सबा *(आयत नं० 12)* में फ़रमाया है غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ कि उस हवा का चलना एक महीने की मुसाफ़त थी और उस का शाम का चलना भी एक महीने के सफ़र के बराबर था।

हवा पर क़ाबू-

हवा तेज़ तो चलती ही थी, लेकिन नर्मी के साथ जाती थी उस में हिलाना जुलाना नहीं था। अब तो जहाज़ों की रफ़्तारों (Speed) ने आ़म और ख़ास सब को यह बात बता दिया है कि तेज़ चलना और बैठने वालों का आराम से बैठे रहना दोनों चीज़ें जमा हो सकती हैं।

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) के लिए जिस तरह़ हवा क़ाबू में कर दी गई थी जो उनको लश्करों और ख़ादिमों समेत हुक्म के मुताबिक़ लाती और ले जाती थी, उसी तरह़ अल्लाह ने शैतानों को भी उन के क़ाबू में कर दिया था, उन से वह इमारतों के बनवाने का काम लेते थे और उन्हें यह भी हुक्म देते थे कि दरिया

में ग़ोता लगाओ और समुद्री चीज़ें निकाल कर लाओ और उन से इस के अ़लावा भी काम लेते थे, जिन का ज़िक्र सूरः अम्बिया के छठे रुकूअ़ में और सूरः सबा के दूसरे रुकूअ़ में गुज़र चुका है।

बहुत से शैतान ऐसे भी थे जिन्हें ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) ज़ंजीरों में जकड़ कर डाल देते थे, यह क़ुद्रत और क़ुव्वत अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) को दी थी। ऐसा मालूम होता है कि जो ख़िद्मत सुर्पुद की जाती थीं उन में से किसी काम के करने में अगर जिन्नात में से कोई शैतान नाफ़रमानी या कोताही करता है तो उसे क़ैद कर के डाल देते थे।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) को सल्तनत (सत्ता) दी, बड़ी-बड़ी चीज़ें अ़ता फ़रमाईं, माल व दौलत से और मुल्क से नवाज़ा, शैतानों पर क़ाबू दिया और फ़रमाया कि هَٰذَا عَطَاؤُنَا यह हमारा अ़तिया है।

فَامْنُنْ इस में किसी को देकर एह़सान कर दो, أَوْ أَمْسِكْ याद रखो! यानी किसी को कुछ भी न दो तुम्हें अख़्तियाार है तुम्हें जो कुछ दिया गया सब बिना ह़िसाब और बिना गिरिफ़्त के है, तुम उस के मालिक हो और आख़िर में उसी इन्आ़म का ज़िक्र फ़रमाया जो उनके वालिद के लिए फ़रमाया था وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) को जो अल्लाह तआ़ला ने हुकूमत और सल्तनत नसीब फ़रमाई, वह उन के बाद किसी को नहीं मिली। उन्होंने जो दुआ़ में لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّن بَعْدِي कहा था, अल्लाह तआ़ला ने उनकी इस दुआ़ को क़ुबूल फ़रमाया, जिन्नात पर तो क़ाबू पा लिया जाता है, लेकिन हवा पर कन्ट्रोल ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) के अ़लावा किसी को नहीं हुआ।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जिन्नात में से एक (बड़ा ख़बीस) शैतान रात को छूट गया था (वह मेरे पास आया) ताकि मेरी नमाज़ ख़राब कर दे, अल्लाह ने मुझे उस पर क़ाबू दे दिया, सो मैंने उसे पकड़ लिया। मैंने चाहा कि उसे मस्जिद के एक सुतून से बांध दूँ ताकि तुम सब उसे देख लो, फिर मुझे अपने भाई सुलेमान (अ़लै०) की दुआ़ याद आ गई رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّن بَعْدِي लिहाज़ा मैंने उसे ज़लील कर के धक्का दे दिया।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 487 भाग 1)

मालूम हुआ कि किसी इन्सान को अल्लाह तआ़ला किसी शैतान पर क़ाबू दे दे तो यह बड़ी बात नहीं है और यह आपस के एह़तिराम की बात है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़ाबू कर लेने के बावजूद शैतान को छोड़ दिया और बाँध कर न डाला, ताकि अपने भाई सुलेमान (अ़लै०) की शान में फ़र्क़ न आ जाए जो उन्हें पसन्द थी और जिस के लिए उन्होंने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की थी।

41-44 وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۘ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ۝ ارْكُضْ بِرِجْلِكَ ۖ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ
وَشَرَابٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِب
بِّهِ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) की बीमारी

इन आयात में ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) के इम्तिह़ान में कामियाब होने का ज़िक्र है। सूरतुल् अम्बिया

रुकूअ़-6 में भी उन का यह ज़िक्र गुज़र चुका है। क़ुर्आन मजीद में उनके वाक़िये का मुख़्तसर ज़िक्र है, तफ़्सीली हा़लात जानने का कोई रास्ता नहीं है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के इर्शाद से सिर्फ़ इतना साबित है कि ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) गुस्ल फ़रमा रहे थे, सोने की टिड्डियाँ गिरीं तो उन्हें जमा करने लगे।

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) के दुख तक्लीफ़ के तफ़्सीली हा़लात ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से, बाज़ ह़ज़रत क़तादह (ताबई रह़०) से और बाज़ ह़ज़रत ह़सन (ताबई रह़०) से नक़्ल हैं, जिन्हें हा़फ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती (रह़०) ने दुर्रे मन्सूर में लिखा है, लेकिन यह सब इस्राईली रिवायात में से हैं जिन पर ए़तिमाद नहीं किया जा सकता। **(अल् क़ुर्तुबी पेज नं० 210 भाग 15)**

क़ुर्आन मजीद से जो बातें मालूम होती हैं वह यह हैं किः-

1- ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तिला किये गये।
2- शैतान ने उन्हें तक्लीफ़ पहुँचाई।
3- तक्लीफ़ जानी भी थी और माली भी।
4- उनके अहल व अ़याल भी ख़त्म कर दिये गये थे।
5- इस पर उन्होंने बहुत सब्र किया जिस पर अल्लाह तआ़ला ने उनकी तअ़रीफ़ फ़रमाई कि إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا - बेशक हम ने उनको साबिर पाया - نِعْمَ الْعَبْدُ - अच्छे बन्दे थे। अय्यूब إِنَّهُ أَوَّابٌ (बेशक बहुत रुजूअ़ (तौबः) करने वाले थे।)

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) का ख़ास ज़िक्र

इस्राईली रिवायात में ज़िक्र है कि ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) सात साल और चन्द माह सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तिला रहे।

(फ़त्हु़ल् बारी में 3 साल, 13 साल और सात साल ज़िक्र किया है और दूसरी बात को सही़ बताया है, भाग 6 पेज 422)

माल और अहल व अ़याल कुछ भी नहीं बचा था, जबकि पहले तरह़-तरह़ की नेअ़मतों से मालामाल थे, सिर्फ़ उनकी बीवी उनके पास बची थी जो उनकी ख़िद्मत करती थी, उस वफ़ादार बीवी का नाम 'रह़मत' था। उन्होंने जो दुआ़ की थी उस के शब्द सूरतुल् अम्बिया **(आयत नं० 83)** में इस तरह़ हैंः-

أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ (बेशक मुझे तकलीफ़ पहुँचाई गई और आप अरह़मुर्राहि़मीन हैं।)

और सूरः साद में यूँ है إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ (कि शैतान ने मुझे दुख पहुँचा दिया और तक्लीफ़ पहुँचा दी।

'साहि़बे रुहु़ल् मआ़नी' लिखते हैं कि 'नुस्ब' मशक़्क़त के मअ़ने में आता है और ज़्यादातर काम काज की वजह से जो थकान हो जाए उस के लिए इस्तेमाल होता है और अ़ज़ाब से तक्लीफ़ मुराद है, जिसे सूरतुल् अम्बिया में अल् ज़र फ़रमाया है।

बाज़ ह़ज़रात का यह क़ौल नक़्ल किया है कि अल् नुस्ब और अल् ज़र से जिस्मानी तक्लीफ़ और

अ़ज़ाब से घर वाले और माल ज़ाया होने की तक्लीफ़ मुराद है।

जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) की दुआ़ कुबूल फ़रमाई तो फ़रमाया ارْكُضْ بِرِجْلِكَ कि ज़मीन में अपना पांव मारो, उन्होंने पांव मारा तो वहाँ से चश्मा जारी हो गया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ

(यह ग़ुस्ल करने की चीज़ है जो ठंडी और पीने की चीज़ है) चुनाँचे उन्होंने ग़ुस्ल किया और पानी पिया जिस्म दुरुस्त हो गया, शिफ़ा कामिल ह़ासिल हो गई। ज़ाहिरी (External) और बातिनी (Internal) तौर पर बिलूकुल सेह़त, आ़फ़ियत और सलामती वाली ज़िन्दग़ी मिल गई।

उनके अहल व औलाद जो इधर-उधर बिखर गये थे, अल्लाह तआ़ला ने वापस उनके पास पहुँचा दिये और सब को ऐ़श व इ़शरत वाली ज़िन्दग़ी अ़ता फ़रमा दी।

फिर उन लोगों से आगे नस्ल चली और इतनी ज़्यादा नस्ल फली फूली कि जिस क़दर उनकी पहली नस्ल के लोग थे उसी क़दर अल्लाह तआ़ला ने मज़ीद लोग पैदा फ़रमा दिये وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ का एक मतलब यही बयान किया गया है।

'साह़िबे रुहुलू मआ़नी' फ़रमाते हैं कि मेरा मैलान भी इसी तरफ़ है और दूसरा क़ौल यह है कि उनकी औलाद मौत का निवाला बन गई थी, सब मर गये थे, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दोबारा उतनी ही औलाद दे दी और इस के अ़लावा मज़ीद उतनी ही औलाद और दे दी।

'सुनन इब्ने माजा' में है कि ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) को जिस दिन तक्लीफ़ पहुँची वह बुध का दिन था और जिस दिन उन्हें आ़फ़ियत मिली वह मंगल का दिन था।

رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ

यह हमारी तरफ़ से रह़मते ख़ास्सा के तौर पर था और अ़क़्ल वालों के लिए एक यादगार थी (ताकि अहले अ़क़्ल यह समझें और याद रखें कि सब्र करने वाले को अल्लाह तआ़ला कैसी अच्छी-अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाता है।) وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) अपनी बीमारी के ज़माने में अपनी बीवी से नाराज़ हो गये थे। नाराज़गी की क्या वजह थी? इस के बारे में तफ़्सीर की किताबों में कई बातें लिखी हैं, जो सब इस्राईली रिवायात हैं, उन में से एक रिवायत यह है, जो ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से मन्कूल है कि एक मर्तबः शैतान डाक्टर की सूरत में जा रहा था, उनकी बीवी ने उस से कहा कि मेरे शौहर का इलाज कर दे, शैतान ने कहा कि मैं इलाज कर दूँगा, मुझे कोई फ़ीस या दवा के क़ीमत की भी ज़रूरत नहीं। हाँ, जब तेरा शौहर अच्छा हो जाए तो सिर्फ़ इतना कह देना कि तूने शिफ़ा दी।

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) की बीवी ने उस को मान लिया, फिर अपने शौहर (पति) से ज़िक्र किया। उन्हें यह बात नागवार हुई और फ़रमाया कि तूने डाक्टर (शैतान) से यह वादा कर लिया कि उसके बारे में यूँ कह दिया जाए कि तूने शिफ़ा दी, मैं अच्छा हो गया तो तुझे सौ क़मचियाँ (छड़ी) मारूँगा। जब अल्लाह तआ़ला ने उन्हें शिफ़ा दे दी तो क़सम पूरा करने का ख़याल आया।

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम अपने हाथ में सौ छड़ी का एक मुट्ठा ले लो और उस को एक मर्तबः अपनी बीवी के जिस्म में मार दो, जब ऐसा कर लोगे तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी और बच जाओगे। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया, चूंकि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ही उन्हें यह अ़मल बताया और यह फ़रमा दिया कि तुम क़सम तोड़ने वाले न बनो और इस अ़मल को क़सम पूरा होने की जगह क़ुबूल फ़रमा लिया, इसलिए ऐसा नहीं कहा जा सकता कि कोई शख़्स सौ कोड़े या क़मचियाँ मारने की क़सम खा ले और इकट्ठी सौ छड़ी मारकर क़सम पूरी करने वालों में शुमार हो जाए और क़सम तोड़ने के लिए गुनाह से बच जाए। जो चीज़ें ख़ास होती हैं उन पर क़यास नहीं किया जा सकता।

अल्बत्ता इस से क़सम पूरा करने की ज़रूरत और अहमियत मालूम होती है। अल्लाह तआ़ला चाहता तो उनकी क़सम के टूट जाने को बिल्कुल ही माफ़ फ़रमा देता, लेकिन बिल्कुल माफ़ नहीं फ़रमाया, कुछ न कुछ ऐसा अ़मल करवा ही दिया जिस से क़सम में पूरा उतरने की शरई हैसियत बाक़ी रहे।

इसी तरह़ का एक वाक़िआ़ 'सुनन अबी दाऊद' में है, जो ह़ज़रत अबू उमामा सहल बिन हुनैफ़ (रज़ि०) से मरवी है कि एक शख़्स जो बहुत ही ज़्यादा कमज़ोर बूढ़ा हो चुका था, वह एक बांदी के साथ ज़िना कर बैठा, फिर उसे एह़सास हुआ तो अन्सार के जो लोग उसकी अ़यादत करने गये थे उन्हें सूरते ह़ाल बता दी और कहा कि मेरे लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) से फ़त्वा तलब करो। उन ह़ज़रात ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने वाक़िआ़ पेश किया और साथ ही यह भी बयान कर दिया कि वह शख़्स इतना ज़्यादा कमज़ोर है कि केवल हड्डियों पर खाल रह गई है अगर हम उसे आपकी ख़िद्मत में लेकर आएँ तो उसकी हड्डियाँ टूट-फूट कर रह जाएँगी।

आप (सल्ल०) ने हुक्म दिया कि खजूर की एक टहनी के सौ (100) रेशे ले लो और एक साथ सब को एक मर्तबः मार दो। **(सुनन अबी दाऊद भाग 2 पेज नं० 258)**

इस से भी वही बात समझ में आ रही है कि वह शख़्स ज़िना करने की वजह से सौ कोड़ों की सज़ा का ह़क़्दार था, लेकिन मौत की सज़ा का ह़क़्दार न था। अब उसे सौ कोड़े मारे जाते तो मर जाता और जान से मार देना मक़्सूद न था और ह़द को बिल्कुल ही ख़त्म कर देना भी शरीअ़त के मिज़ाज के ख़िलाफ़ था, क्योंकि क़ुर्आन मजीद **(सूरः नूर आयत नं० 2)** में इर्शाद फ़रमायाः-

وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ (और अल्लाह के दीन में तुम्हें रह़म न पकड़ ले कि तुम ज़ानी और ज़ानिया पर रह़म खा जाओ) लिहाज़ा सज़ा को ख़त्म नहीं फ़रमाया, बल्कि कुछ न कुछ सज़ा दिलवा ही दी ताकि उम्मत होशियार और बेदार रहे और ह़द (सज़ा) जारी करने में किसी तरह़ की ढ़ील को बर्दाश्त न करे।

दुआ़ की क़ुबूलियत और बरकात-

यहाँ यह सवाल पैदा होता है क्या ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) ने अपनी सख़्त बीमारी के दिनों में सेह़त व आ़फ़ियत के लिए दुआ़ नहीं की और अगर की थी तो क्यों क़ुबूल न हुई?

बात यह है कि बज़ाहिर ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) दुआ़ से ग़ाफ़िल तो न रहे होंगे, लेकिन अल्लाह

तआ़ला के फ़ैसले के मुताबिक़ जब तक उन्हें उसी ह़ाल में रखना था उस वक़्त तक बाक़ी रखा और दुआ़ का सवाब उन्हें मिलता रहा और आख़िरत में दर्जात की बुलन्दी होती रही, इसलिए कि मोमिन बन्दा की कोई दुआ़ ज़ाया (बेकार) नहीं जाती।

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मुसलमान कोई दुआ़ करता है जो गुनाह की या नाता तोड़ने की दुआ़ न हो, तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रूर तीन चीज़ों में से एक अ़ता फ़रमा देता है।

1- जो दुआ़ की उसके मुताबिक़ इसी दुनिया में जल्दी मक़्सद पूरा कर दिया जाता है।

2- या इस दुआ़ को उस के लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बना दिया जाता है।

3- या उस पर आने वाली मुसीबत उस से हटा दी जाती है (यानी आने से रुक जाती है।)

सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया बस तो फिर ख़ूब ज़्यादा दुआ़एँ करेंगे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया (अल्लाह (भी) बहुत ज़्यादा देने वाला है। **(रवाहु अह़मद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 196)**

अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला-

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) को तक्लीफ़ पहुँची तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुआ़ करना भुला दिया था, यानी अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र बहुत ज़्यादा करते थे लेकिन दुआ़ न करते थे और चूंकि दुख तक्लीफ़ में अल्लाह की रज़ा समझते थे, इसलिए उनकी रग़बत इसी में थी।

फिर जब अल्लाह तआ़ला को उनकी तक्लीफ़ दूर करना मन्ज़ूर हुआ, तो उन्हें दुआ़ करने की तौफ़ीक़ दे दी और उन्हें दुआ़ करना याद आ गया। जब दुआ़ की तो अल्लाह तआ़ला ने दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और माल व दौलत, आल व औलाद जो कुछ चला गया था उस का दो गुना अ़ता फ़रमा दिया और अल्लाह तआ़ला ने उनकी तअ़रीफ़ फ़रमाई कि إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ **(दुर्रे मन्सूर पेज नं० 328 भाग 4)**

बात यह है कि पूरी दुनिया में जो कुछ होता है अल्लाह तआ़ला के हुक्म से होता है। दुआ़ भी उसी वक़्त क़ुबूल होती है जब कामियाबी का वक़्त आ जाता है, और दवा भी जब ही असर करती है जब अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी में शिफ़ा देना होता है। अल्लाह तआ़ला को पूरा-पूरा अख़्तियार है कि जिसे चाहे जितना आराम दे और जिसे चाहे तक्लीफ़ के ज़रिये आज़्माये और मोमिन बन्दों के लिए चूंकि तक्लीफ़ में भी ख़ैर ही ख़ैर है (उस पर सवाब मिलता है और आख़िरत में दर्जात बुलन्द होते हैं) इसलिए उन के लिए तक्लीफ़ में मुब्तिला होना भी ख़ैर ही ख़ैर है। कोई शख़्स यूँ न समझे कि फ़लाँ शख़्स देखने में तो इतना नेक है फिर यह इतनी बड़ी तक्लीफ़ में मुब्तिला हुआ है तो ज़रूर किसी बड़े गुनाह में मुब्तिला हुआ होगा। **(उ़म्दतुल् क़ारी भाग 5 पेज नं० 282)**

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जब मुसीबत वालों को सवाब दिया जाएगा तो आराम व आ़फ़ियत वाले तमन्ना करेंगे कि काश! हमारी खालें क़ैंचियों से काटी जातीं। **(तिर्मिज़ी कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 137)**

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने जो यह फ़रमाया कि हज़रत अय्यूब (अ़लै०) अपने तक्लीफ़ के दिनों में दुआ़ को भूले रहे, इसकी ताईद में हज़रत अबान बिन उ़स्मान (रज़ि०) की एक बात सुनिये वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) से सुना है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो भी कोई बन्दा रोज़ाना सुबह व शाम तीन मर्तबः بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْئٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْم पढ़ लिया करे तो उसे कोई चीज़ भी नुक़्सान न पहुँचा सकेगी।

'हज़रत अबान' ने ह़दीस तो बयान कर दी, लेकिन उनके जिस्म पर एक जगह फ़ालिज का असर था। जिस शख़्स से उन्होंने ह़दीस बयान की वह उनकी तरफ़ (तअ़ज्जुब की नज़रों से) देखने लगा।

हज़रत अबान ने उस की नज़रों को भांप लिया और फ़रमाया तुम मुझे देख रहे हो? ख़ूब समझ लो बिला शक व शुब्हा ह़दीस इसी तरह़ से है जैसा कि मैंने बयान की, लेकिन बात यह है कि जिस दिन मुझे यह तक्लीफ़ पहुँची है मैंने इस दुआ़ को नहीं पढ़ा था (यानी भूल गया था) ताकि अल्लाह अपनी तक़्दीर के फ़ैसले को नाफ़िज़ कर दे। **(रवाहु तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व अबूदाऊद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 209)**

आयत नं० 45 से 70 तक

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ
الْاَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۚ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝ هٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ
الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝ هٰذَا ۗ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ۝ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۝ وَّاٰخَرُ مِنْ
شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ۝ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۗ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۗ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۗ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝
قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ۝ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ
زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ۝ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ۝ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝
اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

अनुवाद-

(45) और 'हमारे' बन्दे! इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब को याद करो, जो ताक़त वाले और गहरी निगाह वाले थे। (46) 'हमने' उनको एक खास बात के लिए चुना था जो वास्तविक घर (आख़िरत) की याद थी। (47) और वे 'हमारे' यहां चुने हुए नेक लोगों में से थे। (48) और इस्माईल, और अल्-यसअ़, और जुलकि़फ़्ल को भी याद करो, वे सब भले लोगों में से थे। (49) यह यादगारें हैं, और परहेज़गारों के लिए अच्छा ठिकाना है (50) हमेशा-हमेश की जन्नतें, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे। (51) उनमें तकिये लगाए बैठे होंगे, बहुत से मेवे और शराब (पीने की चीज़ें) मंगवा रहे होंगे; (52) और उनके पास नीची निगाह वाली हमउम्र (औ़रतें) होंगी (53) यह है वह चीज़, जिसका तुमसे हिसाब के दिन के लिए वादा किया जा रहा था। (54) यह 'हमारा' रिज़्क़ (रोज़ी) है, जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (55) यह (बदला) है और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। (56) जहन्नम- जिसमें वे दाख़िल होंगे, तो वह कितना बुरा ठिकाना है; (57) यह है उनके लिए, तो वे इसका मज़ा चखें, खौलते हुए पानी और पीप का; (58) और इसी तरह की दूसरी चीज़ों का (अ़ज़ाब होगा)। (59) ''यह एक फ़ौज है जो तुम्हारे साथ दाख़िल होगी, इनको खुशी न हो ये तो आग में पड़ने वाले हैं।'' (60) कहेंगे, ''बल्कि तुम ही को खुशी न हो तुम्हीं तो इसे हमारे आगे लाए हो, तो (यह) बुरा ठिकाना है।'' (61) वे कहेंगे, ''ऐ रब! जिन लोगों ने हमें इस अंजाम तक पहुँचाया है, उसको आग (जहन्नम) में दोहरा अ़ज़ाब दे!''(62) और कहेंगे, ''क्या बात है कि हम उन व्यक्तियों को नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरों में गिनते थे? '' (63) क्या 'हमने' उनका मज़ाक़ बना लिया था, या निगाहें उनसे चूक गई हैं? (64) बेशक दोज़ख़ियों की यह आपसी तकरार एक सच्ची बात है। (65) कह दीजिए, ''मैं तो केवल सचेत करने वाला हूँ, और एक अल्लाह के सिवा कोई उपास्य (मअ़बूद) नहीं 'वही' ज़ोर वाला है, (66) आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सभी चीज़ों का मालिक, बड़ी ज़ोर वाला (प्रभुत्वशाली) और बख़्शने वाला है।'' (67) कह दीजिए, ''यह एक बहुत बड़ी ख़बर है; (68) जिससे तुम मुँह मोड़ रहे हो,

(69) मुझे मल-ए-अ़ाला (सर्वोच्च दरबार वालों) की कोई ख़बर न थी, जब वे झगड़ रहे थे; (70) मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) केवल इसलिए की जाती है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।"

आयत नं० 45 से 70 तक की व्याख्या

45-54
وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝
وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝ هٰذَا
ذِكْرٌ ۭ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत इस्ह़ाक़, ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) का ज़िक्र

इन आयात में पहले नबियों का ज़िक्र फ़रमाया। इस के बाद परहेज़गारों का इन्अ़ाम बयान फ़रमाया, जो बाग़ों, हमउ़म्र बीवियों और खाने-पीने की सूरत में दिया जाएगा।

इर्शाद फ़रमाया कि हमारे उन बन्दों को याद कीजिए यानी ह़ज़रत इब्राहीम, उन के बेटे इस्ह़ाक़ और उन के बेटे याक़ूब को याद कीजिए। इन ह़ज़रात की नुबूव्वत का ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में दूसरी जगह आ चुका है। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का ज़िक्र तो बहुत जगह आया है, तौह़ीद की दअ़वत के सिल्सिले में उन का तक्लीफ़ें उठाना, आग में डाला जाना, काफ़िरों और मुश्रिकों से बहस करना, अल्लाह तअ़ाला का हुक्म मिलने पर बेटे को ज़ब्ह़ करने के लिए लिटा देना यह सब गुज़र चुका है। अपने बेटे ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) के साथ मिलकर कअ़बः शरीफ़ बनाना, फिर ह़ज के लिए लोगों को पुकारना और यह दुअ़ा कि ऐ हमारे रब! मक्का वालों में उन्हीं में से ऐसा शख़्स नबी बनाकर भेजना जो आपकी किताब पढ़कर सुनाये और उन्हें किताब और ह़िक्मत की तअ़लीम दे। यह बयान भी पहले गुज़र चुका है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जो उनकी मिल्लत की पैरवी करने का हुक्म फ़रमाया है। सूरः बक़रः, सूरः नह़ल और सूरः ह़ज में इसका बयान भी गुज़र चुका है।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाद जितने भी नबी आये सब उन्हीं की नस्ल में से थे। ख़ातिमुन्नबीय्यीन सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) बनी इस्माईल में से और बाक़ी तमाम अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) बनी इस्ह़ाक़ में से थे, जिन्हें बनी इस्राईल कहा जाता है। इस्राईल ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) का लक़ब था, ह़ज़रत इस्माईल और इस्ह़ाक़ बुढ़ापे में अ़ता किये गये थे, इसलिए ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने बतौर शुक्रिया यूँ कहा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ

(सब तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे बूढ़ी उ़म्र में इस्माईल और इस्ह़ाक़ अ़ता फ़रमाये, बिलाशुब्हा मेरा रब दुअ़ा का सुनने वाला है।)

इन हज़रात का एक ख़ास गुण أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ बयान फ़रमाया। शाब्दिक अनुवाद तो यह है कि वह हाथों वाले और आँखों वाले थे और इस का मतलब उलमा ने यह लिखा है कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी फ़रमाँबरदारी और अिबादत की कुव्वत अता फ़रमाई और दीनी समझ की नेअमत से नवाज़ा था। **(इब्ने कसीर)**

इस के बाद उनकी एक और सिफ़त बयान फ़रमाई إِنَّا أَخْلَصْنَاهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ

(यानी हम ने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था जो आख़िरत की याद है।)

यह हज़रात ख़ालिस आख़िरत के कामों और वहाँ की फ़िक्रमन्दी में लगे रहते थे।

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' में हज़रत 'मालिक बिन दीनार' से इस आयत की तफ़्सीर नक़्ल करते हुए लिखा है:

نزع الله تعالىٰ من قلوبهم حب الدنيا وذكرها واخلصهم بحُبّ الاخرة وذكراها

(यानी अल्लाह तआला ने उन के दिलों से दुनिया की मुहब्बत और उसकी याद को निकाल दिया, उनके दिलों में ख़ालिस आख़िरत की मुहब्बत डाल दी और ख़ालिस उसी की फ़िक्र में लगा दिया और हज़रत क़तादह से नक़्ल किया है كانو يذكرون الناس الدار الاخرة والعمل لها (यानी यह हज़रात दूसरे लोगों को आख़िरत याद दिलाते थे और उसके लिए अमल करने की तर्ग़ीब देते थे।)

उन हज़रात की तीसरी सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ

(और बिलाशुब्हा यह बन्दे हमारे नज़्दीक मुन्तख़ब (Selected) किये हुए अच्छे लोगों में से थे।)

हज़रत इस्माईल, अलयसअ और जुलकिफ़्ल अलैहिमुस्सलाम

इनके बाद हज़रत इस्माईल, हज़रत अलयसअ और हज़रत जुलकिफ़्ल (अलै०) का ज़िक्र करने का हुक्म फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि यह सब अच्छे बन्दे थे। इन हज़रात का ज़िक्र सूरतुल अम्बिया में गुज़र चुका है। सूरः अनआम (आयत नं० 83) में وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ की तफ़्सीर भी देख ली जाए।

هَٰذَا ذِكْرٌ यानी जो कुछ बयान हुआ एक नसीहत की चीज़ है, जिस को याद रखना चाहिए और उस पर अमल करना चाहिए।

मुत्तक़ी हज़रात की नेअमतों का ज़िक्र-

وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ (और बिलाशुब्हा परहेज़गारों के लिए अच्छा ठिकाना है) फिर उसे ठिकाने की तफ़्सीर बताई جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ (यानी हमेशा रहने के बाग़ीचें होंगे जिन के दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे।)

जब जन्नत में दाख़िल होने लगेंगे तो उसके दरवाज़े खुले हुए पाएँगे। जैसा कि उन लोगों का इक्राम और इस्तिक़बाल किया जाता है, जिन्हें मेहमानी के तौर पर बुलाया जाता है। सूरः जुमर में इसी को फ़रमाया حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا इसके बाद उन हज़रात के बैठने का, मेवों का और पीने की चीज़ें तलब करने का ज़िक्र फ़रमाया مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ फिर उनकी बीवियों का ज़िक्र फ़रमायाः-

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ (उन के पास ऐसी बीवियाँ होंगी जो नज़रें पस्त किये हुए होंगी यानी अपने शौहरों के अ़लावा किसी की तरफ़ नज़र उठा कर न देखेंगी और वह हम उ़म्र भी होंगी।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ (उन से कहा जाएगा यह है वह इनआ़म व इक्राम जिस का तुम से वादा किया जाता था कि हि़साब के दिन यानी क़ियामत के रोज़ तुम्हें यह चीज़ें दी जाएँगी।)

अहले जन्नत को ख़ुश करने के लिए यह भी कहा जाएगा कि اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ (बिलाशुब्हा यह हमारा रिज़्क़ है जिस के लिए ख़त्म होना नहीं है यानी यह (रिज़्क़ हमेशा रहेगा) न कभी छीना जाएगा और न कभी कम होगा।

सूरः हूद **(आयत नं० 108)** में फ़रमाया عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ (बख़्शिश है जो ख़त्म होने वाली नहीं है) और अहले ईमान के लिए لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ भी फ़रमाया, उन के लिए ऐसा अज्र है जो कटने वाला यानी ख़त्म होने वाला नहीं।

55-64

هٰذَا ۗ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۝
وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ۝ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۗ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۖ لَا
مَرْحَبًا بِكُمْ ۗ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا
فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ۝ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ
الْاَبْصَارُ ۝ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ۝

दोज़ख़ी दोज़ख़ में एक दूसरे से बेज़ार होंगे

फ़रमाया هٰذَا यानी यह बात जो ऊपर बयान हो चुकी उसको महफ़ूज़ रखो और याद रखो। इसके बाद दोज़ख़ियों का ह़ाल मालूम करो और वह यह कि सरकशों का बुरा ठिकाना होगा यानी यह लोग दोज़ख़ में दाख़िल होंगे जो बद्तरीन ठिकाना है और बुरा बिछौना है (चूंकि दोज़ख़ियों के नीचे भी आग होगी इसलिए उसे बुरा बिछौना फ़रमाया) यह अ़ज़ाब है सो इसे चख लो। ह़मीम (एक तरह का अ़ज़ाब) है और ग़स्साक़ (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है और इसी तरह़ का मुख़्तलिफ़ क़िस्म का अ़ज़ाब है।

जैसे ज़रीअ़ (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है और ज़महीर (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है ज़क्कूम (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है और ग़िस्लीन (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है, सऊद (एक तरह़ का अ़ज़ाब) है और मक़ामेअ़ (एक तरह़ का अ़ज़ाब) हैं वग़ैरह। ह़मीम गर्म पानी को कहते हैं।

सूरः मुह़म्मद **(आयत नं० 15)** में फ़रमाया وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ (और उन्हें ख़ौलता हुआ गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतों के टुकड़े-टुकड़े कर देगा और 'ग़स्साक़' के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि अगर उस का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएँ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़, तिर्मिज़ी पेज नं० 503)**

ग़स्साक़ क्या चीज़ है? इस के बारे में साह़िबे मिरक़ात (शरह़ मिश्कात) ने चार क़ौल नक़्ल किये हैं।

1- दोज़ख़ियों की पीप और उस से निकला हुआ ख़ून मुराद है।
2- दोज़ख़ियों के आँसू मुराद हैं।
3- दोज़ख़ का ठंडक वाला अ़ज़ाब मुराद है।
4- ग़स्साक़ गाढ़ी और ठंडी पीप है जो ठंडक की वजह से पी न जा सकेगी (मगर भूक की वजह से मजबूरन पीना पड़ेगी) बहरहाल ग़स्साक़ बहुत ही बुरी चीज़ है जो बहुत ही ज़्यादा बद्‌बूदार है। اَللّٰهُمَّ اَعِذْنَا مِنْهُ

इस के बाद अहले दोज़ख़ की आपसी बातचीत नक़्ल फ़रमाई और वह यह कि जो लोग पहले से दोज़ख़ जा चुके होंगे तो बाद में आने वाली जमाअ़त को देखकर पहले दाख़िल होने वाली जमाअ़त कहेगी, तुम भी जहन्नमी हम भी जहन्नमी हमें तुम से कोई फ़ायदा नहीं पहुँच सकता।

बाद में आने वाली जमाअ़त जवाब में कहेगी (जो दुनिया में पहली जमाअ़त की पैरोकार थी और उसके बहलाने और वरग़लाने से इन्कार किये हुए थे) बल्कि तुम्हारे लिए कोई इस्तिक़बाल नहीं है। तुम यह अ़ज़ाब हमारे आगे लाए यानी तुम ने हमें कुफ़्र पर डाला और जमाया, जिस के नतीजे में हम यहाँ अ़ज़ाब भुगतने के लिए दाख़िल किये गये, उस के बाद वह आने वाली जमाअ़त (जो पैरुकार थे) अल्लाह तआ़ला के अपने बड़ों और सरदारों की सज़ा के लिए यह दरख़्वास्त करेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख़्स हमारे लिए अ़ज़ाब को आगे लाया उसे दोज़ख़ में दो गुना अ़ज़ाब दीजिए (यहाँ दुनिया में एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ भी रखते हैं और छोटे लोग अपने बड़ों की बात भी मानते हैं और उनके कहने से कुफ़्र पर जमे रहते हैं, लेकिन जब वहाँ दोज़ख़ में दाख़िल होंगे तो एक दूसरे पर लअ़नत करेंगे और छोटे लोग अपने सरदारों, पीरों और नाम के बुज़ुर्गों के लिए दोहरे अ़ज़ाब की दरख़्वास्त करेंगे।

अहले दोज़ख़ को ह़ैरत

अहले दोज़ख़ कहेंगे कि जब हम दुनिया में थे, तो अहले ईमान को और ख़ासतौर से ग़रीब मोमिनों को घटिया समझते थे और यूँ भी कहते थे कि यह बुरे लोग हैं, इन में कोई ख़ैर नहीं और बाज़ मर्तबः इन्हें यूँ भी कह देते थे कि तुम दोज़ख़ में जाओगे, हम जन्नती होंगे (जैसा कि यहूद, नसारा और दूसरे समझते हैं) लेकिन जब यह काफ़िर दोज़ख़ में पहुँचेंगे और इधर-उधर नज़र डालेंगे तो उन्हें अहले ईमान में से कोई भी नज़र न आएगा।

नज़रों के सामने सब इन्कारी ही होंगे, उस वक़्त यूँ कहेंगे, क्या बात है हम उन लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार किया करते थे। क्या हम ने जानबूझकर उनकी हंसी कर रखी थी कि उन्हें दोज़ख़ी समझते थे और ह़क़ीक़त में वह ऐसे न थे जैसा हमने समझा था, या यह बात है कि वह लोग यहाँ मौजूद तो हैं लेकिन हमारी आँखें चकरा रही हैं कि उन पर नज़र नहीं पड़ती। इस बात को याद कर के उन्हें ह़ैरत भी होगी और अफ़्सोस भी कि जिन का हम ने मज़ाक़ उड़ाया था वह तो यहाँ न पहुँचे और हमें यहाँ आना पड़ा।

اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ (यानी दोज़ख़ियों का आपस में झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है ऐसा ज़रूर होगा।)

65-70 قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ۝ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِىَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَىَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार है

इन आयात में तौह़ीद और रिसालत को साबित किया गया है और अल्लाह तआ़ला की पाँच सिफ़ात बयान फ़रमाई गई है। आप (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि अपने लोगों से बता दें कि मैं तो सिर्फ़ डराने वाला हूँ ज़बरदस्ती किसी से ईमान क़ुबूल कराने वाला नहीं। फिर तौह़ीद की दअ़वत दी कि उपास्य सिर्फ़ एक ही है यानी अल्लाह तआ़ला, ज़ो अपनी ज़ात व सिफ़ात में तन्हा भी है और क़ह्हार भी है यानी वह सब पर ग़ालिब (प्रभावी) है, उसी के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ वजूद में आता है, वह आसमानों का भी रब है और ज़मीन का भी और जो कुछ उन के दर्मियान है उन सब का रब है।

अल्लाह को छोड़कर तुम जिस की अ़िबादत कर रहे हो यह बेवक़ूफ़ी और गुमराही है। फिर यह भी समझ लो कि वह बदला लेना भी जानता है, उसे तुम्हारी गिरफ़्त करने और अ़ज़ाब देने पर पूरी-पूरी क़ुदरत है, लेकिन अगर तुम कुफ़्र व शिर्क से तौबः कर लोगे तो वह बख़्श देगा क्योंकि वह ग़फ़्फ़ार यानी बहुत बड़ा बख़्शने वाला है।

इस के बाद आप के नुबूव्वत की एक दलील बयान फ़रमाई कि आप उन लोगों से फ़रमा दें यह जो कुछ मैंने अपनी रिसालत की ख़बर दी है और तुम्हें यह बताया है कि मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूँ यह बहुत बड़ी ख़बर है, तुम्हें उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होना ज़रूरी था लेकिन तुम इस से मुँह फेरते हो, तुम देखो कि मैं जो आसमान की ख़बरें देता हूँ यह ख़बर मेरे पास कहाँ से आ गईं, न मैंने पुरानी किताबें पढ़ी और न अहले किताब से मेरा मेल-जोल रहा। यह बातें जो मैं बताता हूँ जिन की अहले किताब तस्दीक़ करते हैं और तुम्हारे सामने भी मेरी बताई हुई ख़बरों का सही तौर पर पर ज़हूर होता रहता है यह इ़ल्म मुझे कहाँ से मिला? ज़ाहिर है कि यह सब मुझे वह्य के ज़रिये मिला है।

अल्लाह तआ़ला ने जब ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को पैदा फ़रमाया, फिर फ़रिश्तों को सज्दः करने का हुक्म फ़रमाया और इब्लीस ने सज्दः करने से इन्कार किया तो इन बातों की जो मैंने ख़बर दी है मुझे उन का कुछ इ़ल्म न था।

अल्लाह तआ़ला का अपने फ़रिश्तों से यूँ फ़रमाना कि मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा पैदा करने वाला हूँ, फिर उस का इस बात पर सवाल उठाना और ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के मुक़ाबिले में चीज़ों के नाम बताने से बेबस होकर سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا कहना (كما مرّ فى سورة البقرة وهذا داخل فى الاختصام لأن قوله تعالى

اذ قال ربک للملٰئکۃ بدل من قولہ تعالیٰ اذ یختصمون کما ذکرہ صاحب الروح،

यह सब तफ़्सील मुझे सिर्फ़ वह्य से मालूम हुई है। इस से पहले इन चीज़ों को बिलकुल नहीं जानता था, तुम अपने होश की दवा करो और बात को समझो और मेरी नुबूव्वत के इन्कार से बाज़ आओ।

मैं दोबारा स्पष्ट तौर पर तुम्हें बताता हूँ कि मेरी तरफ़ दअ़वत व तब्लीग़ के सिलसिले में यही वह्य आई है कि मैं स्पष्ट तौर पर डराने वाला ही हूँ। मेरी बात न मानोगे तो अपना बुरा करोगे, मैं तुम से ज़बरदस्ती कुबूल नहीं करा सकता।

आयत नं० 71 से 88 तक

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ
أَجْمَعُوْنَ ۝ إِلَّآ إِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓإِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعَالِيْنَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ إِلٰى يَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ
أَجْمَعِيْنَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ ۡ وَالْحَقَّ أَقُوْلُ ۝ لَأَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝ قُلْ مَآ
أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ۝

अनुवाद-

(71) जब तुम्हारे 'रब' ने फ़रिश्तों से कहा, 'मैं' मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ; (72) तो जब उसको ठीक-ठीक बना लूं और उसमें 'अपनी' रुह फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना।'' (73) तो सारे फ़रिश्तों ने सज्दः किया, (74) सिवाय, इब्लीस के, उसने घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया। (75) फ़रमाया, ''ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने इसको सज्दः करने से रोका जिस व्यक्ति को 'मैंने' अपने हाथों से बनाया? क्या तूने घमंड किया, या तू सरकश हो गया?'' (76) कहा, ''मैं इससे बेहतर हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से।'' (77) फ़रमाया, ''यहाँ से निकल जा, 'तू' मरदूद (तिरस्कृत) है, (78) और तुझ पर 'मेरी' लानत है, बदले के दिन तक।'' (79) कहा, ''ऐ मरे रब! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे, जबकि लोग उठाए जाएँ।'' (80) फ़रमाया, ''तुझे मोहलत दी जाती है, (81) उस दिन तक के लिए जिसका समय निर्धारित है।'' (82) (शैतान ने) कहा, ''मुझे तेरे इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को बहका कर रहूँगा, (83) सिवाय 'तेरे' उन बन्दों के, जिनको 'तू' ने चुन लिया हो।'' (84) फ़रमाया, ''तो हक़ (सत्य) यह (है) और 'मैं' हक़ ही कहता हूँ, (85) कि 'मैं' जहन्नम को तुझ से और उन सबसे भर दूंगा, जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे।'' (86) (मुहम्मद) कह दीजिए, ''मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मज़दूरी) नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।'' (87) यह (क़ुर्आन) तो एक नसीहत है, सारे संसार वालों के लिए। (88) और थोड़े ही समय (मुद्दत) के बाद इसकी ख़बर मालूम हो जाएगी।

आयत नं० 71 से 88 तक की व्याख्या

71-85 إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝
فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ ۝ إِلَّآ إِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓإِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ
لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى يَوْمِ

يُبْعَثُوْنَ ۞ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۞ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۞ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۞ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۞ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُوْلُ ۞ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۞

इब्लीस की बनी आदम को वरग़लाने की क़सम

इन आयात में आदम की पैदाइश, फिर फ़रिश्तों को उन्हें सज्दः करने का हुक्म और उन के सज्दः करने का वाक़िआ और इब्लीस के इन्कार का ज़िक्र फ़रमाया है।

यह विषय सूरः बक़रः रुकूअ़-4, सूरः अअ़राफ़ रुकूअ़- 2, सूरः हिज्र रुकूअ़-3 और सूरः बनी इस्राईल रुकूअ़-6 में भी गुज़र चुका है।

जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम (अ़लै०) को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं طِيْن यानी गूँदी हुई मिट्टी से एक इन्सान को पैदा करूँगा, जब मैं उसे पैदा कर दूँ और पूरी तरह़ बना दूँ और उसमें अपनी रुह़ फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सज्दः में गिर जाना।

इस में शब्द 'बशर' फ़रमाया है जिस का मअ़ना है ऐसी खाल वाली चीज़ जो बालों से छुपी हुई न हो। दूसरे जो हैवानात के जिस्म पर बाल होते हैं जिन से उन का बदन ढ़का रहता है, लेकिन इन्सान के सर और उसकी दाढ़ी के अ़लावा और किसी जगह पर आ़मतौर से बड़े-बड़े बाल नहीं होते, कपड़ा न पहने तो खाल नज़र आती है और कुछ जगह जो बाल निकल आते हैं और बढ़ते चले जाते हैं उन के साफ़ करने का हुक्म दिया गया है। अलबत्ता दाढ़ी रखना वाजिब है, फिर जब जन्नत में जाएँगे तो वहाँ मर्दों के भी दाढ़ी न होगी।

यहाँ गूँदी हुई मिट्टी से पैदा फ़रमाने का ज़िक्र है और सूरः अनआ़म में शब्द **'तुराब'** आया है और सूरः हिज्र (आयत नं० 26) में صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ फ़रमाया है कि हम ने इन्सान को बजती हुई काली सड़ी हुई मिट्टी से पैदा फ़रमाया। सूरः रहमान (आयत नं० 14) में फ़रमाया हैः-

مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ कि हम ने इन्सान को ऐसी मिट्टी से पैदा फ़रमाया जो ठीकरे की तरह़ बजने वाली थी। इन आयात में हज़रत आदम (अ़लै०) का पुतला तैयार किये जाने के तदरीजी हालात बताये गये हैं, मुख़्तलिफ़ जगहों से मिट्टी जमा की गई, फिर उसमें पानी डाल दिया तो कीचड़ बन गई और बहुत दिनों तक इसी तरह़ पड़े रहने की वजह से स्याह और बदबूदार हो गई। फिर जब पुतला बना दिया तो वह पड़े-पड़े सूख गया और ऐसा हो गया कि अगर उस पर उंगली मारी जाए तो बजने लगे जैसे मिट्टी से बनाये हुए बर्तन उंगलियाँ मारने से बजते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि जब मैं उस इन्सान को पैदा कर दूँ और पूरी तरह़ उस का पुतला बना दूँ, फिर उस में रुह़ फूंक दूँ तो तुम उस को सज्दः करना (उसकी तअ़ज़ीम के लिए सज्दः में गिर जाना) फ़रिश्तों ने हुक्म के मुताबिक़ उस इन्सान को जिस का नाम पहले से आदम रख दिया गया था, तअ़ज़ीमी सज्दः (सम्मान का सज्दः) कर लिया। इब्लीस भी वहीं रहता था उसे भी हुक्म था कि इस नई मख़्लूक़ यानी आदम (अ़लै०) को सज्दः करे, वह सज्दः करने से इन्कारी हो गया।

सूरः कहफ़ में फ़रमाया كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهٖ
(वह जिन्नात में से था सो उस ने अपने रब की नाफ़रमानी की) और सूरः बक़रः में फ़रमायाः-

أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

(कि उस ने घमण्ड किया और वह काफ़िरों में से था यानी अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में पहले ही से यह बात थी कि वह इन्कारी यानी काफ़िरों में से हो जाएगा और सूरः अल् अअ़राफ़ में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से (**सूरः अअ़राफ़-12**) में फ़रमायाः-

مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ कि तुझे सज्दः करने से किस चीज़ ने रोका, जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। (मालूम हुआ कि वह भी उ़मूमी हुक्म में शामिल था या उसे ख़िताब फ़रमाकर मुस्तक़िल तौर पर भी हुक्म दिया था।

यहाँ सूरः साद में फ़रमाया قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ (कि ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने इस बात से रोका कि तू उस चीज़ को सज्दः करे जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया।)

उ़लमा ने फ़रमाया कि हाथों से पैदा करना जो फ़रमाया उस से मिजाज़ी माना लिया गया है क्योंकि अल्लाह तआ़ला शरीर और अअ़ज़ा (अंग) से पाक है और यह फ़रमाना कि मैंने अपने हाथों से पैदा फ़रमाया उसकी अहमियत बताने के लिए है। जिस चीज़ की अहमियत होती है उसके बारे में यूँ कहा जाता है कि उसे अपने हाथ से बनाया या अहले तावील का कहना है और सलफ़ का कहना है कि हम तावील नहीं करते और यदैन (दोनों हाथ) का जो मतलब है उसे अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं यानी अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक जो दीन का मतलब है वह यह कि जो उसकी शान के लायक़ है हम उसी पर ईमान लाते हैं।

इसी तरह़ यह जो फ़रमाया कि जब मैं उस में अपनी रुह़ फूंक दूँ। उस के बारे में बाज़ ह़ज़रात ने तावील की है और फ़रमाया इसका मतलब यह है कि जब मैं उस में जान डाल दूँ तो तुम उस के लिए सज्दः में गिर पड़ना और दूसरे ह़ज़रात ने फ़रमाया कि हम तावील नहीं करते, उस पर ईमान लाते हैं।

अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक जो इस का मतलब है वह वही है जो उस की शान के लायक़ है हम उसे मानते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से फ़रमाया اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ
(क्या तूने घमण्ड किया या यह कि तू बड़े दर्जे वालों में से है) यानी क्या तू घमण्ड में आ गया और ह़क़ीक़त में बड़ा नहीं है या यह कि तू ह़क़ीक़त में ऐसे बड़े दर्जे वालों में है जिस को सज्दः का हुक्म करना सह़ी नहीं।

इब्लीस ने कहा कि इसको सज्दः करना मेरी शान के लायक़ नहीं है (जिस की वजह यह है कि) मुझे आप ने आग से पैदा फ़रमाया है और इसे गूँदी हुई मिट्टी से पैदा फ़रमाया है। (लिहाज़ा मैं इस से बेहतर हुआ और मुझे यह हुक्म देना कि इसे सज्दः करूँ मेरी शान के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि बेशक तू मरदूद हो गया और क़ियामत के दिन तक तुझ पर मेरी लअ़नत रहेगी (और जिस पर क़ियामत के दिन तक लअ़नत रहेगी वह इस

के बाद भी मल्अून (लअ़नत किया हुआ) ही रहेगा।

قال الله تعالى شانه فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ

इब्लीस ने घमण्ड किया। मल्अून (लअ़नत किया हुआ) होना मन्ज़ूर कर लिया, लेकिन अल्लाह तआ़ला का हुक्म मानने और माफ़ी माँगने के लिए तैयार न हुआ, उस ने लम्बी उ़म्र होने की दरख़्वास्त कर दी और यूँ कहा कि ऐ रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दीजिए जिस दिन लोग उठाये जाएँगे (यानी क़ब्रों से निकलेंगे।)

रूहुल् मआ़नी में लिखा है कि इस से नफ़्ख़-ए-सानिया का वक़्त मुराद है। मतलब इब्लीस मल्अून का यह था कि मुझे लम्बी ज़िन्दगी दे दी जाए और इतनी लम्बी हो कि क़ियामत पर ही ख़त्म हो।

وفی تفسیر القرطبی اراد الملعون ان لا یموت فلم یجب الی ذلک واخر الی الوقت المعلوم
وهو یوم یموت الخلق فیه فاخر الیه تهاونًا به (ص۲۱۹ج۱۵)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि जा तुझे एक वक़्त तक मोहलत दी गई। अब तो उस ने अपने नफ़्स में जो बात छिपा रखी थी वह ज़ाहिर कर दी और कहने लगा कि ऐ रब! आपकी इ़ज़्ज़त की क़सम मैं उन लोगों को (जो इस नई मख़्लूक़ की नस्ल में होंगे) बहकाऊँगा इन्कार करने पर और आप की नाफ़रमानियों पर डालूँगा और बुरे कामों को अच्छा बताऊँगा, मगर जिन लोगों को आप ने अपनी फ़रमाँबरदारी के लिए चुन लिया और मेरे बहकाने से बचा दिया उन पर मेरा बस न चलेगा।

इब्लीस चूंकि हज़रत आदम (अ़लै०) को सज्दः न करने की वजह से मल्अून व नामुराद हुआ था, इसलिए उस ने उन से और उनकी औलाद से बदला लेने का फ़ैसला किया, हा़लांकि बेवक़ूफ़ी उसकी थी रब्बुल् आ़लमीन के हुक्म को न मानने की वजह से मल्अून होने का काम ख़ुद करके अल्लाह तआ़ला से मुक़ाबिला किया, उस के हुक्म को ग़लत बताया और ठान लिया हज़रत आदम (अ़लै०) और उनकी औलाद से बदला लेने की।

चूंकि अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को इम्तिहा़न के लिए पैदा फ़रमाया है, इसलिए इब्लीस को लम्बी ज़िन्दगी भी दे दी और बहकाने और वरग़लाने की कोशिशें करने का मौक़ा भी दे दिया और इन्सानों को बता दिया कि यह और इसकी ज़ुर्रियत (औलादें) तुम्हारी दुश्मन हैं तुम उन से चौकन्ना रहना, उनके बहकावे में न आना और भलाई व बुराई के दोनों रास्ते बता दिये।

अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को मब्अूस फ़रमाया और अपनी किताबें और सही़फ़ें नाज़िल फ़रमाईं, फिर उनके ख़ुलफ़ा के ज़रिये दअ़वत व तब्लीग़ का सिल्सिला जारी रखा। जो शख़्स शयातीन की बातों में आएगा राहे ह़क़ छोड़ेगा वह अपनी बर्बादी का ख़ुद ज़िम्मेदार होगा।

इब्लीस और उसके मानने वालों के लिए दोज़ख़-

जब इब्लीस ने कहा कि मैं बनी आदम को वरग़लाऊँगा, बहकाऊँगा और ह़क़ की राह से हटा दूँगा

तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ कि मैं सच कहता हूँ और सच ही कहा करता हूँ (तो अपनी और अपने पीछे चलने वालों की सज़ा अभी से सुन ले) मैं तुझ से और जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे उन सब से दोज़ख़ को भर दूँगा।

यह बात अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से भी फ़रमा दी और जब आदम (अ़लै०) और उनकी बीवी को ज़मीन पर भेजा जाने लगा उस वक़्त उनको ख़िताब कर के साफ़-साफ़ बता दिया।

فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

(अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए सो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, उन लोगों को कोई ख़ौफ़ न होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे और जो लोग इन्कार करेंगे और हमारी हिदायत को झुठलाएँगे वह दोज़ख़ वाले होंगे, वह इस में हमेशा रहेंगे।

इब्लीस ने जो मोहलत माँगी थी उस में यूँ कहा था कि मुझे उस दिन तक मोहलत दी जाए जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाये जाएँगे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुझे वक़्त मालूम तक मोहलत है, यह वक़्त अल्लाह तआ़ला ही को मालूम है। जब तक इब्लीस की मौत का वक़्त मुक़र्रर न आ जाए वह ज़िन्दा रहेगा और कुफ़्र पर मरेगा और दोज़ख़ में जाएगा।

86-88 قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝

ह़क़ की दअ़वत पर किसी बदले का मुताल्बा नहीं

रसूलुल्लाह (सल्ल०) लोगों को कुर्आन मजीद सुनाते थे, तौह़ीद की दअ़वत देते थे तो लोगों को नागवार होता था, आपको झुठलाया करते थे, मोअ़जिज़ात देखकर भी कुबूल नहीं करते थे, उन्हें एक और तरीक़ा से समझाया और फ़िक्र की दअ़वत दी।

इर्शाद फ़रमाया कि आप उन से फ़रमा दीजिए कि मैं तुम से कुर्आन की बातें सुनाने पर कोई उजरत तलब नहीं करता, यह बात तुम पर स्पष्ट है। अब तुम्हें ख़ुद ग़ौर करना चाहिए कि जिस शख़्स से हम को कोई दुनियावी ग़र्ज़ नहीं, किसी तरह़ के माल व मताअ़ की चाहत नहीं यह बार-बार हमें तब्लीग़ क्यों करता है।

ज़ाहिर है कि जब उसे कोई मतलब नहीं है तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसे दअ़वत व तब्लीग़ करने का हुक्म हुआ है और आप उन से यह भी फ़रमा दें कि मैं तकल्लुफ़ वालों में से नहीं हूँ यानी ऐसा नहीं है कि मैंने बनावट की राह से नुबूव्वत का दावा कर दिया हो और ग़ैर कुर्आन को कुर्आन कह दिया हो या जो कुछ तुम्हारे सामने पेश करता हूँ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है।

यह कुर्आन तमाम जहानों के लिए नसीह़त है तुम इसे न मानोगे तो अपना बुरा करोगे, जल्द ही मौत के बाद तुम्हें पता चल जाएगा कि यह ह़क़ था और इसका इन्कार करना ग़लत था, लेकिन उस वक़्त

मालूम होना फ़ायदा न देगा और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि بَعْدَ حِيْنٍ से यौमे बद्र मुराद है यानी इसी दुनिया में तुम्हें अ़नक़रीब पता चल जाएगा कि क़ुर्आन ह़क़ है और इस का इन्कार करने वाले ग़ल्ती पर हैं।

नोट- आयते करीमा में जो यह फ़रमाया कि आप उन से फ़रमा दें कि मैं तुम से अपनी मेह़नत और दअ़वत पर कोई अज्र तलब नहीं करता, इस में तमाम दाअ़ी ह़ज़रात को यह बता दिया कि दअ़वत का काम अल्लाह की रज़ा के लिए करें, मख़्लूक़ से किसी चीज़ के तलबग़ार (इच्छुक) न हों और उम्मीदवार भी न हों और وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ में यह बता दिया कि अहले ईमान और ख़ासतौर से अहले इ़ल्म को अख़्तियार न करें।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ लोगों! जिसे कोई चीज़ मालूम हो वह बता दे और जिसे इ़ल्म न हो वह कह दे कि अल्लाह को मालूम है (बिना इ़ल्म के कोई चीज़ न बताए और यह ज़ाहिर न करे कि मुझे इ़ल्म है क्योंकि इस में बनावट और तकल्लुफ़ है जो झूठ की एक क़िस्म है) जो चीज़ न जाने उस के न जानने का इक़्रार कर लेना और यह कह देना कि अल्लाह को मालूम है यह भी इ़ल्म की बात है। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को हुक्म दिया कि आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुम से उस पर कोई अज्र तलब नहीं करता और मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से नहीं हूँ।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 710 भाग 2)

बहुत से लोगों को इ़ल्म नहीं होता मगर जब उन से कोई मस्ला पूछा जाता है या कोई ह़दीस दर्याफ़्त की जाती है तो यह कहना कि मुझे मालूम नहीं अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते हैं और अपने पास से कुछ न कुछ बता देते हैं, ऐसे लोगों के लिए ऊपर की आयत में तम्बीह (Warning) है। बहुत सी बातें जो ह़क़ और ह़क़ीक़त से दूर होती हैं जो बनावटी होती हैं, मोमिन को उन सब से बचना लाज़िम है।

एक औ़रत ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी एक सौतन यानी शौहर की दूसरी बीवी से क्या मुझे इस बात पर गुनाह होगा कि मैं झूठमूठ उस पर यह ज़ाहिर करूँ कि मुझे शौहर ने यह दिया और वह दिया और ह़क़ीक़त में नहीं दिया (ताकि उसे जलन हो) आप ने फ़रमाया जिसे कोई चीज़ नहीं दी गई अगर वह झूठमूठ यह ज़ाहिर करे कि मुझे यह दिया गया तो वह ऐसा है जैसे कोई शख़्स झूठ के कपड़े पहन ले। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 281 बुख़ारी व मुस्लिम)**

(भाग–39)

सूर–ए–ज़ुमर

(सूरः नं. 39)

तफ़्सीर सूरः ज़ुमर

नाम– आयात नं० (71/73) में शब्द **'अल् ज़ुमर'** आया है। यही इस सूरः का नाम रख दिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हसन, इक्रिमा और जाबिर बिन ज़ैद से मरवी है कि यह सूरः मक्की है। बाज़ लोगों ने قُلْ يٰعِبَادِ से तीन आयतों को मदनी कहा है।

मक्की सूरतों की तरह इस में भी तौहीद की अहमियत, शिर्क की ख़राबी और उस के संगीन नतायज बयान किये गये हैं और कुफ़्फ़ारे कुरैश को मुख़्तलिफ़ तरीक़े से तौहीद की दअ़वत कुबूल कर लेने की लालच दी गई है।

आयत नं० 1 से 9 तक

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَي النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۭ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا
مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۣ
وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ڰ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ
قَانِتٌ اٰنَاۗءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَاۗىِٕمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۭ اِنَّمَا
يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

अनुवाद-

(1) इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिक़मत वाला है। (2) यह किताब 'हमने' आप की ओर सच्चाई के साथ उतारी है, अतः आप अल्लाह ही की इ़बादत कीजिए, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस करते हुए। (3) सुन लो! कि इबादत सारी अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं (और कहते हैं), ''हम इनकी इबादत (पूजा) केवल इसलिए करते हैं कि हमें अल्लाह से निकट कर दें।'' अल्लाह उनमें फ़ैसला कर देगा जिस में ये मतभेद कर रहे हैं, बेशक अल्लाह उस व्यक्ति को राह नहीं दिखाता जो झूठा और नाशुक्रा हो। (4) अगर अल्लाह किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो 'वह' अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से जिसको चाहता चुन लेता,(लेकिन) 'वह' तो नक़्स व ऐ़ब से पाक (महान और उच्च) है, वह अल्लाह एक है सब पर मज़बूत पकड़ रखने वाला; (5) 'उसी ने' आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, 'वह' रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है, और 'उसी' ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक निर्धारित समय तक चलते रहेंगे; जान लो! 'वही' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), बख़्शने वाला है।'' (6) 'उसीने' तुमको एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया, फिर उससे उसका जोड़ा बनाया और 'उसीने' तुम्हारे लिए मवेशियों की आठ किस्में (नर और मादा) पैदा कीं; 'वह' तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में तीन अन्धकारों के बीच पैदा करता (और बनाता) चला जाता है- एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में- 'वही' अल्लाह तुम्हारा 'रब' है, 'उसी' का राज्य है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो? (7) अगर तुम इन्कार करोगे तो अल्लाह तुमसे बेपरवाह (निस्पृह) है, और 'वह' अपने बन्दों के लिए इन्कार को पसंद नहीं करता, और अगर

तुम शुक्र करोगे, तो 'वह' इसे तुम्हारे लिए पसंद करेगा; और बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम्हारी वापसी तुम्हारे रब ही की ओर होनी है, वह तुम को बताएगा कि तुम क्या करते थे वह तो दिलों के ह़ाल तक को जानता है? (8) और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, ''अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।'' (9) (क्या ऊपर वाला व्यक्ति अच्छा है) या वह जो रात की घड़ियों में सज्दः और क़ियाम की हालत में (इबादत में लगा) रहता है, और आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत का उम्मीदवार है? कह दीजिए, ''क्या जो लोग जानते हैं? और जो नहीं जानते दोनों बराबर हो सकते हैं? नसीह़त (शिक्षा) तो समझ वाले ही ह़ासिल करते हैं।''

आयत नं० 1 से 9 तक की व्याख्या

1-2 تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝

इस आयते करीमा में नबी करीम (सल्ल०) को ख़बर दी गई है कि यह क़ुर्आन करीम उस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है जो हर चीज़ पर ग़ालिब और अपने तमाम कामों में साह़िबे ह़िक्मत है। इस के नाज़िल होने में कोई शक व शुब्हा नहीं है। यह वह किताब है जिस में तौह़ीद व नुबूव्वत, आख़िरत और दूसरे तमाम हुक्मों को बयान किया गया है।

इसलिए ऐ मेरे नबी! आप सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत कीजिए जिस का कोई शरीक नहीं और इन्सानों को भी इस बात की दअ़वत दीजिए और उन्हें बता दीजिए कि रब्बुल् आ़लमीन के बराबर कोई नहीं है, इसलिए उस के सिवा किसी की अ़िबादत जुर्म अ़ज़ीम है।

3 اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ
اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝

इस में कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला के एक होने का मतलब यह है कि हर क़िस्म की अ़िबादत को सिर्फ़ उसी के लिए ख़ालिस कर दिया जाए और शिर्क की परछाई तक न हो।

लेकिन जो लोग उस के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराते हैं, वह अन्य मअ़बूदों (उपास्यों) की अ़िबादत करते हैं और अपने गुमराही की यह दलील देते हैं कि हम तो उन की अ़िबादत इसलिए करते हैं ताकि वह हमें अल्लाह से क़रीब कर दें और हमारी ज़रूरत पूरी करने के लिए उस के नज़्दीक हमारे सिफ़ारशी बनें।

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उनके और मोमिनों के दर्मियान फ़ैसला कर देगा और हर एक को उन के अ़मल का बदला देगा, मोमिनों को इन्आ़म व इक्राम से नवाज़ेगा, काफ़िरों और मुश्रिकों को जहन्नम में डाल देगा।

4 لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

इस में शिर्क को रद्द करते हुए अल्लाह तआ़ला ने अपने औलाद होने का इन्कार किया है कि उस की कोई औलाद नहीं, न फ़रिश्ते उस की बेटियाँ हैं और न उ़ज़ैर व ईसा उस के बेटे हैं। सोचो अगर अल्लाह अपनी औलाद बनाना चाहता तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता बना लेता, न कि मामला जाहिल मुश्रिकों और गुमराह यहूद व नसारा की मर्ज़ी पर छोड़ देता कि उन्होंने अपनी मर्ज़ी से फ़रिश्तों और उ़ज़ैर व ईसा को अल्लाह की औलाद बनाया है।

मख़्लूक़ का उस की औलाद बनना मुहाल इसलिए है कि ख़ालिक़ व मख़्लूक़ में कोई जोड़ नहीं, इसलिए इस के सिवा कोई सूरत नहीं कि मख़्लूक़ उस का बन्दा हो, औलाद नहीं। इसीलिए आयत के आख़िर में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात हर ऐ़ब से पाक और वह तन्हा है जिस की क़हर के सामने तमाम मख़्लूक़ात की गर्दनें झुकी हुई हैं।

5 خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝

इसमें अल्लाह तआ़ला के एक होने को बयान किया जा रहा है कि उस ने आसमान व ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ को पैदा किया। वही अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उन में हुक्म चलाने वाला है। वही रात और दिन को फेरता है, दोनों एक दूसरे के पीछे लगे रहते हैं और ज़रा भी नहीं थकते हैं। सूरः अल् अअ़राफ़ आयत नं० (54) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۙ

"वह रात से दिन को ऐसे तौर पर छिपा देता है कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है"।

उस ने सूरज व चाँद को भी एक ख़ास निज़ाम का पाबन्द बना रखा है, दोनों अपने-अपने मदार में क़ियामत तक चलते रहेंगे और अल्लाह की मख़्लूक़ात उन से फ़ायदा उठाती रहेंगी।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अपने दुश्मनों से बदला लेने में बड़ा ज़बरदस्त है और अपनी तरफ़ तौबः करने वाले बन्दों को बड़ा माफ़ करने वाला है।

6 خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ
أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝

उस की क़ुद्रत व वह्दानियत की दलील यह भी है कि उस ने तमाम इन्सान को केवल एक आदम से पैदा किया और उस की बीवी ह़व्वा को उस की बाईं पंसुली से पैदा किया और एक दलील यह भी है कि उस ने ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ पैदा किये और हर एक का मुज़क्कर (Mascunine) व मुअन्नस (feminine) दो क़िस्में बनाईं और एक दलील यह भी है कि वह इन्सानों को उन की माओं के पेट (गर्भ) में मुख़्तलिफ़ मराहिल से गुज़ारता है।

पहले माँ के गर्भ में नुत्फ़ा (वीर्य) क़रार पाता है, फिर जमा हुआ ख़ून की शक्ल बनता है, फिर गोश्त के लोथड़े की तरह़ हो जाता है, फिर इन्सान की शक्ल व सूरत अख़्तियार करता है और उस में रूह़ डाल दी जाती है, उस की परवरिश तीन अंधेरियों के नीचे होती है, पेट का अंधेरा, रह़म का अंधेरा और उस झिल्ली का अंधेरा जिसमें बनता रहता है।

वह ज़ात जिस ने आसमानों, ज़मीनों और उन के बीच की तमाम चीज़ों को और तुम्हें पैदा किया वही अल्लाह तमाम इन्सान का रब है, वही मालिके कुल है, उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है और जब बात ऐसी है तो फिर लोग उस के सिवा दूसरों की अ़िबादत क्यों करते हैं?

7 إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ात से बेपरवाह है, सब उस के मोह़ताज हैं और वह किसी का मोह़ताज नहीं है। इसलिए अगर तमाम जिन्न व इन्सान कुफ़्र की राह अपना लेते हैं तो उस का नुक़्सान उन्हीं को होगा, अल्लाह की बेनियाज़ी में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।

सूरः इब्राहीम आयत नं० (8) में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की ज़बानी यही बात यूँ कही है:-

إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

"अगर तुम सब और ज़मीन के तमाम इन्सान अल्लाह की नाशुक्री करेंगे तो भी अल्लाह बेनियाज़ (जिस की कोई ग़र्ज़ नहीं) और तअ़रीफ़ों वाला है।"

इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब **'अल् सह़ीह़'** में ह़दीसे क़ुद्सी रिवायत की है कि ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारा पहला और आख़िरी शख़्स और तुम्हारे जिन्न व इन्स तुम में बद्तरीन गुनाह करने वाले हो जाएँ तो इस से मेरी बादशाही में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।

लेकिन अल्लाह अपनी रह़मत की वजह से अपने बन्दों के इन्कार को पसन्द नहीं करता जो उन की संगदिली व बद्नसीबी का ज़रिया होता है, वह तो उन के लिए यह पसन्द करता है कि क़ौल व अ़मल के ज़रिये उस का शुक्रिया अदा करते रहें, ताकि उन्हें इस का अच्छा बदला दे और जन्नत उन का मक़ाम बने।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा, हर शख़्स सिर्फ़ अपने अ़मल का ज़िम्मेदार होगा और उसी का उसे बदला दिया जाएगा और मरने के बाद हर शख़्स को बहरह़ाल अल्लाह के पास ही लौट कर जाना है, फिर उस के तमाम आ़माल की ख़बर देगा जो वह दुनिया में करता रहा था, उस से कोई बात छुपी हुई नहीं है, वह तो दिलों के भेदों को जानता है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में बहुत बड़ी धमकी है कि दुनिया में अगर किसी का किरदार अच्छा नहीं है तो उसे उस की सज़ा भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

8 وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ

مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝

मुशिरक के किरदार में बड़ा विरोध होता है, जब उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है और यक़ीन हो जाता है कि अल्लाह के सिवा कोई उसे टाल नहीं सकता तो दोनों हाथ उठा कर और गिड़गिड़ा कर दुआ़ करता है कि मेरे रब! तू मेरी तक्लीफ़ दूर कर दे और जब अल्लाह उस की तक्लीफ़ दूर कर देता है तो सब कुछ भूल जाता है और पहले की तरह़ ग़ैरों की अ़िबादत (पूजा) करने लगता है। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की ज़बानी उस से कहा कि तुम इस दुनियावी ज़िन्दगी से कुछ दिनों के लिए फ़ायदा उठा लो, मरने के बाद तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत के इस भाग में अहले कुफ़्र और अहले शिर्क के लिए बहुत बड़ी धमकी है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः इब्राहीम आयत नं० (30) में फ़रमाया हैः-

قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝

"आप कह दीजिए कि ख़ूब मज़े कर लो, तुम्हारा अन्जाम तो आख़िर जहन्नम ही है।"

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हर बच्चा (आदमी का) फ़ितरत (यानी इस्लाम) पर पैदा होता है फिर उसके वालिदैन उसको यहूदी या ईसाई या पारसी बना देते हैं।" (बुख़ारी)

9 أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ
يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

मुशिरकीन की ह़ालत बयान करने के बाद अब मोमिनीन के गुण बयान किये जा रहे हैं। कहा गया कि वह काफ़िर बेहतर है जो मुसीबत टल जाने के बाद ग़ैरुल्लाह को पुकारने लगता है या वह मोमिन जो ख़ुशी और ग़म दोनों ह़ाल में रातों को उठ कर नमाज़ पढ़ता है, क़ुर्आन करीम की तिलावत करता है, आख़िरत के अ़ज़ाब को याद कर के सज्दे में अपने रब के सामने गिरयावज़ारी (दुआ़) करता है और जन्नत की दुआ़ करता है?

यक़ीनन वह मोमिन बेहतर है जो हर ह़ाल में अपने रब को याद करता रहता है, ख़ुशी मिलती है तो उस का शुक्र अदा करता है और ग़म आता है तो उस से निजात पाने के लिए दुआ़ करता है।

आयत के आख़िर में नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी कहा गया है कि इ़ल्म व जहल और आ़लिम व जाहिल बराबर नहीं हो सकते हैं। जो लोग अल्लाह की तौह़ीद और उस के हुक्मों का इ़ल्म ह़ासिल करते हैं और उस पर अ़मल करते हैं, वह यक़ीनन उन नादानों से बेहतर हैं जो शिर्क व गुमराहियों की वादी में भटकते रहते हैं और इस क़ुर्आन से वही लोग फ़ायदा उठाते हैं जो कुछ अ़क़्ल रखते हैं।

आयत नं० 10 से 22 तक

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُونَ أَجْرَهُمْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿١١﴾ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٢﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ
إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ﴿١٤﴾ فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخٰسِرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ أَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ
ظُلَلٌ ۚ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهِ عِبَادَهُ ۚ يٰعِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطّٰغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللّٰهِ لَهُمُ
الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولٰئِكَ الَّذِينَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ ۖ وَأُولٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۗ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۖ وَعْدَ اللّٰهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ
زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطٰمًا ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ أَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلٰى نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقٰسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ أُولٰئِكَ فِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾

अनुवाद–

(10) कह दीजिए ''ऐ 'मेरे' बन्दो! जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो, जो लोग इस दुनिया में नेक बन कर रहे उनके लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है, सब्र करने वालों को तो उनका बदला बेहिसाब दिया जाएगा।'' (11) कह दीजिए, ''मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस कर के; (12) और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूँ।'' (13) कह दीजिए, ''अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ तो मुझे एक सख़्त दिन के अ़ज़ाब का डर है।'' (14) कह दीजिए, ''मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ, दीन (श्रद्धा और दासता) को उसके लिए ख़ालिस कर के। (15) तो तुम 'उसके' सिवा जिसकी चाहो इबादत करो, कह दीजिए, ''वास्तव, में घाटे में पड़ने वाले तो वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार वालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान लो! यही खुला घाटा है; (16) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियां होंगी और उनके नीचे से भी छतरियां होंगी, यह वह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है, ऐ 'मेरे' बन्दो! मेरा तक़वा (डर) रखो।'' (17) और जिन लोगों ने तागूत (शैतान) की इ़बादत से अपने आप को बचाया और अल्लाह की ओर रुजूअ़ (आकर्षित) हुआ उनके लिए खुशख़बरी है, तो 'मेरे' बन्दों को खुशख़बरी दे दीजिए; (18) जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं,- यही वे लोग हैं- जिनको अल्लाह ने हिदायत दी है, और यही बुद्धिमान हैं। (19) भला जिस व्यक्ति पर अ़ज़ाब का हुक्म हो चुका हो! तो क्या तुम उसे बचा सकते हो जो दोज़ख में जाने वाला हो? (20) लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए (महल) मंज़िल पर मंज़िल बनी हुई हैं, उनके नीचे नहरें बह रही हैं, यह अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता है। (21) क्या तुम नहीं देखते, अल्लाह आसमान

से पानी उतारता है ,फिर उसको ज़मीन के अन्दर स्रोतों के रूप में जारी कर देता है, फिर उससे खेतियाँ पैदा करता है- जिसके तरह-तरह के रंगे होते हैं- फिर वह सूख जाती है, और तुम देखते हो कि पीली पड़ गई हैं; फिर वह उनको चूर्ण विचूर्ण (चूर-चूर) कर देता है? बेशक, इसमें नसीहत है बुद्धि रखने वालों के लिए। (22) क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो, फिर वह अपने रब की ओर से रोशनी पर हो? तो तबाही है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र (याद) से सख़्त हो रहे हैं, यही लोग खुली गुमराही में हैं।

आयत नं० 10 से 22 तक की व्याख्या

10 قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

इस आयते करीमा में नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी मोमिनों को हर हाल में अपने रब से डरने की तअ़लीम दी गई है। आयत का मतलब यह है कि ऐ वह लोगों ! जिन्होंने अल्लाह के एक होने की तस्दीक़ की है अपने रब से डरते रहो, उस की बन्दग़ी करो, उस की नाफ़रमानी से बचते रहो और उस के साथ दूसरों को शरीक न ठहराओ।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा के फायदे बयान करते हुए फ़रमाया कि जो लोग इस दुनिया में अच्छे अ़मल करेंगे, अल्लाह तआ़ला आख़िरत में उन्हें जन्नत देगा और जिन पर वतन की ज़मीन तंग हो जाए और अहले कुफ़्र के ज़ुल्म की वजह से अल्लाह की अ़िबादत करनी मुश्किल हो जाए उन्हें अल्लाह तआ़ला ने उस सरज़मीन से हिजरत कर के ऐसी जगह चले जाने का हुक्म दिया है जहाँ वह बआसानी उस की अ़िबादत कर सकें, अम्बिया व नेक लोगों की यही सुन्नत रही है।

सूरः निसा आयत नं० (97) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है. اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا “क़ियामत के दिन ऐसे लोगों से फ़रिश्ते कहेंगे, क्या अल्लाह तआ़ला की ज़मीन कुशादह (विस्तृत) न थी कि तुम हिज्रत कर जाते?”

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने اَرْضُ اللّٰهِ से मुराद जन्नत ली है और कहा है कि यहाँ मक़्सूद मोमिनों को जन्नत का शौक़ दिलाना है।

चूंकि अल्लाह तआ़ला की बन्दग़ी बिना सब्र के मुम्किन नहीं इसलिए आयत के आख़िर में सब्र की फ़ज़ीलत और अल्लाह के नज़्दीक उस के अ़ज़ीम अज्र व सवाब का ज़िक्र किया गया है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग क़ौम व वतन को छोड़ने की तक्लीफ़ बर्दाश्त करेंगे और अल्लाह की रज़ा के लिए कड़वे घूंट बर्दाश्त करेंगे अल्लाह उन्हें बेहिसाब अज्र व सवाब अ़ता करेगा यानी जन्नत देगा जिस की नेअ़मतें अनगिनत और कभी न ख़त्म होने वाली होंगी।

11-15 قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُلِ ٱللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُۥ دِينِي ۝ فَٱعْبُدُوا۟ مَا شِئْتُم
مِّن دُونِهِۦ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْخَٰسِرِينَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْخُسْرَانُ ٱلْمُبِينُ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि वह मुश्रिकीने क़ुरैश को यह बता दें कि मुझे तो इस बात का हुक्म दिया गया है कि मैं सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत करूँ और उस के सिवा किसी की तरफ़ न झुकूँ और मुझे इस बात का भी हुक्म दिया गया है कि इख़्लास व अ़मल और फ़रमाँबरदारी व बन्दग़ी में तमाम मुसलमानों से आगे रहूँ। चुनांचे आप (सल्ल०) पहले आदमी थे जिस ने पूर्वजों के दीन की मुख़ालिफ़त की और लोगों को तौह़ीद (अद्वैतवाद) की तरफ़ बुलाया।

और मुझे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को यह भी कहने का हुक्म दिया गया है, अगर मैंने अपने रब की नाफ़रमानी की और काफ़िरों की बात मानकर ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत की तो डरता हूँ कि क़ियामत के दिन पकड़ न लिया जाऊँ और अ़ज़ाब में न डाल दिया जाऊँ।

यह आयत सूरः फ़त्ह़ की आयत नं० (2) لِّيَغْفِرَ لَكَ ٱللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنۢبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ के ज़रिये मन्सूख़ (निरस्त) हो गई है जिस में अल्लाह ने आप को ख़बर दी है कि उन के अगले और पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये हैं।

मुझे यह बात भी बता देने का हुक्म दिया गया है कि मैं सिर्फ़ अल्लाह की ही अ़िबादत करता हूँ, मेरी अ़िबादत में शिर्क का साया तक नहीं होता है। ऐ मुश्रिकीने मक्का! अगर तुम मेरी दअ़वत क़ुबूल नहीं करते और तौह़ीद का इन्कार करते हो तो उस के सिवा ग़ैरों के सामने सर टेकते रहो, तुम्हें जल्द ही अपना अन्जाम मालूम हो जाएगा।

मुझे यह बात भी बता देने का हुक्म दिया गया है कि अस्ल घाटा पाने वाले वह लोग हैं जो क़ियामत के दिन कुफ़्र व गुमराही की वजह से ख़ुद भी जहन्नम का ईधन बनेंगे और अपने परिवार को गुमराह करने की वजह से उन्हें भी अपने साथ इस में ले जाएँगे और जन्नत की नेअ़मतों से हमेशा के लिए मह़रूम कर दिये जाएँगे। ह़क़ीक़त में यही वह नुक़्सान है जिस से बढ़कर और कोई नुक़्सान नहीं कि गोश्त और हड्डी से बने इन्सानों को जहन्नम का ईर्धन बना दिया जाए।

16 لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ ٱلنَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ ٱللَّهُ بِهِۦ عِبَادَهُۥ ۚ يَٰعِبَادِ فَٱتَّقُونِ ۝

यहाँ अहले जहन्नम के अ़ज़ाब की हौलनाकी बयान की जा रही है कि वह लोग ऊपर और नीचे से आग के कई परतों में ढ़के होंगे, उस अ़ज़ाब से अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को डराता है और उन्हें नसीह़त करता है कि उस से डरते रहें और कोई ऐसा काम न करें जो उस की नाराज़गी और आग़ के अ़ज़ाब का ज़रिया बने।

17-18 وَٱلَّذِينَ ٱجْتَنَبُوا۟ ٱلطَّٰغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ ٱلَّذِينَ
يَسْتَمِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُۥٓ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَىٰهُمُ ٱللَّهُ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ۝

क़ियामत के दिन मूर्तियों के पुजारियों का बुरा अन्जाम बयान करने के बाद अब उन का अन्जाम बयान किया जा रहा है जो मूर्तियों की अ़िबादत नहीं करते हैं, अपने दिल व दिमाग़ और तमाम अंगों के साथ अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते हैं और उस के सिवा किसी की परवाह नहीं करते।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी है। इस ख़ुशख़बरी का ज़िक्र क़ुर्आन करीम की बहुत सी आयतों में आया है, उन्हीं में से यह आयत भी है और नबी करीम (सल्ल०) ने सूरः यूनुस की आयत नं० (64) لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ की तफ़्सीर बयान करते हुए फ़रमाया कि "मोमिन को अच्छे ख़्वाब दिखाये जाते हैं" और यह ख़ुशख़बरी उसे दुनिया से रुख़सत होते वक़्त क़ब्र में दी जाती है और मैदाने महशर में भी दी जाएगी।

जो ख़ुशख़बरी मूर्तियों से दूर रहने वालों को दी गई है, अल्लाह तआ़ला ने वही ख़ुशख़बरी उन लोगों को दी है जो अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूल (सल्ल०) की हर अच्छी बात सुन कर उस पर अ़मल करते हैं। उन लोगों की तअ़रीफ़ करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यही लोग हक़ पर हैं और अ़क़्ल रखते हैं।

19 اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۭ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۝

यानी जिन पर उन हठधर्मी और बुरे आ़माल की बदौलत अ़ज़ाब का हुक्म साबित हो चुका क्या वह कामियाबी का रास्ता पा सकते हैं? भला ऐसे बद्बख़्तों को जो संगदिली के ज़रिये आग में गिर चुके हों कौन आदमी राह पर ला सकता है और कौन आग से निकाल सकता है।

20 لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۥ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ
لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ۝

यहाँ जन्नत के दर्जात की तरफ़ इशारा है यह कि वह सब तैयार हैं, न यह कि क़ियामत के रोज़ तैयार की जाएँगी।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में सौ दर्जे मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह के लिए तैयार किये हैं। दो दर्जो का फ़ासला ऐसे ही जैसे आसमान और ज़मीन के दर्मियान है"। (बुख़ारी)

21 اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ
ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝

यानी बारिश का पानी पहाड़ों और ज़मीनों में सोखकर चश्मों (स्रोत) की सूरत में फूट निकलता है, बाक़ी अगर स्रोत किसी और वजह से हो तो उस का इन्कार नहीं।

या मुख़्तलिफ़ (different) क़िस्म की खेतियाँ मस्लन गेहूँ चावल वग़ैरह।

यानी अ़क़्लमन्द आदमी खेती का ह़ाल देखकर नसीह़त ह़ासिल करता है कि जिस तरह़ उस की रौनक़ और सरसब्ज़ी चन्द दिन की थी, फिर चूरा-चूरा कर दिया गया। यही ह़ाल दुनिया की चहल-पहल का होगा।

चाहिए कि आदमी उस की वक़्ती रंगीनी को देखकर ग़ाफ़िल न हो।

जैसे खेती कई चीज़ों से मिलकर ऊगती है, जैसे उस में दाना है जो आदमियों की ग़िज़ा बनता है और भूसा भी है जो जानवरों का चारा बनता है और हर एक भाग से फ़ायदा उठाया जाता है। यह मुम्किन नहीं कि दूसरे भागों से उसको अलग करें और अपने-अपने ठिकाना पर पहुँचाए।

इसी तरह़ दुनिया को समझ ले कि इस में नेकी, बदी, राह़त, तक्लीफ़ वग़ैरह सब मिली जुली हैं।

एक वक़्त आएगा कि यह खेती कटेगी और ख़ूब चूरा-चूरा की जाएगी, फिर उस में से हर एक ह़िस्से को उस के मुनासिब ठिकाने पर पहुँचा दिया जाएगा नेकी और राह़त अपनी जगह पर पहुँच जाएगी और बुराई या तक्लीफ़ अपने ख़ज़ाने में जा मिले। खेती के बहुत से ह़ालात देखकर अ़क़्लमन्द लोग बहुत फ़ायदेमन्द सबक़ ह़ासिल कर सकते हैं।

इस आयत में इशारा हो गया कि जिस अल्लाह ने आसमानी बारिश से ज़मीन में चश्मे जारी कर दिये, वही जन्नत के मह़ल्लात में नहरों का सिल्सिला जारी कर देगा।

22 أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾

यानी दोनों बराबर कहाँ हो सकते हैं। एक वह जिस का सीना अल्लाह ने क़ुबूले इस्लाम के लिए खोल दिया, न उसे इस्लाम के ह़क़ होने में कुछ शक व शुब्हा है न इस्लाम के कामों से। अल्लाह तआ़ला ने उस को तौफ़ीक़ दी और एक अ़जीब रौशनी अ़ता फ़रमाई जिस के उजाले में सुकून व इत्मिनान के साथ अल्लाह के रास्ते पर चलता चला जा रहा है।

दूसरा वह बद्बख़्त है जिस का दिल पत्थर की तरह़ सख़्त हो, न कोई नसीह़त उस पर असर करे, न ख़ैर की कोई चीज़ उस के अन्दर घुसे, कभी अल्लाह की याद की तौफ़ीक़ न हो यूँ ही असमन्जस व बद्नसीबी की अंधेरियों में भटकता फिरे।

आयत नं० 23 से 31 तक

اللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَقِيْلَ
لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا
لِّرَجُلٍ ۚ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ
رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(23) अल्लाह ने बेहतरीन कलाम (ईशवाणी) नाज़िल किया, एक ऐसी किताब जिसकी आयतें एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, और (इस लायक हैं कि) बार-बार दोहराई जाएँ, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जो लोग अपने रब से डरते हैं, फिर उनके शरीर और उनके दिल नर्म (होकर) अल्लाह के याद की ओर झुक जाते हैं, यही अल्लाह की हिदायत (मार्गदर्शन) है, 'वह' इससे जिसको चाहता है राह दिखाता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे (अर्थात पथभ्रष्ट रहने दे) उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं। (24) क्या वह व्यक्ति जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ढाल बनाएगा (और वह जो अ़ज़ाब से बचा हुआ होगा दोनों बराबर हो सकते हैं) और ज़ालिमों से कहा जाएगा, ''चखो! मज़ा उस कमाई का, जो तुम करते रहे हो।'' (25) जो लोग इनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया था, तो उन पर वहाँ से अ़ज़ाब आ पहुँचा, जहाँ से उनको गुमान भी न था। (26) फिर अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी रूसवाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे भी बड़ा है, काश! ये जानते। (27) और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं, ताकि वे नसीहत ह़ासिल करें; (28) एक अ़रबी क़ुर्आन के रूप में, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे परहेज़गारी अपनाएँ। (29) अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि 'एक व्यक्ति है, जिसमें कई शरीक हैं आपस में खींचातानी करने वाले हैं; और एक व्यक्ति वह है, जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है, क्या, दोनों का ह़ाल एक जैसा होगा? सारी तअ़रीफ़ (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (30) (ऐ नबी) तुम्हें भी मरना है और इन्हें भी मरना है, (31) फिर तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।

आयत नं० 23 से 31 तक की व्याख्या

23 اللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ
وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

यानी दुनिया में कोई बात इस किताब की बातों से बेहतर नहीं। यानी सहीह़, सच्ची, मज़बूत, नफ़ा देने वाली, दुरुस्त और ख़ुशबयान व साहित्य होने में कोई आयत कम नहीं। एक दूसरे से मिलती जुलती हैं, विषय में कोई इख़्तिलाफ़ व टकराव नहीं बल्कि बहुत सी आयात के विषय ऐसे हैं कि एक आयत को दूसरी तरफ़ लौटाने से सही तफ़्सीर मालूम हो जाती है القرآن يفسر بعضه بعضاً

- 'मसानी' यानी दोहराई हुई का मतलब यह है कि बहुत से हुक्मों, नसीहतों और क़िस्सों को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में दोहराया गया है, ताकि अच्छी तरह दिलनशीन हो जाए। तिलावत में बार-बार आयतें दोहराई जाती हैं और बाज़ उ़ल्मा ने 'मुतशाबेह' व 'मसानी' का मतलब यह लिया है कि बाज़ आयात में एक ही तरह़ के विषयों का सिलसिला दूर तक चला जाता है और बाज़ जगह एक ही तरह़ के मज़मून (विषय) के साथ दूसरे शब्दों में उसी तरह़ का विषय बयान किया जाता है। जैसे-

या "نَبِّئْ عِبَادِىٓ أَنِّىٓ أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ وَأَنَّ عَذَابِى هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ" या "إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِى نَعِيمٍ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِى جَحِيمٍ" "وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ وَاللّٰهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ" ऐसी आयात को मसानी कहेंगे कि इन में दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के विषय बयान हुए।

यानी किताबुल्लाह सुनकर अल्लाह के ख़ौफ़ और उस के कलाम की अ़ज़्मत से उनके दिल कांप उठते हैं, बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और खालें नर्म पड़ जाती हैं। मतलब यह है कि ख़ौफ़ व रोअ़ब की कैफ़ियत तारी होकर उन का दिल अल्लाह की याद के सामने झुक जाता है और अल्लाह की याद उनके बदन और रुह़ दोनों पर एक ख़ास असर पैदा करती है, यह ह़ाल मोमिनों का होता है।

- दूसरी क़िस्म की कैफ़ियात व ह़ालात जैसे- बेहोशी वग़ैरह उस का इन्कार इस आयत से नहीं होता और न उसकी तफ़्सील उन पर लाज़िम आती है।

'जामेअ़ तिर्मिज़ी' में एक ह़दीस बयान करते वक़्त ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) पर इस क़िस्म के बाज़ अह़वाल का तारी होना अपनी जगह है।

यानी जिस के लिए ह़िक्मत इल़ाही के इस तरह़ कामियाबी के रास्ते खोल दिये जाते हैं और इस शान से मन्ज़िले मक़्सूद की तरफ़ चलते हैं और जिस को अल्लाह तआ़ला हिदायत न दे आगे कौन है जो उस को दे सके।

24 اَفَمَنْ يَّتَّقِىْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ

इन्सान आ़मतौर पर जब सामने से कोई ह़मला हो तो हाथों पर रोकता है, लेकिन मह़शर में ज़ालिमों के हाथ बंधे होंगे, इसलिए अ़ज़ाब की थपेड़ें सीधी मुँह पर पड़ेंगी, तो ऐसा शख़्स जो बद्तरीन अ़ज़ाब को अपने मुँह पर रोके और उस से कहा जाए कि अब उस काम का मज़ा चख जो दुनिया में किये थे, क्या उस मोमिन की तरह़ हो सकता है जिसे आख़िरत में कोई तक्लीफ़ और ग़म पहुँचने का अन्देशा नहीं अल्लाह के फ़ज़्ल से सन्तुष्ट और बेफ़िक्र है? हरगिज़ नहीं।

25-26 كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

यानी बहुत क़ौमें नबियों को झुठलाने की वजह से दुनिया में हलाक और रुस्वा की जा चुकी हैं और आख़िरत का सख़्त अ़ज़ाब ज्यों का त्यों रहा तो क्या मौजूदा इन्कार करने वाले सन्तुष्ट हैं कि उन के साथ यह मामला नहीं किया जाएगा। हाँ, समझ होती तो कुछ फ़िक्र करते।

27-28 وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

यानी उन का न समझना अपनी ग़फ़्लत और हिमाक़त से है, क़ुर्आन के समझाने में कोई कमी नहीं। क़ुर्आन तो बात-बात को मिसालों और दलीलों से समझा देता है, ताकि लोग उन में ध्यान कर के अपनी आख़िरत दुरुस्त करें।

क़ुर्आन एक साफ़ अ़रबी ज़बान की किताब है। जिसके पहले समझने वालों की मादरी भाषा अ़रबी थी, उस में कोई टेढ़ी तिरछी बात नहीं, सीधी और साफ़ बाते हैं जिन को अ़क़्ल सलीम क़ुबूल करती है। इसमें किसी तरह़ का इख़्तिलाल और टेढ़ापन उसके विषयों में नहीं, जिन बातों को मनवाना चाहता है न उन का मानना मुश्किल और जिन चीज़ों पर अ़मल कराना चाहता है न उन पर अ़मल करना मुहा़ल।

ग़र्ज़ यह है कि लोग बसहूलत उस से फ़ायदा उठाएँ एतिक़ादी व अ़मली ग़ल्तियों से बच कर चलें और साफ़-साफ़ नसीह़तें सुनकर अल्लाह से डरते रहें।

29 ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

यानी कई हि़स्सेदार एक ग़ुलाम या नौकर में शरीक हों और हर हि़स्सेदार इत्तिफ़ाक़ से बेमुरव्वत और सख़्त ज़िद्दी हो और सब चाहें कि ग़ुलाम तन्हा उसके काम में लगा रहे, दूसरे शुरका से मतलब न रखे। इस खींचतान में ज़ाहिर है ग़ुलाम सख़्त परेशान होगा बरख़िलाफ़ उस के जो ग़ुलाम पूरा एक का हो, उसे एक तरह़ की यकसूई ह़ासिल होगी और कई आक़ाओं को ख़ुश रखने की कशमकश में गिरफ़्तार न होगा।

अब ज़ाहिर यह है कि यह दोनों ग़ुलाम बराबर नहीं हो सकते। इसी तरह़ मुश्रिक और मुवह़्ह़िद (एक अल्लाह को मानने वाले) को समझ ले। मुश्रिक का दिल कई तरफ़ बटा हुआ है और हर झूठे मअ़बूदों (उपास्यों) को ख़ुश रखने की फ़िक्र में रहता है। इस के बरख़िलाफ़ एक को मानने वाले के ख़यालात एक जगह होंगे, वह पूरी दिल्जमई के साथ उस को ख़ुश रखने की फ़िक्र में रहेगा और समझेगा कि उस की ख़ुशी के बाद किसी की ख़ुशनूदी की ज़रूरत नहीं।

अक्सर मुफ़स्सिरीन ने इस मिसाल को इसी तरह़ बयान किया है, मगर ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं कि "एक ग़ुलाम जो कई का हो उसको अपना न समझे और उस की पूरी ख़बर न ले और एक ग़ुलाम जो केवल एक का हो, वह उस को अपना समझे और पूरी ख़बर ले। यह मिसाल है उनकी जो एक रब के बन्दे हैं और जो कई रब के बन्दे हैं।"

यानी सब ख़ूबी अल्लाह के लिए है कि कैसे साफ़ और दिल्नशीन मिसालों से समझा देते हैं, मगर इस पर भी बहुत बद्नसीब ऐसे हैं जो इन मिसालों के समझने की तौफ़ीक़ नहीं पाते।

30-31 إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝

यानी जैसे मुश्रिक और एक अल्लाह के मानने वालों में जो इख़्तिलाफ़ (विरोध) हैं उस का असर क़ियामत के दिन ज़ाहिर होगा, जिस वक़्त पैग़म्बर और उम्मती सब इकट्ठे किये जाएँगे और इन्कारी, अम्बिया और मोमिनीन के मुक़ाबिले में झगड़े और हुज्जतें निकालेंगे।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं "काफ़िर इन्कार करेंगे कि हम को किसी ने आप का हुक्म नहीं पहुँचाया था, फिर फ़रिश्तों की गवाही, ज़मीन व आसमान की और हाथ-पांव की गवाही से साबित होगा कि इस दावा में झूठे हैं"।

इसी तरह़ दूसरे तमाम झगड़ों का फ़ैसला भी उस दिन परवरदिग़ार के सामने होगा।

आयत नं० 32 से 45 तक

*

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ
مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ قُلْ يَا قَوْمِ
اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ
بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ
فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِرَ
اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝

अनुवाद-

(32) फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा और सच्चाई जब उसके पास आई तो उसे झुठला दिया, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है? (33) और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और जिसने उसको सच माना, ऐसे ही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं; (34) उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा, जो वे चाहेंगे, भलाई करने वालों का यही बदला है; (35) ताकि अल्लाह उनके बुरे काम जो उन्होंने किये उनसे दूर कर दे, और उन के भले कामों के बदले में जो उन्होंने किये, उनका बदला दे। (36) क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं! और यह लोग तुमको अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूदों से डराते हैं? और अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे तो उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं; (37) और जिसे अल्लाह राह दिखाए उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बदला लेने वाला नहीं है? (38) और अगर आप उनसे पूछें, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया?'' तो वे ज़रूर कहेंगे, ''अल्लाह ने।'' कहिए ''तुम्हारा क्या विचार है? अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो अल्लाह से हटकर जिनको तुम पुकारते हो, वे 'उसकी' पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या 'वह' मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या ये 'उसकी' रह़मत को रोक सकते हैं?'' कहिए, ''मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, भरोसा करने वाले 'उसी' पर भरोसा करते हैं।'' (39) कहिए, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करो, मैं (अपनी जगह) काम करता रहूँगा, तो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा; (40) कि किस पर अ़ज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होता है।'' (41) 'हमने' यह किताब ह़क़ के साथ लोगों के लिए तुम पर उतार दी है, तो जो व्यक्ति हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा, और जो गुमराह होगा तो उसकी गुमराही का वबाल उसी पर पड़ेगा, आप उनके

ज़िम्मेदार नहीं हैं। (42) अल्लाह ही रुहों (प्राणों) को क़ब्ज़ करता है- लोगों की मौत के समय-और उन को भी जिनको मौत नहीं आई- नींद की हालत में- फिर जिनकी मौत का फ़ैसला 'वह' कर चुका होता है उनको रोक लेता है, और दूसरी रुहों (प्राणों) को एक निर्धारित समय के लिए वापस भेज देता है, इसमें निशनियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं। (43) क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? कह दीजिए, ''चाहे वे किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न समझते ही हों?'' (44) कह दीजिए, ''सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, फिर 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।'' (45) और जब केवल एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल कुढ़ने लगते हैं, और जब इसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं।

आयत नं० 32 से 45 तक की व्याख्या

32 فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ۝ *

जो अल्लाह पर झूठ बोले यानी उस के लिए शरीक ठहराये, औलाद बनाये या ऐसी बातें कहे जो उस के लायक़ न हो और झुठलाये सच्ची बात को। जब पहुँची उस के पास यानी अम्बिया (अ़लै०) जो सच्ची बातें अल्लाह की तरफ़ से लाये, उन को सुनते ही झुठलाने लगे, सोचने समझने की तक्लीफ़ भी गवारा न की। बिलाशुब्हा जो शख़्स सच्चाई का इतना दुश्मन हो उस से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है और ऐसे ज़ालिमों का ठिकाना दोज़ख़ के सिवा और कहाँ होगा।

आ़मतौर से मुफ़स्सिरीन ने आयत की तफ़्सीर इसी तरह़ की है, मगर ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं "यानी अगर नबी ने (मआ़ज़ल्लाह) झूठे ख़ुदा का नाम लिया तो उन से बुरा कौन"। (यानी مَنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ का मिस्दाक़ अलग-अलग क़रार दिया और ऐसा ही आगे وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ में आता है।

33 وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

यानी अल्लाह से डरने वालों की शान यह होती है कि सच्ची बात कहें और सच की तस्दीक़ करें।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं, "जो सच्ची बात लेकर आया वह नबी और जिस ने सच माना वह मोमिन है"।

34-35 لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

यानी अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ीन व मोह़सिनीन (एह़सान करने वालों) को उन के बेहतर कामों का बदला देगा और ग़लती से जो बुरा काम हो गया हो माफ़ करेगा।

शायद 'अस्वा' और 'अह़सन' इसलिए है कि बड़े दर्जे वालों की छोटी भलाई औरों की भलाईयों से और छोटी बुराई औरों की बुराईयों से भारी समझी जाती है।

36-37 أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ۝

चन्द आयात पहले ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ में शिर्क का रद्द और मुश्रिकीन का जहल बयान किया गया था। उस पर मुश्रिकीन पैग़म्बर (अ़लै०) को अपने देवताओं से डराते थे कि देखों! तुम हमारे देवताओं की तौहीन कर के उन को ग़ुस्सा न दिलाओ, कहीं तुम को (मआ़ज़ल्लाह) बिल्कुल पागल न बना दें।

उस का जवाब दिया कि जो शख़्स एक ज़बरदस्त अल्लाह का बन्दा बन चुका उसे बेबस ख़ुदाओं से क्या डर हो सकता है? क्या उस अ़ज़ीम ख़ुदा की हिमायत उस को काफ़ी नहीं जो किसी दूसरे से डरे या लौ लगाए? यह भी उन मुश्रिकीन की कम अ़क़्ली है कि ख़ुदा-ए-वाहिद के बन्दे को इस तरह की गीदड़ भपकियों से ख़ौफ़ज़दह करना चाहते हैं।

सच तो यह है कि ठीक रास्ते पर लगा देना या न लगाना सब अल्लाह के क़ब्ज़े में है। जब किसी शख़्स को उस की बद्तमीज़ी और कम अ़क़्ली की बिना पर अल्लाह तआ़ला कामियाबी का रास्ता न दे, वह इसी तरह पागल हो जाता है और मोटी-मोटी बातों के समझने की ताक़त भी उस में नहीं रहती।

क्या इन बेवकूफ़ों को इतना नहीं सूझता कि जो बन्दा ख़ुदा की पनाह में आ गया कौन सी ताक़त है जो उस का बाल बांका कर सके? जो ताक़त मुक़ाबिल होगी पाश-पाश कर दी जाएगी।

38 وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ
هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝

यानी एक तरफ़ तौहीद है जो ख़ुद तुम्हारे इक़रार के मुवाफ़िक़ तमाम ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है और दूसरी तरफ़ पत्थर की बेजान मूर्ति या बेबस मख़्लूक़ जो सब मिलकर भी अल्लाह की भेजी हुई मामूली तक्लीफ़ व राहत को उस की जगह से हटा न सके। तुम ही बताओ दोनों में से किस पर भरोसा किया जाए और किस को अपनी मदद के लिए समझा जाए।

हज़रत हूद (अ़लै०) की क़ौम ने भी कहा थाः-

إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ जिस का जवाब हज़रत हूद (अ़लै०) ने यह दियाः-

إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۝ مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ۝ إِنِّي
تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

(सूरः हूद रुकूअ़-15)

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया थाः-

وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا
تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

(सूरः अनआ़म, आयत नं० 80,81)

39-40 قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝

यानी जल्द ही पता लग जाएगा कि अल्लाह का बन्दा प्रभावी आता है या सैकड़ों दरवाज़ों के भिखारी कामियाब होते हैं। वाक़िअ़ात जल्द बता देंगे कि जो बन्दा अल्लाह की ह़िमायत और पनाह में आया उस का मुक़ाबिला करने वाले आख़िरकार सब ज़लील हुए।

عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ से दुनिया का और عَذَابٌ مُّقِيْمٌ से आख़िरत का अ़ज़ाब मुराद है।

41 اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

यानी तेरी ज़बान पर इस किताब के ज़रिये सच्ची बात नसीह़त की कह दी गई और दीन का रास्ता ठीक-ठीक बतला दिया गया। आगे हर आदमी अपना नफ़अ़ नुक़्सान सोच ले, नसीह़त पर चलेगा तो उसी का भला है वरना अपना ही अन्जाम ख़राब करेगा।

आप पर इस की कोई ज़िम्मेदारी नहीं कि ज़बरदस्ती उन को राह पर ले आएँ सिर्फ़ पैग़ामे ह़क़ पहुँचा देना आप का फ़र्ज़ था, वह आप ने अदा कर दिया। आगे मामला अल्लाह के सुपुर्द कीजिए जिस के हाथ में मारना जिलाना और सुलाना जगाना सब कुछ है।

42 اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰى
اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

ह़ज़रत शाह़ साह़ब (रह़०) लिखते हैं "यानी अल्लाह तआ़ला नींद में हर रोज़ जान निकालता है, फिर (वापस) भेजता है, यही निशान है आख़िरत का। मालूम हुआ कि नींद में भी जान निकलती है, जैसे मौत में। अगर नींद में निकल कर रह गई तो वही मौत है, मगर यह जान वह है जिस को ज़ाहिरी होश कहते हैं और एक जान जिस से सांस चलती है, नब्ज़ें चलती हैं और खाना हज़्म होता है वह दूसरी है। वह मौत से पहले नहीं निकलती"। **(मौज़हुल् क़ुर्आन)**

ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब आप रात को सोने के लिए लेटते तो अपना हाथ गाल के नीचे रख लेते और यह कहते (بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا) "ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से ज़िन्दा और फ़ौत होता हूँ।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

'बग़्वी' ने नक़्ल किया है कि "नींद में रुह़ निकल जाती है मगर उस का ख़ास तअ़ल्लुक़ बदन से बज़रिये सेल्स रहता है जिस से ज़िन्दगी होने नहीं पाती"। (जैसे आफ़ताब लाखों मील से बज़रिये रेज़ के ज़मीन को गर्म रखता है) इस से मालूम होता है कि नींद में भी वही चीज़ निकलती है जो मौत के वक़्त निकलती है, लेकिन तअ़ल्लुक़ वैसा नहीं होता जो मौत में होता है।

यानी मुश्रिकीन दावा करते हैं कि वह अल्लाह की बारगाह में उन के सिफ़ारशी हैं, उन ही की सिफ़ारिश से काम बनते हैं, इसीलिए उनकी अ़िबादत की जाती है। सो पहले तो सिफ़ारशी होने से मअ़बूद होना लाज़िम नहीं आता। दूसरे सिफ़ारिशी भी बन सकता है जिसे अल्लाह की तरफ़ से सिफ़ारिश की इजाज़त

हो और सिर्फ़ उस के हक़ में सिफ़ारिश कर सकता है जिस को अल्लाह पसन्द करे।

43 أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

यानी देवताओं को न अख़्तियार है न समझ, फिर उनको सिफ़ारिशी मानना अ़जीब है।

44 قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

यानी इस वक़्त भी ज़मीन व आसमान में उसी की सल्तनत है और आइन्दा भी उसी की तरफ़ सब को लौट कर जाना है तो उस की इजाज़त व रज़ामन्दी के बग़ैर किसी की मजाल नहीं जो ज़बान हिला सके।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं यानी जब मौत आती है किसी के कहने से इज़्राईल नहीं छोड़ते"।

45 وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾

मुश्रिक का यह गुण है कि बाज़ वक़्त ज़बान से अल्लाह की अ़ज़्मत व मुहब्बत का एतिराफ़ करता है, लेकिन उस का दिल अकेले अल्लाह के ज़िक्र और हम्द व सना से ख़ुश नहीं होता। हाँ, दूसरे देवताओं या झूठे मअ़बूदों की तअ़रीफ़ की जाए तो ख़ुशी से उछलने लगता है जिसके आसार उस के चेहरे पर नज़र आते हैं।

अफ़्सोस यही हाल आज बहुत से नाम निहाद मुसलमानों का देखा जाता है कि ख़ुदा-ए-वाहिद की क़ुद्रत व अ़ज़्मत और उसके इल्म की लामहदूद उस्अ़त का बयान हो तो चेहरों पर नाराज़गी के आसार ज़ाहिर होते हैं, मगर किसी पीर फ़क़ीर का ज़िक्र आ जाए और झूठी सच्ची करामात बयान कर दी जाए तो चेहरे खिल पड़ते और दिलों में ख़ुशी महसूस करने लगते हैं, बल्कि कभी-कभी तौहीद ख़ालिस का बयान करने वाला उन के नज़्दीक मुन्किर औलिया समझा जाता है।

आयत नं० 46 से 59 तक

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰي عِلْمٍ ۭ
بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۭ
وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝
وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ
هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا
وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(46) कह दीजिए,''ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर (प्रत्यक्ष) के जानने वाले, 'तू' ही अपने बन्दों के बीच उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनके बारे में वे मतभेद कर रहे हैं।'' (47) और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो, जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी हो, तो यह क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए सब कुछ फ़िद्या (मुक्ति प्रतिदान) में देने के लिए तैयार हो जाएंगे, और अल्लाह की ओर से उनके साथ वह मामला होगा जिसका उनको गुमान भी न था। (48) और जो कुछ उन्होंने कमाया उस की बुराई उन पर ज़ाहिर हो जाएगी, और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हंसी उड़ाया करते थे। (49) जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह 'हमें' पुकारने लगता है, फिर जब 'हम' उसे अपनी ओर से कोई नेअ़मत देते हैं तो कहता है, ''यह तो मुझे अपने इल्म की वजह से मिली है।'' (नहीं) बल्कि वह एक आज़माइश है, मगर उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (50) यही बात वे लोग भी कह चुके हैं, जो इनसे पहले थे, मगर जो कुछ वे किया करते थे, वह उनके कुछ काम न आया। (51) फिर जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां उन पर आ पड़ीं, और उनमें से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन पर भी जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ जल्द ही आ पड़ेंगी, और वे क़ाबू से बाहर निकलने वाले नहीं। (52) क्या उनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादती) कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है? उनके लिए बड़ी निशानियां हैं जो ईमान लाते हैं। (53) (ऐ नबी) कह दीजिए, ''ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की, अल्लाह की रह़मत से मायूस (निराश) न हों, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़ कर देता है, 'वह' बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।'' (54) और रुजूअ़ हो अपने रब की ओर, और 'उसी' के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर अ़ज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी मदद न की जाएगी। (55) और तुम्हारे रब की ओर से जो बेहतरीन

चीज़ (किताब) तुम्हारी ओर नाज़िल हुई है, उसकी पैरवी करो, इससे पहले कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए और तुमको ख़बर भी न हो। (56) कहीं ऐसा न हो कि कोई नफ़्स (व्यक्ति) कहने लगे, ''अफ़सोस मेरी उस कोताही पर! जो मैंने अल्लाह के मामले में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में से ही रहा; (57) या कहने लगे अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं भी परहेज़गारों में से होता।'' (58) या यह जब अ़ज़ाब देखे तो कहने लगे, ''काश! मुझे एक बार फिर (दुनिया में) लौट कर जाना हो, तो मैं भले लोगों में से बन जाऊँ।'' (59) ''क्यों नहीं, मेरी आयतें 'तेरे' पास पहुँच गयी थीं, लेकिन तूने उनको झुठलाया और घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया;

आयत नं० 46 से 59 तक की व्याख्या

46 قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

यानी जब ऐसी मोटी बातों में भी झगड़े होने लगें और अल्लाह का इतना वक़ार भी दिलों में बाक़ी न रहे तो अब तुझ ही से फ़रियाद है, तू ही इन झगड़ों को निपटाएगा।

47-48 وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

यानी जब क़ियामत के दिन इन इख़्तिलाफ़ात (असहमति) का फ़ैसला सुनाया जाएगा, उस वक़्त जो ज़ालिम शिर्क कर के अल्लाह तआ़ला की शान घटाते थे उन का बहुत बुरा ह़ाल होगा।

अगर उस रोज़ फ़र्ज़ कीजिए पूरी ज़मीन के ख़ज़ाने बल्कि उस से भी ज़्यादा उनके पास मौजूद हों तो चाहेंगे कि सब कुछ दे दिलाकर किसी तरह अपना पीछा छुड़ा लें, जो बद्‌माशियाँ दुनिया में की थीं सब एक-एक कर के उन के सामने होंगी और ऐसे क़िस्म-क़िस्म के हौलनाक अ़ज़ाबों का मज़ा चखेंगे जो कभी उन के ख़याल व गुमान में भी न गुज़रे थे।

ग़र्ज़ तौह़ीद ख़ालिस और दीने ह़क़ से जो ठहठहा करते थे उस का वबाल होकर रहेगा और जिस अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया करते थे वह उन पर उलट पड़ेगा।

49 فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰي عِلْمٍ ۭ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

यानी जिस के ज़िक्र से चिढ़ता था, मुसीबत के वक़्त उसी को पुकारता है और जिन के ज़िक्र से ख़ुश होता था उन्हें भूल जाता है।

यानी होना तो यह चाहिए था कि यह नेअ़मत मुझ को मिले, क्योंकि मुझ से इस को ताक़त थी और इसे कमाई के ज़रिये का इ़ल्म रखता था और अल्लाह को मेरी क़ाबिलियत मालूम थी। फिर मुझे क्यों नहीं मिलती? अपनी क़ाबिलियत और अ़क़्ल पर नज़र की, अल्लाह के फ़ज़्ल व क़ुद्‌रत पर ख़याल न किया।

यानी ऐसा नहीं बल्कि यह नेअ़मत अल्लाह की तरफ़ से एक इम्तिहान है कि बन्दा उसे लेकर कहाँ तक ह़क़ीक़ी मालिक को पहचानता और उस का शुक्र अदा करता है। अगर नाशुक्री की गई तो यही नेअ़मत वबाले जान हो जाएगी।

50 قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

चुनाँचे क़ारून ने यही कहा था, उस का जो ह़श्र हुआ वह पहले गुज़र चुका।

51 فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۙ وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ۝

यानी जैसे पहले मुजरिमों पर उन की शरारतों का वबाल पड़ा मौजूदा मुश्रिकीन पर भी पड़ने वाला है। जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला उन को सज़ा देना चाहेगा यह ग़ायब होकर या और किसी तद्बीर से उस को थका नहीं सकते।

52 أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

यानी दुनिया में केवल रोज़ी का ज़्यादा या तंग होना किसी शख़्स के मक़्बूल या मरदूद होने की दलील नहीं हो सकती। न रोज़ी का मिलना कुछ अ़क़्ल व ज़िहानत और इ़ल्म व लियाक़त पर मुन्ह़सिर (Depend) है। कितने बेवक़ूफ़ या बद्माश चैन से हैं और कितने अ़क़्लमन्द और नेक आदमी फ़ाक़े कर रहे हैं।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं, यानी अ़क़्ल दौड़ाने और तद्बीर करने में कोई कमी नहीं करता, फिर एक को रोज़ी ज़्यादा मिलती है और एक को कम। जान लो कि (सिर्फ़) अ़क़्ल का काम नहीं (कि अपने ऊपर रोज़ी बढ़ा ले) बल्कि यह तक़्सीम रिज़्क़ देने वाले की ह़िक्मत व मस्लेह़त के अधीन और उसी के हाथ में है।

53 قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

यह आयत 'अरह़मुर्राह़िमीन' की रह़मत बेपायाँ और माफ़ी व दरगुज़र की शान-ए-अ़ज़ीम का एेलान करती है और सख़्त से सख़्त नाउम्मीद मरीज़ों के ह़क़ में अक्सर शिफ़ा का हुक्म रखती है।

मुश्रिक, मुरतद, यहूदी, नसरानी, मजूसी, बिद्अ़ती, बद्माश, फ़ासिक़, फ़ाजिर कोई हो, आयत को सुनने के बाद अल्लाह की रह़मत से पूरे तौर पर मायूस हो जाने और आस तोड़ कर बैठ जाने की उस के लिए कोई वजह नहीं, क्योंकि अल्लाह जिस के चाहे सब गुनाह माफ़ कर सकता है कोई उस का हाथ नहीं पकड़ सकता, फिर बन्दा नाउम्मीद क्यों हों। हाँ, यह ज़रूर है कि उस के दूसरे एेलानात में तफ़्सील दी गई है कि कुफ़्र व शिर्क का जुर्म बिना तौबः के माफ़ नहीं करेगा लिहाज़ा إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۔ को لِمَن يَشَاءُ ۔ के साथ समझना ज़रूरी है कि जैसा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۔ **(सूरः निसा-48)**

इस पैरवी से यह लाज़िम नहीं आता कि बिना तौबः के अल्लाह तआ़ला कोई छोटा बड़ा क़ुसूर माफ़ ही न कर सके और न यह मतलब हुआ कि किसी जुर्म के लिए तौबः की ज़रूरत ही नहीं, बिना तौबः

के सब गुनाह माफ़ कर दिये जाएँगे। क़ैद सिर्फ़ चाहत की है और चाहत के बारे में दूसरी आयात में बतला दिया गया है कि वह कुफ़्र व शिर्क से बिना तौबः किये न होगी, चुनाँचे आयत का शाने नुज़ूल भी इस पर दलालत करता है। जैसा कि अगली आयत के फ़ायदे से मालूम होगा।

हज़रत सईद ख़ुद्री (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बनी इस्राईल में एक आदमी ने निन्यान्वें क़त्ल किये, फिर उसे तौबः की तौफ़ीक़ हुई। उस ने ज़मीन पर सब से बड़े आ़लिम के बारे में पूछा, लोगों ने उसे एक राहिब के बारे में बताया वह उसके पास गया और उसे बताया कि उस ने निन्यानवें क़त्ल किये हैं, क्या उसकी तौबः क़ुबूल हो सकती है? उस ने कहा नहीं। उस ने राहिब को भी क़त्ल कर के सौ पूरे कर दिये।

फिर उस ने ज़मीन पर बड़े आ़लिम के बारे में पूछा तो उसे एक दूसरे आ़लिम के बारे में बतलाया गया। उस ने उनसे कहा कि मैंने सौ लोगों को क़त्ल किया है, क्या मेरी तौबः क़ुबूल हो सकती है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ और यह कि तौबः की सूरत यह हो सकती है कि फ़लाँ-फ़लाँ इलाक़े में जाओ, वहाँ पर अल्लाह के नेक बन्दे रहते हैं उनके साथ अल्लाह की अ़िबादत करो और अपने इलाक़े को वापस न जाओ वह बुरा इलाक़ा है।

जब वह आधे रास्ते को पहुँचा उसे मौत आ गई, चुनाँचे उसके बारे में रहमत के फ़रिश्ते और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते झगड़ने लगे, रहमत के फ़रिश्ते कहने लगे कि यह तायब होकर अल्लाह से लौ लगाने आ रहा था। अ़ज़ाब के फ़रिश्ते कहने लगे कि इस ने कोई नेक अ़मल किया ही नहीं, तो यहाँ एक फ़रिश्ता आया जिसे इन्होंने फ़ैसल तस्लीम कर लिया। उस ने कहा कि दोनों फ़ासलों की पैमाईश करो जिस ओर क़रीब था उसी का हक़्दार है। जब उन्होंने पैमाईश की तो जिस ओर वह जा रहा था वह फ़ासला कम निकला चुनाँचे रहमत के फ़रिश्ते उसे ले गये।" **(मुस्लिम)**

54 وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝

मग़्फ़िरत की उम्मीद दिलाकर यहाँ से तौबः की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया यानी पिछली ग़ल्तियों पर नादिम होकर अल्लाह के बेपनाह जूद व करम से शरमा कर इन्कार व हठधर्मी की राह छोड़ो और उस रब करीम की तरफ़ पलट कर अपने को पूरे तौर पर उसी के सुपुर्द कर दो। उस के हुक्मों के सामने इख़्लास के साथ गर्दन डाल दो और ख़ूब समझ लो कि हक़ीक़त में निजात केवल उस के फ़ज़्ल से मुम्किन है। हमारा तौबः करना भी बिना उस के फ़ज़्ल व करम के नहीं हो सकता।

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं, "जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को ज़ाहिर किया तो जो कुफ़्फ़ार दुश्मनी में लगे रहते थे वह यह समझे कि यही दीन सही है। यह समझ कर अपनी ग़ल्तियों पर पछताये लेकिन शर्मिन्दग़ी से मुसलमान न हुए कि अब हमारा मुसलमान होना क़ुबूल न होगा। दुश्मनी की लड़ाईयाँ लड़े और कितने ख़ुदापरस्तों के ख़ून किये, तब अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐसा गुनाह कोई नहीं जिस की तौबः अल्लाह क़ुबूल न करे, नाउम्मीद मत हो, तौबः करो और रुजूअ़ हो, बख़्शे जाओगे मगर जब सर पर

अ़ज़ाब आ जाए मौत नज़र आने लगे तो उस वक़्त की तौबः क़ुबूल नहीं” न उस वक़्त कोई मदद को पहुँच सकता है।

55 وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ

बेहतर बात से मुराद क़ुर्आन करीम है यानी क़ुर्आनी हिदायात पर चलकर अ़ज़ाब आने से पहले अपने भविष्य की रोकथाम कर लो वरना बाद में कुछ न हो सकेगा और कोई तद्‌बीर भी न बन पड़ेगी। अ़ज़ाबे इलाही इस तरह़ अचानक आएगा कि ख़बर भी न होगी कि यह कहाँ से आ गया।

56 أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُ فِي جَنبِ اللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ

यानी इच्छाओं और दुनिया के मज़ों में पड़कर अल्लाह को कुछ समझा ही नहीं, उस के दीन की, पैग़म्बरों की और जिस हौलनाक अन्जाम से पैग़म्बर डराया करते थे सब की हंसी उड़ाता रहा। इन चीज़ों की कोई ह़क़ीक़त ही न समझी।

अफ़्सोस ख़ुदा के पहचानने और उस का ह़क़ मानने में मैंने किस क़दर लापरवाही की जिस के नतीजे में आज यह बुरा वक़्त देखना पड़ा। (यह बात काफ़िर मह़शर में कहेगा और अगर आयत का विषय काफ़िरों के लिए आ़म रखा जाए तो وَإِن كُنتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ के मअ़ना में “عملت عمل ساخر مستهزئ” के होंगे।

(इब्ने कसीर)

57 أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

जब ह़सरत व अफ़्सोस से काम न चलेगा तो अपना दिल बहलाने के लिए यह उ़ज़्र पेश करेगा कि क्या कहूँ कि अल्लाह ने मुझ को हिदायत न दी थी। वह हिदायत करना चाहता तो मैं भी आज मुत्तक़ीन के दर्जे में पहुँच जाता।

(इस का जवाब आगे आता है بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي) और मुम्किन है यह बात एतिज़ार के तौर पर न हो, बल्कि केवल अफ़्सोस के तौर पर हो यानी मैं अपनी बद्‌तमीज़ी की वजह से इस लायक़ न था कि अल्लाह मुझ को राह दिखाकर मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुँचा देता।

अगर मुझ में योग्यता होती और अल्लाह मेरी रहनुमाई फ़रमाता तो मैं भी आज मुत्तक़ीन के साथ (Group) में शामिल होता।

58 أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

जब ह़सरत और एतिराज़ दोनों बेकार साबित होंगे और दोज़ख़ का अ़ज़ाब आँखों के सामने आ जाएगा तो उस वक़्त बेचैनी से कहेगा कि किसी तरह़ मुझ को एक मर्तबः फिर दुनिया में जाने का मौक़ा दिया जाए तो देखो मैं कैसा नेक बनकर आता हूँ।

59 بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ

यानी ग़लत कहता है, क्या अल्लाह ने राह नहीं दिखलाई थी और अपने पैग़म्बरों को निशानात और

अह्काम देकर नहीं भेजा था? मगर तूने उन की कोई बात ही नहीं सुनी, जो कुछ कहा गया घमण्ड से उसे झुठलाता रहा, तेरी शेख़ी क़ुबूले ह़क़ से आड़े रही और बात यह है कि अल्लाह को हमेशा से मालूम था कि तू उस की निशानियों का इन्कार करेगा, घमण्ड और सरकशी से पेश आएगा, तेरे मिज़ाज और तबीअ़त की पैदावार ही ऐसी है।

अगर हज़ार मर्तबः दुनिया की तरफ़ लौटाया जाए तब भी अपनी ह़रकत से बाज़ नहीं आ सकता। وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (**सूरः अनुआम, आयत नं० 28**) ऐसे लोगों के लिए अल्लाह की आ़दत नहीं कि उन को कामियाब करे।

आयत नं० 60 से 75 तक

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْۗءُ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْۗنِّىْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ڰ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ
بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا
هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْۗءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاۗءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝
وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَي
الْكٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓي اِذَا
جَاۗءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا
الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاۗءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ وَتَرَى الْمَلٰۗىِٕكَةَ حَاۗفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(60) और क़ियामत के दिन तुम उनको देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ कर थोपा, कि उनके चेहरे स्याह होंगे, क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है?'' (61) और अल्लाह उन लोगों को नजात (मुक्ति) देगा, जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) बने रहे, उनके कामियाबी की वजह से न कोई उनको तकलीफ़ पहुँचेगी, और न वे ग़मगीन (शोकाकुल) होंगे। (62) अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और 'वही' हर चीज़ का निगेहबान (संरक्षक) है; (63) 'उसी' के पास आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ हैं; और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, वही घाटे में रहने वाले हैं। (64) कह दीजिए, ''क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने का हुक्म देते हो, ऐ जाहिलो (ऐ अज्ञानियों)?'' (65) और आप की ओर जो आप से पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है, ''अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा सब अकारथ हो जाएगा और तुम घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।'' (66) (नहीं,) बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से हो जाओ। (67) और उन्होंने अल्लाह की जैसी क़द्र करनी चाहिए थी वैसी नहीं की और क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी, और आसमान लिपटे हुए 'उसके' दाहिने हाथ में होंगे, और 'वह' पाक और बहुत बुलन्द है उससे, जो यह साझी ठहराते हैं। (68) और जब सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो लोग भी आसमानों और ज़मीन में हैं सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे; फिर दूसरी बार सूर फूँका जाएगा, तो यकायक लोग उठ खड़े हो कर देखने लगेंगे। (69) और धरती अपने रब के नूर (प्रकाश) से जगमगा उठेगी, और किताब

(कर्मपत्र) रख दी जाएगी, और नबियों, और गवाहों को लाया जाएगा, और उनमें हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा; (70) और हर व्यक्ति को उसके किये हुए काम का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, और 'वह' खूब जानता है, जो कुछ ये करते रहे हैं। (71) और जिन लोगों ने इन्कार किया वे गिरोह के गिरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से सचेत करते रहे हों?'' कहेंगे, ''क्यों नहीं (वे तो आए थे), किन्तु इन्कार करने वालों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो कर रहा।'' (72) कहा जाएगा,''जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल (प्रवेश) हो, उसमें हमेशा रहोगे, तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का!'' (73) और जो लोग अपने रब से डरते हैं वे गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे, यहां तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे (इस हाल में) कि उसके दरवाज़े खुले होंगे, और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''सलाम हो तुम पर! बहुत अच्छे रहे, अब इसमें दाख़िल हो हमेशा रहने के लिए।'' (74) और वे कहेंगे, ''तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें उस ज़मीन (जन्नत) का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें बसें।'' तो क्या ही अच्छा बदला (इनआ़म) है अ़मल करने वालों का। (75) और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अ़र्श (सिहांसन) के चारों ओर घेरा बनाए हुए, अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं, और उनमें हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा कि (और) कहा जाएगा, ''हर तरह़ की तअ़रीफ़ (स्तुति) सारे संसार के रब, अल्लाह, ही के लिए है।''

आयत नं० 60 से 75 तक की व्याख्या

60 وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝

अल्लाह की तरफ़ से जो सच्ची बात आए उस को झुठलाना ही अल्लाह पर झूठ बोलना है, क्योंकि झुठलाने वाला दावा करता है कि अल्लाह ने फ़लाँ बात नहीं कहीं, ह़ालांकि ह़क़ीक़त में कही है। इस झूठ की स्याही क़ियामत के दिन उन के चेहरों पर ज़ाहिर होगी।

पहले فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ में दो सिफ़तें काफ़िर की बयान हुई थीं। फिर यहाँ बतला दिया कि उनके झुठलाने की वजह से उनके मुँह काले होंगे और गुरूर व तकब्बुर का ठिकाना दोज़ख़ के सिवा कहीं नहीं।

61 وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

यानी अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ीन को उनके सआ़दत की बदौलत कामियाबी के उस बुलन्द मक़ाम पर पहुँचाएगा जहाँ हर क़िस्म की बुराईयों से मह़फ़ूज़ और हर तरह़ के फ़िक्र व ग़म से आज़ाद होंगे।

62-63 اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

यानी हर चीज़ को उस ने पैदा किया, पैदा करने के बाद उसकी ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मेदार भी वही हुआ

और ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ों पर क़ब्ज़ा भी उसी को हासिल है, क्योंकि सब ख़ज़ानों की कुन्जियाँ उसी के पास हैं।

फिर ऐसे ख़ुदा को छोड़कर आदमी कहाँ जाए। चाहिए कि उसी के ग़ज़ब से डरे और उसी की रह़मत का उम्मीदवार रहे। कुफ़्र व ईमान और जन्नत व दोज़ख़ सब उसी के क़ब्ज़े में हैं। उस की बातों से इन्कार कर के आदमी का कहीं ठिकाना नहीं। क्या उस से अलग होकर आदमी किसी कामियाबी की उम्मीद रख सकता है?

64 قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ۝

यानी नादानी, ह़िमाक़त व जिहालत यह है कि आदमी अल्लाह को छोड़कर दूसरों की अ़िबादत करे और पैग़म्बर-ए-ख़ुदा से (मआ़ज़ल्लाह) यह उम्मीद रखे कि वह उस के रास्ते पर आ जाएँगे।

बाज़ रिवायात में है कि मुश्रिकीन ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अपने देवताओं की पूजा की तरफ़ बुलाया था, उस के जवाब में यह आयात नाज़िल हुई।

65-66 وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝
بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ۝

यानी अ़क़्ली हैसियत से देखा जाए कि तमाम चीज़ों का पैदा करना, बाक़ी रखना और उन में हर क़िस्म के अधिकार रखना सिर्फ़ अल्लाह का काम है तो अ़िबादत का ह़क़दार सिवाय उस के कोई नहीं हो सकता।

तमाम अम्बिया, तौह़ीद की दअ़वत और शिर्क के ग़लत होने पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं, बल्कि हर नबी को बज़रिये वह़्य बतला दिया गया है कि (आख़िरत में) मुश्रिक के तमाम आ़माल बेकार हैं और शिर्क का अन्जाम घाटे के सिवा कुछ नहीं, लिहाज़ा इन्सान का फ़र्ज़ है कि हर तरफ़ से हटकर एक ख़ुदा-ए-क़ुद्दूस को पूजे और उस का शुक्रगुज़ार व वफ़ादार बने, उस की अ़ज़्मत व जलाल को समझे आ़जिज़ व ह़क़ीर मख़्लूक़ को उस का शरीक न ठहराये, उस को उसी तरह़ बुज़ुर्ग व बरतर माने जैसा वह है।

67 وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

यानी मुश्रिकीन ने उस की अ़ज़्मत व जलाल को न समझा जितना एक बन्दे को समझना चाहिए था। उसकी शान बुलन्द है। क्या मुह़ताज मख़्लूक़ यहाँ तक कि पत्थर की बेजान मूर्तियों को उस का शरीक बनाया जा सकता है।

आगे उस की दूसरी शान बयान की गई है यानी जिसकी अ़ज़्मते शान का यह ह़ाल है कि क़ियामत के दिन पूरी ज़मीन उस की एक मुट्ठी में और सारे आसमान काग़ज़ की तरह़ लिपटे हुए एक हाथ में होंगे, उस की अ़िबादत में बेजान या मुह़ताज मख़्लूक़ को शरीक करना कहाँ तक रवा होगा। वह शुरका (जिन को शरीक ठहराते थे) तो ख़ुद उस की मुट्ठी में हैं, जिस तरह़ चाहे उन पर तसर्रुफ़ करे थोड़ा सा भी कान या ज़बान नहीं हिला सकते।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने आप को यह फ़रमाते हुए सुना कि "अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़मीन को एक मुट्ठी में लेगा और आसमानों को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा, फिर फ़रमाएगा मैं बादशाह हूँ (आज) ज़मीन के बादशाह कहाँ हैं?" **(बुख़ारी)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "यहूदियों का एक आ़लिम आप (सल्ल०) के पास आया और कहने लगा, मुह़म्मद (सल्ल०) हम (अपनी किताबों में लिखा हुआ) पाते हैं कि अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के दिन) आसमानों को एक उंगली पर, ज़मीनों को एक उंगली पर, दरख़्तों को एक उंगली पर, पानी और गीली मिट्टी को एक उंगली पर और बाक़ी तमाम मख़्लूक़ को एक उंगली पर उठा लेगा और फ़रमाएगा मैं बादशाह हूँ। यह सुनकर आप (सल्ल०) इतने हंसे कि दाँत ज़ाहिर हो गये और आप ने उस आ़लिम के क़ौल की तस्दीक़ की और फिर यही आयत पढ़ी"। **(बुख़ारी)**

مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ के मुतअ़ल्लिक़ सूरः अम्बिया की आयत "يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ الخ" देख सकते हैं और 'यमीन' वग़ैरह मुतशाबिहात में से हैं जिन पर बिना किसी सवाल के ईमान रखना वाजिब है। बाज़ अहादीस में है (उस के दोनों हाथ दाहिने हैं) इस से दिशा आदि का इन्कार होता है।

68 وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝

हज़रत शाह साहब (रह०) लिखते हैं "एक बार नफ़ख़-ए-सूर है दुनिया के फ़ना का, दूसरा है ज़िन्दा होने का, तीसरा बाद ह़श्र के बेहोशी का, चौथा ख़बरदार होने का, उस के बाद अल्लाह के सामने सब की पेशी होगी" लेकिन उ़लमा के नज़्दीक कुल दो मर्तबः नफ़ख़-ए-सूर होगा। पहली मर्तबः में सब के होश उड़ जाएँगे और मुर्दे हो जाएँगे।

फिर दूसरा नफ़्ख़ा होगा जिस से मुर्दों की रूहें वापस आ जाएँगी और बेहोशों को होश आ जाएगा। उस वक़्त मह़शर के अ़जीब व ग़रीब मन्ज़र को हैरतज़दह होकर तकते रहेंगे, फिर ख़ुदावन्द क़ुद्दूस की पेशी में तेज़ी के साथ हाज़िर किये जाएँगे।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दूसरी मर्तबः सूर फूंकने पर सब से पहले मैं सर उठाऊँगा तो देखूँगा कि मूसा अ़र्श थामे हुए हैं। अब मैं नहीं जानता कि वह पहले सूर पर बेहोश ही न होंगे या दूसरे सूर पर मुझ से पहले होश में आ जाएँगे"। **(बुख़ारी)**

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ से बाज़ ने जिब्रईल, मीकाईल, इस्राफ़ील और मलिकुल् मौत मुराद लिए हैं। बाज़ ने उन के साथ अ़र्श को भी शामिल किया है, बाज़ के नज़्दीक अम्बिया व शोहदा मुराद हैं। वल्लाहु आ़लम। बहरह़ाल यह अलग से नफ़्ख़ा उस वक़्त होगा, उस के बाद मुम्किन है उन पर भी फ़ना तारी कर दी जाए। لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ **(अल् मोमिन, आयत नं० 16)**

69 وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

यानी इस के बाद अल्लाह तआ़ला ह़िसाब के लिए अपनी शान के मुताबिक़ नुज़ूल फ़रमाएँगे। ***(कमा फ़ी बाज़ रिवायात अल् दुर्रे मन्सूर)*** उस वक़्त अल्लाह तआ़ला की तजल्ली और नूर से मह़शर की ज़मीन चमक

उठेगी, हि़साब का दफ़्तर खुलेगा, सब के आ़माल नामे सामने रख दिये जाएँगे। अम्बिया (अ़लै०) और दूसरे गवाह दरबार में हाज़िर होंगे और हर शख़्स के आ़माल का निहायत इन्साफ़ से ठीक-ठीक फ़ैसला सुनाया जाएगा, किसी पर किसी तरह़ की ज़्यादती न होगी।

'शोहदा' से मुराद अम्बिया (अ़लै०) के फ़रिश्ते, उम्मते मुह़म्मदिया के लोग और इन्सान के हाथ पैर वग़ैरह सब हो सकते हैं और ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) ने हर उम्मत के नेक आदमी मुराद लिये हैं।

70 وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

यानी नेकी के बदले में कमी और बुराई के बदले में ज़्यादती न होगी। जिस का जितना अच्छा या बुरा अ़मल है सब अल्लाह के इ़ल्म में है उसी के अनुसार बदला मिलेगा, जिस की कुछ तफ़्सील (Explanation) आगे ज़िक्र है।

71 وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ
عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

यानी तमाम काफ़िरों को धक्के देकर निहायत ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ दोज़ख़ की तरफ़ हांका जाएगा और चूंकि कुफ़्र की क़िस्में व दर्जे बहुत हैं, हर क़िस्म और हर दर्जे के काफ़िरों का गिरोह अलग-अलग कर दिया जाएगा।

जिस तरह़ दुनिया में जेलखाने का फाटक खुला नहीं रहता, जब किसी क़ैदी को दाख़िल करना होता है खोलकर दाख़िल करते और फिर बन्द कर देते हैं। ऐसे ही वहाँ जिस वक़्त दोज़ख़ी दोज़ख़ के क़रीब पहुँचेंगे दरवाज़े खोल कर उस में ढ़केल दिये जाएँगे, उस के बाद दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँगे। जैसा कि इस आयत में है عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ **(सूरः अल् बलद, 20)**

यानी जो फ़रिश्ते दोज़ख़ के मुहाफ़िज़ (गार्ड) हैं वह कुफ़्फ़ार से बतौर मलामत यह कहेंगे, पैग़म्बर क्यों नहीं आये थे? वह कहेंगे ज़रूर आये हम को अल्लाह की बातें सुनाईं और आज के दिन से बहुत कुछ डराया, लेकिन हमारी बद्‌बख़्ती और नालायक़ी कि हमने उन का कहना न माना। आख़िर ख़ुदा की अटल तक़्दीर सामने आई और अ़ज़ाब का हुक्म काफ़िरों पर साबित होकर रहा। فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ

72 قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

यानी तुम ने शेख़ी और घमण्ड में आकर अल्लाह की बात न मानी, अब हमेशा दोज़ख़ में उस का मज़ा चखते रहो।

73 وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۝

यानी ईमान व तक़्वा के दर्जे बहुत हैं, हर दर्जे के मोमिनीन मुत्तक़ीन की जमाअ़त अलग होगी और उन सब जमाअ़तों को शौक़ दिलाकर जल्दी-जल्दी जन्नत की तरफ़ रवाना किया जाएगा।

यानी जिस तरह़ मेहमानों को उनकी आमद से पहले मेहमान ख़ाना का दरवाज़ा खुला रखा जाता है, जन्नती वहाँ पहुँचकर जन्नत के दरवाज़े खुले पाएँगे। مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ (सूरः साद, आयत नं० 50)

अल्लाह के फ़रिश्ते एज़ाज़ व इक्राम के साथ कलिमात सलाम व सना वग़ैरह से उन का इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे और जन्नत में रहने की ख़ुशख़बरी सुनाएँगे।

74 وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝

यानी अल्लाह का शुक्र जो नबियों की ज़बानी दुनिया में किये गये थे आज अपनी आँखों से देख लेंगे यानी जन्नत की ज़मीन का।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं, उन को हुक्म होगा जहाँ चाहें रहें, लेकिन हर कोई वही जगह चाहेगा जो उस के वास्ते पहले से रखी गई है और बाज़ के नज़्दीक यह मुराद है कि जन्नत में सैर व मुलाक़ात के लिए कहीं आने जाने की रोकटोक न होगी।

75 وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ
وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

यानी अल्लाह तआ़ला जब ह़िसाब किताब के लिए नुज़ूल फ़रमाएँगे, उस वक़्त फ़रिश्ते अ़र्श के गिर्द ह़ल्क़ा बाँधे अपने रब की तस्बीह़ व तम्ह़ीद करते होंगे, फिर तमाम बन्दों के दर्मियान ठीक-ठीक इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाएगा।

जिस पर हर तरफ़ से जोश व ख़रोश के साथ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ का नारा बुलन्द होगा यानी सारी ख़ूबियाँ उस ख़ुदा को ज़ेबा हैं जो तमाम आ़लम का परवरदिग़ार है (जिस ने सारे जहान का ऐसा उ़म्दह फ़ैसला किया) इसी नारे पर दरबार ख़त्म कर दिया जाएगा।

(भाग-40)

सूर-ए-मोमिन

(सूरः नं. 40)

तफ़्सीर सूरः मोमिन

नाम- आयत नं० (28) وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ से लिया गया है है। इस का नाम 'ग़ाफ़िर' और अत्तूल भी है।

नाज़िल होने का ज़माना-

इब्ने अ़ब्बास, ह़सन, अ़ता, इक्रिमा और जाबिर वग़ैरह के नज़्दीक यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 12 तक

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ
الْمَصِيْرُ ۝ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠
وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا
وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا
اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ
بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝

अनुवाद-

(1) हामीम्, (2) इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बड़ा ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) इल्म वाला है; (3) जो गुनाह माफ़ करने वाला, तौबः क़ुबूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला और बड़े फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं 'उसी' की ओर लौट कर जाना है। (4) अल्लाह की आयतों के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, तो शहरों में उन लोगों का चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे। (5) उनसे पहले नूह़ की क़ौम झुठला चुकी है, और उनके बाद दूसरे गिरोहों ने भी, (झुठलाया) और हर उम्मत (गिरोह) ने अपने रसूलों के बारे में इरादा किया कि उसको पकड़ लें, और वे बातिल (असत्य) का सहारा लेकर झगड़ते रहे, ताकि उसके ज़रिये ह़क़ (सत्य) को उखाड़ दें, तो 'मैंने' उनको पकड़ लिया, सो कैसी रही मेरी सज़ा! (6) और इसी तरह आप के 'रब' की बात साबित हो चुकी है, जिन्होंने इन्कार किया, वे दोज़ख़ी हैं। (7) जो अर्श (सिंहासन) को उठाए हुए हैं और जो उसके चारों ओर अपने रब की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ (स्तुति) करते हैं, और 'उस' पर ईमान रखते हैं, और उन लोगों के लिए वे क्षमा याचना करते रहते हैं जो ईमान लाए, ''ऐ 'हमारे' रब! तेरी रह़मत और तेरा इल्म हर चीज़ को अहाता (व्याप्त) किये हुए है, 'तू'! उन लोगों को माफ़ कर दे जिन्होंने तौबः की, 'तेरे' रास्ते पर चले, और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले; (8) ऐ हमारे रब! उन्हें हमेशा रहने की जन्नत में दाख़िल कर, जिनका 'तूने' उनसे वादा किया है, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियों, और उनकी औलाद में से, उनको भी, (जो योग्य हों) बेशक 'तू' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) ह़िकमत वाला है; (9) और उन्हें बुरे अंजाम से बचा! और जिसको 'तूने' उस दिन बुरे अंजाम से बचा लिया, तो बेशक उन पर 'तूने' रह़म किया और यही बड़ी कामियाबी है।'' (10) जिन लोगों ने इन्कार किया, उनको पुकार कर कहा जाएगा, अपने आप से जो तुम बेज़ार (लानत-मलामत करते) हो उससे कहीं ज़्यादा बेज़ार तुम से अल्लाह था, जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था, तो तुम इन्कार करते थे।'' (11) वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! 'आप'

ने हमें दो बार मौत दी, और दो बार ज़िन्दगी दी, अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या निकलने का भी कोई रास्ता है, (12) तुम इस अंजाम को इसलिए पहुँचे कि जब एक अल्लाह की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे और अगर उसका साझी ठहराया जाता, तो मान लेते थे, तो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है, जो बुलन्द (सर्वोच्च) व महान है।

आयत नं० 1 से 12 तक की व्याख्या

1 حٰمٓ ۚ

यह हामीम 'हुरूफ़ मुक़त्तआत' हैं, जिसे अल्लाह को ही मालूम है कि इन से मुराद क्या है। अलबत्ता इतनी बात क़ाबिले ज़िक्र है जो पहले भी कही जा चुकी है कि अल्लाह तआला ने अक्सर व बेशतर हुरूफ़ मुक़त्तआत के बाद क़ुर्आन करीम के वह्य इलाही और अल्लाह की ओर नाज़िल होने की बात की है।

इस से इस तरफ़ इशारा मिलता है कि यह शायद अ़रबों के लिए एक क़िस्म का चैलेंज था कि यह किताबे इलाही उन्हीं अक्षरों से बने हैं जिन से तुम्हारी बातचीत होती है और तुमको अपने साहित्यकार होने पर बड़ा दावा है, तो अगर यह वाणी किसी इन्सान की वाणी है तो इस जैसी वाणी लाने से तुम बेबस क्यों हो?

मालूम हुआ कि यह अल्लाह की वाणी है, जिसे उस ने वह्य के ज़रिये अपने रसूल (सल्ल०) पर नाज़िल किया है।

2-3 تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِي
الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह किताब उस की तरफ़ से नाज़िल की गई है जो अपनी तमाम मख़्लूक़ात पर अधिकार रखता है, कोई भी उस के किसी इरादे और हुक्म में दख़ल अन्दाज़ी करने की क़ुद्रत नहीं रखता है और वह बड़ा इल्म वाला है। अपनी मख़्लूक़ात, उन की नियतों, उन के आ़माल और उन की ज़रूरत को ख़ूब बेहतर जानता है, वह मग़्फ़िरत चाहने वालों के गुनाह माफ़ कर देता है, तौबः करने वालों की तौबः क़ुबूल करता है, नाफ़रमानों और काफ़िरों को सख़्त सज़ा देने पर क़ुद्रत रखता है और मख़्लूक़ात पर ख़ूब इन्आ़म व एहसान करने वाला है। उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, क़ियामत के दिन सब को उसी के पास लौट कर जाना है।

4 مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ

ऊपर बयान हुआ कि क़ुर्आन अल्लाह की किताब है। इसे उस ने इसलिए नाज़िल किया है ताकि उस के बन्दे इस से हिदायत और रौशनी ह़ासिल करें। इसी मुनासिबत से अब लोगों के ह़ालात बयान किये जा रहे हैं जो क़ुर्आन करीम के आयतों की तर्दीद की हर मुम्किन कोशिश करते हैं और इस हिदायत की लौ को कम करने के लिए अपनी पूरी ताक़त ख़र्च करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस क़ियामत और नबी करीम (सल्ल०) की रिसालत पर दलालत करने वाली आयतों में वही लोग शुकूक व शुब्हात पैदा करते हैं और बातिल दलायल के ज़रिये ह़क़ को दबाना चाहते हैं जो ह़क़ीक़त में काफ़िर होते हैं, इसलिए ऐ मेरे नबी! उन की दुनियावी नेअ़मतों और सेह़त व आ़फ़ियत को देखकर आप धोके में न पड़ जाइए कि अल्लाह तआ़ला उन से ख़ुश है, बल्कि उस ने उन की रस्सी ढ़ीली कर दी है कि वह घमण्ड और हठधर्मी में किस ह़द तक आगे बढ़ते हैं।

सूरः आले इ़मरान आयात नं० (196/ 197) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝

“आप को काफ़िरों का शहर में चलना फिरना धोके में न डाल दे, यह तो बहुत ही थोड़ा फ़ायदा है। इस के बाद उन का ठिकाना तो जहन्नम है और वह बुरी जगह है।

5 كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۖ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से पहले क़ौमे नूह़ और उन के बाद क़ौमे आ़द व समूद, क़ौमे इब्राहीम व लूत, अस्ह़ाबे मद्यन और फ़िरऔ़नियों ने भी अपने-अपने रसूलों को झुठलाया और हर एक ने उन्हें क़त्ल करना चाहा और बातिल दलायल के ज़रिये ह़क़ की आवाज़ को दबाना चाहा, तो अल्लाह ने उन में से हर एक को अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर दिया और वह अ़ज़ाब बड़ा सख़्त और दर्दनाक होता है।

इसी तरह़ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के लिए भी उन के कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार की वजह से अल्लाह का अ़ज़ाब साबित हो चुका है और तय है कि उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

6 وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए और उन्होंने तक़्वा और नेक अ़मल की राह अख़्तियार कर ली उन का अन्जाम बेहतर होगा।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह फ़रिश्ते जिन्होंने अ़र्शे इलाही को थाम रखा है और दूसरे फ़रिश्ते जिन्हें रब्बुल् आ़लमीन का क़ुर्ब (नज़्दीकी) ह़ासिल है सब अपने रब की बड़ाई बयान करते हैं और इस बात का इक़्रार करते हैं कि उस के सिवा कोई उन का रब नहीं है और हमेशा उस की अ़िबादत में लगे रहते हैं और अहले ईमान के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़एँ करते हैं।

मोमिनों और उन फ़रिश्तों के बीच ईमान का रिश्ता उनसे तक़ाज़ा करता है कि वह दुनिया के अहले ईमान इन्सानों के लिए रब्बुल् आ़लमीन के अ़र्श के नज़्दीक दुआ़ और इस्तिग़्फ़ार करते हैं यानी यह काम भी उन के बराबर वज़ीफ़ा का एक ह़िस्सा है।

फ़रिश्ते कहते हैं, ऐ हमारे रब! तेरी रह़मत हर चीज़ को शामिल है और तेरे इ़ल्म ने हर चीज़ का अह़ाता (घेराव) कर रखा है, ०तू अपने उन बन्दों को माफ़ कर दे जिन्होंने शिर्क से तौबः कर ली और इस्लाम की राह अख़्तियार कर ली है, तू उन्हें जहन्नम की आग से बचा। ऐ हमारे रब! तू उन्हें जन्नत

के उन बाग़ों में दाख़िल कर दे जिस का तूने उन से वादा किया है और उन के साथ उन के उन बाप-दादों, बेवाओं और औलाद को भी जिन्होंने नेकी की राह अख़्तियार की ताकि जन्नत में दाख़िले से उन्हें जो ख़ुशी हासिल हुई है वह पूरी हो जाए। ऐ हमारे रब! तू हर चीज़ पर ग़ालिब है और बड़ी हिक्मतों वाला है। ऐ हमारे रब! तू उन्हें उनके बुरे आमाल की सज़ा से बचा ले, उन के गुनाहों पर पर्दा डाल दे, तू क़ियामत के दिन जिसे बुरे आमाल की जज़ा से बचा लेगा, उसे ही हक़ीक़त में तेरी रहमत ढ़ांक लेगी।

अल्लाह के बन्दों के लिए सब से ज़्यादा भलाई चाहने वाले फ़रिश्ते हैं और सब से ज़्यादा बुराई चाहने वाले शयातीन हैं, उन्होंने इसी आयत के पेशेनज़र यह बात कही है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जहन्नम से निजात और जन्नत में दाख़िला ही सब से बड़ी कामियाबी है। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरः आले इमरान आयत नं० (185) में फ़रमाया है فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ "जो शख़्स आग से हटा दिया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए बेशक वह कामियाब हो जाएगा"।

7-10
الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ
كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ
عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ
وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ
مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝

ऊपर मोमिनों और उन के अहल व अयाल के जन्नत में दाख़िला का बयान गुज़र चुका है और अब जहन्नम में काफ़िरों का हाल बयान किया जा रहा है। अहले जहन्नम जब अज़ाब की सख़्तियों से तंग आ जाएँगे उन की शक्लें बदल जाएँगी और उन के चेहरे जलकर ख़राब हो जाएँगे, तो उन्हें अपने आप से नफ़रत हो जाएगी और दुनिया में अपनी बद्आमालियों पर अपने आप को कोसने लगेंगे और जब फ़रिश्ते उन की बातें सुनेंगे कि दुनिया में तुम्हारे कुफ़्र व घमण्ड और तौहीद व रिसालत का इन्कार करने की वजह से अल्लाह तआला को तुम लोगों से जो नफ़रत थी वह उस से कहीं ज़्यादा थी, जो आज जहन्नम की आग की वजह से तुम्हें अपनी ज़ात से है।

11-12
قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝
ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि मैदाने महशर में इन्कारी जब अल्लाह तआला के सामने खड़े होंगे तो दोबारा दुनिया की तरफ़ लौटना चाहेंगे।

सूरः सज्दः आयत नं० (12) में अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

وَلَوْ تَرَى إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُو رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ

"काश! आप देखते जब कि गुनाहगार लोग अपने रब के सामने सर झुकाये हुए कहेंगे, ऐ हमारे रब!

हम ने देख लिया अब तू हमें वापस लौटा दे, हम नेक आ़माल करेंगे, हम यक़ीन करने वाले हैं" लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिलेगा। फिर जब आग को अपनी आँखों से देख लेंगे तो पहले से ज़्यादा रो कर सवाल करेंगे, लेकिन उन्हें कोई जवाब न मिलेगा।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः अनूआ़म आयत नं० (27) में फ़रमाया हैः

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ۝

"अगर आप उस वक़्त देखें जब यह दोज़ख़ के पास खड़े किये जाएँगे तो कहेंगे, हाय क्या अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जाएँ और अगर ऐसा हो जाए तो हम अपने रब की आयात को न झुठलाएँगे और हम ईमान वालों में से हो जाएँ। फिर जब यह लोग आग में दाख़िल कर दिये जाएँगे और उस की सख़्तियों को झेलने लगेंगे और उन की ह़ालत बर्दाश्त से बाहर हो जाएगी तो चीख मारने लगेंगे और कहेंगेः

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ

"ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल दे, हम अच्छे काम करेंगे बरख़िलाफ़ उन कामों के जो किया करते थे"। **(सूरः फ़ातिरः 37)**

सूरः अल् मोमिन की आयते करीमा से मालूम होता है कि वह अपने सवाल से पहले अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत व कुद्‌रत का एतिराफ़ करेंगे, इस उम्मीद में कि शायद उन की बात मान ली जाए। कहेंगे ऐ हमारे रब! तूने अपनी अ़ज़ीम कुद्‌रत के ज़रिये हमें दोबारा मौत दी और दोबारा ज़िन्दा किया यानी हम नुत्फ़ों (वीर्य) की शक्ल में मुर्दा अपने बापों की पीठों में थे, तूने हमें ज़िन्दगी दी, फिर हम ने मौत का मज़ा चखा और अब फिर दोबारा हमें ज़िन्दा किया है, हम अपने गुनाहों का एतिराफ़ करते हैं, तो क्या ऐसा मुम्किन है कि तू दोबारा हमें भेज दे, ताकि नेक अ़मल करें?

तो उन का सवाल रद्द कर दिया जाएगा और अल्लाह उन से कहेगा कि तुम्हारी ख़बीस फ़ित्‌रत ह़क़ को कुबूल करने की क्षमता नहीं रखती हैं, तुम्हें तो दुनिया में जब एक अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो इन्कार कर देते थे और जब उस के साथ ग़ैरों को शरीक बनाया जाता था तो उन के सामने फ़ौरन सर झुका देते थे।

इसलिए अगर दोबारा भी तुम्हें दुनिया में भेज दिया जाए तो अल्लाह तआ़ला का इन्कार करोगे और उस के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराओगे। तुम्हारे बारे में अ़ज़ाब का फ़ैसला हो चुका है, निजात की कोई राह नहीं है अब अपने आप को बुरा कहो और अपनी-अपनी बद्‌बख़्ती पर नौह़ा करो, लेकिन इन सब बातों से अब कोई फ़ायदा नहीं होगा और अ़ज़ाब में कोई कमी नहीं होगी।

आयत नं० 13 से 27 तक

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ۝ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝
رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝
وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا
تُخْفِي الصُّدُورُ ۝ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ
لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن
يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

अनुवाद-

(13) 'वही' तो है जो तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है; और नसीहत तो वही हासिल करता है जो अल्लाह की ओर रूजूअ़ करने वाला है। (14) तो अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसके लिए ख़ालिस करके, चाहे काफ़िरों को कितना ही नागवार (अप्रिय) हो। (15) 'वह' ऊँचे दर्जों वाला अर्श (सिंहासन) का मालिक है, अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह़ (वह्य) नाज़िल करता है, ताकि वह पेशी के दिन से डराए। (16) जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी, ''आज किस की हुकूमत है? अल्लाह की, 'जो' अकेला सब पर क़ाबू रखने वाला है।'' (17) आज हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (18) और उन लोगों को जल्द ही आने वाली मुसीबत के दिन से डराइए, कि जब कलेजे मुँह को आ लगेंगे (और वे ग़म से घुट रहे होंगे) ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए। (19) 'वह' निगाहों की ख़ियानत को भी जानता है, और जो सीनों में छिपा हैं। (20) और अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, और जिनको ये अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का हुक्म नहीं दे सकते, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (21) क्या उन्होंने धरती में चला-फिरा नहीं कि देखते, कि उन लोगों का क्या अंजाम हुआ, जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे शक्ति और धरती में अपने चिन्हों की वजह से उनसे कहीं बढ़ चढ़कर थे, फिर उनके गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न हुआ। (22) यह तो अंजाम इसलिए सामने आया कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आते थे, तो ये इन्कार करते रहे, तो अल्लाह ने उनको पकड़ लिया, बेशक 'वह' बड़ी ताक़त वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है। (23) और 'हमने' मूसा को

अपनी निशानियाँ और खुली दलीलें देकर भेजा; (24) फ़िरऔन, और हामान, और क़ारून की ओर, तो उन्होंने कहा, ''यह तो जादूगर है बड़ा झूठा।'' (25) फिर जब (मूसा) 'हमारी' ओर से हक़ लेकर उनके पास गये तो कहने लगे, ''जो लोग उनके साथ (अल्लाह पर) ईमान लाए हैं, उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और औरतों को ज़िन्दा रखो, और काफ़िरों की तद्‌बीरें तो अकारथ ही होती हैं।'' (26) और फ़िरऔन ने कहा, ''मुझे छोड़ो, मैं मूसा को मार डालूँ और उसे चाहिए कि वह अपने रब को पुकारे, मुझे डर है कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे धर्म को बदल डाले या यह कि वह देश में बिगाड़ पैदा करे।'' (27) और मूसा ने कहा, ''मैंने हर घमंडी के मुक़ाबले में, जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता, अपने और तुम्हारे (रब) की पनाह (शरण) ले चुका हूँ।''

आयत नं० 13 से 27 तक की व्याख्या

13 هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ۝

अहले कुफ़्र व शिर्क के लिए क़ियामत के दिन सख़्त तम्बीह बयान किये जाने के बाद अब उन्हें उस दिन से पहले इस दुनियावी जिन्दग़ी में दअ़वत दी जा रही है, ताकि मौत से पहले ही तौबः करके मोमिनीन में दाख़िल हो जाएँ और जहन्नम का ईधन न बनें।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ अहले क़ुरैश! तुम देखते नहीं कि अल्लाह तआ़ला अपनी तौह़ीद, अपनी अ़ज़्मत व क़ुद्‌रत के अ़ज़ीम दलायल तुम्हारे सामने पेश कर देता है और वही आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी भेजता है?

फिर अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ही कहा कि नसीह़त तो वह ह़ासिल करता है जो गुनाहों से तौबः करता है और हर ह़ाल में अल्लाह की तरफ़ पलटता है।

14-17 فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ
أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ
شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

अहले ईमान को ख़िताब कर के कहा जा रहा है कि तुम अपनी राह पर चलते रहो और काफ़िरों की परवाह किये बिना सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करो जो बहुत ही ऊँचे दर्जात और अ़र्श वाला है यानी जिस की शान और अ़ज़्मत व कमाल की कोई इन्तेहा नहीं है।

वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है वह़्य भेजकर अपना रसूल बना देता है, ताकि वह लोगों को उस दिन से डराये जब अहले ज़मीन आसमान वालों से मिलेंगे और बन्दे अपने ख़ालिक़ के सामने ह़ाज़िर होंगे। जिस दिन तमाम लोग अपनी क़ब्रों से निकल पड़ेंगे, कोई चीज़ उन्हें अल्लाह से नहीं छुपाएगी।

जब तमाम मख़्लूक़ात की रुहें क़ब्ज़ कर ली जाएँगी, अल्लाह के सिवा कोई बाक़ी नहीं रहेगा, उस

वक़्त अल्लाह तआ़ला तीन बार कहेगाः आज बादशाहत किस की है? फिर ख़ुद ही जवाब देगा, उस अल्लाह की है जो ख़ुद ही तन्हा है और जो हर चीज़ पर क़ादिर व ग़ालिब है।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने इसी तरह़ की ह़दीस अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़मीन को पकड़ लेगा और दाएँ हाथ में आसमान लपेट लेगा, फिर कहेगा कि मैं बादशाह हूँ। कहाँ हैं दुनिया के बादशाह?" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

जिस दिन हर शख़्स को इन्साफ़ के मुताबिक़ उस के किये का बदला दिया जाएगा उस दिन किसी पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में ह़ज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से ह़दीसे क़ुद्सी मरवी है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ऐ मेरे बन्दों! मैंने अपने आप पर ज़ुल्म ह़राम कर दिया है और उसे तुम्हारे दर्मियान भी ह़राम कर दिया है, इसलिए एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो।

आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह बड़ा जल्द ह़िसाब लेने वाला है। सूरः लुक़्मान आयत नं० (28) में आया है مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ "तुम सब की पैदाइश और मरने के बाद जिलाना ऐसा ही है जैसे एक जान का"।

18 وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप अपनी क़ौम को क़ियामत के दिन से डराइये जो बहुत ही क़रीब हो चुकी है, ताकि लोग शिर्क व गुनाह कर के उस दिन के अ़ज़ाब के ह़क़्दार न बनें। उस दिन लोगों के दिलों पर ऐसा ख़ौफ़ व रोअ़ब तारी होगा कि जिगर मुँह को आ जाएँगे, न निकल पाएँगे और न ही अपनी असली जगह लौट सकेंगे और दुनिया में अपने बुरे करतूतों की वजह से ग़म से निढ़ाल हो जाएँगे, उन पर मुकम्मल ख़ामोशी तारी होगी, शिर्क व गुनाह का अ़मल करने वालों का उस दिन न कोई रिश्तेदार होगा, न कोई मदद्गार और न कोई सिफ़ारशी होगा, बड़े मायूसी का आ़लम होगा। **(अल् अ़याज़ु बिल्लाह)**

19 يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾

अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि उस का इ़ल्म तमाम चीज़ों को घेरे हुए है, कोई चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है, वह आँखों की ख़यानतों और दिलों के भेदों को जानता है, ताकि लोग उस की नाफ़रमानी से डरें, तक़्वा और अ़मल सालेह़ की राह अख़्तियार करें।

'ख़यानत नज़र' की तशरीह़ इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने यह की है कि आदमी किसी के घर में जाए वहाँ कोई ख़ूबसूरत औ़रत हो जिसे लोगों से नज़र बचा कर देखने की कोशिश करे और जब लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह पाये तो नज़र नीची कर ले, लेकिन अल्लाह ने उस के दिल का ह़ाल जान लिया है।

अल्लाह ने अपने बारे में यह भी ख़बर दी है उस का फ़ैसला निहायत आ़दिलाना होता है, इसलिए कि वह अच्छाई का बदला अच्छे अन्जाम के ज़रिये और बुराई का बदला बुरे अन्जाम के ज़रिये देने पर पूरी क़ुद्रत रखता है, इस के बरख़िलाफ़ वह उपास्य जिन्हें मुशिरकीन पुकारते हैं किसी फ़ैसले की क़ुद्रत नहीं रखता, इसलिए कि वह न सुन सकते हैं और न देख सकते हैं और अल्लाह तो हर बात को सुनने वाला और हर चीज़ को देखने वाला है, इसलिए वह बन्दों के दर्मियान न्यायिक फ़ैसले की मुकम्मल क़ुद्रत रखता है।

20-22

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ۠
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَّ اٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ
تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۚ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से उन की रिसालत को झुठलाने वालों के बारे में कहा जा रहा है कि वह लोग अल्लाह की ज़मीन में घूमकर उन क़ौमों का अन्जाम क्यों नहीं देखते जिन्होंने अल्लाह के रसूलों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उन्हें अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर दिया, हालांकि वह लोग कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से ज़्यादा ताक़तवर थे, उन्होंने ज़मीन को आबाद करने के लिए बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई थीं और दुनियावी एतिबार से ख़ूब कामियाब थे, लेकिन जब अल्लाह ने उन के गुनाहों की वजह से उन की पकड़ की तो उन्हें कोई बचा न सका। उन का यह अन्जाम इसलिए हुआ कि उन के पास अम्बिया-ए-किराम तौह़ीद व रिसालत के साबित करने में बड़ी स्पष्ट निशानियाँ और सरीह़ दलायल लेकर आये, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया और हलाक कर दिया।

उस अल्लाह का मुक़ाबिला कौन कर सकता है, वह तो बहुत ज़बरदस्त क़ुव्वत वाला और बड़ा सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

23

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

क़ुर्आन नबी करीम (सल्ल०) की तसल्ली के लिए ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और उन की क़ौम का वाक़िआ़ बयान कर रहा है और यह बतला रहा है कि बहरह़ाल दुनिया और आख़िरत में अच्छा अन्जाम और कामियाबी आप (सल्ल०) को ही ह़ासिल होगी।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ हमारे नबी! हम ने आप से पहले ह़ज़रत मूसा को अपनी निशानियाँ और दलायल एक बहुत ही खुली निशानी देकर फ़िरऔ़न, हामान और क़ारून के पास भेजा था।

फ़िरऔ़न मुल्क मिस्र में क़िब्तियों का बादशाह था, हामान उस का वज़ीर था और क़ारून बनी इस्राईल का एक शख़्स था और अपने दौर का बहुत बड़ा मालदार था। दौलत ने उसे घमण्ड व ग़ुरूर में मुब्तिला कर दिया था और वह फ़िरऔ़न के साथ जा मिला था। आयत में سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ से मुराद तौरेत है।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जब उन के सामने अपने रब की दअ़वते तौह़ीद पेश की और अ़सा-ए-मूसा,

यदबैज़ा और दूसरे मोअ़जिज़ात (चमत्कार) पेश किये जो उन के रसूल होने पर पूरी दलील थे और फ़िरऔ़नियों से कुछ न बन पड़ा तो कहने लगे कि यह तो कोई बड़ा झूठा और जादूगर है और आपस में साज़िश की कि जो लोग मूसा पर ईमान लाए हैं उन के बेटों को क़त्ल कर दिया जाए उन की औ़रतों को ख़िद्मत के लिए ज़िन्दा रखा जाए और इस से मक़्सूद बनी इस्राईल की बेइ़ज़्ज़ती, उन की संख्या कम करना और उन के दिलों में यह बात बिठाई थी कि मूसा ही उन की बर्बादी और हलाकत का ज़रिया है।

'क़तादा' कहते हैं कि फ़िरऔ़न का बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करने का यह दूसरा आर्डर था। पहली बार ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पैदा होने से पहले का था, उस के बाद उस ने क़त्ल करना बन्द कर दिया था।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन काफ़िरों की साज़िश धरी की धरी रह गई, दीन मूसवी फैलता गया, बनी इस्राईल की नस्ल में वृद्धि होती रही और बिल्आख़िर फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी अपने आख़िरी अन्जाम को पहुँच गये।

24-26 إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ
الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي
أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝

फ़िरऔ़न नामुराद हुआ तो अपनी क़ौम के सामने अपना खोया हुआ वक़ार बह़ाल करने के लिए कहने लगा कि अब इस के सिवा कोई चारह नहीं कि मैं मूसा को मौत के घाट उतार दूँ और घमण्ड की आख़िरी ह़दों को पार करते हुए कहने लगा कि मुझे उस के रब की परवाह नहीं, उस से कह दो वह अपनी मदद के लिए अपने रब को बुला ले।

अपने फ़ैसले की दलील पेश की कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मुझे डर है कि वह अपनी जादुई चालों के ज़रिये तुम्हारे दिल व दिमाग़ पर न छा जाए और तुम लोग उस से प्रभावित होकर उस का दीन व मज़्हब कुबूल कर लो और तुम्हारे आ़दात बदल जाएँ और ज़मीन फ़साद से भर जाए।

27 وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को जब उस की धमकी की ख़बर हुई तो, अल्लाह से उस के बुराई से पनाह मांगी और कहा कि मैं हर उस घमण्डी से जो आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी करता है अल्लाह की पनाह माँगता हूँ। वही अपने दीन का मुह़ाफ़िज़ (सुरक्षा करने वाला) और अपने मोमिन बन्दों का मदद्गार है और ज़ाहिर है कि फ़िरऔ़न इस में सबसे बड़ा दुश्मन था। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को उस के शर (बुराई) से मह़फ़ूज़ रखा।

आयत नं० 28 से 41 तक

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ
كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ
الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ اللَّهِ إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝
وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ
ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ
هَادٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُم بِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِن بَعْدِهِ
رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ وَعِندَ
الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانُ ابْنِ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝ أَسْبَابَ
السَّمَاوَاتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي
تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَا قَوْمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ
يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيَا قَوْمِ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجَاةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝

अनुवाद-

(28) और फ़िरऔन के लोगों में से एक ईमान वाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा, ''क्या तुम ऐसे व्यक्ति को, इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है, 'मेरा रब अल्लाह है, और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है?' और अगर वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा है, तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुम पर पड़कर रहेगा, बेशक अल्लाह उसको राह नहीं दिखाता जो हद से गुज़रने वाला झूठा हो। (29) ऐ क़ौम! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही धरती में ग़ालिब (प्रभावी) हो, अगर अल्लाह की सज़ा हम पर आए तो कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, ''मैं तुम को वही बात समझाता हूँ जो मैं समझता हूँ और वही राह बताता हूँ, जिसमें भलाई है।'' (30) और जो ईमान ला चुका था वह कहने लगा ''ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है कि तुम पर ऐसा दिन आ पड़े, जैसा कि पिछले गिरोहों पर आ पड़ा था; (31) जैसे नूह की क़ौम, और आ़द, और समूद और उनके बाद के लोगों का हाल हुआ, अल्लाह तो अपने बन्दों पर नहीं चाहता कि कोई ज़ुल्म करे।'' (32) और ऐ मेरी क़ौम ! मुझे तुम्हारे बारे में चीख़-पुकार के दिन का डर है; (33) जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम को अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस व्यक्ति को अल्लाह ही भटका दे, उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। (34) और पहले तुम्हारे पास यूसुफ भी खुले प्रमाण लेकर आ चुके हैं तो जो कुछ वे लेकर तुम्हारे पास आए थे उसके बारे में तुम बराबर सन्देह में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी मौत हो गई तो तुम कहने लगे, ''अल्लाह उनके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।'' इस तरह अल्लाह उसको गुमराही में डाल देता है जो हद से गुज़रने वाला और शक में पड़ने

वाला हो (35) जो लोग बिना इसके कि उनके पास कोई दलील आयी है, अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं यह बात अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक सख़्त नापसंद है, इसी तरह अल्लाह हर घमंडी सरकशों के दिलों पर मोहर लगा देता है। (36) और फ़िरऔन ने कहा, ''ऐ हामान! मेरे लिए एक महल बनवा, ताकि मैं उस पर चढ़ कर रास्तों तक पहुँच जाऊँ; (37) आसमानों के रास्ते पर फिर मूसा के रब को झांक कर देख लूँ, और मैं तो समझता हूँ कि यह बिल्कुल झूठा है, और इस तरह फ़िरऔन के बुरे काम उसको भले करके दिखाए गये, और उसे राह से रोक दिया गया, और फ़िरऔन की चाल तो बेकार हो गई;'' (38) और कहा उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो मेरी बात मानो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता बता रहा हूँ।'' (39) ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े फ़ायदे की चीज़ है, और जो आख़िरत का घर है वही हमेशा रहने का घर है; (40) जो बुरे काम करेगा उसको वैसा ही बदला मिलेगा, और जो भलाई के काम करेगा- मर्द हो या औरत, और वह ईमान वाला भी हो- तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहाँ उनको बेहिसाब रोज़ी दी जाएगी। (41) और ऐ मेरी क़ौम! यह मेरे साथ क्या मामला है, कि मैं तो तुम को नजात की ओर बुलाता हूँ, और तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो,

आयत नं० 28 से 41 तक की व्याख्या

28 وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم
بِالْبَيِّنَاتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ

क़ुर्आन करीम के ज़ाहिरी बयान के मुताबिक़ आले फ़िरऔन का एक आदमी छुपे तौर पर हज़रत मूसा (अ़लै०) की रिसालत पर ईमान रखता था। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि वह फ़िरऔन का चचाज़ाद भाई था और उस का नाम 'समआ़न' था।

जब उस ने फ़िरऔन की बात सुनी कि वह हज़रत मूसा (अ़लै०) को क़त्ल करने की बात कर रहा है तो उस ने जुर्रत कर के कहा कि तुम लोग एक आदमी को केवल इसलिए क़त्ल करना चाहते हो कि वह सिर्फ़ अल्लाह को मानता है, हालांकि वह अपने और अपने अ़क़ीदे की सच्चाई पर तुम्हारे सामने ऐसे दलायल पेश कर चुका है जिन को तुम रद्द नहीं कर सकते।

मर्द मोमिन ने इस के बाद थोड़ी नर्मी पैदा करते हुए कहा, अगर हम मान लें कि वह झूठा है तो उस के झूठ का नुक़्सान उसे ही पहुँचेगा। अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत दोनों जगह उस के झूठ होने की उसे सज़ा देगा। अगर वह सच्चा है और तुम उसे तक्लीफ़ दोगे तो जिस दुनियावी और आख़िरत के अ़ज़ाब की वह धमकी देता है उस की पकड़ में आ जाओगे, क्योंकि अल्लाह तआ़ला कभी भी उस आदमी को कामियाब नहीं करता जो हद से गुज़रने वाला और झूठा होता है।

29 يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ اللَّهِ إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ
مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ

मर्द मोमिन ने जब देखा कि उस की बात ने फ़िरऔन और फ़िरऔनियों पर कुछ असर डाला है, तो मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए उन्हें नसीहत की और कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! आज तुम लोग मुल्के मिस्र के बादशाह हो और तुम्हें ग़ल्बा ह़ासिल है, तो अल्लाह का शुक्र अदा करो और अ़ज़ाबे इलाही को दअ़वत न दो, इसलिए अगर अ़ज़ाब आ जाएगा तो हमें और तुम्हें कोई उस से बचा न सकेगा।

फ़िरऔन ने जब उस मर्द मोमिन की यह बात सुनी तो अपनी क़ौम को धोका देने के लिए और उन्हें यह समझाने के लिए कि वह उन के लिए बड़ा मुख़्लिस है, कहने लगा कि जो राय मुझे तुम्हारे ह़क़ में बेहतर मालूम हुई है यानी मूसा का क़त्ल किया जाना, वही मैंने तुम्हारे सामने पेश की है और मैंने तुम्हारी सह़ी रहनुमाई (Guidance) करनी चाही है ताकि मूसा ज़िन्दा रहकर तुम्हारा दीन न बदल दे और सरज़मीन मिस्र में शान्ति को भंग करने का ज़रिया न बने।

30 وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۝

मर्दे मोमिन ने अपनी तक़रीर जारी रखते हुए कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अगर तुम ने मूसा को क़त्ल कर दिया तो मुझे डर है कि तुम पर भी अल्लाह का कोई अ़ज़ाब नाज़िल हो जाएगा जो तुम्हें हलाक कर देगा, जैसे पिछले ज़मानों में उन क़ौमों का अन्जाम हुआ जिन्होंने अपने रसूलों को झुठलाया था।

क़ौमे नूह़, क़ौमे समूद और उन के बाद आने वाली दूसरी कौमों ने तुम्हारी ही तरह़ का रवैया अख़्तियार किया, तो अल्लाह ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक कर दिया।

ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं तुम्हारे बारे में क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। आयत में क़ियामत को يَوْمَ التَّنَادِ इसलिए कहा गया कि उस दिन तमाम क़ौमें अपने-अपने आ़माल के साथ पुकारी जाएँगी और अहले जन्नत जन्नत वालों को पुकारेंगे और अहले जहन्नम जहन्नमियों को।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जब ज़मीन फट पड़ेगी और क़ियामत का हंगामा बरपा हो जायेगा तो सारे लोग एक दूसरे को पुकारते हुए इधर-उधर भागने लगेंगे, इसीलिए उस दिन को يَوْمَ التَّنَادِ कहा गया है कि जिस दिन एक दूसरे को पुकारेंगे।

बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि यह तमाम ह़ालात पेश आएँगे और इन सब की वजह से उस दिन को يَوْمَ التَّنَادِ कहा गया है।

मर्द मोमिन ने कहा, मैं तुम्हारे बारे में उस दिन से डरता हूँ जिस दिन तुम ह़िसाब के बाद ख़ुद मैदाने मह़शर में जमा होने के लिए भाग रहे होंगे। उस दिन तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही से कोई नहीं बचा सकेगा और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कौन हिदायत दे सकता है?

31-34 مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ
هَادٍ ۝ وَلَقَدْ جَاۗءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَاۗءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ
لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝

मर्द मोमिन ने अपनी दअ़वती तक़रीर जारी रखते हुए कहा, ऐ अहले मिस्र! मूसा से पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (अ़लै०) मोअ़जिज़ात (चमत्कार) और अपने सच्चाई की खुली निशानियाँ लेकर आए थे और बीस साल तक तुम्हें एक अल्लाह के अ़िबादत की दअ़वत देते रहे और ख़ुद उन के पाक दामिनी और उन के नबी होने की गवाही उन का कलाम देता रहा, लेकिन तुम लोग उन के लाये हुए दीने तौहीद में शक ही करते रहे और जब उन की वफ़ात हो गई तो बहुत ही ख़ुश हुए और अपने कुफ़्र की वजह से कहने लगे कि अब यूसुफ़ के बाद कोई रसूल नहीं आएगा यानी तुम ने यूसुफ़ और उन के बाद आने वाले तमाम अम्बिया का इन्कार कर दिया, यह तुम्हारे गुमराही की आख़िरी सीमा थी।

अल्लाह तआ़ला आरोपों में ह़द से आगे बढ़ने वालों और हर बात में शक करने वालों को इसी तरह़ गुमराह कर देता है।

35 الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ وَ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ
وَعِندَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

मर्दे मोमिन ने अपनी तक़रीर ख़त्म करते हुए कहा कि जो लोग ह़क़ की आवाज़ को दबाने के लिए शैतानी हथकंडे इस्तेमाल करते हैं और अल्लाह की ओर से बिना किसी हुज्जत व दलील के उस की आयतों में शुब्हात पैदा करते हैं ताकि लोग ईमान न लाएँ, उन का यह तरीक़ा अल्लाह और उस के मोमिन बन्दों की नज़र में बहुत ही ज़्यादा बुरा है और ऐसे लोगों के दिलों पर अल्लाह तआ़ला मुहर लगा देता है, उन से सोचने समझने की ताक़त छीन लेता है, फिर वह ह़क़ व बातिल की तमीज़ से मह़रूम हो जाते हैं।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक काला दाग़ पड़ जाता है। फिर अगर वह गुनाह छोड़ कर इस्तिग़फ़ार और तौबः कर लेता है तो उस का दिल साफ़ कर दिया जाता है और दोबारा गुनाह करता है तो दाग़ बढ़ जाता है यहाँ तक कि दिल पर छा जाता है"। **(तिर्मिज़ी)**

36-37 وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانُ ابْنِ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝ أَسْبَابَ السَّمَاوَاتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي
لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝

फ़िरऔ़न पर मर्द मोमिन की नसीह़त का कोई असर न हुआ और अपने घमण्ड का इज़्हार करते हुए 'हामान' से कहने लगा कि मेरे लिए एक निहायत बुलन्द इमारत बनाओ, जिस के ज़रिये मैं आसमान के रास्ते तय करूँ और मूसा के मअ़बूद (उपास्य) को देखूँ ह़ालांकि मैं तो मूसा को झूठा ही समझता हूँ कि मेरे सिवा उस का कोई दूसरा मअ़बूद (उपास्य) है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कुफ़्र व घमण्ड में ह़द से गुज़रने की वजह से फ़िरऔ़न के दिल पर मुहर लगा दी गई और उस के बुरे कर्मों और कुफ़्र को उस की निगाहों में ख़ूबसूरत बना दिया गया और ह़क़ की राह की पैरवी से रोक दिया गया, उस की साज़िश और उस की चाल उस के किसी काम न आई।

फ़िरऔ़न की बात से मालूम होता है कि वह बहुत बड़ा जाहिल और कम समझ इन्सान था और

हक़ीक़त को समझने से बहुत दूर था, जब ही तो उस ने हामान से ऐसी नासमझी वाली बात कही।

38 وَقَالَ الَّذِيٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۚ

मर्द मोमिन ने दअ़वत व तब्लीग़ के लिए अपनी कोशिश जारी रखते हुए कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैंने जिस दीन को क़ुबूल कर लिया है उसे तुम लोग भी क़ुबूल कर लो, मैं तुम्हें उस राह पर ले चलूँगा जो जन्नत की राह है।

ऐ मेरी क़ौम के लोगों! यह दुनियावी ज़िन्दग़ी चन्द रोज़ः है जिसे बहरहा़ल ख़त्म हो जाना है और आख़िरत की ज़िन्दग़ी जो उस की ज़िन्दग़ी के बाद आने वाली है, वही हक़ीक़त में हमेशा अम्न, सुकून व राहत की ज़िन्दग़ी है, इसलिए तुम्हें हमेशा की राहत व सुकून वाली ज़िन्दग़ी को कामियाब बनाने की कोशिश करनी चाहिए और याद रखो कि हि़साब का दिन बहुत ही क़रीब है और जो शख़्स इस दुनिया में बुराई करेगा तो उसी के बराबर उसे सज़ा मिलेगी और जो लोग (मर्द हों या औ़रतें) अल्लाह के रसूल पर ईमान रखते हुए नेक अ़मल करेंगे वह जन्नत में दाख़िल होंगे, जहाँ उन्हें बिना परेशानी के अन्‌गिनत नेअ़मतें और बेशुमार रोज़ी मिलेगी।

39-41 يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا
مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝

मर्द मोमिन ने फ़िरऔ़नियों से यह भी कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं तुम्हें निजात की राह पर चलने की दअ़वत देता हूँ और बताता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई बन्दग़ी के लायक़ नहीं, उस का कोई शरीक नहीं है, मूसा उस के रसूल हैं और तुम लोग मुझे कुफ़्र व शिर्क की दअ़वत देते हो और अल्लाह के साथ ऐसे झूठे मअ़बूदों को शरीक बनाने को कहते हो जिन के मअ़बूद (उपास्य) होने का मुझे इ़ल्म नहीं और मैं तुम्हें उस अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ जो ज़बरदस्त है, उस पर कोई ग़ालिब (प्रभावी) नहीं आ सकता है और जो बड़ा माफ़ करने वाला है।

जिन देवताओं की अ़िबादत की तुम लोग मुझे दअ़वत देते हो, उन्हें पुकारने का न तो दुनिया में कोई फ़ायदा है कि वह हमारी तक्लीफ़ों और मुसीबतों को दूर कर देंगे, हमारी ज़रूरतें पूरी कर देंगे और न ही आख़िरत में हमारे सिफ़ारिशी बनकर अ़ज़ाब को टाल सकेंगे, क्योंकि वह तो पत्थर हैं।

एक दूसरा मतलब यह भी बयान किया गया है कि वह दुनिया और आख़िरत कहीं भी पुकारे जाने के ह़क़्दार नहीं हैं, इसलिए कि वह मिट्टी और पत्थर के बने हुए हैं।

याद रहे कि हमें बहरहा़ल लौट कर अल्लाह के पास ही जाना है और इस दुनिया में जो लोग ह़द से बढ़ेंगे, अल्लाह का इन्कार करेंगे, लोगों पर ज़ुल्म करेंगे, बेगुनाहों का ख़ून बहाएँगे तो आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि मर्द मोमिन के इस बात में यह इशारा था कि फ़िरऔ़न और उस के पैरोकार

कुफ़्र व ज़ुल्म में ह़द से बढ़ गये हैं और बनी इस्राईल के बेटों को जानबूझकर क़त्ल करते हैं और यह कि मूसा के क़त्ल का इरादा ज़ुल्म में ह़द से बढ़ जाना है, जिस का अन्जाम अच्छा नहीं होगा।

मर्द मोमिन ने कहा, लोगों! जब अ़ज़ाबे इलाही तुम्हें चारों तरफ़ से घेर लेगा उस वक़्त मुझे और मेरी बातें याद करोगे और मैं अपना मामला अल्लाह के ह़वाले करता हूँ वह अपने फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान तमाम बन्दों से ख़ूब वाक़िफ़ है। वह बेहतर जानता है कि कौन अच्छे बदले का ह़क़्दार है और कौन अ़ज़ाब का।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि मर्द मोमिन के इस बात में फ़िरऔ़नियों के लिए अ़ज़ाब की धमकी थी और यह बात उस ने उस वक़्त कही जब काफ़िरों ने उसे क़त्ल करना चाहा। मक़ातिल कहते हैं कि वह मर्दे मोमिन भाग कर पहाड़ की तरफ़ चला गया और कुफ़्फ़ार उन्हें पकड़ नहीं पाए।

आयत नं० 42 से 56 तक

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ٘ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ۝ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ
لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَ اَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ۝ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ
اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ۝ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ۝ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا
غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۟ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ۝ وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ
الْعِبَادِ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ
قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ۝ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ۝
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْكِتٰبَ۝ هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ۝

अनुवाद-

(42) तुम मुझे इसलिए बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र (इन्कार) करूँ और उस चीज़ को उसका साझीदार ठहराऊँ जिनको मैं नहीं जानता, और मैं तुम्हें उस ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बख़्शने वाले की ओर बुला रहा हूँ; (43) सच तो यह है कि जिस चीज़ की ओर तुम मुझे बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है, और न आख़िरत में, और हमें लौटना भी अल्लाह ही की ओर है, और जो हद से गुज़रने वाले हैं वही जहन्नमी हैं;'' (44) तो जल्द ही तुम याद करोगे उन बातों को, जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, और मैं अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है। (45) तो अल्लाह ने उन लोगों की चालों से (मूसा को) बचा लिया, और फ़िरऔन वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा; (46) (अर्थात) आग कि जिसके सामने वे सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत आएगी, (हुक्म होगा कि) ''फ़िरऔन वालों को सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करो।'' (47) और जब वे दोजख़ में एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से,जो बड़े बनते थे, कहेंगे ''हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम हम पर से आग का कुछ हिस्सा हटा सकते हो?'' (48) बड़े बनने वाले कहेंगे, ''हममें से तो हर एक इसी में पड़ा है, अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका है।'' (49) और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगराँ (चौकीदार) से कहेंगे, ''अपने रब को पुकारो कि हमारे अ़ज़ाब में से एक दिन ही अ़ज़ाब कुछ हल्का कर दे।'' (50) वे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे,'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!!'' (फिर) वे कहेंगे, ''फिर तो तुम्हीं पुकारो, और काफ़िरों (इन्कार करने वालों) की दुआ़ तो बस अकारथ ही हो जाएगी'' (51) हम अपने रसूलों की और जो लोग ईमान लाए उनकी, दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं, और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे (अर्थात क़ियामत के दिन)। (52)

जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र (सफाई) कुछ भी फ़ायदा न पहुँचाएगा, और उन पर लानत होगी और बुरा ठिकाना होगा। (53) और 'हमने' मूसा को हिदायत दी और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, (54) रहनुमाई और नसीहत है बुद्धिमानों के लिए। (55) तो सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है; और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहो, और सुबह और शाम अपने रब के ख़ूबियों की तस्बीह़ (गुणगान) करते रहो। (56) जो लोग बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उनके पास आया हो, अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, उनके सीनों में केवल घमंड है, मगर वे उस बड़ाई को पहुँचने वाले नहीं, तो तुम अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक 'वह' देखने वाला, सुनने वाला है।

आयत नं० 42 से 56 तक की व्याख्या

42-45

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۝
لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ
وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ
اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقَاهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝

अल्लाह तआला ने इस दाअ़ी को पहले तो फ़िरऔन और फ़िरऔनियों से निजात दी और जब फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ समुद्र में डूबा तो उसे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और दूसरे मोमिनीन के साथ डूबने से बचा लिया। फ़िरऔन और फ़िरऔनियों को बद्तरीन अ़ज़ाब ने आ घेरा, दुनिया में बड़ी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ समुद्र में डूबो दिये गये और क़ब्र में सुबह़ व शाम यानी हर वक़्त उन की रुहों को आग का अ़ज़ाब दिया जाता है और जब क़ियामत आएगी तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि फ़िरऔन और फ़िरऔनियों को सख़्त अ़ज़ाब में डाल दो।

'सियोती' ने किरमानी की किताब 'अल् अ़जायब' के ह़वाले से लिखा है कि यह आयत अ़ज़ाबे क़ब्र की सब से बड़ी दलील है, इसलिए कि आयत में रुहों को अ़ज़ाब दिया जाना क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से पहले बताया गया है।

अ़ज़ाबे क़ब्र नबी करीम (सल्ल०) की सह़ीह़ अहादीस से भी साबित है। "ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं, नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आगाह रहो! तुम लोग क़ब्रों में आज़्माईशों में डाले जाओगे"। **(अह़मद व मुस्लिम)**

'बुख़ारी' ने ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, 'अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है'। ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) हर नमाज़ के बाद अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगते थे।

46-48

اَلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۝
وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ

عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि वह कैसा वक़्त होगा जब जहन्नमी जहन्नम में आपस में झगड़ेंगे और दुनिया में जो लोग ताक़त वाले काफ़िरों के डर से उन के पीछे-पीछे चलते थे, उन से कहेंगे कि दुनिया में तुम ने हमें अपनी पैरवी करने पर मजबूर कर रखा था और तुम्हें अपनी अगुवाई (सत्ता) पर बड़ा नाज़ था तो क्या आज जहन्नम के अ़ज़ाब को हम से हल्का कर सकोगे? क्या आज कुछ भी हमारे काम आओगे? तो घमण्डी जो जहन्नम की खाईयों में जल रहे होंगे कहेंगे कि तुम्हारे साथ हम भी जहन्नम में हैं, अगर आज हम कुछ भी कर सकते तो पहले अपने आप को बचा लेते।

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के दर्मियान फ़ैसला कर दिया है अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल कर दिया है और अहले जहन्नम को जहन्नम में डाल दिया है, अब किसी के लिए कोई चारा नहीं है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) यूँ दुआ़ माँगा करते थे, "ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से, जहन्नम के अ़ज़ाब से, ज़िन्दगी और मौत की बलाओं से और काने दज्जाल के फ़ित्ने से तेरी पनाह चाहता हूँ।" (बुख़ारी)

49 وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝

जहन्नम में अ़ज़ाब पाने वाले बड़े और छोटे तमाम कुफ़्फ़ार अ़ज़ाब की सख़्तियों से तंग आकर और हर तरफ़ से नाउम्मीद होकर जहन्नम पर खड़े फ़रिश्तों से इल्तिजा (प्रार्थना) करेंगे कि ज़रा तुम ही अपने रब से हम पर रह़म करने की दुआ़ करो कि वह एक दिन के लिए भी हम से अ़ज़ाब को हल्का कर दे, तो वह फ़रिश्ते जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे लिए भेजे गये अम्बिया दअ़वत-ए-ईमान लेकर नहीं आये थे और ज़ाहिर दलायल के ज़रिये अल्लाह के दीन की सदाक़त (सच्चाई) को साबित नहीं किया था और तुम्हें शिर्क व गुनाहों से रोका नहीं था? तो जहन्नमी कहेंगे कि हाँ, हमारे पास अम्बिया आये थे, लेकिन हम ने उन की बात अन्सूनी कर दी थी तो फ़रिश्ते कहेंगे कि फिर तुम ख़ुद ही अपने रब को पुकारो, हम न तुम्हारी बात सुनेंगे और न ही चाहेंगे कि तुम्हें जहन्नम से निजात मिल जाए और हम तुम्हें यह भी बता देना चाहते हैं कि तुम पुकारो या न पुकारो नतीजा एक है कि तुम से अ़ज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और तुम इसी तरह़ जहन्नम में जलते रहोगे।

50-53 قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝
إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝ يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ
وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ۝

अल्लाह तआ़ला की अपने अम्बिया-ए-किराम के बारे में यह सुन्नत रही है कि वह उन की और उन के मानने वालों की उन के दुश्मनों के मुक़ाबिले में ज़रूर मदद करता है, उन के दीन को ग़ालिब (प्रभावी) करता है और उन के मुख़ालिफ़ीन को क़त्ल, क़ैद व बन्द और दूसरे अ़ज़ाब-ए-दुनिया में मुब्तिला करता

है और उस का वादा है कि क़ियामत के दिन उन्हें उन के नेक आमाल का अच्छा बदला देगा यानी जन्नत में दाख़िल करेगा और इनआम व इक्राम से नवाज़ेगा और उन के मुख़ालिफ़ीन को अपनी रहमत से दूर कर देगा और उन्हें जहन्नम में डाल देगा।

यह वह दिन होगा जब ज़ालिम मुश्रिकों की कोई चीज़ उन के काम नहीं आएगी। 'इब्ने जरीर' लिखते हैं कि उस दिन अहले शिर्क को उन का कोई बहाना काम नहीं आएगा, इसलिए उन के पास उस दिन कुछ भी न होगा। दुनिया में तो अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ूब मौक़ा दिया था, उन के सामने दलील व हुज्जत का अम्बार लगा दिया था इसलिए आख़िरत में उन के पास सिवाय झूठ के कुछ भी न होगा। जैसे कहेंगे وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ "हम अपने रब की क़सम खाकर कहते हैं कि हम शिर्क नहीं करते थे" चुनाँचे वहाँ उन के लिए अल्लाह की रहमत से दूरी और बद्तरीन अ़ज़ाब के सिवा कुछ भी न होगा।

54-55 هُدًى وَّ ذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) का वाक़िआ बयान कर के नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि मूसा ने भी अपनी क़ौम की तरफ़ से बड़ी तक्लीफ़ उठाई थी। आख़िर में अल्लाह ने उन के दीन को ग़ालिब किया और उन्हें उन के दुश्मनों से निजात दी, तो आप भी सब्र कीजिए और अपने मिशन को पूरा करने में लगे रहिए। अल्लाह का वादा बरहक़ है, वह आप की ज़रूर मदद करेगा और आप का दीन ग़ालिब होकर रहेगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हम ने मूसा को तौरेत व नुबूव्वत से नवाज़ा था जैसा कि सूरः माइदा आयत नं० (44) में आया है اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ "बेशक हम ने तौरेत नाज़िल की जिस में हिदायत और नूर है। फ़रमाया कि हम ने इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया जो मूसा के बाद भी मुद्दतों उन के पास रही और जो अ़क़्ल सलीम रखने वालों के लिए रौशनी और नसीहत दे रही है।

इसलिए ऐ मेरे नबी! आप भी मूसा की तरह सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है, वह आप को तन्हा नहीं छोड़ देगा, हर वक़्त अपने रब की याद में लगे रहिये और इस्तिग़्फ़ार, दुआ, नमाज़ और तस्बीह आप का तरीक़ा है। कुछ लोगों ने सुबह व शाम की तस्बीह से फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ मुराद ली है।

'हसन' और 'क़तादा' का ख़याल है कि मुराद सुबह और शाम के वक़्त की दो-दो रकअ़तें हैं, चूंकि यह पंचगाना नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले पढ़ी जाती थीं।

56 اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝

ऐ मेरे नबी! जो कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन दीने हक़ को दबाना चाहते हैं और तौहीद व रिसालत के सहीह दलायल को अपने शक के ज़रिये रद्द करना चाहते हैं हक़ीक़त में उन के दिलों में घमण्ड व गुरूर है, जो

उन्हें दअ़वते ह़क़ को क़ुबूल करने और आप की रिसालत का एतिराफ़ करने से रोके हुए है, उन्हें यक़ीन है कि आप अल्लाह के रसूल हैं, लेकिन अल्लाह के इस फ़ज़्ल व करम पर आप से ह़सद (ईर्ष्या) करते हैं, ह़ालांकि वह नेअ़मत उन्हें किसी ह़ाल में भी नहीं मिल सकती इसलिए कि वह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहता है अ़ता करता है। नुबूव्वत व रिसालत कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो तमन्ना करने से ह़ासिल हो जाए।

एक तफ़सीर यह भी की गई है कि उन के सीनों में बड़ाई है, जो उन्हें कभी ह़ासिल नहीं हो सकती, क्योंकि अल्लाह का फ़ैसला है कि वह उन्हें ज़लील कर के रहेगा।

इसलिए ऐ मेरे नबी! आप अपने रब के ज़रिये उन लोगों के शर से पनाह माँगिये जो अल्लाह की आयतों को झुठलाने के लिए बिना किसी दलील के झगड़ते हैं और यह भी दुआ़ कीजिए कि आप का दिल उस घमण्ड से पाक रहे जिस में वह लोग मुब्तिला (Involve) हैं।

आयत नं० 57 से 74 तक

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ
رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا
فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ
فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَاۗءَ بِنَاۗءً وَّصَوَّرَكُمْ
فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ښ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَاۗءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ۡ وَاُمِرْتُ اَنْ
اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ
لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ
رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ۝ فِي الْحَمِيْمِ ڏ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ
اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـــًٔا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(57) आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इन्सानों के पैदा करने से ज़्यादा बड़ा (काम) है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (58) अन्धा और आँख वाला बराबर नहीं होते, और न ईमान वाले, नेक अ़मल करने वाले और बद्कार आपस में बराबर हो सकते हैं, मगर तुम बहुत कम ध्यान देते हो। (59) क़ियामत की घड़ी आने वाली है, इसमें कोई सन्देह नहीं, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (60) और तुम्हारे रब ने कहा है, ''तुम मुझे पुकारो, मैं (तुम्हारी दुआएँ) कुबूल करूँगा।'' जो लोग मेरी इ़बादत के मामले में घमंड से काम लेते हैं वे बहुत जल्द अपमानित होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (61) अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि तुम इसमें सुकून हासिल करो और दिन को रोशन बनाया, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (62) 'यही' अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो? (63) इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते थे। (64) अल्लाह ही तो है 'जिसने' तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया, और तुम्हारी सूरत बनाईं! और क्या ही अच्छी तुम्हारी सूरतें बनाई, और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी दी, यही अल्लाह तो तुम्हारा रब है, तो अल्लाह, सारे संसार का 'रब' बड़ी बरकत वाला है; (65) 'वह' ज़िन्दा है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'उसी' को पुकारो इबादत को खास करते हुए, सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे संसार का 'रब' है। (66) (ऐ मुहम्मद) कह दीजिए, ''मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उनकी इ़बादत करूँ

जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके हैं, और मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं अपने आप को सारे संसार के रब के हवाले कर दूँ।" (67) 'वही' तो है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से, फिर खून के लोथड़े से; फिर 'वह' तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो, फिर तुम बूढ़े हो जाते हो, और तुममें से कुछ को पहले मौत आ जाती है और तुम एक निश्चित समय तक पहुँच जाते हो, और ताकि तुम समझो। (68) 'वही' ज़िन्दगी देता है, और 'वही' मौत देता है, जब 'वह' किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस हुक्म देता है, कि 'हो जा' तो वह हो जाता है। (69) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, यह कहाँ भटके जा रहे हैं! (70) जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा। (71) जबकि तौंक उनके गर्दनों में होंगी और ज़ंजीरों से उनको घसीटा जाएगा; (72) खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिया जाएगा। (73) फिर उनसे कहा जाएगा, "वे कहां हैं जिनको तुम साझीदार ठहराते थे; (74) अल्लाह को छोड़ कर," वे कहेंगे, "गुम हो गये, वे हमसे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते थे," इसी तरह अल्लाह काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को भटकता छोड़ देता है।

आयत नं० 57 से 74 तक की व्याख्या

57 لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

यहाँ मौत के बाद उठाये जाने के इन्कार करने वालों को रद्द किया जा रहा है कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इन्सानों को पहली बार और दोबारा पैदा करने से ज़्यादा बड़ी बात है, तो जब अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बिना पिछले नमूने और बग़ैर मौजूदा माद्दह (Material) के पैदा किया, तो वह यक़ीनन इन्सानों को दूसरी बार पैदा करने पर क़ादिर है, लेकिन अक्सर लोग इस दलील पर ध्यान नहीं देते हैं।

जैसे बहुत से कुफ़्फ़ारे अ़रब जो मानते थे कि आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ने ही पैदा किया है, लेकिन इन्सानों को दोबारा पैदा किये जाने का इन्कार करते थे।

58 وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِیْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ۝

अल्लाह तआ़ला ने ईमान व कुफ़्र और मोमिन व काफ़िर का अन्तर बयान करते हुए फ़रमाया कि जिस तरह़ आँखों वाला और अन्धा बराबर नहीं हो सकते, दोनों के दर्मियान बड़ा फ़र्क़ है, उसी तरह़ मोमिनीन और अहले कुफ़्र बराबर नहीं हो सकते हैं।

मोमिन अपने अल्लाह की निशानियों और दलायल में ग़ौर करता है और अल्लाह की तौह़ीद व पालनहार का इक़रार कर लेता है और उस पर ईमान ले आता है और काफ़िर इस से मह़रूम रहता है, इसलिए उस के सामने हज़ार निशानियाँ गुज़र जाएँ और हज़ार दलायल पेश कर दिये जाएँ उन से उसे कोइ फ़ायदा नहीं पहुँचता।

59 إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

क़ियामत के आने में कोई शुब्हा नहीं है, इसलिए लोगों! दुनिया में इस यक़ीन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो कि तुम दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे और तुम्हारे आमाल ख़ैर व शर का तुम्हें बदला चुकाया जाएगा, लेकिन अहले कुफ़्र अपनी कम अक़्ली और नादानी की वजह से इस हक़ीक़त को समझ नहीं पाते।

60 وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝

जब यह बात साबित हो गई कि अल्लाह तआला ही सारे जहान का 'रब' है, तो उस ने अपने बन्दों की ख़ैर ख़्वाही के लिए अपने रसूल (सल्ल०) की ज़बानी यह तअ़लीम दी कि मेरे बन्दो! तुम सब सिर्फ़ मुझे पुकारो, मैं ही तुम्हारी पुकार का जवाब दूँगा और तुम्हारी दुआएँ क़ुबूल करूँगा, इसलिए तुम सब मेरे बन्दे हो और मैं ही तुम्हारा रब हूँ।

हज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि दुआ ही तो अस्ल अ़िबादत है, फिर यही आयत तिलावत फ़रमाई। **(तिर्मिज़ी)**

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मज़लूम की दुआ से बचो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो क्योंकि मज़लूम की दुआ और अल्लाह के दर्मियान कोई रुकावट नहीं है।" **(अह़मद)**

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि "नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब कोई मुसलमान दुआ करता है जिस में गुनाह या क़तअ़ रह़मी की बात न हो तो अल्लाह तआ़ला तीन बातों में से एक उसे ज़रूर अ़ता फ़रमाता है-

(1) या तो दुआ के मुताबिक़ उस की ख़्वाहिश पूरी कर दी जाती है।
(2) या उसकी दुआ आख़िरत में बदला लिख दिया जाता है।
(3) या दुआ के बराबर उस से कोई मुसीबत टाल दी जाती है।

सहाबा-ए-किराम ने (यह सुन कर) अ़र्ज़ किया तब तो हम कसरत से दुआ करेंगे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह के ख़ज़ाने बहुत ज़्यादा हैं।" **(अह़मद)**

'मुस्नद अह़मद' में हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरवी है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह को नहीं पुकारता, अल्लाह उस से ग़ज़बनाक हो जाता है"। एक दूसरी रिवायत है कि "जो अल्लाह से नहीं माँगता, अल्लाह उस से नाराज़ हो जाता है।"

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया जो लोग घमण्ड व ग़ुरूर की वजह से मेरी अ़िबादत नहीं करते और मुझे पुकारते नहीं हैं, वह निहायत ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ जहन्नम में डाल दिये जाएँगे यानी ऐसा सिर्फ़ अहले कुफ़्र ही कर सकते हैं। अहले ईमान तो अपने अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं और हाथों को फैला कर अपने गुनाहों की माफ़ी और दुनिया व आख़िरत की भलाई माँगते हैं।

61 اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ

النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपनी बाज़ मख़्लूक़ात और उन में अपने अधिकार का ज़िक्र कर के इन्सानों को दअ़वते फ़िक्र दी है कि इन मख़्लूक़ात में ग़ौर कर के उसे पहचानें, उस पर ईमान लाएँ और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करें और उस के सिवा झूठे मअ़बूदों का इन्कार कर दें।

फ़रमाया कि वह अल्लाह है जिस ने रात बनाई है, ताकि तुम रोज़ी की तलाश के लिए ह़रकत व अ़मल को छोड़कर नींद की गोद में चले जाओ और राह़त व सुकून ह़ासिल करो और उस ने दिन को रौशन बनाया है, ताकि तुम चल फिर सको और रोज़ी की तलाश और ज़िन्दगी की दूसरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए चल फिर सको।

अल्लाह की नेअ़मतें बेशुमार हैं जिन का कोई अह़ाता (घेराव) नहीं कर सकता, लेकिन जाहिल व नादान और काफ़िर को इन नेअ़मतों के स्वीकार करने और उन पर अल्लाह का शुक्र बजा लाने की तौफ़ीक़ नहीं होती है।

62 ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपना मज़ीद तआ़रुफ़ (Introduction) कराते हुए फ़रमाया कि जिस अल्लाह ने रात और दिन बनाये हैं वही तुम्हारा रब है, वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है, उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है। फिर तुम कैसे उसे छोड़कर और उस से मुँह मोड़ कर मूर्तियों के सामने सज्दः करते हो और उन की अ़िबादत करते हो।

63-65 كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

आयत नं० (63) में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कहा गया है कि जिस तरह़ तुम लोग दलायल की कसरत के बावजूद अल्लाह पर ईमान और उस की वह़दानियत के इक़्रार से मुँह मोड़ रहे हो, हर ज़माने में अल्लाह की आयतों का इन्कार करने वालों का यही तरीक़ा रहा है।

इस आयते करीमा में भी अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को दअ़वते फ़िक्र दी है, ताकि वह अपने ख़ालिक़ व राज़िक़ को पहचानें, उस पर ईमान लाएँ और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करें इसलिए कि दुनिया व आख़िरत दोनों जहाँ में इन्सानों की भलाई इसी पर (Depend) है।

फ़रमाया कि वह अल्लाह है जिस ने ज़मीन को ठहरी हुई बनाया है, ताकि तुम उस पर ज़िन्दगी गुज़ार सको, चल फिर सको और अपनी ज़रुरियाते ज़िन्दगी पूरी कर सको और जिस ने आसमानों को मज़बूत बनाया, जो न कभी फटता है और न उस का कोई ह़िस्सा टूट कर इन्सानों के सरों पर गिरता है और जिस ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के गर्भ में अच्छी शक्ल व सूरत में बनाया यानी हर अंग को मुनासिब जगह पर रखा, ताकि तुम उन से फ़ायदा उठा सको और अपने ख़ालिक़ के कमाले क़ुद्रत और कमाले ह़िक्मत

का एतिराफ़ कर सको और जिस ने तुम्हें लज़ीज़ खाने और पीने की नेअ़मतें दी, ताकि तुम उस का शुक्र बजा लाओ।

जिस अल्लाह ने यह सब कुछ पैदा किया वही तुम्हारा रब है, उस के सिवा कोई भी पालनहार का दावेदार नहीं है। वह हमेशा से ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा। उस के सिवा हर चीज़ फ़ना के घाट उतार दी जाएगी, उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है, इसलिए लोगों! सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करो, अ़िबादत में उस के साथ किसी को शरीक न बनाओ।

तमाम तअ़रीफ़ें उसी रब्बुल् आ़लमीन के लिए हैं जो तमाम मख़्लूक़ात का मालिक है, उन मूर्तियों के लिए नहीं जिन के पास कुछ भी नहीं है और न ही किसी नफ़ा या नुक़्सान की क़ुद्रत रखते है।

66 قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि वह अपनी क़ौम से कह दे कि मैं उन मूर्तियों की अ़िबादत और उन्हें पुकारने से पूरे तौर पर रोक दिया गया हूँ जिन की तुम लोग अ़िबादत करते हो और जिन्हें पुकारते हो। मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले दलायल और स्पष्ट दलीलें आ गई हैं।

अ़िबादत के लायक़ सिर्फ़ उसी की ज़ात है और ग़ैरों की पूजा ग़लत और बड़ा शिर्क है और मुझे हुक्म दिया गया है कि अपनी गर्दन रब्बुल् आ़लमीन के सामने झुकाये रखूँ, उसी के हुक्मों की पैरवी करुँ और अपना हर मामला उसी के सुपुर्द कर दूँ।

67 هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا
شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

ऐ इन्सानों! वही ज़ात बरह़क़ है जिस की सिफ़ात व कमालात का ऊपर ज़िक्र आया है, उसी ख़ालिक़ व मालिके कुल ने तुम सब को पहले मिट्टी से पैदा किया (यानी तुम्हारी अस्ल मिट्टी है या यह कि तुम्हारे बाप आदम को मिट्टी से पैदा किया) फिर तुम्हारे रब ने नुत्फ़े (वीर्य) को रहम मादर (माँ के गर्भ) तक पहुँचाया, फिर जमा हुआ ख़ून बनाया, फिर बच्चे की शक्ल में तुम्हें तुम्हारी माँ के बतन (गर्भ) से बाहर निकाला यानी मुख़्तलिफ़ तरीक़े से गुज़ार कर उन्हें एक नन्हे-मुन्ने बच्चे की शक्ल में दुनिया में भेजा, फिर तुम्हारी परवरिश की यहाँ तक कि तुम भरपूर जवान बन गये और फिर तुम बूढ़े हो जाते हो और तुम में से बाज़ रह़म मादर (माँ के गर्भ) से मुर्दा हो जाता है, कोई कम उ़म्री ही में वफ़ात पा जाता है और कोई जवानी में और कोई जवानी से पहले।

ऐ इन्सानों! तुम्हें इन सारे दौर से अल्लाह के सिवा कौन गुज़ारता है, तुम्हें इन बातों पर ग़ौर व फ़िक्र करना चाहिए ताकि तुम रब्बुल् आ़लमीन की क़ुद्रत व अ़ज़्मत का एतिराफ़ (Accept) कर सको और मरने के बाद की ज़िन्दगी पर तुम्हारा ईमान व यक़ीन मज़बूत हो जाए।

ऐ लोगों! वही मअ़बूद बरह़क़ ह़क़ीर वीर्य की बूँद को ज़िन्दगी देता है और वही इन्सानों को उ़म्र पूरी हो जाने के बाद उन्हें मौत देता है, उसे कभी भी मौत नहीं आएगी और उस के सिवा तमाम जिन्न व इन्स

मर जाएँगे और वह उपास्य जब किसी बात का फ़ैसला करता है तो कलिमा 'कुन' के ज़रिये उसे वजूद में ले आता है।

68-74 هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ
فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝
إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ۝ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ
لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ
كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۝

यहाँ से उन मुश्रिकीन के ह़ालात पर रौशनी डाली जा रही है जो अपने झूठे और ग़लत दलायल के ज़रिये कुर्आन करीम की आयात को रद्द करते थे और उन में शक व शुब्हा पैदा करते थे। इस जुर्म अ़ज़ीम की एक फ़ौरी सज़ा उन्हें यह दी गई कि ज़ाहिर व साफ़ दलायल के बावजूद क़ुबूले ह़क़ की तौफ़ीक़ उन से छीन ली गई और क़ियामत के दिन उन की गर्दनों में आग का तौक़ और उन के पांव में बेड़ियाँ डाल दी जाएँगी और उन्हें सख़्त खौलता हुआ पानी दिया जाएगा और घसीटा जाएगा और उन के जिस्मों में आग लगा दी जाएगी। जैसे- लकड़ी में आग लगा दी जाती है और फिर उन से नाराज़गी के तौर पर कहा जाएगा कि कहाँ हैं वह मअ़बूद (उपास्य) जिन की तुम अल्लाह को छोड़कर उनकी अ़िबादत करते थे? तो वह जवाब देंगे कि वह तो आज हम से ग़ायब हो गये हैं, कहीं भी नज़र नहीं आ रहे हैं।

एक दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि वह तो हमारे किसी काम के नहीं रहे, उन से हमारी मुसीबतों का कोई मतलब नहीं। फिर ह़ैरत व बेचैनी में अपनी अ़क़्ल खो बैठेंगे और कहने लगें कि हम ने तो दुनिया में किसी की अ़िबादत नहीं की थी।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अहले कुफ़्र को इसी तरह़ अपने आप से और अपनी रह़मत से दूर कर देता है और ईमान व यक़ीन के लिए गम्भीर बीमारी शिर्क में मुब्तिला (Involve) कर देता है जो उसे जहन्नम पहुँचा देती है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि०) कहते हैं कि "जिसके दिल में राई बराबर भी घमण्ड होगा वह जन्नत में दाख़िल न होगा।" **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "किब्रयाई (बड़ाई) मेरी चादर है और अ़ज़्मत मेरा एज़ार है जिस ने इसे खींचने की कोशिश की मैं उसे जहन्नम में डाल दूँगा।"

(अबूदाऊद)

आयत नं० 75 से 85 तक

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ
اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً
وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ
وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ
اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۗ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(75) यह इसका बदला है कि तुम ज़मीन में नाहक़ खुश हुआ करते थे और उसकी (सज़ा है) कि इत्राया करते थे; (76) दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़े में, हमेशा उसी में रहोगे, ''तो कितना ही बुरा ठिकाना है! घमंड करने वालों का,'' (77) तो सब्र करो, अल्लाह का वादा सच्चा है, या तो हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा जिसका वादा 'हम' उनसे कर रहे हैं, दिखा दें, या तुम्हें मौत दें, तो उनको लौट कर आना तो 'हमारी' ही ओर है। (78) और 'हमने' आप से पहले रसूल भेजे, जिनमें से कुछ के हालात 'हम' आप को सुना चुके हैं, और कुछ के हालात नहीं सुनाए; और किसी रसूल के बस की यह बात न थी, कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई 'मोजिज़ा' (चमत्कार) ले आता; जब अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, तो हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और नाहक़ पर चलने वाले घाटे में पड़ गये। (79) अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो, (80) और उनमें तुम्हारे लिए (और भी) फ़ायदे हैं, और ताकि तुम उनके ज़रिये उस ज़रूरत को पूरा कर सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उन पर भी, और नौकावों पर तुम सवार होते हो। (81) और 'वह' तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इन्कार करोगे। (82) फिर क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका क्या अंजाम हुआ, जो इनसे पहले गुज़रे हैं, वे इनसे संख्या में ज़्यादा थे और शक्ति में भी, और ज़मीन पर छोड़े हुए निशानों की दृष्टि से बढ़कर थे, तो जो कुछ वे करते थे वह उनके कुछ काम न आया। (83) जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, तो जो इल्म उनके पास था वे उसी पर खुश होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिनका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (84) फिर जब उन्होंने 'हमारा' अ़ज़ाब देखा, तो कहने लगे, ''हम ईमान लाए अल्लाह पर, 'जो' अकेला है और उनका इन्कार करते हैं, जिनको हम साझी ठहराते थे।'' (85) मगर उनका ईमान लाना कुछ भी फ़ायदा पहुँचा नहीं सकता था, जबकि उन्होंने 'हमारे' अ़ज़ाब को देख लिया, यही अल्लाह की सुन्नत (नियम) है, जो उसके बन्दों में पहले से चली आई और उस समय इन्कार करने वाले घाटे में पड़ कर रहे।

आयत नं० 75 से 85 तक की व्याख्या

75 ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝

फ़रिश्ते आग़ के अ़ज़ाब और अल्लाह की रह़मत से दूरी की वजह बयान करते हुए कहेंगे कि तुम्हारा यह अन्जाम इसलिए हुआ है कि तुम अल्लाह की नाफ़रमानी, उस के रसूल और उस के किताब की मुख़ालिफ़त (विरोध) कर के ख़ूब ख़ुश होते थे और मारे ख़ुशी के आपे से बाहर निकल जाते थे, तो आज तुम जहन्नम के दरवाज़ों से गुज़र कर उस की आख़िरी खाई में पहुँच जाओ, जो ईमान बिल्लाह और तौह़ीद बारी तआ़ला का इन्कार करने वालों का बद्तरीन ठिकाना है।

76 اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝

मक्की ज़िन्दग़ी में सह़ाबा-ए-किराम कुफ़्फ़ारे कुरैश की तक्लीफ़ों से तंग आकर दिल में सोचते और कभी ज़बान पर यह बात लाते कि नामालूम अल्लाह की मदद कब आएगी तो अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) से फ़रमाया कि अल्लाह का वादा बरह़क़ है कि कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिले में वह आप की मदद ज़रूर करेगा और काफ़िरों के मुक़ाबिले में दीने इस्लाम को ग़ालिब कर के रहेगा या तो आप की ज़िन्दग़ी में ही वादा के मुताबिक़ कोई दुनियावी अ़ज़ाब उन पर नाज़िल होगा और अगर इस से पहले ही आप वफ़ात पा गये तो उन्हें हमारे पास ही लौट कर आना है, उस वक़्त हम उन्हें जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) करेंगे और आप को इ़ज़्ज़त व इकराम के घर यानी जन्नत में आ़ला मक़ाम अ़ता करेंगे और मोमिनों को भी उन के आ़माल के मुताबिक़ दर्जात देंगे।

77-78 فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَاۤءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को मज़ीद तसल्ली देते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने आप से पहले बहुत से अम्बिया भेजे, उन में से बाज़ के वाक़िआ़त हम ने कुर्आन करीम में आप के लिए बयान कर दिये हैं और बाज़ के बारे में हम ने आप को कुछ भी नहीं बताया है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि जिन के नाम नहीं बताये गये उन की तअ़दाद अम्बिया से कई गुना ज़्यादा है, जिन के नाम कुर्आन में ज़िक्र किये गये हैं। कुर्आन में सिर्फ़ चन्द अम्बिया के नाम आये हैं।

उन रसूलों को यह अख़्तियार ह़ासिल नहीं था कि वह अपनी क़ौमों के मुतालबे (माँग) के मुताबिक़ अपनी मर्ज़ी से मोअ़जिज़ात (चमत्कार) पेश करते, उन्हें जब अल्लाह का हुक्म होता था जब ही अल्लाह की कुद्रत से किसी मोअ़जिज़े (चमत्कार) का इज़्हार करते थे और जब किसी काफ़िर व सरकश क़ौम की हलाकत का अल्लाह तआ़ला फ़ैसला कर देता था, तो वह अपने रसूलों और उस के मानने वाले मोमिनों

को बचा लेता था और मुश्रिकों को हलाक कर देता था।

79 اللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ۝

आयात नं० (61/62/63/64) की तरह यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए अपनी बाज़ नेअ़मतों का ज़िक्र कर के उन्हें दअ़वते फ़िक्र दी है, ताकि वह अपने ख़ालिक़ व राज़िक़ को पहचानें, उस पर ईमान लाएँ और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करें।

फ़रमाया कि अल्लाह ने ही तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किये हैं, जिन में कुछ पर तुम सवार होते हो यानी ऊँट और कुछ के गोश्त खाते हो जैसे- गाय, बकरी और भेड़ और उन में दूसरे फ़ायदे भी हैं यानी उन से ऊन, बाल और चमड़ा ह़ासिल करते हो।

ऊँट में एक बड़ा फ़ायदा यह भी है कि उन पर अपना सामाने तिजारत लादकर एक शहर से दूसरे शहर जाते हो और उस के ज़रिये अपना रेगिस्तानी रास्ता तय करते हो और कश्ती के ज़रिये समुद्री रास्ता। यह सब अल्लाह की निशानियाँ हैं जो उस की कुद्रत और बन्दों के लिए उस की अ़ज़ीम रह़मत पर दलालत करती हैं।

80-84 وَلَكُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَیْهَا حَاجَةً فِیْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَیْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ۝ وَ یُرِیْكُمْ
اٰیٰتِهٖ ۖۗ فَاَیَّ اٰیٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ۝ اَفَلَمْ یَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَ اَشَدَّ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِی الْاَرْضِ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ۝
فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ۝
فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَ كَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِیْنَ۝

कुफ़्फ़ारे कुरैश को कुफ़्र व शिर्क के अंधेरों से निकालने के लिए अल्लाह तआ़ला ने कुर्आने करीम की बहुत सी सूरतों में पिछले ज़माने की काफ़िर क़ौमों के बुरे अन्जाम को बयान किया हैं, ताकि उन से नसीह़त ह़ासिल करें और अपने कुफ़्र व शिर्क से तौबः करके इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ।

फ़रमाया कि वह क़ौमें कुफ़्फ़ारे कुरैश से तअ़दाद में ज़्यादा थीं, जिस्मानी एतिबार से उन से ज़्यादा क़वी (Strong) और माली एतिबार से उन से बहुत अच्छी ह़ालत में थीं, उन्होंने अपने शहरों में बिल्डिगें बनाईं, फ़ैक्ट्रियाँ क़ायम कीं और अर्थव्यवस्था में ख़ूब तरक़्क़ी की, लेकिन जब अल्लाह का अ़ज़ाब आया तो उसे कोई न टाल सका। इसलिए कि जब अल्लाह के अम्बिया उन के पास खुली निशानियाँ लेकर आये तो उन्होंने उस पर कोई तवज्जोह नहीं दी और खुद अपने इ़ल्म और अपनी समझ को नबियों पर भारी माना।

‘मुजाहिद’ कहते हैं उन्होंने कहा कि हम उन नुबूव्वत का दावा करने वालों से ज़्यादा बेहतर जानते हैं कि न हम दोबारा पैदा किये जाएँगे और न हमें अ़ज़ाब दिया जाएगा।

जब अ़ज़ाबे इलाही ने उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया और बच निकलने की कोई सूरत बाक़ी न रही, तो अपनी तौबः का एलान करने लगे और कहने लगे कि हम एक अल्लाह पर ईमान ले आये और उन

तमाम शैतानी ताक़तों का इन्कार करते हैं जिन्हें हम अल्लाह का शरीक ठहराते थे, लेकिन वह तौबः उन के काम न आई और वह ईमान उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा न सका।

जैसा कि फ़िरऔ़न के साथ हुआ कि जब उस ने मौत को अपनी आँखों से देख लिया तो पुकार उठा कि मैं ईमान ले आया कि उस अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, जिस पर बनी इस्राईल के लोग ईमान ले आये हैं तो अल्लाह तआ़ला ने उस की तौबः क़ुबूल नहीं की और कहा कि अब कोई फ़ायदा नहीं होगा, क्योंकि तुम अब तक नाफ़रमान रहे हो और ज़मीन में फ़साद फैलाते रहे।

85 فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ۝

इसीलिए आयत नं० (85) के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर उस क़ौम के बारे में अल्लाह का यही फ़ैसला रहा है जिस ने अ़ज़ाब देख कर तौबः की यानी उस की तौबः क़ुबूल नहीं की गई और उसे हलाक कर दिया गया।

ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबः उस वक़्त तक क़ुबूल करते हैं जब तक जाँकनी यानी मौत का बिल्कुल आख़िरी वक़्त नहीं आ जाता"। **(तिर्मिज़ी)**

(भाग-41)

सूर-ए-ह़ामीम सज्दः

(सूरः नं. 41)

तफ़्सीर हामीम सज्दः

नाम– यह हुरूफ़ मक़त्तआ़त 'हामीम' आयत नं० (38) से लिया गया है, जिस की तिलावत के बाद नबी करीम (सल्ल०) ने ख़ाना-ए-कअ़बः में 'उ़त्बा बिन रबीअ़' की मौजूदगी में सज्दः किया था।

नाज़िल होने का समय–

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक मक्की है। इब्ने अबी शैबा, अ़ब्द बिन ह़मीद, अबू यअ़ला, ह़ाकिम, इब्ने मरदूविया, अबू नईम, बैहक़ी और इब्ने अ़साकिर ने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत की है और ह़ाकिम व ज़हबी ने इसे सह़ीह़ कहा है कि एक दिन कुरैश के लोग जमा हुए और आपस में राय की, कि उन में जो शख़्स जादू, कहानत और शेअ़र सब से ज़्यादा जानता हो, उसे मुह़म्मद (सल्ल०) के पास भेजा जाए जिस ने हमारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ पैदा कर दिया है और हमारे धर्म की तौहीन की है, ताकि उस से बात करे और देखे कि वह क्या जवाब देता है।

सब की राय हुई कि इस काम के लिए सब से मुनासिब आदमी "उ़त्बा बिन रबीअ़" है, चुनांचे वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास गया और कहा कि तुम बेहतर हो या अ़ब्दुल्लाह (तुम्हारे बाप) तुम बेहतर हो या अ़ब्दुल मुत्तलिब (तुम्हारे दादा) अगर तुम समझते हो कि यह लोग बेहतर थे तो वह उन्हीं मअ़बूदों (देवों) की पूजा करते थे जिन की तुम ने बुराई की है, अगर तुम समझते हो कि तुम बेहतर हो तो बात करो, ताकि हम सुनें।

अल्लाह की क़सम! तुम से ज़्यादा हम ने किसी को अपनी क़ौम के लिए नुक़्सानदेह नहीं पाया है, तुम ने हमारे दर्मियान फूट पैदा कर दी, हमारे दीन में ऐ़ब निकाला और तमाम अ़रबों में हमारी बेइ़ज़्ज़ती कराई। तमाम अ़रबों में मशहूर हो गया कि कुरैश में एक जादूगर है, कुरैश में एक काहिन है। अल्लाह की क़सम! अब तुम उसी का इन्तिज़ार कर रहे हो कि हम एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवारें लेकर खड़े हो जाएँ। अगर तुम माल चाहते हो तो बताओ हम लोग तुम्हारे लिए इतना माल इकट्ठा कर दें कि तुम हम में सब से ज़्यादा मालदार बन जाओ और अगर शादी करना चाहते हो तो कुरैश की जिन औ़रतों को चाहो पसन्द कर लो, हम तुम्हारी शादियाँ करा दें।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूछा, क्या तुम्हारी बात पूरी हो गई? उस ने कहा हाँ, तो आप (सल्ल०) ने 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' कहा और ह़ामीम की तिलावत शुरु कर दी और जब फَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ तक पहुँचे तो 'उ़त्बा' ने कहा, बस करो, क्या तुम्हारे पास इस के सिवा और कुछ नहीं है?

आप ने जवाब दिया नहीं, तो वह उठ कर कुरैश वालों के पास गया और कहा कि मैंने एक ऐसा कलाम सुना है जिसे मेरे कानों ने कभी नहीं सुना था और मुझ से उस का कोई जवाब नहीं बन पड़ा।

'मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़' ने अपनी किताब 'अल् यस्रह' में इस वाक़िये की जो तफ़्सील बयान की है उस से यह पता चलता है कि यह सूरः 'ह़म्ज़ह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब' के इस्लाम लाने के बाद नाज़िल हुई थी, जब कि लोग तेज़ी से इस्लाम में दाख़िल होने लगे थे। **(तफ़्सीर इब्ने कसीर ह़ामीम सज्दः)**

आयत नं० 1 से 18 तक

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا
عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾
الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ
اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ
فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ
فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ
كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۗ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۗ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ
اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۗ قَالُوْا
لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ
مِنَّا قُوَّةً ۗ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ
نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ
فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾

अनुवाद–

(1) ह़ामीम् (2) यह (किताब) रह़मान और रह़ीम की ओर से नाज़िल हुई है; (3) एक ऐसी किताब, जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं- अ़रबी क़ुर्आन- उन लागों के लिए है, जो जानना चाहते हों; (4) जो खुशख़बरी देने वाली, और सचेत करने वाली, मगर उनमें से अक्सर लोगों ने मुँह फेरा, तो वे सुनते ही नहीं; (5) और कहते हैं, ''जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो हमारे दिल उसकी ओर से पर्दों में हैं, और हमारे कान बहरे हैं, और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है; तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं''(6) कह दीजिए, मैं तो तुम्हारी ही तरह का एक बशर (मनुष्य) हूँ, मेरी ओर यह वह़्य (प्रकाशना) की जाती है, कि तुम्हारा इलाह (उपास्य) एक ही इलाह है, तो तुम सीधे 'उसी' का रूख करो, और 'उसी' से माफ़ी चाहो।'' और तबाही हो साझी ठहराने वालों के लिए (7) जो ज़कात नहीं देते, और आख़िरत का इन्कार करते हैं। (8) जो लोग ईमान लाए और भले काम किये उनके लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (9) कह दीजिए, ''क्या तुम 'उसका' इन्कार करते हो, 'जिसने' ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) तुम 'उसके' बराबर ठहराते हो? 'वही' तो सारे संसार का रब है; (10) और 'उसीने' (ज़मीन में) उसके ऊपर पहाड़ बनाए और उसमें बरकत रखी, और उसमें उसकी गिज़ा के सामान रखे; यह चार दिनों में हुआ (और तमाम) तलब (इच्छा) रखने वालों के लिए बराबर''। (11) फिर 'उसने' आसमान की ओर रूख किया, और वह धुआँ के रूप में था तो, 'उसने' उससे और ज़मीन से कहा,

''आओ, (हुक्म मानो) रज़ामन्दी के साथ या बिना रज़ामन्दी के,'' उन्होंने कहा, ''हम रज़ामन्दी के साथ आते हैं।'' (12) तो 'उसने' सात आसमान बना दिये- दो दिनों में- और हर आसमान में उससे सम्बन्धित हुक्म की वह्य (प्रकाशन) कर दी; और दुनिया के आसमान को 'हमने' दीपों से सजाया और उसको सुरक्षित कर दिया; यह उस ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ख़बर रखने वाले का तय किया हुआ है। (13) फिर अगर ये मुँह फेरें, तो कह दीजिए, ''मैं तुम्हें उसी तरह कड़का देने वाले (अज़ाब) से डराता हूँ जिस तरह का कड़ाका देने वाला (अ़ज़ाब आया) आ़द और समूद पर'' (14) जब उनके पास रसूल उनके आगे और उनके पीछे से आए, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो।'' तो उन्होंने कहा, ''अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, अतः जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम इसे नहीं मानते।'' (15) रहे आ़द, तो उन्होंने नाहक़ धरती में घमंड किया और कहा, ''कौन हमसे शक्ति में बढ़कर है?'' क्या उन्होंने नहीं देखा! कि अल्लाह, 'जिसने' उन्हें पैदा किया, 'वह' उनसे शक्ति में बढ़कर है? और वे हमारी आयतों का इन्कार ही करते रहे; (16) तो 'हमने' उन पर मन्हूस दिनों में तेज़ हवा भेजी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत के अ़ज़ाब का मज़ा चखा दें, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बढ़कर रूसवा करने वाला है, और उनको कोई मदद भी न मिल सकेगी। (17) और रहे समूद तो, 'हमने' उनके सामने सीधी राह दिखाई, किन्तु उन्होंने सीधी राह छोड़कर अन्धा रहना पसंद किया, तो जो कुछ वे कमाई कर रहे थे, उसके बदले में उनको कड़क के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा। (18) और 'हमने' उनको बचा लिया जो ईमान लाए, और डर रखते रहे।

आयत नं० 1 से 18 तक की व्याख्या

1

حٰمٓ ۝

ह़ामीम हुरूफ़ मक़त्तआ़त हैं और अल्लाह को ही मालूम है कि इन का मतलब क्या है। तफ़्सीर सूरतुल् मोमिन के शुरु में हुरूफ़ मक़त्तआ़त के बारे में जो कुछ लिखा गया है उसे देखा जा सकता है।

2-5

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ
فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْ
بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝

क़ुर्आन अ़रबी में है

ह़ामीम, यह हुरूफ़ मक़त्तआत में से है। इस का मतलब अल्लाह तआ़ला ही को मालूम है। इसके बाद दो आयतों में क़ुर्आन मजीद की सिफ़ात बयान फ़रमाई गई है।

पहली यह है कि यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल (अवतरित) हुआ है। जो रह़मान है और रह़ीम है यानी बहुत बड़ा मेहरबान, बहुत ज़्यादा रह़्म फ़रमाने वाला है। उसकी रह़मत का तक़ाज़ा हुआ कि अपने बन्दों की हिदायत के लिए किताब नाज़िल (अवतरित) फ़रमाये।

दूसरा यह कि क़ुर्आन ऐसी किताब है जिस की आयात मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) हैं यानी ख़ूब

साफ़-साफ़ बयान की गई हैं।

तीसरा यह फ़रमाया कि यह क़ुर्आन की आयात हैं जो अ़रबी में है, इस के पहले मुख़ातब (सम्बोधक) अहले अ़रब हैं। इसका समझना उनके लिए आसान है और साहित्य के एतिबार से चूंकि बहुत आ़ला है इसलिए बतौर मोअ़जिज़ा (चमत्कार) अहले अ़रब पर इस के ज़रिये हुज्जत क़ायम हो चुकी है। अब जो शख़्स ईमान न लाएगा अपना बुरा करेगा।

यूँ तो क़ुर्आन सब ही को हक़ की दअ़वत देता है और सब ही पर इस का मानना और इस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है, लेकिन अहले इ़ल्म ही इस से फ़ायदा उठाते हैं इसलिए لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ फ़रमाया।

चौथा यह بَشِيرًا وَنَذِيرًا फ़रमाया कि क़ुर्आन अपने मानने वालों को बशारत (ख़ुशख़बरी) देने वाला है और मुन्किरीन को डराने वाला है। इस के बाद लोगों के इन्कार का ज़िक्र फ़रमाया बावजूद इसके कि क़ुर्आन ख़ूब अच्छी तरह़ वाज़ेह़ तौर पर बयान फ़रमाता है कि बशीर भी है और नज़ीर भी, फिर भी अक्सर लोग इसकी तरफ़ से यानी मुँह फेरते हैं और सुनी अन्सुनी कर देते हैं यानी जैसे उन्होंने सुना ही नहीं। इसी को फ़रमाया فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

और न सिर्फ़ यह कि ईमान न लाए और जो कुछ सुना था उसकी तरफ़ मुतवज्जेह न हुए बल्कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ख़िताब कर के यूँ कहने लगे कि हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं और हमारे कानों में डाट लगी हुई है, तुम्हारी दअ़वत न हमारे कान सुनने को तैयार हैं और न हमारे दिलों को इस का क़ुबूल करना गवारा है और मज़ीद यूँ कहा कि तुम अगरचे जिस्मानी तौर पर क़रीब हो, लेकिन ह़क़ीक़त में हमारे और तुम्हारे दर्मियान बहुत दूरी है और पर्दा है जो कुछ कहो हम सुनने और मानने वाले नहीं उन लोगों ने यह भी कहा فَاعْمَلْ إِنَّنَا عَامِلُونَ

कि आप अपना अ़मल करते रहें हम अपने दीन के मुताबिक़ अ़मल करते रहेंगे।

इस में यह भी दाख़िल है कि तुम्हारी काट करेंगे यह कहकर दअ़वते ह़क़ सुनने और क़ुबूल करने से बिल्कुल ही इन्कारी हो गये। उन लोगों ने जो यह कहा कि हमारे दिलों पर पर्दे हैं और कानों में डांट है चूंकि इस से कुफ़्र पर इस्रार था, इसीलिए وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا इसके ख़िलाफ़ नहीं है जिस में الْأَكِنَّةِ عَلَى الْقُلُوبِ की निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ की गई है।

6-8 قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

आप फ़रमा दीजिए मैं तुम्हारे ही जैसा बशर (इन्सान) हूँ

क़ुर्आन के मुख़ातिबीन जो यह कहते थे कि हम तुम्हें कैसे अल्लाह का नबी मानें तुम तो हमारी ही तरह़ के आदमी हो। इस का जवाब दे दिया कि मैं हूँ तो तुम्हारे ही जैसा आदमी, लेकिन मुझे अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसी फ़ज़ीलत और ख़ुसूसियत अ़ता फ़रमाई है जो तुम में नहीं है और वह यह कि मुझे अल्लाह

तआ़ला ने नुबूव्वत व रिसालत से नवाज़ा है, चूंकि मैं अल्लाह तआ़ला का पैग़म्बर (दूत) हूँ इसलिए मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला की बात पहुँचाता हूँ। तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही है यानी अल्लाह तआ़ला, जिस ने सब को पैदा फ़रमाया। अ़क़्ल का भी तक़ाज़ा है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ झुके और उस के हुक्मों को मानें और हर तरह़ की बेराही और टेढ़ेपन से दूर हो जाए।

तुम सीधी राह चलो, अल्लाह तआ़ला को एक मानो और सह़ीह़ तरीक़े पर उस का दीन अख़्तियार करो और यह न समझो कि हमारी बख़्शिश कैसे होगी, शिर्क और कुफ़्र है तो बहुत बड़ी बग़ावत लेकिन जब कोई काफ़िर और मुश्रिक तौबः कर ले यानी कुफ़्र और शिर्क को छोड़कर ईमान क़ुबूल कर ले तो पिछला सब कुछ माफ़ हो जाता है, लिहाज़ा तुम ईमान क़ुबूल कर लो और अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार कर लो।

इस के बाद मुश्रिकीन की हलाकत और बर्बादी बयान फ़रमाई وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ और बर्बादी है मुश्रिकों के लिए الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ और अदा नहीं करते (नमाज़ की तो क्या पाबन्दी करेंगे जो बड़ा काम है) वह तो माल ख़र्च नहीं कर सकते जो मामूली चीज़ है हाथ का मैल है, कन्जूसी उन पर मुसल्लत है وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ और वह आख़िरत के इन्कारी हैं।

बाज़ ह़ज़रात ने لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ का मशहूर माने नहीं लिया, शाब्दिक अर्थ लेकर इस का यह मतलब बताया है कि वह अपने नफ़्सों को शिर्क से पाक नहीं करते और ईमान से दूर होते हैं।

इस के बाद अहले ईमान का सवाब बताया إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये उन के लिए अज्र है जो कभी ख़त्म न होगा।

9-12

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ۝
ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا
طَائِعِينَ ۝ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ
الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

इन आयात में तौह़ीद की दअ़वत है और शिर्क की ख़राबी बयान फ़रमाई गई है। फिर आसमान व ज़मीन और उससे सम्बन्धित चीज़ों को बयान फ़रमाया गया है।

इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम उस ज़ाते पाक की तौह़ीद का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो दिन में पैदा फ़रमा दिया, इतनी बड़ी ज़मीन का वजूद समझदार और अ़क़्लमन्द इन्सान के लिए यह यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी है कि इस का पैदा फ़रमाने वाला एक मालिक है, उसकी तौह़ीद के क़ायल होने के बजाय तुम ने उस के लिए शरीक ठहरा दिये जिन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया और वह ख़ुद दूसरे के पैदा करने से वजूद में आये हैं, वह अपने पालनहार के बराबर साझीदार कैसे हो सकते हैं जिस ने उन को पैदा किया।

जिस ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया, वह सारे जहानों का मालिक और परवरदिग़ार है, तुम और तुम्हारे

बातिल मअ़बूद (उपास्य) उसी ख़ालिक़ की मख़्लूक़ और मम्लूक हैं।

ख़ालिक़-ए-क़ायनात ने सिर्फ़ ज़मीन ही को पैदा नहीं फ़रमाया, ज़मीन में तरह़-तरह़ की चीज़ें पैदा फ़रमाईं। देखो! उस ने ज़मीन के ऊपर भारी पहाड़ जमा दिये और ज़मीन में बरकत रख दी।

साहि़बे रुहुल् मआ़नी इर्शाद फ़रमाते हैं:-

قدر سُبحانهٗ ان يكثر خيرها بان يكثر فيها النباتات وانواع الحيوانات التى من جملتها الانسان

यानी अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में ख़ैर व बरकत रख दी और वह इस तरह़ से कि उस में तरह़-तरह़ के पेड़-पौधे और हैवानात पैदा फ़रमा दिये जानदार चीज़ों में इन्सान भी है।

ज़मीन में ग़िज़ाएँ भी रख दीं, जो इन्सानों और हैवानों के काम आती हैं। यह ग़िज़ाएँ ज़मीन से निकलती हैं। अल्लाह तआ़ला ने तरह़-तरह़ के फल मेवे, सब्ज़ियाँ और दूसरी खाने की चीज़ें पैदा फ़रमाईं और पहले से तय फ़रमा दिया कि कितनी-कितनी चीज़ें पैदा होंगी और कहाँ-कहाँ किस-किस इलाक़े में पाई जाएँगी और किस के हि़स्से में कितनी ख़ुराक आएगी।

दो दिन में ज़मीन व आसमान

فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ यह सब काम चार दिन में हुए यानी दो दिन में ज़मीन पैदा फ़रमाई और दो दिन में पहाड़ों की पैदाइश फ़रमाई और बरकत का रख देना और रोज़ियों का मुक़र्रर करना हुआ, चूंकि दूसरी आयात में आसमानों, ज़मीन और उनके दर्मियान चीज़ों की तख़्लीक़ (उत्पत्ति) छः दिन में बताई है इसलिए मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने इस तफ़्सीर को अपनाया है। दो दिन ज़मीन के पैदा फ़रमाने के, दो दिन दूसरी चीज़ों के और दो दिन आसमानों की पैदाइश के जिन का ज़िक्र आगे आएगा। इन्शा अल्लाह।

سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ यह पूरे चार दिन हैं। तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में बह़वाला ह़ाकिम और बैहक़ी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि यहूदी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और आसमान व ज़मीन की पैदाइश के बारे में सवाल किया, आप ने उन्हें जवाब दे दिया। फिर अल्लाह तआ़ला ने यह आयते नाज़िल फ़रमाई और इस के आख़िर में फ़रमाया سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ कि यह चार दिन हैं पूरे उन लोगों के जवाब में जो सवाल करने वाले हैं।

इस के बाद आसमानों की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाया ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ फिर आसमान की तरफ़ देखा जो उस वक़्त धुवां था यानी उस का माद्दह दुख़ान की सूरत में था। अल्लाह तआ़ला ने उसको पैदा फ़रमा दिया, ज़मीन और आसमान दोनों से फ़रमाया कि तुम दोनों को हमारे हुक्म के मुताबिक़ आना लाज़िम होगा, ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती से यानी हमारे हुक्म जो तुम दोनों में जारी होंगे उनके मुताबिक़ ही तुम्हें रहना लाज़िम होगा।

'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि طوعًا اَوكرْهًا का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत से जो तुम्हारे अन्दर तासीर होगी उसी के मुताबिक़ होगा तुम उसके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते और यह मक़्सद नहीं है उन्हें मानने न मानने का बल्कि अख़्तियार दे दिया। قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ आसमान और ज़मीन दोनों

ने अ़र्ज़ किया कि हम ख़ुशी के साथ फ़रमाँबरदारी के लिए ह़ाज़िर हैं।

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ (सो अल्लाह तआ़ला ने दो दिन में सात आसमान बना दिये وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا (और हर आसमान में उसके मुनासिब अपना हुक्म भेज दिया) यानी जिन फ़रिश्तों से जो काम लेना था वह उनको बता दिया।

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا (और हम ने क़रीब वाले आसमान को सितारों से ज़ीनत दी और उन सितारों को ह़िफ़ाज़त का ज़रिया बना दिया) शयातीन ऊपर की बातें सुनने के लिए ऊपर जाते हैं तो यह सितारे उन्हें मारते हैं। जैसा कि सूरः मुल्क की आयत नं० (5) وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ में बयान फ़रमाया है।

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (यह तक़्दीर है यानी तय किया हुआ है उस ज़ाते पाक की तरफ़ से जो अ़ज़ीज़ यानी ज़बरदस्त और अ़लीम है।

सूरः बक़रः की (**आयत नं० 29**) هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا और सूरः हामीम सज्दः की आयत और सूरः नाज़िआ़त की आयत وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا इन सब को मिलाने से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले ज़मीन का माद्दह (पदार्थ) बनाया और उसके ऊपर भारी पहाड़ रख दिये, फिर सात आसमान बना दिये जो बनाने से पहले धुवें के रूप में थे। उस के बाद ज़मीन के माद्दह को मौजूदह सूरत में फैला दिया।

क़ुरैश का इन्कार व हठधर्मी

'तफ़्सीर क़ुर्तुबी' पेज नं० 338 भाग 1 में लिखा है कि एक दिन क़ुरैश ने आपस में यूँ कहा जिन में अबू जेहल भी था कि मुह़म्मद (सल्ल०) का मामला हमारे लिए मुश्किल बन गया है। (स्पष्ट तौर पर हम इस के बारे में कोई फ़ैसला करने से मजबूर हैं) तुम ऐसे शख़्स को तलाश करो जो शायर भी हो, काहिन भी और जादूगर भी, ऐसा शख़्स उनके पास जाए, बातचीत कर के वापस आए और हमें स्पष्ट तौर पर बता दे कि उन के दावे की क्या ह़क़ीक़त है।

यह सुनकर 'उ़त्बा बिन रबीआ़' ने कहा कि अल्लाह की क़सम मैं शेअ़र और जादू तीनों से वाक़िफ़ हूँ। अगर इन तीनों में से कोई चीज़ होगी तो मुझे पता चल जाएगा, उन लोगों ने कहा कि अच्छा तुम मुह़म्मद (सल्ल०) के पास जाओ और बातचीत करो।

'उ़त्बा बिन रबीआ़' ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और कहने लगा कि ऐ मुह़म्मद! आप बेहतर हैं या 'कुसई बिन किलाब'? आप बेहतर हैं या हाशिम? आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल मुत्तलिब? आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल्लाह? (मतलब यह था कि यह आपके पूर्वज हैं आप इनके दीन को बातिल बताते हैं) आप हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) को बुरा कहते हैं और हमारे बाप दादाओं को गुमराह और नासमझ बताते हैं और हमारे दीन को बुरा कहते हैं। (इन सब बातों से आप का मक़्सद क्या है) अगर आप सरदार बनना चाहते हैं तो हम आप को सरदार बना लेते हैं। जब तक आप ज़िन्दा रहें और उस

के एलान के लिए झंडे खड़े कर देते हैं और अगर आप का मक़्सद यह है कि आपकी शादी हो जाए तो हम कुरैश की कई ख़ूबसूरत लड़कियों से आप का निकाह़ कर देते हैं जिन्हें आप चाहें और अगर आप माल चाहते हैं तो हम आप के लिए इतना माल जमा कर देंगे कि उसकी वजह से आप और आप के बाद आने वाले आल व औलाद सब को बेनियाज़ कर देंगे और अगर यह बात है कि जो कुछ आप की ज़बान से निकलता है यह जिन्नात का कोई असर है तो बता दीजिए कि हम माल जमा करेंगे और आप का इलाज करा देंगे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) यह सब बातें ख़ामोशी के साथ सुनते रहे। जब 'उ़त्बा' अपनी बातें कह चुका तो आप ने फ़रमाया कि ऐ 'अबू अल् वलीद!' तू अपनी बातों से फ़ारिग़ हो गया? (अबू अल् वलीद उ़त्बा की कुन्नियत (सरनेम) थी, उ़त्बा ने कहा हाँ मैं कह चुका! आप ने फ़रमाया कि सुन लो कहने लगा कि सुनाइये। आप ने 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर सूरः हामीम सज्दः पढ़ना शुरु किया।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ तक पढ़ते चले गये, आप यहाँ तक पहुँचे थे कि 'उ़त्बा' कूद पड़ा और आप के मुँह मुबारक पर हाथ रख दिया और अल्लाह की क़सम दी कि आप ख़ामोश हो जाएँ। इस के बाद वह अपने घर चला गया और कुरैश की मजलिस में न आया।

'अबूजेहल' ने उस से कहा, क्या तू बेदीन होकर मुह़म्मद (सल्ल०) की तरफ़ ढ़ल गया या तुझे मुह़म्मद (सल्ल०) का खाना पसन्द आ गया। यह सुनकर 'उ़त्बा' ग़ुस्सा हो गया और उस ने क़सम खाई कि मुह़म्मद (सल्ल०) से कभी बात न करुँगा।

इस के बाद 'उ़त्बा' ने कहा अल्लाह की क़सम तुम जानते हो कि मैं कुरैश में सब से ज़्यादा माल वाले लोगों में से हूँ (माल या खाने की वजह से मैं ख़ामोश नहीं हुआ) लेकिन बात यह है कि जब मैंने मुह़म्मद (सल्ल०) से बातचीत की तो उन्होंने जो मुझे जवाब दिया उस से मैंने यह समझ लिया कि वह न शेअ़र है, न कहानत है न जादू ।

इस के बाद 'उ़त्बा' ने (مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ) तक आयात सुना दीं, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुनी थीं और उस ने बताया कि मैंने उन का मुँह पकड़ लिया और क़सम दी कि आगे न पढ़ें, फिर उ़त्बा ने मज़ीद कहा कि तुम जानते हो कि मुह़म्मद (सल्ल०) ने जब कभी भी कोई बात कही है झूठ नहीं बोला इसलिए मुझे डर हुआ कि तुम लोगों पर कहीं अ़ज़ाब नाज़िल न हो जाए।

एक रिवायत में यूँ है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उ़त्बा बिन रबीआ़ के सामने सूरः हामीम सज्दः के शुरु से आयत सज्दः तक तिलावत की, 'उ़त्बा' कान लगाकर सुनाता रहा। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने जब क़िरात ख़त्म कर दी तो फ़रमाया, ऐ 'अबू अल् वलीद!' तूने सुन लिया जो मैंने कहा आगे तू जाने (तू ईमान लाए या न लाए।

'उ़त्बा' ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास से उठा और कुरैश की मजलिस में पहुँचा वह उसकी सूरत देखते ही कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! 'अबू वलीद' का रुख़ बदला हुआ है। यह दूसरा चेहरा लेकर आया है।

इस के बाद 'उ़त्बा' से कुरैश ने कहा, ऐ अबू वलीद! तू क्या ख़बर लाया? कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (सल्ल०) से मैंने ऐसा कलाम (वाणी) सुना है कि उस जैसा कभी नहीं सुना। मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि वह न शेअ़र (कविता) है, न जादू है, लिहाज़ा तुम मेरी बात मान लो मुह़म्मद को उनके ह़ाल पर छोड़ दो और उन्हें कुछ न कहो।

अल्लाह की क़सम मैं समझता हूँ कि उन के बातों का ज़रूर चर्चा होगी कि अगर अहले अ़रब ने उन को ख़त्म कर दिया तो दूसरों के ज़रिये तुम्हारा काम चल जाएगा और अगर मुह़म्मद (सल्ल०) बादशाह बन गये या उन की नुबूव्वत का एलान हो गया तो तुम्हें उसकी भलाई पूरी तरह़ नसीब हो जाएगी, क्योंकि उन का मुल्क तुम्हारा ही मुल्क होगा और उन की इ़ज़्ज़त तुम्हारी ही इ़ज़्ज़त होगी। यह सुनकर कुरैश कहने लगे, ऐ अबू अल् वलीद! मुह़म्मद (सल्ल०) ने तुझ पर जादू कर दिया है, 'उ़त्बा' ने कहा यह मेरी राय है आगे तुम जो चाहो करो।

13-18

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ۝ إِذْ جَاءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنۢ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ
كَافِرُونَ ۝ فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ
الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي
أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۖ وَهُمْ لَا
يُنصَرُونَ ۝ وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

ह़क़ से मुँह मोड़ने वालों की बर्बादी

इन आयात में कुर्आन करीम के सुनने वाले को तम्बीह फ़रमाई गई है कि तुम्हारे सामने स्पष्ट तौर पर निशानियाँ आ चुकी हैं, इन सब के बावजूद फिर भी मुँह मोड़ते हो, ईमान नहीं लाते, लिहाज़ा समझ लो कि अ़ज़ाब आ जाएगा। तुम से पहले ऐसी उम्मतें गुज़रीं हैं जिन्होंने रसूलों को झुठलाया, फिर उन को अ़ज़ाब ने आ दबाया। आ़द व समूद, दो क़ौमें गुज़र चुकी हैं, उन्होंने अपने-अपने रसूलों को झुठलाया, फिर अ़ज़ाब में फँसे और हलाक हुए उन पर जो अ़ज़ाब की मुसीबत आई तुम्हें उस जैसी आफ़त से डराता हूँ। अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर (अ़लै०) उनके पास आये, उन्होंने उन को तौह़ीद की दअ़वत दी कि अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करो। यह लोग दलील से तौह़ीद को रद्द न कर सके और अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) पर एतिराज़ करने लगे, कहने लगे कि तुम तो केवल एक इन्सान हो, जैसे हम वैसे तुम। अगर अल्लाह तआ़ला को रसूल भेजना ही था तो क्या उस के लिए तुम ही रह गये थे, वह अगर चाहता तो फ़रिश्तों को रसूल बनाकर भेज देता। तुम जो यह कहते हो कि हम अल्लाह के पैग़म्बर हैं, ऐसे-ऐसे हुक्म लेकर आये हैं और तौह़ीद की दअ़वत हमारा काम है हम इन सब बातों के इन्कारी हैं।

यह दोनों क़ौमों की बातें थी। क़ौमें आ़द बड़े डील डौल वाले थे, उन्हें अपनी कुव्वत और ताक़त पर बड़ा घमण्ड था इसकी वजह से उन्होंने घमण्ड की राह अख़्तियार की और बड़े गुरूर के साथ कहने लगे कि مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً (कि वह कौन है जो ताक़त में हम से बढ़कर है।)

इन्सान की बेवकूफ़ी है कि वह दुनिया में माल व औलाद और कुव्वत व ताक़त पर घमण्ड करता है और घमण्ड में आकर बड़ी-बड़ी बातें कह जाता है। फ़र्ज़ करो कि मौजूदा मख़्लूक़ में कोई भी मुक़ाबिल न हो तो जिस ने पैदा फ़रमाया उसकी कुव्वत तो बहरहाल सब से ज़्यादा और बहुत ज़्यादा है।

उन लोगों ने अपने ख़ालिक़ पर नज़र न की और घमण्ड की बात कह दी, उन की इस बेवकूफ़ी को ज़ाहिर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً

(क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह तआ़ला ताक़त के एतिबार से बहुत ज़्यादा है जिस ने उन्हें पैदा फ़रमाया।)

وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (और यह लोग हमारी आयात का इन्कार करते हैं। स्पष्ट दलायल देखते हुए और जानते बूझते उन्होंने हक़ से मुँह मोड़ा और कुबूल करने से इन्कार किया।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا (सो हम ने उन पर तेज़ हवा भेज दी) فِيْ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ

لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا उन्हें दुनिया वाली ज़िन्दगी में ज़िल्लत का अ़ज़ाब चखाएँगे और उसी अ़ज़ाब पर बस नहीं। उनके लिए आख़िरत में भी अ़ज़ाब है और वह इस दुनिया वाले अ़ज़ाब से बढ़कर ज़िल्लत व रुस्वाई वाला होगा। وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ (और वहाँ उनकी मदद न की जाएगी यह जो माल व दौलत और औलाद पर घमण्ड है सब यही रखा रह जाएगा।

सूरः अल् हाक़्क़ः (**आयत नं० 7**) में फ़रमाया हैः

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ

(क़ौमे आ़द पर जो तेज़ हवा भेजी थी वह सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत फ़रमा दी थी, तू उस क़ौम को इस तरह़ गिरा हुआ देखता कि गोया वह गिरे हुए खजूरों के तने हैं) यह लोग बड़े डील डौल वाले थे, अपनी कुव्वत पर घमण्ड किये हुए थे, तेज़ हवा ने बिल्कुल ही उनका नास कर दिया, खजूरों के तनों की तरह़ ज़मीन पर गिर गये। सूरः अल् क़मर (**आयत नं० 20**) में इसी को كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ फ़रमाया है।

ह़दीस से मालूम होता है कि नहूसत कोई चीज़ नहीं है। ह़ज़रत 'सअ़द बिन मालिक' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर नहूसत किसी चीज़ में होती तो घर में, घोड़े में और औ़रत में होती। (**रवाहु अबूदाऊद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 392**)

क़ौमे आ़द के बारे में जो यह फ़रमाया कि मन्हूस दिनों में उन पर तेज़ हवा भेज दी, यह उन के साथ ख़ास है। यह बात नहीं है कि वह दिन सब के लिए मन्हूस हैं, अगर ऐसा होता तो सारे ही दिन मन्हूस होते क्योंकि उन पर एक हफ़्ते से ज़्यादा तेज़ हवा चली।

इस के बाद क़ौमे 'समूद' का ह़ाल बयान फ़रमाया وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ और रहे 'समूद' सो हम ने उन्हें

हिदायत दी यानी उनकी तरफ़ नबी भेजा जिस ने उन्हें ह़क़ का रास्ता बताया और तौह़ीद की दअ़वत दी, उन्होंने समझ से काम न लिया, हिदायत को अख़्तियार न किया और अन्धा रहने यानी गुमराही को तर्जीह़ (Priority) दी।

जब हिदायत को न माना तो उन्हें अ़ज़ाब की मुसीबत ने पकड़ लिया और वह अपने बुरे करतूतों की वजह से हलाक कर दिये गये। साइ़क़ा का असली मअ़ना बिजली के है, जो बारिश के दिनों में चमकती है और कभी-कभी उस से आफ़त भी मुराद ले लेते हैं।

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (और हम ने उन लोगों को निजात दी जो ईमान लाए और वह डरते थे) यानी अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ खाते थे।

आयत नं० 19 से 32 तक

ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون ۝ حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم بما كانوا
يعملون ۝ وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا ۖ قالوا أنطقنا الله الذي أنطق كل شيء وهو خلقكم أول مرة وإليه
ترجعون ۝ وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم ولا جلودكم ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما
تعملون ۝ وذلكم ظنكم الذي ظننتم بربكم أرداكم فأصبحتم من الخاسرين ۝ فإن يصبروا فالنار مثوى لهم ۖ وإن يستعتبوا
فما هم من المعتبين ۝ وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم وحق عليهم القول في أمم قد
خلت من قبلهم من الجن والإنس ۖ إنهم كانوا خاسرين ۝ وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه
لعلكم تغلبون ۝ فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ولنجزينهم أسوأ الذي كانوا يعملون ۝ ذلك جزاء أعداء الله
النار ۖ لهم فيها دار الخلد ۖ جزاء بما كانوا بآياتنا يجحدون ۝ وقال الذين كفروا ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن
والإنس نجعلهما تحت أقدامنا ليكونا من الأسفلين ۝ إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة ألا
تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة التي كنتم توعدون ۝ نحن أولياؤكم في الحياة الدنيا وفي الآخرة ۖ ولكم فيها
ما تشتهي أنفسكم ولكم فيها ما تدعون ۝ نزلا من غفور رحيم ۝

अनुवाद-

(19) और जिस दिन अल्लाह के दुश्मनों को जहन्नम की ओर ले जाने के लिए इकट्ठा किया जाएगा (और) उनकी दर्जा बन्दी (क्रमबद्ध) की जाएगी, (20) यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुंच जाएँगे तो उनके कान उनकी आंखें और उनकी खालें (त्वचा) उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे क्या कुछ करते रहे हैं। (21) और वे अपनी खालों से कहेंगे कि ''तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी?'' वह कहेगी, ''हमें 'उसी' अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी, जिसने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी और 'उसी' ने तुमको पहली बार पैदा किया और तुम को 'उसी' की ओर लौट कर जाना है। (22) और तुम इससे तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें, और तुम्हारी खालें, तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि 'अल्लाह तुम्हारी बहुत सी बातों को नहीं जानता' जो तुम करते हो। (23) और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बरबाद किया जो अपने रब के बारे में रखते थे, तो तुम घाटे में पड़कर रहे। (24) अब अगर ये सब्र करेंगे तो भी जहन्नम ही इनका ठिकाना है, और अगर वे माफ़ी मांगे, तो इन्हें माफ़ नहीं किया जाएगा। (25) और 'हमने' उन पर कुछ साथी (शैतान) नियुक्त कर दिये थे, फिर उन्होंने उनके आगे और उनके पीछे (के आ़माल को) जो कुछ था उसे सुहाना बनाकर, उन्हें दिखाया तो उन पर भी जिन्नों और मनुष्यों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला सच हो कर रहा, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, बेशक वे घाटा उठाने वाले थे। (26) और जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने कहा,''इस क़ुर्आन को सुनो ही नहीं और इसके बीच में शोर-गुल मचाओ, ताकि तुम ग़ालिब (प्रभावी) रहो।'' (27) तो हम ज़रूर उन लोगों को- जिन्होंने इन्कार किया- सख्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे, और 'हम' ज़रूर उन्हें उस का बदला देंगे जो बद्तरीन काम वे करते रहे हैं। (28) यह है,

अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग, इसी में उनका हमेशा के रहने वाला घर है, यह बदला है इस बात का कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार करते थे। (29) और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे उन जिन्नों और इन्सानों को, जिन्होंने हमको गुमराह किया था कि हम उन्हें अपने पैरों तले कुचल दें, ताकि वे सबसे नीचे जा पड़ें।'' (30) जिन लोगों ने कहा, ''हमारा रब अल्लाह है।'' फिर उस पर मज़बूती से जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे, ''न डरो और न रंजीदा हो, और उस जन्नत की खुशख़बरी सुनो जिसका तुमसे वादा किया जाता है।'' (31) हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी, और वहाँ तुम्हारा जो दिल चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा, और जो चीज़ भी तुम माँगोगे वह सब तुम्हें मिलेगी। (32) यह मेहमानी (सत्कार) है, 'उसकी' ओर से जो बख्शने वाला, रहम करने वाला है।

आयत नं० 19 से 32 तक की व्याख्या

19 وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝

यानी हर एक क़िस्म के मुजरिमों की अलग जमाअ़त होगी और यह सब जमाअ़तें एक दूसरे के इन्तिज़ार में जहन्नम के क़रीब रोकी जाएँगी।

20 حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

दुनिया में कानों से आयात सुनीं और आँखों से देखीं, मगर न माना और अल्लाह की नाफ़रमानी करते रहे। यह ख़बर न थी कि गुनाहों का यह सारा रिकार्ड खुद उन्हीं की ज़ात में मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) है जो वक़्त पर खोल दिया जाएगा।

रिवायात से मालूम होता है कि मह़शर में कुफ़्फ़ार अपने जरायम का ज़बान से इन्कार करेंगे। उस वक़्त हुक्म होगा कि उनके अंगों की शहादत पेश की जाए जिन के ज़रिये गुनाह किये थे, चुनांचे हर एक अंग गवाही देगा और इस तरह़ ज़बान का झुठलाना हो जाएगा, तब ह़ैरान होकर अपने अंगों को कहेगा (कम्बख़्तो) दूर हो जाओ! तुम्हारी ही तरफ़ से तो मैं झगड़ता हूँ और दिफ़ाअ़ कर रहा था (तुम खुद ही अपने जुर्मों का एतिराफ़ करने लगे।)

21 وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

यानी जब मैं ज़बान से इन्कार कर रहा था तो तुम पर ऐसी क्या मुसीबत पड़ी थी कि ख़्वाह मख़्वाह बतलाना शुरु कर दिया और आख़िर यह बोलना तुम को सिखलाया किस ने।

यानी जिस की क़ुद्रत ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी, आज उसी ने हम को भी बोलने वाला बना दिया। न बोलते और बतलाते तो क्या करते। जब वह क़ादिरे मुत़्लक़ बुलाना चाहें तो किस चीज़ की मजाल है कि न बोले। जिस ने ज़बान में बोलने की ताक़त रखी क्या हाथ पांव में नहीं रख सकता?

22 وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ

यानी दूसरे लोगों से छुप कर गुनाह करते थे, यह ख़बर न थी कि हाथ पांव बतला देंगे उन से भी पर्दा करें और करना भी चाहिए तो इस की कुद्रत कहाँ थी।

तुम्हारे अ़मल से मालूम होता है कि तुम को अल्लाह तआ़ला के इल्म का यक़ीन ही न था, समझते थे कि जो चाहो करते रहो कौन देख रहा होगा। अगर पूरी तरह़ यक़ीन होता कि अल्लाह हमारी तमाम ह़रकात से बाख़बर है और उसके यहाँ हमारी पूरी वीडियो बन रही है तो हरगिज़ ऐसी शरारतें न करते।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार कअ़बः में तीन आदमी बैठे आपस में बात कर रहे थे। उन तीनों में से दो तो कुरैशी थे और एक उनका बिरादर निस्बती था जो सक़्फ़ी ख़ानदान का था। तीनों ख़ूब मोटे ताज़े थे तोदें निकली हुई थीं मगर अ़क़्ल से खाली थे। उन में से एक ने दूसरे से पूछा तुम्हारा क्या ख़याल है कि अल्लाह हमारी बातें सुन सकता है? दूसरा बोला! हाँ ऊँची आवाज़ से बात करें तो सुन लेता है और अगर आहिस्ता बात करें तो फिर नहीं सुनता। तीसरा कहने लगा कि अगर वह ऊँची आवाज़ को सुन लेता है तो फिर आहिस्ता आवाज़ भी सुन सकता है, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई"। **(बुख़ारी)**

23-24 وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं "यानी दुनिया में बाज़ बला सब्र से आसान होती है। वहाँ सब्र करें या न करें दोज़ख़ घर हो चुका (जहाँ से कभी निकलना नहीं) और बाज़ बला ख़ुशामद करने से टलती है, वहाँ तो चाहें कितनी ख़ुशामद करें कोई कुबूल नहीं की जाएँगी।"

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा मेरे बारे में जैसा गुमान रखता है वैसा ही उस के गुमान के मुताबिक़ मैं उस से सुलूक करता हूँ।" **(बुख़ारी)**

25 وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ

यानी उन पर शैतान तैनात थे कि उन को बुरे काम जो पहले किये या आगे करते, भले कर के दिखलाएँ और तबाहकुन भविष्य को ख़ूबसूरत बनाकर उस के सामने पेश करें और यह शैतानों को तैनात किया जाना भी उन के मुँह मोड़ने का नतीजा था। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ **(सूरः ज़ुख़्रुफ़-36)**

यानी वही बात जो शुरु में कही गई थी لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ **(सूरः हूद-119)**

26 وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ

कुर्आन करीम की आवाज़ बिजली की तरह़ सुनने वालों के दिलों में असर करती थी। जो सुनता फ़रेफ़्ता हो जाता, उस से रोकने का तरीक़ा काफ़िरों ने यह निकाला कि जब कुर्आन पढ़ा जाए तो उधर कान ही न लगाए और इतना शोर मचाया जाए कि दूसरे भी न सुन सकें। इस तरह़ हमारे शोर मचाने से कुर्आन की आवाज़ दब जाएगी।

आज भी जाहिलों को ऐसी ही तद्बीरें सूझा करती हैं कि काम की बात को शोर मचाकर सुनने न दिया जाए। लेकिन सच्चाई की आवाज़ को मच्छरों और मक्खियों की भिन्भिनाहट से कहाँ रोका जा सकता है, इन सब तरकीबों के बावजूद ह़क़ की आवाज़ दिल की गहराईयों तक पहुँच कर रहती है।

27 فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ

उस से ज़्यादा बुरा काम कौन सा होगा कि ख़ुद नसीह़त की बात न सुने और दूसरों को भी सुनने न दे।

28 ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ

यानी दिल में समझते थे, लेकिन ज़िद और हठधर्मी से इन्कार ही करते रहते थे।

29 وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ

काफ़िर कहते कि हम तो आफ़त में फ़ंसे हैं, लेकिन आदमियों और जिन्नों में से जिन शैतानों ने हम को बहका-बहका कर इस आफ़त में गिरफ़्तार कराया है ज़रा उन्हें हमारे सामने लाइये कि उन को हम अपने पांव तले रौंद डालें और निहायत ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ जहन्नम के सब से नीचे के ह़िस्से में ढ़केल दें, ताकि बदला लेकर हमारे दिल कुछ तो ठंडे हों।

30 إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ

यानी दिल से इक़रार किया और उस पर क़ायम रहे, उस की परवरदिग़ारी व उलूहियत में किसी को शरीक नहीं ठहराया, न इस यक़ीन व इक़रार से मरते दम तक हटे, न गिरगिट की तरह़ रंग बदला, जो कुछ ज़बान से कहा था उस पर जमे रहे।

अल्लाह की परवरदिग़ारी का ह़क़ पहचानना, जो अ़मल किया ख़ालिस उसकी रज़ा और शुक्रगुज़ारी के लिए किया। अपने रब के बताये हुए हुक़ूक़ व फ़रायज़ को समझा और अदा किया। तमाम चीज़ों से मुँह मोड़ कर सीधे उसी की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उसी के रास्ते पर चले। ऐसे बन्दों पर मौत के क़रीब और क़ब्र में पहुँचकर और उस के बाद क़ब्रों से उठने के वक़्त अल्लाह के फ़रिश्ते उतरते हैं जो तस्कीन व तसल्ली देते और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।

कहते हैं कि अब तुम को डरने और घबराने का कोई मौक़ा नहीं रहा, मिटने वाली दुनिया के सब

फ़िक्र व ग़म ख़त्म हुए और किसी आने वाली आफ़त का अन्देशा भी नहीं रहा। अब हमेशा के लिए हर क़िस्म की जिस्मानी व रुहानी ख़ुशी और ऐश तुम्हारे लिए है और जन्नत के जो वादे अम्बिया (अ़लै०) की ज़बानी किये गये थे वह अब तुम को दिये जाने वाले हैं। यह वह दौलत है जिस के मिलने का यक़ीन हासिल होने पर कोई फ़िक्र और ग़म आदमी के पास नहीं फटक सकता।

31 نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝

बाज़ हज़रात ने इस को अल्लाह का कलाम बताया है। यानी फ़रिश्तों का कलाम इस से पहले ख़त्म हो चुका और अक्सर के नज़्दीक यह भी फ़रिश्तों की बात है। यानी फ़रिश्ते यह क़ौल उनके दिलों में इल्हाम करते हैं और उन की हिम्मत बँधाते हैं। मुम्किन है कि इस ज़िन्दगी में बाज़ बन्दों से इतने शब्द कहते हों और मुम्किन है मौत के क़रीब या उस के बाद कहा जाता हो।

उस वक़्त نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ का मतलब यह होगा कि हम दुनिया में भी तुम्हारे दोस्त रहे हैं कि अल्लाह के हुक्म से तुम्हारी मदद करते थे और आख़िरत में भी साथ रहेंगे कि वहाँ तुम्हारी सिफ़ारिश या इ़ज़्ज़त का इन्तिज़ाम करेंगे।

यानी जिस चीज़ की ख़्वाहिश व रग़बत दिल में होगी या जो ज़बान से तलब करोगे सब कुछ मिलेगा। अल्लाह के ख़ज़ानों में किसी चीज़ की कमी नहीं।

32 نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ۝

यानी समझ लो कि वह ग़फ़ूर व रहीम अपने मेहमान के साथ कैसा अच्छा बर्ताव करेगा और यह कितनी बड़ी इ़ज़्ज़त होगी कि एक कमज़ोर बन्दा रब्बुल् आ़लमीन का मेहमान हो।

आयत नं० 33 से 46 तक

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ
اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ۝ وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ ۝
وَ اِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝ وَمِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا
تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ
یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا یَسْـَٔمُوْنَ ۝ सज्दः وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا لَا یَخْفَوْنَ عَلَیْنَا ؕ
اَفَمَنْ یُّلْقٰى فِی النَّارِ خَیْرٌ اَمْ مَّنْ یَّاْتِیْۤ اٰمِنًا یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا
جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِیْزٌ ۝ لَّا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ ۝ مَا یُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا
قَدْ قِیْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِیْمٍ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِیًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰیٰتُهٗ ؕ
ءَاَعْجَمِیٌّ وَّعَرَبِیٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَیْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓىِٕكَ
یُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِیْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ
لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِیْبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ۝

अनुवाद-

(33) और उस व्यक्ति से बेहतर बात, किस की हो सकती है? जो अल्लाह की ओर बुलाए, और नेक अ़मल करे और कहे, ''मैं मुसलमानों (फ़रमाबरदारों) में से हूँ।'' (34) और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तुम बुराई को उस तरह दूर करो जो सब से बेहतर हो, उस सूरत में तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस (व्यक्ति) के बीच दुश्मनी थी, गोया वह गहरा दोस्त बन गया है; (35) और इसकी तौफ़ीक़ उन ही लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं, और यह चीज़ उन्हीं को हासिल होती है जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं। (36) और अगर शैतान की ओर से कोई वस्वसा मालूम हो, तो अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक 'वह' सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (37) और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन, और सूरज और चाँद हैं, तो तुम लोग न सूरज को सज्दः करो और न चाँद को, और अल्लाह ही को सज्दः करो 'जिसने' इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम अल्लाह की इ़बादत करने वाले हो। (38) और अगर ये लोग सरकशी करें, तो जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे 'रब' के पास हैं वे तो रात और दिन 'उसकी' तस्बीह़ करते ही रहते हैं, और वे कभी थकते ही नहीं। (39) और यह चीज़ भी 'उसकी' निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी (अर्थात सूखी) है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने लगती और फूल जाती है, तो 'जिसने' ज़मीन को ज़िन्दा किया, 'वही' मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है, बेशक 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य) है। (40) जो लोग 'हमारी' आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं वे 'हमसे' छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति दोज़ख़ में डाला जाए, वह अच्छा है या वह, जो क़ियामत के दिन बेफ़िक्र (निश्चिन्त) होकर आए? जो चाहे कर लो, तुम जो कुछ करते हो 'वह' तो उसे देख रहा है। (41) जिन लोगों के पास नसीह़त

आई और उन्होंने उसको न माना और यह एक ज़बर्दस्त किताब है। (42) असत्य 'उस' तक न उसके आगे से आ सकता है, और न उसके पीछे से, यह 'उसकी' ओर से नाज़िल हुई है जो हिकमत वाला, खूबियों वाला है। (43) तुम्हें बस वही कहा जा रहा है जो उन रसूलों को कहा जा चुका है जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, बेशक तुम्हारा रब माफ़ करने वाला भी है और दुखदाई सज़ा देने वाला भी है। (44) और अगर 'हम' इसे अजमी (अ़रबी के सिवा किसी भाषा) में क़ुर्आन बनाते तो यह लोग कहते, ''इसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गईं? यह क्या कि भाषा तो विदेशी हो और हम अरबी?'' कह दीजिए, ''जो ईमान रखते हैं उनके लिए तो यह हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और यह (क़ुर्आन) उनके लिए अन्धापन है, वे ऐसे हैं जिनको किसी दूर की जगह से पुकारा जा रहा हो।'' (45) और 'हमने' मूसा को किताब दी, फिर उसमें भी मतभेद किया गया, और अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही से एक बात तय न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता, और यह इस (क़ुर्आन) से शंका में पड़े हुए हैं। (46) जिसने भले काम किये तो उसने अपने ही लिए और जिसने बुराई की, उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा, और तुम्हारा रब अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

आयत नं० 33 से 46 तक की व्याख्या

33 وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

पहले إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا में उन ख़ास मक़्बूल बन्दों का ज़िक्र था जिन्होंने सिर्फ़ एक अल्लाह की परवरदिग़ारी पर भरोसा कर के अपने जमने का सुबूत दिया। यहाँ उनके एक और मक़ाम का ज़िक्र हो रहा है यानी बेहतरीन शख़्स वह है जो ख़ुद अल्लाह का हो कर रहे, उसी का हुक्म माने, उसी की पसन्दीदा रविश पर चले और दुनिया को उसी की तरफ़ आने की दअ़वत दे। उस के क़ौल व अ़मल बन्दों को अल्लाह की तरफ़ खींचने में असरदार हों और नेकी की तरफ़ लोगों को बुलाएँ। फिर ख़ुद भी उस पर अ़मल करता हो।

अल्लाह की तरफ़ अपनी बन्दग़ी और फ़रमाँबरदारी का एलान करने से कहीं और किसी वक़्त न झिझके, उस का मक़्सद सिर्फ़ इस्लाम हो और हर क़िस्म की तंगनज़री और फ़िर्क़ावाराना निस्बतों से यक्सू होकर अपने मुस्लिम ख़ालिस होने का एलान करे और उसी हक़ बात (तौहीद) की तरफ़ लोगों को बुलाए जिस की दअ़वत देने के लिए मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) खड़े हुए थे और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अपनी उ़म्रें खपा दी थीं।

34 وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ

इन आयात में एक सच्चे दाओ़ी को जिस अच्छे अख़्लाक़ की ज़रूरत है उस की तअ़लीम दी जा रही हैं। यानी ख़ूब समझ लो नेकी बुराई के और बुराई नेकी के बराबर नहीं हो सकती। दोनों के असर जुदा है, बल्कि एक नेकी दूसरी नेकी से और एक बुराई दूसरी बुराई से असर में बढ़कर होती है, लिहाज़ा एक

मोमिन और ख़ासतौर से दाअ़ी इलल्लाह को चाहिए कि बुराई का जवाब बुराई से न दे, बल्कि जहाँ तक गुन्जाइश हो बुराई के मुक़ाबिले में भलाई से पेश आए। अगर कोई उसे सख़्त बात कहे या उसके साथ बुरा मामला करे तो उस के मुक़ाबिले में कोई अच्छा तरीक़ा अख़्तियार करना चाहिए जो उस से बेहतर हो।

जैसे- ग़ुस्सा के जवाब में ख़ामोशी, गाली के जवाब में सब्र, सख़्ती के जवाब में नर्मी और मेहरबानी से पेश आए। इस के नतीजे में तुम देख लोगे कि सख़्त से सख़्त दुश्मन भी ढ़ीला पड़ जाएगा और अगर दिल से दोस्त न बने, मगर एक वक़्त आएगा कि जब वह एक गहरे दोस्त की तरह़ से बर्ताव करने लगेगा, बल्कि मुम्किन है कि कुछ दिनों बाद सच्चे दिल से दोस्त बन जाए और दुश्मनी व अ़दावत के ख़यालात दिल से निकल जाएँ। عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً **(सूरः मुम्तहिना-7)**

हाँ, किसी शख़्स की तबीअ़त ही साँप, बिच्छू की तरह़ हो कि कोई नर्म ख़ोई और ख़ुशअख़्लाक़ी उस पर असर न करे तो वह दूसरी बात है मगर ऐसे लोग कम होते हैं, बहरहाल दअ़वत इलल्लाह वालों को बहुत ज़्यादा सब्र और अच्छे सुलूक की ज़रूरत है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दरगुज़र से अल्लाह तआ़ला बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है। जो अल्लाह के लिए तवाज़ोअ़ अख़्तियार करे, अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्दी अ़ता करते हैं"। **(मुस्लिम)**

35 وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝

यानी बहुत बड़ा ह़ौसला चाहिए कि बुरी बात सुन कर भलाई से जवाब दे। यह अख़्लाक़ और गुण अल्लाह के यहाँ से बड़ी क़िस्मत वाले ख़ुशनसीब लोगों को मिलते हैं।

आप (सल्ल०) ने तो यहाँ तक दुश्मन के साथ अच्छा मामला करना सिखलाया था, जो अच्छे मामला और ख़ुश अख़्लाक़ी से प्रभावित हो सकता हो, लेकिन एक दुश्मन वह है जो किसी ह़ाल और किसी तरह़ से दुश्मनी नहीं छोड़ता, तुम कितनी ही ख़ुशामद या नर्मी बरतो, उस का तरीक़ा यह है कि तुम को हर तरह़ नुक़्सान पहुँचाएगा। ऐसे पक्के शैतान से मह़फ़ूज़ रहने की तद्बीर आगे फ़रमाई गई है।

36 وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

यानी ऐसे शैतान के मुक़ाबिले में नर्मी और दरगुज़र से काम नहीं चलता, बस उस से बचने का एक ही तरीक़ा है कि अल्लाह की पनाह में आ जाओ। यह वह मज़बूत क़िला है जहाँ शैतान की पहुँच नहीं। अगर तुम वाक़ई दिल से अल्लाह को पुकारोगे तो वह ज़रूर तुम को पनाह देगा, क्योंकि वह हर एक की पुकार सुनता और ख़ूब जानता है कि किस ने कितने इख़्लास व दिल से उस को पुकारा है।

ह़ज़रत शाह़ साह़ब (रह़०) लिखते हैं "यानी कभी बेअख़्तियार ग़ुस्सा चढ़ आए तो यह शैतान का दख़ल है" वह नहीं चाहता कि तुम हुस्ने इख़्लाक़ पर जमे रहो, दअ़वत इलल्लाह के मक़्सद में कामियाबी ह़ासिल करो।

37 وَمِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ
خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝

अल्लाह की ओर दअ़वत के साथ चन्द दलायल बयान किये जाते हैं जिन से दाअ़ी को अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने जैसे मामले को समझाने में मदद मिलेगी।

इस आयत में इशारा है कि एक तरफ़ अल्लाह के ख़ास बन्दे अपने क़ौल व अ़मल से अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं और दूसरी तरफ़ चाँद, सूरज और आसमान व ज़मीन का प्रबन्ध (System) सोचने वालों को उसी अल्लाह की तरफ़ आने की दअ़वत दे रहा है "وَفِیْ كُلِّ شَیْءٍ لَهٗ اٰیَةٌ تَدُلُّ عَلٰی اَنَّهٗ وَاحِدٌ" इन्सान को चाहिए कि इन निशानियों में उलझ कर न रह जाए जैसे बहुत सी क़ौमें रह गई हैं, बल्कि लाज़िम है कि उस असीम कुद्रत वाले मालिक के सामने सर झुकाये जिस की यह निशानियाँ हैं और मुम्किन है कि इस पर भी तम्बीह हो कि जिस तरह़ रात, दिन और इन दोनों की निशानियाँ चाँद और सूरज एक दूसरे के मुक़ाबिल हैं और अल्लाह तआ़ला उन में रद्दोबदल करता रहता है, इसी तरह़ उस को कुदरत है कि दअ़वत इलल्लाह की रौशनी और दाअ़ी की हिम्मत और खुशअख़्लाक़ी की बदौलत सामने वाले की कायापलट कर दे और अँधेरे को एक रौशन माहौल से बदल दे।

सूरज और चाँद को पूजने वाले भी ज़बान से यही कहते थे किं हमारा मक़्सद इन चीज़ों की पूजा करना नहीं, अल्लाह की ही पूजा है मगर यह चीज़ें ज़रिया हैं ऊपर वाले तक पहुँचने का।

यहाँ बताया गया है कि अ़िबादत का ह़क़्दार सिर्फ़ एक अल्लाह है। किसी ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत करना खुदा-ए-वाह़िद से बग़ावत करने के बराबर है।

38 فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا یَسْئَمُوْنَ ۝ [सज्दः]

यानी अगर ग़ुरूर व घमण्ड क़ी वजह से ह़क़ नहीं मानते है और तौह़ीद की तरफ़ आना नहीं चाहते हैं तो न आएँ अपना ही नुक़्सान करेंगे। अल्लाह को उन की क्या परवाह हो सकती है भला जिस की इ़ज़्ज़त का यह ह़ाल हो कि बेशुमार मलायका मुक़र्रबीन रोज़ उस की अ़िबादत और तस्बीह़ में मश्ग़ूल रहते हों, न वह कभी थकते हों, न उक्ताते हों, उस के सामने यह बेचारे क्या चीज़ हैं और इन का ग़ुरूर क्या चीज़ है। ख़्वाह मख़्वाह की झूटी शेख़ी कर के अपना ही नुक़्सान कर रहे हैं।

39 وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ اَحْیَاهَا لَمُحْیِ
الْمَوْتٰی ؕ اِنَّهٗ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝

यानी ज़मीन को देखो बेचारी चुपचाप, ज़लील व ख़्वार बोझ में दबी पड़ी रह़ती है। ख़ुश्की के वक़्त हर तरफ़ ख़ाक उड़ती हुई नज़र आती है, लेकिन जहाँ बारिश का एक छींटा पड़ा, फिर उसकी तरोताज़गी रौनक़ और उभार सामने आ जाती है। आख़िर यह इन्क़िलाब किस की क़ुद्रत के नतीजे में है? जिस अल्लाह ने इस तरह़ मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, क्या वह मरे हुए इन्सानों के बदन में दोबारा जान नहीं डाल सकता? क्या वह क़ादिरे मुत्लक़ मरे हुए दिलों को दअ़वत इलल्लाह की तासीर से नई ज़िन्दगी

अ़ता नहीं कर सकता? बेशक वह सब कुछ कर सकता है, उस की क़ुद्‌रत के सामने कोई रुकावट नहीं।

40-41 إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ
وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝

यानी अल्लाह की तरफ़ दअ़वत देने वालों की ज़बान से आयात सुनकर और निशानियों को देखकर भी जो लोग टेढ़ेपन से बाज़ नहीं आते और सीधी-सीधी बातों को वाही तबाही के शुब्हात पैदा कर के टेढ़ी बनाते हैं या ख़्वाह मख़्वाह तोड़ मरोड़ कर उन का मतलब ग़लत लेते हैं या यूँ ही झूठमूठ के उ़ज़्र और बहाने बना कर इन आयात को मानने में हेरफेर करते हैं, ऐसे टेढ़ी चाल चलने वालों को अल्लाह ख़ूब जानता है।

मुम्किन है वह लोग अपनी मक्कारियों और चालाकियों पर घमण्डी हों, मगर अल्लाह से उन की कोई चाल छुपी हुई नहीं। जिस वक़्त सामने जाएँगे देख लेंगे, फ़िल्‌ह़ाल उस ने ढ़ील दे रखी है, वह मुजरिम को तुरन्त नहीं पकड़ता। इसलिए आगे फ़रमा दियाः-

اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ यानी अच्छा जो तुम्हारी समझ में आये किये जाओ, मगर याद रहे कि तुम्हारी सब ह़रकात उस की नज़र में हैं, एक दिन इन सब का इकट्ठा ख़मियाज़ा भुगतना पड़ेगा। अब ख़ुद सोच लो कि एक शख़्स जो अपनी शरारतों की बदौलत जलती आग में गिरे और जो अपनी शराफ़त व सलामती की बदौलत हमेशा अम्न व चैन से रहे, दोनों में कौन बेहतर है?

यानी वह ख़्वाह मख़्वाह अपने टेढ़ेपन से नसीह़त की बात में शुब्हात पैदा करते हैं, ह़ालांकि उस में झूठ की गुन्जाईश किसी तरफ़ से नहीं। वह नसीह़त क्या है? एक साफ़ और मज़बूत किताब जिस का इन्कार एक बेवकूफ़ या शरीर आदमी के सिवा कोई नहीं कर सकता।

42 لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

यानी उसकी उतारी हुई किताब में झूठ आये तो किधर से आये और जिस किताब की ह़िफ़ाज़त का वह ज़िम्मेदार होता है, बातिल की क्या मजाल है कि उस के पास फटक सके।

43-44 مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ
قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

यानी मुन्किरीन का जो मामला आप के साथ है, यही हर ज़माने के मुन्किरीन का पैग़म्बरों के साथ रहा। पैग़म्बरों ने हमेशा ख़ैर ख़्वाही की है, उन्होंने इस के जवाब में हर तरह़ की तक्लीफ़ें पहुँचाईं, फिर जिस तरह़ पैग़म्बरों ने सख़्तियों पर सब्र किया, आप भी सब्र करते रहिये। नतीजा यह होगा कि कुछ लोग तौबः कर के राहे रास्त पर आ जाएँगे जिन के लिए अल्लाह के यहाँ माफ़ी है और कुछ अपनी बद्‌तमीज़ी

और ज़िद पर क़ायम रहेंगे, जो आख़िरकार दर्दनाक सज़ा के ह़क़्दार होंगे।

यानी एक बात को न मानना हो तो आदमी हज़ार ह़ीले बहाने निकाल सकता है। मक्का के इन्कारियों ने और कुछ नहीं तो यही कहना शुरु कर दिया कि साह़ब! अ़रबी पैग़म्बर का मोअ़जिज़ा तो हम उस वक़्त समझते जब क़ुर्आन अ़रबी के सिवा किसी और ज़बान में आता, लेकिन फ़र्ज़ कीजिए अगर ऐसा होता तो झुठलाने के लिए यूँ कहने लगते कि भला कहीं ऐसी बेजोड़ बात भी देखी है कि रसूल अ़रबी और वह क़ौम भी जिस को समझाना है अ़रब, मगर किताब भेजी जाए ऐसी ज़बान में जिस का एक शब्द भी अ़रब लोग न समझ सकें।

यानी बेहूदा शक तो कभी ख़त्म नहीं होंगे। हाँ, इतना अनुवाद हर एक आदमी कर सकता है कि यह किताब मुक़द्दस अपने ऊपर ईमान लाने और अ़मल करने वालों को कैसी अ़जीब हिदायत और सूझबूझ अ़ता करती है और उन के सदियों के रोग मिटा कर किस तरह़ भला चंगा कर देती है।

यानी जिस तरह़ आँखें सूरज की रौशनी में चौधिया जाती हैं, इन मुन्किरों को भी क़ुर्आन की रौशनी में कुछ नज़र नहीं आ रहा है। इस में क़ुर्आन का क्या क़ुसूर है, मुन्किरों को चाहिए कि अपनी निगाह के इलाज की तरफ़ मुतवज्जेह हों।

यानी किसी को दूर से आवाज़ दो तो नहीं सुनता और सुनता है तो अच्छी तरह़ समझता भी नहीं। इसी तरह़ मुन्किरीने क़ुर्आन भी सच्चाई से इतने दूर हैं कि ह़क़ की आवाज़ उन के दिल के कानों तक नहीं पहुँचती और कभी पहुँचती भी है तो उस का सह़ी मतलब नहीं समझते।

45 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

यानी जैसे आज क़ुर्आन के मानने और न मानने वालों में इख़्तिलाफ़ है, पहले तौरेत के बारे में भी ऐसा ही इख़्तिलाफ़ कर चुके हैं। फिर देख लो वहाँ क्या अन्जाम हुआ था। बात वही है कि फ़ैसला आख़िरत में है।

यानी उनके शुकूक व शुब्हात उन को चैन से नहीं बैठने देते, हर वक़्त दिल में खटकते रहते हैं।

46 مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

यानी अल्लाह के यहाँ ज़ुल्म नहीं। हर आदमी अपने अ़मल को देख ले जैसा करेगा वही सामने आएगा। न किसी की नेकी उस के यहाँ ज़ाया होगी, न किसी की बदी दूसरे पर डाली जाएगी।

चूंकि नेकी व बुराई का पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन मिलेगा और काफ़िर अक्सर सवाल करते थे कि क़ियामत कब आएगी, इसलिए आगे इस के बारे में इर्शाद होता है اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ

आयत नं० 47 से 54 तक

*
إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ
شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ۝ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ لَّا
يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا
لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ
عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن
كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ
حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝

अनुवाद-

(47) क़ियामत की घड़ी का इल्म 'उसी' की ओर लौटता है, जो फल भी अपने कोषों से निकलते हैं और जो माँ भी गर्भवती होती, और बच्चा जनती है, मगर 'उसे' उन सब का इल्म होता है, और जिस दिन 'वह' उन्हें पुकारेगा ''कहाँ हैं मेरे साझीदार?'' तो वे कहेंगे, '' हम तेरे सामने कह चुके हैं कि हममें से कोई भी इसका गवाह नहीं;'' (48) और जिन्हें वे पहले पुकारा करते थे उनसे गुम हो जाएँगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई भी भागने की जगह नहीं। (49) इन्सान भलाई मांगने से नहीं उकताता, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँच जाती है तो निराश होकर मायूस हो जाता है; (50) और अगर तकलीफ़ पहुँचने के बाद 'हम' उसे अपनी रह़मत का मज़ा चखाते हैं, तो कहता है, ''मैं तो इसका हक़दार था, और मैं यह नहीं समझता था कि क़ियामत क़ायम होगी, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया तो मेरे लिए वहाँ भी खुशहाली ही होगी।'' तो 'हम' इन काफ़िरों को ज़रूर बताएँगे जो कुछ उन्होंने किया होगा और हम उन्हें ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे; (51) और जब 'हम' इन्सान को नेअ़मत से नवाज़ते हैं तो वह मुँह फेर लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो लम्बी चौड़ी दुआएँ करने लगता है। (52) कह दीजिए, ''क्या तुमने देखा नहीं! कि अगर यह (क़ुर्आन) ''अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने इसका इन्कार कर दिया, तो उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा, जो मुख़ालिफ़त में दूर जा पड़ा हो?'' (53) जल्द ही 'हम' उनको अपनी निशानियाँ आफ़ाक़ (वह्य क्षेत्र) में दिखाएँगे और उनके अपने अन्दर भी, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि यह (क़ुर्आन) ह़क़ है, क्या तुम को यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर गवाह है? (54) देखो ये अपने रब से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुए हैं, जान लो! कि 'वह' हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।

आयत नं० 47 से 54 तक की व्याख्या

47 إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ

إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ۝

यानी उसी को ख़बर है कि क़ियामत कब आएगी। बड़े से बड़ा नबी और फ़रिश्ता भी उस के वक़्त को तय नहीं कर सकता। जिस से दर्याफ़्त करोगे यही कहेगा "مَا الْمَسْئُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ" यानी इल्म इलाही हर चीज़ को घेरे हुए है। कोई खजूर अपने गाभे से, कोई दाना अपने ख़ोशे से और कोई मेवा या फल अपने ग़िलाफ़ से बाहर नहीं आता कि जिस की ख़बर अल्लाह को न हो।

किसी औरत या किसी मादा के पेट में जो बच्चा मौजूद है और जो चीज़ वह जन रही है सब कुछ अल्लाह के इल्म में है। इसी तरह समझ लो कि मौजूदा दुनिया के नतीजे के तौर पर जो आख़िरत का ज़ुहूर और क़ियामत आने वाली है उस का वक़्त भी अल्लाह ही को मालूम है कि कब आएगी। कोई इन्सान या फ़रिश्ता इस की ख़बर नहीं रखता और न उस को ख़बर रखने की ज़रूरत है। ज़रूरत इस की है कि आदमी क़ियामत की ख़बर पर अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ यक़ीन रखे और उस दिन की फ़िक्र करे जब कोई शरीक काम न आएगा और कहीं मदद्गार न मिलेगा।

यानी "जिन को मेरी ख़ुदाई में शरीक ठहराते थे, अब बुलाओ वह कहाँ है"?

यानी हम तो आप से साफ़ अ़र्ज़ कर चुके है कि हम में कोई मुजरिम नहीं है जो इस जुर्म का एतिराफ़ करने को तैयार हो यानी उस वक़्त निहायत दीदहदिलेरी से झूठ बोलकर वाक़िये का इन्कार करने लगेंगे।) और बाज़ ने शहीद का अर्थ शाहिद लेकर यह मतलब लिया है कि उस वक़्त हम में से कोई उन शरीक करने वालों को यहाँ नहीं देखता कि वह सब कहाँ गये।

48-49 وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ لَا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ
مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۝

यानी दुनिया में जिन्हें अल्लाह का शरीक बनाकर पुकारते थे आज उन का कहीं पता नहीं। वह अपने पुजारियों की मदद को नहीं आते और पुजारियों के दिलों से भी वह पुकारने के ख़यालात अब ग़ायब हो गये, उन्होंने भी समझ लिया कि ख़ुदाई सज़ा से बचने का अब कोई रास्ता नहीं और निजात का कोई ज़रिया नहीं। आख़िर उम्मीद तोड़ कर बैठे रहे और जिन की हिमायत में पैग़म्बरों से लड़ते थे, आज उन से बेतअ़ल्लुक़ी और बेज़ारी का इज़्हार करने लगे।

50 وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ
إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

यानी इन्सान की तबीअ़त अ़जीब तरह़ की है। जब दुनिया की ज़रा सी भलाई पहुँचती है और कुछ ऐ़श, आराम व तन्दुरुस्ती मह़सूस होती है तो चाहता है कि और ज़्यादा मज़े उड़ाये। किसी ह़द पर पहुँच कर उस की ह़िर्स का पेट नहीं भरता, अगर बस चले तो सारी दुनिया की दौलत लेकर अपने घर में भर ले, लेकिन जहाँ ज़रा कोई आफ़त आई और ज़ाहिरी अस्बाब का सिल्सिला अपने ख़िलाफ़ देखा तो फिर

मायूस और नाउम्मीद होते भी देर नहीं लगती। उस वक़्त उस का दिल फ़ौरन उम्मीद तोड़ देता है क्योंकि उस की नज़र सिर्फ़ ज़ाहिरी अस्बाब पर सीमित होती है। उस मालिक पर यकीन नहीं रखता जो चाहे तो एक आन में तमाम अस्बाब को उलट-पलट कर के रख दे।

इस मायूसी के बाद अगर फ़र्ज़ कीजिए अल्लाह ने तक्लीफ़ व मुसीबत दूर कर के अपनी मेहरबानी से फिर ऐ़श व राह़त का सामान कर दिया तो कहने लगता है मैंने फ़लाँ तद्बीर (योजना) की थी, मेरी तद्बीर (योजना) और क़ाबिलियत से यूँ ही होना चाहिए था। अब न अल्लाह की मेहरबानी याद रही न अपनी वह मायूसी की कैफ़ियत जो चन्द मिनट पहले दिल पर तारी थी।

अब ऐ़श व आराम के नशे में ऐसा मस्त हो जाता है कि आइन्दा भी किसी मुसीबत और तक्लीफ़ के पेश आने का ख़त्रा नहीं रहता। समझता है कि हमेशा इसी ह़ालत में रहूँगा और अगर कभी इस बीच क़ियामत का नाम सुन लेता है तो कहता है कि मैं तो ख़याल नहीं करता कि यह चीज़ कभी होने वाली है और फ़र्ज़ कीजिए कि ऐसी नौबत आ ही गई और मुझ को लौट कर अपने रब की तरफ़ जाना ही पड़ा तब भी मुझे यक़ीन है कि वहाँ मेरा अन्जाम बेहतर होगा।

अगर मैं अल्लाह के नज़्दीक बुरा और नालायक़ होता तो दुनिया में मुझ को यह ऐ़श व बहार के मज़े क्योंकर मिलते, लिहाज़ा वहाँ भी उम्मीद है कि यही मामला मेरे साथ होगा।

यानी दुनिया में ख़ुश हो लो कि इस कुफ़्र व ग़ुरूर के बावजूद वहाँ पहुँचकर पता लग जाएगा कि इन्कारियों को कैसी सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ी।

51 وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِۦ وَإِذَا مَسَّهُ ٱلشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ۝

यानी अल्लाह की नेअ़मतों से फ़ायदा उठाने के वक़्त तो नाशुक्री करता और बिल्कुल बेपरवाह होकर उधर से करवट बदल लेता है। फिर जब कोई तक्लीफ़ और मुसीबत पेश आती है तो उसी अल्लाह के सामने हाथ फैला कर लम्बी चौड़ी दुआएँ माँगने लगता है, शर्म नहीं आती कि अब उसे किस मुँह से पुकार रहा है और तमाशा यह है कि बाज़ अवक़ात अस्बाब पर नज़र कर के दिल अन्दर से मायूस होता है। उस ह़ालत में भी बद्ह़वास और परेशान होकर दुआ़ के हाथ बेअख़्तियार अल्लाह की तरफ़ उठ जाते हैं। दिल में नाउम्मीदी भी है और ज़बान पर अल्लाह का नाम भी।

52 قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ۝

ऊपर इन्सान की तबीअ़त का अ़जीब व ग़रीब नक़्शा खींच कर उस की कमज़ोरियों और बीमारियों पर प्रभावी अन्दाज़ में तवज्जोह दिलाई थी। अब तम्बीह करते हुए कहते हैं कि यह किताब जो तुम्हारी कमज़ोरियों पर आगाह करने वाली और अन्जाम की तरफ़ तवज्जोह दिलाने वाली है, अगर अल्लाह के पास से आई हो (जैसा कि कहते हो) फिर तुम ने उस को न माना और ऐसी किताब के इन्कारी रह कर अपने अन्जाम की फ़िक्र न की, बल्कि ह़क़ की मुख़ालिफ़त (विरोध) में दूर होते चले गये तो क्या इस से बढ़कर गुमराही और नुक़्सान कुछ और हो सकता है।

53 سَنُرِيهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۭ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ

यानी कुर्आन की सच्चाई के दूसरे दलायल के बजाय अब हम उन इन्कारियों को खुद उन की जानों में और उन के चारों तरफ़ सारे अ़रब बल्कि सारी दुनिया में अपनी कुद्रत के वह नमूने दिखलाएँगे जिस से कुर्आन की सच्चाई बिल्कुल आँखों से नज़र आने लगेगी। वह नमूने क्या हैं? वही इस्लाम के अ़ज़ीमुश्शान विषय जो ज़ाहिरी अस्बाब के बिल्कुल ख़िलाफ़ कुर्आनी पेशीनगोइयों के मुताबिक़ हैं।

चुनाँचे 'बद्र' में कुफ़्फ़ारे मक्का ने ख़ुद अपनी जानों के अन्दर 'फ़तेह़ मक्का' में अ़रब के अन्दर और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में तमाम जहान के अन्दर यह नमूने अपनी आँखों से देख लिये और यह भी मुम्किन है कि 'आयात' से आ़म निशान-ए-कुद्रत मुराद हों जो ग़ौर करने वालों को अपने वजूद में और अपने वजूद से बाहर तमाम दुनिया की चीज़ों में नज़र आते हैं, जिन से अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत का सुबूत मिलता है और कुर्आन की तस्दीक़ होती है।

यानी कुर्आन को फ़र्ज़ कीजिए कि कोई न माने तो अकेले अल्लाह की गवाही क्या कम है जो हर चीज़ पर गवाह है और हर चीज़ में ग़ौर करने से उस की गवाही का सुबूत मिलता है।

54 اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاۗءِ رَبِّهِمْ ۭ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ

यानी यह इस धोके में हैं कि क्या कभी उस अल्लाह से मिलना और उस के सामने जाना नहीं है, ह़ालांकि अल्लाह तआ़ला हर वक़्त हर चीज़ को घेरे हुए है, किसी वक़्त भी उस के क़ब्ज़े और अह़ाता से निकल कर नहीं जा सकते। अगर मरने के बाद उन के बदन के ज़र्रात मिट्टी में मिल जाएँ या पानी में बह जाएँ या हवा में बिखर जाएँ तब भी एक-एक ज़र्रह पर अल्लाह का इल्म और कुद्रत है, उन को जमा कर के नये सिरे से ज़िन्दा कर देना कुछ मुश्किल नहीं।

(भाग–42)

सूर–ए–शूरा

(सूरः नं. 42)

तफ़्सीर सूरः शूरा

नाम– आयत नं० (38) وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ से यह नाम लिया गया है। इसे सूरः हामीम, ऐ़न, सीन, क़ाफ़ भी कहते हैं।

नाज़िल होने का ज़माना–

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास व ह़ज़रत इब्ने अल् ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के नज़्दीक पूरी सूरः मक्की है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ आयत नं० (23) قُلْ لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ से चार आयतें मदनी हैं।

'क़तादा' का भी यही क़ौल है, आ़म मक्की सूरतों की हर तरह़ इस सूरः में भी अहले क़ुरैश को बहुत ही दिल नशीन अन्दाज़ में ईमान व तौह़ीद और वह़्य व रिसालत पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है।

आयत नं० 1 से 11 तक

حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ
عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ
الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُـحْيِ الْمَوْتٰى ۡ
وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝
فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ
شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝

अनुवाद-

(1) हामीम् (2) अ़ैन्- सीन् क़ाफ़् (3) इसी तरह अल्लाह जो बड़ा शक्तिशाली और ह़िकमत वाला है, तुम्हारी ओर और उनकी ओर जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं वह़्य (प्रकाशना) भेजता रहा है। (4) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, और 'वह' बुलन्द (और) महान है। (5) क़रीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़ें फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिए माफ़ी माँगते रहते हैं, सुन लो! अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (6) और जिन लोगों ने 'उसको छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना लिए हैं, अल्लाह उनकी निगरानी किये हुए है, और तुमको उन पर ज़िम्मेदार नियुक्त नहीं किया गया। (7) और इसी तरह 'हमने' आप की ओर एक अ़रबी क़ुर्आन की वह़्य (प्रकाशना) की है, ताकि आप केन्द्रीय बस्तियों (मक्का) के रहने वालों और जो लोग उसके चारों ओर हैं उनको सचेत कर दें, और सचेत करें इकट्ठा होने के दिन से, जिसमें कोई सन्देह नहीं, (उस दिन) एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह भड़कती आग में। (8) और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, लेकिन 'वह जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल कर लेता है, और ज़ालिमों का न कोई संरक्षक है और न मदद्गार। (9) क्या उन्होंने 'उसको' छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना रखा है? संरक्षक तो अल्लाह ही है, और 'वही' मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है। (10) और जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है, 'वही' अल्लाह मेरा 'रब' है, 'उसी' पर मैंने भरोसा किया, और 'उसी' की ओर रूजूअ़ होता हूँ। (11) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला 'जिसने' तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े, और मवेशियों के भी जोड़े बनाए इसी तरह 'वह' तुम्हारी नस्लें और फैलाता है 'उसके' जैसी कोई चीज़ नहीं, और 'वह' सुनने वाला, देखने वाला है।

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1-2 حٰمٓ ۚ عٓسٓقٓ ۝

इस से पहले 'हुरूफ़ मुक़त्तआ़त' जैसे हा०मीम० आदि से शुरु होने वाली कई सूरतों की तफ़्सीर के शुरु में यह लिखा जा चुका है कि इन हुरूफ़ मुक़त्तआ़त का मतलब अल्लाह तआ़ला ही बेहतर जानते हैं।

3 كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

यानी आप पहले रसूल नहीं हैं जिस पर पहली बार अल्लाह तआ़ला ने वह़्य नाज़िल की हो, आप से पहले बहुत से अम्बिया आये जिन पर अल्लाह ने अपनी वह़्य नाज़िल की थी और अहले मक्का इस बात से ख़ूब वाक़िफ़ हैं। इसलिए अगर अल्लाह ने आप पर वह़्य नाज़िल की है तो उन्हें तअ़ज्जुब क्यों है?

सूरः निसा आयत नं० (163) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝

"यक़ीनन हम ने आप की तरफ़ उसी तरह़ वह़्य की है जिस तरह़ नूह़ और उन के बाद आने वाले नबियों की तरफ़ की और हम ने वह़्य की ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत इस्माईल, ह़ज़रत इस्ह़ाक़, ह़ज़रत याक़ूब और उन की औलाद पर और ह़ज़रत ईसा, ह़ज़रत अय्यूब, ह़ज़रत यूनुस, ह़ज़रत हारून, ह़ज़रत सुलेमान की तरफ़ और हम ने ह़ज़रत दाऊद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई"।

इस क़ुर्आन को बज़रिये वह़्य आप पर उस अल्लाह ने नाज़िल किया है जो हर चीज़ पर ग़ालिब व क़ुद्रत वाला है और उस का कोई क़ौल व फेअ़ल ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता। वह आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ का मालिक है, वह सब से आ़ला और सब से अ़ज़ीम (महान) है। उस की अ़ज़्मत तो ऐसी है और उस का जलाल तो वह जलाल है कि जिस की ताब न लाकर आसमान फटकर एक दूसरे पर गिर जाएँ तो कोई ह़ैरत की बात नहीं।

वह तो ऐसा है जिस की ह़म्द व सना बयान करने और उस की अ़ज़्मत व बड़ाई का गुण गाने में तमाम फ़रिश्ते हर लम्ह़ा और हर आन मशग़ूल (Busy) रहते हैं और अहले ईमान रब्बुल् आ़लमीन के लिए दुआ़-ए-मग़्फ़िरत करते रहते हैं, इसलिए उन्हें मालूम है कि अल्लाह बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला और अपने बन्दों पर मेहरबान है।

4-6 لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ
وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝
وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

मुश्रिकीने मक्का के शिर्क का इन्कार करते हुए और उन्हें धमकी देते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया

कि जो लोग अल्लाह के सिवा मूर्तियों को अपना वली और दोस्त बना लेते और उन की अ़िबादत करते हैं, अल्लाह उन के तमाम आ़माल को लिख रहा है और क़ियामत के दिन उन्हें उन का बदला ज़रूर देगा।

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली के लिए फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप पर उन की हिदायत की ज़िम्मेदारी नहीं है कि उन के गुनाहों की पकड़ आप से हो, आप तो पैग़म्बर हैं और आप की ज़िम्मेदारी केवल उन तक पैग़ाम पहुँचा देना है।

बाज़ ह़ज़रात के नज़्दीक इस आयत का हुक्म आयते जिहाद के ज़रिये मन्सूख़ (निरस्त) है।

7 وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ
فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝

यानी जिस तरह़ हम ने आप से पहले दूसरे अम्बिया पर वह़्य नाज़िल की थी, उसी तरह़ आप पर इस क़ुर्आन को निहायत साफ़ अ़रबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि आप अहले मक्का और उन के इर्द गिर्द रहने वालों को उन की ही ज़बान में अल्लाह का पैग़ाम सुना सकें और क़ियामत के दिन रुस्वाई से डरा सकें।

जब तमाम मख़्लूक़ जमा होंगी और सब के सामने मुश्रिकों, काफ़िरों और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ घसीट कर लाया जाएगा और जो अहले ईमान होंगे और इस दुनिया में नबी करीम (सल्ल०) की पैरवी करेंगे, उन्हें जन्नत में भेज दिया जाएगा।

8 وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظّٰلِمُونَ مَا لَهُم مِّن
وَلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ۝

अल्लाह तआ़ला इस बात पर पूरी क़ुद्रत रखता है कि वह तमाम इन्सानों को दीने इस्लाम का पाबन्द (Punctual) बना दे, लेकिन उस की मर्ज़ी यह है कि लोग अपने अख़्तियार से जो चाहे करें और अल्लाह जिस को चाहे अपनी रह़मत से दीने इस्लाम में दाख़िल कर दे, अपनी जन्नत का ह़क़्दार बना दे और जो लोग अपने फ़ित्री टेढ़ेपन की वजह से ह़क़ की राह से दूर हो जाएँगे और ज़ुल्म व शिर्क की राह अपनाएँगे, क़ियामत के दिन उन का कोई मदद्गार नहीं होगा।

9 أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

मुश्रिकीन के रवैये पर हैरत व तअ़ज्जुब का इज़्हार किया जा रहा है कि उन्होंने कैसे इस बात को गवारा कर लिया कि अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना वली व कारसाज़ मान लिया, अल्लाह के सिवा कोई भी ह़क़ीक़ी कारसाज़ नहीं है, वह तो मुर्दों को ज़िन्दा करता है। उस के सिवा कौन इस की क़ुद्रत रखता है, वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है और उस के सिवा कोई किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, इसलिए उस के सिवा ग़ैरों को कारसाज़ मानना ज़ुल्म अ़ज़ीम है और बड़ी ह़ैरत व तअ़ज्जुब है।

10 وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللّٰهِ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

तमाम इन्सानों को मुख़ातब कर के कहा जा रहा है कि दुनिया व दीन के किसी भी मामले में अगर तुम्हारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ (असहमति) होगा तो इस का फ़ैसला अल्लाह तआ़ला करेगा, जिस का हर फ़ैसला अ़द्ल व इन्साफ़ पर होता है।

'साहिबे मुहासिनुल् तन्ज़ील' लिखते हैं आयत में इशारा है कि सच्चा दीन सिर्फ़ इस्लाम है और मुशिरकीने मक्का और दूसरे मुशिरकीन का दीन व मज़हब उन के पूर्वजों की मुशिरकाना रस्में और ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी है और अगरचे यह सूरत मक्की है, लेकिन यह आयत दलालत करती है कि जिन मसायल व मामलात में इख़्तिलाफ़ हो जाए उन में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ह़दीस ही फ़ैसल क़रार पाएगी।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह मुशिरकीन को बता दें कि मेरा रब वही रब ज़ुल् जिलाल है, जो ह़ाकिम, आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) है और जिस का फ़ैसला हर फ़ैसले पर ग़ालिब है, इस के सिवा मेरा कोई रब नहीं है। मैं केवल उसी पर भरोसा रखता हूँ और अपने आप को उसी के ह़वाले कर दिया है और मैं हर ह़ाल में उसी की तरफ़ पलटता हूँ।

11 فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ
يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝

मेरा रब वह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और जिस ने तुम्हारी ही जिन्स से तुम्हारी बीवियों को पैदा किया यानी जो ह़व्वा को आदम (अ़लै०) की पंसुली से पैदा किया, फिर मर्द व औ़रत के मिलाप से नस्ल इन्सानी को बाक़ी रखा, और मेरा रब वह है जिस ने जानवरों के भी मुज़क्कर (Masculine) व मुअन्नस (Femiline) जोड़े पैदा किये हैं, उस अल्लाह ने मर्द व औ़रत और मुज़क्कर व मुअन्नस के आपसी मिलाप से इन्सानों और तमाम जानवरों और जानवरों की नस्लों को बाक़ी रखा और उन की तअ़दाद को बढ़ाकर दुनिया में फैला दिया है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने अपनी सिफ़ात बयान की हैं कि कोई चीज़ उस के बराबर नहीं है, वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में अकेला और तन्हा है और वह तमाम आवाज़ों को सुनने वाला और तमाम कायनात की ख़बर रखने वाला है।

आयत नं० 12 से 19 तक

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا
وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۚ
كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا
الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۚ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اَللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ
غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۚ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝
يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ۚ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي
السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝

अनुवाद-

(12) आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ ‘उसी’ के क़ब्ज़े में हैं, ‘वह’ जिसे चाहता है कुशादा रोज़ी देता है, और (जिसे चाहता है) नपी-तुली कर देता है, बेशक ‘वह’ हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। (13) ‘उसने’ आप के लिए वही दीन निर्धारित किया है जिसकी हिदायत ‘उसने’ नूह को की थी, और जिसकी वह्य ‘हमने’ आप की ओर की है, और जिसकी हिदायत ‘हमने’ इब्राहीम और मूसा, और ईसा को की थी कि ‘‘दीन को क़ायम रखो और इस मामले में विभेद न करो,’’ आप जिसकी ओर मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को बुलाते हैं वह उन पर भारी पड़ता है, अल्लाह जिसे चाहता है अपनी राह के लिए चुन लेता है, और अपनी ओर रहनुमाई उसी को करता है जो ‘उसकी’ ओर रूजूअ़ होता है। (14) और ये लोग आपस में एक-दूसरे से (ज़िद की वजह से) अलग-अलग बट गये, इसके बावजूद कि उनके पास इल्म आ चुका था, और अगर तुम्हारे ‘रब’ की ओर से एक निश्चित अवधि तक के लिए बात तय न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो लोग उनके बाद किताब के वारिस हुए वे ‘उसकी’ ओर से शक की उलझन में हैं। (15) तो आप उसी दीन की दअ़वत दीजिए और उसी पर क़ायम रहिए जैसा कि आप को हुक्म दिया गया है, और उनकी इच्छाओं के पीछे न चलिए, और कह दीजिए, ‘‘अल्लाह ने जो किताब उतारी है उस पर मैं ईमान लाया, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी, हमारे आ़माल हमारे लिए और तुम्हारे आ़माल तुम्हारे लिए, हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं, अल्लाह हम (सब) को इकट्ठा करेगा और ‘उसी’ की ओर लौट कर जाना है।’’ (16) और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, इसके बाद कि उसकी पुकार क़ुबूल कर ली गई, उनकी हुज्जत (तर्क) उनके रब के नज़दीक व्यर्थ हैं, और उन पर ग़ज़ब है, और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (17) अल्लाह ही तो है ‘जिसने’ हक़ के साथ किताब उतारी और मीज़ान (तराज़ू) उतारी, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत की घड़ी क़रीब

आ गई हो? (18) उसके लिए जल्दी वही लोग मचाते हैं, जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, और ईमान रखने वाले तो इससे डरते हैं और जानते हैं कि वह हक़ है; जान लो! जो लोग उस घड़ी के बारे में सन्देह डालने वाली बहसें करते हैं, वे गुमराही में दूर जा पड़े हैं। (19) अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है, 'वह' जिसे चाहता है रोज़ी देता है, और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, ग़ालिब (प्रभावी) है।

आयत नं० 12 से 19 तक की व्याख्या

12-13 لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ
لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى
وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۭ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ
اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝

उस ने आसमानों और ज़मीन में अपनी मख़्लूक़ात के लिए जो रोज़ी पैदा की है और इन्आ़मात के जो ख़ज़ाने उन में रखे हैं, उन की चाबियाँ उसी के पास हैं, वह उन में जिस तरह चाहता है अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करता है, अपने इ़ल्म व हिक्मत के तक़ाज़े के मुताबिक़ किसी की रोज़ी मे उस्अ़त देता है और किसी की रोज़ी तंग करता है। इसीलिए रोज़ी और दूसरी तमाम हाजतें उसी से माँगनी चाहिए उस के सिवा कोई पूरा करने वाला नहीं है।

आयत नं० (13) में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया है कि आप पर और आप से पहले दूसरे अम्बिया पर अल्लाह ने वह्य नाज़िल की है। इस आयते करीमा में इसी का ज़िक्र है कि अल्लाह तआ़ला ने आप को और उन चारों ऊलुलू अ़ज़्म अम्बिया को, जिन का इस आयत में ज़िक्र आया है एक ही बात का हुक्म दिया है कि सिर्फ़ उसी ज़ात की अ़िबादत की जाए जिस का कोई शरीक नहीं है।

सूरः अम्बिया आयत नं० (25) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ

"हम ने जब भी कोई रसूल भेजा तो उस को ज़रिये वह्य (यही हुक्म) किया कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं है, इसीलिए तुम सब सिर्फ़ मेरी ही अ़िबादत करो।"

सहीह़ बुख़ारी, किताबुलू अम्बिया में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरवी है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर नबी एक माँ की औलाद की तरह़ से हैं, हमारा दीन एक है (यानी एक अल्लाह की बन्दग़ी करना अगरचे हमारी शरीअ़तें मुख़्तलिफ़ रहीं हैं।)

आयत में पाँच ऊलुलूअ़ज़्म अम्बिया का ज़िक्र इसलिए आया है कि यह ह़ज़रात बड़े अम्बिया-ए-किराम थे, उन की शरीअ़तें भी अ़ज़ीम थीं और उन के मानने वाले दुनिया में बहुत बड़ी तअ़दाद में हुए हैं। इसमें काफ़िरों के दिलों को दीने इस्लाम की तरफ़ मायल (आकर्षित) करना भी मक़्सूद है इसलिए कि उन

अम्बिया-ए-किराम में बाज़ ऐसे भी हैं जिन के नबी होने पर सब का इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है जिनका दीन इस्लाम ही था।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि आप का लोगों को तौहीद की तरफ़ बुलाना कुफ़्फ़ारे क़ुरैश पर भारी गुज़रता है, लेकिन आप हिम्मत न हारिये और पूरे अ़ज़्म व दृढ़ता के साथ अल्लाह का पैग़ाम उन तक पहुँचाते रहिये, कौन क़ुबूल करता है और कौन रद्द कर देता है, यह आप की ज़िम्मेदारी नहीं है। अल्लाह अपनी हिक्मत व मस्लहत और मर्ज़ी के मुताबिक़ जिसे चाहता है ईमान लाने की तौफ़ीक़ देता है और वह इस महान भलाई को क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ उसे देता है जो अपने गुनाहों से तौबः करके उस की बन्दगी की राह पर लग जाता है और जो ग़ल्ती पर अड़ा रहता है, उसे ज़ुल्मतों में भटकता छोड़ देता है।

14 وَمَا تَفَرَّقُوٓا إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ
مُّسَمًّى لَّقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ أُورِثُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِهِمْ لَفِى شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश कहा करते थे कि अगर अल्लाह तआ़ला हमारे पास अपना कोई नबी भेजेगा तो उस पर ईमान ले आएँगे और यहूद व नसारा से ज़्यादा राहे रास्त पर चलने वाले बन जाएँगे, लेकिन जब नबी करीम (सल्ल०) मब्अूस हुए तो उन्होंने हक़ को पहचानते हुए उन की रिसालत पर ईमान लाने से सिर्फ़ इसलिए इन्कार कर दिया कि ज़माने जाहिलियत से उन की जो सत्ता चली आ रही थी वह ख़त्रे में पड़ गई थी, इसलिए दिल में हक़ को स्वीकार करने के बावजूद महज़ जाहिली शान की वजह से इसे क़ुबूल नहीं किया।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यहाँ यहूद व नसारा मुराद हैं। जैसा कि सूरः अल् बय्यिनः आयत नं० (4) में आया है: وَمَا تَفَرَّقَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ "अहले किताब अपने पास ज़ाहिरी दलील आ जाने के बाद मुतफ़र्रिक़ हो गये।"

बाज़ दूसरे मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अ़रब और यहूद व नसारा सभी मुराद हैं और यही बात मशहूर है। इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) की बेअ़सत के बाद तीनों गिरोहों में से कुछ ने उन की दअ़वत को क़ुबूल किया और कुछ ने हक़ को जानने और पहचानने के बावजूद इन्कार कर दिया।

अल्लाह तआ़ला ने हक़ का इन्कार करने वाले उन अ़रब और यहूद व नसारा के बारे में फ़रमाया कि अगर अल्लाह का यह फ़ैसला पहले ही न हो चुका होता कि उन्हें दुनिया में अ़ज़ाब देकर हलाक किया जाएगा, बल्कि क़ियामत के दिन तक उन के लिए सज़ा टाल दी गई है, तो उन के जरायम ऐसे हैं कि उन्हें तुरन्त हलाक कर दिया जाता।

आयत के आख़िर में नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में पाये जाने वाले अ़रबों और यहूद व नसारा के बारे में बताया गया है कि वह लोग क़ुर्आन, नबी करीम (सल्ल०) और दीने इस्लाम की सच्चाई के बारे में खुद शक व शुब्हा में मुब्तिला (Involve) हैं और समाज में इस्लाम के ख़िलाफ़ शक फैलाकर दूसरों को भी क़ुबूले हक़ से रोकते हैं।

15 فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَأُمِرْتُ
لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۚ اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि जिस दीन व शरीअ़त के साथ अल्लाह तआ़ला ने आप को भेजा है लोगों को उसी की तरफ़ बुलाइए और ख़ुद भी उस पर क़ायम रहिये। मुश्रिकों और यहूद व नसारा की पैरवी में उस से हरगिज़ अलग न होइये और पूरी तरह़ इस बात का एलान कर दीजिए कि मैं उन तमाम किताबों पर ईमान रखता हूँ जिन्हें अल्लाह ने नाज़िल किया है। मेरा तरीक़ा यहूद व नसारा जैसा नहीं कि अल्लाह के किसी किताब पर ईमान लाऊँ और किसी का इन्कार कर दूँ और मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है कि अगर तुम अपने किसी मामले में मेरे पास फ़ैसले के लिए आओ तो पूरे इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करुँ और अल्लाह की शरीअ़त से अलग फ़ैसला न करुँ।

ऐ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश! और ऐ यहूद व नसारा! सुन लो, कि हमारा और तुम्हारा रब अल्लाह है, उस के सिवा कोई रब नहीं, वही हर चीज़ का रब और मालिक है, हमारे आ़माल का सवाब व बदला हमारे लिए है और तुम्हारे आ़माल का तुम्हारे लिए, हर एक को उस के अ़मल का बदला चुकाया जाएगा।

और चूंकि ह़क़ ज़ाहिर हो चुका है इस में किसी शक व शुब्हा की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रही इसलिए हमारे और तुम्हारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ की कोई ज़रूरत नहीं है। हमें अपना मामला अल्लाह पर छोड़ देना चाहिए क़ियामत के दिन वह हमें ज़रूर जमा करेगा और हमारे दर्मियान फ़ैसला कर देगा, अहले ह़क़ को जहन्नम से निजात देगा, जन्नत में दाख़िल कर देगा और बातिल परस्तों को हमेशा के लिए जहन्नम में डाल देगा।

16 وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ
غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

मुजाहिद कहते हैं कि जब लोग इस्लाम में दाख़िल होने लगे तो कुछ कुफ़्फ़ार अपने दिल में तमन्ना करने लगे कि काश! जाहिलियत का ज़माना फिर लौट आता और इस्लाम रुक जाता, तो यह आयत नाज़िल हुई।

जिस का मतलब यह है कि कुफ़्फ़ार चाहते हैं कि किसी तरह़ मुह़म्मद (सल्ल०) और उस के साथी इस्लाम से दूर हो जाएँ। अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं काफ़िरों के बारे में फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उन की दलीलें हरगिज़ काम न देंगी और सूरज की तरह़ रौशन ह़क़ के इन्कार की वजह से उन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा और उन्हें सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा।

17 اللّٰهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ

इस आयते करीमा में ख़बर दी गई है कि वह अल्लाह की ज़ात है जिस ने तमाम आसमानी किताबों को नाज़िल किया है, जिन में यह हुक्म व ख़बरें बरह़क़ (सत्य) हैं और जिस ने इन्साफ़ का तराज़ू नाज़िल

किया है यानी लोगों के दिलों में डाला कि वह मीज़ान (तराज़ू) इस्तेमाल करें, ताकि अ़द्ल व इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे हों और ज़मीन पर अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न की जाए और उस की शरीअ़त के सिवा किसी का हुक्म उस के हुक्म जैसा न माना जाए।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत का दिन बिल्कुल ही क़रीब है, इसलिए ऐ मेरे नबी! आप क़ुर्आन करीम के अह़काम पर अ़मल कीजिए और अ़द्ल व इन्साफ़ के तक़ाज़ों को पूरा कीजिए उस दिन के आने से पहले जब लोगों के आ़माल वज़न किये जाएँगे और हर एक को उस का पूरा-पूरा बदला चुकाया जाएगा।

और क़ियामत के दिन की आमद की जल्दी वह लोग मचाते हैं जिन्हें उस की आमद का यक़ीन नहीं है। इसीलिए हमारे नबी से मुताल्बा करते रहते हैं कि अगर तुम्हारी बात सच है तो फिर आ ही जाए वह दिन, ज़रा हम भी देख लें। यानी दोबारा उठाये जाने की बात बिल्कुल ही बेबुनियाद और दूर की है, लेकिन जो लोग मरने के बाद क़ियामत के दिन और उस दिन की जज़ा व सज़ा पर ईमान रखते हैं, उस की आमद के ख़याल से डरते हैं, इसलिए कि वह नहीं जानते कि उस दिन उन का अन्जाम क्या होगा।

18 يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ
أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने मरने के बाद उठाये जाने की सच्चाई पर अधिक ज़ोर देते हुए फ़रमाया कि जो लोग क़ियामत के आने में शक करते हैं वह ह़क़ की राह से बहुत दूर जा चुके हैं, इतनी दूर कि जहाँ से लौटकर राहे ह़क़ पर आ जाने की कोई उम्मीद नहीं है।

19 اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर बेह़द मेहरबान और निहायत रह़म करने वाला है, उस का करम मोमिन व काफ़िर, नेक व बद् सब पर शामिल है, इसीलिए वह सब को रोज़ी देता है। काफ़िर कुफ़्र का अ़मल करता है और गुनाहगार गुनाह से दुनिया को भर देता है, फिर भी उन्हें हलाक नहीं करता है बल्कि ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक खिलाता और पिलाता रहता है।

अल्लाह जिसे चाहता है ख़ूब रोज़ी देता है और जिस पर चाहता है तंग कर देता है। इस उस्अ़त व तंगी के भेद को वही जानता है, न रिज़्क़ की बढ़ौत्तरी इस बात की दलील है कि अल्लाह उस से राज़ी है और न ही रिज़्क़ की कमी उस की नाराज़गी की दलील है।

आयत नं० 20 से 29 तक

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ
نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ
الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾ ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ
لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۚ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۚ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ
بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

अनुवाद-

(20) जो व्यक्ति आख़िरत की खेती का इच्छुक हो, हम उसकी खेती को बढ़ाते हैं और जो दुनिया की खेती का इच्छुक हो, हम उसमें से उसे कुछ दे देते हैं, और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (21) क्या उनके वे साझीदार हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा दीन निर्धारित कर दिया है जिसकी इजाज़त अल्लाह ने नहीं दी, अगर फ़ैसले की बात निश्चित न हो गई होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो ज़ालिम हैं उनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। (22) तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उससे डर रहे होंगे, और वह उन पर आ कर रहेगा, और जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे, वे जन्नत के बाग़ों में होंगे, उन के लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा जिसकी वे इच्छा करेंगे, यही है बहुत बड़ा फ़ज़्ल। (23) यही वह (इनआम है) जिसकी ख़ुशख़बरी देता है, अल्लाह अपने उन बन्दों को, जो ईमान लाए और भले काम करते रहे, (ऐ नबी) कह दीजिए, ''उनसे, मैं उस पर कोई बदला नहीं माँगता, मगर कुर्बत (निकटता) की मुहब्बत चाहता हूँ, और जो कोई नेकी कमाएगा 'हम' उसके लिए उसकी नेकी में खूबी को बढ़ाएँगे।'' बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, क़द्रदान है। (24) क्या ये लोग कहते हैं, ''इस व्यक्ति ने अल्लाह पर झूठ बांधा है?'' अगर अल्लाह चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे, और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक़ को अपने कलाम (बोल) से सत्य कर दिखाता है, बेशक 'वह' दिलों तक के भेद को जानता है। (25) और 'वही' है जो अपने बन्दों की तौबः कुबूल करता है और बुराइयों को दरगुज़र करता है, और जानता है, जो कुछ तुम करते हो। (26) और 'वह' उन लोगों की दुआ़ कुबूल करता है जो ईमान लाए और भले काम किये, और 'अपने' फ़ज़्ल से उन्हें और देता है; और जो इन्कार करने वाले (काफ़िर) हैं, तो उनके लिए सख़्त अज़ाब है। (27) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो ज़मीन में सरकशी करने लगते, लेकिन 'वह' एक खास मात्रा में जितना चाहता है उतारता है,

बेशक 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, ख़ूब देखने वाला है। (28) और 'वही' तो है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है, और अपनी रहमत को फैला देता है, और 'वही' है संरक्षक, सारी ख़ूबियों वाला। (29) और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश, और उन जानवरों का जो उसने उनमें फैला रखे हैं, और 'वह' उनको जब चाहे इकट्ठा करने पर क़ादिर (सामर्थ्य) है।

आयत नं० 20 से 29 तक की व्याख्या

20 مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ
مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

उस का करम यह है कि उस के जो नेक बन्दे अपने नेक अ़मल के बदले उस की रज़ा और हुसूले जन्नत की नियत करते हैं, वह उन के हर अ़मल का दस से सात सौ गुना तक सवाब देता है और जिसे चाहता है उस से ज़्यादा देता है। जिन का मक़्सद दुनिया और उस के वक़्ती सुखों का पाना होता है, वह उन्हें उन के आ़माल का बदला दुनिया ही में दे देता है और आख़िरत में उन्हें कोई ख़ुशी नसीब नहीं होगी, वहाँ उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

इसी मतलब को सूरः बनी इस्राईल आयात (18/19) में यूँ बयान किया गया है:-

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝
وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝

"जिस का इरादा इस जल्दी वाली दुनिया (फ़ौरी फ़ायदा) का ही हो, उसे हम यहाँ जितना चाहें देते हैं। आख़िर में उस के लिए हम जहन्नम मुक़र्रर कर देते हैं जहाँ वह बुरे हाल में धुत्कारा हुआ दाख़िल होगा और जिस का इरादा आख़िरत का हो और जैसी कोशिश उस के लिए होनी चाहिए वह करता भी हो और वह ईमान वाला भी हो, बस यही लोग हैं जिन की कोशिश अल्लाह के यहाँ पूरी की जाएगी"।

21 اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ
وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

कुफ़्र व गुनाहों की ख़राबी बयान करते हुए कहा जा रहा है कि क्या कुफ़्फ़ारे कुरैश के कुछ ऐसे शयातीन हैं जिन्होंने अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उन के लिए ऐसी शरीअ़त गढ़ दी है जो शिर्क व गुनाह का मिला हुआ मिश्रण है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा में शिर्क का इन्कार और मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का एलान है, इसीलिए इस के बाद कहा गया है कि अगर यह फ़ैसला न हो चुका होता कि उन की सज़ा क़ियामत के दिन के लिए मुवख़्ख़र (Postpone) कर दी गई है, तो उन के जुर्म का तक़ाज़ा तो यह था कि उन्हें फ़ौरन हलाक कर दिया जाता और ऐसे ज़ालिमों को क़ियामत के दिन दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाएगा।

22 تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝۲۲

यहाँ मैदाने मह़शर का एक मन्ज़र बयान किया जा रहा है कि दुनिया में शिर्क व गुनाह का अ़मल कर के अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले लोग उस दिन अपनी बद्अ़ामालियों को याद कर के अपने बुरे अन्जाम से सख़्त डरे हुए होंगे, क्योंकि उस वक़्त उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि अब आग के अ़ज़ाब से छुट्कारे की कोई सूरत नहीं है।

और जिन्होंने दुनिया में रब्बुल् आ़लमीन की परवरदिग़ारी का इक़रार कर लिया होगा, इस्लाम को बहै़सियत दीन और मुह़म्मद (सल्ल०) को बहै़सियत नबी तस्लीम कर लिया होगा और अपनी ज़िन्दग़ी नेक अ़मल के साथ गुज़ारी होगी, उन का मक़ाम ख़ूबसूरत तरीन जन्नतें होंगी जिन में उन के रब की तरफ़ से उन की मर्ज़ी की हर चीज़ मिलेगी और अहले जन्नत पर अल्लाह का यह बड़ा फ़ज़्ल व करम होगा।

23 ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ
وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝۲۳

इस में अल्लाह तआ़ला ने अहले जन्नत के लिए अपने वादे को दोहराते हुए फ़रमाया कि ख़ूबसूरत तरीन जन्नतों, बेमिसाल बाग़ात और नेअ़मतों की अल्लाह तआ़ला अपने उन नेक बन्दों को ख़ुशख़बरी देता है जो ईमान व नेक अ़मल की ज़िन्दग़ी अख़्तियार करते हैं।

आयत के दूसरे ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी फ़रमाया कि ऐ अहले क़ुरैश! इतनी अ़ज़ीम नेअ़मतों के हुसूल की तरफ़ रहनुमाई पर मैं तुम से कोई बदला नहीं चाहता सिर्फ़ इतना चाहता हूँ कि तुम लोगों के साथ मेरी जो रिश्तेदारी है उस का ख़याल कर के मुझे तक्लीफ़ पहुँचाने से बाज़ आ जाओ और दूसरों को भी मुझे तक्लीफ़ पहुँचाने से रोको, ताकि मैं बसहूलत अल्लाह का पैग़ाम उस की मख़्लूक़ तक पहुँचा सकूँ।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो बन्दा मोमिन भी कोई नेक अ़मल करेगा, तो हम उस का बदला उसे कई गुना बढ़ाकर देंगे, इसलिए कि हम तौबः करने वालों के गुनाहों को माफ़ कर देते हैं और नेकोकारों को उन के नेक आ़माल का बदला कई गुना बढ़ाकर देते हैं।

ह़ज़रत अबूहुरेरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा मेरे बारे में जैसा गुमान रखता है वैसा ही उस के गुमान के मुताबिक़ मैं उस से सुलूक करता हूँ"। (बुख़ारी)

24 اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۲۴

मुश्रिकीन कहते थे कि मुह़म्मद झूठा है, अल्लाह ने उसे अपना नबी नहीं बनाया है और न ही

बज़रिये वह्य उस पर अपना कुर्आन नाज़िल किया है। इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के उन के इस आरोप को रद्द किया है कि अगर आप हमारे नबी न होते और कुर्आन हमारा कलाम न होता, बल्कि आप का गढ़ा हुआ होता तो अल्लाह तआला आप के दिल पर मुहर लगा देता, न कोई मतलब आप की समझ में आता और न कोई शब्द आप की ज़बान से अदा होता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि वह्य का सिलसिला जारी है, कुर्आन नाज़िल हो रहा है और दीने इस्लाम के अह़काम जमा हो रहे हैं। यह इस बात की दलील है कि अल्लाह आप से राज़ी है और कुर्आन हमारा कलाम है और मुश्रिकीने अ़रब झूठे हैं।

आयत के दूसरे हिस्से में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह बहरहाल बातिल की जड़ों को काट देता है और कुर्आनी आयात के ज़रिये ह़क़ की जड़ों को मज़बूत कर देता है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में भी मुश्रिकीने मक्का के पिछले आरोपों को रद्द किया गया है कि अगर कुर्आन अल्लाह का कलाम न होता तो वह उसे ज़रूर मिटा देता। गोया इस में नबी करीम (सल्ल०) के लिए वादा है कि अल्लाह तआला मुश्रिकीन के आरोप को कामियाब नहीं होने देगा और कुर्आने करीम के ज़रिये दअ़वते ह़क़ की जड़ों को वह ज़रूर मज़बूत करेगा।

चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात के वक़्त जज़ीर-ए-अ़रब मुश्रिकों से पाक हो गया और तौह़ीद का झंडा हर तरफ़ लहराने लगा।

25 وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۙ

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिए अपने करम का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि वही है जो अपने बन्दों की तौबः क़ुबूल करता है, उन के गुनाहों को माफ़ कर देता है और वह अपने बन्दों के तमाम करतूतों से ख़ूब वाक़िफ़ है और वही है जो ईमान व अच्छे अ़मल की ज़िन्दगी अख़्तियार करने वालों को क़ियामत के दिन उन की नेकियों का पूरा-पूरा बदला देगा, बल्कि अपने फ़ज़्ल व करम से उन्हें ज़्यादा देगा यानी जो माँग नहीं करेंगे वह भी देगा और जो लोग इस दुनिया में कुफ़्र व सरकशी की राह अख़्तियार करेंगे, उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देगा।

26-29 وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۚ وَهُوَ الْوَلِىُّ
الْحَمِيْدُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى
جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۝

अल्लाह तआला ने अपनी क़ुद्रत और इ़ल्म व ह़िक्मत को बयान करते हुए फ़रमाया कि अगर वह अपने तमाम बन्दों की रोज़ी में ख़ूब वुस्अ़त (वृद्धि) कर देता, तो नतीजा यह होता कि वह ज़मीन में सरकशी करने लगते, घमण्ड व गुरूर में मुब्तिला (Involve) हो जाते और अल्लाह से वह कुछ माँगने लगते जिस

का उन्हें कोई ह़क़ न पहुँचता, इसीलिए वह उन्हें उतनी ही रोज़ी देता है जो उस की मर्ज़ी व ह़िक्मत के मुताबिक़ होती है। वह अपने बन्दों के ह़ालात व ज़रूरियात से ख़ूब वाक़िफ़ है।

और अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुद्रत व ह़िक्मत के मिले जुले तक़ाज़े के मुताबिक़ बारिश को रोक लेता है यहाँ तक कि ज़मीन सूख जाती है, क़ह़त साली (Drought) से इन्सान और चौपाये बद्ह़ाल होने लगते हैं, यहाँ तक कि बारिश से बिलूकुल नाउम्मीद हो जाते हैं और अल्लाह की मर्ज़ी के सामने अपने आप को बिलूकुल मजबूर व बेबस समझने लगते हैं और मुश्रिकीन के झूठे पूज्यों की बेबसी भी खुलकर सामने आ जाती है कि अगर उपास्य हैं और किसी क़िस्म की क़ुद्रत रखते हैं तो फिर अपनी पूजा करने वालों की मदद के लिए आगे क्यों नहीं बढ़ते हैं और आसमान से बारिश क्यों नहीं नाज़िल करते? तब अल्लाह की रह़मत जोश में आती है और बाराने रह़मत के ज़रिये वह अपने बन्दों की नाउम्मीदी व परेशानी को दूर कर देता है।

ह़ज़रत इब्ने ऊ़मर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अगर तुम अल्लाह पर ऐसे तवक्कुल करो जैसा कि उसका ह़क़ है तो वह तुम्हें वैसे ही रिज़्क़ दे जैसा कि परिन्दों को देता है वह सुबह़ भूखे निकलते हैं और शाम को पेट भर कर लौटते हैं। (बुख़ारी)

अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत में से यह भी है कि उस ने आसमानों और ज़मीन को अ़जीब व ग़रीब तरह़ से पैदा किया, चौपाये पैदा किये, जो ज़मीन पर चलते रहते हैं और फ़रिश्ते पैदा किये जो हवा में तैरते रहते हैं और उस की क़ुद्रत में से यह भी है कि वह हर रुह़ वाली चीज़ को मौत के घाट उतार देगा और तमाम के तमाम मिट्टी में गल सड़ जाएँगे और जब क़ियामत आएगी तो इस्राफ़ील के एक सूर के ज़रिये सब को ज़िन्दा कर के अपने सामने खड़ा करेगा।

आयत नं० 30 से 43 तक

وَمَآ أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا۟ عَن كَثِيرٍ ۝ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن
وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْ ءَايَٰتِهِ ٱلْجَوَارِ فِى ٱلْبَحْرِ كَٱلْأَعْلَٰمِ ۝ إِن يَشَأْ يُسْكِنِ ٱلرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِۦٓ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا۟ وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ فَمَآ أُوتِيتُم مِّن
شَىْءٍ فَمَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَٱلَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَٰٓئِرَ ٱلْإِثْمِ وَٱلْفَوَٰحِشَ
وَإِذَا مَا غَضِبُوا۟ هُمْ يَغْفِرُونَ ۝ وَٱلَّذِينَ ٱسْتَجَابُوا۟ لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَٱلَّذِينَ إِذَآ
أَصَابَهُمُ ٱلْبَغْىُ هُمْ يَنتَصِرُونَ ۝ وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝
وَلَمَنِ ٱنتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ ۝ إِنَّمَا ٱلسَّبِيلُ عَلَى ٱلَّذِينَ يَظْلِمُونَ ٱلنَّاسَ وَيَبْغُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۚ
أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ۝

अनुवाद-

(30) और जो मुसीबत भी तुमको पहुँचती है तुम्हारे अपने करतूतों की वजह से पहुँचती है, और बहुत सी बुराइयाँ तो 'वह' माफ़ कर देता है। (31) और तुम धरती में उसके क़ाबू से (बाहर) नहीं निकल सकते, और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई संरक्षक है, और न मदद्गार, (32) और उसकी निशानियों में से समुद्र में पहाड़ों जैसे चलने वाले जहाज़ (भी हैं)। (33) अगर 'वह' चाहे तो हवा को ठहरा दे, तो वह (जहाज़) समुद्र की पीठ पर ठहरे रह जाएँ, इसमें निशानियाँ हैं हर सब्र (और) शुक्र करने वाले के लिए; (34) या, उन (जहाज़ो) को उनके करतूतों की वजह से तबाह कर दे और बहुत से क़ुसूर माफ़ भी कर दे। (35) और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें! कि उनके लिए कोई भागने की जगह नहीं। (36) तुम को जो कुछ भी दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है, और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर है और बाक़ी रहने वाला भी, वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं; (37) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से बचते रहते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं; (38) और जो अपने 'रब' का हुक्म मानते और नमाज़ क़ायम करते, और अपना मामला आपसी मश्वरे (परामर्श) से करते हैं, और जो कुछ 'हमने' उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं; (39) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म होता है तो अपना बदला लेते हैं। (40) और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फिर जो कोई माफ़ कर दे और सुधार करे तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता। (41) और जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बदला लिया, तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (42) इल्ज़ाम तो केवल उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और धरती में नाहक़ ज़्यादती करते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। (43) और जिसने सब्र से काम लिया और माफ़ कर दिया तो यह बड़े ही अज़्म (साहस) का काम है।

आयत नं० 30 से 43 तक की व्याख्या

30 وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۝

अल्लाह के इ़ल्म व कुद्रत में से यह भी है कि इन्सान का कोई अ़मल भी उस से छुपा नहीं होता है और उस का कोई भी अ़मल कुद्रती निज़ाम से ख़ारिज नहीं हो सकता है। मुसलमान को अगर कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो यह दलील होती है कि उस से कोई ग़ल्ती हुई है, जिसे अल्लाह तआ़ला इसी दुनिया में कोई तक्लीफ़ देकर मिटा देना चाहता है और बहुत सी ग़ल्तियों और ख़ताओं को वह अपने फ़ज़्ल व करम से माफ़ कर देता है, उस पर पकड़ नहीं करता।

'तिर्मिज़ी' ने अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बन्दे को कोई भी छोटी या बड़ी तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह उस के किसी गुनाह की वजह से होता है और जिन गुनाहों को वह माफ़ कर देता है वह तो बहुत ज़्यादा होते हैं"।

'वाकिदी' ने लिखा है कि यह आयते करीमा मोमिन को सब से ज़्यादा पुरउम्मीद बनाती है, इसलिए कि मोमिन के गुनाहों को दो हिस्सों में बाँट कर के एक हिस्से के बारे में कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला उसे तक्लीफ़ में मुब्तिला कर के मिटा देता है और दूसरे बड़े हिस्से को अपने फ़ज़्ल व करम से दुनिया में ही माफ़ कर देता है और काफ़िर को गुनाहों की सज़ा दुनिया में नहीं दी जाती है, उस के सारे जुर्म व गुनाह क़ियामत के दिन के लिए उठा कर रख दिये जाते हैं।

31 وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपनी कुद्रत और इ़ल्म व हि़क्मत को बयान किया है कि इन्सान के पास चाहे जितनी कुव्वत व इ़ल्म हो, वह अल्लाह को बेबस नहीं बना सकता। अगर अल्लाह चाहे तो आसमान को उस के सर पर गिरा दे और चाहे तो उसे ज़मीन में धंसा दे और कोई उसे इस काम से नहीं रोक सकता है।

32-33 وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۚ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

उस की कुद्रत, इ़ल्म व हि़क्मत और रह़मत का एक मज़्हर समुद्रों में पहाड़ों की तरह़ चलने वाली नावें हैं, जो केवल अल्लाह की कुद्रत के सहारे एक शहर से दूसरे शहर पहुँच जाती हैं। अगर अल्लाह चाहता तो हवा को रोक देता, फिर वह कश्तियाँ समुद्र में ठहरी रह जातीं या अल्लाह चाहता तो कश्ती में सवार लोगों के गुनाहों की वजह से तेज़ आँधी भेज कर उन कश्तियों को समुद्र में डुबो देता, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों के बहुत से गुनाहों को माफ़ कर देता है और उन पर रह़म करते हुए उन्हें समुद्र की नज़र नहीं करता।

यह तमाम बातें रब्बुल् आ़लमीन के वजूद, उस की कुद्रत व अ़ज़्मत और हि़क्मत व रह़मत की बड़ी

स्पष्ट दलीले हैं। जिन से वही लोग फ़ायदा उठाते हैं जो अपने रब की बन्दग़ी की राह में तक्लीफ़ें बर्दाश्त करते हैं और उस की दी हुई नेअ़मतों पर ज़बान व अ़मल के ज़रिये शुक्रिया अदा करते हैं।

34-35 أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَحِيصٍ ۝

जब कोई नाव हवा में आकर डूबने लगती है तो उस वक़्त उस में सवार अल्लाह की आयतों का इन्कार करने वाले मुशिरकीन को ख़ूब मालूम हो जाता है कि अब अल्लाह के अ़ज़ाब से उन्हें उस के सिवा कोई नहीं बचा सकता, इसलिए मूर्तियों को छोड़कर सिर्फ़ अल्लाह को पुकारने लगते हैं।

36-39 فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह जन्नत उन को मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं, सिर्फ़ उसी पर भरोसा करते हैं। बड़े गुनाह जैसे शिर्क, क़त्ल, ज़ुल्म, शराब नोशी, ह़राम और ज़िना व लवातत वग़ैरह से बचते हैं, जब उन्हें किसी पर ग़ुस्सा आता है तो उस की ग़ल्ती को माफ़ कर देते हैं, जब उन का रब उन्हें अपनी बन्दग़ी का हुक्म देता है तो तुरन्त सर झुका देते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं यानी पूरे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ तमाम वाजिबात व सुनन की रिआ़यत करते हुए नमाज़ अदा करते हैं और जब कोई अहम मामला पेश आता है तो आपस में मश्वरा करने के बाद ही क़दम उठाते हैं।

अल्लाह उन्हें जो रोज़ी देता है उस का कुछ ह़िस्सा उस की राह में ख़र्च करते हैं और जब कोई बाग़ी चढ़ दौड़ता है तो उठ खड़े होते हैं और ज़ुल्म को क़ुबूल करने से इन्कार कर देते हैं, इसलिए कि मोमिन की इ़ज़्ज़ते नफ़्स और ग़ैरत का यही तक़ाज़ा है और इसलिए भी कि ज़ालिम को ज़ुल्म से रोक देना और उसे क़ुबूले ह़क़ पर मजबूर कर देना अल्लाह के नज़्दीक क़ाबिले तअ़रीफ़ गुण है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि जो नेक बन्दे इन गुणों के साथ होंगे वह अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से दुनिया की ह़लाल नेअ़मतों से भी मह़रूम नहीं होंगे, लेकिन चूंकि जन्नत के मुक़ाबिले में उन की कोई ह़ैसियत नहीं, इसीलिए सिर्फ़ जन्नत और उस की नेअ़मतों का ज़िक्र किया गया है।

40-43 وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۝ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

ऊपर की आयत में अहले जन्नत का गुण बताया कि वह ज़ुल्म को क़ुबूल नहीं करते हैं। इसी मुनासिबत से यहाँ कहा गया है कि वह लोग ज़ालिम को उस के ज़ुल्म के मुताबिक़ ही सज़ा देते हैं, ज़्यादती नहीं करते।

आगे फ़रमाया कि बहरहाल माफ़ी-तलाफ़ी से काम लेना और दूसरों की ग़ल्तियों को नज़र अन्दाज़ कर जाना अल्लाह को ज़्यादा पसन्द है और वह अपने ऐसे बन्दों को अच्छा बदला देता है और ज़ुल्म व ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता।

जो शख़्स ज़ुल्म को क़ुबूल नहीं करता और उस पर जितनी ज़्यादती हुई होती है उतना बदला ले लेता है, तो उस का कोई मुवाख़िज़ा (पकड़) नहीं होगा, पकड़ तो उन की होगी जो दूसरों पर ज़ुल्म व ज़्यादती करते हैं और ज़मीन में जानबूझकर फ़ित्ना व फ़साद फैलाते हैं और अगर अपने किये पर शर्मिन्दा नहीं होंगे और अल्लाह के सामने तौबः नहीं करेंगे तो दुनियावी पकड़ के बाद आख़िरत में भी दर्दनाक अ़ज़ाब से दो चार होंगे।

आयत नं० (40) में जो बात कही गई थी आयत नं० (43) में उसी को मज़ीद ज़ोर देकर बयान किया गया है कि जो शख़्स किसी की तक्लीफ़ को बर्दाश्त करेगा और माफ़ कर देगा, बदला नहीं लेगा, वह बहरहाल अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक क़ाबिले गिरिफ़्त होगा, इसलिए कि वह चाहता है कि उस के बन्दे इन गुणों वाले हों।

आयत नं० 44 से 53 तक

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ
يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ
يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا
رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا
يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝

अनुवाद-

(44) और जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो इसके बाद उसका कोई संरक्षक नहीं, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अ़ज़ाब को देख लेंगे तो कहेंगे, ''क्या कोई वापसी की भी राह है?'' (45) और तुम उन्हें देखोगे कि वे उस (जहन्नम) के सामने इस तरह पेश किये जाएँगे कि अपमान से झुके हुए कन्खियों से देख रहे होंगे, और जो लोग ईमान लाए, वे कहेंगे; ''घाटे में पड़ने वाले वही हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया, ख़बरदार! बेशक ये ज़ालिम (हमेशा के लिए) अ़ज़ाब में ही रहेंगे। (46) और अल्लाह के सिवा उनका कोई दोस्त न होगा, जो उनकी मदद करे; और जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे तो उसके लिए कोई राह नहीं।'' (47) अपने 'रब' की बात मान लो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो वापस होने वाला नहीं, उस दिन तुम्हारे लिए न कोई ठिकाना होगा और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा। (48) अब भी अगर यह ध्यान में न लाएँ तो 'हमने' तो आप को उन पर कोई संरक्षक बनाकर नहीं भेजा, आप पर तो केवल पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है, और जब 'हम' इन्सान को अपनी ओर से किसी रह़मत का मज़ा चखाते हैं तो वह उस पर इतराने लगता है, और अगर उसके करतूतों की वजह से कोई मुसीबत उस पर आती है तो वह नाशुक्री करने लगता है। (49) आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है 'वह' जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है। (50) या उनको बेटे और बेटियाँ दोनों देता है, और जिसको चाहता है बेऔलाद रखता है, 'वह' तो जानने वाला, क़ुदरत वाला है। (51) और किसी बशर (इन्सान) की यह शान नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, सिवाय इसके कि वह़्य (प्रकाशना) के ज़रिये या पर्दे के पीछे से या यह कि किसी रसूल (फ़रिश्ते) को भेज दे, फिर वह उसकी इजाज़त से जो चाहे वह़्य कर दे, बेशक 'वह' ऊँची शान वाला, बड़ी हिकमत वाला है। (52) और इसी तरह 'हमने' अपने हुक्म से आप की ओर

एक रूह (फ़रिश्ता) भेजा, आप नहीं जानते थे कि किताब क्या चीज़ है और ईमान क्या चीज़ है, लेकिन 'हमने' उस (कुर्आन) को नूर (प्रकाश) बनाया, और अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं उसे राह दिखाते हैं, और बेशक आप सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई कर रहे हैं;
(53) अल्लाह के रास्ते की ओर जो आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों का मालिक है, "सुन लो! सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।"

आयत नं० 44 से 53 तक की व्याख्या

44-46 وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۴﴾ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۶﴾

अल्लाह तआ़ला जिसे गुमराह कर दे उसे कोई राहे रास्त पर नहीं ला सकता और क़ियामत के दिन मुश्रिकीन जब जहन्नम को अपनी आँखों से देख लेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश! दुनिया की तरफ़ दोबारा लौट जाने की कोई सूरत निकल आती, ताकि ईमान ले आते और एकेश्वरवादी बनकर आग़ के अ़ज़ाब से निजात पाकर जन्नत के ह़क़्दार बन जाते।

उन्हें जहन्नम के सामने लाया जाएगा तो वह ज़िल्लत व रुस्वाई की वजह से दबे होंगे और मारे ख़ौफ़ व दहशत के उस की तरफ़ अधखुली निगाहों से देखेंगे और अहले ईमान अपनी कामियाबी और जहन्नमियों की ज़िल्लत व रुस्वाई को देखकर कहेंगे कि ह़क़ीक़ी घाटा उठाने वाले आज वह लोग हैं जो अपने घरवालों के साथ जहन्नम में डाल दिये जाएँगे और जन्नत की नेअ़मतों से हमेशा के लिए मह़रूम कर दिये जाएँगे। उस वक़्त कोई नहीं होगा जो अल्लाह के मुक़ाबिले में उन की मदद के लिए आगे आ सके और ह़क़ीक़त तो यह है कि जिसे अल्लाह गुमराह कर दे वह न तो दुनिया में ह़क़ की राह पर चल सकता है और न ही आख़िरत में जन्नत की राह पर चल कर उस में दाख़िल हो सकेगा।

अल्लाह तआ़ला हम सब को दुनिया व आख़िरत की रुस्वाईयों से बचाये।

47 اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾

दुनिया व आख़िरत की रुस्वाईयों से बचने का एक ही तरीक़ा है कि रब्बुल् आ़लमीन के पैग़म्बर ने जो दअ़वत-ए-ईमान व अ़मल दी है उसे क़ुबूल किया जाये, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने यहाँ नसीह़त की है कि लोगों! अल्लाह की दअ़वत को क़ुबूल कर लो उस क़ियामत के दिन से पहले जिसे कोई टाल नहीं सकेगा, उस दिन काफ़िरों को अल्लाह के अ़ज़ाब से भाग निकलने की कोई जगह नहीं मिलेगी और न वह अपने करतूतों का इन्कार कर सकेंगे।

48 فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा गया है कि अगर लोग आप की दअ़वत को क़ुबूल नहीं करते हैं तो न करें, आप उन के ऊपर संरक्षक बनाकर नहीं भेजे गये हैं, आप का काम तो केवल पैग़ाम पहुँचाना है जो आप कर रहे हैं, उन के कुफ़्र व शिर्क का मलाल न करें और उन का मामला हमारे ह़वाले कर दें।

आयत के दूसरे ह़िस्से में काफ़िर और कमज़ोर ईमान वालों की ह़ालत बयान की गई है कि अल्लाह तआ़ला जब उसे अपनी नेअ़मतों से नवाज़ता है तो मारे ख़ुशी के आपे से बाहर निकलने लगता है और शुक्र अदा करना भूल जाता है और जब उसे उस के बुरे आ़माल की वजह से तक्लीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह की सारी नेअ़मतों और उस के सारे एह़सानात को भूल जाता है और सिर्फ़ उसी तक्लीफ़ को याद कर के नाशुक्री करने लगता है। वही काफ़िर जब नेअ़मते ईमानी से बख़्शा जाता है तो उस की ह़ालत बदल जाती है और उस की तबीअ़त में पाकीज़गी आ जाती है। जब कोई नेअ़मत मिलती है तो शुक्रगुज़ार हो जाता है और जब कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है।

ह़ज़रत सुहेब (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मोमिन हर ह़ालत में अच्छा रहता है यह मोमिन के अ़लावा किसी और के नसीब में नहीं। अगर उसे ख़ुशी मिलती है तो शुक्र करता है जो उस के लिए भलाई है और अगर तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है यह भी उस के लिए भलाई है"। **(मुस्लिम)**

49-50 لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝
أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

आसमानों और ज़मीन का बादशाह सिर्फ़ अल्लाह है। उस की बादशाहत में किसी का कोई दख़ल नहीं है, वह जैसे चाहता है और जो चाहता है पैदा करता है, किसी को बेटा देता है, किसी को बेटी देता है, किसी को दोनों देता है और किसी को बांझ बना देता है यानी उस के यहाँ औलाद नहीं होती।

इन तमाम राज़ों और भेदों को सिर्फ़ वही जानता है और वह हर बात की क़ुद्‌रत रखता है। इसलिए बन्दे को अल्लाह की तक़्दीर व क़िस्मत पर हर ह़ाल में राज़ी रहना चाहिए। इसी में उस के लिए दीन व दुनिया की भलाई है।

51 وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ
مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝

मुफ़स्सिरीन इस आयत का सबबे नुज़ूल बयान करते हैं कि यहूदियों ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा, अगर तुम नबी हो तो जिस तरह़ मूसा ने अल्लाह से बात की थी और तूर पहाड़ पर उस के जल्वे का नज़ारा किया था तुम भी उस से बात कर के हमें दिखाओ, तो यह आयत नाज़िल हुई।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, यह किसी इन्सान के लिए मुनासिब नहीं है कि अल्लाह उस से बात करे अल्बत्ता अपने पैग़ाम पहुँचाने के लिए जिसे चुन लेता है उस के पास अपनी वह्य भेजता है यानी उसे इल्हाम (अन्तःकरण) करता है और अपनी बात उस के दिल में डाल देता है। जैसे हज़रत मूसा (अ़लै०) की माँ के दिल में यह बात डाल दी कि वह मूसा को सन्दूक़ में बन्द कर के समुद्र में डाल दें और इब्राहीम (अ़लै०) को इल्हाम किया कि वह अपने बेटे इस्माईल (अ़लै०) को ज़ब्ह़ करें और कभी ऐसा होता है कि वह अपने रसूल से किसी पर्दे के पीछे से बात करता है यानी रसूल उस की बात तो सुनता है, लेकिन उसे देख नहीं पाता, जैसे मूसा (अ़लै०) के साथ हुआ था और तीसरी सूरत यह है कि अल्लाह तआ़ला कभी जिब्रईल (अ़लै०) को अपने रसूल के पास भेजता है और वह हुक्म इलाही के मुताबिक़ अपने रब का पैग़ाम वह्य के ज़रिये रसूल तक पहुँचाते हैं।

अल्लाह तआ़ला इस बात से बहुत ही बुलन्द व बाला है कि कोई मख़्लूक़ उस के सामने आकर उस से बात करे। अगर ऐसा फ़र्ज़ कर लिया जाए तो अल्लाह के नूर की रौशनी उसे भस्म कर देगी इसलिए कि यह नामुम्किन है कि उस के सामने कोई दूसरा ठहर सके और वह बड़ा ही हिक्मत व दानाई वाला है, वह ख़ूब जानता है कि अपना पैग़ाम अपने रसूल तक किस तरह़ पहुँचाए।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने आप से पूछा या रसूलल्लाह! आप पर वह्य आती है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि कभी तो ऐसे आती है जैसे घण्टे की झंकार और यह वह्य मुझ पर सख़्त गिराँ गुज़रती है। जब फ़रिश्ते का कहा मुझे याद हो जाता है तो यह ख़त्म हो जाती है और कभी फ़रिश्ता इन्सान की सूरत में मेरे पास आता है, मुझ से बात करता है, मैं उसकी कही हुई बात याद कर लेता हूँ।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने आप को इसी ह़ाल में देखा कि सख़्त सर्दी के दिन में आप पर वह्य नाज़िल होती है और फिर रुक जाती है और आप की पेशानी से पसीना निकलता। **(बुख़ारी)**

52-53

وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلٰكِن جَعَلْنٰهُ
نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِي
لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللّٰهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

आयत नं० (52) में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप तक हम ने अपनी वह्य इन्हीं तीनों तरीक़ों के ज़रिये पहुँचाई है। नुज़ूले वह्य से पहले आप को न तो क़ुर्आन का पता था और न ईमान व अ़मल की तफ़्सीलात (explanations) आप जानते थे कि ख़ुद आप को कैसे ज़िन्दगी गुज़ारनी है और दूसरों को क्या तअ़लीम देनी है। यह तो वह्य की बरकत है कि हम ने आप को क़ुर्आन दिया है जिस की रौशनी के ज़रिये हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं राहे ह़क़ की तरफ़ रहनुमाई (guidance) करते हैं और जिस की बदौलत आप लोगों को दीने इस्लाम की दअ़वत देते

हैं, जो आसमानों और ज़मीन के मालिक अल्लाह तक पहुँचने का एक ही सीधा रास्ता है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आयत में वह्य को रुह़ से इसीलिए तअ़बीर (संज्ञा) किया गया है कि इस के ज़रिये मुर्दा दिलों को ज़िन्दग़ी मिलती है।

और ऐ मेरे नबी! आप जान लीजिए कि आख़िरत में तमाम बातों का फ़ैसला सिर्फ़ अल्लाह करेगा, जो अपने बन्दों के दर्मियान पूरे अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करेगा और हर एक को उस के किये का अच्छा या बुरा बदला देगा।

(भाग-43)

सूर-ए-ज़ुख़रुफ़

(सूरः नं. 43)

तफ़्सीर सूरः ज़ुख़रुफ़

नाम– आयत नं० (35) وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ से यह नाम लिया गया है।

‘साहि़बे मुह़ासिनुत्तन्ज़ील’ ने लिखा है कि इस सूरः के नाम के लिए इस शब्द को इसलिए अख़्तियार किया गया है कि यह आयत इस बात पर दलालत करती है कि यह दुनिया अपने रब की निगाह में बेहैसियत है।

नाज़िल होने का ज़माना

क़ुर्तुबी ने लिखा है कि यह सूरः मक्की है। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है, इस के विषय बताते हैं कि यह भी उन्हीं दिनों नाज़िल हुई होगी जब अल् मोमिन, हामीम सज्दः और अल् शूरा नाज़िल हुई थीं।

आयत नं० 1 से 19 तक

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ اَفَنَضْرِبُ
عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝
فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً
مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۝ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ
تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝
وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ۝ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا
ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ۝ وَجَعَلُوا
الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ۚ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) ह़ामीम्, (2) स्पष्ट किताब की क़सम; (3) कि 'हमने' इसे अ़रबी क़ुर्आन बनाया, ताकि तुम समझो। (4) और यह 'उम्मुल-किताब' (लौहे मह़फ़ूज़) में 'हमारे' पास (लिखी हुई) बड़े ऊँचे दर्जे की, ह़िकमत वाली है। (5) तो क्या 'हम' तुम्हारी याददिहानी से इसलिए नज़र फेर लें कि तुम सीमा को पार करने वाले लोग हो? (6) और 'हमने' पहले के लोगों में भी कितने नबी भेजे थे। (7) और जो नबी भी उनके पास आता था, वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते थे। (8) तो 'हमने' उनको तबाह कर दिया जो उनमें ज़्यादा शक्तिशाली थे, और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं। (9) और अगर तुम उनसे पूछो, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है,'' तो यही कहेंगे, 'उनको ज़बर्दस्त इल्म वाले ने पैदा किया है; (10) 'जिसने' तुम्हारे लिए धरती को पालना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बना दिये, ताकि तुम राह पा सको। (11) और 'जिसने' आसमान से एक खास मात्रा में पानी उतारा, फिर 'हमने' उससे मुर्दा ज़मीन को जिला दिया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे। (12) और 'जिसने' तमाम चीज़ों के जोड़े पैदा किये, और तुम्हारे लिए नौकाएँ और जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो; (13) ताकि तुम उनकी पीठों पर चढ़ कर बैठो, फिर याद करो अपने रब की नेअ़मत को, जब तुम उन पर बैठ जाओ और कहो, ''पाक है 'वह' हस्ती 'जिसने' इसको हमारे वश में किया, और हमारे बस में न था कि उनको क़ाबू में कर लेते; (14) और हम अपने रब ही की ओर लौटने वाले हैं।'' (15) और उन्होंने उसके बन्दों में से कुछ को उसका अंश (औलाद) ठहरा लिया, बेशक इन्सान तो खुला हुआ नाशुक्रा है। (16) क्या 'उसने' खुद अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से अपने लिए बेटियां रख लीं, और तुम्हारे लिए बेटे खास कर दिये। (17) और जब उनमें से किसी को उसकी खुशख़बरी दी जाती है, जो वह रह़मान के लिए बयान करता है, तो उसके मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है। (18) क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाए और झगड़े के वक़्त बात तक न कह सके। (19) और उन्होंने फ़रिश्तों को- जो रह़मान के बन्दे हैं- औ़रतें ठहरा ली हैं, क्या ये उनकी पैदाइश (संरचना) के वक़्त मौजूद थे? तो बहुत जल्द उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे पूछा जाएगा।

आयत नं० 1 से 19 तक की व्याख्या

1 حٰمٓ ۝

यह हुरूफ़ मुक़त्तआत (अलग-अलग अक्षर) हैं और इन का मतलब अल्लाह ही बेहतर जानता है।

2-4 وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝

अल्लाह तआला ने किताबे मुबीन की क़सम खाई है, जिस से मक़्सद लोगों के दिल व दिमाग़ में क़ुर्आन करीम की अ़ज़्मत बिठाई गई है यानी यह किताबे मुबीन वह अ़ज़ीम किताब है जिस की क़सम अल्लाह तआला ने खाई है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ अहले अ़रब! उस किताबे मुबीन की क़सम जो ह़क़ व बातिल को लोगों के लिए खोलकर बयान करती है। इसे अ़रबी ज़बान में हम ने नाज़िल किया है, ताकि तुम लोग इस के मक़्सद को समझ सको और यह समझ सको कि हमारी तुम से क्या चाहत है।

यह क़ुर्आन मुबीन हमारे पास 'लौहे मह़फ़ूज़' में मौजूद है और इस का मक़ाम बहुत ही ऊँचा है और यह बड़ी ह़िक्मतों वाली किताब है। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं इस से यह बयान करना है कि आसमान वालों के दिलों में क़ुर्आन की क़द्रो क़ीमत ज़मीन वालों से कहती है कि वह भी इस का सह़ीह़ मक़ाम समझें और इस में दिये गये हुक्मों की पाबन्दी करें।

इसी अर्थ को सूरः बुरूज आयात नं. (21/22) में यूँ बयान किया गया है بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝ "बल्कि यह क़ुर्आन है बड़ी शान वाला और लौहे मह़फ़ूज़ में (लिखा हुआ।)"

5-8 اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ
مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का के कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार और क़ुर्आन करीम से लगातार मुँह फेरते हुए कहा जा रहा है, क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हारी ज़्यादतियों और ह़द से बढ़ने की वजह से हम क़ुर्आन का नाज़िल करना बन्द कर देंगे? बल्कि ह़क़ से तुम्हारा मुँह फेरना तो और इस बात को बताता है कि क़ुर्आन नाज़िल होता रहे शायद कि किसी दिन तुम्हारे दिल में ह़क़ बात उतर जाए और तुम इस्लाम समझ लो और तुम्हारे दिल की दुनिया बदल जाए।

और तुम्हारी ओर से हमारे नबी और क़ुर्आन का इन्कार कोई नई बात नहीं है, हम तुम से पहले भी बहुत से नबी भेजते रहे हैं और उन की क़ौमों ने उन का मज़ाक़ उड़ाया, उन की नुबूव्वतों और अल्लाह की किताबों का इन्कार किया तो हम ने उन में, जो सब से ज़्यादा ताक़तवर क़ौमें थीं उन्हें अ़ज़ाब भेज कर हलाक कर दिया और उन क़ौमों के वाक़िआत और उन की हलाकत व तबाही की कहानियाँ क़ुर्आन करीम में मौजूद हैं, जिन्हें सुनकर तुम्हें नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिए।

9 وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝

मुश्रिकीने मक्का के लिए एकेश्वरवाद की दअ़वत देते हुए कहा जा रहा है कि ऐ मेरे नबी! अगर आप उन से पूछेंगे कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो यही जवाब देंगे कि उन्हें उस एक मालिक ने पैदा किया है जो बड़ा इ़ज़्ज़त वाला है और जिस का इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।

उन का यह एतिराफ़ उन के जुर्म को और बढ़ा देता है और उन्हें सख़्त सज़ा का ह़क़्दार बना देता है कि इस एतिराफ़ के बावजूद उस के सिवा ग़ैरों की अ़िबादत करते हैं, बल्कि पत्थर की बनी मूर्तियों की पूजा करते हैं जो सुनने व देखने से लाचार और नफ़ा व नुक़्सान से बिल्कुल ख़ाली होते हैं।

10 الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन की बात को बढ़ाते हुए फ़रमाया कि लोगों! उस मालिक का गुण यह है कि उस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बच्चे की गोद की तरह़ बराबर और आरामदेह बनाया है जिस पर तुम चलते हो, सोते हो और अपनी तमाम ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करते हो और उस ने तुम्हारे लिए ज़मीन में पहाड़ों और वादियों के दर्मियान रास्ते बनाएँ हैं ताकि तुम उन पर चलकर एक जगह से दूसरी जगह जा सको और अपनी रोज़ी के लिए तिजारती कारोबार अन्जाम दे सको।

उस की सिफ़त यह भी है कि वह आसमान से अपनी ह़िक्मत व मस्लहत के तक़ाज़े के मुताबिक़ मुनासिब मिक़्दार में बारिश नाज़िल करता है जिस से वह मुर्दा शहरों को ज़िन्दगी देता है।

11 وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

इस आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिस तरह़ बारिश के क़त्रों से मुर्दा ज़मीन में जान आ जाती है, पौधे लहलहा उठते हैं और तरह़-तरह़ के फल और फूल उग आते हैं उसी तरह़ अल्लाह तआ़ला इस पर क़ादिर है कि वह क़ियामत के दिन तमाम मुर्दा इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करेगा, जो ज़िन्दा होते ही मैदाने मह़शर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे और अपने रब के सामने अपने आ़माल का ह़िसाब देने के लिए अदब से खड़े हो जाएँगे।

12-14 وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ
ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ
مُقْرِنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ۝

उस का गुण यह भी है कि उस ने तरह़-तरह़ की चीज़ें और तमाम ह़ैवानात व पेड़-पौधे के जोड़े पैदा किये हैं। सिर्फ़ उस की ज़ात अकेली है, उस का कोई जोड़ा नहीं है और उस ने इन्सान को कश्ती बनाने का इ़ल्म दिया और उस के लिए चौपाये पैदा किये, लोग उन कश्तियों और चौपायों पर सवार होकर सफ़र करते हैं।

अ़हले अ़क़्ल व समझ और अहले ईमान जब इन कश्तियों और चौपायों पर सवार होते हैं तो अपने रब की तअ़रीफ़ बयान करते हैं जिस ने उन जानवरों को इस के अधीन बना दिया है।

अगर अल्लाह न चाहता तो उन्हें यह क़ाबू में नहीं कर सकते थे और यह कहते हैं कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद हमें लौट कर अपने रब के पास ही जाना है यानी दुनियावी सफ़र से उन का ज़ेहन आख़िरत के सफ़र की तरफ़ हो जाता है और दुनिया का सफ़र देखकर आख़िरत की फ़िक्र उन्हें हो जाती है।

15 وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾

मुश्रिकीने मक्का के बारे में कहा जा रहा है कि उन्होंने अल्लाह के बन्दों में से बाज़ को यानी फ़रिश्तों को उस की बेटियाँ कहा। इस से बढ़कर झूठ और कुफ़्र क्या हो सकता है, उन्हें कैसे मालूम हुआ कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं और अल्लाह के साथ वह अ़िबादत की ह़क़्दार हैं।

ह़क़ीक़त यह है कि इस से बढ़कर इन्कारे नेअ़मत और क्या हो सकता है कि एक तरफ़ तो एतिराफ़ करते हैं कि वही अकेला पालनहार नहीं है और फिर उस के लिए जिस्म और औलाद साबित करते हैं और कहते हैं कि उस की वह औलाद उस के समान है।

16-19 أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوَمَنْ يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا
الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾

आयत नं० (16) में उन के इसी बुरे काम पर तम्बीह की गई है कि अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ उन की जुर्रात देखिए कि उन्होंने उस के लिए औलाद भी ठहराया तो ऐसी जिसे अपने लिए पसन्द नहीं करते हैं यानी बेटियाँ, जिन से उन की नफ़रत का ह़ाल यह है कि जब उन्हें ख़बर दी जाती है कि उन के यहाँ लड़की पैदा हुई है तो ग़म से उन के चेहरे काले हो जाते हैं और उन के दिल ग़म से भर जाते हैं।

अल्लाह के ख़िलाफ़ उन की कैसी जुर्रात और ढ़िटाई है कि जिन लड़कियों की परवरिश जो कम अ़क़्ल होने की वजह से अपनी बात भी सही़ तौर पर अदा नहीं कर सकती, उन्हें वह अल्लाह तआ़ला का अंश और हि़स्सा बनाते हैं।

जो फ़रिश्ते रात-दिन अपने मालिक की तस्बीह़ में लगे होते हैं, उन्हें अपनी जिहालत व नादानी की वजह से कहते हैं। क्या जब अल्लाह ने उन्हें पैदा किया था उस वक़्त वह मौजूद थे और उन्हें इ़ल्म हो गया था कि अल्लाह ने उन्हें मुअन्नस (स्त्रीलिंग feminine) पैदा किया है।

ह़क़ीक़त यह है कि अल्लाह के ख़िलाफ़ यह बड़ी ही ज़ालिमाना जुर्रात है जिस के बारे में क़ियामत के दिन उन से सवाल होगा और कहा जाएगा कि अपने दावे की दलील पेश करो, लेकिन वह बेबस रहेंगे, तब उन्हें ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा।

आयत नं० 20 से 35 तक

وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ۝
بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ۝ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْۤا
اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ
بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ۝ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هٰۤؤُلَآءِ
وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا
الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا
بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝ وَلَوْلَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا
لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ۝ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ۝ وَزُخْرُفًا ؕ
وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

अनुवाद-

(20) और कहते हैं, ''अगर रहमान चाहता तो हम उन्हें न पूजते, उन्हें इस का कुछ इल्म नहीं, वह तो बस अटकल की बातें करते हैं। (21) या 'हमने' इससे पहले उनको कोई किताब (प्रमाण के रूप में) दी थी तो ये उसे मज़बूती से पकड़े हुए हैं। (22) (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं, ''हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के नक्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चलकर (सीधी) राह पा रहे हैं।'' (23) और इसी तरह तुमसे पहले जिस बस्ती में भी 'हमने' कोई सचेत करने वाला भेजा उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा, ''हमने अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके नक्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चल रहे हैं।'' (24) कहा, अगर मैं उस तरीक़े के मुक़ाबले में जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे, ''तुम्हें जो भी देकर भेजा गया है हम तो उसका इन्कार करते हैं।'' (25) तो फिर 'हमने' उनसे बदला लिया, देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का! (26) और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''जिनकी तुम पूजा करते हो, मैं उनसे बेज़ार हूँ; (27) मगर जिसने मुझको पैदा किया है, 'वही' मुझको राह दिखाएगा;'' (28) और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वे उसकी ओर रुजूअ़ करें। (29) बल्कि 'हमने' उन (कुफ्फार) को और उनके बाप-दादा को ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास हक़ और खोल-खोल कर बताने वाले रसूल आ गये। (30) और जब हक़ उनके पास आ गया तो उन्होंने कहा, ''यह तो जादू है, और हम तो इसका इन्कार करते हैं।'' (31) और वे कहते हैं, ''यह क़ुर्आन इन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया;'' (32) क्या यह लोग तुम्हारे रब की रहमत को बाँटते हैं?'' दुनिया की ज़िन्दगी में उनको ज़िन्दगी गुज़ारने के साधन (रोज़ी) 'हमने' उनके बीच बांट दिये, और 'हमने' उनमें से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर दर्जे बुलन्द कर दिये हैं, ताकि वे एक-दूसरे से काम लें, और तुम्हारे रब की

रहमत इससे कहीं ज़्यादा बेहतर है, जिसे ये जमा कर रहे हैं। (33) और अगर यह बात न होती कि सब इन्सान एक ही तरीक़े पर चल पड़ेंगे, तो जो लोग रहमान के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की कर देते, और सीढ़ियाँ भी जिन पर वे चढ़ते; (34) और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी जिन पर तकिया लगाते हैं; (35) और सोने से भी उन्हें माला-माल करते, यह सब दुनिया की ज़िन्दगी का ही सामान है, और आख़िरत तुम्हारे रब के यहाँ केवल मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के लिए है;

आयत नं० 20 से 35 तक की व्याख्या

20-21 وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۝

मुश्रिकीन के इस बुरे अ़मल पर जब उन से पूछा जाता है कि आख़िर किस दलील की बुनियाद पर तुम फ़रिश्तों और मूर्तियों की पूजा करते हो? तो वह कहते हैं कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि हम उन की अ़िबादत करते हैं। अगर हमारे इस अ़मल से वह राज़ी न होता तो हमें अपनी क़ुद्रत के ज़रिये इस से रोक देता।

अल्लाह तआ़ला ने उन को रद्द किया है कि उन्हें कैसे मालूम हो गया कि अल्लाह उन के इस बात से राज़ी है, यह केवल उन की बेदलील व बे-बुनियाद बाते हैं जिन की तस्दीक़ न किसी आसमानी किताब से होती है और न ही किसी नबी की बात के ज़रिये, इसीलिए आयत नं० (21) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या हम ने इस से पहले उन्हें कोई किताब दे रखी है जिस से उन की मुश्रिकाना बातों की तस्दीक़ होती हो?

22 بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ۝

उन के इस बुरे काम पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन के पास फ़रिश्तों और मूर्तियों की पूजा करने की कोई दलील नहीं है, केवल यह कहते हैं कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी दीन पर अ़मल करते पाया है इसलिए हम भी इसी पर क़ायम रहेंगे।

23 وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ुरैश के काफ़िरों ने यह कोई नई बात नहीं की है, बल्कि हर दौर के काफ़िर अपने कुफ़्र व शिर्क पर जमे रहने की यही वजह बयान करते हैं यानी पूर्वजो की अन्धी पैरवी पुरानी गुमराही है, जिस में हर दौर के अहले कुफ़्र मुब्तिला (Involve) रहे हैं।

इसीलिए ऐ मेरे नबी! आप को अहले क़ुरैश के कुफ़्र व शिर्क पर मलाल नहीं होना चाहिए।

24 قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝

हर दौर के नबी ने अपनी क़ौम से कहा कि अगर मैं तुम्हारी रहनुमाई ऐसी राह की तरफ़ करूँ जो सआ़दत व नेकबख़्ती की राह है तो क्या फिर भी तुम अपने पूर्वजो की अन्धी पैरवी में उन की राह पर चलते रहोगे? तो काफ़िरों ने एक ज़बान कहा कि हाँ, हम तुम्हारी दअ़वत का इन्कार करते हैं यानी तुम्हें एक ज़र्रह बराबर भी हमारे ईमान लाने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं, आयत के आख़िरी हिस्से में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि अगर काफ़िरों को यक़ीन भी हो जाता कि उन के ज़माने के नबी की दअ़वत सही है, तब भी अहले हक़ से घमण्ड और दुश्मनी की वजह से ईमान न लाते।

25 فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब कुफ़्र व शिर्क पर उन का इस्रार इस हद को पहुँच गया तो हम ने अ़ज़ाब भेजकर उन का वजूद ख़त्म कर दिया। अल्लाह के दीन और नबी के झुठलाने वालों का हमेशा ऐसा ही अन्जाम होता रहा है।

26-27 وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ ۝ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे और रसूल व ख़लील हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का हाल बयान कर के अहले क़ुरैश को दअ़वते फ़िक्र दी है कि तुम लोग जिस इब्राहीम की मुहब्बत का दम भरते हो, उन्होंने तो अपने बाप दादाओं की पैरवी से निजात का एलान कर दिया था और कह दिया था कि मैं केवल तुम्हारी पैरवी में तुम्हारे झूठे उपास्यों की अ़िबादत नहीं करुँगा।

क़ायनात में जो अ़क़्ली दलायल मौजूद हैं वह सब इस बात की तरफ़ रहनुमाई (guidance) करते हैं कि मैं उस अकेले की अ़िबादत करुँ जिस ने मुझे पैदा किया है और मुझे यक़ीन है कि मेरा रब मुझे ज़ाया नहीं करेगा, वह अपने सही दीन की तरफ़ मेरी रहनुमाई करेगा, अपनी बन्दगी की तौफ़ीक़ देगा और हक़ की राह पर साबित क़दम रखेगा, इसलिए कि जो उस पर भरोसा करता है, उसे वह ज़रूर अपनी राह पर लगा देता है।

28 وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि इब्राहीम ने जिस तौहीद (अद्वैतवाद) की ख़ुद गवाही दी और कहा कि मैं तो उस अल्लाह की अ़िबादत करुँगा जिस ने मुझे पैदा किया है, उसी तौहीद पर चलते रहने की अपनी औलाद को भी नसीहत की। जैसा कि सूरः बक़रः आयत नं० (132) में आया हैः-

وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ "और इब्राहीम ने अपनी औलाद को और याक़ूब ने अपनी औलाद को इस बात की वसीयत की कि वह अल्लाह के सिवा किसी की अ़िबादत न करें"।

यानी उन्होंने अपनी औलाद को कलिम-ए-तौहीद का वारिस बनाया और यही वजह है कि हर दौर में दअ़वते तौहीद उन की औलाद में बाक़ी रही और उन में ऐसे लोग पाये गये जिन्होंने भटके हुए लोगों

की रहनुमाई की और उन्हें शिर्क से डराया, चुनाँचे अल्लाह ने जिन्हें तौफ़ीक़ दी उन्होंने तौहीद की दअ़वत क़ुबूल किया और शिर्क से निजात का एलान किया।

29-30 بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا
سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मुश्रिक ज़ुर्रियत में अहले क़ुरैश भी थे। अल्लाह ने उन के कुफ़्र व शिर्क के बावजूद उन्हें हलाक नहीं किया बल्कि ज़िन्दा रहने दिया, यहाँ तक कि उस ने अपनी बरहक़ किताब यानी क़ुर्आन करीम नाज़िल फ़रमाई और नबी करीम (सल्ल०) को मब्अूस (भेजा) किया जिन्होंने उस की शरीअ़त को उन के लिए स्पष्ट तौर से बयान किया, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जादूगर कहा और शिर्क व गुमराही की वादियों में भटकते हुए इतनी दूर निकल गये कि हक़ की राह पर उन का लौट कर आना नामुम्किन हो गया।

31 وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝

अहले क़ुरैश घमण्ड में आकर कहते थे कि मन्सबे रिसालत मक्का के 'वलीद बिन मुग़ीरा' या तायफ़ के 'उ़रवह बिन मसऊद' जैसे लोगों को मिलना चाहिए जो दुनियावी माल व जाह के मालिक है। यह भी उन की अ़क़्ली कमज़ोरी थी कि रिसालत जैसे बड़े पद का हक़्दार किसी दुनियादार को समझते थे, हालाँकि यह तो रुहानियत का वह अ़ज़ीम तरीन रुत्बा है जिस का हक़्दार वही इन्सान हो सकता है जो दिल का साफ़ और कमालात के ऊँचे पद पर हो और अल्लाह तआ़ला ने यह सारे गुण नबी करीम (सल्ल०) में जमा कर दिये थे, इसलिए वही इस अ़ज़ीम मन्सबे रिसालत के हक़्दार हुए।

32 اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۭ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۭ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝

अहले क़ुरैश की यह बात चूंकि अल्लाह के हक़ में उस की मर्ज़ी व अख़्तियार में ज़ालिमाना दख़ल अन्दाज़ी (Interfere) थी, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! क्या आप के रब की रह़मत (यानी नुबूव्वत) का बँट्वारा (Divide) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश करेंगे, वह अपनी मर्ज़ी से जिसे चाहेंगे देंगे और जिसे चाहेंगे उस से महरूम कर देंगे? क्या वह देखते नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी में उन की रोज़ी हम मुहय्या करते हैं। ऐसे बेबस लोग अल्लाह पर एतिराज़ करने की कैसे जुर्रत करते हैं और कहते हैं कि मुह़म्मद जैसे फ़क़ीर आदमी को (नाऊज़ुबिल्लाहि) अल्लाह ने क्यों अपना रसूल बना दिया।

अल्लाह की ज़ात तो वह है जिस ने इन्सानों को विभिन्न (Different) वर्गों में बाँट रखा है, किसी को मालदार बनाया है तो किसी को फ़क़ीर और अल्लाह ने फ़क़ीर को मालदार के अधीन कर दिया है, ताकि उस की ख़िद्मत करे और जो मज़दूरी मिले उस से अपनी ज़रूरत पूरी करे। न मालदार की मालदारी इस बात की दलील है कि वह अल्लाह के नज़्दीक महबूब है और न फ़क़ीर की मोह़ताजी इस बात की दलील

है कि वह अल्लाह के नज़्दीक कमतर है। यह इख़्तिलाफ़ अल्लाह की हिक्मत व मस्लहत के मुताबिक़ है वही इन भेदों को जानता है। कोई शख़्स उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किसी को न मालदार बना सकता है और न फ़क़ीर। रसूल का पद भी अल्लाह की नेअ़मत और उस का बड़ा तोहफ़ा है, वह जिसे चाहता है उसे नवाज़ देता है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि रसूल का पद दुनिया के माल व जाह से कहीं ज़्यादा बेहतर है और इस का लाज़मी नतीजा यह है कि जिन्हें यह नुबूव्वत दी गई है यानी नबी करीम (सल्ल०) उन लोगों से कहीं बेहतर हैं जो अगरचे माल व दौलत रखते हैं, लेकिन अल्लाह की निगाह में बहुत छोटे और हक़ीर लोग हैं, लेकिन जिन के दिल माल और ख़्वाहिशे नफ़्स की मुहब्बत की वजह से मरीज़ हो चुके हैं, वह दुनियादारों को रसूल-ए-करीम (सल्ल०) के मुक़ाबिले में नुबूव्वत का ज़्यादा हक़्दार समझते हैं।

33-35

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ
عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۭ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

दुनिया अल्लाह तआ़ला की निगाह में हक़ीर चीज़ है। इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने उसी की तरफ़ इशारा किया है कि अगर सारे इन्सानों को कुफ़्र जैसे घृणित अ़मल पर जमा हो जाने की बात न होती तो दुनिया तो वह कमतर चीज़ है कि हम तमाम काफ़िरों के घरों की छतों और सीढ़ियों को चाँदी का बना देते और उन के घरों के दरवाज़ों, चारपाईयों और कुर्सियों को भी चाँदी का बना देते और हम उन्हें सोने और जवाहरात के बने सामान से नवाज़ देते।

ताकि वह कुफ़्र व सरकशी में और बढ़ते चले जाते और सख़्त तरीन अ़ज़ाब के हक़्दार बनते, इसलिए दुनिया की इन मिटने वाली नेअ़मतों की अल्लाह के नज़्दीक कोई हैसियत नहीं है। अस्ल कामियाबी तो आख़िरत की कामियाबी है, हक़ीक़ी और हमेशा की नेअ़मत तो जन्नत है जिसे हम ने अल्लाह से डरने वालों के लिए ख़ास कर रखी है।

आयत नं० 36 से 56 तक

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ حَتّٰۤى اِذَا
جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝
اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ
فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝
وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ
فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۚ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝
وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ
هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝ فَلَوْلَاۤ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(36) और जो रह़मान के ज़िक्र से बेपरवाह हो जाता है, 'हम' उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं तो वह उसका साथी बन जाता है; (37) और ये (शैतान) उनको अल्लाह की राह से रोकते हैं, और वे समझते हैं कि सीधी राह पर हैं; (38) यहाँ तक कि जब हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगा, ''काश, मेरे और तेरे बीच पूरब के दोनों किनारों की दूरी होती! तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला।'' (39) और जब तुम ज़ुल्म कर चुके हो तो यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी फ़ायदा न देगी कि तुम अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझी हो; (40) क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, या अन्धों को, और जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो उसको (राह दिखाओगे)? (41) अगर हम तुम्हें उठा भी लें तब भी 'हम' उन लोगों से बदला ले कर रहेंगे, (42) या 'हम' तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका 'हमने' उनसे वादा किया है, हमें उन पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) है। (43) तो तुम उस चीज़ को मज़बूती से थामे रहो, जिसकी तुम्हारी ओर वह़्य (प्रकाशना) की गई, बेशक तुम सीधी राह पर हो; (44) और यह (क़ुर्आन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीह़त है, और बहुत जल्द तुम से पूछ-गछ होगी। (45) और आप से पहले जो 'हमने' रसूल भेजे थे, उनसे पूछ लें क्या 'हमने' रह़मान के सिवा भी कुछ मअ़बूद (उपास्य) ठहराए थे, कि उनकी इबादत की जाए? (46) और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ''मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।'' (47) तो जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आये तो वे उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे। (48) और 'हम' उनको एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे और 'हमने' उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ लिया, ताकि वे रुजूअ़ हो। (49) और कहते, ऐ जादूगर! अपने रब से हमारे लिए दुआ़ कर, जैसा उसने तुझसे वादा कर रखा है, बेशक 'हम' सीधी राह पर चलेंगे; (50) फिर जब भी 'हम' उन पर से अ़ज़ाब हटा लेते, तो वे अपना वादा तोड़ देते। (51) और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, ऐ मेरी

क़ौम के लोगो! क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और क्या यह नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं हो! (52) बेशक मैं बेहतर हूँ या यह व्यक्ति जो तुच्छ है, और साफ़ बोल भी नहीं पाता; (53) फिर ऐसा क्यों न हुआ कि उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन डाले गये होते, या उसके साथ फ़रिश्तों के जत्थे उतरते जो साथ रहते; (54) तो उसने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया और उन्होंने उसकी बात मान ली, बेशक वे नाफ़रमान लोग थे; (55) जब उन्होंने 'हमें' गुस्सा दिलाया तो 'हमने' उनसे बदला लिया फिर उन सबको डुबो दिया। (56) फिर 'हमने' उन्हें ऐसा बना दिया कि वह गये-गुज़रे हो गये, और बाद वालों के लिए इ़बरत (मिसाल) बना दिया।

आयत नं० 36 से 56 तक की व्याख्या

36 وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की अहमियत बयान की है कि जो लोग क़ुर्आन और इस में मौजूद हुक्मों से मुँह फेरते हैं और उसे छोड़कर दूसरी गुमराहियों को अपनाते हैं, अल्लाह तआ़ला बतौर बदले के उस के पीछे एक शैतान को लगा देता है जो हर वक़्त उसे गुमराह करता रहता है, ताकि ह़क़ को क़ुबूल न करे। فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ इस का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि वह आदमी उस शैतान का पैरुकार बन जाता है और तमाम कामों में उस की पैरवी करता है।

37 وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह शयातीन क़ुर्आन से एराज़ करने वालों को राहे ह़क़ की पैरवी से रोकते रहते हैं और उन के दिल में ख़याल डालते रहते हैं कि वह ह़क़ पर हैं।

एक दूसरा अर्थ यह भी बयान किया गया है कि वह कुफ़्फ़ार उन शयातीन को राहे ह़क़ पर समझते हैं, इसीलिए उन की पैरवी करते हैं।

38 حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हमारे सामने दोनों ह़ाज़िर होंगे, तो क़ुर्आन करीम से मुँह फेरने वाला अपने शैतान दोस्त से कहेगा कि ऐ काश! मेरे और तुम्हारे दर्मियान पूरब व पश्चिम की दूरी होती इसलिए कि तू बड़ा ही बुरा साबित हुआ, तूने ही मुझे राहे ह़क़ से गुमराह किया, कुफ़्र व शिर्क और गुमराही को ख़ूबसूरत बनाकर पेश किया जो आज मेरे अ़ज़ाब का ज़रिया बन गया है।

39 وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ۝

इस आयत में बताया गया है कि उस दिन अल्लाह तआ़ला उन से कहेगा कि दुनिया में अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक बनाने की वजह से तुम पर आज के दिन का अ़ज़ाब वाजिब (Compulsory) हो गया है, अब कोई तमन्ना तुम्हें काम नहीं देगी और तुम सब यानी तुम और तुम्हारे शयातीन दोस्त जहन्नम

के अ़ज़ाब में बराबर के शरीक होंगे।

40-42 اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ اَوۡ تَهۡدِى الۡعُمۡىَ وَمَنۡ كَانَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ۝ فَاِمَّا نَذۡهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنۡهُمۡ مُّنۡتَقِمُوۡنَ۝ اَوۡ نُرِيَنَّكَ الَّذِىۡ وَعَدۡنٰهُمۡ فَاِنَّا عَلَيۡهِمۡ مُّقۡتَدِرُوۡنَ۝

नबी करीम (सल्ल०) कुफ़्फ़ारे कुरैश की हिदायत की बड़ी ख़्वाहिश रखते थे, इसीलिए उन के सामने दअ़वते हक़ पेश करने की हर मुम्किन कोशिश करते और उन की बेरुख़ी देखकर मलाल करते, तो अल्लाह तआ़ला उन्हें तसल्ली देता और कहता कि आप का काम तो दअ़वते इस्लाम पेश कर देना है, हिदायत देना तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का काम है और कुफ़्फ़ारे कुरैश तो बहरे हैं, उन से तो सुनने की ताक़त छीन ली गई है, यह कब अल्लाह की आयतों और दलीलों को सुन सकेंगे, यह तो अन्धे हैं, देखने की ताक़त से महरूम हैं, अल्लाह की निशानियों को देखकर भी उन से नसीहत हासिल नहीं कर सकेंगे और सीधी राह से कोसों दूर निकल गये हैं, अब यह सीधी राह पर न आ सकेंगे।

या तो आप उन पर ग़ालिब आने से पहले ही दुनिया से रुख़सत हो जाएँगे, तो हम उन के कुफ़्र व शिर्क का बदला अ़ज़ाबे जहन्नम के ज़रिये लेंगे या अपने वादे के मुताबिक़ अपनी कुद्रत का करिश्मा आप को दुनिया में ही दिखला देंगे और यही हुआ कि कुफ़्फ़ारे कुरैश के जितने बड़े सरदार थे या तो उन्होंने कलिमा पढ़कर अपनी जान बचा ली या फिर सहाबा-ए-किराम के हाथों जंग के मैदानों में मारे गये।

43-44 فَاسۡتَمۡسِكۡ بِالَّذِىۡۤ اُوۡحِىَ اِلَيۡكَ‌ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ۝ وَاِنَّهٗ لَذِكۡرٌ لَّكَ وَلِقَوۡمِكَ‌ۚ وَسَوۡفَ تُسۡـَٔـلُوۡنَ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि जब कुफ़्फ़ारे कुरैश का हाल वह है जो ऊपर बयान हुआ कि दअ़वते हक़ से फ़ायदा उठाने की क्षमता उन से छीन ली गई है, तो आप उन के कुफ़्र व शिर्क पर ग़मगीन न होइये, बल्कि जो कुर्आन आप पर नाज़िल हुआ है और जो दीने हक़ आप को दिया गया है उस पर जमे रहिये और अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए।

जो कुर्आन आप पर नाज़िल हुआ है वह आप और आप की उम्मत के लिए बड़ी इ़ज़्ज़त की चीज़ है और क़ियामत के दिन आप की उम्मत से पूछा जाएगा कि उन्होंने किस हद तक इस शरीअ़त की पाबन्दी की।

45 وَسۡـَٔلۡ مَنۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلۡنَا مِنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ اٰلِهَةً يُّعۡبَدُوۡنَ۝

तमाम अम्बिया-ए-किराम ने तौहीद की दअ़वत दी, किसी ने भी मूर्तियों के पूजा की तरफ़ लोगों को नहीं बुलाया यानी आप ने अहले कुरैश के सामने कोई नई दअ़वत नहीं पेश की कि वह आप को झुठला रहे हैं। यह तो वही दअ़वत है जो तमाम अम्बिया ने अपनी क़ौमों के सामने पेश की थी और नबी करीम (सल्ल०) से जो यह कहा गया है कि आप पिछले नबियों से पूछ लीजिए तो इस से मक़्सद तौरेत व इन्जील का इ़ल्म रखने वाले मोमिनों से पूछना है, इसलिए कि उन से पूछना यानी उन नबियों से पूछना है जिन पर वह किताबें नाज़िल हुई थीं।

46-47 وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ۝

अहले क़ुरैश का ह़ाल फ़िरऔ़न के ह़ाल की तरह़ से था। अहले क़ुरैश ने कहा कि अगर अल्लाह को रसूल बनाना था तो मक्का के 'वलीद बिन मुग़ीरा' या तायफ़ के 'उ़रवह बिन मसऊद' जैसे किसी अहम आदमी को बनाता न कि मुह़म्मद जैसे फ़क़ीर और बेहै़सियत आदमी को और फ़िरऔ़न ने भी यही कहा था कि मैं बेहतर हूँ या मूसा जैसा कमतर इन्सान।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न व मूसा (अ़लै०) का वाक़िआ़ बयान कर के नबी करीम (सल्ल०) को नसीह़त की है कि जिस तरह़ मूसा (अ़लै०) ने सब्र (धैर्य) से काम लिया, आप भी हिम्मत न हारिये और लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते रहिये।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने मूसा को मोअ़जिज़ात देकर फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के पास भेजा, उन्होंने उस से कहा कि मैं उस अल्लाह का पैग़म्बर हूँ जो सारे जहान का पालने वाला है, उस के सिवा कोई बन्दगी का ह़क़दार नहीं है, न उस के सिवा किसी को यह ह़क़ पहुँचता है कि वह रब्बुल् आ़लमीन के बन्दों को अपना बन्दा बनाये।

जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपनी दअ़वत ह़क़ और सच्चाई की दलीलें पेश कीं तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी उन का मज़ाक़ उड़ाने लगे, बिल्कुल अहले क़ुरैश की तरह जो आप का और आप की दअ़वती तक़रीरों और क़ुर्आने करीम का मज़ाक़ उड़ाते हैं तो आप को उन की इन ह़रकतों से बद्दिल नहीं होना चाहिए और दअ़वत के काम में सुस्ती नहीं होनी चाहिए।

जैसे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़िरऔ़न की ओर से तरह़-तरह़ की तक्लीफ़ों को बर्दाश्त किया और अपनी दअ़वत उस के सामने विभिन्न (different) अन्दाज़ में पेश करते रहे।

48-50 وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने इस तरफ़ इशारा किया है कि फ़िरऔ़न और फ़िरआ़नियों की हंसी उड़ाना कुछ इस वजह से नहीं था कि वह निशानियाँ ही इस क़ाबिल न थीं कि उन पर असर अन्दाज़ होतीं, बल्कि वह ऐसा घमण्ड की वजह से करते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर निशानी पहली निशानी से बड़ी होती थी और हम ने उन्हें दुनियावी अ़ज़ाब में भी मुब्तिला (Involve) किया कि शायद इस तरह़ वह माने और जब अ़ज़ाब की सख़्ती से तिल्मिला उठे तो मूसा से कहा ऐ जादूगर! तुम कहते हो कि तुम्हारा रब तुम पर ईमान लाने वालों से अ़ज़ाब को टाल देता है तो दुआ़ करो कि वह हम से अ़ज़ाब को दूर कर दे, अगर ऐसा हो गया तो हम तुम पर ईमान ले आएँगे और जिसे तुम हिदायत की राह कहते हो उसे अख़्तियार कर लेंगे, चुनाँचे हम ने उन से अ़ज़ाब को टाल दिया तो वह फ़ौरन बद्अ़हदी कर बैठे और ज़लालत व गुमराही में और आगे

बढ़ते चले गये।

51-54 وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَٰرُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ
أَمْ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ۝ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ
الْمَلَٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَٰسِقِينَ ۝

जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की दुआ़ से अ़ज़ाबे इलाही टल गया, तो फ़िरऔ़न अपने दिल में डरा कि कहीं लोग वाक़ई मूसा (अ़लै०) पर ईमान न ले आएँ इसीलिए उस ने पैंतरा बदलते हुए लोगों से कहा कि क्या मैं हुकूमते मिस्र का मालिक नहीं हूँ? क्या दरिया-ए-नील की चारों शाख़ें मेरे महल के पास से नहीं गुज़रती हैं? क्या तुम लोग मेरी इन तमाम नेअ़मतों और क़ुदरतों को देखते नहीं हो तो फिर मैं बेहतर हूँ या यह कमतर इन्सान (मूसा) जो अपनी ख़िद्मत आप करता है और अपनी पूरी बात भी नहीं कर पाता है?

अगर यह वाक़ई किसी का पैग़म्बर है और बड़ा आदमी है तो इस के भेजने वाले ने इसे सोने के कंगन क्यों नहीं पहना दिये हैं, ताकि देखने वालों को मालूम हो कि वाक़ई यह कोई बड़ा इन्सान है या फिर ऐसा क्यों न हुआ कि इस के साथ कुछ फ़रिश्तों को भेजा होता जो हर वक़्त इस के साथ रहते और इस के नुबूव्वत की गवाही देते?

फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के दिल में यह बात डालनी चाही कि रसूल को बड़ी शान व शौकत वाला और फ़रिश्तों से घिरा हुआ होना चाहिए चुनाँचे इस की शैतानी चाल काम कर गई, लोगों ने इस की बात मान ली और मूसा (अ़लै०) को झुठला दिया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह लोग पहले ही से अल्लाह की बन्दग़ी से अलग थे।

55-56 فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ فَجَعَلْنَٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने हमारे ग़ज़ब को भड़का दिया और मूसा और उन के मोअ़जिज़ात को झुठला कर उन्हें जादूगर कहा और ईमान लाने का वादा कर के अ़हद को तोड़ दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को समुद्र में डुबो कर उन्हें आने वाली क़ौमों के लिए नसीहत की चीज़ बना दिया।

आयत नं० 57 से 73 तक

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾
إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ
فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ
آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا
تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ
مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

अनुवाद-

(57) और जब मरयम के बेटे (ईसा) की मिसाल दी गई तो क्या देखते हैं कि उस पर तुम्हारी क़ौम के लोग चिल्लाने लगे; (58) और कहने लगे, ''हमारे मअ़बूद (उपास्य) अच्छे हैं या वह (मसीह), उन्होंने यह बात तुमसे केवल झगड़ने के लिए कही है, बल्कि वे तो हैं ही झगड़ालू लोग; (59) वह (ईसा) तो बस एक बन्दे थे जिन पर 'हम' ने इनआ़म किया और उन्हें 'हमने' बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (60) और अगर हम चाहते तो तुममें से फ़रिश्ते पैदा कर देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन पर (उत्तराधिकारी) होते। (61) और वह (ईसा) क़ियामत की बहुत बड़ी दलील है, तो तुम इसके बारे में .सन्देह न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधी राह है। (62) और शैतान तुम्हें इससे रोक न दे, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (63) और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आए, तो उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हारे पास हिक्मत लेकर आया हूँ और इसलिए कि कुछ बातें,स्पष्ट कर दूँ, जिसके बारे में तुम मतभेद कर रहे हो, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (64) बेशक अल्लाह मेरा 'रब' है और तुम्हारा भी 'रब' है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।'' (65) मगर उनमें के कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया, तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दुःख देने वाले अ़ज़ाब के दिन से। (66) क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर वह घड़ी (क़ियामत) आ जाए और उन्हें इसकी ख़बर भी न हो। (67) उस दिन सभी दोस्त आपस में एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के। (68) ''ऐ मेरे बन्दो! आज न तुम्हें डर है और न तुम ग़मगीन होंगे। (69) जो लोग 'हमारी' आयतों पर ईमान लाए और मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो गये; (70) ''दाख़िल हो जाओ जन्नत में, तुम और तुम्हारी पत्नियाँ, इज़्ज़त के साथ।'' (71) उनके आगे सोने की तश्तरियाँ और प्याले गर्दिश करेगें और वहाँ वह सब कुछ होगा, जो दिलों को भाए और आँखें जिससे लज़्ज़त पाएँ ''और तुम उसमें हमेशा रहोगे। (72) और यह जन्नत, जिसके तुम मालिक बना दिये गये हो, तुम्हारे आ़माल का बदला है। (73) तुम्हारे लिए उसमें बहुत से मेवे हैं जिसे तुम खाओगे।''

आयत नं० 57 से 73 तक की व्याख्या

57-58 وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَقَالُوا ءَأَلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝

अक्सर मुफ़स्सिरीन की राय है कि यह आयते करीमा नबी करीम (सल्ल०) के साथ एक बहस के बाद नाज़िल हुई थी। सूरतुल् अम्बिया की आयत नं० (98) में है कि إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ "तुम और तुम्हारे झूठे पूज्य जहन्नम का ईधन बनोगे" नाज़िल हुई तो 'इब्ने अल् ज़बअ़री ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि कअ़बः के रब की क़सम! आज मैं तुम पर ग़ालिब (प्रभावी) आ गया। क्या नसारा ईसा की, यहूद उ़ज़ैर की और बनू मलीह़ फ़रिश्तों की पूजा करते हैं। अगर यह लोग जहन्नम में जाएँगे तो हम भी अपने उपास्यों के साथ जहन्नम में जाने के लिए तैयार हैं।

मुश्रिकीन उस की इस बात से बहुत खुश हुए और शोर मचाने लगे तो सूरतुल् अम्बिया की आयत नं० (101) إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ "जिन के लिए हमारी ओर से पहले से ही जन्नत का फ़ैसला हो चुका है, वह लोग जहन्नम से दूर रखे जाएँगे" नाज़िल हुई और इस सूरः की यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

जिस का मतलब यह है कि जब इब्ने अल् ज़बअ़री ने ईसा को बुतों के समान क़रार दिया तो कुफ़्फ़ारे कुरैश बहुत खुश हुए और मारे हंसी के लोटपोट गये और कहने लगे कि हमारे उपास्य बेहतर हैं या ईसा, यानी जब ईसा की अ़िबादत की जा सकती है तो फ़रिश्ते जिन की हम अ़िबादत करते हैं उस से तो बहुत बेहतर अ़िबादत के ह़क़्दार हैं।

आयत नं० (58) के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! इब्ने अल् ज़बअ़री का मक़्सद (उद्देश्य) ह़क़ समझना नहीं, बल्कि केवल बहेस है और पूरी क़ौम कुरैश इस मर्ज़ में मुब्तिला है कि वह लोग बातिल को प्रभावी करने के लिए झूठ का सहारा लेते हैं।

तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और ह़ाकिम वग़ैरह ने अबू उमामा (रज़ि०) से बसनद सह़ीह़ रिवायत की है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब भी कोई क़ौम गुमराह हुई तो उस ने बहेस की राह अख़्तियार की, फिर आप ने इसी आयत की तिलावत की।

59 إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का सह़ी मक़ाम (स्थान) बयान किया है कि वह उपास्य नहीं, बल्कि अल्लाह के अनगिनत बन्दों में से एक बन्दा हैं। अल्लाह ने उन्हें रिसालत के लिए चुन लिया था और उन की पैदाइश को बनी इस्राईल के लिए नसीह़त का ज़रिया बनाया था यानी उन्हें बिना बाप के पैदा किया था और वह बतौर मोअ़जिज़ा (चमत्कार) मुर्दों को ज़िन्दा करते थे, गन्जों और मरीज़ों को अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा देते थे, ताकि लोग अल्लाह तआ़ला के क़ुद्रत व अ़ज़्मते शान पर

ईमान ले आएँ।

60 وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ۝

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुद्रत वाला है। अगर वह चाहता तो इन्सानों को हलाक कर देता और ज़मीन में उन की जगह फ़रिश्तों को लाकर बसा देता, जो उसे अपने सज्दों से आबाद करते और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराते।

61-62 وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ۝

इस आयते करीमा का मतलब बयान करने में मुजाहिद, ज़िह़ाक, सुद्दी और क़तादा का ख़याल है कि यहाँ ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) मुराद हैं यानी ख़ुरूज दज्जाल की तरह़ उन का ख़ुरूज भी क़ियामत की निशानी है। ह़सन, बसरी और सईद बिन ज़ुबैर कहते हैं कि क़ुर्आन करीम मुराद है यानी नुज़ूले क़ुर्आन क़ुर्बे क़ियामत की निशानी है और इस में उस के ह़ालात बयान किये गये हैं।

कुछ का ख़याल है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का बिना बाप के पैदा किया जाना मरने के बाद उठाये जाने की दलील है और बाज़ ने नबी करीम (सल्ल०) को मुराद लिया है यानी आप की बेअ़सत क़ुर्बे क़ियामत की निशानी है।

अल्लाह तआ़ला ने रसूल-ए-करीम (सल्ल०) की ज़बानी फ़रमाया कि लोगों! क़ियामत के बारे में ज़रा भी शक व शुब्हा न करो, इस का आना यक़ीनी है और अल्लाह की तरफ़ से है। मैं तुम्हें जिन बातों का हुक्म देता हूँ उन पर अ़मल करो, अल्लाह को एक जानो, उस के साथ दूसरों को शरीक न ठहराओ और उस ने जो हुक्म फ़र्ज़ किये हैं बजा लाओ, यही सीधी राह है।

देखो! शैतान तुम्हारे दिलों में इस्लाम, क़ुर्आन और मेरे बारे में शुब्हात पैदा कर के तुम्हें धोखे में न डाल दे और मेरी पैरवी करना न छोड़ दो, क्योंकि मैं तुम्हें उसी दीन की दअ़वत दे रहा हूँ जो तमाम अम्बिया-ए-किराम का दीन था और जिस के बयान के लिए तमाम आसमानी किताबें नाज़िल हुईं। देखो! शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है, वह तुम से अपनी दुश्मनी की बात रब्बुल् आ़लमीन के सामने कर चुका है। इसलिए इस से बढ़कर बेअ़क़्ली क्या होगी कि तुम अपने खुले दुश्मन की पैरवी करो।

63-64 وَلَمَّا جَاءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ۝ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ۝

ऊपर की आयतों में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का सही मक़ाम (स्थान) बयान किया गया है, उसी को पूरा करने के लिए कहा जा रहा है कि जब वह बनी इस्राईल के पास इन्जील और दूसरे मोअ़जिज़ात लेकर गये, तो उन्हें ख़बर दी कि मैं तुम्हारे लिए नबी बनाकर और ह़िक्मत का ख़ज़ाना देकर भेजा गया हूँ ताकि तुम्हें ह़िक्मत की बातें सिखाऊँ और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की वफ़ात (Death) के बाद दीन के जिन हुक्मों

में तुम्हारे दर्मियान इख़्तिलाफ़ (मतभेद) पैदा हो गया है उन में ह़क़ को स्पष्ट करुँ।

इसलिए 'बनी इस्राईल' के लोगों! अल्लाह की नाफ़रमानी से डरो, अल्लाह तआ़ला और अह़कामे शरीअ़त से मुतअ़ल्लिक़ जो बातें मैं तुम्हें बताता हूँ उन्हें क़ुबूल करो। बेशक मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह है, उस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं, इसलिए तुम सब केवल उसी की अ़िबादत करो, यही सीधी राह है।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का यही सह़ी मक़ाम (स्थान) था कि वह अल्लाह के बन्दे और रसूल थे और बनी इस्राईल के पास दअ़वते तौह़ीद लेकर आये थे, उन्होंने लोगों को अपनी बन्दगी की हरग़िज़ दअ़वत नहीं दी थी।

65-66 فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के दुनिया से उठा लिये जाने के बाद यहूद व नसारा उन के बारे में बहुत से फ़िर्क़ों (समूहों) में बँट गये। यहूद ने कहा कि उन की माँ ज़ानिया थी और वह ज़िना से पैदा हुए थे और नसारा में से 'फ़िर्क़ा-ए-नस्तूरिया' ने कहा कि वह इब्नुल्लाह (अल्लाह के बेटे) थे। 'याक़ूबिया' ने कहा, वह अल्लाह थे और 'फ़िर्क़ा-ए-मिल्किया' ने कहा, वह अल्लाह, इब्नुल्लाह और रुहुल् क़ुदुस तीन मअ़बूदों (उपास्यों) में से एक थे।

इन सब ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत के दिन दर्दनाक अ़ज़ाब की धमकी दी है इसलिए कि उन्होंने तमाम दलायल को नज़रअन्दाज़ कर के ईसा (अ़लै०) के बारे में मुजरिमाना और मुश्रिकाना अ़क़ीदे को रिवाज दिया है।

यह मुजरिमीन व मुश्रिकीन अब सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो अचानक आ जाएगी, उस वक़्त उन्हें क़ियामत हर ओर से घेर लेगी और उन्हें एह़सास भी न हो सकेगा।

67-70 الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝

दुनिया में जिन के दोस्ती की बुनियाद गुनाह, फ़साद और ह़क़ से दुश्मनी होती है, क़ियामत के दिन एक दूसरे के दुश्मन बन जाएँगे और आपस में एक दूसरे से नफ़रत करने लगेंगे इसलिए कि वह सारी बातें उन के अ़ज़ाब का ज़रिया बनती नज़र आएँगी, तो उन की दोस्ती दुश्मनी में बदल जाएगी।

अल्बत्ता जो लोग यहाँ अल्लाह से डरते हैं और आपस में अल्लाह और उस के रसूल के लिए एक दूसरे से मुह़ब्बत करते हैं वह क़ियामत के दिन भी एक दूसरे से मुह़ब्बत करेंगे, इसलिए कि दुनिया में जिन दीनी मक़्सद पर उन की आपस में मुह़ब्बत थी, उस दिन वह सारी बातें उन के सवाब व निजात का ज़रिया बन जाएँगी, इसलिए उन की आपस की मुह़ब्बत और बढ़ जाएगी और उन की ख़ुशी की कोई इन्तिहा नहीं रहेगी।

जब अल्लाह तआ़ला उन्हें पुकार कर कहेगा कि ऐ मेरे बन्दो! आज के बाद तुम्हें कोई ख़ौफ़ और

मलाल नहीं होगा।

आयत नं० (69) में अल्लाह तआला ने उन ख़ुशक़िस्मत बन्दों के कुछ गुण बयान कर के स्पष्ट कर दिया है कि यह वह लोग होंगे जो दुनिया में अल्लाह की किताबों और उस के रसूलों की तस्दीक़ करते हैं और यहूदियत, नसरानियत और मूर्ति पूजा के बजाय दीन-ए-इब्राहीमी यानी दीने इस्लाम पर अ़मल करते हैं।

अल्लाह तआ़ला उन से मज़ीद कहेगा ऐ मेरे बन्दों! तुम अपनी नेक बीवियों के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ जहाँ तुम्हें ऐसी ख़ुशी मिलेगी कि तुम्हारे चेहरे खिल उठेंगे।

यही बात सूरः अल् मुतफ़्फ़िफ़ीन की आयत नं० (24) में यूँ कही गई है تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ۝ "आप उन के चेहरों से ही नेअ़मतों की तरोताज़गी पहचान लेंगे"।

71-73 يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝

अहले जन्नत के सामने सोने की तश्तरियों और प्लेटों में लज़ीज़ तरीन खाने पेश किये जाएँगे और सोने ही के बने प्यालों का दौर चलेगा जो कई तरह की बेहतरीन शराबों से लबालब होंगे।

'सहीहैन' में हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम लोग रेशम और दबीज़ न पहनो, सोने और चाँदी के बर्तनों में न खाओ पियो, यह चीज़ें दुनिया में काफ़िरों के लिए हैं और तुम्हारे लिए जन्नत हैं"।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया,"अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जन्नत में मैंने अपने बन्दों के लिए वह चीज़ें तैयार कर रखीं हैं जो किसी आँख ने न देखा होगा, न किसी कान ने सुना होगा, न किसी दिल पर इसका ख़याल गुज़रा होगा"। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

जन्नत में हर वह चीज़ होगी जिस की कोई शख़्स ख़्वाहिश करेगा, जिस से आँखों को ठन्डक और दिल को ख़ुशी मिलेगी और अहले जन्नत से कहा जाएगा कि अब तुम हमेशा यहीं रहोगे, न तुम्हें मौत आएगी और न यह नेअ़मतें ख़त्म होंगी और यह जन्नत तुम्हें उन भलाईयों और नेक कामों के बदले मिली है जो तुम दुनिया में करते रहे थे यानी जिस तरह़ एक इन्सान जब दुनिया से रुख़सत होता है तो उस के वरसा (उत्तराधिकारी) उस के माल व ज़ायदाद के ह़क़्दार बन जाते हैं, उसी तरह़ अपने नेक आ़माल के बदले उस जन्नत के वारिस बन गये हो?

और जन्नत में तुम्हें बेशुमार ताज़ा और सूखे फल मिला करेंगे जो न कभी ख़त्म होंगे और न ही तुम्हें उन के खाने से कभी रोका जाएगा।

आयत नं० 74 से 89 तक

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝
وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ ۝ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ۝ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا
مُبْرِمُونَ ۝ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝ قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ۝
سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ
سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

अनुवाद-

(74) गुनहगार हमेशा जहन्नम के अ़ज़ाब ही में रहेंगे। (75) उनके अ़ज़ाब में कमी न होगी और वे उसमें निराश हो कर पड़े रहेंगे; (76) और 'हमने' उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वे खुद (अपने ऊपर) जुल्म करते रहे। (77) और पुकारेंगे, ''ऐ अधिकारी! तुम्हारा रब हमें मौत दे दे, वह कहेगाः तुमको (इसी ह़ाल में) हमेंशा रहना है;'' (78) ''हमने तुम्हारे सामने ह़क़ (सत्य) पेश किया था, मगर तुममें से अक्सर को हक़ नागवार था। (79) क्या उन्होंने किसी बात को तय कर लिया है? अच्छा तो 'हमने' भी तय कर लिया है। (80) क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' उनकी छिपी बातों और उनकी कानाफूसी को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं! और 'हमारे' दूत (फ़रिश्ते) उनके पास सब बातें लिखते रहते हैं;'' (81) कह दीजिए, ''अगर रह़मान के कोई औलाद होती तो सबसे पहले मैं इ़बादत करने वाला होता; (82) पाक है आसमानों और ज़मीन का रब, अर्श (सिंहासन) का मालिक उन बातों का जो ये बयान करते हैं। (83) तो उनको छोड़ दो कि बहस में उलझे रहें और खेल में लगे रहें, यहां तक कि उस दिन को देख लें जिससे उनको डराया जा रहा है। (84) और 'वही' आसमानों में भी इलाह (उपास्य) है, और (वही) ज़मीन में भी और 'वही' ह़िकमत वाला, इल्म वाला है; (85) और बड़ी बरकत वाला है 'वह', जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सभी चीज़ों की बादशाही है, 'उसी' को (क़ियामत की घड़ी का) इल्म है और 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे। (86) और 'उसको' छोड़कर ये लोग जिन को पुकारते हैं, वे शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) का अख़्तियार नहीं रखते, बस 'उसे' ही यह अधिकार ह़ासिल है जो ह़क़ की गवाही दें, और वे लोग जानते हैं। (87) और अगर तुम उनसे पूछो, ''उन्हें किसने पैदा किया है?'' तो कहेंगे, ''अल्लाह ने!'' फिर ये किस तरह फ़रेब में आ जाते हैं? (88) और उस (रसूल) ने फ़रियाद की ''ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं, जो ईमान नहीं लाते; (89) तो उनसे दरगुज़र कीजिए और कहिए, ''सलाम है तुम्हें!'' बहुत जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।''

आयत नं० 74 से 89 तक की व्याख्या

74-76 إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝

क़ुर्आन के शौक़ दिलाने के बाद अब जहन्नम और उस के अ़ज़ाब का बयान हो रहा है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो मुजरिमीन दुनिया में कुफ़्र व शिर्क और दूसरे गुनाहों में हैं और इसी ह़ाल में उन की मौत आ जाती है, वह हमेशा के लिए जहन्नम में डाल दिये जाएँगे, उन का अ़ज़ाब कभी भी हल्का नहीं किया जाएगा और उन के दिलों पर हमेशा के लिए नाउम्मीदी का गहरा साया पड़ जाएगा।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, उन्होंने कुफ़्र व शिर्क कर के ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया है।

77-78 وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ ۝ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ۝

अहले जहन्नम जहन्नम के इन्चार्ज को पुकारेंगे और कहेंगे, ऐ अधिकारी! तुम अपने रब से हमारे लिए सवाल करो कि वह हमें मार डाले ताकि इस अ़ज़ाब से निजात मिल जाए तो एक लम्बी मुद्दत के बाद (जिस के बारे में कई बातें कही गई हैं कि वह अस्सी (80) साल की मुद्दत होगी। बाज़ ने कहा है कि वह हज़ार साल की मुद्दत होगी। एक क़ौल है कि वह सौ साल (100) की मुद्दत होगी) मालिक उन्हें जवाब देगा, मेरे रब का कहना है कि तुम लोग अब इसी में रहोगे इसलिए कि हम ने उनके पास किताबें भेजीं और अम्बिया भेजे जिन्होंने उनके सामने ह़क़ की दअ़्वत पेश की, तो इन्होंने झुठला दिया और ईमान नहीं लाए।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी मिसाल और तुम्हारी मिसाल ऐसी है कि किसी शख़्स ने आग जलाई, परवाने और कीड़े-मकोड़े उस में गिरते और हलाक होते हैं। मैं तुम्हें पीछे से पकड़ कर आग से बचाता हूँ और तुम मेरे हाथों से निकल-निकल जाते हो"। (अह़मद)

79 أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝

अहले जहन्नम की तक्लीफ़ों के बयान से बात का रुख़ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और उन की साज़िशों की तरफ़ फेर दिया गया है जो वह नबी करीम (सल्ल०) के ख़िलाफ़ करते थे। इस में इशारा है कि उन के यही जुर्म उन्हें जहन्नम तक पहुँचा देंगे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन काफ़िरों ने मेरे नबी और उन की दअ़्वत के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त साज़िश कर रखी है, तो हम ने भी तय कर लिया है कि उन की साज़िशों को नाकाम बना देंगे और उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तिला करेंगे।

सूरः तूर आयत नं० (42) में यह बात यूँ कही गई है أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ "क्या

कुफ़्फ़ारे मक्का कोई साज़िश करना चाहते हैं, तो जान लें कि हक़ीक़त में वह उन्हीं के ख़िलाफ़ तद्बीर (योजना) हो रही है”।

80 أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ

कुफ़्फ़ारे मक्का समझते हैं कि हम उन के दिलों के भेदों और छुपी हुई जगहों में इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ उन की सरगोशियों को नहीं सुनते हैं, यह उन की नादानी है, हम उन के दिलों के भेदों को जानते हैं और उन की आपसी बातों को सुनते हैं और हमारे फ़रिश्ते उन तमाम करतूतों को लिख लेते हैं।

81 قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ

नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी कहा गया है कि अगर अल्लाह की कोई औलाद मान भी लिया जाए तो सब से पहले उस की अ़िबादत करनी चाहिए थी, लेकिन उस की कोई औलाद नहीं है, इसलिए मैं उस के सिवा किसी की अ़िबादत नहीं करता हूँ।

इस आयत में अल्लाह के लिए औलाद होने का इन्कार है यानी नबी करीम (सल्ल०) का किसी की इस हैसियत से अ़िबादत न करना कि वह अल्लाह की औलाद है इस बात की दलील है कि उस की कोई औलाद नहीं है इसलिए कि अगर उस के कोई औलाद होती तो नबी करीम (सल्ल०) उस की ज़रूर अ़िबादत करते।

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) से शिर्क की बुराई बयान की गई है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के सिवा किसी की अ़िबादत नहीं करते हैं।

82 سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ

अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकाना ख़याल से अपनी पाकी बयान की है यानी उस की ज़ात उस ऐ़ब से पाक है कि कोई उस की औलाद हो, वह तो आसमानों व ज़मीन और अ़र्श का रब और मालिक है, हर चीज़ उसी के क़ब्ज़े क़ुद्रत में है।

अगर इस आयत को नबी करीम (सल्ल०) के पिछले क़ौल का एक हिस्सा माना जाए तो मतलब यह होगा कि मेरा रब मुश्रिकों के इस इल्ज़ाम से बिल्कुल पाक है कि कोई उस की औलाद हो। वह तो आसमानों, ज़मीन के साथ अ़र्श का रब और मालिक है, कोई चीज़ उस के क़ब्ज़े क़ुद्रत से बाहर नहीं है।

83 فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ

नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि अगर मुश्रिकीने मक्का आप की दअ़वते तौह़ीद को क़ुबूल नहीं करते और अपने शिर्क पर जमे रहते हैं तो आप उन्हें उनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए और खेल तमाशे में फंसे रहने दीजिए यहाँ तक कि क़ियामत का दिन आ जाए। जब अल्लाह तआ़ला उन्हें उन के झुठलाने की वजह से जहन्नम में डाल देगा।

84-85 وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

अल्लाह ही है जो ज़मीन व आसमान में अिबादत किये जाने के लायक़ है, हर बड़ाई व मुहब्बत का वही तन्हा हक़दार है और हर बन्दे की बन्दगी सिर्फ़ उसी के लिए जायज़ है, उस का हर काम और उस का इल्म मख़्लूक़ के तमाम हालात को घेरे हुए है, उस की ज़ात बीवी और औलाद की मुहताज नहीं है, वह इस ऐब से बुलन्द है, आसमानों और ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ का वही मालिक है। उस के सिवा किसी को ख़बर नहीं कि क़ियामत कब होगी और सब को उसी के पास लौट कर जाना है, जहाँ वह हर एक को उस के किये का बदला देगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आख़िरी आयत में कुफ़्र व शिर्क और दूसरे गुनाहों के करने वालों के लिए ज़बरदस्त धमकी है।

86 وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

मुश्रिकीने अ़रब यह समझ रहे थे कि फ़रिश्ते और उन के दूसरे झूठे उपास्य क़ियामत के दिन उन के लिए सिफ़ारशी बनेंगे, इसीलिए उन की अिबादत करते थे।

इस आयते करीमा में उन के इसी मुश्रिकाना अ़क़ीदा को रद्द किया गया है कि वह मअ़बूदाने बातिल किसी के लिए सिफ़ारिश करने का अख़्तियार नहीं रखते, शफ़ाअ़त तो अल्लाह की इजाज़त से सिर्फ़ उस के वह बन्दे करेंगे जो अल्लाह को सच्चे दिल से मानते होंगे और किसी को उस का शरीक नहीं ठहराएँगे।

87 وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि अगर आप मुश्रिकीन से पूछेंगे कि उन्हें किस ने पैदा किया है, तो वह जवाब देंगे कि हमें अल्लाह ने पैदा किया है यानी यह बात इतनी ज़ाहिर है कि वह किसी हाल में भी इस का इन्कार नहीं कर पाते, तो फिर उन की यह कितनी बड़ी नादानी है कि अिबादत उस के सिवा ग़ैरों की करते हैं।

इसीलिए आयत के आख़िर में कहा गया है कि यह जानते हुए कि इन का ख़ालिक़ अल्लाह है, उस के सिवा दूसरों की अिबादत कैसे करते हैं?

88-89 وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उसे अपने रसूल (सल्ल०) की इस दर्द भरी बात का इल्म है कि ऐ मेरे रब! यह मुश्रिकीने मक्का ईमान नहीं लाएँगे, उन की हठधर्मी और उन के दिल की सख़्ती हद से बढ़ी हुई है, बस ऐ मेरे रसूल! आप उन्हें उन के हाल पर छोड़ दीजिए और उन से अलग हो जाइये, उन्हें जल्द ही अपना अन्जाम मालूम हो जाएगा।

(भाग–44)

सूर–ए–दुख़ान

(सूरः नं. 44)

तफ़्सीर सूरः दुख़ान

नाम- आयत नं० (10) فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ से यह नाम लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना- 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः मक्की है। सिर्फ़ आयत नं० (15) اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا के बारे में कहा जा जाता है कि यह मदनी है। 'इब्ने मरदूविया' ने इब्ने अ़ब्बास और इब्ने अल् ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से रिवायत की है कि सूरः दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई थी। इस के विषयों से भी इसी की ताईद (पुष्टि) होती है

आयत नं० 1 से 16 तक

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝ اَمْرًا مِّنْ
عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ
مُّوْقِنِيْنَ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي
السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ
جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَاۗىِٕدُوْنَ ۝ يَوْمَ
نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) हामीम्, (2) स्पष्ट किताब की क़सम! (3) कि 'हमने' उसे एक मुबारक रात में उतारा, बेशक हम तो ख़बरदार करने वाले थे; (4) हर पक्की बात का फ़ैसला उसी रात में हुआ करता है; (5) हमारे खास हुक्म से, बेशक 'हम' ही रसूलों को भेजने वाले हैं। (6) आप के 'रब' की रहमत की वजह से, वही सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (7) आसमानों और ज़मीन का 'रब' और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसका भी, अगर तुम यकीन करते हो; (8) उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं; 'वही' ज़िन्दा करता और मौत देता है; तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप-दादा का रब। (9) बल्कि यह लोग शक में पड़े खेल रहे हैं। (10) तो इन्तिज़ार करो उस दिन का जब आसमान से खुला हुआ धुआँ ज़ाहिर होगा! (11) जो लोगों पर छा जाएगा, यह है दुःख देने वाला अ़ज़ाब! (12) ''ऐ 'हमारे' रब! हमसे इस अ़ज़ाब को दूर कर दे, हम ईमान लाते हैं।'' (13) अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहाँ रहा, उनका ह़ाल तो यह है कि उनके पास साफ़ बताने वाला रसूल आ चुका है। (14) फिर भी उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहने लगे, '' (यह तो एक) सिखाया पढ़ाया दीवाना है।'' (15) हम कुछ देर के लिए अ़ज़ाब दूर भी कर दें तो तुम वही करोगे जो पहले कर रहे थे। (16) जिस दिन 'हम' बड़ी पकड़ में लेंगे, तो बेशक बदला लेकर रहेंगे।

आयत नं० 1 से 16 तक की व्याख्या

1 حٰمٓ ۚ

यह हुरूफ़ मुक़त्तआत (अलग-अलग अक्षर) हैं और इन के मतलब से भी इसी की ताईद (पुष्टि) होती है।

2 وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ

सूरः ज़ुख़रूफ़ के शुरुआत में भी अल्लाह तआला ने किताबे मुबीन की क़सम खाई है और वहाँ बताया जा चुका है कि इस से मक़सद लोगों के दिल व दिमाग़ में क़ुर्आन करीन की क़द्रों क़ीमत बिठानी है यानी यह वह अ़ज़ीम किताब है जिस की क़द्रों क़ीमत की क़सम अल्लाह तआ़ला ने खाई है।

3-4 إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ

सूरः ज़ुख़रूफ़ की आयत नं० (2) की तरह़ यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की क़सम खाकर इस बात की यक़ीन दहानी कराई है कि यह क़ुर्आन मुह़म्मद (सल्ल०) का कलाम (वाणी) नहीं है, बल्कि इसे हम ने नाज़िल किया है।

वह रात बड़ी ही ख़ैर व बरकत वाली थी जिस में हम ने इसे नाज़िल किया था। वह शबे क़द्र थी जिसे अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः आयत नं० (185) में ज़िक्र किया है। फ़रमायाः-

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ "वह रमज़ान का महीना था जिस में क़ुर्आन नाज़िल किया गया"।

सूरः क़द्र आयत नं० (1) में यूँ फ़रमा दी إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ "हम ने इस क़ुर्आन को शबे क़द्र में नाज़िल किया है"।

'क़तादह' कहते हैं कि पूरा क़ुर्आन करीम शबे क़द्र में 'लौहे मह़फ़ूज़' से आसमाने दुनिया के 'बैतुल् इ़ज़्ज़ह' तक नाज़िल किया गया, फिर वहाँ से अल्लाह तआ़ला ने इसे तेईस साल की मुद्दत में अलग-अलग वक़्त में नाज़िल फ़रमाया। बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि चूंकि नूज़ूले क़ुर्आन की शुरुआ़त माहे रमज़ान में हुई इसीलिए यहाँ कहा गया है कि क़ुर्आन माहे रमज़ान में नाज़िल हुआ।

अल्लाह तआ़ला ने इस रात को बरकतों वाली रात का नाम इसलिए दिया है कि इस में क़ुर्आन करीम नाज़िल हुआ, जिस में दीन व दुनिया की हर भलाई की तरफ़ इन्सान की रहनुमाई (guidance) की गई है और जिस के ज़रिये अल्लाह की रह़मत व बरकत और अ़द्ल व हिदायत सारे आ़लम में फैल गई है और जिस रात की वजह से नबी करीम (सल्ल०) को बुलन्द तरीन रुत्बा मिला।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "लैलतुल् क़द्र रमज़ान के आख़िरी अ़शरा की ताक़ रातों में तलाश करो"। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

इस क़ुर्आन करीम के नुज़ूल का मक़सद जिन्न व इन्स को क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से डराना था, ताकि ईमान व नेक अ़मल की ज़िन्दगी अख़्तियार कर के आग के अ़ज़ाब से बचें और जन्नत के ह़क़दार बनें।

5-6 أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की अहमियत जताने के लिए फ़रमाया कि इसे हमारे हुक्म से लौहे़ मह़फ़ूज़ से लिखकर आसमाने दुनिया पर नाज़िल किया गया है, और कहा कि हम ने इन्सान पर मेहरबानी करते हुए उन के पास उन्हीं में से एक रसूल भेजा है, जो उन्हें अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाता है, उन को पाक करता है और उन्हें किताब व सुन्नत की तअ़लीम देता है।

जैसा कि सूरः अम्बिया आयत नं० (107) में आया है وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ

"ऐ हमारे नबी! हम ने आप को सारे जहान के लिए रह़मत बनाकर भेजा है" क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की बातों और आवाज़ों को ख़ूब सुनता है और उन की ज़रूरतों को बहुत अच्छी तरह़ जानता है, इसलिए उस के इ़ल्म व ह़िक्मत का तक़ाज़ा हुआ कि वह उन पर रह़म करते हुए दीन और दुनिया की हर भलाई की तरफ़ उन की रहनुमाई के लिए अपना रसूल भेजें।

7-8 رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۝ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝

इस आयत का तअ़ल्लुक़ ऊपर वाली आयत से है और मतलब यह है कि नबी करीम (सल्ल०) को तुम्हारे उस रब ने रह़मत बनाकर भेजा है जो आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ का रब है। अगर वाक़ई तुम्हें इस बात का यक़ीन है कि वह सारे जहान का रब है जैसा कि तुम इस बात का अपनी ज़बान से इक़्रार करते हो, तो फिर सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करो।

आयत नं० (8) में फ़रमाया, इसलिए कि उस के सिवा कोई उपास्य नहीं है, ज़िन्दग़ी और मौत उसी के अख़्तियार में है और वही तुम्हारे और तुम्हारे गुज़रे हुए पूर्वजो का रब है।

9 بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝

इस आयत में मुश्रिकीने मक्का का ह़ाल बयान कर दिया कि वह अल्लाह तआ़ला और मरने के बाद उठाये जाने के बारे में गहरे शक में मुब्तिला हैं और उन का इक़्रार कि अल्लाह ही सारे जहान का रब है यक़ीन व ईमान से बिल्कुल खाली है, इसीलिए तो अ़िबादत में उस के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते हैं यानी उन की ज़बानी इक़्रार केवल धोखा के तौर पर है।

10-11 فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝ يَغْشَى النَّاسَ ۖ هَٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

बुख़ारी, मुस्लिम, इमाम अह़मद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने अबी ह़ातिम और इब्ने जरीर ने कई सनदों के साथ 'अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब अहले क़ुरैश का रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ हठधर्मी बढ़ी, तो आप (सल्ल०) ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! इन्हें क़ौमे यूसुफ़ की तरह़ सात साल की क़ह़त साली (सूखा) में मुब्तिला कर के मेरी इन के ख़िलाफ़ मदद फ़रमा दीजिए, चुनाँचे ऐसा क़ह़त पड़ा कि लोगों ने हड्डियाँ, चमड़े और मुरदार जानवर तक खाये और मारे भूक के जब आसमान की तरफ़

देखते तो उन की आँखों के सामने धुवां सा आ जाता, तो अल्लाह तआ़ला ने فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ नाज़िल किया।

जब ह़ालात की सख़्ती और बढ़ी तो 'अबू सुफ़्यान' ने कहा, मुह़म्मद! तुम हमें अपनी पैरवी की तरफ़ बुलाते हो और तुम्हारी क़ौम हलाक हो रही है। अल्लाह से दुआ़ करो कि यह क़ह़तसाली (सूखा) ख़त्म हो जाए तो अल्लाह ने यह आयत إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ नाज़िल की।

लेकिन जब क़ह़त साली (सूखा) ख़त्म हो गया और उन का घमण्ड पहले से ज़्यादा हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ नाज़िल फ़रमाया और मैदाने बद्र में उन से बदला ले लिया।

आयत नं० (10) में जिस धुवां का ज़िक्र आया है उस के बारे में उ़ल्मा के तीन क़ौल (कथन) हैं। एक यही जो ऊपर गुज़र चुका कि इस से मुराद धुवां की वह कैफ़ियत है जो क़ह़तसाली (सूखा) के दिनों में भूक की शिद्दत से अहले मक्का की आँखों के सामने पैदा होती थी। इस क़ौल के मुताबिक़ वह दिन गुज़र गया।

दूसरा क़ौल यह है कि इस से मुराद वह धुवां है जो क़ियामत के दिन की निशानियों में से एक निशानी है और चालीस दिन तक बाक़ी रहेगा। इस क़ौल के मुताबिक़ वह दिन अभी नहीं आया है।

ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रत ह़ुज़ैफ़ा और ताबिई़न की एक जमाअ़त की यही राय है। तीसरा क़ौल यह है कि इस से मुराद फ़तेह़ मक्का का दिन है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इन बातों को नक़्ल करने के बाद लिखा है कि सह़ीह़ैन की रिवायत को देखते हुए पहला क़ौल सह़ी माना है और यह बात इस के ख़िलाफ़ नहीं है कि क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी धुवां है।

जैसा कि अह़ादीस से साबित है और न उस के ख़िलाफ़ है कि फ़तेह़ मक्का के दिन एक धुवां नज़र आया था, जिसे इब्ने सअ़द ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है, जिस की सनद में इख़्तिलाफ़ है और जिस के पेशेनज़र ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने समझा कि इस आयत में 'धुवां' से मुराद वही फ़तेह़ मक्का के दिन का धुवां है। मुफ़स्सिर अबू अल् सऊद ने भी पहले क़ौल को अपनाया है।

12 رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

इस आयत में अल्लाह तआ़ला से अ़ज़ाब दूर करने की जो दुआ़ की गई है वह पहले क़ौल के मुताबिक़ क़ह़त साली (सूखा) दूर करने के लिए कुफ़्फ़ारे मक्का की दुआ है और दूसरे क़ौल के मुताबिक़ क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से यह सवाल काफ़िर व मुश्रिक करेंगे।

13-16 أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾ إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾

आयात नं० (13/14) में अल्लाह तआ़ला ने अहले मक्का के कुफ़्र व हठधर्मी और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत से उन के मुँह मोड़ने के पेशेनज़र इस बात को बहुत दूर समझा कि वह क़ह़तसाली

(सूखा) से नसीहत हासिल करेंगे और इस्लाम लाने की बात करेंगे, चुनाँचे आयत नं० (15) मे अल्लाह तआला ने ख़बर दी कि हम कुछ दिनों के लिए अज़ाब को टाल देंगे, लेकिन वह ईमान लाने का वादा नहीं करेंगे और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आएँगे, चुनांचे ऐसा ही हुआ और वह लोग अपनी पहली हालत की तरफ़ लौट गये तो अल्लाह तआला ने उन से मैदाने बद्र में बदला ले लिया, जिस का ज़िक्र आयत नं० (16) में आया है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (16) में जिस बदले का ज़िक्र आया है बज़ाहिर उस से मुराद जंगे बद्र ही है इसीलिए कि इसका सन्दर्भ कुफ़्फ़ारे कुरैश से सम्बन्धित है, अगरचे क़ियामत के दिन की गिरिफ़्त और उस दिन का अज़ाब तमाम अज़ाबों से बढ़कर होगा जो हर नाफ़रमान जिन्नात व इन्सान के लिए आम होगा।

आयत नं० 17 से 42 तक

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوٓا إِلَيَّ عِبَادَ ٱللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾ وَأَن لَّا تَعْلُوا
عَلَى ٱللَّهِ ۖ إِنِّيٓ ءَاتِيكُم بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَن تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَٱعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾
فَدَعَا رَبَّهُۥٓ أَنَّ هَٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَٱتْرُكِ ٱلْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾
كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَٰكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَٰهَا قَوْمًا
ءَاخَرِينَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ ٱلسَّمَآءُ وَٱلْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنَ ٱلْعَذَابِ
ٱلْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَالِيًا مِّنَ ٱلْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ ٱخْتَرْنَٰهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَءَاتَيْنَٰهُم مِّنَ
ٱلْءَايَٰتِ مَا فِيهِ بَلَٰٓؤٌا مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا ٱلْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِـَٔابَآئِنَآ إِن
كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَٰهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا
ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَٰهُمَآ إِلَّا بِٱلْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ ٱلْفَصْلِ مِيقَٰتُهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

अनुवाद-

(17) और 'हमने' इससे पहले फ़िरऔन की क़ौम को आज़माइश में डाला था, और उनके पास एक बड़े दर्जे का रसूल आया। (18) कि "अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ। (19) और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ!" (20) और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह (शरण) ले चुका हूँ कि तुम मुझे संगसार (पथराव) करके मार डालो। (21) और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो तुम मुझसे अलग हो जाओ।" (22) तो उन्होंने अपने रब को पुकारा! कि यह गुनहगार लोग हैं। (23) अच्छा, आप रातों-रात मेरे बन्दों को लेकर चले जाइए, और (फिरऔनी) आप का पीछा किया जाएगा। (24) और समुद्र को स्थिर छोड़ दीजिए, वह तो एक डूब जाने वाली सेना है। (25) उन्होंने कितने बाग़ और स्रोत छोड़; (26) और खेतियाँ और उम्दा ठिकाने; (27) और आराम के सामान जिनमें मज़े उड़ाया करते थे। (28) हम ऐसा ही मामला करते हैं और उन चीज़ों का वारिस 'हमने' दूसरे लोगों को बनाया। (29) फिर न तो उन पर आसमान और ज़मीन रोया और न उन्हें कोई मोहलत दी गई। (30) और 'हमने' बनी इस्राईल को ज़िल्लत की मार से छुटकारा दिलाया; (31) फ़िरऔन की ओर से, बेशक वह सरकश हद से गुज़र जाने वालों में से था। (32) और 'हमने' उनको जानते हुए दुनिया वालों के मुक़ाबले में चुन लिया। (33) और 'हमने' उन्हें निशानियों के ज़रिये वह चीज़ दी, जिनमें खुली हुई आज़्माइश थी। (34) ये लोग बड़ी ज़ोरदारी से कहते हैं, (35) कि "बस यह हमारी पहली मौत है, और इसके बाद हम उठाए जाने वाले नहीं।" (36) अगर तुम सच्चे हो, तो ले आओ हमारे बाप-दादा को। (37) क्या ये अच्छे हैं या 'तुब्बा' की क़ौम और वे जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं? 'हमने' उन्हें तबाह कर दिया, बेशक वे गुनहगार थे। (38) और 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को खेल के तौर पर नहीं बनाया। (39) 'हमने' उन्हें हक़ (उद्देश्य) के साथ पैदा किया, मगर

अक्सर लोग नहीं जानते। (40) निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सब का निश्चित समय है; (41) जिस दिन कोई अपना किसी अपने के कुछ काम न आएगा और न उन्हें कुछ मदद पहुँचेगी, (42) मगर जिस पर अल्लाह रह़म करे, वह तो बड़ा ज़बर्दस्त, रह़म करने वाला है।

आयत नं० 17 से 42 तक की व्याख्या

17-20 وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾

चूंकि सरदाराने क़ुरैश व फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के ह़ालात में बहुत ज़्यादा समानता है इसलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की तसल्ली के लिए फ़िरऔ़न और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का वाक़िआ़ बयान किया है कि अगर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की ओर से आप को तक्लीफ़ पहुँच रही है तो मूसा को भी तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने तक्लीफ़ पहुँचाई थी और उन्होंने सब्र से काम लिया था।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को भी ईमान और बन्दग़ी का हुक्म देकर आज़्माया तो उन्होंने कुफ़्र को पसन्द कर लिया था, और हम ने उन के पास अपना एक रसूल भेजा था जिन का अल्लाह और मोमिनों के नज़्दीक बड़ा मक़ाम था और जो हसब व नसब में ऊँचे और बुलन्द अख़्लाक़ (आचरण) के मालिक थे, वह मूसा बिन इमरान (अ़लै०) थे।

उन्होंने फ़िरऔ़न से कहा कि तुम अल्लाह के बन्दों (बनी इस्राईल) को आज़ाद कर दो और उन्हें मेरे साथ उन के बाप-दादा के वतन जाने दो, इसलिए कि वह आज़ाद लोग हैं और ज़ुल्म की वजह से वह इस मुल्क से बाहर निकल जाना चाहते हैं। देखो! मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का सच्चा और अमानतदार रसूल बनाकर भेजा गया हूँ ताकि तुम्हें नाफ़रमानी पर उस के अ़ज़ाब से डराऊँ।

उन्होंने फ़िरऔ़न से यह भी कहा कि अल्लाह के पालनहार होने का इन्कार और अपने रब होने का दावा कर के और उस के नबी को झुठला कर और उस के बन्दों पर ज़ुल्म व सितम ढ़ाकर अल्लाह के ख़िलाफ़ एलाने बग़ावत न करो और मैं अपने दावे को सच्चाई पर स्पष्ट और खुली दलील पेश करता हूँ तुम ने मुझे पत्थरों से मार कर हलाक करने की धमकी दी है, तो मैंने उस अल्लाह की बारगाह में पनाह ले ली है जो मेरा और तुम सब का रब है, इसलिए अब मुझे तुम्हारी तरफ़ से कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँच सकती और अल्लाह की तरफ़ से मेरी यह ह़िफ़ाज़त इस बात की दलील है कि मैं झूठा नहीं हूँ क्योंकि वह दोष लगाने वालों को पनाह नहीं देता है।

'साह़िबे मुह़ासिनुत्तन्ज़ील' लिखते हैं कि इस बात से उन का मक़्सद उन संगीन तरीन ह़ालात में बहादुरी पैदा करना और जमना था, ताकि दुश्मन उन्हें कमज़ोर न समझे।

21-23 وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

فَاَسْرِ بِعِبَادِىْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ

हज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन से यह भी कहा कि अगर तुम लोग मेरी नुबूव्वत पर ईमान नहीं लाते, तो मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो और तक्लीफ़ न पहुँचाओ, लेकिन जब हर मुम्किन कोशिश के बावजूद क़िब्तियों ने उन की दअ़वत नहीं क़ुबूल की और उन्हें क़त्ल करने की ठान ली, तो उन्होंने अपने रब से दुआ़ की और कहा, ऐ मेरे रब! यह मुजरिम व फ़सादी लोग हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली और उन्हें वह्य के ज़रिये हुक्म दिया कि वह 'बनी इस्राईल' को लेकर रातों रात वहाँ से निकल जाएँ और उन्हें यह भी ख़बर दी कि फ़िरऔ़न और दूसरे क़िब्ती उन्हें घेर कर वापस लाने के लिए उन का पीछा करेंगे।

24 وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि जब आप समुद्र क़ुल्ज़ुम पार कर जाएँ तो अपनी लाठी मारकर समुद्र को उस की अस्ल हालत में लौटाने की कोशिश न कीजिए उसे उसी तरह़ खुला हुआ छोड़ दीजिए ताकि उस में फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी दाख़िल हों और उन्हें डुबो दिया जाए और उन के अन्जाम की ख़बर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को पहले ही से इसलिए दे दी ताकि उन का डर जाता रहे, चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि अल्लाह ने मूसा और बनी इस्राईल को निजात दी और फ़िरऔ़न और उस के लश्कर को डुबो दिया।

25-28 كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۙ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۙ كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ

'फ़िरऔ़न' और फ़िरऔ़नी अपने पीछे बहुत से बाग़ात, खेतियाँ और चीज़ें छोड़ गये (जैसे औ़रतें, माल व दौलत और जाह) जो उन के ऐ़श व आराम का सामान थे।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हम ने उन्हें उन तमाम नेअ़मतों से निकाल बाहर किया और उन चीज़ों का वारिस दूसरों को बना दिया, न आसमान उन पर रोया और न ज़मीन ने उन पर आह किया यानी वह लोग अल्लाह के ऐसे ज़लील बन्दे थे कि उन की तबाही पर कोई आँसू बहाने वाला नहीं था।

'ह़सन बसरी' इस की तफ़्सीर बयान करते हैं कि उन पर न फ़रिश्ते रोये और न मोमिनीन बल्कि सब उन की हलाकत पर ख़ुश थे।

29 فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ

इस आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन्हें मोहलत नहीं दी गई, बल्कि फ़ौरन पकड़ लिये गये, इसलिए कि अल्लाह उन की फ़ित्रत से ख़ूब वाक़िफ़ था कि अगर उन्हें मोहलत भी दे दी जाए तब भी वह अपने गुनाहों से तौबः करके ईमान नहीं लाएँगे।

30-31 وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۙ مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ

عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने 'बनी इस्राईल' पर बहुत से एहसानात किये थे, यहाँ उन्हीं में से बाज़ का ज़िक्र है। फ़िरऔ़न ने 'बनी इस्राईल' को गुलाम बना रखा था, उन के लड़कों को क़त्ल करता था, उन की औ़रतों को ज़लील व रुस्वा करने के लिए ज़िन्दा रखता था और उन से सख़्त काम लेता था। अल्लाह तआ़ला ने उसे हलाक कर के 'बनी इस्राईल' को इस अ़ज़ाब से निजात दे दी।

आयत नं० (31) के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न की हलाकत का सबब बयान करते हुए फ़रमाया कि फ़िरऔ़न बड़ा ही घमण्डी था, जो कुफ़्र, ज़ुल्म और गुनाह में ह़द से बढ़ चुका था।

32-33 وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने 'बनी इस्राईल' को उस ज़माने की दूसरी तमाम क़ौमों पर फ़ज़ीलत दी थी, अपने इस इ़ल्म की बुनियाद पर कि वह इस के ह़क़दार हैं। आयत से यह हरगिज़ मुराद नहीं है कि अल्लाह ने उन्हें हर दौर के लोगों पर बड़ाई दी थी इसलिए कि उम्मते मुह़म्मदिया के बारे में सूरः आले इ़मरान आयत नं० (110) में आया है كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ "तुम सब से अच्छे लोग हो जिन्हें लोगों की भलाई के लिए पैदा किया गया है"।

और अल्लाह ने उन्हें बहुत से मोअ़जिज़ात (Miracles) व करामात से नवाज़ा था, जो ह़क़ीक़त में अल्लाह की ओर से उन की आज़्माईश थी कि उन नेअ़मतों पर वह अल्लाह के शुक्रगुज़ार होते हैं या उस की नाशुक्री करते हैं।

34-36 اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝
فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

मुश्रिकीने क़ुरैश क़ियामत और मरने के बाद दोबारा उठाये जाने का इन्कार करते थे और कहते थे कि हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद कोई दूसरी ज़िन्दगी नहीं है और न मरने के बाद दोबारा जीना है और दलील यह पेश करते थे कि उन के जो बाप दादे गुज़र गये, उन में से कोई भी लौट कर नहीं आया इसलिए ऐ मुह़म्मद! और ऐ मुसलमानों! अगर मरने के बाद दोबारा उठाये जाने का अ़क़ीदा सही है, तो हमारे उन पूर्वजों को ज़िन्दा कर के दिखा दो जो मर चुके हैं।

मुश्रिकीन की यह दलील ग़लत थी, इसलिए कि लोगों का दोबारा ज़िन्दा किया जाना क़ियामत के दिन होगा, इस दुनिया में किसी को भी इस ह़क़ीक़त को नहीं दिखाया जाएगा। जब दुनिया पूरे तौर पर ख़त्म हो जाएगी तो अल्लाह तआ़ला तमाम जिन्नों और इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करेगा और ज़ालिम काफ़िरों को जहन्नम की आग का ईंधन बनाएगा।

37-38 اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने उन्हें धमकी देते हुए कहा कि वह बेहतर हैं या 'तुब्बअ़' हिमयरी के लोग जिन की फ़ौजें 'समरक़न्द' तक पहुँच गई थीं और जहाँ से गुज़रीं वहाँ के लोगों को अपना अधीन बना लिया था, लेकिन अल्लाह ने उन के इन्कार और हठधर्मी की वजह से उन्हें हलाक कर दिया, उन के इलाक़े नष्ट विनष्ट हो गये और वह लोग टोलियों में बँट कर दुनिया में बिखर गये।

39-42 مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

यह आयते करीमा मरने के बाद उठाये जाने और क़ियामत के दिन की जज़ा व सज़ा की दलील है, इसलिए कि यह बात हिक्मत से दूर है कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन और उन के दर्मियान की चीज़ों को बिना किसी उद्देश्य के पैदा किया हो और एक वक़्त आएगा कि सब कुछ फ़ना (Destroy) हो जाएगा और उस के बाद कुछ भी नहीं होगा। यह तो ऐसी फ़ालतू बात होगी जो अ़क़्लमन्द इन्सानों के बारे में नहीं कही जा सकती तो उस ज़ात की अल्लाह तआ़ला के बारे में कैसे कही जा सकती है जिस ने इन्सानों को अ़क़्ल की नेअ़मत से नवाज़ा हो।

अल्लाह तआ़ला ने कायनात को इसलिए पैदा किया है ताकि जिन्न व इन्स उस की अ़िबादत करें और उस की नेअ़मतों पर उस का शुक्र अदा करें, तो जो शख़्स ऐसा करेगा उसे वह क़ियामत के दिन उस के नेक अ़ामाल का अच्छे से अच्छा बदला देगा और जो ऐसा नहीं करेगा, कुफ़्र व शिर्क की राह अख़्तियार करेगा उसे वह ज़लील व रुस्वा करेगा और बद्तरीन अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) करेगा।

इन्हीं हक़ीक़तों की ताईद (Support) के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (40) में फ़रमाया कि क़ियामत के दिन (जो हक़ व बातिल के दर्मियान फ़ैसले का दिन होगा) तमाम लोग मैदाने महशर में इकट्ठा किये जाएँगे।

आयात नं० (41/42) में फ़रमाया कि उस दिन कोई रिश्तेदार या दोस्त अपने किसी दूसरे रिश्तेदार या दोस्त के काम नहीं आएगा, अल्बत्ता जिन पर अल्लाह ने दुनिया में रहम किया होगा, अल्लाह पर ईमान की राह अख़्तियार की होगी, उन पर अल्लाह आख़िरत में भी रहम करेगा यानी अपने किसी नेक बन्दे को उस के लिए शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा।

अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया कि वह अपने दुश्मनों से बदला लेने पर पूरी तरह क़ुद्रत रखने वाला और अपने नेक बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।

आयत नं० 43 से 59 तक

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝
ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝ كَذَٰلِكَ
وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ
وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝
فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ۝

अनुवाद-

(43) बेशक ज़क्कूम (थूहड़) का वृक्ष, (44) गुनहगारों का खाना होगा, (45) गोया पिघली हुई धातु, वह पेट में खौलेगी; (46) जैसे गर्म पानी खौलता है; (47) ''पकड़ो इसको और घसीटते हुए भड़कती आग के बीच तक ले जाओ; (48) फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब उड़ेंल दो!'' (49) मज़ा चख इसका, तू बड़ा ज़बर्दस्त (बलवान), इ़ज़्ज़त वाला है! (50) ये वही (दोज़ख) है, जिसके बारे में तुम लोग शक में पड़े हुए थे।'' (51) बेशक डर रखने वाले लोग बेफ़िक्री की जगह में होंगे; (52) बाग़ों और स्रोतों में, (53) बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहने आमने-सामने बैठे होंगे। (54) ऐसा ही (उनके साथ मामला होगा,) और हम साफ़ गोरी, बड़ी आँखों वाली औ़रतों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे। (55) वहाँ वे इत्मिनान से हर तरह के फल मँगवा रहे होंगे। (56) वहाँ वे मौत का मज़ा कभी न चखेंगे, सिवाय पहली मौत के, और (अल्लाह) उन्हें भड़कती हुई आग के अ़ज़ाब से बचा लेगा। (57) यह सब तुम्हारे 'रब' के फ़ज़्ल (अनुकम्पा) से हुआ, यही तो बड़ी कामियाबी है। (58) 'हमने' तुम्हारी भाषा में इस (क़ुर्आन) को आसान बना दिया है ताकि ये लोग नसीह़त ह़ासिल करें। (59) अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।

आयत नं० 43 से 59 तक की व्याख्या

43-46 إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝

इस में जहन्नम और उस में पाये जाने वाले बद्तरीन अ़ज़ाब का ज़िक्र आया है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वहाँ बड़े मुजरिमों को 'ज़क्कूम' का फल खाने को दिया जाएगा।

ज़क्कूम का पेड़ बद्तरीन पेड़ है, क़ियामत के दिन यह अल्लाह के हुक्म से जहन्नम में पैदा होगा, उस के फल देखने में बुरे, बदशक्ल और बद्मज़ा होंगे।

सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (60) में इस का नाम (मल्ऊना) बताया गया है यानी वह पेड़ जिस में कोई ख़ैर (भलाई) नहीं है और सूरः अल् साफ़्फ़ात आयात नं० (62) से (66) तक में इस का तफ़्सीली

बयान आ चुका है।

जहन्नमी जब भूक की शिद्दत से उसे खाएँगे तो वह 'अलु क़तर' की तलुछट या पिघले हुए तांबे के समान उन के पेटों में पूरी शिद्दत के साथ खौलने लगेगा जो उन के दिलों को जला डालेगा।

'सूरः अलु हम्ज़ह' आयात नं० (6/7) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَی الْاَفْـِٕدَةِ ۝ "वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग होगी, जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी"।

47-50 خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰی سَوَآءِ الْجَحِیْمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِیْمِ ۝
ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْكَرِیْمُ ۝ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला जहन्नम पर तयशुदा फ़रिश्तों से कहेगा कि उन्हें उन के गिरेबानों से पकड़ लो और निहायत बेदर्दी के साथ घसीटते हुए बीच जहन्नम में डाल दो, फिर उन के सरों पर खौलता हुआ पानी उंडेल दो जो उन के सारे जिस्म को जला डाले। फिर उन को ज़ेहनी तक्लीफ़ देने के लिए बतौर मज़ाक़ उन से कहा जाएगा कि तुम दुनिया में बड़ी इ़ज़्ज़त और ऊँचे मक़ाम वाले बने रहते थे और ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते थे, तो अब अपने घमण्ड व ग़ुरूर का मज़ा चखो।

एक मुरसल रिवायत में है कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अबूजेहल से मुलाक़ात हुई तो आप (सल्ल०) ने उस से कहा कि मुझे अल्लाह ने तुम्हें यह कहने को कहा है اَوْلٰی لَكَ فَاَوْلٰی ۝ ثُمَّ اَوْلٰی لَكَ فَاَوْلٰی ۝ "अफ़्सोस है तुझ पर, ह़सरत है तुझ पर, बर्बादी और ख़राबी है तेरे लिए"। **(अलु क़ियामः 34/35)**

तो उस ने अपना हाथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ से खींच लिया और कहा कि तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ बिगाड़ सकते हो, तुम जानते हो कि मैं 'अहले बतह़ा' को जिस चीज़ से चाहता हूँ रोक देता हूँ और मैं इ़ज़्ज़त व शर्फ़ वाला हूँ तो अल्लाह तआ़ला ने मैदाने बद्र में उस की जान ले ली, उसे रुस्वा किया और क़ियामत के दिन उस की बात याद दिला कर उस से कहेगा कि हाँ! अब मज़ा चखो, तुम तो बड़े ही इ़ज़्ज़त व शर्फ़ वाले हो।

आयत नं० (50) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, जहन्नमियों से कहा जाएगा कि यही वह अ़ज़ाबे जहन्नम है जिस के बारे में तुम दुनिया की ज़िन्दगी में शक करते थे और कहते थे कि क़ियामत और जन्नत व जहन्नम की कोई ह़क़ीक़त नहीं है।

51-56 اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ مَقَامٍ اَمِیْنٍ ۝ فِیْ جَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ ۝ یَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ
مُّتَقٰبِلِیْنَ ۝ كَذٰلِكَ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِیْنٍ ۝ یَدْعُوْنَ فِیْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِیْنَ ۝
لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰی ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝

अब अहले जन्नत और जन्नत में पाई जाने वाली नेअ़मतों का ज़िक्र किया जा रहा है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दुनिया की ज़िन्दगी में इन्कार व गुनाह से बचने वाले क़ियामत के दिन उस मक़ाम पर होंगे जहाँ उन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं होगा, वह बाग़ों में और बहते चश्मों के बीच होंगे, वहाँ उन्हें पहनने के लिए बारीक और दबीज़ (नर्म) रेश्मी लिबास मिलेगा और उन के कमरों और मनाज़िल की ऐसी तर्तीब

होगी कि वह हमेशा एक दूसरे को देख रहे होंगे। अल्लाह तआ़ला ने कहा कि जन्नतियों के साथ बिल्कुल वैसा ही बर्ताव होगा जैसा हम ने ऊपर बयान किया है और हम उन की शादियाँ गोरी चिट्टी ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरों से करेंगे, ताकि उन की आँखों को ठंडक और उन के दिलों को राहत मिले और अहले जन्नत उन जन्नतों में हर आफ़त व मुसीबत से महफ़ूज़ होंगे और अपनी पसन्द के फल हाज़िर करने का जन्नत के सेवकों को हुक्म दिया करेंगे, उन्हें कभी मौत नहीं आएगी और अल्लाह तआ़ला उन्हें हमेशा के लिए जहन्नम के अ़ज़ाब से निजात दे देगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (56) का आख़िरी हिस्सा इस बात की दलील है कि मुम्किन है कि, ग़ैर मुत्तक़ी मोमिन कुछ अ़ज़ाब भुगतने के बाद जन्नत में दाख़िल हों, अल्बत्ता मुत्तक़ी जहन्नम में बिल्कुल दाख़िल नहीं होंगे।

सहीहैन की रिवायत है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मौत को एक मेढ़ें की शक्ल में लाकर जन्नत और जहन्नम के बीच में ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा। फिर कहा जाएगा, ऐ अहले जन्नत! अब तुम हमेशा यहीं रहोगे, कभी मौत नहीं आएगी और ऐ अहले जहन्नम! अब तुम हमेशा जहन्नम में ही रहोगे, तुम्हें कभी मौत नहीं आएगी।

और 'मुस्लिम' ने ह़ज़रत अबू सईद और ह़ज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अहले जन्नत से कहा जाएगा, तुम अब हमेशा सेह़तमन्द रहोगे कभी बीमार नहीं होगे और तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे, कभी नहीं मरोगे और तुम हमेशा ख़ुश व ख़ुर्रम रहोगे कभी रंजीदा (दुखी) नहीं होगे और तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे"।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक पुकारने वाला जन्नत के लोगों को पुकारेगा और कहेगा आइन्दा तुम हमेशा सेह़तमन्द रहोगे, कभी मर्ज़ न होगा। तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मरोगे नहीं। तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे और तुम हमेशा अम्न व चैन से रहोगे कभी कोई ग़म न होगा"। **(मुस्लिम)**

57 فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

मोमिनों को क़ियामत के दिन जो नेअ़मत भी मिलेगी वह अल्लाह का उन पर फ़ज़्ल व करम होगा, कोई शख़्स अपने अ़मल की वजह से जन्नत में हरगिज़ दाख़िल न होगा।

'सहीहैन' की रिवायत है कि "रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जान लो! कि किसी को उस का अ़मल जन्नत में नहीं पहुँचाएगा, लोगों ने पूछा; ऐ अल्लाह के रसूल! आप को भी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, हाँ मुझे भी। मगर यह कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपने फ़ज़्ल व करम से ढ़ांक लेगा"।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जहन्नम की आग से निजात और जन्नत का दाख़िला वह अ़ज़ीम कामियाबी होगी जिस से बढ़कर कोई कामियाबी नहीं होगी। सूरः आले इ़मरान आयत नं० (185) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ "जो शख़्स आग से

बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वह कामियाब हो गया"।

58-59 فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ فَٱرْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने कु़र्आन करीम की तअ़रीफ़ बयान की है कि ऐ मेरे नबी! हम ने इसे आप की अपनी भाषा (अ़रबी) में नाज़िल कर के आप के लिए इस (कु़र्आन) का दूसरों को समझना और आप की क़ौम के लिए इस का समझना आसान बना दिया है, ताकि अहले मक्का इस में बयान की हुई नसीहतों और दलायल से फ़ायदा उठाएँ हक़ को कु़बूल करें और अपने रब की तरफ़ पलटें।

लेकिन अक्सर अहले मक्का ने कु़र्आन करीम में बयान की हुई नसीहतों से फ़ायदा नहीं उठाया, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (59) में नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि अब आप उन के बारे में अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार कर लीजिए। वह भी इसी इन्तिज़ार में हैं कि कब आप दुनिया से रुख़सत हो जाएँ और उन्हें आप से छुट्टी मिल जाए।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में अल्लाह तआ़ला की ओर से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए मदद और अहले मक्का पर ग़ल्बा का वादा था, चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि अल्लाह ने अपने रसूल को ग़ालिब (प्रभावी) किया और काफ़िर सरदाराने कु़रैश को मुँह की खानी पड़ी।

(भाग-45)

सूर-ए-जासिया

(सूरः नं. 45)

तफ़्सीर सूरः जासिया

नाम- यह नाम आयत नं० (28) وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ से लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'हज़रत हसन' 'जाबिर' और 'इक्रिमा' के नज़्दीक पूरी सूरः मक्की है। मर्दुविया ने लिखा है कि इब्ने अ़ब्बास और क़तादा के नज़्दीक आयत नं० (14) का पहला हिस्सा قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ मदनी है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह सूरः 'सूरतुल् दुख़ान' के बाद नाज़िल हुई और दोनों के विषयों में समानता है। दोनों में तौहीद व आख़िरत से सम्बन्धित मुश्रिकीने मक्का के एतिराज़ात का जवाब दिया गया है और उन के शक को रद्द किया गया है और दोनों में कुर्आन करीम की दअ़वत को ठुकराने पर उन्हें धमकी दी गई है।

आयत नं० 1 से 15 तक

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَفِىْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ
دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ
اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا اِتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ
وَلَا يُغْنِىْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِىَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ
وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۚ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِىَ قَوْمًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) हामीम्, (2) इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिकमत वाले अल्लाह की ओर से है। (3) बेशक ईमान लाने वालों के लिए आसमान और ज़मीन में निशानियाँ हैं; (4) और तुम्हारी पैदाइश में, और उन जानवरों में भी जो उसने फैला रखे हैं, निशानियां हैं, यक़ीन करने वालों के लिए; (5) और रात और दिन के आने जाने में, और उस रिज़्क में जिसे अल्लाह आसमान से उतारता है, फिर इस ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है और हवाओं की ग़र्दिश में भी, उनके लिए निशनियाँ हैं जो अक़्ल से काम लें। (6) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम हक़ के साथ तुमको सुना रहे हैं, तो अब अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वह कौन सी बात पर यह ईमान लाएँगे? (7) तबाही है, हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए; (8) (कि) अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं, (मगर) फिर घमंड के साथ अड़ा रहता है, जैसे कि उसने उनको सुना ही नहीं, तो ऐसे व्यक्ति को दुःख देने वाले अ़ज़ाब की खुशख़बरी दे दीजिए। (9) और जब हमारी आयतों में से कोई बात जान लेता है तो वह उनका मज़ाक़ उड़ाने लगता है, ऐसे लोगों के लिए रूसवा कर देने वाला अ़ज़ाब है। (10) इनके आगे जहन्नम है, और जो काम वे करते हैं वह उनके कुछ भी काम आने वाला नहीं, और न वही उनके (काम आएँगे) जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक बना रखा है, और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है। (11) यह (क़ुर्आन) हिदायत है, और जिन लोगों ने अपने 'रब' की आयतों का इन्कार किया, उनके लिए हिला देने वाला दुःख-दायी अ़ज़ाब होगा। (12) अल्लाह ही तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, ताकि उसके हुक्म से नौकाएँ उसमें चलें, और ताकि तुम उसके फ़ज़्ल से (रोज़ी) ढूँढो; और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो, (13) और उसने आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों को अपनी ओर से तुम्हारी सेवा में लगा रखा है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (14) जो लोग ईमान लाए उनसे कह दीजिए, जो लोग अल्लाह

के दिनों की (जो आ़माल के बदले के लिए तय है) उम्मीद नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें, ताकि 'वह' उन लोगों को उनके आ़माल का बदला दे। (15) जो अच्छा अ़मल करता है तो अपने ही लिए करता है और जो बुरा अमल करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा, फिर तुम अपने 'रब' की ओर लौटाए जाओगे।

आयत नं० 1 से 15 तक की व्याख्या

1

حٰمٓ ۝

यह 'हुरूफ़ मुक़त्तआ़त' हैं और इन का अस्ल मअ़ना व मतलब अल्लाह ही बेहतर जानते हैं।

2-3 تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

सूरः 'अल् ज़ुख़्रुफ़' और 'सूरः दुख़ान' की आयत नं० (3) के समान यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने इस बात की यक़ीन दहानी कराई है कि यह क़ुर्आन मुह़म्मद (सल्ल०) का कलाम नहीं है, बल्कि इसे उस अल्लाह ने नाज़िल किया है जो ज़बरदस्त और ह़कीम भी है और इस का ज़बरदस्त होना इस बात की दलील है कि उस के दुश्मन हार जाएँ और उस का ह़कीम होना यह बताता है कि वह तमाम शुकूक व शुब्हात को ख़त्म कर दे और उस के कलाम में कोई ऐ़ब व नुक़्स न हो, चुनाँचे क़ुर्आन करीम अल्लाह तआ़ला के दलायल से भरा पड़ा है और चूंकि यह कलाम रब्बानी है इसलिए इस में कोई ऐ़ब व नुक़्स नहीं है।

4-6 وَفِىْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَىِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं दलायल तौह़ीद का ज़िक्र किया है जिन की तरफ़ ऊपर इशारा किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आसमानों और ज़मीन में या उन की पैदाइश में तरह़-तरह़ की निशानियाँ हैं और चूंकि इन निशानियों से मोमिनीन फ़ायदा उठाते हैं इसलिए बतौर ख़ास इन का ज़िक्र आया वरना अल्लाह की निशानियाँ तो हर ख़ास व आ़म के लिए है।

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन्सान कई दौर से गुज़र कर पैदा होता है। दिल, दिमाग़ और अ़क़्ल जैसी नेअ़मतों से मालामाल होना और सुनने, देखने और बोलने पर क़ादिर होना। इन के बारे में आदमी जितना ग़ौर करेगा अल्लाह की अ़ज़ीम क़ुद्‌रत का यक़ीन बढ़ता चला जाएगा।

इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर भांति-भांति के जानवर, चौपाये और हैवानात पैदा किये, कोई मैदानी जानवर है तो कोई दरिया और समुद्र में रहने वाला, इन सब के बारे में ग़ौर व फ़िक्र आदमी को उस यक़ीन तक पहुँचाता है कि अल्लाह तआ़ला मौजूद है, वह छुपी हुई चीज़ों का जानने वाला, अ़ज़ीज़ व ह़कीम है और इस बात पर क़ादिर है कि क़ियामत के दिन तमाम मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा कर के उन के आ़माल का उन से ह़िसाब ले।

रात और दिन का एक दूसरे के बाद पूरे इन्तिज़ाम के साथ आते रहना, मौसम की तब्दीली (Change)

के मुताबिक़ दोनों का छोटा और बड़ा होना और आसमान से बारिश का नाज़िल होना, जिस से मुर्दा ज़मीन में जान पड़ जाती है और हवाओं का रद्दोबदल तो कभी शाम के समय चलने वाली हवा कभी उत्तरी होती है तो कभी पूर्वी और कभी आँधी होती है। इन सब पर अल्लाह के सिवा किस का अख़्तियार है, वही तो है जो इन तमाम क़ुद्रतों का मालिक है और इन में अ़क़्ल वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो इन्सानों को सिर्फ़ उसी एक की अ़िबादत की तरफ़ बुलाती हैं।

आयत नं० (6) में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि यह वह निशानियाँ हैं जो उस के पूरी क़ुद्रत, पूरी ह़िक्मत और उस के इरादे पर दलील हैं तो अब इन निशानियों के बाद कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को किस दलील का इन्तिज़ार है, जिसे देख कर अल्लाह पर ईमान लाएँगे।

एक दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि بَعْدَ اللّٰهِ से मुराद بَعْدَ حَدِيْثِ اللّٰهِ है यानी अगर यह लोग क़ुर्आन करीम जैसी अ़ज़ीमुश्शान किताब पर ईमान नहीं लाते हैं, तो इन की हिदायत के लिए अब कौन सी किताब आएगी जिस पर ईमान लाएँगे? यानी यह मुश्रिकीन ईमान नहीं लाएँगे।

7-8 وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने ऐसे काफ़िर का अन्जाम 'वैल' (जहन्नम की एक वादी) बताया है जो अल्लाह और उस की सिफ़ात के बारे में ख़िलाफ़े दलील बात करता है और गुनाह ख़ूब करता रहता है और जब उस के सामने अल्लाह की आयतों की तिलावत की जाती है तो उस की कैफ़ियत ऐसी हो जाती है कि जैसे उस ने उन्हें सुना ही नहीं और घमण्ड व गुरूर की वजह से अपने कुफ़्र पर जमा रहता है और ह़क़ क़ुबूल करने से इन्कार कर देता है।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप ऐसे काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

9 وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

ऐसे काफ़िरों की सिफ़त (गुण) यह भी है कि जब उन के सामने क़ुर्आन करीम की तिलावत की जाती है और उस के हुक्म बयान किये जाते हैं, तो वह उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने ऐसे झूटे और गुनाहों की सिफ़त वाले इन्सानों का अन्जाम यह बताया है कि उन के लिए आख़िरत में ऐसा रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब तैयार किया गया है कि उस से बढ़कर कोई ज़िल्लत व रुस्वाई नहीं हो सकती है।

10 مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاۗءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जहन्नम उन का इन्तिज़ार कर रही है और उस दिन उन का माल व जाह और उन की औलाद उन के कुछ भी काम नहीं आएगी और अल्लाह के सिवा जिन

मअ़बूदों की यह लोग पूजा कर रहे हैं वह भी इन से अ़ज़ाब को टाल नहीं सकेंगे और इन्हें बड़ा ही सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा।

11 هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝

इस आयते करीमा में इशारा क़ुर्आन करीम की तरफ़ है कि यह एक हिदायत नामा है। अल्लाह तआ़ला इस पर ईमान लाने वालों को गुमराही से निकाल कर हिदायत की राह पर डाल देता है और कुफ़्र व शिर्क से निजात देकर ईमान व तौहीद की नेअ़मत से मालामाल कर देता है, इसलिए कि वह सरापा नूर और भलाई व बरकत का स्रोत है।

12 اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपनी कुछ नेअ़मतों का ज़िक्र किया है जिन से इन्सान फ़ायदा उठाया करते हैं और जो अल्लाह पर ईमान की दअ़वत देती हैं और उस की बन्दगी पर उभारती हैं और मक़्सूद (Purpose) अहले कुरैश को अल्लाह की क़ुद्रत और उस के एह़सानात का क़ायल (Convence) करना है, ताकि ईमान ले आएँ और इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उसी ने तुम्हारे लिए समुद्र को बना दिया, ताकि उस के हुक्म से तुम्हारी कश्तियाँ (नाव) चलती रहें और तुम उस की नेअ़मतें ह़ासिल करो, चुनाँचे आदमी कश्तियों के ज़रिये सफ़र कर के दूसरे शहरों में इ़ल्म ह़ासिल करने और तिजारत के लिए जाता है, अल्लाह की राह में जिहाद करता है, समुद्र में ग़ोते लगाकर मोती निकालता है और तरह़-तरह़ की मछलियों का शिकार करता है।

इन नेअ़मतों का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान अपने ख़ालिक़ व पालनहार का शुक्र अदा करे जिस ने यह नेअ़मतें दी हैं और केवल उसी की अ़िबादत करे।

13 وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया और उसी ने तुम्हारे लिए उन तमाम चीज़ों को दे दिया है जिन्हें उस ने आसमानों और ज़मीन में तुम्हारे फ़ायदे के लिए पैदा की हैं। सूरज व चाँद, सितारे, बारिश, बादल, हवाएँ, पहाड़, दरख़्त, नहरें, समुद्र, धातुएँ और हैवानात, इन तमाम मख़्लूक़ात को अल्लाह ने ही अपनी रह़मत से इन्सानों के लिए दे दिया है और बिलाशुब्हा उस के एह़सानात यह बताते हैं ताकि लोग उस पर ईमान ले लाएँ, उस की वह़दानियत का इक़्रार करें, उस का शुक्र अदा करें और किसी को उस का शरीक न ठहराएँ।

14 قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

मक्की ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को नसीह़त की है कि अगर उन्हें मुश्रिकीने कुरैश की तरफ़ से तक्लीफ़ पहुँचती है तो दरगुज़र से काम लें और बदला लेने की न सोचें। दअ़वत की राह में ह़िक्मत व दानाई का भी यही तक़ाज़ा है। अगर बिल्फ़र्ज़ मुसलमानों में बदला लेने की ताक़त भी है तब

भी ऐसा न करें।

أَيَّامَ اللَّهِ की तफ़्सीर बाज़ ने पिछली क़ौमों पर अ़ज़ाबे इलाही किया है, बाज़ ने केवल अल्लाह का अ़ज़ाब मुराद लिया है और बाज़ ने इस से मुराद मरने के बाद दोबारा उठाये जाने के दिन को लिया है।

आयत में दरगुज़र करने का बदला यह बताया गया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मोमिनों को उन के इस नेक अ़मल का अच्छा बदला देगा। لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ का दूसरा मतलब यह बयान किया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को उन के बुरे आमाल का बदला देगा, यानी ऐ मोमिनों! तुम उन से इन्तिक़ाम लेने की न सोचो, उन को तक्लीफ़ पहुँचाने का बदला उन्हें हम देंगे।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि दरगुज़र का यह हुक्म जिहाद के हुक्म के ज़रिये निरस्त (Reject) हो गया है।

15 مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

जो शख़्स इस दुनियावी ज़िन्दगी में अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने के बाद नेक अ़मल करता है, तो क़ियामत के दिन उस का फ़ायदा इसे ही पहुँचेगा कि जहन्नम के अ़ज़ाब से निजात पाएगा और जो शख़्स बुरा अ़मल करता है तो वह अपने आप को नुक़्सान पहुँचाएगा कि जहन्नम में डाल दिया जाएगा। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में नेक अ़मल का शौक़ दिलाया गया है और अल्लाह की नाफ़रमानी से डराया गया है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम सब को अपने रब के पास ही लौट कर जाना है जहाँ वह हर एक को उस के अ़मल का बदला देगा, भला करने वाले को भला और बुरा करने वाले को बुरा बदला मिलेगा।

आयत नं० 16 से 26 तक

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا
عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۭ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا
كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى
بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا
وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ
حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(16) और 'हमने' बनी इस्राईल को किताब और हिकमत और नबूवत दी थी, उनको 'हमने' पाक रोज़ी दी और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी। (17) और 'हमने' उन्हें दीन के विषय में साफ़-साफ़ हुक्म दिया, फिर जो भी विभेद उन्होंने किया इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था आपस की ज़िद की वजह से, बेशक तुम्हारा 'रब' क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते रहे। (18) फिर 'हमने' तुमको एक स्पष्ट शरीअ़त पर (क़ायम) कर दिया, तो तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो, जो इल्म नहीं रखते। (19) ये अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ भी काम आने वाले नहीं, और ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) का साथी है। (20) ये लोगों के लिए बसीरत (सूझ-बूझ) की बातें हैं, और हिदायत और रह़मत है उनके लिए जो यक़ीन करें। (21) क्या वे लोग, जिन्होंने बुराइयाँ की हैं, यह समझते हैं कि 'हम' उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये, उनका जीना और मरना एक जैसा हो जाए? बहुत बुरा फ़ैसला है जो ये कर रहे हैं। (22) और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ (उद्देश्य) के साथ पैदा किया और ताकि हर नफ़्स (व्यक्ति) को उसकी कमाई का बदला दिया जाए, और उनके साथ ज़ुल्म न किया जाएगा। (23) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना मअ़बूद (उपास्य) बना लिया है? जानने बूझने के बाद भी अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया और उसके कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया, अब कौन है जो अल्लाह के बाद उसे राह पर ला सकता हो, फिर क्या तुम नसीह़त नहीं ह़ासिल करते? (24) और कहते हैं, ''हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है, (यहीं) हमें मरना और जीना है, और हमें बस ज़माने की गर्दिश तबाह करती है, और

उनके पास इसका कोई इल्म नहीं, केवल बस अटकल की बातें करते हैं। (25) और जब उनके सामने 'हमारी' स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उनकी हुज्जत इसके सिवा और कुछ नहीं होती कि वे कहते हैं, ''लाओ हमारे बाप-दादा को अगर तुम सच्चे हो।'' (26) कह दीजिए, ''अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है, फिर 'वही' तुम्हें मौत देता है, फिर 'वही' तुमको क़ियामत के दिन जमा करेगा, और जिसके आने में कोई सन्देह नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

आयत नं० 16 से 26 तक की व्याख्या

16-17 وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ
عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُم بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल पर जो एह़सानात किये थे उन में से एक एह़सान यह भी था कि तौरेत में नबी करीम (सल्ल०) की निशानियाँ बयान कर दी गई थीं और बता दिया गया था कि अल्लाह तआ़ला उन्हें अपनी आख़िरी किताब देकर भेजेगा और इन बातों को उन में का हर वह शख़्स जानता था जो तौरेत का इल्म रखता था और नबी करीम (सल्ल०) की बेअ़सत से पहले यहूदे मदीना औस व ख़ज़्रज वालों से कहा करते थे कि वह नबी जल्द ही आने वाले हैं, जिन पर ईमान लाएँगे और उन के साथ मिलकर तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग करेंगे और तुम पर ग़ालिब आएँगे और जब नबी करीम (सल्ल०) आये तो उन्होंने आप (सल्ल०) को उसी तरह़ पहचान लिया जिस तरह़ कोई अपनी औलाद को पहचानता है।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इस की सराह़त सूरः अल् बक़रः आयत नं० (146) में और सूरः अल् अन्आ़म आयत (20) में कर दी है الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ

"यहूद आप को उसी तरह़ पहचानते हैं जिस तरह़ वह अपने बेटों को पहचानते हैं"।

लेकिन चूंकि नबी करीम (सल्ल०) औलाद 'इस्माईल बिन इब्राहीम' में से थे, इसलिए उन्होंने बुग्ज़ व ह़सद (जलन) की वजह से ईमान लाने से इन्कार कर दिया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने 'बनी इस्राईल' यानी औलादे 'याक़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम' को तौरेत और लोगों के दर्मियान फ़ैसला करने की समझ व बसीरत दी और उन में ह़ज़रत मूसा, हारून, यूसुफ़, दाऊद, सुलेमान और ईसा (अ़लै०) जैसे अम्बिया पैदा किये और उन के दौरे ईमानी में दूसरी क़ौमों पर उन्हें फ़ौक़ियत (Priority) दी और तौरेत व इन्जील में ह़लाल व ह़राम का साफ़ इल्म और नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत के साफ़ दलायल बयान किये, ताकि उन की बेअ़सत के बाद उन्हें पहचान कर उन पर ईमान लाएँ लेकिन बुरा हो बुग्ज़ व ह़सद का, जिस की वजह से उन्होंने आप (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार कर दिया।

बहुत से मुफ़स्सिरीन ने आयत नं० (17) की तफ़्सीर यह बयान की है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी

इस्राईल के लिए तौरेत इसलिए नाज़िल किया था कि वह लोग इस में बयान किये हुए शरीअ़त के आदेश या निर्देश पर अ़मल कर के अपने आपस का मतभेद दूर करें, लेकिन मामला उल्टा हुआ और एक दूसरे से नफ़रत व ह़सद (जलन) की वजह से उन्होंने अह़कामे शरीअ़त को पीछे डाल दिया और उन का आपस का इख़्तिलाफ़ बढ़ता ही गया और उन्होंने अल्लाह के दीन व शरीअ़त को खिलवाड़ बना लिया है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह क़ियामत के दिन उन यहूद के दर्मियान फ़ैसला करेगा और उन को उन के किये का बदला देगा।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि इस में उम्मते मुह़म्मदिया के लिए ज़बरदस्त तम्बीह (warning) है कि क़ुर्आन व सुन्नत के साथ अगर उन्होंने भी वैसा ही बर्ताव किया जैसे यहूद व नसारा ने तौरेत व इन्जील के साथ किया है, तो फिर वह भी बुरे अन्जाम का इन्तिज़ार करें।

18 ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि ऐ मेरे नबी! हम ने आप को बहुत ही स्पष्ट (clear) दीन और साफ़ शरीअ़त दी है। जो आप से पहले तमाम अम्बिया का दीन रहा है आप उसी पर चलते रहिये और अपनी उम्मत को उसी का हुक्म दीजिए और जिन्हें अल्लाह की तौह़ीद और उस के दीन व शरीअ़त का इ़ल्म नहीं, चाहे वह कुफ़्फ़ारे मक्का हों या यहूद व नसारा, उन के ख़्वाहिशात की पैरवी न कीजिए। अगर आप उन के इच्छा की पैरवी करेंगे तो यह लोग अल्लाह के अ़ज़ाब को आप से नहीं टाल सकेंगे।

19 اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

इस आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दुश्मनाने इस्लाम मोमिनों के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद करते हैं, लेकिन इस का उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा इसलिए कि अल्लाह की मदद व ताईद (Support) से वह मह़रूम हैं, जबकि अहले तक़्वा मोमिनों को उस की मदद व ताईद ह़ासिल है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् बक़रः आयत नं० (257) में फ़रमाया हैः-

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ

"ईमान वालों का कारसाज़ ख़ुद अल्लाह तआ़ला है, वह उन्हें अन्धेरों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है और काफ़िरों के दोस्त शयातीन हैं, वह उन्हें रौशनी से निकाल कर अन्धेरों की तरफ़ ले जाते हैं"।

20 هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम की अ़ज़्मत बयान फ़रमाई है कि इस में जो शरीअ़त के अह़काम और दलायल बयान किये गये हैं उन में ग़ौर व फ़िक्र करने से मोमिन के दिल में ऐसी सूझबूझ पैदा होती है कि वह नफ़ा व नुक़सान और ह़क़ व बातिल के दर्मियान बँट्वारा करने लगता है। यह वह किताब है जो मोमिनों के लिए हिदायत व रह़मत है।

21 اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ

سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

कुर्आन करीम में अल्लाह तआ़ला ने यह बात मुख़्तलिफ़ (different) पैराये में बार-बार कही है कि नेक व बुरे का अन्जाम एक जैसा हरगिज़ नहीं होगा। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने यहाँ भी बयान किया है कि क्या शिर्क व गुनाह का अ़मल करने वाले इस ख़ुशफ़हमी में हैं कि हम उन्हें दुनिया व आख़िरत में उन लोगों के बराबर बना देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किया।

अहले ईमान तो दुनिया में अपने रब की बन्दग़ी और सुकूने दिल की दौलत से मालामाल रहे और आख़िरत में उस की रह़मत और जन्नत के ह़क़्दार होंगे और शिर्क व गुनाह करने वाले तो दुनिया में अपने रब के नाफ़रमान रहे और दिल के सुकून से मह़रूम रहे और आख़िरत में उस की रह़मत और जन्नत से मह़रूम कर दिये जाएँगे।

'सूरः ताहा' आयत नं० (124) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:-

فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝

"बस जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा न तो वह बहकेगा, न तक्लीफ़ में पड़ेगा और जो मेरी याद से मुँह फेरेगा उस की ज़िन्दग़ी तंगी में रहेगी और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा बनाकर उठाएँगे"।

22 وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

ऊपर जो बात कही गई है उसी की ताईद (Support) के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को अ़द्ल व इन्साफ़ क़ायम करने के लिए पैदा किया है और नेक व बद्कार को बराबर रखना अ़द्ल व इन्साफ़ के ख़िलाफ़ होगा।

आसमानों और ज़मीन की पैदाइश का मक़्सद ही यह है कि ज़मीन पर रहने वाले जो जिन्न व इन्स उस की बन्दग़ी करें उन्हें अच्छा बदला दिया जाए और जो उस की नाफ़रमानी करें उन्हें उन के बुरे करतूतों के बदले अ़ज़ाब में मुब्तिला किया जाए।

23 اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى
بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को सम्बोधित कर के उन लोगों के ह़ाल पर तअ़ज्जुब किया है जिन का उपास्य उन का नफ़्स (अपना मन) होता है, जो अल्लाह के दीन के बजाय अपने नफ़्स (जी) की अ़िबादत (उपासना) करते हैं और अल्लाह तआ़ला भी उन्हें गुमराही में भटकता हुआ छोड़ देता है, इसलिए कि वह जानता है कि उन में ह़क़ बात को मानने की योग्यता मौजूद नहीं है।

وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ की दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि चूंकि अपने नफ़्स (जी) का वह बन्दा जान रहा होता है कि उसे क्या करना चाहिए इस के बावजूद अल्लाह की तरफ़ नहीं झुकता, इसलिए अल्लाह तआ़ला इसे गुमराही में भटकता हुआ छोड़ देता है और इस के कान और दिल पर मुहर लगा देता है और

इस की आँख पर पर्दा डाल देता है, इसलिए न वह ख़ैर की कोई बात सुन पाता है, न ही भलाई व बुराई में अन्तर कर पाता है और न हक़ पर चलने की उसे तौफ़ीक़ मिलती है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिस का हाल ऐसा हो जो ऊपर बयान किया गया यानी जिसे अल्लाह तआ़ला गुमराह कर दे, उसे हिदायत की तौफ़ीक़ कौन दे सकता है। लोगों! यह बातें सुनकर नसीहत क्यों नहीं हासिल करते और ईमान व अ़मल की ज़िन्दग़ी अख़्तियार कर के अपने रब की रज़ा और जन्नत के हक़्दार क्यों नहीं बनते?

24 وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا
لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾

मुशिरकीने मक्का मरने के बाद उठाये जाने का इन्कार करते थे और कहते थे कि जो ज़िन्दग़ी हम गुज़ार रहे हैं उस के सिवा अब कोई ज़िन्दग़ी नहीं है। आदमी जिस्मानी ज़िन्दग़ी जीता है और उ़म्र के बढ़ने के साथ उस के जिस्म को मौत आ जाती है और ख़त्म हो जाता है, उस ज़िन्दग़ी के बाद न कोई दूसरी ज़िन्दग़ी है और न कोई और आ़लम है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो बात वह अपनी ज़बान से कहते हैं उस की उन के पास कोई दलील नहीं है, यह केवल उन का ख़याल है।

25-26 وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ
فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब मुशिरकीने मक्का के सामने इन आयतों की तिलावत की जाती है, जिन में यह बयान है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपनी मख़्लूक़ को दोबारा ज़िन्दा करेगा, तो इन आयात को रद्द करने के लिए उन के पास उन की इस बात के सिवा कोई दलील नहीं होती कि "अच्छा अगर मरने के बाद दोबारा उठाये जाने का अ़क़ीदा सही है तो फिर हमारे गुज़रे हुए बाप दादों को ज़िन्दा कर के दिखा दो"।

अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (26) में उन के इस शुब्हा को रद्द करते हुए नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी फ़रमाया कि ऐ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश! तुम्हें ज़माना हलाक नहीं करता, बल्कि अल्लाह तुम्हें ज़िन्दग़ी देता है और वह तुम्हें मौत के घाट उतारता है और जब क़ियामत का दिन आएगा तो वह तुम्हें दोबारा ज़िन्दा कर के मैदाने महशर में इकट्ठा करेगा, जिस में कोई शुब्हा नहीं है, इसलिए कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ुद्रत रखता है, वह यक़ीनन दोबारा भी पैदा करने पर क़ुद्रत रखता है, लेकिन अक्सर लोग जिन्हें अल्लाह के क़ादिर होने पर ईमान नहीं है और जो अपनी पैदाइश के बारे में ग़ौर नहीं करते, वह इस ह़क़ीक़त से दूर हैं।

आयत नं० 27 से 37 तक

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى
اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۟ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا
وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
نّٰصِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

अनुवाद-

(27) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और जिस दिन वह घड़ी आएगी उस दिन झूठ वाले घाटे में होंगे। (28) और तुम एक गिरोह को घुटनों के बल झुका हुआ देखोगे, हर गिरोह अपनी किताब की ओर बुलाया जाएगा,आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते थे; (29) यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे हक़ में ठीक-ठीक बोल रही है, हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे।'' (30) तो जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उन्हें उनका 'रब' अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही खुली हुई कामियाबी है। (31) और जिन लोगों ने इन्कार किया (उनसे कहा जाएगा), ''क्या तुम्हें 'हमारी' आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं? मगर तुमने घमंड किया और तुम मुजरिम लोग थे।'' (32) और जब कहा जाता था कि ''अल्लाह का वादा सच्चा है और उस घड़ी में कोई सन्देह नहीं,'' तो तुम कहते थे,'' 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हम तो एक गुमान रखते थे, और हमें यक़ीन नहीं होता।''(33) और जो कुछ वे करते रहे उसकी बुराइयाँ उन पर ज़ाहिर हो गईं और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ करते थे उनको उसी ने आ घेरा। (34) और कहा जाएगा, ''आज हम तुम्हें भुला देते हैं जिस तरह तुमने अपनी पेशी के इस दिन को भुला दिया था, तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं है।'' (35) यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ायी थी और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज वे न तो उससे निकाले जाएँगे, और न उनकी तौबः कुबूल की जाएगी। (36) तो सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो आसमानों का रब और ज़मीन का रब, (और) सारे संसार का रब है। (37) और आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी के लिए है और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिक्मत वाला है।

आयत नं० 27 से 37 तक की व्याख्या

27-31 وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَتَرٰى كُلَّ
اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هٰذَا كِتٰبُنَا

يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वही आसमानों और ज़मीन का मालिक है, उसी ने उन्हें पैदा किया है और उन पर पूरी क़ुद्रत रखता है। जिस की क़ुद्रत और इ़ल्म व ह़िक्मत ऐसी हो उस की इस बात को कैसे झुठलाया जा सकता है कि वह क़ियामत के दिन अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दा कर के उन्हें ह़िसाब व बदला के लिए मैदाने मह़शर में जमा नहीं करेगा।

क़ियामत का दिन वह दिन होगा जब अपने रब के साथ ग़ैरों को शरीक बनाने वाले सब कुछ खो देंगे और जहन्नम में डाल दिये जाएँगे और ऐ मेरे नबी! आप उस दिन देखेंगे कि तमाम क़ौमें और जमाअ़तें मैदाने मह़शर में ह़िसाब के वक़्त ज़िल्लत के साथ अपने घुटनों के बल झुके होंगे और हर गिरोह (समूह) के सामने उस का नाम-ए-आ़माल पेश किया जाएगा या हर व्यक्ति के सामने वह किताब रखी जाएगी जो दुनिया में उन की हिदायत के लिए भेजी गई थी और उन से कहा जाएगा कि आज तुम्हें तुम्हारे आ़माल का बदला चुकाया जाएगा और तुम्हारा नाम-ए-आ़माल तुम्हें सब कुछ बता रहा है दुनिया में तुम जो कुछ करते रहे, हम अपने फ़रिश्तों के ज़रिये उसे लिखते रहे, एक ज़र्रह के बराबर भी तुम्हारी नेकी और बुराई कहीं गायब नहीं हुई। जिन लोगों ने यहाँ ईमान और नेक अ़मल की राह अपनाई और शिर्क व गुनाह से बचे आज उन का रब उन्हें अपनी रह़मत से यानी जन्नत में दाख़िल कर देगा और खुली कामियाबी यही है कि आदमी हर ख़ौफ़ से निजात पा जाए और हमेशा की ख़ुशी पा ले।

जिन लोगों ने इन्कार की राह अपनाई और शिर्क व गुनाह का अ़मल किया, उन से कहा जाएगा, क्या मेरे अम्बिया तुम्हारे पास नहीं आये और क्या मेरी आयतें पढ़कर तुम्हें सुनाई नहीं गईं और तुम्हें अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं दिलाया गया? हाँ, तुम्हें यक़ीनन मेरी आयतें सुनाई गईं, लेकिन तुम ने घमण्ड में आकर उन का इन्कार कर दिया और तुम लोग थे ही बड़े मुजरिम लोग, जब ही तो तुम ने बन्दा होकर बन्दगी की राह छोड़ दी, शैतान की पैरवी की और गुनाहों में फँसते रहे।

32 وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ
إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ۝

और जब तुम से कहा जाता था कि अल्लाह का यह वादा बरह़क़ है कि वह अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दा करेगा, ह़िसाब व बदला के लिए उन्हें मैदाने मह़शर में इकट्ठा करेगा और क़ियामत के आने में कोई शुब्हा नहीं है, तो तुम कहते थे कि हमें क़ियामत की बात समझ में नहीं आती, उसे हम एक काल्पनिक चीज़ ही समझते हैं, हमें बिल्कुल यक़ीन नहीं है कि क़ियामत नाम की कोई चीज़ होगी।

33-35 وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسَاكُمْ

كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कुफ़्र व शिर्क और गुनाह करने वालों का बुरा अन्जाम उन के सामने होगा और वह आग का अ़ज़ाब उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगा जिस का वह दुनिया में मज़ाक़ उड़ाया करते थे और अल्लाह तआ़ला उन से कहेगा कि आज हम तुम्हें जहन्नम में डालकर उसी तरह़ भूल जाएँगे जिस तरह़ तुम इस दिन को भूल कर शिर्क व गुनाह में फँसे थे और नेक अ़मल से दूर रहे जो आज आग के अ़ज़ाब से तुम्हारी निजात का सबब बनता और अब कोई नहीं जो तुम्हें आग के अ़ज़ाब से निजात दिला सके और तुम इस अन्जामे बद् से इस वजह से दो चार हुए कि तुम ने क़ुर्आन करीम का मज़ाक़ उड़ाया था और दुनिया की रंगीनियों ने तुम्हें धोके में डाल दिया था और तुम समझ बैठे थे कि न कोई दूसरी ज़िन्दगी है और न ही ह़िसाब व बदला है।

आयत नं० (35) के आख़िर में यह बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला जहन्नमियों से सख़्त नफ़रत की वजह से मुँह फेर लेगा और कहेगा कि अब यह बद्बख़्त उस आग से कभी निजात नहीं पाएँगे और न उन से यह कहा जाएगा कि अपना उ़ज़्र (Reason) पेश कर के अपने रब को राज़ी कर लें, क्योंकि तौबः और माफ़ी की जगह दुनिया थी, मैदाने मह़शर में तो सिर्फ़ ह़िसाब व बदला की जगह होगी।

36-37 فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः में अपने पालनहार होने की जो चीज़ें बयान की हैं, बन्दों पर अपने जिन लुत्फ़ व करम का ज़िक्र किया है उस का मतलब है कि उस के बन्दे उस की ह़म्द व सना (तअ़रीफ़) बयान करते रहें।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों! सारी तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीन का रब है और जो सारे जहान का रब है, इसलिए तुम उसी की तअ़रीफ़ बयान करो न कि मूर्तियों और झूठे उपास्यों की और सुनो! आसमानों और ज़मीन में हर बड़ाई उसी के लिए है इसलिए कि वह ज़बरदस्त और हर चीज़ पर ग़ालिब है जो अपने तमाम आ़माल में बड़ा ह़कीम है, उस का कोई अ़मल ह़िक्मत से खाली नहीं होता।

(भाग-46)

सूर-ए-अहक़ाफ़

(सूरः नं. 46)

तफ़्सीर सूरतुल् अह़क़ाफ़

नाम– इसका नाम आयत नं० (21) وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ से लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'इब्ने मरदूविया' ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः हामीम अल् अह़क़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई थी। 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः अक्सर लोगों के नज़्दीक 'मक्की' है।

आयत नं० 1 से 10 तक

*
حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ
كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ
وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

अनुवाद–

(1) ह़ामीम् (2) (यह) किताब ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाले अल्लाह की ओर से उतारी गई है; (3) 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसे केवल ह़क़ के साथ और एक निश्चित मुद्दत (अवधि) तक के लिए पैदा किया है, और इन्कारियों को जिस चीज़ की नसीह़त की जाती है उस से मुँह फेर लेते हैं। (4) कह दीजिए, ''क्या तुमने उनको देखा है, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती की चीज़ों में से क्या पैदा किया है? या आसमानों में कोई उनकी साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब या कोई इल्मी प्रमाण ले आओ, अगर तुम सच्चे हो'' (5) और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है, जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारता हो, जो क़ियामत तक उनको जवाब नहीं दे सकते, और वे उनकी पुकार से बेख़बर हों; (6) और जब लोग इकट्ठा किये जाएँगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत का इन्कार करेंगे। (7) जब 'हमारी' स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो वे लोग जिन्होंने इन्कार किया सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आ चुका, कहते हैं, ''यह तो खुला जादू है।'' (8) क्या यह कहते हैं, ''उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है? कह दीजिए, ''अगर मैंने इसे खुद गढ़ा

है, तो अल्लाह के ख़िलाफ़ मेरे लिए तुम कुछ भी अधिकार नहीं रखते, जिसके बारे में तुम बातें बनाने में लगे हो, वह उसे खूब जानता है, और 'वही' मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।'' (9) कह दीजिए, ''मैं कोई नया रसूल तो नहीं हूं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा और (तुम्हारे साथ क्या मामला किया जाएगा,) मैं तो केवल उस वह़्य (प्रकाशना) की पैरवी करता हूँ, जो मेरी ओर वह़्य भेजी जाती है, और मैं तो बस स्पष्ट ख़बरदार करने वाला हूँ। (10) कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर यह (क़ुर्आन) अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने उसका इन्कार किया, जबकि बनी इस्राईल में से एक गवाह ने उसके एक भाग की गवाही भी दी, तो वह ईमान ले आया और तुम घमंड में पड़े रहे, बेशक अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।''

आयत नं० 1 से 10 तक की व्याख्या

1

حٰمٓ ۝

यह हुरूफ़ मक़त्तआ़त (अलग-अलग अक्षर) हैं और इन का वास्तविक अर्थ मतलब अल्लाह ही बेहतर जानते हैं।

2

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

सूरः ज़ुख़रुफ़, सूरतुल् दुख़ान और सूरः जासिया के शुरु की आयतों की तरह़ यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने इस बात का यक़ीन दिलाया है कि क़ुर्आने करीम नबी करीम (सल्ल०) का कलाम नहीं है, बल्कि उस अल्लाह का कलाम है जो ज़बरदस्त, हर चीज़ पर ग़ालिब और बड़ा ह़कीम व दाना है।

3

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की तमाम मख़्लूक़ात को बेकार नहीं पैदा किया है, बल्कि उन की तख़्लीक़ (पैदाइश) का एक महान उद्देश्य है जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम में बराबर बयान किया है और वह यह है कि सिर्फ़ उसी की अ़िबादत की जाए। उस ने तमाम चीज़ों को एक निश्चित समय तक के लिए पैदा किया है, जब वह समय पूरा हो जाएगा तो कायनात की एक-एक चीज़ ख़त्म हो जाएगी।

आयत के आख़िरी ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अहले कुफ़्र अपनी तख़्लीक़ (पैदाइश) के मक़्सद से बेपरवाह हैं, ह़ालांकि अल्लाह ने उन की याद दहानी (Remember) के लिए किताबें नाज़िल कीं और अम्बिया भेजे, जिन्होंने इन को आख़िरत के अ़ज़ाब से डराया, लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ तो वह अ़नक़रीब इस कुफ़्र व सरकशी का अन्जाम जान लेंगे।

4

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۗ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी मुश्रिकीन से कहा जा रहा है कि अल्लाह के सिवा जिन मअ़बूदों (उपास्यों) को तुम पुकारते हो, ज़रा उन के बारे में मुझे ख़बर तो दो कि उन्होंने ज़मीन में कोई चीज़ पैदा की है या आसमानों में पाई जाने वाली किसी चीज़ के पैदाइश में उन का हि़स्सा है, जिस की वजह से वह अ़िबादत के ह़क़्दार हैं या क़ुर्आन करीम से पहले तुम्हारे पास कोई ऐसी आसमानी किताब आई है जिस में तुम्हारे दीन व अ़क़ीदा के सह़ी होने की दलील पाई जाती हो या पिछली क़ौमों के उ़लूम (ज्ञान) का कोई हि़स्सा तुम्हारे पास है जिस में यह गवाही मौजूद हो कि तुम्हारे झूठे उपास्य अ़िबादत के ह़क़्दार हैं? अगर तुम सच्चे हो तो कोई भी दलील लाओ।

ह़क़ीक़त यह है कि तुम्हारे पास कोई दलील मौजूद नहीं है। इसलिए ऐ मुश्रिकीने मक्का! तुम अल्लाह के साथ ग़ैरों को क्यों शरीक बनाते हो और क्यों उन की अ़िबादत करते हो?

5-6 وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ۝ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ۝

यहाँ अहले कुफ़्र की संगदिली व बद्बख़्ती बयान की जा रही है कि उस आदमी से ज़्यादा गुमराह कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा किसी ऐसे झूठे उपास्य को पुकारता है जो उस की पुकार को क़ियामत तक नहीं सुन सकता है, इसलिए या तो वह मिट्टी या पत्थर की बनी मूर्ति है या कोई बेबस बन्दा व मिस्कीन है जो अपने हाल में है और अल्लाह की मर्ज़ी के बिना एक तिनका भी नहीं हिला सकता है, बल्कि क़ियामत के दिन मैदाने मह़शर में जब सब लोग जमा होंगे तो वही उपास्य उन के दुश्मन बन जाएँगे और उन से बरी होने का एलान कर देंगे और साफ़-साफ़ कह देंगे कि हम ने इन्हें नहीं कहा था कि यह हमारी अ़िबादत करें और न हम जानते हैं कि इन्होंने हमारी अ़िबादत की थी। ऐ हमारे रब! हम इन से अपनी बेज़ारी और बराअत का एलान करते हैं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि बातिल उपास्यों का अपनी ज़बान से इस बात का एलान करना कि इन मुश्किरीन ने हमारी अ़िबादत नहीं की थी इस बात की दलील है कि वह उपास्य या शयातीन होंगे जो झूठ बोलेंगे या फ़रिश्ते या ईसा और उ़ज़ैर होंगे जो अपनी अ़िबादत किये जाने पर कभी राज़ी नहीं थे तो वह अपनी बराअत का एलान करेंगे और कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यह हमारी अ़िबादत नहीं करते थे, बल्कि उन शयातीन की अ़िबादत करते थे जो उन्हें शिर्क की तअ़लीम देते थे और अगर वह मिट्टी या पत्थर की मूर्ति होंगे तो वह ज़बाने ह़ाल से मुश्रिकीन को झुठलाएँगे या अल्लाह उन्हें बोलने की ताक़त देगा और वह अपने पुजारियों का इन्कार कर देंगे, इसलिए कि ज़मीन व आसमान का एक-एक ज़र्रह जानता है कि अल्लाह के सिवा कोई अ़िबादत का ह़क़्दार नहीं है।

7 وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝

यहाँ मुश्रिकीने मक्का का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि जब उन के सामने स्पष्ट क़ुर्आन की तिलावत की जाती है तो वह बजाय इस के कि उन में ग़ौर व फ़िक्र करते और इस्लाम में दाख़िल हो जाते,

तुरन्त उन का इन्कार कर देते हैं और कहते हैं कि यह क़ुर्आन तो खुला जादू है, बल्कि कुफ़्र व सरकशी में और आगे बढ़कर कहते हैं कि इस क़ुर्आन को मुह़म्मद (सल्ल०) ख़ुद गढ़ता है और लोगों को अल्लाह का कलाम बताकर सुनाता है।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी उन के इस झूठ को इस तरह़ रद्द किया है कि मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के बारे में ऐसा आरोप कैसे लगा सकता हूँ जबकि मैं जानता हूँ कि तुम मुझ से उस के अ़ज़ाब को टालने की कोई क़ुद्रत नहीं रखते हो।

क़ुर्आन करीम के बारे में तुम जो कहते हो कि यह जादू है और कभी कहते हो कि यह मुह़म्मद का ही कलाम है, तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी इन ह़रकतों को ख़ूब जानता है और मेरे और तुम्हारे दर्मियान बहै़सियत गवाह अल्लाह काफ़ी है कि यह क़ुर्आन उसी का कलाम है और मैंने यह बात तुम तक पहुँचा दी और यह कि तुम लोग झूठे हो, कभी अल्लाह के बारे में झूठ बोलते हो और कभी मेरे और क़ुर्आन के बारे में।

8 أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ
فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

इस आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह कुफ़्र से तौबः करके इस्लाम में दाख़िल होने वालों के गुनाहों को माफ़ करने वाला और उन पर बेह़द रह़म करने वाला है।

9 قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

मुश्रिकीने मक्का दिन-रात क़ुर्आन करीम और नबी करीम (सल्ल०) पर आरोप लगाने में लगे रहते थे। उन की मजलिसों का अहम तरीन विषय यह होता था कि मुह़म्मद अल्लाह का पैग़म्बर कैसे हो सकता है? अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को उन से यह कहने का हुक्म दिया कि:

"मैं अल्लाह का कोई पहला नबी नहीं हूँ कि तुम्हें बड़ी ह़ैरत हो रही है, मुझ से पहले बहुत से अम्बिया व रसूल आये जिन्होंने अल्लाह का पैग़ाम उस के बन्दों तक पहुँचा दिया और मैं अल्लाह का रसूल होने के बावजूद जानता हूँ कि आइन्दा ज़िन्दग़ी में मेरे और तुम्हारे साथ क्या होने वाला है"।

मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ की यही तफ़्सीर ज़्यादा सह़ी है कि आइन्दा दुनिया की ज़िन्दग़ी मुराद है। यह ख़याल सह़ी नहीं कि इस से मुराद आख़िरत का अन्जाम है।

'इब्ने कसीर' ने लिखा है कि इस के सिवा दूसरी तफ़्सीर सह़ी नहीं है, इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) के बारे में यह बात मालूम है कि आख़िरत में आप का मक़ाम जन्नत होगा, अल्बत्ता दुनिया की ज़िन्दग़ी में आप को मालूम नहीं था कि आने वाले दिनों में आप को किन ह़ालात से गुज़रना होगा और मुश्रिकीने क़ुरैश के साथ अल्लाह तआ़ला क्या करेगा, ईमान लाएँगे या इन्कार की राह अपनाएँगे और अ़ज़ाब से दो चार होंगे।

तीसरी बात अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में अपने रसूल की ज़बानी यह कहा कि कह दो मैं तो सिर्फ़ वह्य इलाही (ईशवाणी) की पैरवी करता हूँ, अपनी इच्छा से कोई बात नहीं करता हूँ।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ में मुश्रिकीने मक्का की बात को रद्द किया गया है, जो नबी करीम (सल्ल०) से ऐसी निशानियों का मुताल्बा (requirement) करते थे जिन के लाने की वह क़ुद्रत नहीं रखते थे।

चौथी बात यह कही गई है कि मैं अल्लाह की ओर से लोगों को साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ तो जो शख़्स मेरी बात पर ध्यान देगा और शिर्क व गुनाह से परहेज़ करेगा, वह जहन्नम के अ़ज़ाब से निजात पाएगा और जो ठुकरा देगा उसका मामला मेरे रब के ह़वाले है, चाहेगा तो अ़ज़ाब देगा और चाहेगा तो उसे हिदायत की राह पर डाल देगा और उस के ह़ाल पर रह़म करेगा।

10 قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِۦ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِۦ
فَـَٔامَنَ وَٱسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी अहले क़ुरैश की इस बात को रद्द किया गया है कि क़ुर्आन जादू है। उन से कहा गया कि तुम्हारा क्या अन्जाम होगा अगर यह क़ुर्आन अल्लाह का कलाम होगा और तुम इस का इन्कार करते हो, ह़ालाँकि बनी इस्राईल के एक गवाह ने तौरेत के बारे में गवाही दी है कि इसे अल्लाह ने नाज़िल किया है। इसलिए इस में कौन सी तअ़ज्जुब की बात है कि क़ुर्आन भी अल्लाह की ओर से भेजी हुई किताब हो, चुनाँचे वह इस्राईली गवाह लेकर आया कि यह क़ुर्आन कलामे इलाही (ईशवाणी) है और इस्लाम में दाख़िल हो गया।

'ह़सन' 'मुजाहिद' 'क़तादह' और 'इक्रिमा' की राय है कि यह आयत मदनी है और वह गवाह 'अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम' थे जो तौरेत के आ़लिम थे। क़ुर्आन सुनने के बाद उस पर ईमान ले आये और मुसलमान हो गये थे।

अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि ऐ अहले क़ुरैश! तुम लोग केवल घमण्ड व हठधर्मी की वजह से अपने कुफ़्र पर डटे रहे, बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

आयत नं० 11 से 20 तक

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهِ
كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِسَانًا عَرَبِيًّا لِيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا
رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ
وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ
لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ
سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ
الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ
أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۝

अनुवाद–

(11) और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं, ''अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो वे उसकी ओर हमसे आगे न बढ़ जाते, और जब उन्होंने इससे राह नहीं पायी तो अब ज़रूर कहेंगे, ''यह तो पुराना झूठ है!'' (12) और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रह़मत बन कर आ चुकी है, और यह किताब, अ़रबी भाषा में है, उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करती है, ताकि उन लोगों को सचेत कर दे, जिन्होंने जुर्म किया और ख़ुशख़बरी हो भले काम करने वालों के लिए। (13) जिन लोगों ने कहा, ''हमारा 'रब' अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे, तो उन्हें न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (14) यही जन्नत वाले हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे यह बदला होगा, उन कर्मों (आ़माल) का जो वे करते रहे। (15) और 'हमने' इन्सान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है, उसकी माँ ने उसे तकलीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रखा और उसे जना भी तकलीफ़ के साथ, और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह (ढ़ाई वर्ष होती है); यहां तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति (जवानी) को पहुँचा, और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने दुआ़ की, ''ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ, जो 'तूने' मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किये हैं, और नेक काम करूँ जो तुझे पसंद हैं और मेरी औलाद को भी मेरे लिए नेक बना दे, मैंने 'तेरी' ओर रूजूअ़ किया और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।'' (16) ऐसे ही लोग हैं जिनके 'हम' अच्छे काम, जो उन्होंने किये होंगे, क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों को दरगुज़र कर देंगे, इस ह़ाल में कि वे जन्नत वालों में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता रहा है। (17) और जिस व्यक्ति ने अपने माँ-बाप से कहा, ''तुम पर उफ़ है! क्या तुम मुझे इससे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा, हालांकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं? और वे दोनों

अल्लाह से फ़रियाद करते (हुए उससे कहते) हैं कि, ‘‘अफ़सोस है तुझ पर! मान जा, अल्लाह का वादा सच्चा है तो वह कहता है, ‘‘यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।’’ (18) ‘यही’ वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का हुक्म (अ़ज़ाब) लागू हुआ,? उन उम्मतों में जो जिन्नों और इन्सानों में से उनसे पहले गुज़र चुकीं, बेशक वे तबाह होने वाले थे। (19) और उनमें से हर एक के दर्जे उनके अपने किये हुए कर्मों के अनुसार होंगे, ताकि ‘वह’ उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे, और उन पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा। (20) और जिस दिन काफ़िर आग के सामने पेश किये जाएँगे, (उनसे कहा जाएगा कि), ‘‘तुम अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ले चुके और उनसे फ़ायदा भी उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमानित करने वाला अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि तुम ज़मीन में बिना किसी ह़क़ के घमंड करते रहे और इसलिए कि तुम नाफ़रमानी करते रहे।’’

आयत नं० 11 से 20 तक की व्याख्या

11 وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ
هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝

मुशिरकीने मक्का ह़ज़रत बिलाल, अ़म्मार, सुहैब, ख़ब्बाब और इन जैसे कमज़ोर मुसलमानों का नाम लेकर कहते थे कि अगर क़ुर्आन और मुह़म्मद में कोई ख़ैर होती तो यह फ़क़ीर व ह़क़ीर मुसलमान ईमान लाने में हम से आगे नहीं जाते।

वह समझते थे कि हर इ़ज़्ज़त व शर्फ़ के पहले वही ह़क़्दार हैं, उन्हें मालूम नहीं था कि अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है अपनी रह़मत से नवाज़ता है, जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है, जिसे चाहता है ज़लील कर देता है और अपने दीन के लिए जिसे चाहता है चुन लेता है।

उन्हीं मुशिरकीन के बारे में आयत के आख़िर में कहा गया है कि चूंकि उन्हें क़ुर्आन करीम पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ नहीं मिली, इसीलिए वह कहते हैं कि यह तो पुराना झूठ है जो मुह़म्मद को कहीं से मिल गया है और कहता है कि यह कलामे इलाही है।

‘इब्ने कसीर’ लिखते हैं कि यह लोग क़ुर्आन और अहले क़ुर्आन की बुराई बयान करते थे और यही वह घमण्ड है जिस के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा है कि ह़क़ का इन्कार और लोगों को ह़क़ीर समझने का नाम है।

12 وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ
ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝

मुशिरकीन के इस क़ौल (कि यह क़ुर्आन पुराना झूठ है) को रद्द किया गया है कि इस क़ुर्आन से पहले अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा पर तौरेत नाज़िल की है, जो लोगों को ख़ैर की तरफ़ रहनुमाई (guidance) करती है और उन के लिए भलाई व रह़मत है और दोनों किताबें उसूले शरीअ़त में मौजूद हैं। यह इस

बात की दलील है कि क़ुर्आन भी अल्लाह की ओर से नाज़िल की हुई किताब है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह क़ुर्आन करीम तौरेत की तस्दीक़ (Verify) करता है यानी दोनों में बयान किये हुए हुक्म (निर्देश) व शर्तें एक जैसी हैं, हालांकि यह क़ुर्आन अ़रबी भाषा में है और तौरेत इ़बरानी ज़बान में नाज़िल हुआ था। यह बात दलील है कि क़ुर्आन अल्लाह की वाणी (वह़्य) है।

अल्लाह ने फ़रमाया कि यह क़ुर्आन इसलिए नाज़िल किया गया है ताकि नबी करीम (सल्ल०) मुश्किरीने मक्का को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराएँ जिन्होंने शिर्क व गुनाह कर के अपने आप पर बड़ा ज़ुल्म किया और नेक अ़मल करने वाले मोमिनों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दीं।

13-14 إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ
خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

चूंकि आयत नं० (11) में मुशिरकीने मक्का और उन के इन्कारे क़ुर्आन का बयान है, इसीलिए इस आयत में रब्बुल् आ़लमीन पर ईमान लाने वालों और उन के अच्छे अन्जाम का ज़िक्र है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है उस के सिवा कोई नहीं, फिर वह जब तक ज़िन्दा रहे, 'लाइलाहा इल्लल्लाह' के तरीक़े पर क़ायम रहे और अ़मल की पाबन्दी करते रहे, उन्हें क़ियामत के दिन न कोई ख़ौफ़ होगा और न कोई ग़म। उन का ठिकाना जन्नत होगा, जिस में वह हमेशा रहेंगे और यह बेहतरीन अन्जाम उन के नेक आ़माल का बदला होगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (13) में शब्द ثُمَّ इस बात की दलील है कि अ़क़ीद-ए-तौह़ीद के बाद ही नेक अ़मल का अख़्तियार होता है।

15-19 وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ
ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ
إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ
سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا
أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ
اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ
أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

वालिदैन के बारे में वसीयत

यह पाँच आयात का अनुवाद है। पहली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि हम ने इन्सान को ताकीद की

है कि वह अपने वालिदैन (माँ-बाप) के साथ अच्छे सुलूक से पेश आये।

यह विषय सूरः अ़न्कबूत रुकूअ़-1 और सूरः लुक़्मान रुकूअ़-2 में भी गुज़र चुका है। माँ-बाप चूंकि ज़ाहिरी तौर पर दुनिया में आने का ज़रिया हैं और अपने बच्चे की देखभाल परवरिश में जान व माल लगाते हैं, अपना आराम खोते हैं, उस के लिए तक्लीफ़ बर्दाश्त करते हैं इसलिए उनकी फ़रमाँबरदारी का और उनके साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया गया है।

माँ जो तक्लीफ़ उठाती है इस को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۚ इन्सान को उसकी माँ महीनों पेट में रखती है, ह़मल के ज़माने की तक्लीफ़ बर्दाश्त करती है, फिर जब बच्चा पैदा होने लगता है तो आ़मतौर पर वह भी तक्लीफ़ के साथ पैदा होता है बच्चा जनने वाली माँ को दर्दे ज़ेह (पैदाइश के वक़्त का दर्द) की तक्लीफ़ भी बर्दाश्त करनी पड़ती है और उस वक़्त तक्लीफ़ को सहना पड़ता है।

इस के बाद यह फ़रमाया कि इन्सान का माँ के पेट में रहना, फिर पेट से बाहर आकर दूध पीना इस में तीस महीने लग जाते हैं, यह आ़म ह़ालात के एतिबार से है।

दूध पिलाने का ज़माना-

दूध पिलाने के ज़माने में भी वालिदा को देखभाल करनी पड़ती है, बाप ज़रूरत की चीज़ों का इन्तिज़ाम करता है, माल कमा कर लाता है यह दिन भी माँ-बाप के तक्लीफ़ से गुज़रते हैं।

इस के बाद उन इन्सानों का ह़ाल बयान फ़रमाया जो अहले ईमान हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का भी एह़सास है और माँ-बाप की ख़िद्मत का भी, उनके बारे में फ़रमाया कि जब यह अपने जवानी को पहुँच जाते हैं और जवानी से आगे बढ़कर चालीस साल उ़म्र हो जाती है (जो समझ के एतिबार से बहुत अच्छी उ़म्र होती है न उस में जवानी में बहकाने वाली उमंगे होती हैं और न बुढ़ापे वाली कमज़ोरी।)

ऐसे नेक आदमी का यह तरीक़ा होता है कि वह अल्लाह तआ़ला की बारगाह में यूँ दुआ़ करता है कि ऐ मेरे रब! मुझे इस बात का पाबन्द रखिये और जमने की तौफ़ीक दीजिए कि मैं आपकी नेअ़मतों का शुक्र अदा करूँ जिन से आप ने मुझे नवाज़ा है और मेरे माँ-बाप को भी (वालिदैन के नवाज़ने से ज़ाहिरी तौर पर मैं वजूद में आया) और मुझे यह भी तौफ़ीक़ दीजिए और इस पर क़ायम रखिये कि मैं ऐसा अ़मल करूँ जिन से आप राज़ी हों और (यह नेक अ़मल करना जिन में वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना भी है मुझ ही तक सीमित न रहे) मेरी औलादों में भी मेरे नफ़े के लिए सलाह़ियत (योग्यता) पैदा फ़रमा दीजिए।

(इस में औलाद के लिए और अपने लिए दुनिया और आख़िरत के ख़ैर की दुआ़ है। औलाद में सलाह़ियत होगी तो नेक अ़मल करेंगे जिन से माँ-बाप को ख़ुशी होगी और माँ-बाप की जो ख़िद्मत करेंगे उस से उन्हें राहत होगी।)

मोमिन औलाद नेक सालेह़ होगी (जिन के नेक बनाने में माँ बाप को भी दख़ल होगा) तो आख़िरत में भी उन के आ़माल का सवाब माँ बाप को मिलेगा (जबकि औलाद के सवाब में कुछ कमी न आएगी)

नेक औलाद माँ बाप के लिए नेक दुआ़ भी करती है, वालिदैन को इस का नफ़ा भी पहुँचेगा। शब्द أَصْلِحْ में जो लाम है उस के अर्थ की तरफ़ यह थोड़ा सा इशारा है।

नेक इन्सान अल्लाह तआ़ला से नेक अ़मल की भी दुआ़ करता है, नेक औलाद की भी और अल्लाह के सामने तौबः भी करता है, अपनी फ़रमाँबरदारी का इक़रार भी करता रहता है। इसी को इन शब्दों में नक़्ल फ़रमाया إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

(ऐ रब! बेशक मैं आप के सामने तौबः करता हूँ और बेशक मैं फ़रमाँबरदार में से हूँ।)

जिन मोमिन बन्दों का ऊपर ज़िक्र हुआ उन को ख़ुशख़बरी देते हुए इर्शाद फ़रमायाः

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا (यह वह लोग हैं जिन के अच्छे कामों को हम क़ुबूल करेंगे) وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ (और हम उन की बुराईयों से दरगुज़र कर देंगे) فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ (यह लोग जन्नत वालों में शुमार होंगे।)

قال صاحب الروح: كائنين فى عدادهم منتظمين فى سلكهم وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ

उन का यह जन्नत का दाख़िला उस वादे के मुताबिक़ होगा जो वादा उन से ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की ज़बानी किया जाता था, यह वादा अल्लाह की तरफ़ से था, सच्चा था पूरा होना ही था।

ऊपर की आयते करीमा से मालूम हुआ कि इन्सान को अपनी जवानी में और ख़ासतौर से जब चालीस साल की उ़म्र को पहुँच जाए तो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का ख़ास शुक्र अदा करना चाहिए यूँ तो हमेशा ही अल्लाह तआ़ला का शुक्र वाजिब है, लेकिन क़ुव्वत व ताक़त के ज़माने में इस तरह़ तवज्जोह करना और ज़्यादा ज़रूरी है। जो नेअ़मत उस पर और जो नेअ़मत वालिदैन पर है उस का भी शुक्र अदा करे और अपनी औलाद की नेकी और कामियाबी के बारे में फ़िक्रमन्द हो और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में उनके लिए दुआ़ करता रहे।

आयते करीमा में मुद्दते ह़मल (गर्भ का समय) और मुद्दते रज़ाअ़त (यानी दूध पिलाने का ज़माना) तीस माह बताया है। आ़म फ़ुक़्हा ने इस का यह मतलब लिया है कि इस में छः माह ह़मल (गर्भ) के और चौबीस माह दूध पिलाने के ज़माने के हैं, लिहाज़ा ह़मल (गर्भ) की कम से कम मुद्दत छः महीने और दूध पिलाने की मुद्दत ज़्यादा से ज़्यादा चौबीस माह यानी दो साल हुई दूध पिलाने की मुद्दत दो साल है।

इस के बारे में सूरः अल् बक़रः (**आयत नं० 233**) में फ़रमाया हैः

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ

(और माएँ अपनी औलाद को दो साल पूरे दूध पिलाएँ (यह) उस के लिए है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे) सूरः लुक़्मान (**आयत नं० 14**) में फ़रमाया है حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَالُهُ فِي عَامَيْنِ (उस की माँ ने तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ उठा कर उसको पेट में रखा और दो साल में उस का दूध छूटता है) इस में भी यह बता दिया गया कि दूध पिलाने का ज़माना दो साल है।

क़ुर्आन में ह़मल की अक्सर मुद्दत नहीं बताई। साहि़बे हिदाया ने फ़रमाया है कि ह़मल की मुद्दत ज़्यादा से ज़्यादा दो साल है और ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के क़ौल से दलील है कि बच्चा पेट में दो साल

से ज़्यादा नहीं रहता। ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का यह क़ौल 'इमाम दार क़ुत्नी' ने रिवायत किया है, लेकिन जब इमाम मालिक (रह़०) से इस का ज़िक्र आया, तो उन्होंने फ़रमाया यह बात कौन कहता है? एक हमारी पड़ोसन है उस का हर बच्चा चार साल में पैदा होता है। ख़ुद ह़ज़रत इमाम मालिक के बारे में लिखा है कि वह अपनी वालिदा के पेट में तीन साल रहे वहीं उनके दाँत निकल आये थे, चूंकि इस में कोई मस्ला नहीं है इसलिए ज़्यादा बह़स में पड़ने की ज़रूरत भी नहीं।

मुद्दते ह़मल जो छः माह बताई है उस का यह मतलब नहीं है कि छः माह से ज़्यादा ह़मल नहीं रह सकता, बल्कि मतलब यह है कि छः माह पूरे होना तो ज़रूरी ही है। इस से ज़्यादा भी ह़मल की मुद्दत हो सकती है जैसा कि आ़मतौर से नौ माह में बच्चे पैदा होते हैं।

ह़मल (गर्भ) की कम से कम मुद्दत छः माह है इस पर यह मस्ला निकलता है कि अगर किसी शख़्स ने किसी औ़रत से निकाह़ किया और तारीख़े निकाह़ से (चाँद के ह़िसाब से) छः माह पूरे होने से पहले उस औ़रत के बच्चा पैदा हो गया तो यह बच्चा उस मर्द का नहीं माना जाएगा और उस शख़्स की मीरास (ज़ायदाद) का ह़क़्दार नहीं होगा।

كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا (कि माँ ने तक्लीफ़ के साथ पेट में रखा और तक्लीफ़ के साथ जना) फिर इसके बाद दूध पिलाने का ज़िक्र फ़रमाया وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا दूध पिलाना और उस ज़माने में बच्चे की ख़िद्मत करना यह भी माँ पर होता है और माँ को बहुत देखना संभालना पड़ता है, इसीलिए ह़दीस शरीफ़ में माँ की ख़िद्मत करने की ज़्यादा ताकीद फ़रमाई है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! इर्शाद फ़रमाइये मेरी ख़िद्मत के एतिबार से सब से ज़्यादा कौन ह़क़्दार है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तेरी माँ, उस ने कहा फिर कौन? आप ने फ़रमाया तेरी माँ! उस ने कहा फिर कौन? फ़रमाया तेरी माँ! सायल ने कहा फिर कौन? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तेरा बाप। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 883)**

उ़लमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि तीन बार माँ का ह़क़ इसलिए बयान फ़रमाया कि वह तीन तक्लीफ़ें उठाती है जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ और यह भी फ़रमाया है कि माल ख़र्च करने में माँ का ज़्यादा ख़याल रखना ज़रूरी है।

नेक बन्दों को जो अपने वालिदैन से तअ़ल्लुक़ होना चाहिए उस का ज़िक्र करने के बाद उन लोगों का ज़िक्र किया जिन में बग़ावत की शान होती है, कुछ ऐसे लोग भी हैं जो न सिर्फ़ यह कि माँ-बाप की नाफ़रमानी करते हैं, बल्कि ईमान ही नहीं लाते। जब वालिदैन उन में से किसी से कहते हैं कि तू अल्लाह पर और क़ियामत के क़ायम होने पर ईमान ला, तो वह बुरे अन्दाज़ में उन्हें जवाब दे देता है और कहता है कि लअ़नत है तुम दोनों पर क्या बातें करते हो।

तुम मुझ से कह रहे हो कि मैं क़ियामत के दिन क़ब्रों से निकाला जाऊँगा यह भी कोई मानने की बात है मुझ से पहले कितनी उम्मतें गुज़र चुकी हैं उन को भी तुम्हारे जैसे लोगों ने यही कहा था कि मर कर ज़िन्दा हो जाओगे। आज तक तो उन में से कोई ज़िन्दा हुआ नहीं मेरे नज़्दीक तो यह सिर्फ़ बातें ही बातें हैं, इस की यह बात सुनकर माँ बाप अल्लाह से फ़रियाद करते हैं कि ऐ अल्लाह! इसे ईमान की तौफ़ीक़

दे और उस से कहते हैं وَيْلَكَ اٰمِنْ (तेरे लिए हलाकत है ईमान ले आ) यानी इन बातों से तू हलाकत के करीब खड़ा है, ईमान ले आ ताकि तबाही से बच जाए।

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ (बेशक अल्लाह का वादा ह़क़ है) उस ने जो बताया और पेशगी ख़बर दी है कि मुर्दे ज़िन्दा होंगे क़ब्रों से निकलना होगा पेशी होगी, हिसाब होगा, यह जो तू कहता है कि बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी कोई ज़िन्दा होकर नहीं आया यह इसकी दलील नहीं है कि क़ियामत क़ायम न होगी। अल्लाह तआ़ला ने उसका जो वक़्त मुक़र्रर (Fix) फ़रमाया है वह उसी वक़्त आएगी, उस के आने में देर लगना इस बात की दलील नहीं है कि वह आनी ही नहीं। यह बात सुनकर वह शख़्स कहता है कि यह दोबारा ज़िन्दा होने और क़ियामत क़ायम होने की बातें पुराने लोगों की बातें हैं, सच्चाई से इन का कोई वास्ता नहीं।

ऐसे लोगों के बारे में इर्शाद फ़रमाया اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ

(यह वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की बात साबित हो चुकी) यानी इन का अ़ज़ाब में मुब्तिला होना लाज़िम हो गया) فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ (यह लोग जिन्नात और इन्सानों की उस जमाअ़त में शामिल हैं जिन को अ़ज़ाब में मुब्तिला होना है) اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ (बिलाशुब्हा यह लोग ख़सारा वाले हैं) ईमान लाते तो जन्नत में जाते और नेअ़मतें मिलतीं और कामियाबी की ज़िन्दगी गुज़ारते। जब ईमान न लाए तो जहन्नम के अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए इन के लिए नुक़्सान ही नुक़्सान है।

फिर फ़रमाया وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا(और हर एक के लिए दर्जात हैं, अहले ईमान को ईमान और नेक आ़माल की वजह से जन्नत में दर्जात मिलेंगे और अहले कुफ़्र को दोज़ख़ के निचले दर्जे (Lower class) में जाना होगा।

قال في الجلالين درجات المؤمن في الجنة عاليه ودرجات الكافر في النار سافلة وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ

(और उन के लिए दर्जे इसलिए मुक़र्रर कर दिये गये हैं कि अल्लाह तआ़ला उन्हें उन के आ़माल का बदला पूरा-पूरा दे दे) وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (और उन पर ज़रा सा भी जुल्म न किया जाएगा) न किसी मोमिन की नेकी बेकार होगी और न किसी ग़ैर मुजरिम को सज़ा दी जाएगी।

ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, सोने चाँदी के बर्तनों में न खाओ पियो और रेशम न पहनो और न ही दीबाज पहनो यह उन के लिए दुनिया में है और तुम्हारे लिए आख़िरत में है। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

20 وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۝

काफ़िरों के लिए ज़िल्लत

इस आयत में बयान फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जब काफ़िरों को आग पर पेश किया जाएगा यानी दोज़ख़ में दाख़िल करने के लिए आग के सामने लाया जाएगा तो उन से कहा जाएगा कि अब तुम्हारे लिए अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब है। तुम्हें यहाँ आने का यक़ीन नहीं था, दुनिया ही को सब कुछ समझते थे, दुनिया के

लिए जिये उसी के लिए मरे, लज़्ज़त की चीज़ों के पीछे पड़े, उन्हीं को सब कुछ समझा, ह़लाल व ह़राम से नफ़्स की हर लज़्ज़त पूरी की, अब तुम्हारे लिए लज़्ज़त की चीज़ों में से कुछ नहीं है।

जब अल्लाह तआ़ला के रसूल (सल्ल०) ईमान की दअ़वत देते थे और क़ियामत पर ईमान लाने को फ़रमाते थे तो तुम ईमान लाने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते थे और बराबर नाफ़रमानी करते चले जाते थे, ज़मीन में जानबूझकर घमण्ड करने और नाफ़रमानियों में बढ़ते चले जाने की वजह से आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा। दुनिया में कुफ़्र पर जमे रहने में अपनी इ़ज़्ज़त समझी, आज उस के बदले में तुम्हारे लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

अ़ल्लामा बग़्वी (रह़०) मुआ़लिमुल तन्ज़ील में लिखते हैं कि चूंकि अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की पकड़ फ़रमाई कि उन्होंने दुनिया में लज़्ज़तों के मज़े उठाये, इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आप के सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने और दूसरे नेक बन्दों ने दुनिया की लज़्ज़तों से बचने ही को तर्जीह़ दी, ताकि आख़िरत में सवाब मिले।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ उस वक़्त आप एक चटाई पर लेटे हुए थे जिस पर कोई बिस्तर न था। आप (सल्ल०) के जिस्म मुबारक पर चटाई के निशान पड़ गये थे और आप चमड़े के तकिये पर टेक लगाए हुए थे जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए ताकि आप की उम्मत को वुस्अ़त (माल व दौलत में बढ़ौतरी) दे दे।

फ़ारस और रोम के लोगों को माली उस्अ़त दी गई है ह़ालांकि वह अल्लाह की अ़िबादत भी नहीं करते, यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तुम अब तक इसी में हो? यह वह लोग हैं जिन को मज़े की चीज़ें दुनिया ही में दे दी गई हैं और यह भी फ़रमाया क्या तुम इस पर राज़ी नहीं है कि इन को दुनिया मिल जाए और हमें आख़िरत मिल जाए। **(रवाहुल बुख़ारी व मुस्लिम फ़िल् मिश्कात पेज नं० 447)**

'ह़ज़रत ज़ैद बिन अस्लम' (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने पीने के लिए कुछ तलब किया, लिहाज़ा आपकी ख़िद्मत में पानी पेश किया गया जिस में शहद मिला हुआ था। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने उसे देखकर फ़रमाया यह है तो उ़म्दह चीज़ लेकिन मैं इसे पियूँगा नहीं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने ख़्वाहिशें पूरी करने वाली क़ौम की ख़्वाहिशों का बुरा अन्जाम बता दिया है। उन से कहा जाएगा

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا

(तुम ने अपनी मज़े की चीज़ों को दुनिया में ख़त्म कर दिया और उन से नफ़ा ह़ासिल कर लिया)

लिहाज़ा मैं लज़्ज़त की चीज़ें इस्तेमाल करने से डरता हूँ ऐसा न हो कि वह हमें दुनिया ही में दे दी जाएँ यह फ़रमाया और इस शहद मिले हुए पानी को नहीं पिया। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 449)**

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान किया कि एक दिन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने मेरे हाथ में गोश्त देखा तो फ़रमाया, ऐ जाबिर! यह क्या है। मैंने अ़र्ज़ किया गोश्त खाने की ख़्वाहिश हुई थी लिहाज़ा मैंने गोश्त ख़रीदा है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि क्या हर वह चीज़ ख़रीद लोगे जिस के लिए जी चाहेगा। क्या तुम इस आयत से नहीं डरते أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا **(मुआ़लिमुल तन्ज़ील)**

आयत नं० 21 से 35 तक

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ
وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَاۤ
اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ
مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ
وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَاِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ
فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِیْۤ
اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ يٰقَوْمَنَاۤ اَجِيْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝
وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِیَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِی الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْیَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ كَمَا
صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

अनुवाद-

(21) और याद करो, आ़द के भाई (हूद) को, जब उन्होंने अहक़ाफ़ में अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार किया! और उनके आगे और पीछे भी ख़बरदार करने वाले गुज़र चुके थे, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है;'' (22) कहा, ''क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर दे? अच्छा तो हम पर ले आ, जिसकी तू हमको धमकी देता है, अगर तू सच्चा है।'' (23) उन्होंने कहा, ''इल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तो तुम्हें वह (पैग़ाम) पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग जिहालत (अज्ञानता) में पड़े हुए हो।'' (24) फिर जब उन्होंने उसे बादल के रूप में अपनी वादियों (घाटियों) की ओर आते देखा, तो कहने लगे, ''ये तो बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा!'' बल्कि (यह) वह चीज़ है जिसके लिए तुमने जल्दी मचा रखी थी, अर्थात आँधी जिसमें दुःख देने वाला अ़ज़ाब है; (25) हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से तबाह कर देगी तो उनका ह़ाल यही हुआ कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र न आता था, गुनहगार लोगों को 'हम' इसी तरह बदला देते हैं। (26) और 'हमने' उनको वह सत्ता दी थी, जो तुम लोगों को नहीं दीं, और 'हमने' उनको कान, आँखें और दिल दिये थे, मगर न उनके कान काम आए, न उनकी आंखें और न उनके दिल, इसलिए कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उनको घेर लिया उस चीज़ ने, जिसका वह

मज़ाक़ उड़ाते थे। (27) और 'हम' तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को तबाह कर चुके हैं, हालांकि 'हमने' तरह -तरह से आयतें पेश की थीं, ताकि वे रुजूअ़ करें। (28) उन्होंने क्यों मदद न की, जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़कर निकटता के लिए मअ़बूद (उपास्य) बना रखा था, बल्कि वे सब उनसे खो गये, यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बातें थीं। (29) और जब 'हमने' कुछ जिन्नों को आपकी ओर मुतवज्जह किया कि क़ुर्आन सुनें, तो जब वे उसके पास पहुँचे तो कहने लगे, ''चुप हो जाओ! फिर जब वह (पढ़ना) पूरा हो गया तो वे अपनी क़ौम की ओर ख़बरदार करने वाले बनकर लौटे''। (30) (उन्होंने) कहा, ''ऐ क़ौम! 'हमने' एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद उतारी गयी है, पुष्टि करती है, उस किताब की जो पहले आ चुकी हैं, यह सत्य और सीधी राह की ओर रहनुमाई करती है; (31) ऐ क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो और 'उस' पर ईमान लाओ, ताकि 'वह' तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और दुःख देने वाले अ़ज़ाब से बचाए; (32) और जो व्यक्ति अल्लाह की ओर बुलाने वाले को न मानेगा, तो उसके बस में नहीं है, कि ज़मीन में अल्लाह के काबू से निकल जाए, और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई उसका मददगार होगा, ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं।'' (33) क्या उन्होंने देखा नहीं!, ''कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं; क्या ऐसा नहीं कि 'वह' मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों नहीं!! वह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है। (34) और जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इन्कार किया, आग के सामने पेश किये जाएँगे; (तो कहा जाएगा) ''क्या यह ह़क़ नहीं है?'' तो कहेंगे, ''क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम,'' हुक्म होगा, ''तो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, उस इन्कार के बदले में जो तुम करते रहते थे।'' (35) तो सब्र से काम लीजिए जिस तरह हिम्मत वाले पिछले रसूलों ने सब्र किया था, और उनके लिए जल्दी न मचाइए, जिस दिन ये उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो (महसूस करेंगे कि) जैसे बस दिन की एक घड़ी भर ही ठहरे थे, यह (क़ुर्आन) पैग़ाम है, तो कौन तबाह होगा, सिवाय नाफ़रमान लोगों के?

आयत नं० 21 से 35 तक की व्याख्या

21-28

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ ۖ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي
أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُم بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا
وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُم مِّن شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا
عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

क़ौमे अ़ाद का इन्कार और हलाकत

यह पूरे एक रुकूअ़ का अनुवाद है। इस में क़ौमे अ़ाद के इन्कार व हठधर्मी का और ह़ज़रत हूद

(अ़लै०) की तब्लीग़ करने का, फिर क़ौमे आ़द के हलाक होने का ज़िक्र है। उस क़ौम के पैग़म्बर ह़ज़रत हूद (अ़लै०) थे जिन को यहाँ أَخَا عَادٍ के नाम से ज़िक्र है चूंकि ह़ज़रत हूद (अ़लै०) आ़द ही की क़ौम में से थे, इसलिए أَخَا عَادٍ फ़रमाया।

क़ौमे आ़द यमन में रहते थे। जिस इलाक़े में यह लोग रहते थे वहाँ रेत के पहाड़ थे, इसलिए उसे 'अह़क़ाफ़' शब्द फ़रमाया। حِقْفٌ उस पहाड़ी को कहते हैं जो गोलाई लिए हुए हो और नीचे को झुकी हुई हो, रेत की पहाड़ियाँ ऐसी ही होती हैं चूंकि रेत में मज़बूती से ठहरने की सलाह़ियत (योग्यता) नहीं होती, इसलिए ढ़लता चला जाता है।

إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ जबकि हूद (अ़लै०) ने 'अह़क़ाफ़' के इलाक़े में अपनी क़ौम को डराया और उन्हें समझाया कि अल्लाह के सिवा किसी की अ़िबादत न करो और उन से पहले भी अल्लाह की तरफ़ से पैग़म्बर आये थे जिन्होंने अपनी क़ौमों को तब्लीग़ करके तौह़ीद की दअ़वत दी और इन्कार पर अ़ज़ाब की चेतावनी सुनाई। ह़ज़रत हूद (अ़लै०) के बाद भी अल्लाह तआ़ला के पैग़ाम पहुँचाये, इसी को وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ फ़रमाया।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

"मैं तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा करता हूँ यानी अगर तुम ने ह़क़ को क़ुबूल न किया तो तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आएगा"।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا

क्या तुम इसलिए आये हो कि हमारे जो उपास्य हैं हम उनकी अ़िबादत करना छोड़ दें और तुम हमें उनकी अ़िबादत से हटा दो। तुम साथ ही यह भी कहते हो कि मेरी दअ़वत पर अ़मल न किया तो अ़जाब आ जाएगा, तुम ने अ़ज़ाब की बड़ी धमकी दे रखी है। अगर तुम्हारा यह डराना सही है और वाक़ई तुम्हारी यह बात है कि न मानने पर हम अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाएँगे तो बस ले आओ, अगर अपने क़ौल में सच्चे हो तो देर की क्या ज़रूरत है?

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने फ़रमाया कि इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही के पास है, वही जानता है कि किसी क़ौम पर कब अ़ज़ाब आएगा और कब हलाक होगी। मेरा काम अ़ज़ाब लाना नहीं है मुझे अल्लाह ने जो पैग़ाम देकर भेजा है मैं तो उस के पहुँचाने का पाबन्द हूँ और तुम्हें इसी की तब्लीग़ करता हूँ। मैं तो तुम्हें ह़क़ की दअ़वत देता हूँ और तुम जिहालत की बातें करते हो।

अ़ज़ाब की सूरत-

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ उन लोगों पर अ़ज़ाब आने की यह सूरत हुई कि सख़्त गर्मी की वजह से घरों को छोड़कर बाहर मैदान में आ गये। इसी ह़ाल में उन्हें एक बादल आता हुआ नज़र आया उसे देखकर बहुत खुश हुए और कहने लगे कि यह बादल तो हम पर पानी बरसाएगा, वह पानी बरसाने वाला

बादल कहाँ था वह तो वही अ़ज़ाब था जिस की जल्दी मचा रहे थे, वह अ़ज़ाब हवा कि सूरत में आ गया यह हवा बहुत सख़्त थी जो अपने रब के हुक्म से हर चीज़ को हलाक करती जा रही थी।

सूरः ज़ारियात (**आयत नं० 42**) में फ़रमाया مَا تَذَرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ

(वह हवा जिस चीज़ पर पहुँचती थी उसे भूसा बनाकर रख देती थी जैसे चूरा हो) सूरः अल् ह़ाक़्क़ः (**आयत नं० 6,7,8**) में फ़रमायाः

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ
كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرَىٰ لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ۝

(और आ़द सो वह हलाक किये गये तेज़ हवा के ज़रिये, अल्लाह ने उस हवा को सात दिन और आठ रात लगातार मुसख़्ख़र फ़रमा दिया। (ऐ मुख़ातब!) तू देखे क़ौम को कि उस हवा में गिरे हुए पड़े हैं (यानी कि जैसे वह गिरी हुई खजूरों के खोखले तने हैं। क्या तू उन में देखता है कोई बाक़ी रहा?)

فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ

नतीजा यह हुआ कि वह लोग इस ह़ाल में हो गये कि उन के घरों के सिवा कुछ भी नज़र न आता था।

كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ

(हम इसी तरह़ मुजरिम क़ौम को सज़ा दिया करते हैं) ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब आसमान से कोई बादल आते देखते, तो आप का रंग बदल जाता था और आप कभी अन्दर जाते और कभी बाहर आते। जब बारिश हो जाती तो आप की यह कैफ़ियत जाती रहती थी।

मैंने इस बात को पहचान लिया और इस बारे में आप से सवाल किया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐ आ़ईशा! मैं डरता हूँ कि कहीं ऐसा न हो जैसा क़ौमे आ़द ने बादल को देखकर कहा जो उन की वादियों की तरफ़ आ रहा था कि यह बारिश बरसाने वाला है (लेकिन बारिश बरसाने वाला बादल न था) बल्कि हवा की सूरत में अ़ज़ाब था जो उन पर नाज़िल हुआ। (**रवाहु मुस्लिम पेज 294/ 495 भाग 1**)

'क़ौमे आ़द' की तबाही का ज़िक्र करने के बाद अहले मक्का को तवज्जोह दिलाई गई है कि وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ और हम ने क़ौमे आ़द को उन चीज़ों की क़ुव्वत दी थी जिन की क़ुव्वत व क़ुद्‌रत तुम्हें नहीं दी, उनके पास जो माली और जिस्मानी क़ुव्वतें थीं वह तुम से कहीं ज़्यादा थीं।

जब वह कुफ़्र पर जमे रहने की वजह से हलाक कर दिये गये तो तुम्हारी क्या ह़ैसियत है? वह लोग न तो बहरे थे, न अन्धे, न बावले बेवक़ूफ़ थे हम ने उन्हें कान भी दिये थे और आँखें भी और दिल भी, लेकिन जब उन पर अ़ज़ाब आया तो उन में से कोई चीज़ भी उन के काम न आई और न अ़ज़ाब से बच सके।

यह अ़ज़ाब की मुसीबत इसलिए हुई कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे (कोई दुनियावी मुसीबत आ़म ह़ालात में आ जाए तो कुछ अ़क़्ल व फ़हम के ज़रिये सोच विचार कर के और कोई तरकीब

निकाल कर कभी कभार मुसीबत से निकलने का कुछ रास्ता निकल आता है, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला की आयतों का इन्कार करने की वजह से अ़ज़ाब आता है तो आँख कान सोच समझ कोई चीज़ फ़ायदा नहीं देती।

وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ और उन पर वह अ़ज़ाब नाज़िल हो गया जिस का मज़ाक़ बनाते थे) यानी अल्लाह के नबी ह़ज़रत हूद (अ़लै०) से जो ठहठहा करते और कहते थे अ़ज़ाब, अ़ज़ाब की रट क्यों लगाते हो, अ़ज़ाब आना है तो ले आओ। अपनी इस बात का उन्होंने नतीजा देख लिया, अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) होकर बिल्कुल बर्बाद हो गये।

इस के बाद अहले मक्का से फिर फ़रमाया وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ हम ने तुम्हारे चारों तरफ़ की बस्तियाँ हलाक कर दीं) इस से यमन और शाम की बस्तियाँ मुराद हैं, यमन की बस्तियाँ तो वही क़ौमे आ़द वाली बस्तियाँ थीं और जब अहले मक्का तिजारत के लिए मुल्क शाम जाते थे तो क़ौमे समूद की और ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बस्तियों को देखा करते थे, उन की तबाही और बर्बादी से इबरत ह़ासिल करना ज़रूरी था लेकिन नसीह़त नहीं लेते थे।

وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

(और हम ने उन्हें बार-बार निशानियाँ बता दी थीं ताकि वह नसीह़त ह़ासिल करें) लेकिन वह बाज़ न आए आख़िर में वह हलाक हो गये। यह हलाक होने वाले मुश्रिक थे, अल्लाह के सिवा उन्होंने मअ़बूद (उपास्य) बना रखे थे और उनके नज़्दीकी को अपनी मुश्किलात दूर होने का ज़रिया समझते थे। जब अ़ज़ाब आया तो उन्होंने ज़रा भी मदद न की, बल्कि उन से ग़ायब हो गये।

उन लोगों की यह बात कि यह मअ़बूद (उपास्य) हैं उन से हमें फ़ायदा पहुँचेगा झूठ और अपनी तराशी हुई यह मूर्तियाँ थी, इस झूठ से कुछ फ़ायदा न पहुँचा। इसी को फ़रमायाः-

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً

सो अल्लाह के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने नज़्दीकी ह़ासिल करने के लिए अपना मअ़बूद (उपास्य) बना रखा था उन्होंने उनकी क्यों मदद न की بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

(बल्कि वह सब उन से ग़ायब हो गये और वह केवल उनकी तराशी हुई और गढ़ी हुई बात थी।)

29-34

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ
وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ۝ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ
يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَمَن لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي
خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا
قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

जिन्नात को रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत

रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'रसूलुस्सक़लैन' थे यानी आप इन्सानों की तरफ़ भेजे गये थे और जिन्नातों की तरफ़ भीं। यहाँ सूरः अह़क़ाफ़ में और सूरः जिन्न में जिन्नात का (आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर होना और आप (सल्ल०) से क़ुर्आन मजीद के सुनने का ज़िक्र है।

उ़लमा-ए-ह़दीस ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जिन्नात की आबादी में तशरीफ़ ले गये और उन्हें दीनी हुक्मों की तब्लीग़ फ़रमाई, मुह़द्दिसीन की ज़बान में इस को 'लैलतुल् जिन्न' कहते हैं।

लैलतुल् जिन्न-

ह़ज़रात मुह़द्दिसीन-ए-किराम ने फ़रमाया कि 'लैलतुल् जिन्न' का वाक़िआ़ छः मर्तबः पेश आया। मुआ़लिमुल् तन्ज़ीलु् पेज नं० 174 भाग 2 में लिखा है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला का हुक्म हुआ कि जिन्नात को तब्लीग़ करें, उन्हें ईमान लाने की दअ़वत दें और क़ुर्आन सुनाएँ। फिर अल्लाह तआ़ला ने 'नैनवा' बस्ती के रहने वाले जिन्नात में से एक जमाअ़त को आपके पास भेजा या आप तशरीफ़ ले जाने लगे तो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) भी साथ चले गये, यह हिजरत से पहले का वाक़िआ़ है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने बयान किया कि हम चलते-चलते अल् हुजून पहुँच गये (अल् मअ़ला के इलाक़े का पुराना नाम अल् हुजून था) वहाँ पहुँच कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़त (लाइन) खींच कर मेरे लिए जगह बता दी और इर्शाद फ़रमाया कि मेरे वापस आने तक इसी जगह रहना।

आप (सल्ल०) मुझे छोड़कर आगे तशरीफ़ ले गये, वहाँ क़ुर्आन पढ़ना शुरु किया। आप के आसपास गिद्धों जैसी चीज़ें जमा हो गईं और मैंने तरह़-तरह़ की सख़्त आवाज़ें सुनीं यहाँ तक कि मुझे आप की जान का ख़त्रा हो गया। आप की आवाज़ भी मुझ से ओझल हो गई, फिर मैंने देखा कि वह लोग बादलों के टुकड़ों की तरह़ वापस जा रहे हैं।

जिन्नात का खाना-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन से फ़ारिग़ होकर फ़ज्र के बाद तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, क्या तुम्हें नींद आ गई थी। मैंने अ़र्ज़ किया कि मुझे नींद क्या आती, मुझे तो आपको तक्लीफ़ पहुँचने का ख़याल आ रहा था बार-बार ख़याल हुआ कि मैं लोगों को बुलाँऊ ताकि आप का ह़ाल मालूम करें, फ़रमाया अगर तुम अपनी जगह से चले जाते तो इस का कुछ इत्मिनान नहीं था कि उन में से तुम्हें कोई उचक लेता।

फिर फ़रमाया, क्या तुम ने कुछ देखा? अ़र्ज़ किया कि मैंने काले रंग के लोगों को देखा जो सफ़ेद कपड़े में लिपटे हुए थे। आप ने फ़रमाया कि यह शहर 'नसीबैन' के जिन्नात थे, उन्होंने मुझ से कहा कि हमारे लिए कुछ बतौर खुराक कुछ फ़रमा दीजिए लिहाज़ा मैंने उन के लिए हड्डी और घोड़े वग़ैरह की लीद, ऊँट और बकरी वग़ैरह की मेंगनी दी।

मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! इन चीज़ों से उन का क्या काम चलेगा? फ़रमाया वह जो भी हड्डी पाएँगे

उस पर उतना ही गोश्त मिलेगा जितना उस दिन था, जिस दिन उस से गोश्त छुड़ाया गया था।

और जो भी लीद पाएँगे उन्हें उस पर वह दाने मिलेंगे जो जानवरों ने खाये थे (जिन की लीद बन गई थी) मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैंने सख़्त आवाज़ें सुनीं यह क्या बात थी?

फ़रमाया जिन्नात में एक क़त्ल हो गया था वह उसे एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगा रहे थे उस का मेरे पास फ़ैसला कराने के लिए आये थे, मैंने उन के दर्मियान ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दिया।

बाज़ रिवायात में है कि हड्डी को जिन्नात की ख़ुराक और मेंगनी को उन के जानवरों की ख़ुराक तज्वीज़ किया और इसी वजह से इन चीज़ों से इस्तिन्जा करने को मना किया गया है।

एक रिवायात में ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) का बयान यूँ भी नक़्ल किया गया है कि लैलतुल् जिन्न की सुबह़ को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ग़ारे ह़िरा की तरफ़ से तशरीफ़ लाए हम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम रात भर आप को ढूँढ़ते रहे आप से मुलाक़ात न हो सकी, फ़िक्र और ग़म में हम ने पूरी रात गुज़ारी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिन्नात की तरफ़ से एक बुलाने वाला मेरी तरफ़ आया था, मैं उस के साथ चला गया और उन को क़ुर्आन मजीद सुनाया।

जिन्नात ने क़ुर्आन मजीद सुना तो आपस में कहने लगे कि ख़ामोश रहो ध्यान से सुनो। जब आप ने तिलावत फ़रमा दी तो जिन्नात वापस हो गये और साथ ही मुबल्लिग़ और दाअ़ी भी बन गये, वापस होकर उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम ने ऐसी किताब सुनी है जो मूसा (अ़लै०) के बाद नाज़िल हुई है। यह किताब वाक़ई अल्लाह की किताब है जो किताबें इस से पहले अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल की गईं उनकी तस्दीक़ करने वाली और ह़क़ की तरफ़ और सीधी राह की तरफ़ हिदायत देती है।

(इस से बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यह साबित किया है कि यह जिन्नात जिन्होंने आप (सल्ल०) से क़ुर्आन मजीद सुना, फिर वापस होकर अपनी क़ौम को दीने इस्लाम की दअ़वत दी यह लोग यहूदी थे) जिन्नात की इस जमाअ़त ने अपनी क़ौम से ख़िताब करते हुए कहा कि अल्लाह के दाअ़ी यानी सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बात मानो, उन पर ईमान लाओ। अगर ईमान ले आओगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा लेगा।

जो जिन्नात ईमान ले आये उन का अज्र व सवाब यह बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला उनके गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) फ़रमा देगा। इस में दाख़िला जन्नत का ज़िक्र नहीं है, चूंकि मोमिन जिन्नात के जन्नत में दाख़िल होने का किसी आयते करीमा में वाज़ेह़ (Clear) ज़िक्र नहीं है और कोई 'ह़दीस मरफ़ूअ़ सह़ीह़ सरीह़' भी इस बारे में नहीं मिलती इसलिए मस्ला इख़्तिलाफ़ी है।

बाज़ ह़ज़रात कहते हैं कि वह जन्नत में दाख़िल होंगे और बाज़ लोग कहते हैं कि उन के ईमान का बदला बस यही है कि दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ कर दिये जाएँ और उन से कह दिया जाएगा कि मिट्टी हो जाओ। जैसा कि जानवरों के लिए यही इर्शाद होगा लिहाज़ा वह मिट्टी हो जाएँगे।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) ने इस में ख़ामोशी अख़्तियार की है जन्नत में दाख़िल होने न होने के बारे में कोई फ़ैसला नहीं किया। *(मज़ीद तफ़्सीर सूरः रह़मान के आख़िर में देखी जा सकती है)* वल्लाहु आ़लम।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ

इस में यह एलान फ़रमा दिया कि जो शख़्स अल्लाह के दाअ़ी की बात न माने यानी ईमान न लाए तो वह अपना ही नुक़्सान करेगा और अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जब गिरफ़्त होगी तो कहीं भाग कर नहीं जा सकेगा और अल्लाह के सिवा कोई मदद न कर सकेगा, जिस ने अल्लाह के दाअ़ी की नाफ़रमानी की वह पूरी गुमराही में है।

जो लोग तौह़ीद के इन्कारी होते हैं, क़ियामत के आने के भी क़ायल नहीं होते, लिहाज़ा दअ़वते तौह़ीद के बाद क़ियामत का भी ज़िक्र फ़रमाया और मुन्किरीन की बातों को जवाब देते हुए फ़रमाया, क्या तुम ने ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया है, इस को तुम मानते हो इतनी बड़ी-बड़ी चीज़ों को पैदा फ़रमाने में उसे ज़रा भी थकन नहीं हुई तो क्या उसको इस पर क़ुद्रत नहीं है कि वह इन्सानों को और दूसरी चीज़ों को मौत देकर दोबारा ज़िन्दा फ़रमाए? तुम तो ग़ौर ही नहीं करते, अगर ग़ौर करोगे तो यह बात आसानी से समझ में आ जाएगी।

بَلٰٓى हाँ वह ज़रूर दोबारा पैदा कर सकता है अर्थात मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (बेशक वह हर चीज़ पर क़ुद्रत रखता है।)

इस के बाद काफ़िरों को याद दहानी कराई गई है कि क़ियामत के दिन जब अहले कुफ़्र आग पर पेश किये जाएँगे यानी उस में दाख़िल होने लगेंगे तो उन से कहा जाएगा कि क्या यह ह़क़ नहीं है? (दुनिया में जब तुम से कहा जाता था कि कुफ़्र की सज़ा दोज़ख़ है तो तुम उसे नहीं मानते थे और जो ह़ज़रात इस बात की ख़बर देते थे तुम उस का मज़ाक़ बनाते थे।

अब बोलो, क्या कहते हो यह आग जो तुम्हारे सामने है उस का सामना होना और तुम्हारा इसमें दाख़िल होना ह़क़ है या नहीं

قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا वह इस पर कहेंगे कि हाँ, वाक़ई यह ह़क़ है हम मानते हैं, तस्दीक़ करते हैं, वह इस बात को क़सम खाकर कहेंगे, लेकिन उस वक़्त इक़रार करने और क़सम खाने से कोई फ़ायदा नहीं होगा

قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ इर्शाद होगा कि अपने कुफ़्र की वजह से अ़ज़ाब चखो।

35 فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ بَلٰغٌ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत और मेह़नत बराबर जारी रही। आप (सल्ल०) के सामने लोग इन्कार व हठधर्मी पर जमे हुए थे, इस से आप को रंज होता था। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को तसल्ली देने और ढ़ारस बाँधने के लिए फ़रमाया فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ

(सो आप सब्र कीजिए जैसे हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया।)

وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ और उन लोगों के लिए जल्दी न कीजिए) यानी उन पर जल्दी अ़ज़ाब आ जाए इस फ़िक्र में न पड़िए।

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ

(जिस दिन यह लोग वादा की चीज़ को देखेंगे यानी कि दिन की एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठहरे) यानी अ़ज़ाब में जो देर लग रही है यह उसकी वजह से यह समझ रहे हैं कि अ़ज़ाब नहीं आएगा, लेकिन जब अ़ज़ाब आ जाएगा तो यह यूँ समझेंगे कि दुनिया में जो ज़िन्दगी गुज़ारी वह सिर्फ़ एक घड़ी ही थी, दुनिया की लम्बी ज़िन्दगी को जिस में ख़ूब मज़े किये उसे सख़्त अ़ज़ाब की वजह से भूल जाएँगे।

بَلٰغٌ यानी यह जो कुछ तुम्हें बताया गया, सुनाया गया नसीहत के एतिबार से काफ़ी है। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि هٰذَا का मतलब यह है कि कुर्आन करीम ने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तुम्हें ह़क़ पहुँचा दिया सवाब की चीज़ें भी बता दीं गुनाह के कामों से भी ख़बरदार कर दिया, तब्लीग़ का ह़क़ अदा कर दिया। अब अ़मल न करोगे तो अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगे।

فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ

(सो अ़ज़ाब के ज़रिये फ़ासिक़ लोग ही हलाक होंगे) जो अल्लाह के बाग़ी हैं उसकी फ़रमाँबरदारी से दूर हैं।

आयते करीमा में जो اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ फ़रमाया है बाज़ ह़ज़रात के नज़्दीक आयत का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला के तमाम रसूल ऊलुलू अ़ज़्म यानी हिम्मत और हौसला वाले थे। जैसा उन ह़ज़रात ने सब्र किया आप भी सब्र कीजिए। इस तफ़्सीर की बिना पर तमाम अम्बिया-ए-किराम और रसूल ऊलुलू अ़ज़्म की सिफ़त से लैस थे

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने जो रसूल भेजे थे उन में जो ऊलुलू अ़ज़्म थे आप उन की पैरवी कीजिए। अब यह कि इन ह़ज़रात में कौन-कौन ऊलुलूअ़ज़्म थे, फिर इन ह़ज़रात के नाम अल्लाह तआ़ला ने नबी अक्रम (सल्ल०) को ख़िताब करते हुए وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ फ़रमाया है।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ऊलुलू अ़ज़्म से वह ह़ज़रात मुराद हैं जो सूरः अन्आ़म की आयत وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ में ज़िक्र हैं जिन की संख्या अठ्ठारह हैं, इन का ज़िक्र फ़रमाकर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ

(अल्लाह तआ़ला ने उनको हिदायत दी, सो आप उन की हिदायत की पैरवी कीजिए)

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि ऊलुलू अ़ज़्म से वह ह़ज़रात मुराद हैं जो अस्ह़ाबे शरीअ़त थे यानी ह़ज़रत नूह़, ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत मूसा और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) यह चार हैं। पाँचवें साह़िबे शरीअ़त सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) हैं।

(भाग–47)

सूर–ए–मुहम्मद

(सूरः नं. 47)

आयत नं० 1 से 14 तक

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِن
رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ
يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ۝ فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا
فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ ۖ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا
اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى
الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ
أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ۝

अनुवाद-

(1) जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, तो 'उसने' उनके कर्म को अकारथ कर दिया; (2) और जो ईमान लाए, और भले काम किये, और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया-और वही हक़ (सत्य) है उनके 'रब' की ओर से, 'उसने' उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनका हाल ठीक कर दिया; (3) यह इसलिए कि जिन लोगों ने इन्कार किया वे बातिल (असत्य) पर चले, और जो लोग ईमान लाए, वह अपने 'रब' के बताए हुए सही रास्ते पर चले, इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनके हाल बयान करता है; (4) तो जब तुम्हारा मुक़ाबला काफ़िरों (इन्कारियों) से हो, तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो, तो (जो बचें) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इसके बाद या तो एहसान करो (और छोड़ दो) या फ़िदिया (अर्थ-दण्ड) का मामला करो, यहां तक कि वे लड़ाई में अपने हथियार डाल दें, यह है तुम्हारी ज़िम्मेदारी, और अगर अल्लाह चाहे तो ख़ुद ही उनसे निपट ले, लेकिन 'उसने' चाहा कि तुम्हें एक-दूसरे के ज़रिये (लड़वा कर) आज़माए, और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, तो उनके कामों को अल्लाह हरगिज़ अकारथ नहीं करेगा; (5) 'वह' उनको राह पर लगाएगा और उनका हाल ठीक कर देगा; (6) और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसका हाल 'उसने' बता रखा है। (7) ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे क़दम जमा देगा। (8) और जिन लोगों ने इन्कार किया, तो उनके लिए तबाही है, और उनके कामों को अल्लाह अकारथ कर देगा; (9) यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया, तो 'उसने' उनके कामों को अकारथ कर दिया। (10) क्या यह लोग धरती में चले-फिरे नहीं, ताकि देखते कि उनका कैसा अंजाम हुआ जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तबाह

कर दिया, और काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए ऐसी ही तबाही है; (11) यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है, और काफ़िरों का संरक्षक (मददगार) कोई नहीं। (12) जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जिन लोगों ने इन्कार किया; वे फ़ायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है, और उनका ठिकाना आग है। (13) और कितनी ही बस्तियाँ थीं, जो ताक़त में तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, शक्ति में बढ़-चढ़ कर थीं 'हमने' उनको तबाह कर दिया, तो कोई उनका मददगार न हुआ। (14) तो क्या जो व्यक्ति अपने 'रब' की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो, वह उन जैसा (हो सकता) है, जिन्हें उन का बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो, और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गये हों?

आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1-3 اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝

अल्लाह तआ़ला की राह से रोकने वालों की बर्बादी

इसमें इन्कारियों और ईमान वालों के दर्मियान फ़र्क़ बताया गया है और अहले कुफ़्र की सज़ा और अहले ईमान का बदला बयान किया गया है। पहले तो यह फ़रमाया कि जिन्होंने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उन के आ़माल ज़ाया (नष्ट) कर दिये, कुफ़्र व शिर्क पर तो किसी भलाई की उम्मीद रखने का कोई सवाल ही नहीं।

अहले कुफ़्र जो बाज़ मर्तबः सिलह़ रहमी (रिश्तों को जोड़ना) या ख़िद्‌मते ख़ल्क़ (जन सेवा) के काम करते हैं आख़िरत में उन चीज़ों का कुछ भी बदला नहीं मिलेगा, आ़माल ज़ाया (नष्ट) करने का ज़रिया इन्कार ही बहुत है, फिर ऊपर से जिन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोकने का जो काम किया यह उनके आ़माल ज़ाया होने का एक और ज़रिया बन गया।

मोमिनीन के बारे में फ़रमाया कि जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, अल्लाह उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देगा और उनके ह़ालात की इस्लाह़ फ़रमा देगा) आयते करीमा में ईमान की तअ़रीफ़ फ़रमाते हुए وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ फ़रमाया।

इस में यह बता दिया कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के तशरीफ़ लाने के बाद किसी का ईमान उस वक़्त तक नहीं माना जाएगा जब तक कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान न लाएँ और साथ ही وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ फ़रमाया।

जिस में मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के रसूल होने की और जो कुछ आप पर नाज़िल हुआ है अल्लाह की तरफ़ से उस के उतारे जाने की तस्दीक़ है और यह बता दिया कि आप का दावा-ए-रिसालत

और दावा-ए-नुज़ूल किताब हक़ है और सहीह़ है।

फिर इर्शाद फ़रमाया कि यह जो इन्कारियों की बद्ह़ाली होगी और अहले ईमान के ह़ाल को अल्लाह तआ़ला सुधार देगा यह इस वजह से है कि काफ़िरों ने शैतान की पैरवी की और अहले ईमान ने ह़क़ की पैरवी की। ह़क़ की पैरवी के साथ शब्द مِنْ رَّبِّهِمْ भी फ़रमाया। इस में यह बता दिया कि ह़क़ वही है जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हो।

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ

(अल्लाह तआ़ला इसी तरह़ लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है।)

'साहिबे रूहुल मआ़नी' फ़रमाते हैं कि मिसाल से ह़ालात मुराद है यानी अल्लाह तआ़ला मोमिनों और काफ़िरों के ह़ालात बयान फ़रमाता है, मोमिनीन को ह़क़ पर बताता है और उनके नतीजे में कामियाबी की ख़ुशख़बरी देता है और काफ़िरों के बारे में बताता है कि वह बातिल (ग़लत रास्ते) की पैरवी करते हैं जिस का नतीजा नुक़्सानदेह है।

4-14

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا
فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ذٰلِكَ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ
بِبَعْضٍ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤ سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥
وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
اَمْثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا
تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝١٢ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْۤ اَخْرَجَتْكَ
اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝١٣ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ۝١٤

जिहाद व क़िताल की तर्ग़ीब

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ी (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "लोगों दुश्मन से भिड़ने की तमन्ना मत करो और अल्लाह से आ़फ़ियत तलब करो, फिर अगर भिड़ जाओ तो साबित क़दम रहो और जान लो कि जन्नत तल्वारों के साये तले है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अर्थात जब काफ़िरों से तुम्हारा मुक़ाबिला हो जाए और क़त्ल व क़िताल की नौबत आ जाए तो दुश्मनाने इस्लाम के क़त्ल करने में कोई कोताही न करो, उन में से जो क़त्ल हो जाएँ उनके अ़लावा जो ज़िन्दा हों उनको क़ैद कर लो और अच्छी तरह़ से उन को बाँधो। इस के बाद उन को एह़सान के तौर पर या अपने क़ैदियों को छुड़ाने के बदले में उन को छोड़ दो।

जब दो क़ौमों में जंग होती है तो जंग करने वाले मक़्तूल (जो क़त्ल हो जाए) भी होते हैं और एक समूह दूसरे समूह के लोगों को क़ैद भी कर लेता है।

मुजाहिदीने इस्लाम दुश्मन के लोगों को क़ैद कर लें तो उनके साथ क्या मामला किया जाए इस के बारे में यहाँ बयान किया गया हैः-

बन्दियों के साथ मामला-

पहला यह कि उन पर एह़सान कर दिया जाए यानी बिना किसी मुआवज़ा (बदले) के छोड़ दिया जाए या दूसरा यह कि अपने क़ैदियों के बदले में उन्हें छोड़ दें यानी अमीरुल् मोमिनीन अपने क़ैदी उन से वापस ले लें और उनके बदले काफ़िर क़ैदियों को वापस कर दे।

तीसरी सूरत यह है कि माली बदला लेकर उन्हें छोड़ दिया जाए जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ग़ज़्व-ए-बद्र के क़ैदियों के साथ यही मामला किया था।

चौथी सूरत यह है कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए क़त्ल करना और फ़िद्या लेकर छोड़ देना सूरः अन्फ़ाल में ज़िक्र है।

पाँचवीं सूरत यह है कि उन्हें ग़ुलाम बांदी बनाकर मुजाहिदीन में तक़्सीम (बाँट) कर दिया जाये।

एक सूरत यह है कि उन क़ैदियों को 'ज़िम्मी' (ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी सल्तनत में रहें और कर अदा करें) बनाकर दारुस्सलाम में रख लिया जाए।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक बिल्कुल ही बतौर एह़सान के छोड़ देना कि न क़ैदियों का तबादला हो और न माल लिया जाए और न ज़िम्मी बनाया जाए जायज़ नहीं है।

अ़ल्लामा अबू बक्र ह़िसास अह़कामुल क़ुर्आन पेज नं० 392 भाग 2 में लिखते हैं कि सूरः अन्फ़ाल सूरः (मुह़म्मद) के बाद नाज़िल हुई। सूरः मुह़म्मद में जो مَنًّا और فِدَآءً की इजाज़त है, उसको सूरः तौबः की आयात नं० (5) فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ और قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (**आयत नं० 29**) ने मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया, लिहाज़ा **फ़िदा** और **मन** की इजाज़त नहीं रही।

فوجب ان یکون الحکم المذکور فیھا ناسخاللفداءالمذکورفی غیرھااہ

काफ़िर क़ैदियों को बिना माली बदले या मुसलमान क़ैदियों को छुड़ाने के लिए बतौर तबादला छोड़ दिया जाए।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) ने इस को जायज़ क़रार नहीं दिया और ह़ज़राते साह़िबैन और ह़ज़रत इमाम शाफ़ई (रह़०) ने फ़रमाया कि ऐसा करना दुरुस्त है।

रही यह बात कि काफ़िर क़ैदियों का माल लेकर छोड़ देना जायज़ है या नहीं, इस के बारे में इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) का मशहूर क़ौल यह है कि यह जायज़ नहीं है। अलबत्ता इमाम मुह़म्मद (रह़०) ने 'सियर कबीर' में लिखा है कि अगर मुसलमानों को माल की ज़रूरत हो तो ऐसा भी कर सकते हैं।

इस के बाद फ़रमायाः-

وَلَوْ يَشَاءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ

(और अगर अल्लाह चाहे तो काफ़िरों से बदला ले) यानी किसी तरह़ का कोई भी अ़ज़ाब देकर हलाक फ़रमा दे।

وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ

(और ताकि तुम में से बाज़ का बाज़ के ज़रिये इम्तिह़ान फ़रमाए) यानी तुम्हें जो जिहाद का हुक्म दिया इस में तुम्हारा इम्तिह़ान है कि वह कौन है जो यह जानते हुए भी कि मैं क़त्ल भी हो सकता हूँ अल्लाह तआ़ला के हुक्म को मानता है और जिहाद के लिए निकल खड़ा होता है और इस में काफ़िरों का भी इम्तिह़ान है कि मुसलमानों के मुक़ाबिले में आकर मक़्तूल होने, शिकस्त खाने और मुसलमानों के साथ अल्लाह तआ़ला की मदद का मामला देखकर ह़क़ को क़ुबूल करते हैं या नहीं।

फिर फ़रमाया وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ

(जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये, अल्लाह हरगिज़ उन के आ़माल बेकार न फ़रमाएगा।)

इस में यह बता दिया कि जिहाद में इम्तिह़ान की ह़िक्मत के साथ-साथ तुम्हारा फ़ायदा यह भी है कि अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाओगे तो यह सिर्फ़ इम्तिह़ान की कामियाबी तक ही नहीं रहेगा, बल्कि तुम्हारे आ़माल के बदले बड़े-बड़े इनआ़मात मिलेंगे, शहादत का दर्जा अ़ता किया जाएगा।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ

(अल्लाह उन्हें मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुँचा देगा और उन का ह़ाल दुरुस्त फ़रमा देगा) क़ब्र, ह़श्र और तमाम मौक़े में उन का ह़ाल दुरुस्त फ़रमा देगा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ (और उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा जो उन की मन्ज़िले मक़्सूद है।)

عَرَّفَهَا لَهُمْ (अल्लाह ने उन्हें जन्नत की पहचान करा दी है) यानी दुनिया में अपने किताबों और रसूलों के ज़रिये उन्हें इसकी पहचान करा दी है। जन्नत की पहचान कराने का यह मतलब भी लिया जा सकता है कि जब जन्नत में दाख़िल होने लगेंगे तो अपने-अपने मुक़र्रर किये हुए मक़ाम को वह इस तरह़ जानते होंगे जैसे अपने दुनिया वाले घरों में उस को पहचानते थे, बल्कि उन से ज़्यादा अपनी जन्नत वाली मुक़र्रर जगह के रास्ते को पहचानते होंगे।

इस के बाद मुसलमानों से मदद का वादा करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝

इस में यह बता दिया कि तुम अल्लाह की मदद करोगे यानी उसके दीन की बुलन्दी के लिए कोशिशों में लगोगे (जिस का वह मुह़ताज नहीं है) तो वह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और साबित क़दम रखेगा।

फिर मोमिनीन का इनआ़म बयान करने के बाद काफ़िरों की बद्ह़ाली बयान फ़रमाईः-

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ

(जिन लोगों ने कुफ़्र किया हलाकत है उन के लिए और अल्लाह ने उन के आ़माल ज़ाया कर दिये।)

दुनिया में भी मोमिनीन के हाथों उनकी तबाही है और आख़िरत में भी उन के लिए हलाकत यानी

सख़्त और हमेशा का अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ

(उन लोगों की यह हलाकत और आ़माल का बर्बाद होना इस वजह से है कि इन्होंने उस को नापसन्द किया जो कुछ अल्लाह ने नाज़िल किया था, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने इनके आ़माल को बर्बाद कर दिये।)

दुनिया में चल फिर कर नसीहत-

इस के बाद मुन्किरीन को तम्बीह (चेतावनी) फ़रमाई कि अपनी दुनिया, साज़ो सामान और इमारात से धोका न खाएँ इन से पहले भी क़ौमें गुज़र चुकी हैं जो हलाकत व बर्बादी का मुँह देख चुकी हैं। इर्शाद फ़रमाया اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(क्या यह लोग ज़मीन में नहीं चले, फिरे ताकि उन लोगों का अन्जाम देख लेते जो इन से पहले थे।)

دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ (अल्लाह ने उन को हलाक फ़रमा दिया)

وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا (और काफ़िरों के लिए ऐसी कई चीज़ें हैं) यानी मौजूदा कुफ़्फ़ार हैं और इनके बाद जो भी काफ़िर होंगे उन के लिए दुनिया में इसी तरह़ अ़ज़ाब होगा और हलाक कर दिये जाएँगे और आख़िरत में सख़्त और हमेशा के अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) होंगे।

अल्लाह तआ़ला अहले ईमान का मौला है-

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (यह जो कुछ हो यानी अहले ईमान का जन्नत में दाख़िल होना और अहले कुफ़्र का दुनिया व आख़िरत में बर्बाद होना इस वजह से है कि अल्लाह तआ़ला ईमान वालों का मौला है यानी उन का वली, मददगार, कारसाज़ है) وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ (और काफ़िरों का कोई कारसाज़ मददगार नहीं।)

अहले ईमान का इनआ़म और कुफ़्फ़ार की बद्हाली-

इस के बाद अहले ईमान का इनआ़म और काफ़िरों की ज़िन्दगी और उन का अ़ज़ाब बयान फ़रमाया, जो आख़िरत में उनके लिए तैयार किया गया है। फ़रमायाः-

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(बिलाशुब्हा अल्लाह दाख़िल फ़रमाएगा ईमान वालों को और जिन्होंने नेक अ़मल किये ऐसे बाग़ों में जिन के नीचे नहरें बहती होंगी।)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ

(और जिन लोगों ने इन्कार किया वह नफ़ा ह़ासिल करते हैं और खाते हैं जैसे- चौपाये खाते हैं।) (यह उन का दुनियावी ह़ाल है।)

وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ (और आख़िरत में उन का ठिकाना दोज़ख़ है)

अहले कुफ़्र के सामने दुनिया ही है उसी को सब कुछ समझते हैं, इसलिए किसी भी तरह़ दुनियावी

लज़्ज़त, दुनियावी लालच, दुनियावी तरक़्क़ी और दुनियावी माल हासिल करने में कोई कोताही नहीं करते, क्योंकि उन्हें सिर्फ़ दुनिया ही चाहिए। इसलिए कमाने में और खाने पीने में हर तरह की लज़्ज़त हासिल करने में कोई हया और शर्म इन्सानियत व मुरव्वत उन के लिए रुकावट नहीं बनती। जिस तरह जानवर और चौपाये खाने-पीने में हर जगह मुँह मार देते हैं और मज़े हासिल करने के लिए सब के सामने सब कुछ कर लेते हैं, उसी तरह यह दुनियावी लज़्ज़तों के मतवाले सब कुछ कर गुज़रते हैं।

जिस तरह जिन्सी लज़्ज़त (sex) के लिए काफ़िर दीवाने हो रहे हैं, उसी तरह माल कमाने और खाने-पीने में भी जानवरों का तरीक़ा अपनाये हुए हैं। हलाल व हराम से कोई मतलब नहीं जो मिला खा लिया जो जी चाहा खा लिया। सुअर और शराब तो उन की ख़ूराक है।

क़ुर्आन करीम में उन की इस दुनिया वाली ज़िन्दगी को يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ से संज्ञा दी है और साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि इन का ठिकाना दोज़ख़ है। इस विषय को सूरः ज़ुमर **(आयत नं० 8)** में बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया हैः-

قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ

(आप फ़रमा दीजिए कि तू अपने कुफ़्र से थोड़ा सा नफ़ा हासिल कर ले बेशक तू दोज़ख़ में से है।)

अहले मक्का को तम्बीह-

इस के बाद अहले मक्का को तम्बीह फ़रमाई। इस में कहा तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जा रहा है क्योंकि आप को इस में तसल्ली दी गई है लेकिन सुनाना इन्कारियों को भी है, ताकि वह नसीहत हासिल करें।

इर्शाद फ़रमाया وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ और कितनी ही बस्तियाँ थीं जिन के रहने वाले आपकी उस बस्ती के रहने वालों से कुव्वत में ज़्यादा सख़्त थे जिस ने आपको निकाल दिया है हम ने उन को हलाक कर दिया तो कोई भी उन का मददगार न था। इन को भी अपनी कुव्वत व ताक़त पर घमण्ड करने का कोई हक़ नहीं।

अहले ईमान और अहले कुफ़्र बराबर नहीं-

फिर फ़रमाया أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ जो शख़्स अपने रब की तरफ़ से दलील पर होगा क्या उस शख़्स की तरह हो सकता है जिस का बुरा अ़मल उस के लिए सज़ा कर दिया गया है? (उस ने इन्कार को अच्छा समझा और ईमान से दूर भागा) और जिन लोगों ने अपनी इच्छाओं की पैरवी की यानी तौहीद को छोड़कर शिर्क को अख़्तियार किया।

मतलब यह है कि अहले ईमान जिन के पास उनके रब की तरफ़ से दलील मौजूद है और काफ़िर लोग जिन के बुरे आ़माल कुफ़्र और गुनाह उन्हें अच्छे लगते हैं और अपनी इच्छाओं के पीछे पड़े हुए हैं यह दोनों अर्थात मोमिन और काफ़िर बराबर नहीं हो सकते।

आयत नं० 15 से 28 तक

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۚ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۚ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۚ
وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا
فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝ وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ
تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ۝ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ
مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ۝
طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ۝ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ
أَقْفَالُهَا ۝ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا
لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۝ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

अनुवाद-

(15) जन्नत (की विशेषता,) जिसका मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें बह रही होंगी, जिसमें कोई बदलाव (बदबू) न होगा, और दूध की नहरें जिसका स्वाद (मज़ा) न बदलेगा, और ऐसे पीने (शराब) की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए बड़ी स्वादिष्ट होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की भी नहरें होंगी, और उनके लिए हर तरह के फल होंगे, और उनके रब की ओर से मग्फ़िरत (क्षमा) है, (क्या ऐसे लोग) उन लोगों की तरह (हो सकते) हैं? जो हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं, और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर के रख देगा। (16) और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं, तो जिन लोगों को इल्म मिला है, उनसे कहते हैं, कि ‘‘उन्होंने (रसूल से) अभी क्या कहा था?’’ यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यह अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं। (17) और जिन लोगों ने सीधी राह अपनाई, ‘उसने’ उनकी सूझ-बूझ और बढ़ा दी, और उन्हें परहेज़गारी अ़ता फ़रमायी। (18) तो क्या अब यह लोग उस घड़ी (क़ियामत) के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर अचानक आ जाए? उसकी निशानियाँ (तो ज़ाहिर ही हो चुकी हैं) जब वह आ जाएगी तो उस समय उन्हें नसीहत कहाँ (फ़ायदा देगी)? (19) तो जान लो! कि ‘अल्लाह’ के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं; और अपनी ग़ल्तियों के लिए मांफी मांगो, और मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिए भी, और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को जानता है और तुम्हारे ठिकानों को भी। (20) और जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं, ‘‘कोई सूरः क्यों नहीं उतरी? लेकिन जब एक पक्की सूरः उतर

जाती है, जिसमें क़िताल (युद्ध) का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो-जिनके दिलों में रोग है-कि वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा गई हो, तो अफ़सोस है उन पर! (21) (उनके लिए बेहतर है) हुक्म मानना, और ठीक बात कहना, फिर जब बात पक्की हो जाए, तो अगर ये अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता। (22) (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने रिश्तों-नातों को तोड़ने लगो- (23) यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और उन्हें बहरा और (उनकी) आँखों का अन्धा कर दिया; (24) तो क्या ये क़ुर्आन में सोच-विचार नहीं करते, या उनके दिलों पर ताले लगे हैं? (25) वे लोग जो पीठ फेर कर पलट गये, इसके बाद कि उन पर सीधी राह स्पष्ट हो चुकी थी, उन्हें शैतान ने सजा कर दिखाया और उसने उन्हें लम्बी (उम्र का वादा) दिया। (26) यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारा, कहा, ''हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे,'' अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है। (27) तो उस वक़्त क्या (हाल) होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रुहें कब्ज़ करेंगे, (28) यह इसलिए कि यह उस पर चले जो अल्लाह को नाराज़ करने वाला था, और उन्होंने 'उसकी' ख़ुशी को नापसंद किया, तो 'उसने' उनके सारे काम अकारथ कर दिये।

आयत नं० 15 से 28 तक की व्याख्या

15 مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِیْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَیْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ یَتَغَیَّرْ طَعْمُهٗ ۚ
وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ ۚ۬ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
وَ مَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِی النَّارِ وَ سُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝

जन्नतियों और जहन्नमियों के पीने की चीज़ें

इस आयत में भी मोमिनीन के इनआमात और काफ़िरों की सज़ा का बयान है। पहले तो जन्नत का हाल बयान फ़रमाया जिस का मुत्तक़ियों से वादा है। जन्नत में बहुत सी नेअ़मतें हैं उन में नहरें भी हैं।

इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में ऐसे पानी की नहरें हैं जिन में तब्दीली न होंगी और दूध की नहरें हैं जिन का मज़ा बदला हुआ न होगा और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए सरापा लज़्ज़त होंगी और बिल्कुल साफ़ शहद की नहरें हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

बिलाशुब्हा जन्नत में सौ दर्जे हैं जिन्हें अल्लाह ने 'फ़ी सबीलिल्लाह' जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाया है। हर दो दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान है, सो जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो जन्नतुल् फ़िरदौस का सवाल करो, क्योंकि वह जन्नत का सब से अफ़ज़ल और आ़ला दर्जा है और उसी के ऊपर रहमान का अ़र्श (सिंहासन) है और उसी से नहरें जारी हैं।

(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 391)

यह हदीस हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि०) से भी है। जिस में यूँ है:-

منها تفجر انهار الجنة الاربعة यानी जन्नतुल् फ़िरदौस से चारों नहरें जारी हैं। मुल्ला अ़ली क़ारी (रह०) मिर्क़ातुल् मफ़ातीह़ शरह़ 'मिश्कातुल् मसाबीह़' में लिखते हैं कि यही वह चार नहरें हैं जो क़ुर्आन मजीद में ज़िक्र हैं यानी पानी और दूध, शराब और शहद की नहरें।

जन्नतुल् फ़िरदौस-

ह़दीस शरीफ़ के बयान से मालूम हुआ कि जन्नतुल् फ़िरदौस से चार नहरें निकलती हैं उन का स्रोत जन्नतुल् फ़िरदौस है (फिर उनकी शाखें फूटती हुई दूसरी जन्नतों में भी पहुँचती हैं) इसमें जो शराब की नहरें बताई गई हैं उन के साथ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ भी फ़रमा दिया यानी यह बता दिया कि यह शराब सरापा लज़्ज़त होगी इसको पीने से नशा आएगा और न कोई तक्लीफ़ होगी।

सूरः साफ़्फ़ात (आयत नं० 45, 46, 47) में फ़रमाया:-

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۝

(उन के पास ऐसा पीने का जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा, वह सफ़ेद होगी, पीने वालों को लज़ीज़ मालूम होगी, न उस में दर्दे सर होगा और न उस से अ़क़्ल में फ़ुतूर आएगा) और सूरः वाक़िआ़ (आयत नं० 17, 18,19) में फ़रमाया:-

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝

(उन के पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे यह चीज़ें लेकर आते-जाते रहेंगे और ऐसा जामे शराब जो बहती हुई शराब से भरा ज़ाएगा न उस से उन को दर्द सर होगा और न उस से अ़क़्ल में ख़राबी आएगी।

इन आयात से मालूम हुआ कि जन्नत में जो कुछ पीने पिलाने के लिए दिया जाएगा उस में लज़्ज़त ही लज़्ज़त होगी, न अ़क़्ल में ख़राबी आएगी, न नशा होगा, नहरों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद फ़रमाया:-

وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ

(और उन के लिए हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से मग्फ़िरत होगी।)

इस के बाद फ़रमाया كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ यानी من كان فى هذا النعيم كمن هو خالد فى النار जो शख़्स इन नेअ़मतों में होगा क्या उन लोगों की तरह़ हो सकता है जो हमेशा दोज़ख़ की आग में रहेंगे और जिन्हें खौलता हुआ गर्म पानी पिलाया जाएगा? जो उन की आँतो को काट डालेगा।)

दोज़ख़ का खाना-

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, दोज़ख़ियों को इतनी ज़बरदस्त भूक पैदा कर दी जाएगी जो अकेले ही उस अ़ज़ाब के बराबर होगी जो उन को भूक के अ़लावा हो रहा होगा, लिहाज़ा वह खाने के लिए फ़रियाद करेंगे। इस पर उन को 'ज़रीअ़' खाना

दिया जाएगा जो न मोटा करे न भूक ख़त्म करे। फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उन को طَعَامٌ ذُوْ غُصَّةٍ (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा। उसके उतारने के लिए तद्बीरें सोचेंगे तो याद करेंगे कि दुनिया में थे तो गले में अटक जाने वाली चीज़ों के उतारने के लिए पीने की चीज़ें पिया करते थे, लिहाज़ा पीने की चीज़ें तलब करेंगे, तो उन्हें खौलता हुआ पानी लोहे के बर्तन के ज़रिये उन के सामने कर दिया जाएगा। वह बर्तन जब उन के चेहरों के क़रीब होंगा तो उन के चेहरों को भून डालेगा, फिर जब पानी पेटों में पहुँचेगा तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आँतों वग़ैरह) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 504 तिर्मिज़ी)

ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने
के बारे में फ़रमाया कि सदीद (पीप का पानी) जब दोज़ख़ी के मुँह के क़रीब किया जाएगा तो वह उस से नफ़रत करेगा, फिर और क़रीब किया जाएगा तो चेहरे को भून डालेगा और पीते ही पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकल जाएगी।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह आयात तिलावत फ़रमाईं (पहली आयत सूरः मुह़म्मद यानी) وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ

दूसरी सूरः कहफ़ **(आयत नं० 29)** की आयत यानी وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 503 तिर्मिज़ी)

16-19 وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۫ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ۝ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝

मुनाफ़िक़ीन की बाज़ ह़रकतें

यह चार आयात का तर्जुमः है। पहली आयत में मुनाफ़िक़ीन की एक बुरी आ़दत का ज़िक्र फ़रमाया है। मुनाफ़िक़ीन ज़ाहिर में अपने आप को मुसलमान कहते थे और अन्दर से काफ़िर थे। जिस किसी का ज़ाहिर (External) व बातिन (Internal) यकसाँ न हो उस के रंग ढंग और चाल ढ़ाल से उसकी दोरंगी मालूम हो जाती है। इसी सिल्सिले की यह एक कड़ी है कि मुनाफ़िक़ीन जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मजलिस में हाज़िर होते थे तो आपकी बातों की तरफ़ बज़ाहिर कान लगाकर ऐसे बैठते थे जैसे बड़े ध्यान से सुन रहे हैं।

यह तरीक़ा सिर्फ़ धोका देने के लिए था, दिलों से बिल्कुल मुतवज्जेह (आकर्षित) नहीं होते थे, जब मजलिस से बाहर आते तो दूसरे ह़ज़रात यानी अहले इ़ल्म सहा़बा से कहते थे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अभी क्या फ़रमाया?

पहली मुनाफ़िक़त तो यह थी कि झूठ-मूठ कान लगाकर बैठते और ध्यान से बातें न सुनते और दूसरी मुनाफ़िक़त यह थी कि मुसलमानों पर ज़ाहिर करने के लिए कि हमें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बातें सुनने का शौक़ है यह मालूम करते थे कि आप ने अभी-अभी क्या फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है और यह अपनी इच्छाओं के पीछे पड़े हुए हैं, इन्हें ह़क़ की राह पर आना नहीं है।

दूसरी आयत में अहले ईमान के इन्आ़म का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन लोगों ने हिदायत पाई अल्लाह तआ़ला उन को मज़ीद हिदायत देता है। जैसे-जैसे हुक्म नाज़िल होते हैं वह उन सब पर ईमान लाते हैं और अ़मल करते जाते हैं) और अल्लाह उन को उन का तक़्वा नसीब फ़रमाता है (अह़काम पर भी अ़मल करते हैं और जिन आ़माल से मना फ़रमाया है उन से भी बचते हैं।)

तीसरी आयत में इन्कार करने वालों और मुनाफ़िक़ीन की पकड़ फ़रमाई कि उन लोगों का तौर तरीक़ ऐसा है कि बस क़ियामत ही का इन्तिज़ार कर रहे हैं (न ईमान लाते हैं, न भलाई के काम में मशगूल होते हैं, न गुनाहों से बचते हैं और न अ़ज़ाब की धमकी उन्हें प्रभावित करती हैं, न जन्नत की ख़ुशख़बरी का यक़ीन करते हैं।

अब क्या रह गया? बस क़ियामत का आना बाक़ी है। इस के इन्तिज़ार में हैं कि वह अचानक आ जाए और क़ियामत आ जाए तो नसीह़त ह़ासिल करें) सो क़ियामत की निशानियाँ आ चुकी हैं, ख़ुद नबी करीम (सल्ल०) का आना भी क़ियामत की निशानी में से है और मोअ़जिज़ा शक़्क़ुलक़मर (चाँद के टुकड़े) भी क़ियामत में से है, जिसे सूरः अल् क़मर की पहली आयत में बयान फ़रमाया اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ जब क़ियामत आ जाएगी तो उस वक़्त समझने और नसीह़त ह़ासिल करने का न मौक़ा होगा, न उस से कुछ फ़ायदा।

इस विषय को فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ में बयान फ़रमाया। यह विषय सूरः फ़ज्र (आयत नं० 23) की आयते करीमा وَجِایْٓءَ یَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ یَوْمَئِذٍ یَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى में भी बयान फ़रमाया है।

(उस दिन जहन्नम को लाया जाएगा उस दिन इन्सान नसीह़त ह़ासिल करेगा और उस दिन नसीह़त ह़ासिल करना बेकार होगा यानी अब इसका फ़ायदा कुछ नहीं।

तौह़ीद पर जमे रहने का फ़ायदा-

चौथी आयत में इर्शाद फ़रमाया कि अपने उस इ़ल्म और यक़ीन पर जमे रहें कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं और अपने गुनाहों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहें। इस में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ख़िताब है और आप के ज़रिये दूसरे अहले ईमान को भी, ख़िलाफ़े शान नुबूव्वत जो भी हो गया उसे لِذَنْۢبِكَ फ़रमाया। जैसा कि ह़क़ीक़ी गुनाह अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम से नहीं हो सकता।

'साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' लिखते हैं कि امر بالاستغفار مع انه مغفور له ليستن به امته (यानी आप को

इस्तिग़्फ़ार का हुक्म दिया गया, हालांकि आप (सल्ल०) का सब कुछ बख़्शा जा चुका है, ताकि उम्मत आप की पैरवी करे) आप ने फ़रमाया कि बेशक मेरे दिल पर मैल सा आ जाता है और बेशक मैं अल्लाह से रोज़ाना सौ बार इस्तिग़्फ़ार करता हूँ और बाज़ रिवायात में है कि आप (सल्ल०) हर मजलिस में सौ मर्तबः इस्तिग़्फ़ार फ़रमाते थे।

'साहिबे मुआलिमुल् तन्ज़ील' मज़ीद लिखते हैं:-

هذااكرام من الله تعالىٰ لهذه الامة حيث امر بينهم ان يستغفر لذنوبهم وهو الشفيع المجاب فيه

(यह अल्लाह तआला की तरफ़ से इस उम्मत का इक्राम (Respect) है कि इसके नबी को हुक्म फ़रमाया कि उनके गुनाहों के लिए इस्तिग़्फ़ार करें। आप (सल्ल०) को अल्लाह ने शफ़ाअत करने वाला भी बनाया और शफ़ाअत कुबूल करने का वादा भी फ़रमाया। **(मुआलिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 183 भाग 4)**

मुफ़स्सिरीन ने इस के बहुत से मतलब बयान किये हैं (और अल्लाह तुम्हारे चलने फिरने और रहने सहने की ख़बर रखता है।)

यह तर्जुमः मुफ़स्सिर इब्ने जरीर के क़ौल के मुताबिक़ है जिसे 'अल्लामा बग़्वी मुआलिमुल् तन्ज़ील' में नक़्ल किया है और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि مُتَقَلَّبَكُمْ से दुनियावी आमाल में मशगूल (Busy) रहना और इस में चलना फिरना है और مَثْوٰىكُمْ से हर एक का आख़िरत का ठिकाना है और हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) ने फ़रमाया है कि مُتَقَلَّبَكُمْ से इलहामात की तरफ़ मुन्तक़िल होना और مَثْوٰىكُمْ से ज़मीन में ठहरना मुराद है

इब्ने कैसान से नक़्ल किया है कि مُتَقَلَّبَكُمْ से लेटते वक़्त पल्टियाँ खाना और مَثْوٰىكُمْ से क़ब्रों में ठहरना मुराद है। **(मुआलिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 183 भाग 2)**

20-24 وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰي قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝

मुनाफ़िक़ीन की बद्हाली

इन आयात में अहले ईमान का शौक़-ए-जिहाद और मुनाफ़िक़ीन को जिहाद का हुक्म सुनकर घबराहट और परेशानी में पड़ने का ज़िक्र फ़रमाया है। इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग ईमान वाले हैं वह कहते हैं कोई नई सूरः क्यों नाज़िल न हुई? यह नये अहकाम के नाज़िल होने और उन पर अमल करने के शौक़ में कह देते थे।

जब कोई भी सूरत नाज़िल होती तो ईमान वाले ख़ुश हो जाते थे, लेकिन जो मुनाफ़िक़ीन थे वह नुज़ूले

अह़काम से डरते रहते थे ख़ासतौर से जब किसी सूरत में क़िताल का हुक्म नाज़िल होता तो बस उन का बुरा ह़ाल हो जाता था, उनके दिलों में मर्ज़ यानी निफ़ाक़ था, न सच्चे दिल से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला का रसूल मानते थे और न क़ुर्आन को मानते थे, न क़ियामत का यक़ीन रखते थे लिहाज़ा जिहाद वाली सूरः का विषय सुनकर घबरा उठते थे और उन का असर उनके चेहरों से मालूम हो जाता था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मजबूरन नज़रों से देखते थे जैसे किसी पर मौत का नशा तारी हो जाए। यह लोग समझते थे अब मजबूरन जिहाद में जाना ही पड़ेगा, दिल चाहता नहीं लेकिन शरीक होना ही है, बद्‌दिली की शिरकत तो मुसीबत है और अगर मैदाने जिहाद में क़त्ल किये जाते तो यह उस से बड़ी बात होती। इसी को फ़रमाया فَاَوْلٰى لَهُمْ कि जल्द ही उन की कमबख़्ती आने वाली है।

'साहि़बे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' (रह़०) लिखते हैं اولیٰ لک ای ولیک وقاربک ما تکره

(यह 'औला लहुम' का एक मतलब है। इस सूरत में ताअ़त व क़ौल-ए-मअ़रूफ़ अ़लैहि़दा जमा होगा और एक सूरत यह है कि औला लहुम मुब्तदार हो और ताअ़त उसकी ख़बर होगी कमा ज़िक्र अल् बग्वी)

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ

यानी मुनाफ़िक़ीन को चाहिए कि जब अल्लाह तआ़ला का कोई हुक्म नाज़िल हो तो तंग दिल होने के बजाय यूँ कहें कि हमारा काम तो फ़रमाँबरदारी करना और अच्छी बात कहना यानी दिल और ज़बान से तस्लीम करना है।

واحسن، ثم قال وقیل هو متصل بما قبله واللام بمعنی الباء فاولیٰ بهم طاعة الله ورسوله و
وقول معروف بالاجابة وهذا قول ابن عباس فی روایة عطاء

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ

फिर जब मज़बूती के साथ हुक्म आ गया यानी जिहाद करने का हुक्म हो गया तो उस वक़्त यह लोग अपने दावा-ए-ईमान और दावा फ़रमाँबरदारी में सच्चे साबित होते तो यह उन के लिए बेहतर था।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ

(सो क्या यह सूरतेह़ाल पेश आने वाली है कि अगर तुम वाली बन जाओ तो ज़मीन में फ़साद करो और आपस में क़राबत के तअ़ल्लुक़ात को तोड़ दो।)

'साहि़बे रुहुल मआ़नी' लिखते हैं कि यह मुनाफ़िक़ीन से कहा जा रहा है और मतलब यह है कि तुम्हारे जो ह़ालात मालूम हैं यानी दुनिया की लालच करना, जिहाद की बात से घबराना और जिहाद से कत्राना इस बात को जानने के बाद क्या कोई शख़्स तुम से सवाल कर सकता है कि अगर तुम आ़म लोगों के अगुवा बना दिये जाओ यानी सत्ता दे दी जाए तो तुम ज़मीन में फ़साद करोगे और रिश्तेदारियों को काट कर रख दोगे।

यानी तुम्हारा यह फ़साद इतना आगे बढ़ेगा कि तुम्हें रिश्तेदारियों की पासदारी भी न रहेगी और आपस के तअ़ल्लुक़ात को ख़त्म कर डालोगे यानी तुम से सवाल किया जा सकता है और सवाल करने वाले का

यह सवाल करना दुरुस्त है।

قال صاحب الروح : فالمعنى انكم لما عهد منكم من الاحوال الدالة على الحرص
على الدنيا حيث امرتم بالجهاد الذى هو وسيلة الى ثواب الله تعالى العظيم
فكرهتموه وظهر عليكم ما ظهر احق بأن يقول لكم كل من ذاقكم وعرف حالكم
يا هؤلاء ما ترون هل يتوقع منكم ان توليتم ان تفسدوا فى الارض الخ -

यह तर्जुमः और तफ़्सीर उस सूरत में है जबकि تَوَلَّيْتُمْ का अनुवाद हो। 'वाली' (संरक्षक) और सत्ताधारी होने का लिया जाए और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसका तर्जुमः اَعْرَضْتُمْ लिया है और मतलब यह लिखा है कि अगर तुम जिहाद से किनाराकश रहो तो तुम को यह सन्देह भी होना चाहिए कि तुम दुनिया में फ़साद मचाओगे और आपस में रिश्तेदारी तोड़ोगे यानी अगर जिहाद को छोड़ दिया जाए तो फ़सादियों का ग़ल्बा (प्रभुत्व) हो जाएगा और कोई इन्तिज़ाम बाक़ी न रहेगा, जिस में तमाम मस्लहतों की रिआयत हो और ऐसा इन्तिज़ाम न होने की वजह से फ़साद होगा और हुक़ूक़ ज़ाया होंगे।

फिर फ़रमाया اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ

(यह वह लोग हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने रह़मत से दूर फ़रमा दिया सो उन्हें बहरा कर दिया और उन की आँखों को अन्धा कर दिया, इसलिए उन से क़ुबूले ह़क़ की और राहे ह़क़ पर चलने की कोई उम्मीद न की जाए।

तदब्बुर-ए-क़ुर्आन की अहमियत-

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ (क्या यह लोग क़ुर्आन में ग़ौर नहीं करते) اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا (या इनके दिलों पर ताले हैं) इस में मुनाफ़िक़ों के ह़ाल का बयान है। मतलब यह है कि इन्हें क़ुर्आन में तदब्बुर (ग़ौर फ़िक्र) करना चाहिए था। क़ुर्आन का अर्थ और दअ़वते ह़क़ के बारे में ग़ौर करते तो न तो मुनाफ़िक़ होते और न ऐसी ह़रकतें करते जो उन से होती रही हैं, उन के तदब्बुर (चिन्तन) करने का अन्दाज़ यह है कि जैसे उन के दिलों पर ताले पड़े हुए हैं।

قال صاحب الروح : واضافة الاقفال اليها للدلالة على انها اقفال مخصوصة
بها مناسبة لها غير مجانسة لسائر الاقفال المعهودة -

25-28 اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَاَمْلٰى لَهُمْ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝
فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ
وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इन आयात में भी मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है। उन से

जो मुख़ालिफ़ाना (विरोधी) और बाग़ियाना ह़रकतें ज़ाहिर हुईं उनकी वजह से उनके लिए दअ़्व-ए-इस्लाम पर बाक़ी रहने का भी कोई रास्ता न रहा।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस से अहले किताब मुराद हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को आपकी उन ख़ूबियों को देखकर पहचान लिया जो अपनी किताबों में पाते थे, फिर भी कुफ़्र पर जमे रहे इस को ارْتَدُّوا عَلٰى اَدْبَارِهِمْ से फ़रमाया।

क्योंकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पहले दावा किया करते थे कि हम ज़रूर मानेंगे। इस दावे के मुताबिक़ जो कुछ करना था उस से फिर गये।) आयात का नुज़ूल जिन लोगों के बारे में भी हुआ, शब्द हर तरह़ के बेदीनों को शामिल है। इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जो लोग पीठ फेर कर दीने ह़क़ से फिर गये, ह़ालांकि उन पर हिदायत स्पष्ट हो गई थी, शैतान ने उनको उस ने कुफ़्र और इरतिदाद को और बुरे आ़माल को उन के सामने अच्छा कर के पेश किया, ह़क़ और ह़क़ीक़त को जानते हुए दुनिया की ज़ाहिरी ज़ीनत को उन्होंने तर्जीह (वरीयता) दी। शैतान ने मज़ीद यह किया कि उन को यह बता दिया कि देखो कि अभी दुनिया की ज़ाहिरी ज़ीनत को उन्होंने तर्जीह दी।

शैतान ने उन को यह बताया कि देखो! अभी दुनिया में तुम्हें बहुत रहना है और ज़्यादा दिन जीना है, इस्लाम क़ुबूल कर के यह लम्बी ज़िन्दगी आराम से कैसे गुज़ारोगे? देखो! जो लोग इस्लाम क़ुबूल कर लेते हैं कितनी तक्लीफ़ों में पड़ जाते हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ

इस में अ़ल्लामा क़ुर्तुबी (रह़०) ने ذٰلِكَ का मुशारा इलैहि بِاَنَّهُمْ को क़रार दिया है और मतलब यह बताया है कि शैतान का इन्हें लम्बी उ़म्र वाली बातें समझाना इस वजह से है कि इन्होंने यानी मुनाफ़िक़ों और यहूदियों ने मुश्रिकीन से कहा जिन को अल्लाह के नाज़िल किये हुए कलाम पर एतिराज़ है कि हम बाज़ चीज़ों में तुम्हारी फ़रमाँबरदारी कर लेंगे यानी मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त में (जैसे) आप से दुश्मनी रखने में, जिहाद में शिरकत न करने में और दीन-ए-इस्लाम को कमज़ोर करने में हम तुम्हारी बात मान लेंगे। तुम्हारी सब बातों की फ़रमाँबरदारी का वादा नहीं करते यह लोग काफ़िर तो पहले ही से थे मज़ीद इन्कार का एलान भी कर दिया, इसलिए शैतान को उन्हें ढ़ील देने और कुफ़्र में आगे बढ़ाने का मौक़ा मिल गया। **(तफ़्सीर क़ुर्तुबी पेज नं० 250 भाग 16)**

मुआ़लिमुल् तन्ज़ील में यह भी तफ़्सीर लिखी है, लेकिन ذٰلِكَ का मुशारा इलैहि मुतअ़य्यन नहीं किया। मुनाफ़िक़ीन ने यहूद लीडरों से कहा कि हम अनुसरण न करने को ज़ाहिर करने के बारे में तुम्हारा हुक्म नहीं मानेंगे, क्योंकि वह हमारी मस्लह़त के ख़िलाफ़ है और अनुसरण न करने का जो हुक्म देते हो हम उस में तुम्हारी बात मानेंगे क्योंकि हम इसमें तुम्हारे साथ ही हैं।

मौत के वक़्त काफ़िर की बद्ह़ाली

फिर फ़रमाया فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ इस में मुनाफ़िक़ीन की मौत के वक़्त की बद्ह़ाली का बयान है।

मतलब यह है कि अगर दुनिया में उन को अ़ज़ाब न हुआ तो यह न समझें कि वह अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) हो गये, हर काफ़िर को अ़ज़ाब होना ही है जो मौत के वक़्त से ही शुरु हो जाता है।

इर्शाद फ़रमाया कि उन मुनाफ़िक़ीन का क्या ह़ाल होगा जब फ़रिश्ते उन की रुह़ क़ब्ज़ कर रहे होंगे और उन के चेहरों और पीठों पर मार रहे होंगे।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि दुनिया में यह लोग जिहाद से बच रहे हैं, इन का यह बचाव कितने दिन चलेगा बिल्आख़िर मरेंगे और मौत के वक़्त से ही उन की पिटाई शुरु हो जाएगी।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जो कोई भी शख़्स गुनाहगारी की ह़ालत में मरता है, फ़रिश्ते उसकी मौत के वक़्त उस के चेहरे पर और पिछले ह़िस्से पर मारते रहते हैं, इस मारपीट को ह़ाज़िरीन मह़सूस नहीं करते, मगर ऐसा होता ज़रूर है जैसा कि बरज़ख़ के ह़ालात मरने वाले पर गुज़रते हैं और देखने वालों को नज़र नहीं आते।

सूरः अन्फ़ाल (**आयत नं० 50, 51**) में फ़रमाया हैः-

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۙ الْمَلَـٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَـٰرَهُمْ وَذُوقُوا۟

عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّـٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

(और अगर आप देखें जब कि फ़रिश्ते काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते हुए उन के मुँहों पर और उन की पुश्तों पर मारते हैं और यूँ कहते हैं कि जलने का अ़ज़ाब चख लो। यह उन आ़माल की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे।)

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا (उन की यह सज़ा इसलिए है कि उन्होंने उस चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह की नाराज़गी का ज़रिया है, उसकी रज़ामन्दी को अच्छा न जाना। सो अल्लाह ने उनके आ़माल बेकार कर दिये) उन्होंने कुफ़्र को अख़्तियार किया (जो अल्लाह की नाराज़गी का ज़रिया है) और ईमान क़ुबूल न किया (जो अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का ज़रिया है) अल्लाह को राज़ी करने वाले अ़मल से उन को नफ़रत और कराहत थी, उन को मौत के वक़्त यह सज़ा मिलेगी (और इस के बाद भी बराबर अ़ज़ाब है) और उन्होंने दुनिया में जो अ़मल ऐसा किया था जिस पर सवाब दिया जा सके उन आ़माल को भी अल्लाह ने बेकार कर दिया यानी आख़िरत में उन आ़माल का कोई फ़ायदा न पहुँचेगा।

आयत नं० 29 से 38 तक

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ
فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا
وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا
وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ ۖ وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ
وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

अनुवाद-

(29) क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कीनों (कपट) को, ज़ाहिर नहीं करेगा (30) और अगर 'हम' चाहते तो तुम्हें उन लोगों को दिखा भी देते, फिर तुम उन्हें उनकी सूरत ही से पहचान लेते, और तुम उन्हें उनकी बात-चीत से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है। (31) और 'हम' ज़रूर तुम्हारी आज़माइश करेंगे, यहाँ तक कि 'हम' उनको जान लें जो जिहाद करने वाले और सब्र करने वाले हैं, और तुम्हारे ह़ालात की जांच कर लेंगे। (32) जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह की राह से रोका, और रसूलों का विरोध किया, इसके बाद कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी, वे अल्लाह का कुछ भी नुक़सान पहुँचाने वाले नहीं, और 'वह' उनका किया कराया अकारथ कर देगा। (33) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुक्म पर चलो, और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो, और अपने कामों को अकारथ न करो। (34) जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, और इन्कार करने वाले ही रह कर मर गये, तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा। (35) तो तुम हिम्मत न हारो और सुलह़ के लिए न बुलाओ और तुम्हारी ही जीत होगी, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और 'वह' तुम्हारे कामों को हरगिज़ अकारथ न करेगा। (36) दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान लाओ, और परहेज़गारी करते रहो, तो 'वह' तुम्हें तुम्हारा बदला देगा, और तुम से तुम्हारा माल न माँगेगा। (37) अगर 'वह' तुमसे तुम्हारा माल मांगे और तुमको तंग करे, तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और 'वह' तुम्हारे खोट को निकाल बाहर कर देगा। (38) ऐ लोगो! जब अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाए जाते हो, तो तुममें से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो कंजूसी करने लग जाते हैं, और जो कंजूसी करता है वह वास्तव में अपने आप से कंजूसी करता है और अल्लाह तो ग़नी (निस्पृह) है और तुम मोहताज हो, और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को ले आएगा; फिर वह तुम जैसे न होंगे।

आयत नं० 29 से 38 तक की व्याख्या

29-31 أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ۝

मुनाफ़िक़ीन के दिलों का मर्ज़

जो लोग मुनाफ़िक़ थे उन्हें इस्लाम और मुसलमानों से दुश्मनी थी, ऊपर से दोस्त बने हुए थे, मगर अन्दर से दुश्मन थे। इस दुश्मनी का किसी न किसी तरह़ इज़्हार होता रहता था, लेकिन उन का दावा यही था कि हम मुसलमान हैं। यह लोग क़समें खा-खाकर मुसलमानों से कहते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं और तुम में से हैं और यूँ समझते थे कि हमारा अन्दुरुनी (Internal) मामला छुपा रहेगा और इसी तरह़ अपने कुफ़्र को छुपाकर मुसलमानों के साथ चलते रहेंगे और उन से जो मुनाफ़ेअ़ हैं ह़ासिल करते रहेंगे।

यह उन का ख़याल था, मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ को छुपाता है और यूँ समझता है कि मैं बड़ा होशियार और चालाक हूँ। अल्लाह तआ़ला ने बहुत दिनों तक उन लोगों की पहचान नहीं कराई। हाँ, उनके ह़ालात और आ़माल बयान फ़रमा दिये।

सूरः बराअत में उन के तफ़्सीली ह़ालात बयान फ़रमाये हैं, इसीलिए इस सूरः का नाम فاضحه (यानी रुस्वा करने वाली भी है। बाज़ दूसरी सूरतों में भी उन की ह़रकतें और उन के आ़माल बयान फ़रमाये हैं।

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ

(और अगर हम चाहें आप को स्पष्ट तौर पर उन मुनाफ़िक़ीन में से हर एक की अलग-अलग पहचान करा दें (मगर इसकी ज़रूरत नहीं है) आप उनके रंग-ढंग से उन्हें पहचान लेंगे, उन का लब व लहजा और बात करने का ढंग बता देगा कि यह मुनाफ़िक़ हैं अन्दर से मोमिन नहीं हैं, क्योंकि मतलबी का मेल-जोल चाल का ढंग अलग होता है बिलावजह क़समें खाना रुक-रुक कर बात करना सोचकर जवाब देना ताकि उस की बद् अ़क़ीदगी का पता न चले। यह मुनाफ़िक़ीन के ढंग होते हैं। एक ज़माने तक तो ऐसा ही रहा फिर एक दिन वह आया कि यह लोग सख़्ती और ज़िल्लत के साथ मस्जिदे नबवी (सल्ल०) से निकाल दिये गये।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ

(और अल्लाह तुम्हारे आ़माल को जानता है) उसे ईमान वाले के इख़्लास का, निफ़ाक़ वालों की मुनाफ़िक़त और मक्र व फ़रेब का इ़ल्म है। मुनाफ़िक़ीन यह न समझें हम मुसलमानों से अपनी मुनाफ़िक़त को छुपा कर अपने इरादों में कामियाब हो जाएँगे, अगर मुनाफ़िक़ीन मुख़्लिसीन का पता न चला तो अल्लाह तआ़ला को तो सब का इ़ल्म है, उस के अ़ज़ाब और बदले से कैसे सन्तुष्ट हो गये?

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ

यानी शरीअ़त के अ़ामाल जैसे जिहाद आदि के जो अहकाम लागू किये जाते हैं उन के ज़रिये तुम्हारी आज़्माईश की जाती है। हम ज़रूर तुम्हारी आज़्माईश करेंगे, ताकि मुख़्लिस (निः स्वार्थ) मुजाहिदीन और सब्र करने वालों की पहचान हो जाए وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ (और ताकि हम तुम्हारे हालात को जाँच लें।)

32-35

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَاقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا
تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝

काफ़िर के अ़ामाल बर्बाद कर दिये जाएँगे

ऊपर चार आयतों का तर्जुमः किया गया है। पहली आयत में फ़रमाया कि जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) की और हिदायत के आने के बाद उस से फिर गये, ऐसे लोग अल्लाह को कुछ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते।

(यह लोग अपनी ही जानों को नुक़्सान पहुँचाएँगे और उन्हें क़ियामत के दिन बर्बादी का सामना होगा) दुनिया में उन्होंने जो अ़मल ऐसा किया था जिस पर अल्लाह की तरफ़ से अहले ईमान को सवाब मिलता है, क़ियामत के दिन काफ़िरों को उसका कुछ भी सवाब न मिलेगा, यह अ़ामाल बिल्कुल बेकार हो जाएँगे।

दूसरी आयत में यह हुक्म फ़रमाया कि अल्लाह की और उस के रसूल की पैरवी करो और अपने अ़ामाल को ख़राब न करो, नेक अ़मल ईमान में शक करने, कुफ़्र व शिर्क अख़्तियार करने से और बाज़ बड़े गुनाहों की वजह से बातिल (निरस्त) हो जाते हैं यानी उन का सवाब ख़त्म हो जाता है।

'साहिबे रुहुल् मआ़नी' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि **لا تبطلوا بالرياء والسمعة** कि दिखावे और शोहरत की लालच के ज़रिये अपने अ़ामाल को बातिल न करो। आयत अ़ाम है इस में हर वह चीज़ दाख़िल है जिस से अ़ामाल बातिल हो जाते हैं।

"हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने बयान फ़रमाया कि हम यानी सहाबा-ए-किराम यह समझते थे कि हर नेकी ज़रूर मक़्बूल होती है"।

जब आयते करीमा اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ नाज़िल हुई तो हम ने कहा कि क्या ऐसा भी है जो हमारे अ़ामाल को बातिल कर देगी, फिर हम ने समझ लिया कि इस से बड़े-बड़े गुनाह और फ़ुहश काम मुराद हैं (यानी उन से नेक अ़ामाल बातिल हो सकते हैं) इस के बाद जब हम किसी को देखते थे कि कोई गुनाह या फ़ुहश काम उस से हो गया तो हम कहते थे कि यह शख़्स तो बर्बाद हो गया यहाँ तक कि आयत اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ (सूरः निसाः 48) नाज़िल हो गई, तो इस के बाद हमारा तरीक़ा यह हुआ कि जब कोई शख़्स बड़ा गुनाह कर लेता था तो उसके बारे में पकड़ का ख़ौफ़

रखते थे (यानी उस का पकड़ यक़ीनी नहीं जानते थे) और जिस से बड़ा गुनाह हो जाता, उस के बारे में बख़्शिश की उम्मीद रखते थे। **(साहिबे रुहुल् मआ़नी पेज नं० 79 भाग 26)**

तीसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया कि जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर कुफ़्र की हालत में मर गये, अल्लाह तआ़ला हरगिज़ उन की मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाएगा। हाँ, अगर किसी काफ़िर ने इस्लाम की मुख़ालिफ़त (विरोध) की और अल्लाह के दीन से रोकता रहा, फिर तौबः कर ली यानी इस्लाम कुबूल कर लिया, फिर इस्लाम की हालत में ही मर गया तो उसके कुफ़्र के ज़माने का सब कुछ माफ़ हो जाएगा। इसी बात को बयान करते हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि०) को ख़िताब करते हुए फ़रमायाः-

اما علمت یا عمرو ان الاسلام یھدم ما کان قبلہ

(ऐ अ़म्र! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इस्लाम अपने से पहले के तमाम गुनाहों को (जो ज़माने कुफ़्र मे किये थे ख़त्म कर देता है।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 14 अज़ मुस्लिम)**

नफ़्ली नमाज़ या रोज़ः फ़ासिद होने के बाद-

'हन्फ़िया' का मस्लक यह है कि अगर कोई शख़्स नफ़्ल नमाज़ या नफ़्ल रोज़ः शुरु कर के तोड़ दे तो उसकी क़ज़ा वाजिब है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 14 मुस्लिम)**

इस के दलायल भी लिखे हैं, उन में से ऊपर की आयत को दलील में पेश किया है कि अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने आ़माल को बातिल न करो। जब किसी ने एक रकअ़त पढ़ ली या घंटा, दो घंटा रोज़ः रख लिया, फिर तोड़ दिया तो उस से वह अ़िबादत बीच में रह गई जिस को शुरु किया था।

पूरी अ़िबादत कर के किसी अ़मल को तोड़ दे या पूरी करने से पहले ही बातिल कर दे दोनों तरह़ की मनाही पर यह आयत दलील है।

शेख़ इब्ने हुमाम फ़त्हुल् क़दीर में लिखते हैंः-

قال تعالی ولا تبطلوا اعمالکم وھو اعم من ابطالھا قبل اتمامھا بالافساد او بعدہ بفعل ما یحبطہ ونحوہ

कमज़ोर न बनो-

चौथी आयत में फ़रमाया فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ

(ऐ मुसलमानों! तुम हिम्मत मत हारो और अपने दुश्मनों को सुलह़ की तरफ़ मत बुलाओ।)

इस में यह इर्शाद फ़रमाया कि जब काफ़िरों से जंग ठन जाए तो तुम जंग पर आमादह रहो और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में कोई कमज़ोरी न दिखाओ। कमज़ोर पड़ जाने में यह भी दाख़िल है कि ख़ुद से दुश्मनों को सुलह़ की दअ़वत दी जाए। अगर दुश्मन सुलह़ (Compromise) की बात उठाएँ तो बाज़ ह़ालात में सुलह़ कर लेना जायज़ है, जिस में इस्लाम और मुसलमानों का नफ़ा हो।

जैसा कि सूरः अन्फ़ाल **(आयत नं० 61)** में फ़रमायाः-

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ मज़ीद सूरः अन्फ़ाल की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

बुलन्द रहोगे अगर मोमिन हो-

फिर फ़रमाया وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ यहाँ सिर्फ़ यही शब्द हैं और सूरः आले इमरान (आयत नं० 139) में फ़रमाया है وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

इस में यह वादा फ़रमाया कि तुम ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो, इसलिए ईमान तक़्वा जब फ़िक्रे आख़िरत अमानतदारी फ़र्ज़ को निभाना व वाजिबात गुनाहों को छोड़ने की सिफ़ात रहेगी तो मुसलमान ही प्रभावी रहेंगे। अगर ईमानी ताक़त खो बैठेंगे तो फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से दुश्मनों पर ग़ल्बा पाने का वादा नहीं। बाज़ हालात में संख्या की कमी की वजह से जो क़िताल की इजाज़त है वह इस के ख़िलाफ़ नहीं। इस बात के समझने के लिए आयते करीमा (सूरः अन्फ़ालः 66) اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

फिर फ़रमाया وَاللّٰهُ مَعَكُمْ और अल्लाह तुम्हारे साथ है) लिहाज़ा जमकर पूरी कुव्वत के साथ दुश्मनों से मुक़ाबिला करें और अल्लाह पर भरोसा करें और इख़्लास के साथ अल्लाह के दीन की मदद करने की नियत से क़िताल करें।

इसी सूरः के पहले रुकूअ़ में गुज़र चुका हैः-

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ (ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की यानी उस के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा।)

फिर फ़रमाया وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ (और वह तुम्हारे आमाल में हरगिज़ कमी न करेगा।)

वह हर नेक अ़मल सालेह़ का सवाब देगा बशर्ते कि उसे ख़राब न कर दिया हो। अल्लाह तआला ने नेक अ़मल पर वादा फ़रमाया है कि एक अ़मल का सवाब कम से कम दस गुना दिया जाएगा और इस से ज़्यादा जितना चाहे अपने फ़ज़्ल व रहमत से अ़ता फ़रमाएगा। فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا

قال القرطبی فی تفسیرہ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ای لن ینقصکم، عن ابن عباس
وغیرہ ومنه الموتور الذی قتل له قتیل فلم یدرك بدمه، تقول منه وترہ یترہ
وترا وترة" ومنه قوله علیه السلام "من فاتته صلاة العصر فکانما وتر اهله
وماله" ای ذهب بهما -

36-38 اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ۝

दुनियावी ज़िन्दगी

पिछली आयत में मोमिनीन से ख़िताब था कि तुम सुस्त न बनो और काफ़िरों से सुलह़ (Compromise)

करने की तरफ़ न झुको, अल्लाह तुम्हारे साथ है वह तुम्हारे आ़माल को बर्बाद न फ़रमाएगा। इन आयात में मुसलमानों को तम्बीह फ़रमाई गई हैं, जिसमें कुछ आ़म हालात और कुछ फ़ी सबीलिल्लाह माल ख़र्च करने से सम्बन्धित हैं। पहले तो यह फ़रमाया कि दुनिया खेल है, बहलाने वाली चीज़ है।

सूरः अ़न्कबूत (**आयत नं० 64**) में भी यह विषय है, वहाँ यह भी फ़रमाया हैः-

وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ (और बिलाशुब्हा आख़िरत वाला घर ही ज़िन्दगी है) खेल-कूद से असली मक़्सद हासिल नहीं होते, असली मक़्सद यानी हमेशा नेअ़मतों, ख़ुशियों और लज़्ज़तों में रहना मौत के बाद आख़िरत ही में नसीब होगा उसी के लिए कोशिश करना लाज़िम है, इसलिए ऐसे आ़माल करना चाहिए जो वहाँ काम आएँ।

फिर फ़रमाया وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ और अगर तुम ईमान पर जमे रहे और तक़्वा अख़्तियार किया (जिस में फ़रायज़ और वाजिबात की अदायगी और गुनाहों का छोड़ना सब दाख़िल हैं तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आ़माल का बदला अ़ता फ़रमाएगा।

'कुर्तुबी' ने इस के कई अर्थ लिखे हैं। पहला यह कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि पूरा माल ज़कात में दे दो और दूसरा मतलब यह है कि तुम्हारे माल को अपनी राह में ख़र्च करने का हुक्म देता है, इस का सवाब तुम्हीं को मिल जाएगा।

और एक मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो किसी जगह माल ख़र्च करने का हुक्म होता है तो वह तुम्हारे माल का सवाल नहीं है, वह तो उसी का माल है उसी ने तुम को अ़ता फ़रमाया और वही हक़ीक़ी मालिक है, अपनी रज़ा के लिए जो माल भी ख़र्च करने का हुक्म दे उस पर राज़ी रहना चाहिए क्योंकि उस ने अपना माल तलब फ़रमाया है।

إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ

अगर वह तुम से तुम्हारे माल तलब करे और आख़िरी हद तक तलब फ़रमाये तो तुम कन्जूसी करोगे और अल्लाह तआ़ला तुम्हारी नागवारी को ज़ाहिर फ़रमा देगा।

(यानी तुम ऐसी सूरत में माल ख़र्च न करोगे और ख़र्च करने का हुक्म होते हुए ख़र्च न करने से तुम्हारे अन्दर की नागवारी ज़ाहिर हो जाएगी और यह कि हुक्म के मुताबिक़ अ़मल करने पर दिल से राज़ी नहीं हो।

(मुसलमानों का यह हाल है कि ज़कात की अदायगी के तौर पर (1/40) ख़र्च करने का हुक्म हुआ है उसे ख़र्च करने से भी जान चुराते हैं। दीनदारी के दावेदार भी पूरा हिसाब कर के पूरी ज़कात देने को तैयार नहीं। अगर पूरा माल ख़र्च करने का हुक्म होता तो क्या हाल होता, ख़ूब समझ लिया जाए) इस विषय को बाद वाली आयत में बयान फ़रमाया। इर्शाद फ़रमायाः-

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ وَمَنْ يَبْخَلْ

(ख़बरदार! तुम ऐसे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने की दअ़वत दी जाती है तो तुम में से बाज़ वह हैं जो कन्जूसी करते हैं।)

وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ (और जो शख़्स कन्जूसी करेगा कन्जूस बनेगा वह खुद अपने ही से कन्जूसी करता है यानी अपनी ही जान को ख़र्च करने के फ़ायदे से महरूम रखता है, ख़र्च न करने का नुक़्सान खुद उसी को पहुँचता है।

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ (और अल्लाह ग़नी है और तुम मुह़ताज हो।)

अल्लाह तआ़ला तुम्हें अ़ता फ़रमाता है उसे न ह़ाजत है न ज़रूरत। वह बेनियाज़ है तुम सब उस के मुह़ताज हो, इस ग़लतफ़हमी में कोई न रहे कि शरई क़ानून के मुताबिक़ जो माल ख़र्च करने का हुक्म है अल्लाह तआ़ला का इसमें कोई नफ़ा है। **(अलू अ़याज़ बिल्लाह)**

दीन से फिरने पर दूसरी क़ौम

आख़िर में फ़रमाया وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

(और अगर तुम दीने इस्लाम की तरफ़ से बेरुख़ी अख़्तियार करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को ले आएगा।)

ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ (फिर वह तुम्हारे जैसे न होंगे)

इस में उन मुसलमानों को जो नुज़ूले आयत के वक़्त मौजूद थे ख़ासतौर पर और तमाम बाद में आने वाले मुसलमानों को आ़मतौर पर तम्बीह फ़रमा दी कि कोई शख़्स यह न समझ ले कि दीने इस्लाम की मदद और उस के आ़माल, माल ख़र्च करना और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह वग़ैरह मुझ पर या मेरी क़ौम पर (Depend) है। अल्लाह तआ़ला किसी का मोह़ताज नहीं है, वह ख़ालिक़ और मालिक भी है, ग़नी बेनियाज़ भी है, हर चीज़ पर क़ादिर भी है जिस को चाहे जिस काम के लिए इस्तेमाल फ़रमा सकता है।

तब्दील होने वाली क़ौम-

'सुनन तिर्मिज़ी' में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह कौन लोग हैं जिन का अल्लाह तआ़ला ने ज़िक्र फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि अगर हम लोग बेरुख़ी करेंगे तो अल्लाह तआ़ला हमारे बदले उन को हिदायत अ़ता फ़रमाएगा, फिर वह हमारे जैसे न होंगे, उस वक़्त ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) मौजूद थे।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी के मूंढे पर और एक रिवायत में है कि उन की रान पर हाथ मार कर फ़रमाया कि यह शख़्स, इसकी क़ौम और एक रिवायत में है कि यह और इन के अस्ह़ाब। क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर ईमान सुरय्या (सितारों) पर भी लट्का हो तो फ़ारस के बहुत से लोग इस को ह़ासिल कर लेंगे । **(सुनन तिर्मिज़ी अबवाबे तफ़्सीर सूरः मुह़म्मद)**

ग़ैर अ़रब की दीनी ख़िद्मत-

ह़क़ीक़त में ऐसा ही हुआ जब अहले अ़रब को इस्लामी ख़िद्मात की तरफ़ ध्यान न रहा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़ारस के शहरों और बस्तियों से ऐसे लोग पैदा फ़रमाये जिन्होंने ख़ूब बढ़-चढ़ कर उ़लूमे

इस्लामिया की ख़िद्मत की। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) का इल्म और तक़्वा सब को मालूम है, फिर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह०) की सीरत देख लें और 'मक्की बिन इब्राहीम बल्ख़ी' का तर्जुमः 'जो इमाम अबू हनीफ़ा' के शागिर्द थे उनसे इमाम बुख़ारी ने ग्यारह वास्तें से रिवायत की है। 'अबू उ़बैद' 'क़ासिम बिन सल्लाम हरवी' 'नईम बिन हम्माद मरूज़ी' 'इस्हाक़ बिन इब्राहीम मरवज़ी' जुहैर बिन हर्ब, क़ुतैबा बिन सअ़ीद बल्ख़ी, अबू जाफ़र, मुहम्मद बिन मेहरान राज़ी, अबू ज़करिया, यहया बिन मूसा अल् बल्ख़ी, हाफ़िज़ ज़करिया, यहया बल्ख़ी, इमाम अबू ज़रआ़ राज़ी, इमाम अबू हातिम अल् राज़ी, इमाम अबू दाऊद (साहिब अल् सुनन) सुलेमान बिन अशअ़स अल्सिजिस्तानी, साहिबे अल् सुनन इमाम तिर्मिज़ी, अबू ईसा, मुहम्मद बिन ईसा, इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह, मुहम्मद यज़ीद अल्क़ज़वीनी, इब्ने माजा, साहिबे अल् सुनन, इमाम अहमद बिन शुऐब, अल् नसई, इमाम अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर तब्री अल् हाफ़िज़ अल् कबीर मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन ख़ुज़ैमा अल्निसापूरी, अल् हाफ़िज अबू अ़ब्दुल्लाह, मुहम्मद बिन यहया बिन मुन्दह जो फ़ारस के रहने वाले थे।

हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अल् हिजाज (साहिब अल् सहीह) भी नीसापूरी थे, उन को क़शीरी भी कहा जाता है। तहज़ीब अल् अस्मा वल् लुग़ात में लिखा है कि यह क़बीला बनी क़ुशैर की तरफ़ मन्सूब है, जो अ़रब का एक क़बीला था। अगर वतन के एतिबार से देखा जाए तो 'ग़ैर अ़रब' की फ़ेहरिस्त (List) में उन का नाम ज़िक्र किया जा सकता है।

(यह चन्द नाम मुहद्दिसीन किराम के हम ने हाफ़िज़ ज़हबी (रह०) की 'तज़्किरह अल् हुफ़्फ़ाज़' से लिखा है) मज़ीद देखा जाए तो फ़ारस के मुहद्दिसीन की बड़ी तअ़दाद सामने आ जाएगी।

'हाफ़िज़ जलालुद्दीन सियोती' (रह०) ने जो नाम लिखे है उस से भी इन्तेख़ाब (Select) कर लिया जाए। हाफ़िज़ अबुल् क़ासिम तब्रानी साहिबे अल् मुअ़जम और हाफ़िज़ अबू हातिम, मुहम्मद बिन हब्बान अल् बस्ती और इब्ने अल् सना, अबू बक्र दीनौरी और हाफ़िज़ अबू नईम अल्सुबहानी और साहिबे अल् सुनन इमाम बैहक़ी आदि।

यह चन्द मुहद्दिसीन-ए-किराम के नाम हैं जो फ़ारस के रहने वाले थे। दूसरे मुल्कों के मुहद्दिसीन इन के अ़लावा हैं, पश्चिमी देश के लोगों ने जो किताब व सुन्नत की ख़िद्मत की है उन के नाम इस तरह हैं:-

हज़रत इमाम अबू उ़मर दानी, इमाम शातबी, इमाम इब्ने अल् जज़्री के नाम हैं, इसके अ़लावा वह मुफ़स्सिरीन और फ़ुक़्हा-ए-किराम का ज़िक्र बाक़ी है। इसी तरह इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के फ़िक़ः को आगे बढ़ाने वाले तो अहले फ़ारस ही थे जिन्हें 'उ़लमा-ए-मावराउन्न नहर' के नाम से याद किया जाता है।

इस्लाम क़ुबूल करने के बाद तातारियों ने जो इस्लाम की ख़िद्मत अन्जाम दी और तुर्कों ने जो सलीबी जंगें लड़ी हैं उन को भी ज़ेहन में रखना चाहिए।

يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ के उ़मूम में तमाम ग़ैर अ़रब जिसमें भारत की क़ौम भी आ जाएगी। यहाँ से जो ख़िद्मत का काम हुआ ग़ैर मामूली है और आइन्दा की उम्मीदें भी हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बतौर मिसाल फ़ारस का ज़िक्र फ़रमा दिया।

(भाग–48)

सूर–ए–फ़तह

(सूरः नं. 48)

आयत नं० 1 से 14 तक

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝
وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ
الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝
وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ
فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ
مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم
مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ
الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝ وَمَن لَّمْ
يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

अनुवाद-

(1) (ऐ मुहम्मद) 'हमने' आप को फ़त्ह़ (विजय) दी, फ़त्ह़ भी साफ़ खुली हुई; (2) ताकि अल्लाह आप के अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दे, और आप पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दे और आप को सीधी राह पर चलाए; (3) और अल्लाह आप की ज़बर्दस्त मदद फ़रमाए। (4) 'वही' है जिसने ईमान वालों के दिलों में सकीना (संतोष) उतारी, ताकि उनके ईमान के साथ, उनका ईमान और ज़्यादा हो जाए, और अल्लाह ही की हैं आसमानों और ज़मीन की सभी सेनाएँ और अल्लाह खूब जानने वाला, ह़िकमत वाला है। (5) ताकि 'वह' मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल फ़रमाए, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उसमें हमेशा रहेंगे, और उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे, और यह अल्लाह के यहाँ बड़ी कामियाबी है। (6) और मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्दों, और मुनाफ़िक़ औ़रतों, और मुश्रिक (बहुदेववादी) मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं उन्हीं पर बुरे हादसे हों, और अल्लाह का उन पर ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और 'उसने' उन पर लानत की, और उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (7) और आसमानों और ज़मीन की सब सेनाएँ अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, ह़िक्मत वाला है। (8) 'हमने' आपको गवाही देने वाला, खुशख़बरी सुनाने वाला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है; (9) ताकि तुम लोग अल्लाह और 'उनके' रसूल पर ईमान लाओ, और उनकी मदद करो, और उनका आदर करो और सुबह व शाम उस (अल्लाह) की तस्बीह़ बयान करो।

(10) जो लोग आप से बैअ़त (वचन) करते हैं वे अल्लाह से बैअ़त करते हैं, अल्लाह का हाथ है उनके हाथों पर, फिर जिसने वचन तोड़ा वह अपने वचन तोड़ने का वबाल अपने ही ऊपर लेगा, और जो उस अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है, तो उसे 'वह' बहुत ज़ल्द बड़ा बदला देगा। (11) जो बद्दू (देहाती) पीछे रह गये थे, वे आप से ज़रूर कहेंगे, ''हमको हमारे माल और हमारे घर वालों ने रोक (व्यस्त) रखा था; तो आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ़ कीजिए! यह लोग अपनी ज़बान से वह बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं, कह दीजिए, ''कौन है! जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए कुछ अधिकार रखता हो, अगर तुम को कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे या वह तुम्हें कोई नफ़ा पहुंचाना चाहे? बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है; (12) बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और ईमान वाले अब कभी अपने घर वालों में पलट कर न आ सकेंगे, और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई, और तुमने बुरे गुमान किये, और तबाह होने वालों में हो गये।'' (13) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया, तो ऐसे काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए 'हमने' (भड़कती हुई) आग तैयार कर रखी है। (14) और अल्लाह ही की है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1-7

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝ وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا
إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝
وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ
السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

फ़तेह़ मुबीन का वादा

यह सूरः फ़तूह़ के शुरु की आयात का तर्जुमः है। इस सूरः में फ़तेह़ मुबीन, सुलह़ हुदैबिया और फ़तेह़ ख़ैबर का ज़िक्र है और आख़िर में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन की ख़ूबी बयान करना है। इस सूरः के शुरु का हिस्सा सफ़र में नाज़िल हुआ।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान किया है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) सुलह़ हुदैबिया के बाद वापस मदीना मुनव्वरह के लिए तशरीफ़ ला रहे थे और ह़ज़राते सहाबा (रज़ि०) के दिलों में इस बात का रंज था कि उ़मरह न कर सके, उस वक़्त सूरः अल् फ़त्ह़ नाज़िल हुई।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझ पर एक ऐसी आयत नाज़िल हुई है जो मुझे सारी दुनिया से ज़्यादा महबूब है। जब आप ने إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ पढ़ कर सुनाई तो सहाबा-ए-किराम ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुबारक हो, इस में आप (सल्ल०) के बारे में फ़रमाया कि ऐसा-ऐसा होगा, लेकिन हमारे बारे में क्या होगा यह भी मालूम होना चाहिए। इस पर आयते करीमा لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ नाज़िल हुई।

(अल् बग़वी फ़ी मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 188 भाग 4, बुख़ारी पेज नं० 600 भाग 2)

'हज़रत ज़ैद बिन अस्लम' अपने वालिद (पिता) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) सफ़र में थे, हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रजि०) भी आप के साथ चल रहे थे, एक रोज़ रात के वक़्त ऐसा हुआ कि हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने आप से कुछ सवाल किया, आप (सल्ल०) ने जवाब न दिया, आप ने फिर सवाल किया, आप ने फिर ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, फिर तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ।

हज़रत उ़मर (रजि०) ने बयान किया कि मैंने अपने आप से कहा कि तेरी माँ तुझे गुम करे (परेशानी के वक़्त अहले अ़रब अपने बारे में यह शब्द बोल दिया करते थे) तूने तीन बार सवाल कर के रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तक्लीफ़ में डाला, तीन बार सवाल किया, आप ने जवाब नहीं दिया, यह सोचते हुए मैं जल्दी से अपने ऊँट को ह़रकत देकर सब मुसलमानों से आगे बढ़ गया और मैं इस बात से डरने लगा कि मेरे बारे में क़ुर्आन मजीद की कोई आयत नाज़िल हो जाए। थोड़ी ही देर में एक आवाज़ सुनी, एक शख़्स ज़ोर से पुकार कर कह रहा है कि ऐ उ़मर! रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हो जाओ, मैं डरा कि ह़क़ीक़त में मेरे बारे में क़ुर्आन मजीद की कोई आयत नाज़िल हुई है, मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और आप को सलाम किया कि इस रात में मुझ पर एक ऐसी सूरः नाज़िल हुई है जो मुझे उन सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है, फिर आप ने إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا तिलावत फ़रमाई। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 600, 716)**

सुलह़ हुदैबिया का वाक़िआ़

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़ुरैशे मक्का ने बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ें दी थीं यहाँ तक कि आप (सल्ल०) और आप के सहाबा को हिजरत करने पर मजबूर कर दिया था। ज़ीक़अ़दा सन् 6 हि० में रसूलुल्लाह (सल्ल०) उ़मरह करने के लिए अपने पीछे 'नमीला बिन अ़ब्दुल्लाह लैसी' रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अमीर बनाकर रवाना हो गये।

मदीना मुनव्वरह के रहने वाले और आस-पास के देहात के रहने वालों को भी सफ़र में साथ चलने के लिए फ़रमाया। आप ने उ़मरह का एह़राम बाँध लिया और ह़ज़रात सहाबा (रज़ि०) ने भी, ताकि लोग यह समझ लें कि आप का मक़्सद जंग करना नहीं है, केवल बैतुल्लाह की ज़ियारत करना है। आप अपने साथ हदी (क़ुर्बानी) के जानवर भी ले गये थे (जो हज व उ़मरह में ह़रम मक्का में ज़ब्ह़ किये जाते हैं) जब आप अ़स्फ़हान नामी स्थान पर पहुँचे तो 'बिश्र बिन सुफ़्यान कअ़बी' से मुलाक़ात हुई, उस ने अ़र्ज़

किया या रसूलल्लाह! कुरैशे मक्का को आपकी रवानगी का पता चल गया है वह मक़ामे 'ज़ीतुवा' में जमा हो गये हैं और क़समें खा-खा कर यह अ़हद कर रहे हैं कि आपको मक्का में दाख़िल न होने देंगे और ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) (जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) अपने सवारों को लेकर किराउल् नईम (एक मक़ाम का नाम है) में पहुँच चुके हैं। आप ने यह सुनकर रास्ता बदल दिया और दाहिने हाथ की तरफ़ रवाना हो गये, यह बाक़ायदा रास्ता नहीं था, घाटियाँ थीं जहाँ से गुज़रना पड़ा यहाँ तक कि नर्म ज़मीन में पहुँच गये और मक़ामे हुदैबिया के रास्ते पर पड़ गये।

'हुदैबिया' मक्का और जद्दह के दर्मियान है, ह़रम के हुदूद वहाँ ख़त्म हो जाते हैं (अ़स्फ़हान से मक्का मुअ़ज़्ज़माँ जाते हुए हुदैबिया नहीं पड़ता, लेकिन चूंकि कुरैश के आड़े आ जाने का अन्देशा था, इसलिए आप रास्ता बदल कर हुदैबिया पहुँच गये।)

हुदैबिया पहुँचना-

जब कुरैश के सवारों को पता चला कि आपने रास्ता बदल दिया है तो वापस कुरैश के पास मक्का चले गये। इधर रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने अस्हाब के साथ मक़ामे हुदैबिया में पहुँच गये, वहाँ पहुँचे तो आपकी ऊँटनी बैठ गई। सह़ाबा ने कहा यह तो आगे बढ़ने से इन्कार करने लगी, आप ने फ़रमाया ज़िद्द करना इसकी आ़दत नहीं है, इसे उसी ज़ाते पाक ने रोक दिया जिस ने हाथी वालों को मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया था।

क्योंकि कुरैशे मक्का के आड़े आ जाने और मक्का के दाख़िले में रुकावट डालने का अन्देशा था, इसलिए आप ने फ़रमाया कि अगर आज कुरैश ने मुझ से किसी ऐसी बात का सवाल किया जो सिलह़ रह़मी की बुनियाद पर हो तो इस में उसकी बात मान लूँगा और बाज़ रिवायात में यूँ भी है कि अगर मुझे किसी बात की दअ़वत देंगे जिस में उन चीज़ों का मुताल्बा हो जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इ़ज़्ज़त वाला क़रार दिया है तो उन की बात मान लूँगा।

हुदैबिया में क़याम तो फ़रमा लिया, लेकिन वहाँ पानी बहुत ही कम था। सह़ाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! यहाँ तो पानी नहीं है, न वुज़ू कर सकते हैं और न पीने का इन्तिज़ाम है बस यही थोड़ा सा पानी है जो आपके प्याले में है। आप ने अपना हाथ मुबारक उस प्याले में रख दिया आप की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हो गये।

ह़ज़रत जाबिर (रजि०) ने बयान किया कि हम ने पानी पिया, वुज़ू किया, किसी ने दर्याफ़्त किया कि आप ह़ज़रात की कितनी तअ़दाद थी तो ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) ने कहा कि हम लोग पन्द्रह सौ थे, अगर एक लाख भी होते तो वह पानी सब के लिए काफ़ी हो जाता ।

आप (सल्ल०) के मोअ़जिज़ात

'ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि (आयते करीमा में जो फ़तेह़ का ज़िक्र है आप लोग उस से 'फ़तेह़ मक्का' मुराद लेते हैं और हम 'बैअ़त रिज़वान' को फ़तेह़ मानते थे, जो 'हुदैबिया' के

मौक़े पर हुई। हम तअ़दाद में चौदह सौ या कुछ ज़्यादा थे, हुदैबिया के एक कुवें में थोड़ा सा पानी था हम ने सारा पानी खींच कर इस्तेमाल कर लिया और उस में एक क़तरा भी न छोड़ा।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस का इल्म हुआ तो आप तशरीफ़ लाए और उस कुंवे के किनारे पर बैठ गये, फिर फ़रमाया कि इस में से निकाला हुआ एक डोल पानी लाओ, वह आप की ख़िद्मत में पेश कर दिया गया। आप ने उस में अपना 'लुआ़ब मुबारक' डाल दिया और एक रिवायत में है कि वुज़ू फ़रमाया और कुल्ली की और उस कुंवे में पानी डाला, फिर फ़रमाया इसे कुछ देर छोड़ दो।

कुछ देर के बाद उस से पानी लेना शुरु किया और तमाम ह़ाज़िरीन अपनी सवारियों समेत सैराब (तृप्त) हो गये। चौदह सौ से ऊपर जो लोग थे उन को बाज़ सहाबा ने पन्द्रह सौ बता दिया और बाज़ ने चौदह सौ बता दिया। इस में कोई अन्तर नहीं कि प्याले में हाथ मुबारक रखने से चश्मे जारी हो गये और कुंवें में भी आप ने थूक मुबारक डाल दिया।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने हुदैबिया में क़ियाम फ़रमा लिया तो क़ुरैशे मक्का ने एक के बाद दूसरे 'बुदेल बिन वरक़ा' 'मकरज़ बिन ह़िफ़्ज़' ह़लीस बिन अ़ल्क़मा और उ़रवह बिन मसऊद सक़फ़ी को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में भेजा, आप ने उन लोगों को जवाब दिया कि हम उ़मरह करने के लिए आये हैं लड़ाई लड़ना हमारा मक़्सद नहीं है।

सह़ाबा की मुह़ब्बत-

ह़ज़रत उ़रवह बिन मसऊद ह़ाज़िरे ख़िद्मत हुए तो उन्होंने अ़जीब मन्ज़र देखा। ह़ज़रात सह़ाबा (रज़ि०) की मुह़ब्बत और जांनिसारी देखकर आँखें फटी रह गईं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) वुज़ू फ़रमाते तो जो पानी आप के अंगों से गिरता ह़ज़राते सह़ाबा (रज़ि०) उसे गिरने न देते थे और फ़ौरन ही अपने हाथों में ले लेते थे।

उरवह बिन मसऊद सक़फ़ी ने वापस होकर क़ुरैशे मक्का से कहा कि देखो! मैं कई बार किसरा क़ैसर और नज्जाशी के पास गया हूँ (यह तीनों बादशाह थे) मैंने किसी बादशाह के ऐसे फ़रमाँबरदार नहीं देखे जैसे मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथी हैं, अगर तुम ने जंग की तो यह लोग कभी भी उन्हें तन्हा नहीं छोड़ेंगे। अब देख लो! तुम्हारी क्या राय है?

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब से फ़रमाया कि मक्का जाओ वहाँ क़ुरैश को बता दो कि हम जंग करने के लिए नहीं आए। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने मअ़ज़रत (माफ़ी) पेश कर दी कि क़ुरैश को मालूम है कि मैं उन का कितना बड़ा दुश्मन हूँ और मेरे क़बीले बनी अ़दी में वहाँ ऐसे लोग नहीं हैं जो मेरी ह़िफ़ाज़त कर सकें, मैं आप को राय देता हूँ कि आप 'उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान' (रज़ि०) को भेज दें, क़ुरैश के नज़्दीक वह मुझ से ज़्यादा इ़ज़्ज़तदार हैं।

चुनाँचे आप ने 'ह़ज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान' (रज़ि०) को अबू सुफ़्यान और दूसरे क़ुरैश के पास बतौर दूत भेज दिया, ताकि वह क़ुरैश को बता दें कि आप जंग के इरादे से तशरीफ़ नहीं लाए बल्कि सिर्फ़

बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिए तशरीफ़ लाए हैं।

जब ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने कुरैशे मक्का को पैग़ाम पहुँचा दिया तो उन्होंने जवाब दिया कि हम यह बात मानने को तैयार नहीं कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मक्का में दाख़िल होने की इजाज़त दें। अलूबत्ता तुम चाहो तो तवाफ़ कर सकते हो, उन्होंने जवाब दिया कि मैं अकेला तवाफ़ नहीं कर सकता, रसूलुल्लाह (सल्ल०) तवाफ़ करेंगे तो मैं भी करुँगा। ह़ज़रत उ़स्मान को कुरैशे मक्का ने रोक लिया और उधर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह ख़बर पहुँच गई कि उ़स्मान को क़त्ल कर दिया गया है।

बैअ़त रिज़्वान का वाक़िआ़

जब यह ख़बर पहुँची तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अब हम तो यहाँ से नहीं हटेंगे जब तक कुरैश से जंग न कर ली जाए चूंकि जंग की फ़िज़ा बन गई थी, इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़राते सह़ाबा से बैअ़त लेना शुरु किया और आप के तमाम अस्ह़ाब ने इस बात पर बैअ़त कर ली कि हम जम कर जंग में साथ देंगे और राहे फ़रार अख़्तियार न करेंगे।

ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) चूंकि मक्का गये हुए थे, इसलिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) की तरफ़ से ख़ुद ही बैअ़त कर ली, अपने एक हाथ को दूसरे हाथ से मिलाया और फ़रमाया कि यह बैअ़त उ़स्मान की तरफ़ से है।

(यह बैअ़त एक दरख़्त के नीचे हुई थी जो मक़ामे हुदैबिया में था और इस के बारे में आयते करीमा لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ नाज़िल हुई।

इसलिए इस बैअ़त का नाम **बैअ़ते रिज़्वान** मशहूर हो गया और बैअ़त करने वालों को 'अस्ह़ाबे अलू शजूरा' कहा जाने लगा। (शजूरा अ़रबी में दरख़्त को कहते हैं।)

इस के बाद मालूम हुआ कि ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) की शहादत की ख़बर ग़लत है, लेकिन इस ख़बर की वजह से जो ह़ज़रात सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने बैअ़त की उस का सवाब भी मिल गया और अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का तोह़फ़ा भी नसीब हो गया, जिस का कुर्आन मजीद में एलान हो गया, जो रहती दुनिया तक बराबर पढ़ा जाता रहेगा।

इस के बाद कुरैश ने 'सुहैल बिन अ़म्र' को बात करने के लिए भेजा और यूँ कहा कि मुह़म्मद के पास जाओ और उन से सुलह़ (Compromised) की बातचीत करो, लेकिन बात में इस साल उ़मरह करने की बात न आए। अगर हम इस साल उन्हें उ़मरह करने की इजाज़त देंगे तो पूरे अ़रब में हमारी बदूनामी होगी और अहले अ़रब यूँ कहेंगे कि देख लो! मुह़म्मद अपनी कुव्वत और ज़ोर से मक्का में दाख़िल हो गये। 'सुहैल इब्ने उ़मर' ने आप (सल्ल०) से लम्बी बातचीत की, फिर आपस में सुलह़ की शर्तें तय हो गईं।

(सह़ीह़ बुख़ारी, बाब अलू शुरूत फ़िलू जिहाद पेज 377 और राजेअ़ मुआ़लिमुलू तन्ज़ील पेज 199 भाग 4 ता पेज 203)

सुलह़ हुदैबिया की शर्तें-

'सह़ीह़ बुख़ारी' पेज नं० (371, 372) और सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० (104) भाग (2) में है कि ह़ज़रत

अ़ली (रज़ि०) सुलह़ नामा लिखने लगे तो उस में उन्होंने बतौरे शीर्षक (हेडिंग) यह लिखा "هذا ما قاضى عليه مُحَمَّد رسول الله" इस पर 'सुहैल बिन अ़म्र' और उस के साथियों ने कहा कि हम तो आप के "रसूलुल्लाह" होने का इक़रार ही नहीं करते, अगर हम इस को मानते होते तो आप को उ़मरह करने से क्यों रोकते? आप "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह" लिखिए। आप ने फ़रमाया, मैं रसूलुल्लाह भी हूँ, "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह" भी हूँ, फिर ह़ज़रत अ़ली से फ़रमाया कि शब्द "रसूलुल्लाह" को मिटा दो।

ह़ज़रत अ़ली ने अ़र्ज़ किया कि मैं तो कभी भी आप के इस गुण को नहीं मिटाऊँगा (यह नाफ़रमानी की क़िस्म नहीं बल्कि मुह़ब्बत का अन्दाज़ है) इस के बाद सुलह़ नामा के शुरु में यह 'هذا ما قاضى عليه محمّد بن عَبدالله" लिखा गया।

'सह़ीह़ मुस्लिम' पेज (105) भाग (2) में यह भी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत अ़ली से फ़रमाया कि लिखो **'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'** इस पर 'सुहैल बिन अ़म्र' ने कहा यह **'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम'** क्या है? हम इस को नहीं जानते, बल्कि वह लिखो जो हम जानते हैं और वह है (आप ने इस को भी मन्ज़ूर फ़रमा लिया (كما ذكره النووى)

अल् बिदाया वल् निहाया पेज नं० 168 भाग 4 में सुलह़ नामा का मतन (Text) जो नक़्ल किया गया है वह इस तरह़ है:-

هذا ما صالح عليه محمد بن عبد الله سهيل بن عمرو، اصطلحا على وضع
الحرب عن الناس عشر سنين يأمن فيهن الناس ويكف بعضهم عن
بعض، على انه من أتى محمداً من قريش بغير اذن وليه رده عليهم، ومن
جاء قريشاً ممن مع محمد لم يردوه عليه، وان بيننا عيبة مكفوفة، وانه
لا اسلال ولا اغلال، وانه من احب ان يدخل فى عقد محمد وعهده دخل فيه،
ومن احب ان يدخل فى عقد قريش وعهدهم دخل فيه، وانك ترجع عامك هذا
فلا تدخل علينا مكة، وانه إذا كان عام قابل خرجنا عنك فدخلتها
باصحابك فاقمت بها ثلاثاً معك سلاح الراكب، السيوف فى القرب
لا تدخلها بغيرها۔

अनुवाद-

"यह वह सुलहनामा है जिस की 'मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह' ने 'सुहेल बिन अ़म्र' से सुलह़ की, इन बातों पर सुलह़ की गई"।

1- दस साल तक आपस में जंग नहीं करेंगे, इन दस सालों में लोग अम्न व अमान से रहेंगे और एक दूसरे (पर ह़मला करने) से रुके रहेंगे।

2- कुरैश में से जो शख़्स अपने वली (संरक्षक) की इजाज़त के बग़ैर मुह़म्मद (अ़लै०) के पास आ जाएगा

उसे वापस करना होगा।

3- और मुहम्मद के साथियों में से जो शख़्स कुरैश के पास आ जाएगा वह उसे वापस नहीं करेंगे।

4- और एक यह बात है कि हमारे दर्मियान गठरी बन्द रहेगी (यानी आपस में जंग न करेंगे) लड़ाई वाली बात को गठरी की तरह़ बाँध कर डाल देंगे और बाज़ ह़ज़रात ने गठरी बन्द रखने का यह मतलब बताया है कि जो कुछ हम ने सुलह़ की है यह सच्चे दिल से है, दिल गठरियों की तरह़ हैं जिन में राज़ की चीज़ें रखी जाती हैं, लिहाज़ा हमारी यह गठरी न खुलेगी और कोई फ़रीक़ धोका या ख़यानत का काम न करेगा।

5- न कोई खुले तौर पर चोरी करेगा और न ख़यानत के तौर पर किसी को तक्लीफ़ देगा (यानी हर शर्त की पाबन्दी की जाएगी।)

6- और जो शख़्स मुहम्मद (सल्ल०) के साथ कोई मुआ़हिदा (Contract) करना चाहे वह कर सकता है।

7- और जो जमाअ़त (समूह) कुरैश से कोई मुआ़हिदा (Contract) करना चाहे उसे इस का अख़्तियार है।

8- आप इस साल वापस हो जाएँ मक्का में दाख़िल न हों।

9- अगले साल अपने सह़ाबा (रज़ि०) के साथ उ़मरह के लिए आएँ उस वक़्त मक्का में दाख़िल हों और सिर्फ़ तीन दिन रहें।

10- उस वक़्त जब उ़मरह के लिए आएँ तो आप के साथ थोड़े से हथियार हों जिन्हें एक मुसाफ़िर साथ लेकर चलता है, तलवारें म्यानों में रहे, इस का लिहाज़ करते हुए दाख़िल हो सकेंगे।

जब यह शर्तें लिखी गईं तो शर्त नं० (6) के मुताबिक़ 'बनू खुज़ाआ' ने एलान कर दिया कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह के अ़हद में और बनू बक्र ने एलान कर दिया कि हम कुरैश के अ़हद में (फिर वही मुआ़हिदा या सन्धि फ़तेह़ मक्का की भूमिका बन गया, क्योंकि कुरैशे मक्का ने 'बनू बक्र' की मदद कर दी।

जब 'बनू खुज़ाआ' से उन की जंग छिड़ी और मुआ़हिदा (Contract) की जो शर्तें ऊपर ज़िक्र हुईं उन में से बाज़ सह़ीह़ बुख़ारी में, बाज़ सह़ीह़ मुस्लिम में हैं और बाज़ सुनन अबी दाऊद में भी है।

(सह़ीह़ बुख़ारी बाब अल् शुरूत फ़िल् जिहाद पेज नं० 247 भाग 1 और राजेअ़ मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 199 पेज 203 भाग 4)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) का सवाल व जवाब-

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को बाज़ शर्तों का, कुबूल करना नागवार हुआ तो वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में आये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम ह़क़ पर नहीं हैं और क्या कुरैशे मक्का बातिल पर नहीं है?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, हम ह़क़ पर हैं और वह बातिल पर हैं!

फिर सवाल किया, क्या हमारे मक़्तूलीन जन्नत में और क्या उनके मक़्तूलीन दोज़ख़ में नहीं हैं? अ़र्ज़ किया, हाँ है, फिर क्यों हम अपने दीन में ज़िल्लत गवारा करें और हम क्यों अल्लाह के फ़ैसले के बग़ैर जो हमारे उनके दर्मियान (क़िताल के ज़रिये) हो वापस हो जाएँ?

यह सुनकर रसूलुल्लाह आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ उसकी नाफ़रमानी नहीं करता हूँ वह मेरी मदद फ़रमाएगा।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, क्या आप ने यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह जाएँगे और तवाफ़ करेंगे? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या मैंने इसी साल के बारे में कहा था?

इस के बाद ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से भी उन का यही सवाल व जवाब हुआ। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सुलह़ (Compromise) कर ली और पूरा सुलह़ नामा लिख लिया गया, इतने में ह़ज़रत अबू जन्दल आ गये और उन्होंने मुसलमानों से कहा कि देखो! मैं मुसलमान होकर आया हूँ मुश्रिकीन की तरफ़ वापस किया जा रहा हूँ मुझे बड़ी तक्लीफ़ें दी गई हैं मुझे अपने साथ ले चलो, लेकिन मुसलमान रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने कुछ नहीं कर सकते थे। सुलह़ (Compromise) की जो शर्तें आप ने मन्ज़ूर फ़रमा ली थीं उन सब के मुताबिक़ अ़मल करना ज़रूरी था। बिल्आख़िर ह़ज़रत अबू जन्दल (रज़ि०) को वहीं छोड़ दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स हमारा बनकर हम को छोड़ेगा अल्लाह तआ़ला उसको हम से दूर फ़रमा देगा (उसकी हमें ज़रूरत नहीं) और जो शख़्स उन में से होगा और हमारा बन कर आएगा (फिर हम शर्त के मुताबिक़ उसे वापस कर देंगे तो) अल्लाह तआ़ला उस के लिए कोई रास्ता निकाल देगा। **(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 105 भाग 1)**

ह़लक़ (सर मुँडाना) और ज़ब्ह़ (क़ुर्बानी) करना-

जब 'सुलह़नामा' लिखा जा चुका तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सह़ाबा को हुक्म दिया कि अपने जानवरों को ज़ब्ह़ करो और सर मुँडा लो, यह बात सुनकर कोई भी खड़ा न हुआ (क्योंकि ह़ज़रात सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस उम्मीद में थे कि शायद कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि वक़्त से पहले एह़राम खोलना न पड़े और उ़मरह करने का मौक़ा मिल ही जाए।)

आप के तीन बार इर्शाद फ़रमाने के बाद भी जब कोई खड़ा न हुआ तो आप अपनी बीवी (पत्नी) 'ह़ज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' के पास तशरीफ़ ले गये और उन से पूरी बात बयान की (कि मैं जानवरों के ज़ब्ह़ करने और सर मुंडाने का हुक्म दे चुका हूँ लेकिन सह़ाबा उस पर ख़ामोश हैं) ह़ज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर आप चाहते हैं कि यह लोग ज़ब्ह़ (क़ुर्बानी) और 'ह़लक़' (सर मुँडाना) करवाएँ तो आप बाहर तशरीफ़ ले जाकर किसी से बातचीत किये बिना अपने ऊँटों को ज़ब्ह़ फ़रमा दें और बाल मुंडाने वाले को बुलाकर अपने सर के बाल मुंडवा दें।

आप (सल्ल०) बाहर तशरीफ़ लाए और ऐसा ही किया। जब आप को सह़ाबा ने देखा कि आप जानवर ज़ब्ह़ फ़रमा रहे हैं और 'ह़लक़' करवा लिया है तो सब लोग उठ खड़े हुए और अपने जानवरों को ज़ब्ह़ कर दिया और एक दूसरे का सर मूंडने लगे। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 380)**

ह़ज़रत 'अबू बसीर' और उनके साथी-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि अहले मक्का में से जो शख़्स हमारे पास आएगा उसे हम

शर्त के मुताबिक़ वापस कर देंगे, तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए कोई रास्ता निकाल देगा। उस के मुताबिक़ इस का ह़ल यह निकला कि 'ह़ज़रत अबू बसीर' (रज़ि०) एक सह़ाबी मुसलमान होकर मक्का से मदीना मुनव्वरह पहुँच गये।

मक्का वालों ने उन को वापस करने के लिए दो आदमी भेजे, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शर्त के मुताबिक़ उन को वापस कर दिया, वापसी में जब 'ज़ुलू हुलैफ़ा' नामक स्थान पर पहुँचे तो ह़ज़रत अबू बसीर (रज़ि०) ने उन दो आदमियों में से जो उन्हें लेने आये थे एक को क़त्ल कर दिया और दूसरा भाग कर मदीना मुनव्वरह में आकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ। आप ने उसे देखकर फ़रमाया कि ज़रूर इसे कोई ख़ौफ़नाक बात पेश आई है।

इस ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर होकर अ़र्ज़ किया, कि मेरा साथी तो क़त्ल किया जा चुका है और मैं भी क़त्ल होने वाला हूँ। पीछे से 'ह़ज़रत अबू बसीर' भी ह़ाज़िरे ख़िद्मत हो गये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप की जो ज़िम्मेदारी थी वह तो आप ने पूरी कर दी और आप ने मुझे वापस कर दिया, फिर अल्लाह तआ़ला ने मुझे इन से निजात दे दी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह लड़ाई को भड़काने वाला है, काश! इसे कोई समझाने वाला होता।

यह सुनकर ह़ज़रत अबू बसीर (रज़ि०) ने समझ लिया कि आप मुझे फिर वापस कर देंगे, लिहाज़ा वह मदीना मुनव्वरह से निकल गये और समुद्र के किनारे पर पड़ाव डाल दिया। जब 'ह़ज़रत अबू जन्दल' (रज़ि०) को इस का इ़ल्म हुआ तो वह भी अबू बसीर (रज़ि०) के पास पहुँच गये और अब जो भी कोई शख़्स क़ुरैशे मक्का में से मुसलमान होता वह ह़ज़रत अबू बसीर (रज़ि०) के पास पहुँच जाता यहाँ तक कि वहाँ के समुद्र के किनारे बहुत से लोग इकट्ठा हो गये। क़ुरैश का जो भी क़ाफ़िला शाम की तरफ़ जाता था यह लोग उसे रोक लेते और क़ाफ़िला के आदमियों को क़त्ल कर देते और उन के सामान छीन लेते थे।

इस पर क़ुरैशे मक्का ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास पैग़ाम भेजा कि आप उन लोगों को बुला लें और अब हम इस शर्त को वापस लेते हैं कि हमारा कोई शख़्स आप के पास जाएगा तो उसे वापस करना होगा, जो भी शख़्स हम में से आप के पास पहुँचेगा उसे वापस करने की ज़िम्मेदारी आप पर न होगी। इस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन लोगों को पैग़ाम भेज दिया कि आप लोग मदीना वापस आ जाएँ।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 380, 381 भाग 1)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'ह़ज़रत अबू बसीर' (रज़ि०) के नाम ख़त लिख दिया कि मदीना मुनव्वरह आ जाएँ। जब आप (सल्ल०) का ख़त पहुँचा तो वह मौत की आख़िरी साँस ले रहे थे, उनकी मौत इस ह़ालत में हुई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ख़त उन के हाथ में था।

ह़ज़रत अबू जन्दल (रज़ि०) ने वहीं ह़ज़रत अबू बसीर (रज़ि०) को दफ़्न कर दिया और क़रीब में एक मस्जिद बना दी, फिर अपने साथियों के साथ मदीना मुनव्वरह ह़ाज़िर हो गये और फिर यही रहते रहे यहाँ तक कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के ज़माने में 'शाम' चले गये और वहीं जिहाद में शहीद हो गये।

(फ़तहुल बारी पेज नं० 351 भाग 5)

'सुलह़ हुदैबिया' की तफ़्सील के बाद अब आयत को देखें, इन में फ़तेह़ मुबीन की ख़ुशख़बरी है और

यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अगली पिछली लग़्ज़िशों (कोताहियों) की माफ़ी का। नेअ़्मत के पूरी होने का और सीधी राह पर चलाने का एलान है।

अहले ईमान और अहले शिर्क

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनीन के दिलों में सुकून व इत्मिनान नाज़िल फ़रमा दिया, ताकि उन का ईमान और ज़्यादा बढ़ जाए और यह भी फ़रमा दिया कि अल्लाह तआ़ला ईमान की बरकत से अहले ईमान को मर्द हों या औ़रत ऐसी जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, जिन में वह हमेशा रहेंगे और अल्लाह तआ़ला उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा फ़रमा देगा और यह भी फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों, मुनाफ़िक़ औ़रतों, मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब देगा। उन के बारे में पाँच बातें फ़रमाईः-

पहली यह कि الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ (कि यह लोग अल्लाह के साथ बुरा गुमान रखते हैं)

इस बुरे गुमान में यह भी है कि यह लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और उस के रसूल को झुठलाया करते हैं कि मोमिनीन परास्त होंगे और काफ़िरों के ह़मले से मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) होकर वापस मदीना न आएँगे, चूंकि अपने दिली जज़्बात में और अ़क़ीदे में मुनाफ़िक़ औ़रतें और मुश्रिक औ़रतें भी अपने मर्दों के साथ होती हैं इसलिए उन्हें भी चेतावनी दी गई।

दूसरी बात यह फ़रमाई कि عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ (कि उन पर बुराई की चक्की घूमने वाली है)

यानी दुनिया में मक़्तूल गिरफ़्तार होंगे और इस्लाम की तरक़्क़ी उन की आत्मा पर बोझ बनी रहेगी।

तीसरी और चौथी बात यह फ़रमाई وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ

(और अल्लाह उन पर ग़ुस्सा हुआ और उन पर लअ़्नत कर दी)

और पाँचवीं बात बताई وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ (कि उन के लिए जहन्नम तैयार कर दिया।)

और आख़िर में इस विषय को وَسَآءَتْ مَصِيْرًا पर ख़त्म फ़रमाया कि जहन्नम बुरा ठिकाना है।

फिर फ़रमाया وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(और अल्लाह ही के लिए हैं आसमानों के और ज़मीनों के लश्कर) इन आयात में यह विषय दो मर्तबः बयान फ़रमाया गया है।

इस में यह बता दिया कि आसमान और ज़मीन में अल्लाह तआ़ला के बहुत से लश्कर हैं, वह जिस से चाहे काम ले सकता है। इस में काफ़िरों को भी तम्बीह (warning) है कि वह यह न समझें कि मुसलमान थोड़े से हैं उन्हें दबा लेंगे, चूंकि उन के अ़लावा भी अल्लाह के लश्कर हैं इसलिए उन की तअ़्दाद को न देखें, अल्लाह अपने दूसरे लश्करों से भी काम ले सकता है और इस में मुसलमानों के लिए भी नसीह़त है कि अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करें। अल्लाह तआ़ला के बहुत से लश्कर हैं वह तुम्हारी मदद के लिए और काफ़िरों को दुःख देने के लिए अपनी दूसरी मख़्लूक़ को भी इस्तेमाल फ़रमा सकता है।

नोट- इन आयात में एक जगह وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا और एक जगह وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا फ़रमाया है।

इस में यह बता दिया कि अल्लाह 'अ़लीम' भी है, उसे अपने दोस्तों का भी इ़ल्म है और दुश्मनों का भी, वह सब के ज़ाहिर (External) व बातिन (Internal) को जानता है और वह 'अ़ज़ीज़' भी है यानी ज़बरदस्त है उस के फ़ैसले और इरादे को कोई पलट नहीं सकता और वह 'ह़कीम' भी है इसलिए अपनी ह़िक्मत के मुताबिक़ जिसे चाहता है इन्आ़म देता है और जिसे चाहता है अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) कर देता है।

नोट– आयते करीमा में जो لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ फ़रमाया है, उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि इस से गुनाह ह़क़ीक़ी मुराद नहीं हैं, क्योंकि ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) से गुनाह नहीं हो सकते बल्कि बाज़ वह काम मुराद हैं जिन में कहीं चूक हो गई तो उस पर अल्लाह तआ़ला ने आप को ख़बरदार फ़रमाया, जैसा कि बद्र के क़ैदियों से फ़िद्या न लेने में आप ने फ़िद्या लेने वालों की राय को मान लिया और जैसा कि बाज़ मुनाफ़िक़ीन ने जिहाद में न जाने की इजाज़त माँगी तो आप (सल्ल०) ने इजाज़त फ़रमा दी, जिसे عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ में बयान फ़रमाया है।

जैसा कि 'ह़ज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम' नाबीना (अन्धे) सह़ाबी के आने पर आप (सल्ल०) को ख़याल हुआ कि इस वक़्त न आते तो अच्छा था और उस का असर आप के चेहरे पर ज़ाहिर हो गया, क्योंकि आप उस वक़्त काफ़िरों को इस्लाम की दअ़वत दे रहे थे, इस पर عَبَسَ وَتَوَلّٰى नाज़िल हुई।

इस के बावजूद कि अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) का सब कुछ माफ़ फ़रमाया फिर भी आप बहुत ज़्यादा अ़िबादत करते, आप (सल्ल०) रात को नमाज़े तहज्जुद में लम्बा क़याम करते यहाँ तक कि आपके क़दम मुबारक पर वरम आ जाता था। अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! आप इतनी अ़िबादत क्यों करते हैं ह़ालांकि अल्लाह ने आप का सब कुछ माफ़ फ़रमा दिया है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तो क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 152, भाग 1 पेज नं० 716, भाग 2)**

मतलब यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने इतना बड़ा करम फ़रमाया तो इस का मतलब यह तो नहीं है कि अ़िबादत बन्द कर दूँ एह़सानमन्दी का तक़ाज़ा तो यह है कि और ज़्यादा अ़िबादत में लग जाऊँ।

8-9 اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

शाहिद, मुबश्शर और नज़ीर

इस आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तीन बड़ी सिफ़ात (गुण) बयान फ़रमाई गई है।

पहली शाहिद (गवाह) होना, दूसरे मुबश्शिर होना, तीसरे नज़ीर होना। अ़रबी में शाहिद गवाह को कहते हैं। क़ियामत के दिन आप अपनी उम्मत के आ़दिल होने की गवाही देंगे जैसा कि सूरः बक़रः **(आयत नं० 143)** وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا और सूरः ह़ज **(आयत नं० 78)** لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ में बयान फ़रमाया है।

दूसरी सिफ़त (गुण) यह बयान फ़रमाई कि आप मुबश्शिर अर्थात ख़ुशख़बरी देने वाला और तीसरी

सिफ़त (गुण) यह बयान फ़रमाई कि आप नज़ीर अर्थात डराने वाले हैं यानी ईमान और आमाले सालिहा पर अल्लाह की रज़ा और अल्लाह के इनूआमात की ख़ुशख़बरी देना और कुफ़्र पर अल्लाह तआला की नाराज़गी और अ़ज़ाब से डराना, यह हज़रात अम्बिया (अ़लै०) का काम था। ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) ने भी उसे पूरे एहतिमाम के साथ अन्जाम दिया है।

हदीसों में आपके इन्ज़ार (डराने) और ख़ुशख़बरी देने की सैकड़ों रिवायात मौजूद हैं और 'अलू तर्ग़ीब वलू तरहीब' के नाम से उ़लमा-ए-उम्मत ने बड़ी-बड़ी किताबें लिखी हैं।

'सहीह़ बुख़ारी' में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की यह सिफ़ात (गुण) तौरेत में भी हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की यह सिफ़ात (गुण) बयान फ़रमाने के बाद अहले ईमान से ख़िताब फ़रमायाः-

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

कि हम ने उनको इसलिए रसूल बनाकर भेजा कि तुम अल्लाह पर, उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के दीन की मदद और उसकी तअ़ज़ीम (Respect) करो और सुबह़ शाम उसकी तस्बीह़ बयान करो। अ़क़ीदा तअ़ज़ीम (Respect) के साथ उसकी तस्बीह़ में भी लगे रहो।

10 اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ
عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۟

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैअ़त

जिस वक़्त 'हुदैबिया' में रसूलुल्लाह (सल्ल०) का क़याम था और हज़राते सहाबा (रज़ि०) आप के साथ थे, उस वक़्त मक्का वालों के आड़े आ जाने की वजह से हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के वफ़ात की ख़बर से कुछ ऐसी फ़िज़ा बन गई थी कि ऐसा लगने लगा था कि जंग की ज़रूरत पड़ सकती है।

इस मौक़े पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक पेड़ के नीचे बैठ कर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से बैअ़त ली, जिस में यह था कि जम कर जिहाद करेंगे, पीठ फेर कर न भागेंगे। बैअ़त करने वालों के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि आप से जो बैअ़त कर रहे हैं उन की यह बैअ़त अल्लाह तआ़ला ही से है।

आप अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हैं, अल्लाह के दीन की तरफ़ दअ़वत देते हैं और दअ़वत क़ुबूल करने वालों को ख़ुद भी अल्लाह के दीन पर चलाते हैं। जो आप (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी करता है, वह अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करता है।

इस 'बैअ़त' में अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी का इक़रार और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी का भी इक़रार था। क़ुर्आन मजीद में जगह-जगह अल्लाह की फ़रमाँबरदारी के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी का भी ज़िक्र है।

सूरः निसा (आयत नं० 80) में स्पष्ट तौर पर फ़रमाया مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ

'बैअ़त' के लिए ज़रूरी नहीं है कि हाथ में हाथ देकर ही हो, ज़बानी इक़रार अ़हद व पैमान भी बैअ़त

है, लेकिन चूंकि हुदैबिया के मौक़े पर आप ने हाथ में हाथ रखकर बैअ़त फ़रमाई थी और बैअ़त इसी तरह़ हुई थी, इसलिए इर्शाद फ़रमायाः-

يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ (कि अल्लाह का हाथ उन के हाथों पर है) अल्लाह तआ़ला अंग से तो पाक है, लेकिन 'बैअ़त' की ज़िम्मेदारी को स्पष्ट फ़रमाने के लिए इस बात को ताकीद करने के लिए जो लोग आप से बैअ़त करते हैं वह अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ फ़रमाया।

चूंकि बैअ़त करने वाले की अन्दरुनी हा़लत को वह व्यक्ति नहीं जानता जिस से बैअ़त की जा रही हो, इसलिए बैअ़त करने वाले की ज़िम्मेदारी बताने के लिए फ़रमाया فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ

(कि जो शख़्स बैअ़त को तोड़ दे उस के तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा।)

मुआ़हिदा (Contract) कर के तोड़ देना तो वैसे भी बड़ा गुनाह है, फिर जबकि मुआ़हिदा को बैअ़त की सूरत में मज़बूत और ताकीद कर दे तो और ज़्यादा ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। जब अल्लाह के रसूल से बैअ़त कर ली तो उस को पूरा करना ही करना है।

وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا

(और जो शख़्स उस अ़हद को पूरा कर दे जो उस ने अल्लाह से किया है तो अल्लाह तआ़ला उसे अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाएगा।)

11-14

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ
بِأَلْسِنَتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ
الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ
وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾
وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٤﴾

देहातियों की बद्गुमानी

मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० (191) भाग (4) में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि जिस साल 'सुलह़ हुदैबिया' का वाक़िआ़ पेश आया, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मदीना मुनव्वरह के आस-पास देहातियों में यह एलान करा दिया था कि हम उ़मरह के लिए रवाना हो रहे हैं।

मक़्सद यह था कि यह लोग भी 'उ़मरह' कर लें और क़ुरैशे मक्का की तरफ़ से कोई जंग की सूरत पैदा हो जाए या वह बैतुल्लाह से रोकने लगें तो उन से निमट लिया जाए।

आप ने 'उ़मरह' का एह़राम बाँधा और 'हदी' (क़ुर्बानी के जानवर) को साथ लिया, ताकि लोग यह समझ लें कि आप जंग के इरादे से रवाना नहीं हुए उस वक़्त एक बड़ी जमाअ़त आप के साथ रवाना हो गई (जिन की तअ़दाद चौदह सौ या इस से कुछ ज़्यादा थी।)

इस मौक़े पर देहात में रहने वालों में से बहुत से लोग पीछे रह गये और आप के साथ सफ़र में साथ न गये। अभी रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना मुनव्वरह वापस नहीं पहुँचे थे कि अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के बारे में पहले से आप को ख़बर दे दी और फ़रमायाः-

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا

कि देहातियों में से जो लोग पीछे डाल दिये गये (जिन की शिरकत अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर न थी) वह शिरकत न करने का उ़ज़्र बयान करते हुए यूँ कहेंगे कि हमारे मालों और हमारे परिवार वालों ने हमें मशग़ूल (Busy) कर रखा है, हम उन की ज़रुरियात में लगे रहे (घरों में खाने के लिए भी कुछ न था) लिहाज़ा आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ़ कर दीजिए कि वह हमें माफ़ फ़रमा दे।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) मदीना मुनव्वरह वापस तशरीफ़ ले आये तो यह लोग आप (सल्ल०) के पास ह़ाज़िर हुए और इन्होंने साथ न जाने का वही उ़ज़्र बयान कर दिया कि हमें बाल बच्चों के कामकाज की मश्ग़ूलियतों ने आप के साथ जाने न दिया, अब आप हमारे लिए इस्तिग़फ़ार कर दें।

अल्लाह तआ़ला ने उन को झूठा कहते हुए फ़रमाया कि यह अपनी ज़बानों से ऐसी बात कह रहे हैं जो उन के दिलों में नहीं है यानी उन का यह कहना कि हमारा शरीक होने का इरादा तो था, लेकिन घर-बार की मश्ग़ूलियत की वजह से न जा सके और यह कहना कि आप हमारे लिए इस्तिग़फ़ार कर दें यह उन की ज़बानी बातें हैं जो उन के दिली जज़्बात और उनके यक़ीन के ख़िलाफ़ हैं, उन का न शरीक होने का इरादा था और न इस्तिग़फ़ार की उन के नज़्दीक कोई अहमियत है। यह अल्लाह तआ़ला पर ईमान ही नहीं लाए फिर गुनाह और सवाब और इस्तिग़फ़ार की बातों का क्या है।

फिर उन लोगों को तम्बीह (warning) फ़रमाई जो झूठा उ़ज़्र और ह़ीला बाज़ी करें कि अगर अल्लाह तआ़ला कोई नुक़्सान या नफ़ा पहुँचाना चाहे तो वह कौन है जो अल्लाह की तरफ़ से आने वाले किसी फ़ैसले के बारे में कुछ भी अख़्तियार रखता हो?

जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ चलने के लिए हुक्म हो गया तो साथ जाना ज़रूरी था, आप के साथ न जाने की सूरत में अगर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नुक़्सान पहुँच जाए तो उस को कोई भी बचा नहीं सकता।

बात वह नहीं है जो तुम बतौर माफ़ी पेश कर रहे हो, अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे आ़माल की सब ख़बर है, तुम तो यह समझते थे कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और उन के साथी अहले ईमान जो सफ़र में जा रहे हैं यह कभी भी वापस नहीं आएँगे, दुश्मन उन को बिलकुल ख़त्म कर देंगे। यह बात तुम्हारे लिए शैतान ने सुन्दर बना दिया है और तुम्हारे दिलों में बैठा दिया और तुम ने बुरा ख़याल कर लिया है कि यह लोग हलाकत की राह पर चल रहे हैं, अगर किसी के जाने का इरादा भी था तो हम ने उसे यह कह कर रोक दिया कि कहाँ जा रहे हो ज़रा इन्तिज़ार करो, देखो! उन का क्या होता है।

وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا और तुम अपने इस समझ की वजह से और साथ न जाने की वजह से बिल्कुल तबाह व बर्बाद हो गये। **(मुआ़लिमुल् तन्ज़ील)**

इस के बाद काफ़िरों के लिए वअ़ीद बयान फ़रमाई

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا (और जो शख़्स अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान न लाए सो हम ने काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार किया है।)

इसके बाद अल्लाह तआ़ला की शान मालकियत और मग़्फ़िरत और पकड़ का ज़िक्र फ़रमायाः-

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

"और अल्लाह ही के लिए है मुल्क आसमानों का और ज़मीन का"।

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ (वह मग़्फ़िरत फ़रमाए जिस को चाहे और अ़ज़ाब दे जिस को चाहे।)

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

जिन लोगों ने अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और कुफ़्र पर जमे रहे, झूठे मुँह कहते हैं कि हमारे लिए इस्तिग़फ़ार कीजिए। अगर यह लोग तौबः कर लें तो अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत फ़रमा देगा, काफ़िरों की तौबः बिना ईमान के कुबूल नहीं होती।

आयत नं० 15 से 23 तक

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا
كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ
سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا
تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُطِعِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ
إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ
آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝
وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ
لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

अनुवाद-

(15) जब तुम ग़नीमतों (धर्म युद्ध में मिलने वाले माल) को हा़सिल करने के लिए उनकी ओर चलने लगोगे, तो पीछे रहने वाले लोग कहेंगे, ''हमें भी इजाज़त दी जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें,'' ये चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम (कथन) को बदल दें, कह दीजिए, ''तुम हमारे साथ हरगिज़ नहीं चल सकते, अल्लाह पहले ही यह बात कह चुका है,'' इस पर कहेंगे, ''(नहीं,) बल्कि तुम लोग हमसे ह़सद (ईर्ष्या) कर रहे हो, (नहीं) बल्कि ये लोग बहुत कम समझते हैं।'' (16) कह दीजिए उन पीछे रह जाने वाले बद्‌दुओं से, ''जल्द ही तुम्हें ऐसी क़ौम की ओर बुलाया जाएगा जो बड़े लड़ने वाले हैं, तुम उनसे लड़ो या वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जाएँ, अगर तुमने इस हुक्म को मान लिया तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला देगा, और अगर तुमने मुँह मोड़ा जैसा कि तुम पहले मुँह मोड़ चुके हो, तो वह तुम्हें दुःख देने वाला अ़ज़ाब देगा।'' (17) न अन्धे पर कोई हरज (पाबन्दी) है, न लंगड़े पर कोई हरज है और न बीमार पर कोई हरज है, जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करेगा, उसे 'वह' ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जो मुँह फेरेगा तो 'वह' उसे दुखदायी अ़ज़ाब देगा। (18) अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ, जब वे वृक्ष (दरख्त) के नीचे आप से बैअ़त कर रहे थे, 'उसने' जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था इसलिए 'उसने' उन पर सकीना उतारी और बदले में उन्हें जल्द मिलने वाली फ़त्ह़ (विजय) तय कर दी; (19) और बहुत सी ग़नीमतें जो उन्होंने हासिल कीं, और अल्लाह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है। (20) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है, कि तुम उनको हा़सिल करोगे, यह फ़त्ह़ तो उसने तुम्हें जल्द ही तय कर दी, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये और (इसलिए ऐसा किया) ताकि ईमान वालों के लिए एक निशानी हो, और वह तुम को सीधी राह पर चलाए। (21) और (इस के अ़लावा) दूसरी और (विजय का भी वादा) है, और जिसकी तुम कुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखते, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है, और अल्लाह को तो हर चीज़

पर कुदरत हासिल है। (22) और अगर (मक्का के) काफ़िर आप से लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर जाते, फिर न कोई हिमायती पाते, न कोई मददगार। (23) यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो पहले से चली आ रही है, और अल्लाह की सुन्नत में तुम हरगिज़ कोई तब्दीली (परिवर्तन) न पाओगे।

आयत नं० 15 से 23 तक की व्याख्या

15 سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾

हुदैबिया न जाने वालों की बद्हाली

'सुलह़ हुदैबिया' के बाद थोड़ी सी मुद्दत के बाद 'ख़ैबर' फ़तेह़ हो गया। अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था कि जल्द ही हुदैबिया में शरीक होने वालों को माले ग़नीमत (धर्म युद्ध में हासिल होने वाला माल) मिलेंगे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'ख़ैबर' के माले ग़नीमत को 'हुदैबिया' में शरीक होने वालों के लिए ख़ास फ़रमा दिया था, ताकि उस माल की मह़रूमी की भरपाई हो जाए जो उन्हें अहले मक्का से जंग कर के बतौरे ग़नीमत हासिल हो सकता था। अल्लाह तआला ने पहले से ख़बर दे दी कि जब तुम लोग ख़ैबर की ग़नीमत के लिए चलोगे यानी जंगे 'ख़ैबर' के लिए रवाना होने लगोगे जिस का नतीजा 'फ़तेह़' और माले ग़नीमत हासिल होने की सूरत में कुछ क़िताल भी होगा तो यह लोग जो 'सुलह़ हुदैबिया' में शरीक नहीं हुए थे, यूँ कहेंगे कि हम भी तुम्हारे साथ चल कर कुछ क़िताल में ह़िस्सा ले लेंगे और माले ग़नीमत में भी शरीक हो जाएँगे।

अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप उन से फ़रमा दें कि तुम हरगिज़ हमारे साथ न जाओगे। अल्लाह तआला ने पहले से यह हुक्म फ़रमा दिया है, दर्मियान में यह भी फ़रमाया يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ वह चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम (वाणी) को बदल दें यानी अल्लाह तआला ने जो हुक्म दिया है कि पीछे रह जाने वालों को साथ न लें उस को बदलना चाहते हैं।

बाज़ ह़ज़रात ने इस का यह मतलब बताया है कि ख़ैबर की ग़नीमत जो सिर्फ़ अहले हुदैबिया के लिए ख़ास थी, इस हुक्म को बदलना चाहते हैं।

चूंकि उन लोगों का मक़्सद माल हासिल करना था और यह समझ रहे थे कि ज़रा सी मेह़नत से माले ग़नीमत हासिल हो जाएँगे, इसलिए ख़ैबर के सफ़र में साथ रहने की तमन्ना कर रहे थे।

قُل لَّن تَتَّبِعُونَا यह 'ख़बर' नहीं के अर्थ में है (और मतलब यह है कि तुम लोग ख़ैबर में हरगिज़ हमारे साथ न जाओगे, यानी हम तुम्हें साथ न लेंगे।

فامر الله تعالیٰ ان لا یاذن لهم فی ذلک معاقبة لهم من جنس ذنبهم (इब्ने कसीर पेज नं० 189 भाग 4)

फिर फ़रमाया فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا (कि जब तुम उन से यूँ कहोगे कि तुम हमारे साथ नहीं चल सकते तो वह यूँ कहेंगे कि अल्लाह की तरफ़ से कोई हुक्म नहीं है, बल्कि तुम यह नहीं चाहते कि हमें 'माले ग़नीमत' में शरीक करो, तुम्हारा यह अ़मल ह़सद व जलन की वजह से है। तुम हम से ह़सद करते हो, इसीलिए यह बात कह रहे हो।

بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ऐ मुसलमानों! बात यह नहीं है कि तुम ह़सद कर रहे हो, बल्कि बात यह है कि वह बस थोड़ी ही समझ रखते हैं (सिर्फ़ दुनियावी बातों को समझते हैं, दीन की मदद और फ़िक्रे आख़िरत से उन के दिल ख़ाली हैं।

यहाँ जो सवाल पैदा होता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ैबर के माले ग़नीमत (धर्म युद्ध का माल) में से बाज़ मुहाजिरीन ह़ब्शा को भी माल अ़ता फ़रमाये थे, फिर अहले हुदैबिया का ह़क़ कहाँ रहा।

ह़ज़रात मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने इस के दो जवाब दिये हैं:-

पहला यह कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन्हें 'खुमुस' यानी 1/5 में से दिया था, जिस में मुजाहिदीन का ह़क़ नहीं होता, वह 4/5 के ह़क़्दार होते हैं और दूसरा जवाब यह है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मुजाहिदीन से इजाज़त लेकर उन ह़ज़रात को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कुछ माल अ़ता फ़रमा दिया। **(मुआ़लिमुत्‌ तन्ज़ील पेज नं० 192 भाग 4 व रूहुल्‌ मआ़नी पेज नं० 101 भाग 26)**

16 قُل لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِن تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने बतौर पेशनगोई उन देहातियों को बताया जो हुदैबिया की शिरकत से पीछे रह गये थे कि जल्द ही ऐसी क़ौम से जंग करने के लिए तुम्हें बुलाया जाएगा जो बड़ी क़ुव्वत वाले होंगे, सख़्त जंगजू होंगे (ख़ैबर की जंग में तुम्हें न ले जाया गया, जो हुदैबिया में शरीक न होने की वजह से तुम्हारे लिये एक क़िस्म की सज़ा है।)

जंग लड़ने के और भी मौक़े आएँगे, आने वाली क़ौमों से तुम लड़ते रहोगे या वह फ़रमाँबरदार हो जाएँगे। जब तुम्हें उन से मुक़ाबिला और क़त्ल के लिये बुलाया जाए तो उस वक़्त फ़रमाँबरदारी करोगे (यानी अमीर की फ़रमाँबरदारी करोगे) अल्लाह तआ़ला तुम्हें अज्र यानी अच्छा बदला अ़ता फ़रमा देगा और अगर तुम ने उस वक़्त मुँह मोड़ा और जिहाद से पीठ फेरी जैसा कि हुदैबिया के मौक़ पर पीछे रह चुके हो, तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।

जिन मौक़ो में दअ़वत दी गई यह मौक़े कब पेश आए और जिस क़ौम से जंग करने के लिए हुक्म दिया गया वह कौन सी क़ौम थी? इस बारे में ह़ज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हम इस आयत को पढ़ते तो थे, लेकिन यह पता न था कि इस से कौन लोग मुराद हैं।

जब क़बीला 'बनू हुनैफ़ा' से जंग करने के लिए 'ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़' (रज़ि०) ने दअ़वत दी तो समझ में आ गया कि आयत का मतलब यही 'बनू हुनैफ़ा' से जंग करना है। 'बनू हुनैफ़ा' 'यमामा'

के रहने वाले थे और 'मुसैलूमा कज़्ज़ाब' के साथी थे जिस ने नुबूव्वत का दावा किया था और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि उस क़ौम से 'फ़ारस' और रोम मुराद हैं जिन से जंग करने के लिए ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने दअ़वत दी थी और लश्कर भेजे थे।

एक क़ौल (कथन) यह भी है कि 'बनी हवाज़िन' मुराद हैं, जिन से ग़ज़्व-ए-हुनैन में जिहाद हुआ और एक यह है कि इस से रूमी कुफ़्फ़ार मुराद हैं, जिन के ह़मला करने की ख़बर सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) तबूक तशरीफ़ ले गये थे।

'साहिबे रुहुलू मआ़नी' ने यह सब बातें लिखी हैं कि उन में से ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की दअ़वत मुराद होना ज़्यादा बेहतर है, क्योंकि उन्होंने जो क़िताल 'बनी हुनैफ़ा' के लिए दअ़वत दी थी वह अमीरुलू मोमिनीन होने की हैसियत से थी और अमीरुलू मोमिनीन की पैरवी न करने पर अ़ज़ाब की धमकी दी गई और साथ ही تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ भी है, क्योंकि 'मुसैलूमा कज़्ज़ाब' के साथियों से जंग हुई तो उस के साथियों में से बहुत से लोगों ने इस्लाम भी क़ुबूल कर लिया था।

(وهذا على ان تكون لفظة او للتنويع والحصر كما هو الظاهر)

क़बीला 'बनी हवाज़िन' से जंग करने के लिए मदीना मुनव्वरह में दअ़वत नहीं दी गई। फ़तेह़ मक्का के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) हुनैन तशरीफ़ ले गये थे जहाँ 'बनी हवाज़िन' मुक़ाबिला के लिए जमा थे और ग़ज़्व-ए-तबूक की शिरकत भी मुराद नहीं ली जा सकती, क्योंकि वहाँ क़िताल नहीं हुआ और न रूमी मुसलमान हुए (क्योंकि वह सामने ही नहीं आये।)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने जो फ़ारस और रोम के जिहादों के लिए दअ़वत दी थी, चूंकि इसकी कोई दलील नहीं कि वह जिहाद 'फ़र्ज़े ऐ़न' था, इसलिए इस को तम्बीह नहीं कहा जा सकता, अमीर का जो हुक्म जिहाद 'फ़र्ज़ किफ़ाया' के लिए हो वह ज़रूरी नहीं होता।

याद रहे कि اَوْ يُسْلِمُوْنَ का एक तर्जुमः तो यह कहा गया है कि वह इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे और एक तर्जुमः यह है कि वह फ़रमाँबरदार हो जाएँगे यानी जिज़्या देकर झुक जाएँगे। अगर क़िताल 'बनी हुनैफ़ा' मुराद लिया जाए तो पहला अर्थ है, क्योंकि ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अलू बिदाया वलू निहाया में 'बनी हुनैफ़ा' के क़िताल के ज़िक्र के बाद लिखा है कि 'बनू हुनैफ़ा' में से दस ग्यारह हज़ार आदमी मारे गये और बहुत सों ने 'ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद' की दअ़वत देने पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया और यह लोग ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की ख़िद्मत में भी ह़ाज़िर हो गये। **(अलू बिदाया वलू निहाया पेज नं० 365 भाग 2)**

17 لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

फ़रमाँबरदारों और नाफ़रमानों का ठिकाना

'तफ़्सीर क़ुर्तुबी' में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया गया है कि जब आयते

करीमा وَإِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا नाज़िल हुई (जिस में हुक्म जिहाद सुनकर रुख़ मोड़ने वालों के लिये अ़ज़ाब की चेतावनी है) तो जो लोग अपाहिज क़िस्म के थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमारा क्या बनेगा, हम तो जिहाद में शिरकत नहीं कर सकते। इस पर आयते करीमा لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ (आख़िर तक) नाज़िल हुई, जिस में यह बता दिया गया कि जो लोग मजबूरी की वजह से जिहाद में न जा सके, जैसे- नाबीना (अन्धे) हों, लंगड़े हों या बीमार हों तो उन पर कोई गुनाह नहीं है।

यह विषय सूरः तौबः में भी गुज़रा है वहाँ फ़रमाया हैः-

لَّيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ

इस के बाद एक विषय बयान फ़रमा दिया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी करेगा अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा, जिस के नीचे नहरें जारी होंगी और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्ल०) से रुख़ मोड़ेगा यानी हटेगा और बचेगा, तो अल्लाह तआ़ला उसे दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।

18-23

لَّقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾
وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنكُمْ وَلِتَكُونَ
آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾ وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾

बैअ़त रिज़वान वालों की फ़ज़ीलत

इन आयात में बैअ़ते रिज़वान का ज़िक्र है। हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस बात पर बैअ़त ली थी कि जंग होने की सूरत में हम हर तरह़ से आप का साथ देंगे, पीछे नहीं हटेंगे, जम कर लड़ेंगे। अल्लाह तआ़ला ने एलान फ़रमा दिया कि जिन मोमिनीन ने पेड़ के नीचे आप से बैअ़त की, अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी है।

यह बहुत बड़ी बात है कि उन हज़रात के लिए इसी दुनिया में अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का तोहफ़ा मिल गया, रहती दुनिया तक के लिए क़ुर्आन पढ़ने वाले तमाम लोगों के सामने बार-बार एलान सामने आता रहेगा कि अल्लाह तआ़ला उन तमाम बैअ़त करने वालों से राज़ी है।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “इन्शाअल्लाह दोज़ख़ में उन लोगों में से कोई भी दाख़िल न होगा जिन्होंने हुदैबिया में बैअ़त की”।

रज़ामन्दी का एलान फ़रमाते हुए فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ भी फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उनके इख़्लास (निस्वार्थ भाव) की हालत को जान लिया जिस से उन के दिल भरे हुए थे।

फिर अपनी मज़ीद नेअ़मत का इज़्हार फ़रमाया فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ (कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर सकीना नाज़िल फ़रमा दिया) उन के दिल को पूरी तरह़ इत्मिनान हो गया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो कुछ बयान किया है और क़ुरैशे मक्का से जो मुआ़हिदा (Contract) फ़रमाया है यह बिल्कुल सह़ी है, दुरुस्त है, अहले ईमान के लिए भलाई है और मुबारक है, फिर फ़तेह़ (विजय) क़रीब होने की ख़ुशख़बरी दी। मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने फ़रमाया कि इस से ख़ैबर की फ़तेह़ मुराद है।

सन् 6 हि० में सुलह़ हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया और उस के दो माह बाद ख़ैबर फ़तेह़ हो गया, जहाँ यहूद 'बनी नज़ीर' मदीना मुनव्वरह से जिलावतन (देश निकाला) किये जाने के बाद आबाद हो गये थे, वहाँ भी उन्होंने शरारतें जारी रखीं, लिहाज़ा रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सह़ाबा (रज़ि०) को लेकर तशरीफ़ ले गये 'ख़ैबर' फ़तेह़ हो गया और यहूद के माल भी माले ग़नीमत के रूप में सह़ाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को मिल गये।

इस विषय के ख़त्म पर وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ताक़त वाला है। वह सब पर प्रभावी है, वह जिस को चाहता है ग़ल्बा देता है) और ह़िक्मत वाला भी है (उसका हर फ़ैसला जल्दी हो या देर से सब कुछ ह़िक्मत के मुताबिक़ होता है।)

इस के बाद फ़रमाया وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا

(अल्लाह ने तुम से बहुत से माले ग़नीमत का वादा फ़रमाया है।)

فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ सो यह माले ग़नीमत तुम्हें ख़ैबर से मिला और उन को जल्दी अ़ता फ़रमा दिया (और उन के अ़लावा और बहुत से माले ग़नीमत मिलेंगे।)

وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ (और लोगों के हाथों को तुम्हारी ओर से रोक दिया यानी जिन लोगों ने तुम पर ह़मला करने का इरादा किया था, उन की साज़िशों या ह़मलों से तुम्हें मह़फ़ूज़ फ़रमा दिया।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़ैबर तशरीफ़ ले गये और वहाँ अहले ख़ैबर का मुह़ासिरा (घेराव) फ़रमाया तो यहाँ क़बीला बनी असद और क़बीला बनी ग़तुफ़ान के लोगों ने मश्वरा किया कि इस वक़्त मदीना मुनव्वरह में मुसलमान थोड़े से हैं, अक्सर ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर के लिए गये हैं, लिहाज़ा मदीना मुनव्वरह पर ह़मला कर के मुसलमान के बाल बच्चों को लूट लिया जाए। अल्लाह तआ़ला ने उन के इरादे को इरादे तक ही रखा, उन के दिलों में रोअ़ब डाल दिया जिस की वजह से मदीना पर चढ़ाई करने के लिए न आ सके।

(मुआ़लिमुत् तन्ज़ील)

'रुहुल् मआ़नी' भाग 26 पेज नं० 109 में यूँ लिखा है कि यहूदी, मुसलमानों के पीछे उनके घरवालों पर ह़मला करने वाले थे, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बाज़ रखा और इरादे के बावजूद ह़मला न कर सके।

एक क़ौल यह भी है कि बनी असद और बनी ग़तुफ़ान अहले ख़ैबर की मदद के लिए निकले थे, फिर वापस हो गये।

ह़ज़रत मुजाहिद ताबई ने وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ का मतलब यह बताया है कि अल्लाह तआ़ला ने सुलह़ (Compromise) की सूरत पैदा फ़रमाकर अहले मक्का के हाथों को रोक लिया, जो अहले ईमान

से जंग करने के लिए तैयार थे।

وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें यह माले ग़नीमत (धर्म युद्ध का माल) अ़ता फ़रमा दिये, ताकि तुम इस से नफ़ा ह़ासिल करो और ताकि यह माल मोमिनीन के लिए इस बात की निशानी बन जाएँ कि वाक़ई अल्लाह तआ़ला की मदद हमारे साथ है और इस से ईमान और मज़बूत हो जाए।

وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا और ताकि अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये यानी हमेशा अल्लाह पर भरोसा रखने वाला बना दे।

وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ और उन के अ़लावा भी कामियाबी होगी जिन पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से वह कामियाबी मुराद हैं जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद मुसलमानों को नसीब हुईं। जैसे- फ़ारस और रोम फ़तेह़ (विजयी) हुए और उन के अ़लावा भी बहुत से इलाक़े और मुमालिक उन के क़ब्ज़े में आये।

ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से फ़तेह़ मक्का मुराद है और ह़ज़रत इक्रिमा का क़ौल है कि इस से 'फ़तेह़ हुनैन' मुराद है और ह़ज़रत मुजाहिद ने फ़रमाया है कि क़ियामत तक मुसलमानों को जो भी फ़ुतूह़ात (विजय) हुई वह सब मुराद हैं। यह बातें मुफ़स्सिर 'क़ुर्तुबी' (रह़०) ने लिखी हैं।

لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا इस का एक अर्थ तो यह है कि उस वक़्त तो तुम को उन पर क़ुद्रत ह़ासिल नहीं हुई और बाज़ ह़ज़रात ने यूँ तर्जुमः किया है कि لن تكونوا ترجوانها तुम्हें उन के फ़तेह़ होने की उम्मीद न थी। बाज़ ह़ज़रात ने इसी का उर्दू तर्जुमः यूँ किया है कि वह फ़ुतूह़ात (विजय) तुम्हारे ख़्वाब व ख़याल में भी न थीं।

قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ

अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में है कि तुम उन्हें फ़तेह़ करोगे, उस ने मुक़द्दर फ़रमा दिया है कि उन पर तुम्हारा क़ब्ज़ा होगा।

وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह तआ़ला जब चाहे जिसे चाहे जो मुल्क और मिल्कियत नसीब फ़रमाए।

इस के बाद फ़रमाया وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ

(और अगर कुफ़्फ़ार तुम से जंग करते तो फेर कर चले जाते।)

ह़ज़रत क़तादा (रज़ि०) का क़ौल है कि इस से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि 'बनी ग़त्फ़ान' और 'बनी असद' मुराद हैं, जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ैबर तशरीफ़ ले जाने के बाद मदीना मुनव्वरह पर ह़मला करने का इरादा किया।

ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (फिर वह कोई अपना दोस्त और मददगार न पाते।)

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلُ (यह पहले से अल्लाह की आ़दत रही है) कि भले कामों के साथ अन्जाम ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) के ह़क़ में रहा है, अपने औलिया (नेक बन्दों) की उस ने

मदद फ़रमाई है और दुश्मनों को मग़्लूब (पराजित) किया है وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (और तुम अल्लाह की आ़दत में बदलाव न पाओगे।

'साहि़बे रुहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि आयत का यह मतलब मालूम होता है कि अच्छा अन्जाम हमेशा ह़ज़रात अम्बिया के ह़क़ में ही हुआ, यह मतलब नहीं है कि जब कभी भी काफ़िरों से क़िताल हुआ तो काफ़िरों पर ग़ल्बा हुआ हो।

आयत नं० 24 से 29 तक

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ
مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا
لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾ إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾ لَّقَدْ
صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ
فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ
كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٢٨﴾ مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ
أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

अनुवाद-

(24) और ''वही'' तो है जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये, बाद इस के कि उन पर तुम्हें फ़त्ह़ दे चुका था, अल्लाह उसे देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।
(25) यह वही हैं जिन्होंने इन्कार किया और तुम्हें मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से रोक दिया और कु़र्बानी के जानवरों को भी इससे रोके रखा कि वे अपने ठिकानों पर पहुँचें, अगर यह ख़याल न होता कि बहुत से मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें मौजूद हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, उन्हें कुचल दोगे, फिर उनके सिल्सिले में अंजाने में तुम पर इल्ज़ाम आएगा तो अल्लाह जिसे चाहे अपनी रह़मत में दाख़िल कर ले, अगर ईमान वाले अलग हो गये होते तो उनमें से जिन लोगों ने इन्कार किया उनको 'हम' ज़रूर दुःख देने वाला अ़ज़ाब देते।
(26) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद (हठ) की और ज़िद भी नादानी की, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर सकीना (संतोष) उतारी और उन्हें परहेज़गारी की बात का पाबन्द रखा, और वे इसी के ह़क़दार थे, और अल्लाह तो हर चीज़ का जानने वाला है।
(27) बेशक, अल्लाह ने अपने रसूल को ह़क़ के साथ सच्चा ख्वाब (सपना) दिखाया था, ''अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) में अमन के साथ दाख़िल होगे, अपने सर के बाल मुड़ाते और कतरवाते हुए, तुम्हें कोई डर न होगा, तो उसने जान ली वह बात जो तुमने नहीं जानी, तो उसने जल्द ह़ासिल होने वाली फ़त्ह़ तुम्हारे लिए तय कर दी।
(28) 'वही' तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्ग दर्शन) और सच्चा दीन देकर भेजा, ताकि तमाम दीनों पर उसको ग़ालिब (प्रभावी) कर दे और (ह़क़ ज़ाहिर करने के लिए) अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।
(29) मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे इन्कार करने वालों पर सख़्त और आपस में रह़म दिल हैं, तुम उन्हें रूकूअ़ और सज्दे की ह़ालत में पाओगे, और अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा)

और खुशी चाह रहे हैं, उनकी पहचान उनके पेशानी (मस्तक) पर सज्दों का निशान है, उनकी यह विशेषता तौरात में बयान हुई है, और इंजील में उनकी मिसाल इस तरह बयान हुई है जैसे खेती, जिसने अपनी कोपल निकाली; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह मोटी हुई और अपने तने पर सीधी खड़ी हो गयी, वह खेती करने वालों को खुश करती है, ताकि काफ़िर (इन्कार करने वाले) उनसे जलें अल्लाह ने उन लोगों से जो उनमें से ईमान लाए, और भले काम किये, उनसे अल्लाह ने माफ़ी और बहुत बड़े बदले का वादा कर रखा है।

आयत नं० 24 से 29 तक की व्याख्या

24 وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾

एक दूसरे पर ह़मला

‘अ़ल्लामा कु़र्तुबी’ ने अपनी तफ़्सीर में इस आयत का सबबे नुज़ूल बताते हुए कई क़ौल लिखे हैं।

‘सह़ीह़ मुस्लिम’ में एक वाक़िआ़ ‘ह़ज़रत सल्मा बिन अक्वअ़’ (रज़ि०) से और दूसरा ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से मरवी है और दोनों को इस आयत का सबबे नुज़ूल (उतारने का कारण) बताया है।

‘ह़ज़रत सल्मा बिन अक्वअ़’ (रज़ि०) ने बयान किया है कि जब हमारे और अहले मक्का के दर्मियान सुलह़ (Compromise) हो गई तो मैं एक दरख़्त के नीचे कांटे हटा कर लेट गया, उस वक़्त अहले मक्का में से चार मुश्रिकीन वहाँ पहुँच आए जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में बुरी या बेहूदा बातें कहने लगे, मुझे बुरा लगा और मैं जगह छोड़कर दूसरे पेड़ के नीचे चला गया।

उन लोगों ने अपने हथियार लट्का दिये और लेट गये मैंने अपनी तल्वार ली और उन चारों आदमियों के हथियारों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उन से कहा कि देखो! क़सम उस ज़ात की जिस ने मुह़म्मद (सल्ल०) को इ़ज़्ज़त बख़्शी है, अगर तुम में से कोई शख़्स सर उठाएगा तो उस का सर तन से जुदा कर दूँगा।

इस के बाद मैं उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ले आया और मेरे चचा सत्तर आदमी क़ैद कर के लाए जिनका नाम आ़मिर था। उनके गिरफ़्तार किये हुए लोगों में ‘मक्र ज़मानी’ भी एक शख़्स था, उस के साथ और लोग भी थे जो मुश्रिकीन में से थे, जिन की तअ़दाद सत्तर की थी। आप ने उन को माफ़ कर दिया और अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ नाज़िल फ़रमाई।

(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 113)

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने यूँ रिवायत की है कि अहले मक्का में अस्सी आदमी ‘जबले तन्ई़म’ से उतर कर आ गये, यह लोग हथियार पहने हुए थे, उन का इरादा यह था कि गफ़्लत (बेपरवाही) का मौक़ा पाकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के सह़ाबा पर ह़मला कर दें। आप (सल्ल०) ने उन लोगों को पकड़ लिया वह लोग क़ाबू में आ गये तो अपनी जानों को सुपुर्द कर दिया, आप ने उन को ज़िन्दा छोड़ दिया,

इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल फ़रमाई। **(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 116 भाग 2)**

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर लिखते हैं कि इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों पर एह़सान जताया है कि उस ने मुश्रिकीन के हाथों से तुम्हें मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) रखा और उन की तरफ़ से कोई तक्लीफ़ न पहुँचने दी और मुश्रिकीन के हाथों को भी मोमिनीन तक न पहुँचने दिया।

अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मतें हैं कि किस की किस तरह़ ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और मुख़ालिफ़ (विरोधी) के क़ब्ज़ा होने के बाद उस के ह़मले से किस तरह़ बचाये और दिलों को जिस तरह़ चाहे पलट दे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिन लोगों से नर्मी का मामला फ़रमाया और माफ़ कर दिया आ़मतौर से वह लोग बाद में मुसलमान ही हो गये।

25-26 هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ
وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي
رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا
فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

मस्जिदे ह़राम से रोकना

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' में लिखा है कि हदी के जानवर जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने साथ ले गये, थे उन की तअ़दाद सत्तर थी। उ़मरह कर के उन्हें मक्का में ज़ब्ह़ किया जाना था, क़ुरैश आड़े आये लिहाज़ा हुदैबिया ही में 'ह़लक़' करना पड़ा और हदी के जानवर वहीं ज़ब्ह़ फ़रमा दिये।

दूसरे यह फ़रमाया कि मक्का में ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें मौजूद थीं जिन का तुम्हें इ़ल्म न था, हो सकता था कि तुम बेइ़ल्मी में अपने क़दमों से उन्हें रौंद डालते और उसकी वजह से तुम को नुक़्सान पहुँच जाता। अल्लाह तआ़ला ने कमज़ोर मोमिनीन और मोमिनात की वजह से सुलह़ (Compromise) की सूरत पैदा फ़रमा दी। अगरचे क़ुरैशे मक्का की ह़रकत ऐसी थी कि उन से जंग की जाती।

فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ जो फ़रमाया।

इस में शब्द مَّعَرَّةٌ आया है। इस का अनुवाद नुक़्सान, मकरूह़ और गुनाह किया गया है। बाज़ ह़ज़रात ने इसकी तशरीह़ करते हुए यूँ फ़रमाया है कि अगर जंग होती तो मोमिन मर्द और औ़रतें उसकी ज़द में आ जाते तो अहले ईमान को रंज पहुँचता और दुख होता और काफ़िरों को यूँ कहने का मौक़ा मिल जाता कि देखो! मुसलमानों ने अपने धर्म वालों ही को क़त्ल कर दिया। बाज़ ह़ज़रात ने यह मतलब बताया है कि उन को क़त्ल करने से गुनाह में मुब्तिला (Involve) हो जाते और बाज़ ह़ज़रात का क़ौल है कि दियत (बदला) वाजिब हो जाती, लेकिन 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने 'इब्ने अ़तिया' से नक़्ल किया है कि दोनों क़ौल कमज़ोर हैं।

'तबरी' का क़ौल है कि इस से 'क़त्ल ख़ता' (ग़ल्ती से क़त्ल करने) का कफ़्फ़ारा मुराद है। 'साहिबे रुहुल मआनी' ने इस पर कलाम किया है और बाज़ हज़रात ने पीछा करना नक़्ल किया है।

तीसरे لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ फ़रमायाः-

यानी अल्लाह तआला ने अहले ईमान को जंग करने से बचा दिया, ताकि वह इस के ज़रिये जंग के बग़ैर जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा ले यानी उस ने अहले ईमान को भी जंग से बचा लिया और उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा दिया। जो कमज़ोर मोमिन और मोमिनात मक्का में थे उन के शान्तिपूर्वक रहने की भी सूरत निकल आई और मुश्रिकीन की तरफ़ से जो उन्हें कमज़ोर समझ कर तक्लीफ़ें दी जाती थीं उन से भी छुट्कारा हासिल हो गया और पूरी तरह इ़बादत करने के मौक़े भी निकल आये।

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि مَنْ يَّشَآءُ से अहले ईमान भी मुराद हैं। जिन्हें अल्लाह तआ़ला की रहमत शामिले हाल हो गई और मुश्किरीन भी मुराद हैं क्योंकि उन्हें सोचने, समझने और इस्लाम कुबूल करने का मौक़ा दे दिया गया। **(रुहुलु मआ़नी पेज नं० 115 भाग 26)**

चौथे यह फ़रमायाः-

لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا

अगर वह मोमिनीन और मोमिनात काफ़िरों से अ़लैहिदा हो जाते जो मक्का में मौजूद थे (और कमज़ोरी की वजह से हिज्रत न कर सकते थे) तो हम काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब दे देते यानी काफ़िर मक़्तूल होते और क़ैदी बना लिये जाते।

साहिबे रुहुलु मआ़नी लिखते हैं कि जो मोमिन मर्द व औ़रत मक्का में मौजूद थे, जिन की वजह से अल्लाह तआ़ला ने मोमिनीन को जंग से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा। यह नौ लोग थे जिन में सात मर्द और दो औ़रतें थीं।

फिर फ़रमाया اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

(कि उन लोगों ने तुम्हें ऐसे वक़्त में रोका जबकि अपने दिलों में उन्होंने ग़ैरत को जगह दे दी, यह जाहिलियत की ग़ैरत थी। जिस किसी चीज़ को इन्सान अपने लिए आ़र और ऐ़ब समझे, फिर उसकी बुनियाद पर अपनी जान को बचाने के लिए कोई हरकत या कोई बात करे उसे हमियत कहा जाता है।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन के साथ उ़मरह करने की नियत से रवाना हुए और कुरैश को इस का पता चल गया तो उन पर जिहालत सवार हो गई, उन्होंने तय कर लिया कि आप को उ़मरह करने नहीं देंगे वरना अ़रब में यह मशहूर हो जाएगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) मक्का वालों की रज़ामन्दी के बग़ैर ज़बरदस्ती मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो गये।

इस तरह से अहले अ़रब इसमें हमें तअ़ना देंगे, उन लोगों ने हमियत जाहिलियत की वजह से सुलह नामा में **'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'** न लिखने दिया और "मुहम्मद रसूलुल्लाह" जो लिख दिया गया था उस की जगह "मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह" लिखवाने की ज़िद की।

فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

(सो अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर इत्मिनान नाज़िल फ़रमा दिया और उन्होंने लड़ाई लड़ने पर और इसी साल उ़मरह करने पर ज़िद न की।

وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى

"और अल्लाह ने तक़्वा का कलिमा उन के साथ लाज़िम फ़रमा दिया"।

وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ (और यह लोग कलिमा अलू तक़्वा के ज़्यादा ह़क़्दार और उस के अहल थे) وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।)

'कलिमतुत्तक़्वा' से क्या मुराद है? इस के बारे में 'इमाम तिर्मिज़ी' ने ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि०) से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद नक़्ल किया है कि इस से कलिमा **'लाइलाह इल्लल्लाह'** मुराद है। इस को तक़्वा का कलिमा इसलिए कहा जाता है कि यह शिर्क और कुफ़्र के गुनाहों से बचाता है।

मतलब यह है कि उन ह़ज़रात ने अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और उस की तौफ़ीक़ से कलिमा को अपना लिया, अल्लाह तआ़ला ने हमेशा के लिए उसे उन का साथी बना दिया अब यह उस के ज़रिये अल्लाह को भी याद करते हैं और उस के तक़ाज़ों को भी पूरा करते हैं और यह जो फ़रमाया कि यह लोग इस कलिमा के योग्य थे इस का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में था कि यह लोग कलिमा क़ुबूल करेंगे और उस के तक़ाज़ों पर चलेंगे।

अल्लाह तआ़ला ने पहले ही से इन का मिज़ाज क़ुबूले ह़क़ का बना दिया था, इसी मिज़ाज और तबीअ़त के मुताबिक़ वह इस की तरफ़ आगे बढ़े।

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का जानने वाला है) वह अपनी ह़िक्मत के मुताबिक़ जिसे चाहता है योग्य बनाता है और फिर योग्यता के मुताबिक़ केवल अपने फ़ज़्ल से ख़ैर और हिदायत पर जमा रहता है।

27-28 لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝

सुलह़

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुदैबिया वाले सफ़र में रवाना होने से पहले ही मदीना मुनव्वरह में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह ख़्वाब दिखा दिया गया था कि आप अपने सह़ाबा के साथ अम्न व अमान से मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होंगे और वहाँ कुछ लोग सर मूँडेंगे और कुछ लोग बाल कतरवाएँगे।

आप (सल्ल०) ने यह ख़्वाब सह़ाबा को बता दिया था, ख़्वाब सुनकर सब बहुत ख़ुश हुए और इस उम्मीद पर रवाना हुए कि इस साल मक्का में दाख़िल होंगे और उ़मरह नसीब होगा। जब हुदैबिया पहुँचे

और मुश्रिकीने मक्का सामने आ गये, जिस की वजह से सुलह़ कर ली गई और मक्का में दाख़िल हुए बिना वापस आ गये, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सुलह़ करने को ह़क़ जानते और मानते हुए इस बात से सह़ाबा (रज़ि०) को रंज हो रहा था कि हम मक्का मुकर्रमा में दाख़िल न हो सके, बल्कि सुलह़ के वक़्त ही ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने सवाल कर लिया था कि आप ने तो यह ख़बर दी थी कि मक्का में दाख़िल होंगे यह तो उस के ख़िलाफ़ है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उसी वक़्त इस का जवाब दे दिया था, उस जवाब से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) सन्तुष्ट हो गये थे। (**सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 106 भाग 2**)

इन्सानी तौर पर जो रंज था उस को दूर फ़रमाने के लिए अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल फ़रमाई, जिस में बता दिया कि अल्लाह तआ़ला ने जो ख़्वाब दिखाया था कि तुम इन्शाअल्लाह मस्जिदे ह़राम में अम्न के साथ दाख़िल होगे, वहाँ कोई बाल मुँडाएगा और कोई बाल कतरवाएगा और किसी को किसी का डर नहीं होगा, यह ख़्वाब अल्लाह तआ़ला ने सह़ी दिखाया था। वाक़िआ़ के मुताबिक़ था जो आइन्दा साल ज़ाहिर हुआ और चूंकि ख़्वाब में इसी साल दाख़िल होने की ख़बर नहीं दी गई थी, इसलिए ख़्वाब के सच्चा होने पर कोई असर नहीं पड़ा।

इस में जो शब्द इन्शाअल्लाह फ़रमाया है यह शक़ के लिए नहीं है, बल्कि तह़क़ीक़ और ताकीद के लिए है और ह़ज़रत अबू उ़बैदह (रज़ि०) का क़ौल है कि शब्द 'इन' यहाँ 'इज़' के अर्थ में है, जिस का मतलब यह है कि जब अल्लाह चाहे दाख़िल हो जाओगे।

और फ़रमाया فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا

"सो अल्लाह ने जान लिया जो तुम ने नहीं जाना"।

इस के लिए मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मक्का के दाख़िल होने में जो देरी की गई उस में जो अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मत थी उस का तुम्हें इ़ल्म न था। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अगर इसी साल उ़मरह करने की ज़िद करते और मुश्रिकीने मक्का से क़त्ल व क़िताल किया जाता और सुलह़ न होती तो दो ढ़ाई महीने बाद जो ख़ैबर फ़तेह़ हुआ उस के लिए सफ़र करना मुश्किल हो जाता और अगर सफ़र में चले जाते तो यह ख़त्रा रहता कि अहले मक्का कहीं पीछे से मदीना पर ह़मला न कर दें, बस सुलह़ करने में और मक्का में दाख़िले की देरी में जो फ़ायदा पहुँचा उस का तुम्हें इ़ल्म नहीं था।

فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا

"सो अल्लाह ने मक्का में दाख़िल होने से पहले जल्द ही एक फ़तेह़ दे दी"।

यानी ख़ैबर को फ़तेह़ फ़रमा दिया और वहाँ का माल हुदैबिया को मिल गया।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत का ज़िक्र फ़रमाया कि अल्लाह ने अपने रसूल को हिदायत के साथ और दीने ह़क़ के साथ भेजा, ताकि वह इस दीन को दूसरे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे।

अल्लाह तआ़ला ने यह वादा पूरा फ़रमा दिया। इस विषय की आयत सूरः तौबः में भी गुज़र चुकी है।

وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا (और मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नुबूव्वत पर अल्लाह तआ़ला

का गवाह होना काफ़ी है) मुश्किरीन ने सुलह़ नामा में जो هٰذا ما صالح عليه محمد رسول الله लिखने से इन्कार किया तो उसकी वजह से आप की नुबूव्वत व रिसालत के बारे में कोई फ़र्क़ नहीं आता।

(तफ़्सीर क़ुर्तुबी पेज नं० 292 भाग 16)

29

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ
وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ
لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۠

सहा़बा-ए-किराम (रज़ि०) की फ़ज़ीलत

इस सूरः में जगह-जगह सहा़बा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तअ़रीफ़ बयान फ़रमाई है। फिर यहाँ सूरः के ख़त्म पर उनकी ख़ूबियाँ बयान फ़रमाई हैं।

पहले इर्शाद फ़रमाया कि मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आप के साथ हैं वह काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में एक दूसरे पर रह़म करने वाले हैं।

इस विषय को सूरः माइदा **(आयत नं० 54)** اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ में भी बयान किया है।

अहले ईमान की यह शान है कि काफ़िरों के मुक़ाबिले में सख़्त रहें और आपस में एक दूसरे पर रह़म करें।

यह सिफ़त सहा़बा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हु में बहुत ज़्यादा थीं। आजकल देखा जाता है कि मुसलमान दुश्मनाने इस्लाम के आगे बिछे जाते हैं और उन से डरते हैं, उन से नर्मी का बर्ताव करते हैं और मुसलमानों के साथ सख़्ती करते हैं, उन पर रह़म नहीं करते, दुनियावी मुह़ब्बत ने इस पर आमादा कर रखा है।

सहा़बा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की दूसरी सिफ़त यह बयान फरमाई تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا

(ऐ मुख़ातब! तू उन को इस ह़ाल में देखेगा कि कभी रुकूअ़ किये हुए हैं, कभी सज्दः किये हैं, उस में कस्रत से नमाज़ पढ़ना और नमाज़ों पर पाबन्दी करना, नफ़्ल का एहतिमाम करना, रातों को नमाज़ों में खड़ा होना सब दाख़िल है।

तीसरी सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا

(यह ह़ज़रात अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी तलाश करते हैं) जो आ़माल अख़्तियार करते हैं उन के ज़रिये कोई दुनियावी मक़्सद सामने नहीं है, उन के आ़माल अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने और अल्लाह की रज़ामन्दी ह़ासिल करने के लिए हैं।

चौथी सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ

इस का मतलब बताते हुए 'साहि़बे मुआ़लिमुत् तन्ज़ील' ने बहुत सी बातें नक़्ल की हैं, जिन में से

एक यह भी है जो ज़ाहिरी शब्दों से समझ में आ रहा है कि मिट्टी पर सज्दः करने की वजह से, उन की पेशानी पर कुछ मिट्टी लग जाती है और बाज़ ह़ज़रात से यह नक़्ल किया गया है कि क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे रौशन होंगे और उन के ज़रिये पहचाने जाएँगे कि यह लोग नमाज़ पढ़ने में ज़्यादा मश्ग़ूल रहते थे और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि इस से अच्छी आ़दत, ख़स्लत और ध्यान मुराद है। जो लोग कसरत से नमाज़ पढ़ते हैं उन्हें जो नमाज़ की बरकात ह़ासिल होती हैं उन में से एक बहुत बड़ी सिफ़त (गुण) अच्छे आचरण हैं, उन के चेहरों से उन का यह गुण स्पष्ट हो जाता है।

फिर फ़रमाया ذلك مثلهم في التورىة (उन की यह सिफ़त तौरेत में भी बयान की गई है।)

फिर इन्जील में जो उन की सिफ़त बयान की गई उस को बयान फ़रमाया।

इर्शाद है ومثلهم في الانجيل كزرع اخرج شطئه कि इन्जील में उन लोगों की मिसाल यह है कि जैसे किसान ने नर्म ज़मीन में बीज डाला, उस ज़मीन से खेती की सुई निकली यानी हल्का फुल्का, पतला अखुआ, फिर यह आगे बढ़ा तो उस में मज़बूती आ गई, फिर और आगे बढ़ा तो मोटा हो गया, इन ह़ालतों से गुज़र कर अब वह ठीक तरीक़े से अपनी जड़ पर अच्छी तरह़ खड़ा हो गया। अब यह हरा भरा भी है अन्दर से निकल कर बढ़ भी चुका है और उस का तना अपनी जड़ पर खड़ा है, किसान उसे देख कर ख़ुश हो रहे हैं।

इस मिसाल में यह बता दिया कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सह़ाबा (रज़ि०) पहले थोड़े से होंगे, फिर बढ़ते रहेंगे, बहुत हो जाएँगे और फिर वह एक बड़ी ताक़त बन जाएँगे, चुनाँचे ऐसा ही हुआ।

ह़ज़रात सह़ाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अजुमईन पहले थोड़े से थे, फिर बढ़ते रहे हज़ारों में हो गये ज़माना नुबूव्वत ही में एक लाख से ज़्यादा उनकी तअ़दाद हो गई, फिर उन्होंने दीने इस्लाम को ख़ूब फैलाया, क़ैसर व किसरा के तख़्त उलट दिये, उन के मुक़ाबिले में कोई जम नहीं सकता था।

ليغيظ بهم الكفار

यानी अल्लाह तआ़ला ने सह़ाबा-ए-किराम को क़ुव्वत व ताक़त से नवाज़ा ताकि उन के ज़रिये काफ़िरों के दिलों को जला दे, काफ़िरों को यह गवारा नहीं था और न अब गवारा है कि इस्लाम और मुसलमान फले फूलें, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को भी बढ़ा दिया और मुसलमानों को भी क़ुव्वत दे दी।

जैसा कि सूरः सफ़ **(आयत नं० 8,9)** में फ़रमायाः-

يريدون ليطفئوا نور الله بافواههم والله متم نوره ولو كره الكفرون ۝ هو الذي ارسل
رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ۝

(यह लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँहों से बुझा दें और अल्लाह अपने नूर को पूरा करने वाला है अगरचे काफ़िरों को नगवार हो। अल्लाह वही है जिस ने रसूल को हिदायत और दीने ह़क़ के साथ भेजा, ताकि सब पर ग़ालिब फ़रमा दे, अगरचे मुश्रिकों को नागवार हो) यह दूसरी सिफ़त (गुण) هو الذي ارسل सूरः तौबः और सूरः फ़तेह़ में भी है, जिस का तर्जुमः गुज़र चुका है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا

अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया है कि जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये उन की मग़्फ़िरत होगी और उन्हें अज्रे अ़ज़ीम दिया जाएगा) शब्दों का आ़म मतलब है, जिसमें सहा़बा और उन के बाद आने वाले मोमिनीन भी हैं।

नोट– सूरः फ़त्ह़ में ह़ज़रात सहा़बा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की कई जगह तअ़रीफ़ फ़रमाई हैः–

पहले फ़रमाया هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ

फिर फ़रमाया لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا

फिर फ़रमाया اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ

फिर फ़रमायाः–

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا

फिर फ़रमाया فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا

फिर फ़रमाया مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ

फिर फ़रमाया لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ फिर फ़रमाया وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا

और सूरः तौबः **(आयत नं० 100)** में फ़रमाया وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ

'ह़ज़रत इमाम मालिक' (रह़०) के सामने किसी ने ह़ज़रात सहा़बा (रज़ि०) की शान में कुछ कह दिया, इस पर इर्शाद फ़रमाया कि जिस के दिल में किसी भी सहा़बी की तरफ़ से नफ़रत हो आयते करीमा का उ़मूम उस को शामिल होगा (यानी उस पर कुफ़्र आ़यद होगा।) **(तफ़्सीर क़ुर्तुबी)**

इस से अल्लाह तआ़ला ने जो لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ फ़रमाया है क्या उस से उन चौदह पन्द्रह सौ सहा़बा का ईमान और वादा साबित नहीं होता जिन्होंने हुदैबिया में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ पर बैअ़त की थी, जिन में ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और उ़मर (रज़ि०) भी थे।

याद रहे कि ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) भी साबिक़ीन अव्वलीन में से थे। अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी है, जो शख़्स जानबूझकर क़ुर्आन को झुठलाये, ईमान से मुँह मोड़े उस से क्या बात की जा सकती है।

"ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल" (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "मेरे सहा़बा (रज़ि०) के बारे में अल्लाह से डरो (दोबारा फ़रमाया) मेरे बाद तुम उन्हें निशाना न बना लेना, सो जिस ने उन से मुह़ब्बत की तो मेरी मुह़ब्बत की वजह से उन से मुह़ब्बत की और जिस ने उन से बुग़्ज़ (नफ़रत) रखा मुझ से बुग़्ज़ (नफ़रत) रखने की वजह से उन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उन्हें तक्लीफ़ दी उस ने मुझे तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने अल्लाह को तक्लीफ़ दी और जिस ने अल्लाह को तक्लीफ़ दी क़रीब है कि वह उसे पकड़ लेगा। **(रवाहुल तिर्मिज़ी कमा फ़िल मिश्कात पेज नं० 554)**

ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जब तुम उन लोगों

को देखो जो मेरे सहाबा (रज़ि०) को बुरा कह रहे हैं तो कह दो कि तुम पर अल्लाह की लअ़नत हो तुम्हारी बुराई की वजह से"।

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "मेरे सहाबा (रज़ि०) को बुरा न कहो, क्योंकि (उन का मर्तबः इतना बड़ा है कि) तुम में से कोई शख़्स अगर उ़हद (पहाड़) के बराबर सोना ख़र्च कर दे तो यह (सवाब के एतिबार से) उन में से किसी के एक मुद या आधे मुद को भी नहीं पहुँचेगा। **(मिश्कात पेज नं० 553 बुख़ारी व मुस्लिम)**

उस ज़माने में ग़ल्ला नापने का एक बर्तन होता था उसे 'मुद' (पैमाना) कहते थे। (नये वज़न के एतिबार से एक 'मुद' (पैमाना) का वज़न सात सौ ग्राम के लगभग होता था।)

सूरः नं० 49

सूर-ए-हुजूरात

सूरः हुजूरात् का संक्षिप्त परिचय

नाम– चौथी आयत के शुरु में मौजूद शब्द हुजूरात यानी اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ के नाम पर इस सूरः का नाम सूरः हुजूरात है।

नाज़िल होने का ज़माना – मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस के नाज़िल होने का ज़माना मदनी दौर है।

आयत नं० 1 से 10 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا
اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۞
اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞
اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۞ وَ لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ
نٰدِمِيْنَ ۞ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَ زَيَّنَهٗ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَ كَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَ الْفُسُوْقَ وَ الْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۞ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ نِعْمَةً ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞ وَ اِنْ
طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى
تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَ اَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۞ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞

अनुवाद–

(1) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (2) ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आ़माल अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो। (3) जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वह लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है। (4) जो लोग आप के हुजरों (कमरों) के बाहर से आप को पुकारते हैं, उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते (5) और अगर वे सब्र करते, यहाँ तक कि आप उनकी ओर निकल आते तो उनके लिए बेहतर था, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (6) ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अंजाने में तकलीफ़ पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किये पर पछताना पड़े। (7) और जान लो! कि तुम्हारे बीच अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान लिया

करें तो तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे ईमान को महबूब (प्रिय) बनाया और उसकी तुम्हारे दिलों में सुन्दरता दे दी; और कुफ़्र, और फ़िस्क़ (उल्लंघन और अवज्ञा) और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए नफ़रत की चीज़ बना दिया; यही लोग हैं जो नेक राह पर हैं। (8) अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और एहसान है और अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है। (9) और अगर ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह़ कराओ, फिर अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती करे उससे लड़ो, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर पलट आएँ, फिर अगर वह पलट आएँ तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ सुलह़ करा दो, और इन्साफ़ करो, कि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है। (10) मोमिन तो आपस में भाई-भाई ही हैं, तो अपने भाइयों के बीच सुलह़ कराओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

आयत नं० 1 से 10 तक की व्याख्या

1-5

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ
اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्मत

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज्वाजे मुतह्हरात (पत्नियाँ) जिन घरों में रहती थीं वह कमरे की तरह़ बने हुए थे, जो खजूरों की टहनियों के बने हुए थे। चूंकि इस सूरः के पहले रुकूअ़ में उन हुजूरों (कमरों) का ज़िक्र है इसलिए यह सूरः सूरः हुजुरात के नाम से जानी जाती है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर होने वालों को अल्लाह तआ़ला ने इज़्ज़त और एह़तिराम की हिदायत फ़रमाई और इस सिल्सिले में चन्द आदाब इर्शाद फ़रमाएः-

पहले तो यह फ़रमाया कि ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह और रसूल (सल्ल०) से आगे मत बढ़ो, यह لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ का तर्जुमः है। इन शब्दों में बहुत से अर्थ है, मुफ़स्सिरीन ने इस के बहुत से अर्थ लिखे हैं।

'ह़ज़रत मुजाहिद' ने फ़रमाया कि तुम पहले से कोई बात अपनी तरफ़ से न कह दो, अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले का इन्तिज़ार करो। वह अपने रसूल की ज़बानी जो फ़ैसला फ़रमा दे उसके मुताबिक़ अ़मल करो। 'ह़ज़रत सुफ़्यान सौरी' (रह०) ने भी लगभग यही मतलब बताया है। 'ह़ज़रत क़तादह' (रह०) ने फ़रमाया कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो यूँ कहा करते थे कि इस बारे में कुछ हुक्म नाज़िल

हो जाता और फ़लाँ मस्ले में कोई क़ानून नाज़िल हो जाता तो अच्छा था। अल्लाह तआ़ला को उन की बात पसन्द न आई और फ़रमाया अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) से आगे न बढ़ो।

(मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 209 भाग 4 इब्ने कसीर पेज नं० 205 भाग 4)

साथ ही وَاتَّقُوا اللّٰهَ भी फ़रमाया, कि अल्लाह से डरो। اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ बेश्क अल्लाह सुनने और जानने वाला है।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह०) ने 'अ़ब्दुल्लाह बिन अल् ज़ुबैर' से नक़्ल किया है कि 'बनी तमीम' का एक क़ाफ़िला रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में आया और उन्होंने अ़र्ज़ किया कि किसी शख़्स को हमारा अमीर बना दीजिए (अभी तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ नहीं फ़रमाया था कि) हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने 'क़अ़क़ाअ़ बिन मअ़बद' को अमीर बनाने का मशरवह दिया और हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने 'अक़रअ़ बिन जाबिस' के अमीर बनाने की राय पेश की।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने हज़रत उ़मर (रज़ि०) से कहा कि तुम्हारा इस के अ़लावा कुछ मक़्सद नहीं है कि मेरी मुख़ालिफ़त (विरोध) करो। हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने जवाब दिया कि मैंने आप की मुख़ालिफ़त (विरोध) के तौर पर अपनी राय पेश नहीं की, इस पर बातचीत होने लगी जिस से दोनों की आवाजें बुलन्द हो गईं, तो यह आयते करीमा يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا (आख़िर तक) नाज़िल हो गई। **(बुख़ारी)**

'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' में है कि इस मौक़े पर शुरु सूरः से लेकर 'अज्रे अ़ज़ीम' तक आयात नाज़िल हो गईं, जिन में अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के हुक्म से आगे बढ़ने की और आप (सल्ल०) के रहते हुए आवाज़ें बुलन्द करने की मनाही फ़रमा दी गई और यह हुक्म भी फ़रमा दिया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बातें करो तो अदब का ख़याल रखो और इस तरह़ ऊँची आवाज़ से बात न करो जैसे आपस में एक दूसरे से बात करते हो।

साथ ही यह भी फ़रमा दिया اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ऐसा न हो कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आवाज़ पर तुम्हारी आवाज़ बुलन्द हो जाए और इसकी वजह से तुम्हारे आ़माल बेकार हो जाएँ यानी तुम्हारी नेकियाँ ख़त्म कर दी जाएँ और तुम्हें इस का पता भी न चले।

'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि यह आयतें नाज़िल होने के बाद हज़रत उ़मर (रज़ि०) आप की ख़िद्मत में हाज़िर होते तो इतना आहिस्ता बोलते थे कि पूछना पड़ता था कि क्या कह रहे हैं।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 718)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'साबित बिन क़ैस सहाबी' (रज़ि०) को अपनी मज्लिस से ग़ैर हाज़िर (अनुपस्थित) पाया तो आप को इस का एहसास हुआ। एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं इस का पता चलाता हूँ वह हज़रत साबित (रज़ि०) के पास आए और उन्हें इस हाल में देखा कि अपने घर में सर झुकाये हुए बैठे हैं, दर्याफ़्त किया कि आप को क्या हुआ? जवाब दिया कि मेरी आवाज़ बुलन्द है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द कर चुका हूँ (जो आ़दत के तौर पर थी) लिहाज़ा मैं आग वालों में से हूँ। उस शख़्स ने यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जाकर बता दी, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जाओ उन्हें बता दो कि वह आग वालों में से नहीं हैं,

जन्नत वालों में से हैं। **(सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 510, 718)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने बयान किया है कि ऊपर की आयत नाज़िल होने के बाद ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने यह तरीक़ा अख़्तियार कर लिया था कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्‌मत में ह़ाज़िर होते तो इतनी धीमी आवाज़ से बात करते कि जैसे कोई शख़्स राज़दारी की बातें करता हो और ह़ज़रत इब्ने जुबैर ने बताया कि जब यह आयत नाज़िल हो गई तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) इतनी आहिस्ता बात करते थे कि सिर्फ़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन की बात सुन सकते थे यहाँ तक कि कभी-कभी आप सवाल फ़रमाते थे कि क्या कहा? यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ नाज़िल फ़रमाई।

(बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को धीमी रखते हैं उनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा के लिए ख़ास कर दिया है, उन के लिए मग़्फ़िरत है और अज्रे अ़ज़ीम है।)

امْتَحَنَ शब्द اِمْتِحَان से 'माज़ी' का सीग़ा है जिस का अनुवाद 'जाँच करना' किया है। साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील लिखते हैं 'इम्तहना' अस्ल में 'अख़्लसा' के अर्थ में है। जिस तरह़ सोने को पिघला कर ख़ालिस कर दिया जाता है उसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के दिलों को तक़्वा के लिए ख़ालिस कर दिया है, उन के दिलों में तक़्वा ही तक़्वा है।)

उ़लमा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की क़ब्र शरीफ़ के सामने भी आवाज़ बुलन्द करना मकरुह है जैसा कि आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी में ऐसा करना मकरुह था क्योंकि आप का एह़तिराम वाजिब है।

जब आप (सल्ल०) की ख़िद्‌मते आ़ली में सलाम पेश करने के लिए ह़ाज़िर हो तो धीमी आवाज़ में सलाम पेश करे। إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ इस आयत के ज़रिये साह़िबे मुआ़लिमुल तन्ज़ील ने बहुत सी बातें लिखी हैं जो 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' 'ह़ज़रत जाबिर' और 'ह़ज़रत ज़ैद बिन अल् अरक़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम' से मरवी हैं।

'ह़ज़रत ज़ैद बिन अल् अरक़म' (रज़ि०) का बयान है कि अ़रब के कुछ लोगों ने आपस में मश्वरा किया कि आओ आज उस शख़्स के पास चलें जो नुबूव्वत का दावा करता है। अगर वह वाक़ई नबी हैं तो हमें सब लोगों से आगे बढ़कर उन पर ईमान लाकर सआ़दतमन्द होना चाहिए और अगर वह नबी नहीं हैं बल्कि उन्हें बादशाहत मिलने वाली है तो हमें उन के अधीन रह कर ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए (बहरह़ाल उन से तअ़ल्लुक़ क़ायम करने में फ़ायदा है) इस के बाद ह़ाज़िर हुए तो يَا مُحَمَّد يَا مُحَمَّد कहकर आवाज़ें देने लगे।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) की रिवायत में है कि क़बीला 'बनी अम्बर' के कुछ लोग दोपहर के वक़्त आए थे, उन्होंने पुकारा يا محمد اخرج الينا (कि ऐ मुह़म्मद! हमारी तरफ़ निकल कर आइए) दोपहर का वक़्त था आप आराम फ़रमा रहे थे, उन लोगों की पुकार से आप (सल्ल०) की आँख खुल गई और ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) की रिवायत में है कि यह लोग 'क़बीला बनी तमीम' के थे जिन्होंने दरवाज़े पर खड़े

होकर आप (सल्ल०) को बाहर आने के लिये पुकारा। उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

(बेशक जो लोग आप को हुजूरों (कमरों) के पीछे से पुकारते हैं उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते हैं।)

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ

(और अगर वह लोग सब्र कर लेते यहाँ तक कि आप ख़ुद ही उन की तरफ़ निकलते तो यह उन के लिए बेहतर था) وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

6 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ

फ़ासिक़ की ख़बर

'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' पेज नं० 212 भाग 4 में लिखा है कि यह आयत 'वलीद बिन उ़क़्बा बिन अबी मुअ़ीत' के बारे में नाज़िल हुई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन को क़बीला 'बनी अल् मुस्तलिक़' की ज़कात वसूल करने के लिए भेजा। जब उन लोगों को पता चला कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ से एक शख़्स हमारे क़बीले की ज़कात वसूल करने के लिए पहुँच रहा है तो लोगों ने आबादी से बाहर आकर उन का इस्तिक़बाल (Welcome) किया।

चूंकि ज़माने जाहिलियत में 'वलीद बिन उ़क़्बा' और इस क़बीला के दर्मियान दुश्मनी थी, इसलिए शैतान को उन के दिल में वस्वसा डालने का मौक़ा मिल गया कि लोग तुम्हें क़त्ल करने के लिए आ रहे हैं, उन्होंने शैतानी वस्वसे को ह़क़ीक़त समझ लिया और रास्ते ही से वापस हो गये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में आकर अ़र्ज़ कर दिया कि उन लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और मुझे क़त्ल करने के लिए आमादह हो गये।

यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बहुत नागवारी हुई। आप (सल्ल०) ने उन से जिहाद करने का इरादा फ़रमा लिया। जब आप के इरादा का उन लोगों को इ़ल्म हुआ तो ख़िद्मते आ़ली में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमें मालूम हुआ था कि आप का क़ासिद (दूत) पहुँचा है, हम बतौर इस्तिक़बाल स्वागत (Welcome) के बाहर निकले थे, हमारा इरादा था कि जो अल्लाह तआ़ला का हुक्म है उस के अनुसार ज़कात के माल आप के क़ासिद (दूत) के सुपुर्द कर दें, लेकिन आप के क़ासिद (दूत) ने वापस होना मुनासिब समझा। हमें अन्देशा हुआ कि आप ने नाराज़ होकर कोई ख़त लिखकर उन्हें वापस बुला लिया है।

हम अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) के गुस्से से पनाह माँगते हैं, लेकिन आप (सल्ल०) ने उन लोगों की बात पर भरोसा न किया और 'ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद' (रज़ि०) को ख़ामोश तरीक़े पर भेज दिया और फ़रमाया कि जाओ अगर वह लोग ईमान पर बाक़ी हैं तो उन के माल की ज़कात ले लेना और

अगर दूसरी कोई सूरत है तो उन के साथ वही मामला करना जो काफ़िरों के साथ किया जाता है।

'हज़रत ख़ालिद बिन वलीद' (रज़ि०) उन के पास पहुँचे तो उन्हें फ़रमाँबरदार पाया, लिहाज़ा उन से ज़कात वसूल किया और वापस आकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सूरतेहाल से बाख़बर कर दिया।

इस पर आयते करीमा يَآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌ नाज़िल हुई। जिस में ईमान वालों को यह बता दिया कि हर बात भरोसा करने की नहीं होती, अगर कोई फ़ासिक़ (गुनहगार) आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उस की बात सुनकर कोई कार्यवाही (Activities) न करें, बल्कि पहले ख़ूब अच्छी तरह़ तह़क़ीक़ (Investigation) कर लें और छानबीन करने के बाद कोई क़दम उठाएँ। ऐसा न हो कि सिर्फ़ ख़बर सुनकर तह़क़ीक़ के बग़ैर किसी क़ौम पर ह़मला कर बैठें, फिर बाद में उन के बेकुसूर होने का पता चले तो ज़िल्लत उठानी पड़े और ग़लत कार्यवाही करने का नतीजा भुगतना पड़े।

बात तो एक मामूली थी लेकिन क़ुर्आन ह़कीम में ईमान वालों को हमेशा के लिए नसीह़त कर दी और ख़बरदार कर दिया कि हर ख़बर सच्ची नहीं होती ख़बर की छानबीन ज़रूरी है और तह़क़ीक़ (Investigaion) के बाद ही कोई कार्यवाही किया जा सकता है।

आयत के उ़मूम ने बता दिया कि यह हिदायत दुनिया के काम और आख़िरत के काम सब से मुतअ़ल्लिक़ है, इसीलिए ह़दीस शरीफ़ की रिवायात में सच्चे और मुत्तक़ी आदमी की रिवायत क़ुबूल की जाती है। जिस रावी का ह़ाल मालूम न हो उस की रिवायत क़ुबूल करने में ठहरा जाएगा।

ह़ज़रत इमाम मुस्लिम (रह़०) ने अपनी किताब के मुक़द्दमे में इस आयत का ज़िक्र किया है और इस से यह दलील लिया है कि फ़ासिक़ (गुनहगार) की ख़बर ठहरी हुई है, क़ुबूलियत स्वीकार करने के योग्य नहीं है।

7-8 وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ
الْإِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

दिलों में इत्मिनान

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने उम्मते मुस्लिमा को अपना एक बहुत बड़ा इन्आ़म याद दिलाया और फ़रमाया है कि देखो! तुम्हारे अन्दर अल्लाह का रसूल मौजूद है। अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़्ल फ़रमाया कि तुम्हारे अन्दर अपने रसूल को भेज दिया।

وهذا كقوله تعالىٰ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ **(सूरः आले इमरान- 164)**

दूसरी बात यह बताई कि हमारा रसूल जो अ़मल करता है और तुम्हें जो हुक्म देता है उस में उन की अपनी मस्लिह़त होती है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आप की मदद भी होती है। बाज़ मौक़ों में तुम मश्वरा भी देते हो तुम्हारे बहुत से मश्वरे नतीजे के एतिबार से ठीक नहीं होते, लिहाज़ा रसूलुल्लाह

(सल्ल०) उन के मुताबिक़ अ़मल नहीं करते, तुम इस से परेशान न हो। अगर वह तमाम कामों में तुम्हारी राय पर चलें तो बहुत सी बातें ऐसी होंगी कि उन के बारे में तुम्हारी राय क़ुबूल कर ली जाए तो तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओगे और तुम्हें इस का नुक़्सान पहुँच जाएगा।

तीसरी बात यह फ़रमाई (जो बतौर इत्मिनान है) कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दी, उसे तुम्हारे लिए महबूब बना दिया और उसे तुम्हारे दिलों में सुन्दर बना दिया, तुम्हारे दिल ईमान के नूर से रौशन हैं और उसकी जगमगाहट का असर यह होता है कि सच्चा मोमिन बन्दा किसी क़ीमत पर भी ईमान की नेअ़मत से महरूम हो जाने पर राज़ी नहीं होता और इनूआ़म का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कुफ़्र (नाफ़रमानी) को और फ़ुसूक़ (गुनाहों) को मकरुह़ बना दिया है, इसलिए तुम्हें कुफ़्र से भी नफ़्रत है और गुनाहों से भी।

इर्शाद फ़रमाया रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कि तीन चीज़ें जिसके अन्दर हों वह ईमान की मिठास को पा लेगा।

1- पहला वह जिस के नज़्दीक अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) हर चीज़ से बढ़कर महबूब हों।

2- दूसरा वह शख़्स जो किसी बन्दे से सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत करे।

3- जब अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्र से बचा लिया तो अब वह कुफ़्र में वापस जाने को उतना ही बुरा जानता हो जितना आग में डाले जाने को मकरुह जानता है। **(रवाहुलू बुख़ारी पेज नं० 7 भाग 1)**

जिन लोगों के दिलों में ईमान महबूब और सुन्दर (सजाया हुआ) हो और नाफ़रमानी से नफ़्रत हो उन के बारे में फ़रमायाः-

أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ (यह लोग राहे हिदायत पर हैं)

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً (और अल्लाह की यह बख़्शिशें फ़ज़्ल और इनूआ़म के तौर पर हैं।)

(अल्लाह के ज़िम्मे किसी का कोई वाजिब नहीं है वह जिसे जो भी नेअ़मत अ़ता फ़रमाए वह उस का फ़ज़्ल ही फ़ज़्ल है और इनूआ़म ही इनूआ़म है।) आख़िर में फ़रमाया وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ और अल्लाह अ़लीम है उसे सब का ज़ाहिर (External) बातिन (Internal) मालूम है और ह़कीम भी है वह अपनी हिक्मत के मुताबिक़ इनूआ़म से नवाज़ता है।

9-10 وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

मोमिन आपस में भाई-भाई हैं

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया गया कि आप 'अ़ब्दुल्लाह

बिन उबई' के पास तशरीफ़ ले जाते तो बेहतर था (अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ों का सरदार था, इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ वह और उस के साथी कुछ न कुछ ह़रकतें करते रहते थे)।

जिस शख़्स ने उस के पास आने की राय दी थी उस का मतलब बज़ाहिर यह था कि आप ख़ुद ही उस के पास तशरीफ़ ले जाएँगे, तो मुम्किन है कि उस का मुख़ालिफ़ाना (विरोधी) जज़्बा ख़त्म हो जाए और यह भी मुम्किन है कि वह मुसलमान ही हो जाए।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक गधे पर (जो उस वक़्त की सवारी थी) सवार होकर रवाना हो गये और आप (सल्ल०) के साथ दूसरे मुसलमान भी थे जो पैदल चल रहे थे। जब 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' के पास पहुँचे तो उस ने कहा तुम मुझ से दूर रहो, तुम्हारे सवारी की बद्बू से मुझे तक्लीफ़ हो रही है। इस के जवाब में एक अन्सारी सहाबी ने कहा कि अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (सल्ल०) का गधा ख़ुशबू के एतिबार से तुझ से बढ़कर है। यह बात सुनकर 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' की क़ौम में से एक आदमी को गुस्सा आ गया और दोनों में ऊँची आवाज़ में बात होने लगी और दोनों में से हर शख़्स के साथियों को गुस्सा आ गया, जिस की वजह से कुछ मारपीट हो गई।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने यह वाक़िया बयान करने के बाद फ़रमाया कि हमें यह बात पहुँची है कि आयते करीमा وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا इस वाक़िया के बाद नाज़िल हुई।

यह सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 370 भाग 1 की रिवायत है। साहिबे दुर्रे मन्सूर ने आयत का सबबे नुज़ूल बताते हुए दूसरी रिवायात भी नक़्ल की हैं (इस में कोई शक की बात नहीं है क्योंकि किसी आयत के अस्बाबे नुज़ूल एक से अधिक भी हो सकते हैं।)

आयते करीमा में मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुलह़ (Compromise) करा देने का और अगर सुलह़ (Compromise) हो जाने के बाद दोनों जमाअ़तों में से कोई जमाअ़त ज़्यादती करे तो उस से जंग का हुक्म दिया है यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए यानी लड़ाई को छोड़ दे और अल्लाह के दीन के मुताबिक़ जीने का फ़ैसला कर ले और सुलह़ (Compromise) कराने वालों को बता दे और यक़ीन दिला दे कि अब हमें लड़ना नहीं है।

बग़ावत को दबाने के लिए जो जंग लड़ी जाए उस में जो फ़रीक़ (group) ज़्यादती पर उतर आया था वह अपने इरादे से बाज़ आ जाए तो यह सुलह़ (Compromise) कराने वाले उन लड़ाई छोड़ देने वालों को न दबाएँ। ह़क़ और नाह़क़ को देखें और अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ दोनों फ़रीक़ों (group's) के दर्मियान सुलह़ (Compromise) करा दें। इन्साफ़ बहुत बड़ी चीज़ है अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ करने वाले को पसन्द फ़रमाता है, केवल जंग रुकवा देना काफ़ी नहीं है आपस में सुलह़ भी करा दी जाए और जो बात झगड़े की हो उसको ख़त्म कर दिया जाए वरना आइन्दा फिर लड़ाई का इम्कान (सम्भावना) रहेगा।

अगर मुसलमानों की दो जमाअ़तों (group's) में लड़ाई होने लगे तो मुसलमान के अगुवा पर वाजिब है कि उन के दर्मियान सुलह़ (Compromise) करा दे और दोनों फ़रीक़ को किताब व सुन्नत के अह़काम क़ुबूल करने पर आमादह करे। अगर कोई जमाअ़त 'इमामुल् मुस्लिमीन' ही से बाग़ी हो जाए तो इमाम उन से बातचीत करे, उन की शिकायत सुने उन को कोई शुब्हा हो या ग़लत फ़हमी हो तो उस को दूर करे। अगर यह बाग़ी जमाअ़त इमाम और अमीर की मुख़ालिफ़त (विरोध) की ऐसी वजह पेश करे जिन से इमाम

का ज़ालिम होना यक़ीनी तौर पर साबित होता हो तो आम मुसलमान उस जमाअ़त की मदद करें जो इमाम की फ़रमाँबरदारी से अलग हो, ताकि इमाम अपने ज़ुल्म से बाज़ आ जाए।

अगर बाग़ी फ़िर्क़ा ऐसी सूरत न बता सके जिन से इमामुल् मुस्लिमीन का ज़ालिम होना साबित होता हो और यह बाग़ी जमाअ़त समझाने से भी बाज़ न आए और इमामुल् मुस्लिमीन और आ़म्मतुल् मुस्लिमीन उस जमाअ़त से क़िताल करें, ताकि इमामुल् मुस्लिमीन के बाग़ी लोग अनुसरण में आ जाएँ।

आख़िर में फ़रमाया إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ कि सारे मोमिन आपस में ईमानी रिश्ते की वजह से आपस में भाई-भाई हैं (पहले तो उन्हें ख़ुद ही भाई-भाई होने का लिहाज़ रखना ज़रूरी है, आपस में लड़ाई न करें, मेल मुहब्बत के साथ रहें, किसी की तरफ़ से कोई ग़ल्ती हो जाए और हुक़ूक़ की अदाएगी में भूल-चूक हो जाये तो माफ़ कर दें।

(शब्द إِخْوَةٌ में इस बात को स्पष्ट फ़रमा दिया) और अगर दो जमाअ़तों (group's) में कोई बिगाड़ हो जाए और कोई फ़रीक़ दरगुज़र करने को तैयार न हो जिस से जंग की नौबत आ सकती हो तो दूसरे मुसलमान उस वक़्त के तक़ाज़े को पूरा करें यानी दोनों फ़रीक़ के दर्मियान आपसी सुलह़ कराने के लिए उठ खड़े हों उन दोनों के दर्मियान सुलह़ कराने की हर मुम्किन कोशिश करें।

इन सारी कोशिशों में और ज़िन्दगी के हर मोड़ में अल्लाह से डरते रहें। अगर ख़ौफ़े ख़ुदा होगा तो हुदूदे शरअ़िया की रिआ़यत कर सकेंगे, सुधार की कोशिशें और अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ अल्लाह तआ़ला की रह़मत को लाने वाली चीज़ें हैं, इसीलिए आख़िर में لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ फ़रमाया और सूरः निसा **(आयत नं० 114)** में फ़रमाया हैः-

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

(नहीं है कोई भलाई उन के बहुत से मश्वरों में मगर जो शख़्स सद्क़े का, अच्छी बातों का या लोगों के दर्मियान इस्लाह़ करने का हुक्म दे और जो शख़्स यह काम अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए करेगा सो हम उस को बड़ा अज्र देंगे।)

आयत में फ़रमाया कि सद्क़े का हुक्म और अम्र बिल् मअ़रूफ़ (भलाई का हुक्म देना) और लोगों के दर्मियान सुलह़ (Compromise) करा देना आदि कामों में मश्वरा होना चाहिए यानी लोगों के दर्मियान सुलह़ करा देना, उन की रंजिशें दूर कर देना और उन के दिलों के जोड़ने की कोशिश करना, रूठे हुए दोस्तों को मना लेना, मियाँ-बीवी के दर्मियान इत्तिफ़ाक़ पैदा करा देना बहुत बड़े सवाब की चीज़ें हैं।

ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, क्या मैं तुम को नफ़्ली रोज़ों और सद्क़ः देने और नफ़्ली नमाज़ पढ़ने के दर्जे से भी अफ़्ज़ल चीज़ न बता दूँ? हम ने अ़र्ज़ किया ज़रूर इर्शाद फ़रमाइए आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वह है आपस में सुलह़ करा देना (फिर फ़रमाया कि बुग़्ज़ (यानी आपस का बिगाड़) मूंड देने वाला है। **(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी वक़ाल हज़ा ह़दीस सहीह़)**

दूसरी रिवायत में है कि मैं यह नहीं कहता कि बुग़्ज़ बालों को मूंडता है, बल्कि वह दीन को मूंड देता है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 428 अह़मद व तिर्मिज़ी)**

आयत नं० 11 से 18 तक

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُونُوا۟ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّن نِّسَآءٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ
وَلَا تَلْمِزُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا۟ بِٱلْأَلْقَٰبِ ۖ بِئْسَ ٱلِٱسْمُ ٱلْفُسُوقُ بَعْدَ ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ
ٱلظَّٰلِمُونَ ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱجْتَنِبُوا۟ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا۟ وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم
بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا
خَلَقْنَٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَٰكُمْ شُعُوبًا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ
خَبِيرٌ ۝ قَالَتِ ٱلْأَعْرَابُ ءَامَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا۟ وَلَٰكِن قُولُوٓا۟ أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ ٱلْإِيمَٰنُ فِى قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا۟
ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَٰلِكُمْ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمْ
يَرْتَابُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ۝ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ ٱللَّهَ بِدِينِكُمْ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا۟ ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا۟ عَلَىَّ إِسْلَٰمَكُم ۖ
بَلِ ٱللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَىٰكُمْ لِلْإِيمَٰنِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ إِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ
وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

अनुवाद-

(11) ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए, हो सकता है कि वे लोग उनसे बेहतर हों; और न औ़रतें दूसरी औ़रतों का (मज़ाक़ उड़ाएँ,) हो सकता है वे उनसे बेहतर हों; और न आपस में ताने दो, और न आपस में एक-दूसरे को बुरे लक़ब (उपाधियों) से पुकारो; ईमान लाने के बाद फिस्क़ (बुरा) नाम (रखना) बुरा है; और जो तौबः न करें, वे ज़ालिम हैं। (12) ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान ग़लत होते हैं, और न एक-दूसरे की टोह में पड़ो, और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करे- क्या तुममें से कोई इसको पसंद करेगा कि कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तुम्हें तो इससे घिन ही आएगी। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है। (13) ऐ लोगो! 'हमने' तुमको एक ही मर्द और एक ही औ़रत से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो; अल्लाह के नज़दीक़ तुममें सबसे इज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) हो, बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (14) बद्दुओं ने कहा, ''हम ईमान ले आए,'' कह दीजिए, ''तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो, 'हम इस्लाम लाए,' (आज्ञाकारी हुए') और ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों के अन्दर दाख़िल नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी (आज्ञापालन) करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ कम न करेगा, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।'' (15) मोमिन तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े, और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग सच्चे हैं। (16) कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म जतलाते हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ

आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है। (17) यह लोग तुम पर एह़सान जताते हैं कि इस्लाम कुबूल कर लिया, कह दीजिए, ''मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि 'उसने' तुम्हें ईमान की राह दिखाई; (18) बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सभी छिपे हुए भेद को जानता है और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।''

आयत नं० 11 से 18 तक की व्याख्या

11-13

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن
نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ
الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾ يَأَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا
يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا
اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ
شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा

इन आयात में अहले ईमान को कुछ नसीह़तें फ़रमाईं। पहली तो यह फ़रमाया لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ कि कोई किसी का मज़ाक़ न उड़ाये। चूंकि मर्दों का आपस में ज़्यादा मिलना जुलना रहता है और औ़रतों का औ़रतों से ज़्यादा मेलजोल रहता है इसलिए ख़िताब (Address) फ़रमाया कि मर्द मर्दों का मज़ाक़ न बनाएँ और औ़रतें औ़रतों का मज़ाक़ न बनाएँ। यह मतलब नहीं है कि मर्दों को औ़रतों का और औ़रतों को मर्दों का मज़ाक़ उड़ाने की इजाज़त दी गई है।

साथ ही यह भी फ़रमाया कि हंसी करने वालों को इस का क्या ह़क़ है कि किसी का मज़ाक़ बनाएँ। अस्ल बड़ाई ईमान और आ़माले सालिह़ा से और अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़्बूल होने से है।

कोई शख़्स दूसरे आदमी के आ़माल और अन्दरुनी जज़्बात, इख़्लास व हुस्न नियत को नहीं जानता और यह भी नहीं जानता कि यह शख़्स अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़्बूल (Acceptable) है या नहीं?

मौत के बाद कौन किस से अफ़्ज़ल होगा इस का भी इ़ल्म नहीं, हो सकता है कि जिस का मज़ाक़ बनाया जा रहा है वह मज़ाक़ बनाने वाले से बेहतर हो, मर्दों में भी यही बात है और औ़रतों में भी। अगर मौत के बाद अपने अच्छे ह़ाल और जिस का मज़ाक़ बना रहे हैं उसकी बद्ह़ाली का यक़ीन हो जाता है तो मज़ाक़ या हँसी उड़ाने की कोई बात भी थी, लेकिन जब अपने ही बारे में इ़ल्म नहीं कि मेरा क्या होगा तो दूसरे का मज़ाक़ बनाने का क्या मतलब है? किसी का मज़ाक़ बनाने में एक को घमण्ड है क्योंकि मज़ाक़

बनाने वाला यह समझता है कि मैं ऐसा नहीं हूँ जैसा वह है। अगर अपने हालात को सामने रखता तो कभी किसी की बुराई और ग़ीबत (चुग़ली) करने और किसी का मज़ाक़ उड़ाने की हिम्मत न होती। दूसरे का मज़ाक़ बनाने में तक्लीफ़ पहुँचाना भी है, इस से उस को दिली तक्लीफ़ होती है जिस का मज़ाक़ बनाया गया, तक्लीफ़ देना ह़राम है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तू अपने भाई से झगड़ा न कर और उस से मज़ाक़ न कर (जिस से उसे तक्लीफ़ पहुँचे) और उस से कोई ऐसा वादा न कर जिस की तू ख़िलाफ़वर्ज़ी करे। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 414)**

दिल की ख़ुशी के तौर पर जो आपस में मज़ाक़ किया जाये जिसे अ़रबी में मज़ाह़ कहते हैं वह दुरुस्त है, मगर झूठ बोलना इस में भी जायज़ नहीं है और अगर मज़ाक़ से किसी को तक्लीफ़ होती हो तो वह भी जायज़ नहीं है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) कभी-कभी मज़ाक़ फ़रमा लेते थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मैं इस मौक़े पर भी ह़क़ बात ही कहता हूँ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 416)**

यह ज़रूरी नहीं है कि मज़ाक़ बनाना ज़बान से हो, आँख से या हाथ से या सर से इशारा कर के किसी का मज़ाक़ बनाना उसे मालूम हो या न हो, यह सब ह़राम है। सूरः अल् ह़म्ज़ह में इस पर तम्बीह (Warning) फ़रमाई है। فقال الله تعالیٰ وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ

दूसरी नसीह़त-

दूसरी नसीह़त यह फ़रमाई وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ (और अपनी जानों को ऐ़ब न लगाओ।)

यह भी बहुत बड़ी नसीह़त है, किसी को तअ़ना देना उस के जिस्म में, बोलचाल में, क़द में ऐ़ब ज़ाहिर करना ज़बान से हो या इशारा से ख़त में लिखकर या छाप कर शब्दों में यह सब बातें आ जाती है।

अगर किसी में कोई ऐ़ब मौजूद हो तब भी ऐ़ब ज़ाहिर करने के तौर पर बयान करना ह़राम है, किसी लम्बे क़द को लम्बू या पस्त क़द को ठिगना बता दिया किसी के हल्केपन की नक़्ल उतार दी, जिस की चाल में फ़र्क़ है उसे लंगड़ा कह देना, नाबीना को अन्धा कहकर पुकारना, सीधे आदमी को बुद्धु कहना यह सब ऐ़ब लगाने में आता है। यह सब और इस तरह़ की जो बातें आ़मतौर पर चलन में हैं उन सब बातों से परहेज़ करना लाज़िम है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अज़्वाज में 'ह़ज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा' का क़द छोटा था। ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बयान किया कि मैंने एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने कह दिया कि 'सफ़िया' का क़द बस इतना सा है (और यह बतौर मज़ाक़ के हाथ से इशारा करके कहा) आप ने फ़रमाया कि तुमने ऐसा शब्द बोला है कि अगर उसे समुद्र में मिला दिया जाए तो उसे भी ख़राब कर दे।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 414)

याद रहे कि وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَغْيَارَكُمْ नहीं फ़रमाया बल्कि وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ फ़रमाया है। इसकी वजह यह है कि सब मुसलमान आपस में एक ही हैं, जब किसी को कुछ कहेंगे तो वह उलट कर जवाब देगा, इस तरह़ से अपना अ़मल अपनी ही तरफ़ लौट कर आ जाएगा। दूसरे को ऐ़ब लगाने वाला ख़ुद अपनी बेआबरुई

का ज़रिया बनेगा।

किसी को बुरे नाम से न बुलाये

तीसरी नसीहत

तीसरी नसीहत यह फ़रमाई وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ (और न एक दूसरे को बुरे लक़ब से याद करो) एक दूसरे को बुरा लक़ब (उपनाम) देने और बुरे नामों से याद करने की मनाही फ़रमाई है। जैसे किसी मुसलमान को फ़ासिक़, मुनाफ़िक़ या काफ़िर कहना या और किसी ऐसे शब्द से याद करना जिस से बुराई ज़ाहिर होती हो इस से मना फ़रमाया गया है। इसी तरह किसी को कुत्ता, गधा या सुअर कहना, किसी नव मुस्लिम को उस के पहले दीन की तरफ़ जोड़ना यानी यहूदी या नसरानी कहना। यह बुरे लक़ब में आता है यह भी ह़राम है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पत्नी 'ह़ज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा' पहले यहूदी दीन पर थीं, उन का ऊँट मरीज़ हो गया तो आप (सल्ल०) ने अपनी दूसरी बीवी 'ज़ैनब बिन्ते जह़श' रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि इसे एक ऊँट दे दो, उन्होंने कहा क्या मैं इस यहूदी औ़रत को दे दूँ? रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के इस जवाब की वजह से गुस्सा हो गए और ज़िल्ह़िज्ज, मुह़र्रम और कुछ माह सफ़र का ह़िस्सा ऐसा गुज़रा कि आप ने 'ज़ैनब' रज़ियल्लाहु अ़न्हा से सम्बन्ध नहीं रखे। **(रवाहु अबूदाऊद पेज नं० 276, भाग 2)**

मुस्नद अह़मद पेज नं० (337, 338) भाग 6 में है कि यह वाक़िआ़ सफ़रे ह़ज का है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि आयत में 'तनाबज़ु बिल्अल्क़ाब' से मुराद यह है कि किसी शख़्स ने कोई गुनाह या बुरा अ़मल किया हो और फिर उस से तौबः कर ली हो तो उसके बाद उस को उस बुरे अ़मल के नाम से पुकारा जैसे- चोर, ज़ानी या शराबी वग़ैरह कह दिया जाए। **(मुआ़लिमुल् तन्ज़ील)**

एक ह़दीस में इर्शाद है कि जिस ने अपने मुसलमान भाई को किसी गुनाह की वजह से ऐबदार बताया यानी ऐब लगाया तो यह शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक ख़ुद उस गुनाह को न कर ले।
(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 414)

फिर फ़रमाया بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ (और ईमान के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है।)

इस का मतलब यह है कि तुम मोमिन हो अगर किसी का मज़ाक़ बनाओगे, ऐब लगाओगे, बुरे लक़ब से याद करोगे तो यह फ़िस्क़ (गुनाह) का काम होगा। कहने वाले कहेंगे कि देखो! यह आदमी फ़ासिक़ है मुसलमान होकर फ़िस्क़ और गुनाहगारी का काम करता है, अपनी ज़ात को बुराई से जोड़ना और मशहूर करना बुरी बात है। कोई शख़्स मोमिन हो और उसकी शोहरत गुनाहगारी के साथ हो, यह बात अहले ईमान के लिए अच्छी नहीं होती। जब इस्लाम को अपना दीन बना लिया तो इस्लाम ही के कामों पर चलें और नेक लोगों में शुमार हों, फ़ासिक़ीन (गुनाहगारों) की फ़ेहरिस्त (List) में क्यों शुमार हों।

तफ़्सीर 'क़ुर्तुबी' में بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ का एक अर्थ यह लिखा है कि जब किसी शख़्स ने गुनाह कर लिया, फिर तौबः कर लिया तो उस को फ़िस्क़ के नाम से याद करना बुरी बात है।

जैसे- नव मुस्लिम को काफ़िर कहना या पिछले गुनाह की वजह से किसी को 'ज़ानी' या 'चोर' कहना बुरी बात है यानी जिस के हक़ में यह बात कह रहे हो उस को बुरे लक़ब से क्यों याद कर रहे हो? उसकी इज़्ज़त के ख़िलाफ़ लक़ब क्यों दे रहे हो?

चौथी नसीहत-

चौथी नसीहत फिर यह फ़रमाई وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ (और जो गुनाहों से तौबः न करे सो यह लोग जुल्म करने वाले हैं) उन का जुल्म उन की जानों पर है। तमाम गुनाहों से तौबः करें, यह आम हुक्म इन तीनों आरोपो से तौबः करने को भी शामिल है जिन का ऊपर की आयत में ज़िक्र हुआ।

बद्गुमानी से बचना

पाँचवीं नसीहत

पाँचवीं नसीहत फिर फ़रमाया يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ (ऐ ईमान वालों! बहुत से गुमानों से बचो) साथ ही यह भी फ़रमाया إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ (बाज़ गुमान गुनाह होते हैं) बात यह है कि बद्गुमानी बहुत से गुनाहों का सन्दर्भ (Background) होती है। बहुत से लोगों में वह बात होती ही नहीं जिसे केवल अट्कल और गुमान से तय कर लिया जाता है और फिर अपने गुमान के मुताबिक़ तोहमतें लगाते हैं और ग़ीबतें (पीठ पीछे बुराई) करते हैं। बद्गुमानी की बुनियाद पर जो बातें कही जाती हैं वह आगे बढ़ती हैं उस से आपस में फ़ित्ना फ़साद पैदा होता है, हालांकि गुमान अपना एक ज़ाती ख़याल होता है ख़याल का सही होना ज़रूरी नहीं।

इसीलिए सूरः नज्म (आयत नं० 28) में फ़रमाया है:-

إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (गुमान हक़ के बारे में कुछ भी फ़ायदा नहीं देता।)

मोमिनीन से अच्छा गुमान रखें और बद्गुमानी से परहेज़ करें। एक हदीस में इर्शाद है:-

إياكم والظن فإن الظن أكذب الحديث

(यानी गुमान से बचो क्योंकि गुमान सब बातों से ज़्यादा झूटी बात है) (मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 427)

याद रहे कि अगर किसी शख़्स से कुछ नुक़्सान पहुँचने का अन्देशा हो तो उस से मेल जोल में एहतियात करना और उस की बुराई से बचने के लिए यह ख़याल करना। मुम्किन है कि मुझे कोई तक्लीफ़ पहुँचा दे यह उस गुमान में नहीं आता जो गुनाह है इसलिए ग़ीबत न करे और गुमान को यक़ीन का दर्जा भी न दे।

आयते करीमा में फ़रमाया कि ऐ ईमान वालों! बहुत से गुनाहों से बचो और साथ ही यह भी फ़रमाया कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। इस से मालूम हुआ कि बाज़ गुमान गुनाह नहीं होते, बल्कि पसन्दीदा भी होते हैं। अल्लाह तआ़ला के साथ हमेशा अच्छा गुमान रखे कि वह बख़्श देगा, माफ़ फ़रमा देगा और साथ ही गुनाहों से भी परहेज़ करता रहे।

मुसलमानों के साथ ख़ास तौर से जो नेक मोमिनीन होंगे अच्छा गुमान रखा जाए। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ कि लोगों से अच्छा व्यवहार अ़िबादत की एक सूरत है।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 479 अह़मद व अबूदाऊद)

हाँ, मुसलमानों को भी चाहिए कि ऐसे ह़ालात और ऐसे मौक़े से बचें जिन की वजह से देखने वालों को और साथ रहने वालों को बद्गुमानी हो सकती हो। अपने अ़ामाल व ह़ालात, चाल ढ़ाल और बातों में ऐसा अन्दाज़ अख़्तियार न करे जिस से लोगों की बद्गुमानी का शिकार हो जाए क्योंकि लोगों की नज़रों में बुरा बनकर रहना भी कोई अच्छी बात नहीं है।

किसी की टोह में न पड़े

छठी नसीह़त-

छठी नसीह़त यूँ फ़रमाई وَلَا تَجَسَّسُوا (और तुम तजस्सुस (टोह) न करो) यानी लोगों के ऐबों का सुराग़ न लगाओ और इस तलाश में न रहो कि फ़लाँ शख़्स में क्या ऐ़ब है और तन्हाई में क्या अ़मल करता है। यह तजस्सुस (टोह) का मर्ज़ भी बहुत बुरा है। बहुत से लोग इस में मुब्तिला (Involve) रहते हैं, ह़ालाँकि इस का वबाल बहुत बड़ा है।

दुनिया और आख़िरत में इसकी सज़ा मिल जाती है और तजस्सुस (टोह) करने वाला ज़लील होकर रह जाता है। अक्सर जुस्तजू (टोह) में बद्गुमानी को इस्तेमाल करना पड़ता है जिस की मुमानिअ़त ऊपर मालूम हुई। मोमिन का काम यह है कि अगर अपने मुसलमान भाई का कोई ऐ़ब देखे तो उस को छुपाये, न यह कि किसी के ऐ़ब के पीछे पड़े और टोह लगाए।

'ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर' (रज़ि०) से रिवायत है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने किसी की कोई ऐसी चीज़ देख ली जिस के ज़ाहिर होने को अच्छा नहीं समझा जाता, फिर उस को छुपा लिया तो उस का इतना बड़ा सवाब है कि जैसे किसी ने ज़िन्दा दफ़न की हुई लड़की को ज़िन्दा कर दिया।

(मिश्कातुल मसाबीह़ पेज नं० 424)

ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेम्बर पर तशरीफ़ ले गए और बुलन्द आवाज़ से पुकार कर फ़रमाया कि ऐ वह लोगों! जो ज़बानी तौर पर मुसलमान हो और अभी दिलों में ईमान नहीं पहुँचा मुसलमानों को तक्लीफ़ न दो, उन्हें ऐ़ब न लगाओ, उन के छुपे ह़ालात की तलाश में न लगो क्योंकि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के छुपे ऐ़ब को ज़ाहिर करने के पीछे पड़ता है अल्लाह तआ़ला उस के छुपे हुए ऐ़ब का पीछा करता है यहाँ तक कि उसे रुस्वा कर देता है अगरचे वह अपने घर के अन्दर हो। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

याद रहे कि जिस तरह़ से किसी के ऐ़ब, गुनाह या बद्ह़ाली का पता चलाया जाए यह सब तजस्सुस (टोह) में दाख़िल है। छुप कर बातें सुनना या अपने को सोता हुआ ज़ाहिर कर के किसी की बातें मालूम

कर लेना यह सब तजस्सुस (टोह) में है जो मना है।

सातवीं नसीह़त-

सातवीं नसीह़त यह फ़रमाई وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا कि तुम आपस में एक दूसरे की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करो। मज़ीद फ़रमाया أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ

(क्या तुम में से कोई शख़्स यह पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये सो इस को तुम नागवार समझते हो) यानी ग़ीबत करना अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर है। जैसे- तुम्हें मुर्दा भाई का गोश्त खाना गवारा नहीं, उसी तरह़ ग़ीबत करना भी नागवार होना ज़रूरी है।

बात यह है कि ग़ीबत बहुत बुरी चीज़ है। दुनिया में कुछ मह़सूस नहीं होता क़ियामत के दिन जब इतनी छोटी सी ज़बान की खेतियाँ काटनी पड़ेंगी उस वक़्त एह़सास होगा कि हाय हम ने क्या किया, लेकिन उस वक़्त का पछताना कुछ काम न देगा। अब इस बात को समझें कि ग़ीबत क्या चीज़ है?

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाबा से सवाल किया कि क्या तुम जानते हो ग़ीबत क्या है? अ़र्ज़ किया अल्लाह और उस का रसूल ही ज़्यादा जानने वाले हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ कि तुम्हारा अपने भाई को इस तरह़ याद करना कि उसे बुरा लगे यह ग़ीबत है।

एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि जो बात मैं बयान कर रहा हूँ अगर वह मेरे भाई के अन्दर मौजूद हो तो उसे बयान करने के बारे में क्या इर्शाद है?

फ़रमाया अगर तेरे भाई में वह ऐ़ब की बात मौजूद है जिसे तू बयान कर रहा है तब ही तो ग़ीबत है और अगर तूने कोई ऐसी बात बयान की जो उस के अन्दर नहीं है तब तो तूने उस पर आरोप लगाया।

(रवाहुलू मुस्लिम पेज नं० 232 भाग 2)

ह़दीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि किसी का ऐ़ब जो उसमें हो बयान करना ही ग़ीबत है। अगर झूठी बात किसी के ज़िम्मे लगा दी तो वह आरोप धरना हुआ, उस में दो गुना गुनाह है। एक गुनाह तोहमत (आरोप) लगाने का, दूसरा ग़ीबत करने का। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह जो फ़रमाया कि अपने भाई को ऐसे तरीक़े पर याद करना जिस से उसे नागवारी हो, इस से यह बात भी मालूम हो गई कि, सामने कहना भी ग़ीबत है और तोहमत धरना भी ग़ीबत में शामिल है क्योंकि यह दोनों चीज़ें सुनने वाले को नागवार होती हैं। ग़ीबत की बुनियाद यह है कि जिस शख़्स के बारे में कुछ कहा जा रहा है वह उसे बुरा लगे सामने हो या पीछे जो लोग ग़ीबतें करते हैं, फिर यूँ कह देते हैं कि मैं ग़लत नहीं कह रहा हूँ कि मैं उस के मुँह पर कह सकता हूँ इस तरह़ कहकर गुनाह कबीरा (बड़ा) करते रहते हैं जिस का अ़ज़ाब और वबाल बहुत बड़ा है और समझते हैं कि हम गुनाह से बरी हैं।

ग़ीबत का तअ़ल्लुक़ चूंकि हुक़ूक़ुलू अ़िबाद से है, इस लिए ग़ीबत से बचने का एहतिमाम करना बहुत ज़रूरी है। एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ग़ीबत ज़िना से भी ज़्यादा सख़्त है। अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा सख़्त कैसे है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया एक शख़्स ज़िना

करता है, फिर तौबः कर लेता है अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ फ़रमा देता है और कोई किसी शख़्स की ग़ीबत करे तो उस वक़्त तक उस की मग़्फ़िरत न होगी जब तक वह शख़्स माफ़ न कर दे जिस की ग़ीबत की गई। **(मिश्कातुलु मसाबीह़ पेज नं० 415)**

बात यह है कि ग़ीबत करने में हुक़ूक़ुल्लाह और बन्दे का ह़क़ दोनों का ज़ाया (नष्ट) करना है। अल्लाह तआ़ला ने चूंकि ग़ीबत करने से मना फ़रमाया है इसलिए ग़ीबत करना ह़राम और गुनाह कबीरा (बड़ा) है और चूंकि बन्दे की भी बेइ़ज़्ज़ती की है इसलिए उस का ह़क़ यह है कि उस का नाम इ़ज़्ज़त से लिया जाए या कम से कम उस की बुराई न की जाती। जब ग़ीबत कर ले तो अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत तलब करे और जिस की ग़ीबत की है उस से माफ़ी माँग ले।

अल्बत्ता बाज़ लोगों ने यह फ़रमाया है कि अगर उसे ख़बर पहुँच गई हो तो माफ़ी माँग ले और अगर ख़बर न पहुँची हो तो उस के लिए इतनी बार मग़्फ़िरत की दुआ़ करे कि दिल यह गवाही दे दे कि ग़ीबत की तलाफ़ी हो गई।

एक ह़दीस में है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि तू उस के लिए इस्तिग़्फ़ार करे जिस की ग़ीबत की है और यूँ दुआ़ करे اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلَهٗ ऐ अल्लाह! हमारी और उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा दे।

(मिश्कातुलु मसाबीह़ पेज नं० 415)

"ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात को मुझे मेअ़राज कराई गई ऐसे लोगों पर मेरा गुज़र हुआ जिन के तांबे के नाख़ून थे, वह उन से अपने चेहरों और सीनों को छील रहे थे, मैंने जिब्रईल से पूछा कि कौन लोग हैं? उन्होंने बताया कि यह वह लोग हैं जो लोगों की बेआबरुई करते थे। **(रवाहु अबू दाऊद पेज नं० 313 भाग 2)**

ग़ीबत करने वाले आयते करीमा पर और इस सिल्सिले की वई़दों पर ग़ौर करें कि जिस तरह़ ग़ीबत करना ह़राम है उसी तरह़ ग़ीबत सुनना भी ह़राम है। अगर कोई शख़्स किसी की ग़ीबत (चुग़ली) कर रहा हो तो सुनने वाले पर लाज़िम है कि उस की काट करे और जिस की ग़ीबत हो रही है उसकी तरफ़ से दिफ़ाअ़ (बचाव) करे।

ह़ज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिस किसी ने अपने भाई की तरफ़ से दिफ़ाअ़ (बचाव) किया जिस का ग़ीबत के ज़रिये गोश्त खाया जा रहा था तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है कि उसे दोज़ख़ से आज़ाद कर दे और ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो भी मुसलमान अपने भाई की आबरु की तरफ़ से दिफ़ाअ़ (बचाव) करे, अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे होगा कि क़ियामत के दिन दोज़ख़ की आग को उस से दूर रखे। इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आयते करीमा **(सूरः रूम- 47)** وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ तिलावत फ़रमाई। **(मिश्कात पेज नं० 524)**

ह़ज़रत मआ़ज़ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने किसी मुनाफ़िक़ की बातों से किसी मोमिन का दिफ़ाअ़ (बचाव किया) अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन एक फ़रिश्ता

भेजेगा जो उस के गोश्त को दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ (Safe) रखेगा और जिस किसी ने मुसलमान में कोई ऐब ज़ाहिर किया अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ के पुल पर रोक देगा जब तक कि वह अपनी कही हुई बात से न निकल जाए यानी माफ़ी माँग कर उसे राज़ी न कर ले जिस को ऐबदार बताया था।

(रवाहु अबूदाऊद पेज नं० 313 भाग 2)

हज़रत जाबिर और अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस किसी मुसलमान की किसी जगह बेहुरमती (बेइज़्ज़ती) की जा रही हो और उसकी आबरु घटाई जा रही हो, वहाँ जो शख़्स मौजूद हो उसकी मदद न करे (यानी बुराई करने वाले को उस के अ़मल से न रोके) अल्लाह तआ़ला ऐसी जगह में उसे बग़ैर मदद के छोड़ेगा जहाँ वह अपनी मदद का ख़्वाहिशमन्द होगा और जिस किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद की जहाँ उस की आबरु घटाई जा रही हो और बेहुरमती की जा रही हो, अल्लाह तआ़ला उस शख़्स की ऐसी जगह मदद फ़रमाएगा जहाँ वह अपनी मदद का ख़्वाहिशमन्द होगा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 424)**

इन रिवायात से मालूम हुआ कि ग़ीबत करना भी ह़राम है और ग़ीबत सुनना भी ह़राम है। अगर किसी के सामने कोई शख़्स किसी की ग़ीबत करने लगे तो उस का दिफ़ाअ़ (बचाव) करे।

यह जो इर्शाद फ़रमायाः-

اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ इस बारे में ह़दीस शरीफ़ में एक वाक़िआ़ मरवी है और वह यह है कि एक सहाबी ने ज़िना कर लिया था जिन का नाम मअ़ज़ (रज़ि०) था, उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में चार मर्तबः इक़रार किया कि मैंने ऐसा किया है, फिर उन को संगसार (पत्थरों से मारकर हलाक करना) कर दिया गया।

एक शख़्स ने अपने साथी से राह चलते हुए कहा कि देखो! अल्लाह तआ़ला ने उसकी पर्दापोशी फ़रमाई, लेकिन उसे रहा न गया यहाँ तक कि कुत्ते की तरह़ उसको रज्म किया गया यानी पत्थरों से मारा गया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह बात सुन ली और ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, फिर कुछ दूर आगे बढ़े तो एक मुर्दे गधे पर से गुज़र हुआ जो ऊपर को टांग उठाये हुए पड़ा था, आप ने फ़रमाया फ़लाँ-फ़लाँ कहाँ हैं (एक बात कहने वाला दूसरा बात सुनने वाला) उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम ह़ाज़िर हैं, फ़रमाया तुम दोनों उतरो और इस मुरदार गधे की लाश से खाओ। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस में से कौन खा सकता है, आप ने फ़रमाया वह जो अभी-अभी तुम ने अपने भाई की बेईज़्ज़ती की है वह इस गधे की लाश खाने से ज़्यादा सख़्त है। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है बेशक वह इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा। **(रवाहु अबूदाऊद पेज नं० 252 भाग 2)**

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि मुर्दा शख़्स की ग़ीबत करना भी ह़राम है जैसा कि ज़िन्दा की ग़ीबत करना ह़राम है।

यह ज़रूरी नहीं कि ज़बान से जो ग़ीबत (चुग्ली) की जाए वही ग़ीबत हो, आँख के इशारे से, हाथ के इशारे से, नक़्ल उतारने से भी ग़ीबत होती है। किसी की औलाद में ऐब निकाले, किसी की बीवी का कोई

ऐ़ब बयान कर दे इस में दोहरी ग़ीबत है। बाप की भी, औलाद की भी, बीवी की भी और शौहर की भी। बहुत से लोगों को ग़ीबत का ज़ौक़ (शौक़) होता है जिस से मिलते हैं जहाँ मिलते हैं किसी न किसी की बुराई से ज़िक्र कर देते हैं और आख़िरत के अ़ज़ाब से बचने की कोई फ़िक्र नहीं करते।

(अगर किसी शख़्स के शर से मुसलमानों को महफ़ूज़ (Safe) रखने के लिए किसी ज़ालिम का ह़ाल बयान कर दिया जाए तो यह ग़ीबत ह़राम में नहीं आती।)

आठवीं नसीह़त-

आठवीं नसीह़त फिर फ़रमाया وَاتَّقُوا اللّٰهَ (और अल्लाह से डरो) इस में सब गुनाहों से बचने का हुक्म फ़रमा दिया और साथ ही إِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ भी फ़रमाया कि बिलाशुब्हा तौबः क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। जिस से कोई गुनाह हो गया हो वह तौबः करे और किसी बन्दे का कोई ह़क़ मार लिया हो या ग़ीबत की हो, बेआबरुई की हो उस से भी माफ़ करा ले। अल्लाह तआ़ला मेहरबानी फ़रमाएगा माफ़ फ़रमा देगा।

नवीं नसीह़त-

इस के बाद फ़रमाया कि ऐ लोगों! हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया और तुम्हारे छोटे-बड़े क़बीले बना दिये, ताकि आपस में जान पहचान हो कि यह फ़लाँ क़बीले का है और यह फ़लाँ ख़ानदान का है। इन्सान होने में बराबर हो, क्योंकि सब आदम और हव्वा (अ़लै०) की औलाद हो, लिहाज़ा आदमियत में किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं है और अस्ल फ़ज़ीलत वह है जो अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक है, वह फ़ज़ीलत तक़्वा है।

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ

(तुम में अल्लाह के नज़्दीक सब से ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सब से ज़्यादा मुत्तक़ी और परहेज़गार है।)

इस आयते करीमा में फ़ज़ीलत और इ़ज़्ज़त का मेअ़यार बता दिया कि इस के बरख़िलाफ़ लोगों का यह ह़ाल है कि बड़े-बड़े गुनाहों के करने वाले होते हैं, नमाज़ों को भी छोड़ते हैं, ज़कातें भी नहीं देते, फ़िस्क़ (गुनाह) व फ़ुजूर (खुले गुनाह) में मुब्तिला (Involve) ह़राम खाते हैं और ह़राम खिलाते हैं, लेकिन ख़ानदान की बड़ाई करते हैं। सैय्यद, हाशमी, सिद्दीक़ी, फ़ारूक़ी, उ़स्मानी, अ़लवी, शेख़, मलिक, चौधरी और दूसरी निस्बतों में फ़ख़्र करते हैं। सय्यद साह़ब हैं मगर दाढ़ी मूंडी हुई है, पतलून पहने हुए हैं, टाई लगी हुई है सम्बन्ध अपने नाना जान सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से करते हैं और आ़माल से कुछ भी नहीं, दुश्मनों के हाथ बिके हुए हैं और हैं सय्यद साह़ब। यही ह़ाल दूसरी निस्बतों के इस्तेमाल करने वालों का है, यह लोग जिन क़ौमों को कमतर (छोटा) जानते हैं उन के उ़लमा व सुलहा नमाज़ी और मुत्तक़ी होते हैं, लेकिन यह उन को ह़िक़ारत (घृणा) की नज़र से देखते हैं। कुछ लोग सफ़ेद और सुर्ख़ रंग होने की वजह से और कुछ लोग अ़रबी होने की वजह से अपनी फ़ज़ीलत की ख़ाम ख़याली में मुब्तिला (Involve) हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

إنك لست بخير من احمر ولا اسود إلا أن تفضله بتقوى (बेशक तू किसी गोरे और काले से बेहतर नहीं है सिवाय यह कि तक़्वा में बढ़ जाए।) (रवाहु अह़मद फ़ी मुस्नद अ़न् अबी ज़र (रज़ि०) 108/5)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मर्तबः सफ़ा पर चढ़कर क़ुरैश से ख़िताब (Address) फ़रमाया कि अपनी जान को दोज़ख़ से बचा लो, मैं क़ियामत के दिन तुम्हें कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता। 'बनी कअ़ब' 'बनी मुर्रह' 'बनी अ़ब्द शम्स' बनी अ़ब्द मनाफ़, बनी हाशिम, बनी अ़ब्दुल् मुत्तलिब, ऐ जमाअ़त बनी क़ुरैश! सब से अलग-अलग ख़िताब फ़रमाया और उन से यही फ़रमायाः-

انقذوا انفسكم من النار कि अपनी जानों को दोज़ख़ से बचाओ अपने चचा अ़ब्बास (रज़ि०) बिन मुत्तलिब और अपनी फूफी सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा और अपनी बेटी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से भी ख़ासतौर से यह ख़िताब फ़रमाया। (रवाहुल् बुख़ारी व मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 460)

ख़ान्दान की बुनियाद पर निजात नहीं होगी ईमान की बुनियाद पर निजात होगी और नेक अमल की बुनियाद पर दर्जात की बुलन्दी होगी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शफ़ाअ़त भी अहले ईमान ही के लिए होगी।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम से जाहिलियत की चीज़ों को और बापों पर फ़ख़्र करने को ख़त्म कर दिया है, अब तो बस मोमिन मुत्तक़ी है या फ़ाजिर (गुनहगार) शक़्क़ी है। इन्सान सब आदम के बेटे हैं आदम को मिट्टी से पैदा किया गया। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, मिश्कात पेज नं० 418)

दस्वीं नसीह़त–

إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (बेशक अल्लाह जानने वाला बाख़बर है।)

अल्लाह अ़लीम व ख़बीर है, किस का क्या दर्जा है कौन ईमानदार है कौन बेईमान है, कौन गुनाहों में लतपत है और आख़िरत में किस का क्या अन्जाम होने वाला है अल्लाह तआ़ला सब जानता है। हर एक को चाहिए कि तक़्वा अख़्तियार करने के लिए फ़िक्रमन्द हों ताकि मुत्तक़ियों में शामिल हों और उनके जैसा मामला हो।

आयते करीमा में शब्द شُعُوْبَ और शब्द قَبَائِل है। शुअ़ब ख़ानदान की जड़ को यानी ऊपर वाले ख़ानदान को और क़बीला उस की शाख़ को कहते हैं।

14-18

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۔ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ ۔ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۔ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۔ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ۔ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۔ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ۔ قُلْ
لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ

صٰدِقِيْنَ ۞ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞

केवल ज़बानी इस्लाम का दावा

'मुआलिमुल तन्ज़ील' में लिखा है कि आयते करीमा قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا क़बीला 'बनी असद' के चन्द लोगों के बारे में नाज़िल हुई। यह लोग मदीना मुनव्वरह में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए यह सूखा पड़ जाने वाला साल था, उन लोगों ने ज़ाहिर किया कि हम ने इस्लाम कुबूल कर लिया है हालाँकि दिल से मोमिन न थे। उन्होंने मदीना मुनव्वरह के रास्तों में गन्दगियाँ डाल कर ख़राब कर दिया और सामान के भाव भी महंगे कर दिये।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में सुबह़ शाम जाते थे और कहते थे कि आप के पास अ़रब के लोग अपनी जानों को लेकर आ गये और हम अपना सारा सामान और बाल बच्चों को लेकर आ गये और हम ने आप से जंग नहीं की जैसा कि फ़लाँ-फ़लाँ क़बीले ने आप से जंग की। यह बातें कहकर आप (सल्ल०) पर एह़सान जताते थे और सद्क़ात के माल आप से तलब करते थे।

अल्लाह तआ़ला ने ऊपर की आयत नाज़िल फ़रमाई। इर्शाद फ़रमाया قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا देहात के लोगों ने कहा कि हम ईमान लाये यानी दिल से हम ने आप की तस्दीक़ कर ली और आप के दीन को मान लिया।

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا (आप फ़रमा दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये और यह तुम्हारा ज़बानी दावा है)।

وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا (लेकिन तुम यह कह सकते हो कि हम ने ज़ाहिरी तौर पर बात मान ली है) और फ़रमाँबरदारी का एलान कर दिया है।

وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ (और तुम्हारे दिलों में ईमान दाख़िल नहीं हुआ है।)

केवल ज़बानी इक़रार और ज़ाहिरी तौर पर आ़माल अपना लेने से बन्दा मोमिन नहीं होता, इस्लाम तो दिल से स्वीकार करने या अपनाने का नाम है।

मुनाफ़िक़ीन के बारे में **(सूरः बक़रः-8)** में इर्शाद हैः-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ

(और बाज़ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए ह़ालांकि वह मोमिन नहीं है। बात यह है कि आदमी अल्लाह तआ़ला के रसूल को दिल से सच्चा जानने और मानने से मोमिन होता है। अगर यक़ीन न हो या यक़ीन तो हो लेकिन स्वीकार न हो यानी मानता न हो तो मोमिन नहीं होता।

जैसा कि फ़िरऔ़न की क़ौम के बारे में **(सूरः नम्ल आयत नं० 14** में) फ़रमायाः-

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا

(और उन्होंने इन आयात का इन्कार किया ह़ालाँकि उन्हें उन के सच्चा होने का यक़ीन था, यह उनके ज़ुल्म और घमण्ड की वजह से था।

बहुत से लोग दुनियावी ग़र्ज़ के लिए यह ज़ाहिर कर देते हैं कि हम मुसलमान हैं, लेकिन अन्दर से तस्दीक़ नहीं करते मुसलमान उन्हें ज़ाहिरी दावे की वजह से मुसलमान समझते हैं। हालाँकि वह अल्लाह तआला के नज़्दीक मोमिन नहीं होते।

फिर फ़रमाया وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا

और अगर अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे दिल व जान से ज़ाहिर (External) से भी बातिन (Internal) से भी लोगों के सामने भी तन्हाईयों में भी, तो अल्लाह तआला तुम्हारे आ़माल में से कोई कमी न फ़रमाएगा यानी तुम्हारे आ़माल का पूरा-पूरा सवाब देगा, बल्कि कम से कम दस गुना बढ़ा कर देगा।

इस में यह बात बता दी कि ईमान नेक अ़मल पर आमादा करता है, ईमान के साथ नेक अ़मल भी आख़िरत में काम आएँगे। दुनिया की चाहत के लिये यह कहना कि हम मोमिन हैं और ऊपरी तौर पर ईमान क़ुबूल कर लेना आख़िरत में फ़ायदेमन्द नहीं है वहाँ की निजात और अज्र व सवाब ईमान ह़क़ीक़ी पर मौक़ूफ़ (Based) है।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है) अगर सच्चे दिल से ईमान क़ुबूल कर लोगे तो इस से पहले जो किया है उस सब की माफ़ी हो जाएगी।

इस के बाद फ़रमायाः-

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

इस आयत में यह बताया कि सच्चे मोमिन वही हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाये यानी उन्होंने सच्चे दिल से तस्दीक़ की ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا (फिर उन्होंने शक नहीं किया)

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(और उन्होंने अल्लाह की राह में अपनी जानों और मालों से जिहाद किया) इस में काफ़िरों से और अपने नफ़्स से जिहाद करना और अपने को ग़ैर शरई कामों से और अपने ख़ानदान और दूसरे लोगों को शरीअ़ते इस्लामिया पर चलाने के लिये मेहनत और कोशिश करना सब आ जाता है। अपने नफ़्स को दीनी कामों में माल व जान ख़र्च करना बड़े मुजाहिदे की बात है, नफ़्स पर क़ाबू पाने के लिये फ़िक्रमन्द रहना ज़रूरी है।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ (यह वह लोग हैं जो सच्चे हैं)

यानी इन का दअ़वा-ए-ईमान सच्चा है वह देहाती लोग जिन्होंने ऊपर के दिल से दुनिया साज़ी के लिये اٰمَنَّا कह दिया यह लोग मोमिन नहीं हैं। ऊपर के शब्द में उन लोगों को मोमिन बताया गया है जो अल्लाह पर भी ईमान लाएँ और उस के रसूलों पर और उन्हें अपने ईमान में शक भी न हो।

इस में स्पष्ट तौर पर यह बता दिया कि केवल अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाना और तौह़ीद का क़ायल हो जाना ईमान नहीं है और न वह अल्लाह के यहाँ मोअ़तबर (Reliable) है कि जिस पर निजात का वादा है मोमिन होने के लिये मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाना भी फ़र्ज़ है। इस में उन लोगों

का रद्द है जो 'वह्दत अद्यान' की बात करते हैं और कहते हैं कि बस अल्लाह को मान लेना आख़िरत की निजात के लिये काफ़ी है, यह उन लोगों की गुमराही है।

'मुआलिमुल् तन्ज़ील' और 'रुहुल् मआनी' में लिखा है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो वह देहाती लोग जिन्होंने 'आमन्ना' آمَنَّا कहा था ख़िद्मते आली में हाज़िर हुए और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि वाक़ई हम सच्चे दिल से इस्लाम लाये हैं। इस पर यह आयते करीमा يَمُنُّونَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوا नाज़िल हुई यानी यह आप पर इस बात का एह़सान रखते हैं कि इन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

لَا تَمُنُّوا عَلَىَّ اِسْلَامَكُمْ

(आप फ़रमा दीजिए कि मुझ पर अपने मुसलमान होने का एह़सान मत जताओ।)

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

(बल्कि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपना एह़सान जताता है कि उस ने तुम्हें ईमान की हिदायत दे दी अगर तुम वाक़ई ईमान में सच्चे हो, जिस का अब दोबारा दावा कर रहे हो) तो तुम्हें अल्लाह का एह़सान मानना लाज़िम है।

अल्लाह तआ़ला को ज़ाहिर और बातिन सब का पता है, तुम्हारे दीन का भी इ़ल्म है। अल्लाह को यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि हमारा दीन इस्लाम है, अगर सच्चे मुसलमान होगे तो अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में मुसलमान शुमार हो जाओगे, फिर वह उसका बदला (Reward) दे देगा तुम्हें अपने दिलों को देखना चाहिए कि वाक़ई मोमिन हैं या नहीं?

इस आयत में जो يَمُنُّونَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوا फ़रमाया है। उस के बारे में यह सवाल होता है कि उन्होंने तो आमन्ना آمَنَّا कहा था उनकी बात को शब्द اَسْلَمُوا से करने में क्या ह़िक्मत है? इस के बारे में एक बात तो यह समझ में आई कि उन्होंने जो **'आमन्ना'** कहा था उन का पहले भी दअ़वा-ए-ईमान सह़ी न था और दोबारा जो उन्होंने यूँ कहा कि वाक़ई हम सच्चे दिल से इस्लाम लाये हैं यह भी ऊपर ही के दिल से था।

शब्द اَسْلَمُوا ने इस बात को ज़ाहिर कर दिया। यहाँ एक बात और समझ में आई, वह यह कि इस में एह़सान धरने वालों को तम्बीह है कि जब सच्चे दिल से ईमान लाने वालों के लिए इस्लाम क़ुबूल करने पर एह़सान धरना सह़ी नहीं तो ऊपर के दिल से इस्लाम का दावा करने वालों को अल्लाह तआ़ला पर और उस के रसूल (सल्ल०) पर एह़सान रखना कैसे सह़ी हो सकता है।

इस में रहती दुनिया तक आने वालों और इस्लाम क़ुबूल करने का दावा करने वालों को तम्बीह कर दी गई है कि जो शख़्स इस्लाम क़ुबूल करता है अगर सच्चे दिल से क़ुबूल करेगा तो अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक दीन इस्लाम का मानने वाला तस्लीम किया जाएगा और इसी के साथ यह बात भी बता दी कि जो शख़्स इस्लाम क़ुबूल करता है वह अपने भले के लिए क़ुबूल करता है, वह मुसलमानों पर एह़सान न रखे कि मैं मुसलमान हो गया तुम लोग मेरी रोज़ी रोटी का इन्तिज़ाम करो।

मुसलमानों को तो चाहिए कि वह उसकी मदद करें, लेकिन उसे चाहिए कि मुसलमानों पर एह़सान

न रखे और न उन से कुछ माँग करे, ख़ुद कमाये खाये। अगर काफ़िर ही रहता तब भी तो कुछ कमाता (रोज़ी कमाता) ज़माने कुफ़्र में भी तो मेहनत करता।

आख़िर में फ़रमाया إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

(और बेशक अल्लाह जानता है आसमान और ज़मीन की ग़ैब को) यानी छुपी हुई बातों और छुपी हुई चीज़ों को वह ख़ूब जानता है।

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को देखने वाला है।)

وهـذا آخـر تفسير سُورة الحجرات، والحمد للّٰه الذی بعزته ونعمته تتم الصالحات

وقد فرغت منه فی اللیلة الساعة من شهر ربیع الثانی فی١٤٣٥ هجریه والحمد للّٰه

اولا واٰخرا باطنًا وظاهرا۔

सूरः नं० 50

सूर-ए-क़ाफ़

सूरः क़ाफ़ का संक्षिप्त परिचय

नाम- पहली आयत के शुरुआत में मौजूद शब्द 'क़ाफ़' जो हुरुफ़ मुक़त्तआत (अलग-अलग अक्षर) में से है वहीं इस सूरः का नाम रख दिया है। इसे सूरः 'अल् बासिक़ात' भी कहा जाता है।

नाज़िल होने का ज़माना-

तमाम लोगों के नज़्दीक इस का ज़माना-ए-नुज़ूल मक्की दौर है। इब्ने अ़ब्बास और क़तादा से मरवी एक रिवायत के मुताबिक़ सिर्फ़ यह एक आयत وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ मदनी है।

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' के नज़्दीक सही यही है कि 'मुफ़स्सल' सूरतों की शुरुआत इसी सूरः से होती है। 'मालकिया' के नज़्दीक इस की शुरुआत सूरः अल् हुजूरात से होती है, जिस की तफ़्सीर अभी गुज़री। सूरः 'क़ाफ़' से लेकर सूरः 'अन्नास' तक क़ुर्आन करीम की सूरतों को तीन हिस्सों में बाँटा गया है।

सूरः 'क़ाफ़' से 'अल् नाज़िआत' तक की सूरतों को 'तिवाल-ए-मुफ़स्सल' सूरः 'अ़बस' से लेकर 'अल् लैल' तक को 'वस्त मुफ़स्सल' और 'अल् ज़ुहा' से 'अन्नास' तक 'क़िसार-ए-मुफ़स्सल' कहा जाता है।

फ़ज्र की नमाज़ में तिवाल-ए-मुफ़स्सल से पढ़ना, ज़ुह्र और अ़िशा में 'वस्त मुफ़स्सल' से और मग़रिब में 'क़िसार मुफ़स्सल' से पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है।

'इमाम अहमद' 'मुस्लिम' और 'अस्हाबे सुनन' ने रिवायत की है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने 'अबू वाक़िद लैसी' से पूछा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ईद की नमाज़ में क्या पढ़ते थे? तो उन्होंने कहा, 'क़ाफ़' और 'इक़तरबत'।

मुस्लिम, अबूदाऊद और नसई आदि ने 'उम्मे हिशाम बिन्त हारिसा बिन अल् नोअ़मान' से रिवायत की है कि मैंने सूरः क़ाफ़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुनकर याद किया था, आप (सल्ल०) हर जुमअ़ को उसे पढ़कर ख़ुत्बः देते थे। एक रिवायत में है आप (सल्ल०) हर जुमअ़ के दिन जब लोगों के सामने ख़ुत्बः देते तो उसे मेम्बर पर पढ़ते थे।

मक़्सद यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'सूरः क़ाफ़' ईद और जुमअ़ जैसे दिनों में पढ़ा करते थे, इसलिए कि इस में इन्सान की पैदाइश, मरने के बाद उठाए जाने और क़ियामत के दिन हिसाब व किताब, जन्नत व जहन्नम, सवाब व अज़ाब, तर्ग़ीब व तरहीब का ज़िक्र है, जिसको सुनने से आदमी के अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा होती है।

आयत नं० 1 से 19 तक

قٓ ۚ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ۝ بَلْ عَجِبُوٓا أَن جَآءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكَٰفِرُونَ هَٰذَا شَىْءٌ عَجِيبٌ ۝ أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا
تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا كِتَٰبٌ حَفِيظٌۢ ۝ بَلْ كَذَّبُوا۟ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ
فِىٓ أَمْرٍ مَّرِيجٍ ۝ أَفَلَمْ يَنظُرُوٓا۟ إِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَٰهَا وَزَيَّنَّٰهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَٰهَا وَأَلْقَيْنَا
فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبَٰرَكًا
فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ جَنَّٰتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝ وَالنَّخْلَ بَاسِقَٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِۦ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ
الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَٰبُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَٰنُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَٰبُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ
الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِى لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَٰنَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِۦ
نَفْسُهُۥ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا
لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝

अनुवाद-

(1) क़ाफ़; क़सम है क़ुर्आन मजीद की (2) बल्कि इन्हें इस बात पर तअ़ज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया, फिर इन्कार करने वाले कहने लगे, ''यह तो अ़जीब बात है; (3) क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे (तो दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे)?- यह पलटना (ज़िन्दा होना) तो बहुत दूर की बात है।'' (4) 'हम' जानते हैं धरती उनमें जो कुछ (शरीर को खाकर) कम करती है, और 'हमारे' पास सुरक्षित रखने वाली एक किताब है। (5) बल्कि उन्होंने झुठला दिया जबकि हक़ उनके पास आ गया, इसलिए वे उलझन में पड़े हुए हैं। (6) क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा! 'हमने' उसको कैसे बनाया और सजाया, और इसमें कोई दराड़ नहीं; (7) और ज़मीन को 'हमने' फैलाया और इसमें पहाड़ डाल दिये और हर तरह की इसमें सुन्दर चीज़ें उगायीं; (8) (ताकि हर उस बन्दे की) आँख खोल दे और रुजूअ़ करने वाले के लिए नसीहत हो। (9) और 'हमने' आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और फसल के अनाज (भी जो काटी जाती हैं,) (10) और खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं, (11) बन्दों की रोज़ी के लिए; और 'हमने' उस (पानी) से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह (क़ियामत के दिन) निकलना होगा। (12) उनसे पहले नूह़ की क़ौम और अस्हाबुर्रस, और समूद झुठला चुके हैं; (13) और आ़द और फ़िरऔ़न और लूत के भाई भी; (14) और अल्-ऐका वाले और तुब्बा की क़ौम भी; इन सब ने रसूलों को झुठलाया, तो 'हमारा' वादा उन पर पूरा हो कर रहा। (15) क्या 'हम' पहली बार पैदा कर के थक गये हैं?! (नहीं,) बल्कि यह एक नई पैदाइश के बारे में शक में (पड़े हुए) हैं। (16) और 'हमने' इन्सान को पैदा किया है और 'हम' जानते हैं जो बातें उसके जी में आती हैं, और 'हम' उससे, उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं। (17) जब दो (फ़रिश्ते) लिखने वाले दाएँ और बाएँ बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं; (18) वह कोई भी शब्द नहीं निकालता मगर उसके पास एक निरीक्षक (निगराँ) मौजूद होता है। (19) और मौत की बेहोशी सत्य ले कर आ पहुँची, (ऐ इन्सान) यह है वह चीज़ जिससे तू भागता था।

आयत नं० 1 से 19 तक की व्याख्या

1-2 قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ

'क़ाफ़' यह शब्द मुक़त्तआ़त हैं (अलग-अलग अक्षर) जिस के अर्थ व मतलब का इ़ल्म अल्लाह को ही है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने किताब (क़ुर्आन) की क़सम खाई है, जो बहुत ही बुलन्द मर्तबः वाली किताब है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस की तक़्दीर पर "إن محمدا الرسول أمين" माना है। यानी बुलन्द मक़ाम क़ुर्आन करीम की क़सम कि मुहम्मद अल्लाह के अमानतदार रसूल हैं। बाज़ ने इस की तक़्दीर أنزلناه إليك لتنذر به الناس माना है यानी बुलन्द मक़ाम क़ुर्आन की क़सम है, हम ने इस क़ुर्आन को आप पर इसलिए नाज़िल किया है ताकि आप इसे पढ़कर लोगों को अ़ज़ाब से डराएँ।

लेकिन मुश्रिकीने मक्का ने मुह़म्मद के रसूल होने में शक किया, बल्कि इस से भी आगे बढ़कर उन्होंने उन की बेअ़सत को एक अ़जीब बात क़रार दिया और कहा कि यह कैसे हो सकता है कि हमारे ही दर्मियान का एक शख़्स रसूल बनाकर हमें अल्लाह से डराने के लिए भेज दिया जाए।

فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ में पिछली बात को और साफ कर दिया गया है कि इस से ज़्यादा ह़ैरतअंगेज़ बात नहीं हो सकती कि मुह़म्मद को नबी बना दिया जाए जो हमारे ही जैसा आदमी है।

'क़तादा' कहते हैं कि इस से इशारा 'एक अल्लाह की ओर अ़िबादत की दअ़वत' है, यानी यह अ़जीब बात है कि हमें तमाम मअ़बूदों (उपास्यों) को छोड़कर सिर्फ़ एक मअ़बूद (उपास्य) की अ़िबादत की दअ़वत दी जा रही है। बाज़ लोगों का ख़याल है कि काफ़िरों को (बअ़स बअ़दल मौत की बात पर) तअ़ज्जुब था, ऐसी सूरत में هٰذَا की तफ़्सीर बाद वाली आयत ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا से होती है यानी मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर के उठाया जाना बड़ी अ़जीब बात है।

3 ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيْدٌ ۝

मुश्रिकीने मक्का ने नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत का ही इन्कार नहीं किया बल्कि मरने के बाद उठाए जाने का भी इन्कार किया, इसलिए कि आप (सल्ल०) उन्हें क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से डराते थे जो मरने के बाद उठाए जाने के बाद आने वाला है। इस आयते करीमा में उन की इसी ह़ैरत व इन्कार को बतौर ताकीद बयान किया गया है कि क्या जब हम मरने के बाद मिट्टी हो जाएँगे तो दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे जैसा कि मुह़म्मद हमें क़ुर्आन पढ़कर उस की यक़ीन दहानी कराते हैं। हमारा दोबारा ज़िन्दा किया जाना एक ख़याली बात है, जो बहुत दूर की बात है।

4 قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝

इसमें मरने के बाद उठाए जाने की दलील है यानी मरने के बाद जब इन्सान दफ़्न कर दिया जाता है तो ज़मीन उस के जिस्म को धीरे-धीरे खा जाती है, अल्लाह तआ़ला को इस का ख़ूब इ़ल्म है। इसलिए

कि उस का इल्म हर चीज़ को शामिल है, इस का इल्म अहम है, कोई चीज़ उस के इल्म (ज्ञान की हद) से अलग नहीं है। ऐसे क़ादिरे मुत्लक़ और अ़ल्लामुल् ग़ुयूब (छुपी हुई बातों के मानने वाले) के लिए यह बात कैसे असम्भव (Impossible) मानी जाती है कि वह दोबारा मुर्दों को ज़िन्दा करेगा?

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि 'लौहे महफ़ूज़' में तमाम इन्सानों की तअ़दाद, उन के नाम और हर चीज़ महफ़ूज़ है और जब क़ियामत आएगी तो जैसे वह पहली बार पैदा किये गये थे दोबारा उसी तरह पैदा किये जाएँगे, किसी चीज़ में ज़र्रह बराबर भी कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।

5 بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝

मुश्रिकीने मक्का ने केवल यही जुर्म नहीं किया कि उन्होंने मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार किया हो, बल्कि इस से भी बड़ा जुर्म उन का यह है कि उन्होंने क़ुर्आन करीम का इन्कार किया और नबी करीम (सल्ल०) का इन्कार किया, जिन पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ और इस मामले में वह बड़ी बेचैनी में मुब्तिला (Involve) हैं, किसी एक हाल पर उन को क़रार नहीं है।

रसूल-ए-करीम (सल्ल०) को यह काफ़िर कभी जादूगर, कभी शायर कहते हैं और क़ुर्आन को क़िस्से की किताब बताते हैं, उन्हें ख़ुद मालूम नहीं कि वह क्या कहना चाहते हैं।

6 اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَ زَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝

मरने के बाद दोबारा उठाए जाने के अक़ीदे को ही मुश्रिकीने मक्का के दिल व दिमाग़ में बैठाने के लिए कहा जा रहा है कि यह मरने के बाद भी जिन्दगी और क़ियामत का इन्कार करने वाले क्या अपनी आँखों से अपने सरों के ऊपर ऊँचे आसमान को नहीं देखते हैं कि किस तरह़ अल्लाह ने बिना देखे जाने वाले सुतूनों (Pillars) के सहारे इसे जमा रखा है और इसे सूरज व चाँद और अनगिनत सितारों के ज़रिये सजाया हुआ है जिसमें कोई दरार नहीं है।

क्या वह अल्लाह जो ऐसे आसमान की पैदाइश पर क़ुद्रत रखता है वह मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं है? वह ज़रूर इस बात पर क़ादिर है कि जिसे उस ने पहली बार पैदा किया, उसे फिर मौत के घाट उतार देगा और उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा।

7-8 وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝

क्या यह इन्कारी मरने के बाद दोबारा उठाए जाने को नहीं देखते कि हम ने ज़मीन को फैला दिया है और उस के ऊपर पहाड़ों के खूंटे गाड़ दिये हैं? ताकि ज़मीन अपने अन्दुरुनी जोश की वजह से हिलने न लगे और इस में भाँति-भाँति के ख़ूबसूरत पौधे उगाये हैं, जो अपने ख़ूबसूरती की वजह से मुस्कुरा रहे हैं।

क़ुद्रत के यह नज़्ज़ारे हर उस बन्दे को दअ़वते फ़िक्र देते हैं जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ होते (पलटते) हैं और उस को राज़ी करने की फ़िक्र में लगे रहते हैं। जो अल्लाह इन बातों पर क़ादिर है वह

यक़ीनन इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

9-11 وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۙ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ
رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ

अल्लाह ने आसमानों से फायदे वाला पानी बरसाया है, जिस के ज़रिये उस ने फलदार दरख़्त उगाये और गेहूँ, जौ और दूसरे दाने उगाये, खजूरों के लम्बे-लम्बे पेड़ उगाये, जिन के फलों के खोशे तह-ब-तह होते हैं। अल्लाह ने यह सारी चीज़ें अपने बन्दों की रोज़ी के लिए पैदा किये।

और अल्लाह ने पानी के ज़रिये सूखी यानी मुर्दा ज़मीनों में जान डाल दी और उन में विभिन्न प्रकार के पौधे, फूल और फल उगाये। जिस तरह़ अल्लाह की क़ुद्रत से पानी के ज़रिये मुर्दा ज़मीन में जान पड़ गई, उसी तरह़ क़ियामत के दिन मुर्दे अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर मैदाने मह़शर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे।

12-14 كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۙ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ وَّاَصْحٰبُ
الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ

यहाँ भी यही साबित करना है कि मरने के बाद उठाया जाना सत्य है। तमाम अम्बिया-ए-किराम ने अपनी क़ौमों को यही बताया कि मरने के बाद उठाया जाना है और क़ियामत सत्य है, इस में कोई शुब्हा नहीं और जो व्यक्ति भी इस का इन्कारी होगा अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब देगा।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ुरैश वालों से पहले क़ौमे नूह़ ने भी क़ियामत के दिन, बदला, सज़ा और ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की नुबूव्वत का इन्कार किया था। ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) साढ़े नौ सौ साल तक उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे, लेकिन बहुत कम लोगों ने उन की दअ़वत क़ुबूल की।

'अस्ह़ाबे अल् रर्स' से एक ऐसी क़ौम मुराद है जिस ने अपने नबी को कुंवा में फेंक दिया था। बाज़ के नज़्दीक हज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) की क़ौम मुराद है और बाज़ के नज़्दीक ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर ईमान लाने वालों की एक जमाअ़त या 'अस्ह़ाबे उख़्दूद' यानी वह लोग जिन्होंने एक बड़ी आग जलाकर उस में अपनी बस्ती के मोमिनों को डाल दिया था।

'क़ौमे समूद' ने 'ह़ज़रत सालेह़' (अ़लै०) पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया और बतौर चमत्कार ज़ाहिर होने वाली ऊँटनी को हलाक कर दिया और 'क़ौमे समूद' ने 'ह़ज़रत हूद' (अ़लै०) पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया था और मूर्ति पूजा पर जमे रहे और फ़िरऔ़न ने हज़रत मूसा (अ़लै०) की नुबूव्वत पर ईमान लाने से इन्कार किया और क़ौमे लूत के लोग औ़रतों के बजाए मर्दों के साथ बद्कारी कर के अपनी शहवत पूरी करते थे और अस्ह़ाबे ऐका ने हज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) की दअ़वत को ठुकरा दिया था और नापतौल में कमी बेशी करते थे।

सूरः शुअ़रा आयत नं० (176) में तफ़्सील गुज़र चुकी है और 'तुब्बअ़' हिमयर की क़ौम ने भी सरकशी की राह अपनाई और दीन की सही़ बातों को ठुकरा दिया था। सूरः दुख़ान आयत नं० (37) की तफ़्सीर में तफ़्सील गुज़र चुकी है। इन तमाम क़ौमों ने अपने-अपने रसूलों की और उन के लाये हुए दीन

को झुठलाया तो अल्लाह का अ़ज़ाब उन के लिए वाजिब हो गया।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस तफ़्सील से मक़्सद मुश्रिकीने क़ुरैश को डराना और धमकाना है कि अगर उन्होंने अपनी ह़ालत नहीं बदली और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झुठलाने से बाज़ न आए तो उन पर भी अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हीं क़ौमों की तरह़ नाज़िल होगा।

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली देनी भी मक़्सूद है कि अगर आप की क़ौम आप को झुठलाती है तो ग़म न कीजिए क्योंकि उन से पहली क़ौमों का भी यही तरीका रहा है कि उन्होंने अपने नबियों को झुठलाया और उन में से बहुत कम लोगों ने उन की दअ़वत क़ुबूल की।

15 أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया एक वक़्त ऐसा था कि आसमान व ज़मीन में कोई मख़्लूक़ नहीं पाई जाती थी, हम ने उन्हें पहली बार पैदा किया और जब हम पहली बार मख़्लूक़ात को पैदा करने से बेबस नहीं थे तो उन्हें दोबारा पैदा करने से कैसे बेबस रहेंगें।

और मुश्रिकीने मक्का जब स्वीकार (Accept) करते हैं कि अल्लाह ने ही तमाम मख़्लूक़ात को पहली बार पैदा किया है तो फिर वह इस का क्यों इन्कार करते हैं कि वह उन्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है। उन की कम अक़्ली की वजह से यह बात उन की समझ में नहीं आती है कि मरने के बाद जब इन्सान के अंग बिखर जाएँगे और गल सड़कर मिट्टी में मिल जाएँगे, तो अल्लाह तआ़ला उन अंगो को दोबारा इकट्ठा करेगा और उस की क़ुदरत से उन में ज़िन्दगी आ जाएगी। वह भूल जाते हैं कि अल्लाह क़ादिरे मुत़्लक़ के लिए यह काम बहुत ही आसान है।

16-18 وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपनी कुछ क़ुदरतों का ज़िक्र फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को मिट्टी से पैदा किया और इस का इ़ल्म उस की तमाम बातों को घेरे हुए है यहाँ तक कि वह उन बातों को भी जानता है, जिन का इस के दिल में एह़सास होता है और वह अपने बन्दे से शह रग (गले की नस) से भी ज़्यादा क़रीब है, वह इस के तमाम ह़ालात से पूरी ख़बर रखता है। इस इन्सान के साथ फ़रिश्तों का पाया जाना और उन के ज़रिये इस के आ़माल का रिकार्ड तैयार करना केवल गवाह बनाने के लिए है।

'ह़सन' 'क़तादा' और 'मुजाहिद' कहते हैं कि हर इन्सान के साथ अल्लाह ने दो फ़रिश्ते लगा दिए हैं जो उस के दाएँ और बाएँ रहते हैं और उस की नेकियों और बुराईयों को लिखते रहते हैं। मुजाहिद का दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हर इन्सान के साथ दो रात के और दो दिन के फ़रिश्ते लगा दिये हैं, जो उस के आ़माल को लिखते रहते हैं।

इन्सान जैसे ही अपनी ज़बान से कोई बात निकालता है, उस पर तय किये हुए फ़रिश्ते फ़ौरन उस

के नाम-ए-आ़माल में लिख लेते हैं, दाएँ तरफ़ का फ़रिश्ता उस के नेक आ़माल को और बाएँ तरफ़ का उस के बुरे आ़माल को दर्ज कर लेता है और वह फ़रिश्ते इन्तेहाई चौकन्ना और हर वक्त तैयार रहते हैं, अपनी ज़िम्मेदारी से कभी ग़ाफ़िल (या सुस्त) नहीं होते हैं।

19 وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝

यहाँ तक कि दुनिया से उस के रुख़सत होने का वक़्त आ जाता है और मौत की सख़्ती उस पर तारी हो जाती है और मरने के बाद उठाए जाने और क़ियामत के बदले का नक़्शा उस की आँखों के सामने आ जाता है और जिन ह़क़ीक़तों का वह इन्कार करता था उन से पर्दा उठ जाता है। उस वक़्त उस से कहा जाता है कि यही वह मौत है जिस से तुम राहे फ़रार अख़्तियार कर रहे थे।

आयत नं० 20 से 45 तक

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝۲۰ وَجَاۗءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَاۗىِٕقٌ وَّشَهِيْدٌ ۝۲۱ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ
غِطَاۗءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝۲۲ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝۲۳ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝۲۴ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ
مُّرِيْبِۨ ۝۲۵ الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝۲۶ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝۲۷
قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝۲۸ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝۲۹ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ
وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝۳۰ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝۳۱ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝۳۲ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ
بِالْغَيْبِ وَجَاۗءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِۨ ۝۳۳ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝۳۴ لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝۳۵ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ
قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ۭ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝۳۶ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ
وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝۳۷ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ڰ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝۳۸ فَاصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝۳۹ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝۴۰ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ
قَرِيْبٍ ۝۴۱ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝۴۲ اِنَّا نَحْنُ نُـحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝۴۳ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ
عَنْهُمْ سِرَاعًا ۭ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝۴۴ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۣ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝۴۵

अनुवाद–

(20) और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, यही वह दिन है जिससे धमकाया गया था। (21) और हर व्यक्ति इस हाल में (हाज़िर होगा) कि इसके साथ एक हाँकने वाला है और एक गवाही देने वाला। (22) इस चीज़ की ओर से तू ग़फ़लत में रहा, 'हमने' वह पर्दा हटा दिया जो तुझ पर पड़ा था, इसलिए आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है। (23) और उसके साथी (फ़रिश्ते) ने कहा, ''यह जो (आमालनामा) मेरे पास था, हाज़िर है।'' (24) ''डाल दो, जहन्नम में! हर काफ़िर दुश्मन को; (25) जो भलाई से रोकने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला, शक में डालने वाला था; (26) जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) ठहरा रखा था, तो डाल दो इसको सख़्त अ़ज़ाब में।'' (27) उसके साथी ने कहा, ''ऐ हमारे 'रब'! मैंने तो इसको सरकश नहीं बनाया था, बल्कि यह खुद दूर की गुमराही में पड़ गया था।'' (28) कहेगा, 'मेरे' पास झगड़ा न करो, 'मैं ने' तुम्हें पहले ही 'अपने' अ़ज़ाब से ख़बरदार कर दिया था; (29) 'मेरे' यहाँ बात बदली नहीं जाती और 'मैं' बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ।'' (30) उस दिन 'हम' जहन्नम से पूछेंगे, ''क्या तू भर गयी?'' और वह कहेगी, ''क्या कुछ और भी हैं?'' (31) और जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी, (जो) कुछ भी दूर न होगी; (32) 'यही' है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रूजूअ़ करने वाले, बड़ी निगरानी करने वाले के लिए; (33) जो 'रह़मान' से बिना देखे डरता रहा और रूजूअ़ होने वाले दिल के साथ हाज़िर हुआ।'' (34) ''दाख़िल हो जाओ इस (जन्नत) में सलामती के साथ, यह हमेशा रहने का दिन है; (35) वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो चाहेंगे, और 'हमारे' पास उससे ज़्यादा (बहुत कुछ) है। (36) और उनसे पहले 'हम' कितनी ही नस्लों को तबाह कर चुके हैं, वह शक्ति में इनसे कहीं

बढ़-चढ़ कर थे; तो उन्होंने शहरों को छान मारा, तो उन्हें कहाँ पनाह की जगह मिली? (37) बेशक इसमें नसीहत है, हर उस व्यक्ति के लिए जो 'दिल' रखता हो या हाज़िर रह कर बात सुने। (38) और 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा किया, और 'हमें' कोई थकान नहीं आई। (39) तो सब्र करो इनकी बातों पर, और पाकी बयान करो अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ; सूरज के निकलने और उसके डूबने से पहले, (40) और रात के कुछ हिस्से में भी उसकी पाकी बयान करो और सज्दों (नमाज़) के बाद भी। (41) और कान लगा कर सुन लेना! जिस दिन पुकारने वाला बहुत क़रीब से पुकारेगा, (42) उस दिन यह उस हौलनाक आवाज़ को सत्य के साथ सुनेंगे, वही निकल खड़े होने का दिन है; (43) 'हम' ही ज़िन्दा करते हैं और 'हम' ही मौत देते हैं, और 'हमारी' ही ओर लौटना है। (44) उस दिन धरती उनके ऊपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल रहे होंगे, यह इकट्ठा करना 'हमारे' लिए बहुत आसान है। (45) 'हम' जानते हैं जो कुछ ये लोग कहते हैं, और आप उन पर ज़बर्दस्ती करने वाले तो नहीं हैं, तो इस कुर्आन के ज़रिये से नसीहत कीजिए जो हमारे वादे से डरता हो।

आयत नं० 20 से 45 तक की व्याख्या

20 وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ

जिस दिन इस्राफ़ील (अ़लै०) मरने के बाद दोबारा उठाए जाने का सूर फूंक देंगे और सारे लोग घबरा कर मैदाने महशर की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे, वही काफ़िरों के अ़ज़ाब का दिन होगा। अगरचे वह दिन मोमिनों के साथ किये गये वादा के पूरा करने का भी होगा, लेकिन काफ़िरों के लिए तैयार किये गये अ़ज़ाबे जहन्नम की हौलनाकी बयान करने के लिए यहाँ सिर्फ़ अ़ज़ाब का ज़िक्र आया है।

21 وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ

सूर फूँके जाने के बाद हर आदमी के पीछे दो फ़रिश्ते लग जाएँगे, एक उसे मैदाने महशर की तरफ़ हांकेगा और दूसरा फ़रिश्ता उस के नेक और बुरे आ़माल की गवाही दे रहा होगा।

'ह़सन' 'क़तादह' और 'मुजाहिद' का यही क़ौल है और ज़िहाक कहते हैं कि हांकने वाला तो फ़रिश्ता होगा और गवाह उस आदमी के हाथ पैर होंगे।

22 لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ

उस दिन जिन्नों और इन्सानों से कहा जाएगा कि तुम सब आख़िरत के दिन और उस की हौलनाकियों से ग़ाफ़िल और दुनिया और उस की लज़्ज़तों में मश्गूल थे, तो आज हम ने तुम्हारी आँखों के सामने से पर्दा हटा दिया है, अब तुम हर चीज़ को अपने सामने पा रहे हो।

'मुजाहिद' ने इस की तफ़्सीर यह बयान की है कि आज तुम्हारी नज़र तुम्हारे अ़मल के तराज़ू पर ऐसी लगी है कि हटती नहीं, तुम्हारी निगाह में तेज़ी आ गई है, बड़े ग़ौर से देख रहे हो कि तुम्हारी नेकियों का पलड़ा कहीं हल्का तो नहीं हो रहा है।

23 وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ

‘क़रीन’ का मतलब या तो वह फ़रिश्ता है जो हर आदमी के साथ दुनिया में लगा होता है और उस के नेक व बुरे आ़माल लिखता रहता है, तो आयत की तफ़्सीर यह होगी कि वह फ़रिश्ता अल्लाह से कहेगा कि यह है वह आदमी और इस के आ़माल जिस के पीछे तूने मुझे लगाया था और अगर ‘क़रीन’ से मुराद वह शैतान है जिसे दुनिया में उस का साथी बना दिया गया था ताकि उसे गुमराह करता रहे तो तफ़्सीर यह होगी कि वह शैतान रब्बुल् आ़लमीन से कहेगा कि यह है वह आदमी जिसे गुमराह करने के लिए तूने मुझे इस के पीछे लगा दिया था, मैंने इसे गुमराह कर के जहन्नम के लिए तैयार कर दिया है।

24 اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपनी मख़्लूक़ात के दर्मियान अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करेगा और जब काफ़िर का हिसाब हो चुकेगा, तो अल्लाह तआ़ला ‘सायक़’ व ‘शाहिद’ (गवाह) दोनों फ़रिश्तों से कहेगा कि पकड़ो इस अल्लाह के इन्कारी और रसूल की रिसालत का इन्कार करने वाले सरकश काफ़िर को और इसे जहन्नम में डाल दो।

25 مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ

इसे अल्लाह ने माल दिया था तो (उस पर साँप बनकर बैठ गया था और) उस में अल्लाह और उस के मुह़ताज बन्दों का ह़क़ भूल गया था, लोगों पर ज़बान और हाथ दोनों से ज़्यादती करता था, उन्हें गालियाँ देता था, उन की इ़ज़्ज़त पर ह़मले करता था, ताक़त के नशे में उन पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ता था और दलायल के बावजूद दीन-ए-इस्लाम की ह़क़्क़ानियत और रसूल (सल्ल०) की सच्चाई में शक करता था।

26 الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ

इस की सब से बद्तरीन सिफ़त यह थी कि यह अल्लाह के साथ दूसरे मअ़बूदों (उपास्यों) की भी अ़िबादत करता था। इसलिए ‘सायक़’ व ‘शाहिद’ फ़रिश्तो, इसे जहन्नम के उस गढ़े में डाल दो जिस का अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त है।

27 قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ

वह शैतान जिसे दुनिया में उस काफ़िर का साथी बना दिया गया था, उस दिन उस से अपने बरी होने का एलान कर देगा और कहेगा कि ऐ हमारे रब! इसे मैंने गुमराह नहीं किया था, ह़क़ीक़त में यह ख़ुद ही राहे ह़क़ से बहुत दूर था। अगर यह तौह़ीद की राह को छोड़कर शिर्क की राह पर न चल पड़ा होता और गुनाहों के ज़रिये अपनी फ़िक्र को खत्म न कर लिया होता तो मेरी चाल में न आता और मेरे वस्वसों को क़ुबूल न करता।

‘इब्ने जरीर तब्री’ लिखते हैं कि यहाँ काफ़िर के शैतान साथी की बात इसलिए नक़्ल की गई है ताकि

इन्सानों को मालूम हो जाए कि क़ियामत के दिन कुफ़्र और उन के शैतान साथी एक दूसरे से अलग हो जाएँगे।

28 قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ۝

रब्बुल् आ़लमीन के काफिर और उन के शैतान साथियों को आपस में झगड़ता देखकर कहेंगे कि अब तुम लोग मेरे पास न झगड़ो, इस का कोई फ़ायदा नहीं। मैंने दुनिया में अपनी किताब में और अपने रसूल की ज़बानी यह बात स्पष्ट कर दी थी कि जो शख़्स अल्लाह का इन्कार करेगा, उस के साथ दूसरों को शरीक बनाएगा और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा उस का ठिकाना जहन्नम होगा, इसलिए आज के दिन तुम दोनों का ठिकाना जहन्नम है।

29 مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

इब्लीस ने ह़ज़रत आदम व ह़व्वा को वस्वसा में डालकर जब जन्नत से निकलवा दिया था उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से कहा था لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ "मैं जहन्नम को जरूर जिन्नों और इन्सानों से भर दूँगा"। **(सूरः हूद आयत नं० 119)**

इसी फ़ैसले की तरफ़ इशारा है कि मैंने काफ़िरों और रसूलों की नाफ़रमानी करने वालों के बारे में जो फ़ैसला कर दिया है वह हरगिज़ नहीं बदलेगा और न मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म करूँगा कि फ़रमाँबरदार को अ़ज़ाब दूँ या काफ़िर व नाफ़रमान को जन्नत में दाख़िल कर दूँ।

यह कि मैंने बन्दों को क़ुबूले ह़क़ की योग्यता दी, उन्हें भलाई व बुराई से आगाह किया और राहे ह़क़ की तरफ़ उन की रहनुमाई (Guidance) कर दी, इसलिए मैं नहीं बल्कि वह ख़ुद ही अपने ह़क़ में ज़ालिम हैं कि रौशनी और नूर को छोड़कर अंधेरे को अख़्तियार करते हैं और हमेशा की नेअ़मत यानी जन्नत को नज़रअन्दाज़ कर के फानी (मिटने वाली) दुनियावी लज़्ज़तों और शहवतों के पीछे दौड़ते हैं।

30 يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस से जो यह बात कही थी कि मैं जिन्नों और इन्सानों के ज़रिये जहन्नम को भर दूँगा, उस के मुताबिक़ जब जहन्नम भर जाएगी तो अल्लाह तआ़ला उस से पूछेगा कि क्या तुम भर गई? तो जहन्नम कहेगी कि हाँ, मैं बिल्कुल भर गई और अब कोई जगह खाली नहीं है। 'अ़ता' 'मुजाहिद' और 'मक़ातिल बिन सुलेमान' ने यही तफ़्सीर बयान की है।

'इमाम बुख़ारी' और 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' आदि ने यह तफ़्सीर बयान की है कि अल्लाह तआ़ला अपने वादे के मुताबिक़ जहन्नम में जिन्नों और इन्सानों को डालता जाएगा और जहन्नम मज़ीद जहन्नमियों का मुताल्बा (Requirement) करती रहेगी यहाँ तक कि रब्बुल् आ़लमीन उस में अपना क़दम रख देगा, तो वह सुकड़ जाएगी और कहने लगेगी कि बस-बस, तेरी इ़ज़्ज़त व बख़्शिश की क़सम।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रत अनस (रज़ि०) की ह़दीस रिवायत की है, जिस का मतलब वह है जो ऊपर बयान किया गया।

31 وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ۝

क़ियामत के दिन काफ़िरों का हाल बयान किये जाने के बाद अब मोमिनों का हाल बयान किया जा रहा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उस दिन जन्नत मुत्तक़ियों के बिल्कुल क़रीब कर दी जाएगी, इतनी क़रीब कि मैदाने महशर से ही उस का नज़्ज़ारा करेंगे और उन नेअ़मतों को देखेंगे जिन्हें दुनिया में न किसी आँख ने देखा था न किसी कान ने सुना था और न किसी इन्सान के दिल में उसका गुज़र हुआ था।

32 هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ۝

अहले जन्नत जब जन्नत और उस की नेअ़मतों को मैदाने महशर से ही देख-देखकर ख़ुश हो रहे होंगे, तो अल्लाह तआला उन से कहेगा कि यही वह जन्नत है जिस का तुम से दुनिया में वादा किया गया था और कहा गया था कि हर वह शख़्स जो दुनिया में गुनाहों से मुँह मोड़कर अल्लाह की बन्दगी करेगा और उस के फ़र्ज़ किये हुए आमाल व अहकाम (निर्देशों) को बजा लाएगा और अमानतों की हिफ़ाज़त करेगा, अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।

33 مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ۝

अहले जन्नत के जो गुण ऊपर की आयत में बयान किये गये हैं, उन्हीं को ताकीद के तौर पर फिर कहा जा रहा है कि यह वह लोग होंगे जो अल्लाह से उस हाल में भी डरते हैं जब उन्हें कोई नहीं देख रहा होता है, वह इस दुनिया में इस यक़ीन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं कि चाहे कोई इन्सान उन्हें न देखता हो, लेकिन अल्लाह तो उन्हें हर जगह और हर हाल में देख रहा है और उन की दूसरी सिफ़त यह है कि वह हमेशा अपने रब के पास अपने गुनाहों से तौबः करते रहते हैं और जिन कामों को अल्लाह पसन्द नहीं करता उन के क़रीब नहीं फटकते हैं।

34-35 اِدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ۝

इन गुणों वाले मुत्तक़ियों से उस दिन कहा जाएगा कि अब तुम लोग जन्नत में हमेशा के लिए पूरे अम्न व सुकून के साथ दाख़िल हो जाओ, यहाँ तुम्हें न पिछले दिनों का ग़म होगा और न भविष्य का ख़ौफ़, बड़े चैन व सुकून की ज़िन्दगी होगी, ग़म व मलाल का साया भी उन के दिलों पर नहीं पड़ेगा और जिस चीज़ की भी ख़्वाहिश करेंगे वह चीज़ तुरन्त उन के पास होगी और इन तमाम नेअ़मतों के अ़लावा सब से बड़ी नेअमत यह होगी कि अल्लाह तआला अपना चेहरा उन के सामने कर देगा, जिस का वह नज्ज़ारा करेंगे।

'इमाम मुस्लिम' ने 'सुहेब रूमी' से وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ की यही तफ़्सीर रिवायत की है।

36 وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ۭ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ۝

पिछली कौमों के साथ जो कुछ हुआ उसे सुनाकर अहले मक्का को डराया जा रहा है। अल्लाह तआला

ने फ़रमाया कि इन मुश्रिकों से पहले बहुत सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं, जो उन से कुव्वत में ज़्यादा थीं। जैसे- 'आ़द' व 'समूद' की क़ौमें और फ़िरऔन मूसा आदि और उन्होंने मुख़्तलिफ़ (diffrence) मुल्कों की सैर भी ख़ूब की, लेकिन जब अल्लाह का अ़ज़ाब आया तो क्या उन्होंने ज़मीन में कोई ऐसी जगह पाई जहाँ भाग कर चले जाते और अ़ज़ाब से बच जाते? या जब उन की मौत का वक़्त आया तो क्या उस से राहे फ़रार अख़्तियार सके? यही ह़ाल मुश्रिकीने मक्का का भी होगा, कि अगर यह लोग यूँ ही लगातार नबी करीम (सल्ल०) को झुठलाते रहे, तो अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लेगा और उस से राहे फ़रार अख़्तियार नहीं कर सकेंगे।

37 إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

पिछली कौमों के इन वाक़िआ़त से वह लोग नसीह़त ह़ासिल करेंगे जो अ़क़्ल से काम लेंगे और तौबः करेंगे। फिर अपने कान से उन की ख़बरें सुनकर चौकन्ना दिल व दिमाग़ के साथ सोचेंगे कि अगर हम कुफ़्र पर जमे रहे तो हमारा अन्जाम उन्हीं काफ़िर क़ौमों जैसा होगा जिन के वाक़िआ़त यहाँ बयान किये गये हैं।

38 وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि इस आयत का मक़्सद मरने के बाद उठाए जाने की ताकीद है, इसलिए कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उन की तख़्लीक़ (उत्पत्ति) से उसे कोई थकावट नहीं हुई वह यक़ीनन मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ुद्रत रखने वाला है।

सूरः अह़क़ाफ़ आयत नं० (33) में आया हैः-

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن
يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

"क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से न थका, वह यक़ीनन मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। हाँ, वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है"।

'क़तादह' कहते हैं कि यहूद कहा करते थे कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर सातवें दिन यानी हफ़्ते के दिन आराम किया और अपने इसी गलत अ़क़ीदे की वजह से वह लोग हफ़्ते के दिन को आराम का दिन कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन के इस आरोप को रद्द करते हुए फ़रमाया وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ "हमें आसमानों और ज़मीन के पैदा करने से कोई थकावट नहीं होती"।

39-40 فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि मुश्रिकीन अगर मरने के बाद उठाए जाने का

और तौहीद व रिसालत का इन्कार करते हैं, तो आप रंजीदा न हुआ कीजिए, धैर्य से काम लीजिए और अपने रब की तअ़रीफ और तस्बीह़ के ज़रिये कुव्वत ह़ासिल कीजिए। तस्बीह़ से मुराद तो ज़ाहिरी तस्बीह़ है यानी अल्लाह की पाकी बयान करना।

दूसरी सूरत में सूरज निकलने से पहले की नमाज़ से मुराद फ़ज्र की नमाज़, डूबने से पहले की नमाज़ से मुराद ज़ुहृ और अ़स्र की नमाज़ है और रात की नमाज़ से मुराद अ़िशा और तहज्जुद की नमाज़ और أَدْبَارَ السُّجُودِ से मुराद वह नफ़्लें हैं जो फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद पढ़ी जाती है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह़०) लिखते हैं कि मेअ़राज से पहले फ़र्ज़ नमाज़ यह कि दो रकअ़त सूरज निकलने से पहले फ़ज्र के वक़्त और दो रकअ़त सूरज डूबने से पहले अ़स्र के वक़्त और रात की नमाज़ नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों पर एक साल तक फ़र्ज़ थी, फिर उम्मत के लिए इस का वजूब मन्सूख़ (निरस्त reject) हो गया यानी मेअ़राज की रात पाँच नमाज़ों के ज़रिये पिछली नमाज़ें मन्सूख़ (Reject) हो गईं, लेकिन फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ें बाक़ी रहीं।

41-42 وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾

नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के कहा गया है कि आप को बज़रिये वह़्य क़ियामत के दिन के जो हालात बताए जा रहे हैं उन्हें ग़ौर से सुनिए। जिस दिन 'इस्राफ़ील' (अ़लै०) दूसरा सूर फूंकेंगे और क़ियामत बरपा हो जाएगी और हर मुर्दा ज़िन्दा होकर मैदाने मह़शर की तरफ़ दौड़ पड़ेगा।

एक दूसरी राय यह है कि 'इस्राफ़ील' (अ़लै०) सूर फूंकेंगे और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) मह़शर वालों को पुकारेंगे कि ह़िसाब के लिए चलो। यह आवाज़ इतनी क़रीब होगी कि मैदाने मह़शर का हर शख़्स इसे सुनेगा।

आयत नं० (42) में भी कहा गया है कि जिस दिन लोग क़ब्र से उठाए जाने और मैदाने मह़शर में जमा होने के लिए ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०) के सूर की आवाज़ सुनेंगे, वह क़ब्र से निकलने का दिन होगा, इस में कोई शुब्हा नहीं है।

43 إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने मरने के बाद उठाए जाने को एक अटल ह़क़ीक़त बताया है और फ़रमाया है कि हम ही तमाम मख़्लूक़ात को पहली बार पैदा करते हैं और मरने के बाद दोबारा उन्हें ज़िन्दा करेंगे और उन्हें दोबारा पैदा करना हमारे लिए ज़्यादा आसान है और हर एक को दोबारा ज़िन्दा होकर हमारे पास ही लौट कर आना है, फिर अपने किये का उन्हे बदला पाना है।

44 يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾

ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०) के सूर फूंकने के बाद ज़मीन फट पड़ेगी और तमाम मुर्दे ज़िन्दा होकर उधर दौड़ पड़ेंगे जिधर से आवाज़ आएगी। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि लोगों को उन की क़ब्रों से निकाल

कर मैदाने महशर में जमा करना हमारे लिए बहुत ही आसान है।

45 نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ۟

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि मुश्रिकीने मक्का का अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के ख़िलाफ़ आरोप और मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार अल्लाह को ख़ूब मालूम है और वही उन से इस का हिसाब लेगा। आप का काम तो उन्हें हमारा पैग़ाम पहुँचा देना है, उन्हें ईमान लाने पर मजबूर करना आप का काम नहीं है।

आप कुर्आन करीम की तिलावत कर के उन लोगों को नसीहत करते रहिए जो मेरे अ़ज़ाब से डरते हैं यानी आप की नसीहत तो सब के लिए है, लेकिन इस से फ़ायदा सिर्फ़ वही लोग उठाएँगे जो आख़िरत और जन्नत पर ईमान रखते हैं।

सूरः नं० 51

सूर-ए-ज़ारियात

सूरः ज़ारियात का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत का पहला कलिमा **'अलू ज़ारियात'** है, यही इस का नाम रख दिया गया है।

ज़माना नुज़ूल– 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि उ़लमा-ए-तफ़्सीर के नज़्दीक इस के नाज़िल होने का ज़माना मक्की दौर है। इब्ने अ़ब्बास और इब्ने अल् ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से यही मरवी है।

आयत नं० 1 से 30 तक

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝ وَالسَّمَآءِ
ذَاتِ الْحُبُكِ ۝ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝
يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ
فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ
يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَفِي السَّمَآءِ
رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝ اِذْ
دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ فَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ
قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝

अनुवाद–

(1) क़सम है, बिखेरने वालियों की, (हवाओं की जो गर्द उड़ाती हैं;) (2) फिर बोझ उठाती हैं; (3) फिर नर्मी के साथ चलती हैं; (4) फिर मामले को तक़सीम करती हैं; (5) कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, वह सच है; (6) और बदले का दिन निश्चित रूप से आकर रहेगा। (7) क़सम है! तह दर तह बादलों वाले आसमान की, (8) कि तुम भिन्न-भिन्न बातें करते हो, (9) इससे वही फिरते हैं जो (अल्लाह की ओर से) फेरा जाए। (10) मारे जाएँ अटकल से बातें करने वाले, (11) जो बेख़बरी में भूले हुए हैं, (12) पूछते हैं, ''बदले का दिन कब आएगा?'' (13) उस दिन यह आग पर तपाए जाएँगे; (14) ''चखो मज़ा, अपने फ़ित्ने का! यही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।'' (15) बेशक अल्लाह से डरने वाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे, (16) उनके 'रब' ने उनको जो कुछ प्रदान किया होगा, वे उससे ले रहे होंगे, बेशक वे इससे पहले नेक लोगों में से थे; (17) वे रातों में कम ही सोते थे, (18) और सुबह (भोर) के समय माफ़ी की दुआ करते थे, (19) और उनके मालों में माँगने वाले और मह़रूम (धनहीन) का हक़ होता है। (20) और ज़मीन में बड़ी निशानियाँ हैं यक़ीन करने वालों के लिए; (21) और ख़ुद तुम्हारे अन्दर भी, क्या तुम देखते नही! (22) और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ भी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, (23) तो आसमानों और ज़मीन के 'रब' की क़सम! यह बात हक़ है, ऐसे ही जैसे तुम बोल रहे

हो। (24) क्या इब्राहीम के इज़्ज़तदार मेहमानों की बात तुम तक पहुँची है; (25) जब वे उनके पास आए तो कहा, ''सलाम हो तुम पर,'' उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो'' (आप लोगों पर भी) ''यह तो अजनबी लोग हैं,'' (26) फिर वह (चुपके से) अपने घर वालों के पास गये, और एक मोटा ताज़ा बछड़ा (भून कर) ले आए। (27) तो उसको उनके सामने पेश किया, और कहा, ''क्या आप खाते नहीं?'' (28) फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया, उन्होंने कहा, ''डरिए नहीं'' और उनको इल्म वाले बेटे की खुशख़बरी सुनाई। (29) तो (यह सुन कर) उनकी पत्नी (चकित होकर) आगे बढ़ीं और अपने मुँह पर हाथ मारा, और कहने लगी, ''(मैं तो) एक बूढ़ी बाँझ हूँ (कैसे बच्चा पैदा होगा)!'' (30) उन्होंने कहा, ''ऐसा ही तेरे 'रब' ने कहा है, बेशक 'वह' बड़ी हिकमत वाला, इल्म वाला है।''

आयत नं० 1 से 30 तक की व्याख्या

1-4 وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۙ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۙ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۙ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ

इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम, हाकिम और बैहक़ी ने अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि०) से रिवायत की है कि वह कूफ़ा की मस्जिद में खुत्बः दे रहे थे, तो 'इब्ने अल्कवा' नामी शख़्स ने उन से इस सूरः की चार शुरु की आयतों का मतलब दर्याफ़्त किया, उन्होंने कहा कि وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا से मुराद 'तेज़ हवा' है जो मिट्टी उड़ाती है और فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا से मुराद 'बादल' है, जो बारिश का पानी उठाए फिरता है और فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا से मुराद कश्तियाँ हैं जो समुद्रों में हवा के सहारे चलती रहती हैं और فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا से मुराद फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ उस की मख़्लूक़ात के दर्मियान बारिश, रोज़ी और दूसरे अस्बाबे ज़िन्दगी तक़्सीम (Devide) करते हैं।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने "الذاريات، الحاملات، الجاريات، المقسمات" चारों चीज़ों से हवाएँ मुराद ली हैं यानी बाज़ हवा गुबार उड़ाती है, बाज़ बादलों को एक जगह से दूसरी जगह उठाए फिरती हैं और बाज़ बारिश को तक़्सीम (Devide) करती है।

5 اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ

पहले ज़ोर की हवाएँ और आंधियाँ चलती हैं जिन से गुबार वग़ैरह उड़ता है और बादल बनते हैं, फिर उन में पानी बनता है, उस बोझ को उठाए फिरती हैं। फिर बरसने के क़रीब नर्म हवा चलती है, फिर अल्लाह के हुक्म के अनुसार बारिश में जिस जगह का जितना हिस्सा होता है वह तक़्सीम (Devide) करती हैं, इन हवाओं की अल्लाह क़सम खाता है।

बाज़ उ़ल्मा ने 'ज़ारियात' से हवाएँ, 'हामिलात' से बादल, 'जारियात' से सितारे और 'मुक़सिमात' से फ़रिश्ते मुराद लिए हैं और हज़रत अ़ली (रज़ि०) वग़ैरह से नक़्ल किया गया है कि 'ज़ारियात' हवाएँ, 'हामिलात' से बादल 'जारियात' कश्तियाँ और 'मुक़सिमात' फ़रिश्ते हैं, जो अल्लाह के हुक्म से रिज़्क़ वग़ैरह तक़्सीम (Devide) करते हैं।

6 وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝

यानी यह हवाओं और बारिश वग़ैरह का निज़ाम (system) गवाह है कि आख़िरत का वादा सच्चा और इन्साफ़ वाला होना ज़रूरी है। जब इस दुनिया में हवा तक बेनतीजा नहीं चलती तो क्या इतना बड़ा कारख़ाना यूँ ही बेनतीजा चल रहा है? यक़ीनन इस का कोई अ़ज़ीमुशान अन्जाम होगा, उसी को आख़िरत कहते हैं।

7-8 وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝ اِنَّكُمْ لَفِىْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝

यानी साफ़ व शफ़्फ़ाफ़, ख़ूबसूरत, मज़बूत आसमान की क़सम, जिस पर सितारों का जाल बिछा हुआ मालूम होता है और जिस पर सितारों की और फ़रिश्तों की राहें पड़ी हुई हैं।

9 يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝

यानी क़ियामत और आख़िरत की बात में बेफ़ायदा झगड़े डाल रखे हैं। इस को वही तस्लीम करेगा जिसे परवरदिगार के दरबार से कुछ तअ़ल्लुक़ हो। जो शख़्स निकाला हुआ हो और भलाई व नेकी के रास्तों से फेर दिया गया हो वह इस चीज़ को तस्लीम और क़ुबूल करने से हमेशा बाज़ रहेगा, ह़ालांकि अगर सिर्फ़ आसमान (system and management) में ग़ौर करें तो यक़ीन हो जाएगा कि इस में बहस करना केवल बेवक़ूफ़ी है।

10 قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝

यानी दीन की बातों में अट्कलें दौड़ाते हैं और केवल अपने गुमान व अन्दाज़े से रद्द करते हैं।

11 الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝

यानी दुनिया के मज़ों ने आख़िरत से और अल्लाह से ग़ाफ़िल कर रखा है।

12-13 يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝

यानी इन्कार और हंसी के तौर पर पूछते हैं कि हाँ साह़ब वह इन्साफ़ का दिन कब आएगा? आख़िर इतनी देर क्यों हो रही है?

14-15 ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝

यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उनको जवाब दिया गया यानी ज़रा सब्र करो, वह दिन आने ही वाला है जब तुम आग में उलटे-पलटे जाओगे और ख़ूब जला तपा कर कहा जाएगा कि लो, अब अपनी शरारत और हंसी उड़ाने का मज़ा चखो जिस दिन की जल्दी मचा रहे थे वह आ गया।

16-17 اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝

यानी ख़ुशी-ख़ुशी उन नेअ़मतों को क़ुबूल करते हैं जो उनके परवरदिगार ने वक़्ती तौर पर फ़रमाई है यानी दुनिया से नेकियाँ समेट कर लाए थे, आज उन का नेक फल मिल रहा है। आगे उन नेकियों का ज़िक्र है।

18 وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

यानी रात का अक्सर हिस्सा अल्लाह की अ़िबादत में गुज़ारते और सुबह के वक़्त जब रात ख़त्म होने को आती, अल्लाह से अपनी गल्तियों की माफ़ी माँगते कि अल्लाह की अ़िबादत का ह़क़ अदा न हो सका। जो कोताही हो रही है अपनी रह़मत से माफ़ फ़रमा दीजिए। अ़िबादत की ज़्यादती उन को घमण्डी न बनाती थी, बल्कि जिस क़दर बन्दग़ी में तरक़्क़ी करते जाते खौफ बढ़ता जाता था।

19-20 وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ۝

मतलब यह है कि उन्होंने (ज़कात के अ़लावा) अपने माल में अपनी ख़ुशी से सायलों और मोह़ताजों का हिस्सा मुक़र्रर (Fix) कर रखा था, जो इन्तिज़ाम की वजह से लाज़िम समझा गया।

21 وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

यानी यह रात का जागना, इस्तिग़फ़ार और मोह़ताजों पर ख़र्च करना उस यक़ीन की बिना पर होना चाहिए कि अल्लाह मौजूद है और उस के यहाँ किसी की नेकी बर्बाद नहीं होती और यह यक़ीन वह है जो आयात में ग़ौर करने से ह़ासिल हो सकती है।

इन्सान अगर खुद अपने अन्दर या ज़मीन के ह़ालात पर ग़ौर व फ़िक्र करे तो बहुत जल्द इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि हर नेक व बुरे का बदला किसी न किसी रंग में ज़रूर मिल कर रहेगा जल्दी या देर से।

22 وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝

यानी सायलों (माँगने वालों) और मोह़ताजों पर ख़र्च करने से इसलिए नहीं डरना चाहिए कि ख़र्च कर के हम कहाँ से खाएँगे और न ख़र्च कर के उन मसाकीन पर एह़सान जतलाए, क्योंकि तुम्हारी सब की रोज़ी और अज्र व सवाब के जो वादे किये गये हैं आसमान वाले के हाथ में हैं। हर एक की रोज़ी पहुँच कर रहेगी, किसी के रोके नहीं रुक सकती और ख़र्च करने वालों को सवाब भी मिल कर रहेगा।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं "आने वाली जो बात है उस का हुक्म आसमान ही से उतरता है"।

23 فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ۝

यानी जैसे अपने बोलने में शुब्हा नहीं वैसे ही इस कलाम में शुब्हा नहीं। यक़ीनन रोज़ी पहुँचकर रहेगी, क़ियामत क़ायम होगी, आख़िरत आकर रहेगी और अल्लाह के वादे ज़रूर पूरे होंगे।

आगे وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ की मुनासिबत से ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मेहमान नवाज़ी का

क़िस्सा सुनाते हैं, जो हज़रत लूत (अ़लै०) के क़िस्से की तरह है।

दोनों क़िस्सों से यह भी मालूम हो गया कि अल्लाह तआ़ला का मामला दुनिया में मोह़सिनीन (एह़सान करने वाले लोगों) के साथ क्या है और झुठलाने वालों के साथ उस ने कैसा बर्ताव किया।

24 هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ الْمُكْرَمِينَ

यानी वह फ़रिश्ते थे जिन को इब्राहीम पहले इन्सान समझे, उन की बड़ी इ़ज़्ज़त की और अल्लाह के यहाँ तो फ़रिश्ते इ़ज़्ज़तदार व मुकर्रम हैं ही। "بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ"

25-26 إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا ۖ قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ۞ فَرَاغَ إِلٰىٓ أَهْلِهِۦ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ

यानी सलाम का जवाब सलाम से दिया और दिल में या आपस में कहा कि यह लोग कुछ और ही मालूम होते हैं।

27 فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ

यानी निहायत एहतिमाम से मेहमानी शुरु कर दी और बड़े अच्छे अन्दाज़ में कहा कि क्यों आप ह़ज़रात खाना नहीं खाते? वह फ़रिश्ते थे, खाते किस तरह्। यहाँ तक कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) समझ गये कि यह इन्सान नहीं हैं।

28-29 فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ۞ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُۥ فِى صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ

यह क़िस्सा सूरः 'हूद' और 'ह़िज्र' में गुज़र चुका है, वहाँ देखा जा सकता है।

'ह़ज़रत सारह़' रज़ियल्लाहु अ़न्हा ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की बीवी एक तरफ़ कोने में खड़ी सुन रही थीं। लड़के की खुशखबरी सुन कर तेज़ आवाज़ में तअ़ज्जुब से पेशानी (माथे) पर हाथ मारकर कहने लगीं कि (क्या ख़ूब) एक बुढ़िया बांझ जिस के जवानी में औलाद न हुई अब बुढ़ापे में बच्चा जनेगी?

30 قَالُوا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

यानी हम अपनी तरफ़ से नहीं कह रहे बल्कि आप के रब ने ऐसा ही फ़रमाया है। वही जानता है कि किस को किस वक़्त क्या चीज़ देना चाहिए। फिर तुम नबी की घरवाली होकर इस ख़ुशख़बरी पर तअ़ज्जुब क्यों करती हो?

पूरी आयात से मालूम होता है कि यह लड़का ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) थे, जिन की ख़ुशख़बरी माँ और बाप दोनों को दी गई थी ।

आयत नं० 31 से 60 तक

*
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُسَوَّمَةً عِنْدَ
رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً
لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ
مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ
إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾ وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ
فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾
وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾
أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾ وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ
إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا
مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

अनुवाद-

(31) (इब्राहीम ने) कहा, ''ऐ भेजे हुए रसूलो (दूतों) तुम्हारा क्या मतलब है।'' (32) उन्होंने कहा, ''हम
एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गये हैं, (33) ताकि उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ, (34)
जो आप के 'रब' के यहाँ सीमा से गुज़रने वालों के लिए निशानज़द (नाम लिखे हुए पत्थर) हैं।'' (35) फिर
'हमने' ईमान वालों को वहां से निकाल दिया; (36) और वहाँ 'हमने' एक घर के सिवा मुसलमानों
(आज्ञाकारियों) का कोई घर न पाया; (37) और 'हमने' वहाँ एक निशानी छोड़ दी, उन लोगों के लिए जो
दु:ख देने वाले अ़ज़ाब से डरते हों। (38) और मूसा के ह़ाल में भी (निशानी है) जबकि 'हमने' फ़िरऔन
की ओर खुला हुआ मोजु़ज़ा (चमत्कार) देकर भेजा; (39) तो उसने अपनी ताक़त के घमंड में मुँह मोड़ा,
और कहने लगा, ''यह जादूगर है, या दीवाना।'' (40) तो 'हमने' उसको और उसकी सेनाओं को पकड़
लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, और वह था ही मलामत वाला। (41) और आ़द में भी (निशानी
है), जबकि 'हमने' उन पर मन्हूस आँधी चलायी; (42) कि वह जिस चीज़ पर से गुज़री उसे चूर-चूर कर
डाला। (43) और समूद में भी (निशानी) है, जबकि उनसे कहा गया, ''एक समय तक मज़े उड़ा लो!'' (44)
तो उन्होंने अपने रब के हुक्म को न माना, तो उनको कड़क ने धर दबोचा और वे देखते ही रह गये, (45)
फिर वे न खड़े हो सके और न अपना बचाव ही कर सके। (46) और नूह की क़ौम को भी इनसे पहले
पकड़ा, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (47) और आसमान को 'हमने' अपनी क़ुदरत से बनाया और 'हम'
बड़ी विशालता रखने वाले हैं। (48) और धरती को 'हमने' ही बिछाया तो 'हम' क्या ही खूब बिछाने वाले
हैं। (49) और 'हमने' हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो। (50) तो तुम लोग अल्लाह की ओर
दौड़ो मैं 'उसकी' ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूँ, (51) और अल्लाह के साथ कोई मअ़बूद

(उपास्य) न ठहराओ, मैं 'उसकी' ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूँ। (52) इसी तरह उन लोगों के पास भी, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं; जो भी रसूल आए तो उन्होंने बस यही कहा, ''जादूगर है या दीवाना!'' (53) क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है? (नहीं) बल्कि ये हैं ही सरकश लोग। (54) तो आप इनसे रुख़ फेर ले, आप पर कोई मलामत नहीं है, (55) और याद दिलाते रहिए क्योंकि याद दिलाना ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाता है? (56) और 'मैंने' तो जिन्नों और इन्सानों को केवल इसलिए पैदा किया है ताकि मेरी इबादत करें। (57) मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे (खाना) खिलाएँ; (58) अल्लाह ही है रोज़ी देने वाला, बड़ा शक्तिशाली, मज़बूत। (59) तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए वैसा ही अ़ज़ाब का पैमाना है; जिस तरह उनके साथियों का था (अ़ज़ाब का) तो यह जल्दी न मचाएँ! (60) तो इन काफ़िरों के लिए बड़ी तबाही है, जिस दिन का इनसे वादा किया जा रहा है।

आयत नं० 31 से 60 तक की व्याख्या

31-32 قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝

यानी हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रिश्तों से पूछा कि आख़िर तुम किस मुहिम (काम) के लिए आए हो। (अन्दाज़ा से समझे होंगे कि ज़रूर किसी अहम मक़्सद के लिए इन का नुज़ूल हुआ है।)

33 لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ۝

यानी क़ौमे लूत की सज़ा के लिए भेजे गये हैं, ताकि पत्थर बरसा कर उन को हलाक करें। यह مِنْ طِينٍ कहने से मालूम हो गया कि यह ओलों की बारिश न थी जिस को पत्थर कह दिया जाता है, बल्कि पत्थर के ही टुकड़े थे।

34-35 مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इन पत्थरों पर निशान लगा दिये गये हैं। यह अ़ज़ाब के पत्थर ख़ास उन ही को लगेंगे जो ईमान से निकल चुके हैं।

36 فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

यानी उस बस्ती में केवल एक हज़रत लूत (अ़लै०) का घराना मुसलमानो का था, उस को हम ने अ़ज़ाब से महफ़ूज़ (Safe) रखा और साफ़ बचा लिया, बाक़ी सब बर्बाद कर दिये गये।

37 وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

यानी अब तक वहाँ तबाही के निशान मौजूद हैं और उन की ग़ैर मामूली हलाक़त के क़िस्से में डरने वालों के लिए नसीहत का सामान है।

38 وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝

यानी मोअ़जिज़ात (चमत्कार) व दलील।

39 فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝

यानी ज़ोर व कुव्वत पर घमण्ड करके ह़क़ की तरफ़ से मुँह फेर लिया और अपनी क़ौम को भी साथ ले डूबा। कहने लगा कि मूसा या तो जादूगर है या दीवाना।

40-41 فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝ وَفِىْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۝

यानी हम ने ज़्यादती नहीं की। इन्होंने कुफ़्र और सरकशी अपनाई, समझाने पर भी बाज़ न आए यहाँ तक कि जो बोया था वही काटा।

42 مَا تَذَرُ مِنْ شَىْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ۝

यानी अ़ज़ाब की आँधी आई जो ख़ैर व बरकत से बिल्कुल खाली थी, उस ने मुजरिमों की जड़ काट डाली और जिस चीज़ पर से गुज़री उस को चूरा कर के रख दिया।

43-44 وَفِىْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ۝ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝

यानी ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि अच्छा कुछ दिन और दुनिया के मज़े उड़ा लो और आख़िर अ़ज़ाबे इलाही में पकड़े जाओगे।

45 فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ۝

यानी उन की शरारत रोज़ बरोज़ बढ़ती गई। आख़िर अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ लिया यानी अचानक एक बिजली की कड़क हुई और देखते ही देखते सब ठंडे हो गये। उनके ज़ोर व ताक़त और घमण्ड के दावे सब ख़ाक में मिल गये, किसी एक से इतना भी न हुआ कि बाद में उठ खड़ा होता और बदला तो क्या ले सकते अपनी मदद पर किसी को बुला भी नही सके।

46 وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝

यानी इन लोगों से पहले नूह़ की क़ौम अपनी बग़ावत और सरकशी की बदौलत तबाह की जा चुकी है और यह लोग नाफ़रमानी में ह़द से निकल चुके थे।

47 وَالسَّمَاۗءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝

अल्लाह ने आसमान जैसी चीज़ अपनी कुद्‌रत से पैदा की और वह इस से भी बड़ी चीज़ें पैदा करे तो क्या मुश्किल है।

48 وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝

यानी ज़मीन व आसमान सब अल्लाह के पैदा किये हुए और उसी के क़ब्ज़े में हैं। फिर उस का मुजरिम भाग कर कहाँ पनाह ले सकता है। ख़ालिक़े क़ायनात की अ़जीब व ग़रीब कारीगरी में आदमी ग़ौर

करे तो उसे माने बिना रह नहीं सकता।

49-50 وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿﴾

यानी नर और मादा जैसा कि इब्ने ज़ैद ने कहा और आज के डाक्टर इस का एतिराफ़ कर रहे हैं कि हर एक में नर और मादा की तक़्सीम पाई जाती है। इसी तरह़ 'ज़ौजैन' से एक दूसरे के मुकाबिल (Opposite) चीज़ें मुराद हैं। जैसे- रात-दिन, ज़मीन-आसमान, अन्धेरा-उजाला, स्याही-सफ़ेदी, सेह़त-मर्ज़, कुफ़्र-ईमान आदि।

51 وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿﴾

यानी जब ज़मीन व आसमान तमाम कायनात एक अल्लाह की पैदा की हुई और उसी के अधीन है तो बन्दे को चाहिए कि हर तरफ़ से हट कर उसी की तरफ़ भागे। अगर उस की तरफ़ न भागा और न पल्टा तो यह बहुत फ़िक्र की चीज़ है या किसी और की तरफ़ गया तो यह भी फ़िक्र की बात है। इन दोनों सूरतों के ख़ौफ़नाक अन्जाम से मैं तुम को डराता हूँ।

52 كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿﴾

यानी ऐसी साफ़ तम्बीह पर अगर यह मुन्करीन कान न धरें तो ग़म न कीजिए। उन से पहले जिन काफ़िर क़ौमों की तरफ़ कोई पैग़म्बर आया, तो उसे भी इसी तरह़ जादूगर या दीवाना कह-कर उस की नसीह़तों को हंसी में उड़ा दिया गया।

53-54 اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿﴾

यानी हर ज़माने के काफ़िर इस बात में ऐसे सहमत रहे कि जैसे एक दूसरे को वसीयत करके मरे हों कि जो रसूल आए उसे जादूगर या मजनून कहकर छोड़ दिया और हक़ीकत में वसीयत तो कहाँ करते, अल्बत्ता शरारत के कामों में सब शरीक रहे।

55 وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿﴾

यानी आप फ़र्ज़े दअ़वत व तब्लीग़ अदा कर चुके। अब ज़्यादा पीछे पड़ने और ग़म करने की ज़रूरत नहीं। न मानने का जो कुछ इल्ज़ाम रहेगा इन ही सरकशों पर रहेगा। हाँ, समझाना आप का काम है, सो यह सिल्सिला जारी रखिए। जिस की क़िस्मत में ईमान लाना होगा उस को यह समझना काम देगा, जो ईमान ला चुके हैं उन को मज़ीद नफ़ा पहुँचेगा और इन्कारियों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी होगी।

56-57 وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿﴾

जिन्न व इन्सान के पैदा करने का मतलब शरीअ़त की पाबन्दी है। इसीलिए इन में ऐसी क्षमता रखी गई है कि चाहें तो अपने अख़्तियार से बन्दगी की राह पर चल सकते हैं, बहरहाल आप समझाते रहिये

कि समझाने ही से यह बात ह़ासिल हो सकती है।

58 إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾

यानी इन की बन्दग़ी से मेरा कुछ फ़ायदा नहीं, इन ही का नफ़ा है। मैं वह मालिक नहीं जो ग़ुलामों से कहे मेरे लिए कमा कर लाओ या मेरे सामने खाना लाकर रखो। मेरी ज़ात इन चीज़ों से पाक और बुलन्द है, मैं इन से अपने लिए रोज़ी क्या तलब करता, ख़ुद इन को अपने पास से रोज़ी पहुँचाता हूँ। भला मुझ जैसे ज़ोर ताक़तवर और क़ुद्रत वाले को तुम्हारे ख़िद्मत की क्या ज़रुरत हो सकती है।

बन्दग़ी का हुक्म सिर्फ़ इसलिए दिया गया है कि तुम मेरी शहन्शाही और बड़ाई का एतिराफ़ कर के मेरी दया के हक़्दार बन जाओ।

59 فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾

यानी अगर यह ज़ालिम बन्दग़ी की तरफ़ नहीं आते तो समझ लो कि दूसरे ज़ालिमों की तरह इन्हें भी सज़ा मिलने वाली है, तो यह सज़ा के लिए जल्दी न मचाएँ।

जैसे दूसरे काफ़िरों को ख़ुदाई सज़ा का ह़िस्सा पहुँचा, इन को भी पहुँच कर रहेगा।

60 فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

यानी क़ियामत के दिन या उस से पहले ही कोई दिन सज़ा का आ जाएगा, चुनाँचे मुश्रिकीने मक्का को 'बद्र' में सज़ा मिल गई।

सूरः नं० 52

सूर-ए-तूर

सूरः तूर का संक्षिप्त परिचय

नाम– इस सूरः का पहला शब्द الطُّوْرِ है, यही इस का नाम हो गया।

ज़माना नुज़ूल– 'कुर्तुबी' लिखते हैं कि यह सूरत मक्की दौर में नाज़िल हुई थी। बैहक़ी वग़ैरह ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि सूरः तूर मक्का में नाज़िल हुई थी।

आयत नं० 1 से 28 तक

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ
لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ
فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾
اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ
رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْۗـــًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـــِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ
عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾
وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ
كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا
عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾

अनुवाद–

(1) क़सम है तूर की, (2) और ऐसी किताब की जो लिखी हुई है, (3) फैले हुए पन्नों में, (4) और बैतुल मामूर (फरिश्तों का आसमानी कअ्बः) की, (5) और ऊँची छत की, (6) और उमंड़ते हुए समुद्र की, (7) बेशक, तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब आ कर रहेगा; (8) जिसे कोई टालने वाला नहीं, (9) जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा, (10) और पहाड़ चलने लगेंगे (ऊन होकर), (11) तो तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए, (12) जो बहस में पड़े खेल रहे हैं। (13) जिस दिन वे धक्के देकर जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे। (14) ''यही है वह आग जिसको तुम झुठलाया करते थे, (15) तो क्या यह जादू तुम्हें सुझाई नहीं देता है– (16) जाओ, झुलसो इसमें, अब सब्र करो या न करो; तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।'' (17) बेशक, परहेज़गार, बाग़ों की नेअ़मतों में होंगे; (18) मज़े उड़ा रहे होंगे उन नेअ़मतों का जो उनके रब ने उनको दिया होगा, और उनके रब ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया होगा। (19) ''खाओ और पिओ मज़े से अपने उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे।'' (20) क़तार से (पंक्तिबद्ध) तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे और 'हम' बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे। (21) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान के साथ उनके पीछे चली, 'हम' उनकी औलाद को भी उनसे मिला देंगे, और उनके कर्मों में से कुछ भी कम न करेंगे, हर व्यक्ति अपने कमाई के

बदले रहन (बन्धक, अर्थात फंसा हुआ) है। (22) और वे जिस तरह के मेवे और गोश्त की इच्छा करेंगे 'हम' उनको बराबर देते रहेंगे। (23) वहाँ वे आपस में एक-दूसरे से आगे बढ़ कर प्याले हाथों-हाथ ले रहे होंगे, जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह (और न कोई उभारने) वाली बात; (24) और ऐसे ख़ूबसूरत लड़के उनकी सेवा में लगे होंगे, जो गोया सुरक्षित मोती हों। (25) और उनमें से कुछ व्यक्ति कुछ व्यक्तियों की ओर हाल पूछते हुए रुख़ करेंगे, (26) कहेंगे, ''इससे पहले हम अपने घर वालों में (अल्लाह से) डरते रहते थे; (27) तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें झुलसा देने वाले अ़ज़ाब से बचा लिया; (28) इससे पहले हम 'उसको' पुकारते थे, बेशक 'वह' बड़ा ही एहसान करने वाला और रहम वाला है।''

आयत नं० 1 से 28 तक की व्याख्या

1-6 وَالطُّوْرِ ۙ﴿﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ﴿﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ﴿﴾ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ﴿﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ﴿﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ﴿﴾

इन छः आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपनी चन्द मख़्लूक़ात की क़सम खाकर सुनने वालों के ज़ेहनों में इस बात की अहमियत बिठानी चाही है, जिस पर क़सम खाई गई है और जिस का ज़िक्र आयत नं० (7) में आया है यानी अ़ज़ाबे जहन्नम, जो यक़ीनी है और जो लोग इस के हक़्दार होंगे उन पर वह अ़ज़ाब ज़रूर नाज़िल होगा। यह एक ऐसी बात है जिस में ज़र्रह बराबर भी शक व शुब्हा की कोई गुन्जाइश नहीं है।

'तूर' सुर्यानी भाषा में पहाड़ को कहते हैं और आ़म तौर से यह हरे भरे पहाड़ के लिए बोला जाता है। सीना के जिस पहाड़ पर हज़रत मूसा (अ़लै०) रब्बुल् आ़लमीन से बात किये थे, उसे 'तूर-सीना' कहा जाने लगा है। जो तजल्ली इलाही (अल्लाह के नूर) की ताब न लाकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ से मुराद या तो क़ुर्आन करीम है या लौहे़ मह़फ़ूज़ या तमाम आसमानी किताबें।

"رَقٍّ" उस बारीक चमड़े को कहते हैं जिसे प्राचीन ज़माने में काग़ज़ के तौर पर लिखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ से मुराद वह घर है जो सात्वें आसमान पर है। जिसे नबी करीम (सल्ल०) ने मेअ़राज की रात में देखा था कि रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस में दाख़िल होते हैं, जो दोबारा इस से बाहर लौट कर नहीं आते हैं।

फ़रिश्ते इस घर का उसी तरह़ तवाफ़ करते हैं जिस तरह़ ज़मीन वाले ख़ान-ए-कअ़बः का तवाफ़ करते हैं। नबी करीम (सल्ल०) ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को सातवें आसमान पर इसी 'बैत-ए-मअ़मूर' से टेक लगाये हुए देखा था और यह 'बैत-ए-मअ़मूर' बिल्कुल कअ़बः के सामने है और इसी तरह़ का एक घर हर आसमान पर पाया जाता है, जिस के इर्द-गिर्द उस आसमान पर रहने वाले अ़िबादत करते हैं। आसमाने दुनिया के घर का नाम 'बैतुल् इ़ज़्ज़ह' है।

बाज़ लोगों ने وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ से मुराद ख़ान-ए-कअ़बः लिया है। पहली तफ़्सीर के मुताबिक़ वह घर फ़रिश्तों की अ़िबादत से आबाद है और दूसरी तफ़्सीर के मुताबिक़ ह़ज और उ़मरह करने वालों, तवाफ़ करने वालों, एतिकाफ़ करने वालों और दूसरे अ़िबादत गुज़ारों से आबाद रहता है।

साहि़बे 'मुहा़सिनुल् तन्ज़ील' ने दूसरी तफ़्सीर को सूरः 'अत् तीन' की दूसरी और तीसरी आयात وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ की रौशनी में तर्जीह़ (वरीयता) दी है यानी वहाँ तूर-ए-सीना के साथ बदल अम्न 'मक्का मुकर्रमा' का ज़िक्र आया है, इसलिए यहाँ भी तूर के ज़िक्र के बाद 'बैते मअ़मूर' से मुराद कअ़बः है जो मक्का में है, क्योंकि क़ुर्आन करीम की एक आयत दूसरी आयत की तफ़्सीर होती है।

سَقْفِ الْمَرْفُوعِ से मुराद आसमान है और चूंकि वह ज़मीन के लिए छत की तरह से है, इसलिए उसे छत से तअ़बीर किया गया है और بَحْرِ الْمَسْجُورِ से मुराद या तो पानी से भरा हुआ समुद्र है या यह कि जब क़ियामत आएगी तो समुद्रों का पानी आग बन जाएगा।

مَسْجُورِ के कई दूसरे मतलब भी बयान किये गये हैं। बाज़ ने कहा है कि वह 'फ़ारिग़' यानी ख़ाली के मआ़ने में है। बाज़ ने इस का मतलब "مفجور" किया है यानी सारे समुद्र फट पड़ेंगे, मीठा पानी खारे पानी में मिल जाएगा। यानी अल्लाह ने उस समुद्र की क़सम खाई है जिस का पानी क़ियामत के दिन आग हो जाएगा।

7-8 إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ۝

यही वह बात है जिस की अहमियत लोगों के ज़ेहनों में बिठाने के लिए अल्लाह तआ़ला ने अपने मख़्लूक़ात की क़सम खाई है और कहा है कि ऐ मेरे नबी! आप के रब का अ़ज़ाब उन लोगों पर ज़रूर नाज़िल होगा जो आप को, क़ुर्आन करीम को और मरने के बाद उठाए जाने के अ़क़ीदे को झुठलाते हैं और उस अ़ज़ाब से कोई भी उन्हें बचा न सकेगा यानी मरने के बाद क़ियामत बरह़क़ है, जिस दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को जहन्नम का मज़ा चखाएगा।

9-11 يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

उस रोज़ क़ियामत की बाज़ निशानियाँ ऐसी हैं कि उस दिन आसमान निहायत तेज़ी के साथ ह़रकत करने लगेगा और पहाड़ अपनी जगहों से हट जाएँगे, बादलों की तरह़ चलने लगेंगे और ग़ुबार बनकर उड़ने लगेंगे। जिस दिन आसमानों और पहाड़ों की यह हालत ख़त्म होगी वह अल्लाह, उस के रसूल और उस के क़ुर्आन को झुठलाने वालों के लिए बड़ी ही हलाकत व बर्बादी का दिन होगा या जहन्नम में उन का ठिकाना 'वैल' नाम की वादी होगी।

12 الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝

यह वह लोग हैं जो दुनिया में बातिल (असत्य) की ताईद (समर्थन) करते थे, आख़िरत के दिन के ह़िसाब व किताब से ग़ाफ़िल खेल तमाशा में लगे रहते थे और नबी करीम (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाते थे।

فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि यह वह लोग होंगे जो दुनिया के ऐ़श व आराम में आख़िरत की फ़िक्र से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहते थे।

13 يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝

उन्हें बेदर्दी और सख़्ती के साथ धक्का देकर जहन्नम में पहुँचा दिया जाएगा। 'मक़ातिल' कहते हैं कि

उन के हाथ उन की गर्दनों के साथ और उन के सर उन के क़दमों के साथ बाँध दिये जाएँगे, फिर उन्हें चेहरों के बल जहन्नम में ढकेल दिया जाएगा।

14-15 هٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ هٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

उन से जहन्नम के फ़रिश्ते कहेंगे कि यही वह जहन्नम है जिस को तुम दुनिया में झुठलाया करते थे और अल्लाह तआ़ला उन से उन की तौहीन (बेइ़ज़्ज़ती) में इज़ाफ़ा करते हुए कहेगा कि यह जहन्नम की आग जिस को तुम अब देख रहे हो, क्या यह जादू और क़िस्सा है? जैसा कि तुम दुनिया में हमारे रसूलों को जादूगर और हमारी किताबों को जादू और क़िस्सा कहा करते थे या तुम अन्धे हो और जहन्नम की आग को देख नहीं पा रहे हो जैसा कि तुम दुनिया में दिल के अन्धे थे और ह़क़ की राह को नहीं देख पा रहे थे।

16 اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا أَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

अब तो वह ह़क़ीक़त जिस का तुम दुनिया में इन्कार करते थे, तुम्हारी आँखों के सामने है। अब जहन्नम में दाख़िल हो जाओ और उस के अ़ज़ाब की सख़्तियों को झेलो, सब्र करो या न करो दोनों ही ह़ाल बराबर हैं, बहरह़ाल अब जहन्नम के अ़ज़ाब से छुट्कारा नहीं है, तुमने अपने रब का इन्कार किया था और ज़मीन को गुनाहों से भर दिया था, तो यह अ़ज़ाब तुम्हारे उन्हीं बुरे कर्मों का नतीजा है।

17-19 إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۝ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ كُلُوْا
وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

क़ुर्आन करीम के आ़म क़ायदे के मुताबिक़ अहले जहन्नम का अन्जाम बयान किये जाने के बाद अब अहले जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र किया जा रहा है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दुनिया में शिर्क व गुनाहों से बचने वाले क़ियामत के दिन जन्नतों और बाग़ों में होंगे और उन के लिए कभी न ख़त्म होने वाली नेअ़मतें होंगी। वहाँ वह अल्लाह की तरफ़ से अ़ता की गई नेअ़मतों से ख़ूब राह़त व लज़्ज़त उठाएँगे और एक बहुत बड़ी नेअ़मत यह होगी कि उन का रब जहन्नम से उन की आज़ादी का एलान कर देगा और उन से कहा जाएगा कि दुनिया में तुम जो भले अ़मल करते थे, उस की वजह से अब इस जन्नत की बेमिसाल नेअ़मतों में से जो चाहो खाओ पियो, यहाँ तुम्हारे ऐ़श व आराम में कोई ख़लल नहीं डालेगा और न तुम्हें अब मौत आएगी।

20 مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝

अहले जन्नत जन्नत में लगे गऊ तकियों पर टेक लगा कर बैठेंगे और अल्लाह तआ़ला उन की शादी बड़ी आँखों वाली हूरों से कर देगा यानी वहाँ की ज़िन्दगी ऐसे आराम व राह़त और ठाठ-बाठ की होगी जिसे इस दुनिया में न किसी ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने कभी इस का तसव्वुर (कल्पना Imagine) किया है।

21 وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۝

अहले जन्नत पर अल्लाह तआ़ला के करम की कोई इन्तेहा न होगी जैसा कि ऊपर बयान किया गया। उन्हीं करम फ़रमाईयों में से एक यह भी होगा कि उन की जो औलाद दुनिया में ईमान लाएगी, अच्छे अ़मल करेगी, गुनाहों से बचेगी और अगर वह अपने आ़माल की बदौलत जन्नत का वह मक़ाम हा़सिल नहीं कर सकेगी जो उन के नेक बाप-माँ का होगा, तो अल्लाह तआ़ला उन के वालिदैन की ख़ुशी पर मज़ीद इज़ाफ़ा (वृद्धि) करने के लिए उन के दर्जात बुलन्द कर के उन के वालिदैन के मक़ाम तक पहुँचा देगा।

'सअ़ीद बिन जुबैर' ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से यही तफ़्सीर रिवायत की है।

'औ़फ़ी' ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस की तफ़्सीर यह बयान की है कि जिन अहले जन्नत की औलाद ईमान लाएँगी और अल्लाह की बन्दग़ी करेंगी, उन्हें अल्लाह तआ़ला उन के ईमान की वजह से जन्नत में दाख़िल कर देगा और उन के छोटे बच्चों को उन के पास जन्नत में पहुँचा दिये जाएँगे। अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि उन्हें ख़ुश करने के लिए उन की औलाद के साथ जो करम फ़रमाई होगी उस की वजह से उन के अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं की जाएगी।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने बन्दों के दर्मियान अपना अ़द्ल व इन्साफ़ बयान करते हुए फ़रमाया कि वह किसी का मुवाख़िज़ा (पकड़) किसी दूसरे के गुनाहों की वजह से नहीं करेगा। हर आदमी सिर्फ़ अपने अ़मल का ज़िम्मेदार होगा, उस पर किसी दूसरे के गुनाहों का बोझ नहीं लादा जाएगा चाहे उस का बाप या बेटा ही क्यों न हो।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् मुद्दस्सिर आयात नं० (38/39) में फ़रमाया हैः-

كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝ "हर जान अपने आ़माल के बदले गिरवी है, मगर दाएँ तरफ़ वाले"।

22-24 وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ۝ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ۝

अहले जन्नत पर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की बारिश हमेशा होती रहेगी। अल्लाह तआ़ला उन के पास तरह़-तरह़ के फल और उन को पसन्दीदा चीज़े पहुँचाता रहेगा, वह लोग एक दूसरे को शराब से भरे जाम देंगे, जिसे पी कर बद् मस्त नहीं होंगे, न ज़बान से बक्वास बातें निकालेंगे और न ही उसे पीकर बहकेंगे और न गुनाह करेंगे। जैसा कि दुनिया वाले दुनिया की ह़राम शराब पी कर बहकते हैं, बक्वास बकते हैं और दूसरों की इ़ज़्ज़त पर हाथ डालते हैं।

उन की ख़िद्मत के लिए उन के इर्द-गिर्द ख़ादिम (सेवक) शराब भरते रहेंगे और उन्हें खाने के लिए फल और पीने के लिए शराब के जाम भर-भर कर पेश करते रहेंगे और वह ऐसे ख़ूबसूरत होंगे जैसे सीप में बन्द मोती होते हैं, जिन्हें अब तक किसी ने हाथ नहीं लगाया होगा।

25-28 وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا
وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ۝ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝

अहले जन्नत आपस में ऐसी बातें करेंगे जिन से मक़्सूद जन्नत में रब्बुल् आलमीन की दी हुई नेअ़मतों का ज़िक्र और उन पर उस का शुक्र अदा करना होगा। पहले उन हालात का ज़िक्र करेंगे जिन से वह दुनिया में बन्दगी की राह पर चले और एक दूसरे से कहेंगे कि हम दुनिया में अल्लाह के अ़ज़ाब से कितने खौफजदा रहते थे, तो अल्लाह ने आज हम पर कैसा एहसान किया है कि हमें जहन्नम की आग से निजात दे दी है।

हम क़ियामत आने से पहले दुनिया में सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करते थे, उसी के सामने गिड़गिड़ाते थे कि 'अर्रहमुर्राहिमीन' तू हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से निजात दे दे और जन्नत में दाख़िल कर दे, तो उस ने हमारी दुआ़ क़ुबूल कर ली। इसलिए कि जो उसे पुकारता है, वह उस की ज़रूर सुनता है और उस पर ज़रूर एहसान करता है और जो सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करता है और उस के अ़ज़ाब से डरता रहता है तो वह उस पर रहम करते हुए सीधी राह पर चलने की तौफ़ीक़ ज़रूर देता है।

आयत नं० 29 से 49 तक

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ
مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ۝ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ
اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ
رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ
تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ
الْمَكِيْدُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ۝
فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَمِنَ الَّيْلِ
فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

अनुवाद-

(29) तो आप याद दिलाते रहिए, अपने रब के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से, न आप काहिन (अभिचारक) हैं
और न दीवाने। (30) क्या यह लोग कहते हैं, ''यह शायर है, जिसके लिए हम ज़माने की गर्दिश (कालचक्र)
का इन्तिज़ार कर रहे हैं?'' (31) कह दीजिए, ''तुम इन्तिज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''
(32) क्या इनकी अक़्लें इनको ऐसी ही बातें सिखाती हैं, बल्कि यह हैं ही सरकश लोग? (33) क्या यह कहते
हैं, ''इसको इसने खुद ही गढ़ लिया है,'' हक़ीक़त यह है कि यह ईमान ही नहीं लाना चाहते। (34) अगर
यह सच्चे हैं तो इस जैसा कलाम (वाणी) ले आएँ। (35) क्या ये किसी के पैदा किये बिना पैदा हो गये हैं
या खुद ही अपने को पैदा करने वाले हैं? (36) क्या आसमानों और ज़मीन को इन्होंने पैदा किया है?- (नहीं,)
बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते; (37) क्या इनके पास आप के 'रब' के ख़ज़ाने हैं? या इन पर उनका क़ब्ज़ा
है? (38) या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर वे सुन लेते हैं? फिर उनमें से जिसने सुन लिया
हो तो वह ले आए स्पष्ट प्रमाण; (39) क्या 'उसके' लिए बेटियां हैं, और तुम्हारे अपने लिए बेटे? (40) क्या
आप उनसे कोई उज्र (मुज़दूरी) मांगते हैं कि वे इस तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं? (41) या उनके पास
ग़ैब (परोक्ष का इल्म) है, जिसके आधार पर वे लिख लेते हैं? (42) क्या कोई चाल चलना चाहते हैं? तो
जिन लोगों ने इन्कार किया वही चाल के लपेट में आने वाले हैं। (43) क्या वे अल्लाह के सिवा उनका कोई
और मअ़बूद (उपास्य) है, पाक है, 'अल्लाह' उन चीज़ों से जिनको ये उसका साझीदार ठहराते हैं। (44) और
अगर ये लोग आसमान का कोई टुकड़ा गिरते हुए देख लेंगे तो कहेंगे, ''यह तो तह पर तह बादल हैं!'' (45)
तो उनको छोड़ दीजिए, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को पहुँच जाएँ, जिस दिन इनके होश उड़ जाएंगे;
(46) जिस दिन न इनकी कोई चाल इनके काम आएगी और न इनको कोई मदद मिल सकेगी; (47) और
जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए एक अ़ज़ाब है और उसके अ़लावा भी, लेकिन उनमें से अक्सर जानते
नहीं। (48) और तुम अपने 'रब' का फ़ैसला आने तक सब्र से काम लो, तुम तो 'हमारी' निगाह में हो,
और अपने 'रब' की हम्द (प्रशंसा) के साथ पाकी बयान करो जब भी तुम उठो; (49) और रात में भी 'उसकी'

तस्बीह़ (गुणगान) करो, और सितारों के पीठ फेरने (डूबने) के समय (सुबह) भी।

आयत नं० 29 से 49 तक की व्याख्या

29 فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۝

इस में मुशिरकीने मक्का की उस बात को रद्द किया गया है कि मुह़म्मद या तो काहिन (तांत्रिक) हैं जो ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें लाने का दावा करता है या उन्हें जुनून हो गया है, जिस की वजह से बहकी-बहकी बातें करता है।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब (Address) कर के फ़रमाया कि आप लोगों को क़ुर्आन करीम पढ़ कर उन के रब की तरफ़ बुलाते रहिए। आप पर आप के रब का बड़ा इनआ़म है कि उस ने आप को नुबूव्वत, अ़क्ल और अच्छे अख़्लाक़ से नवाज़ा है। आप काहिन (तांत्रिक) और मजनून (दीवाने) कैसे हो सकते हैं? आप तो जो कुछ बयान करते हैं वह अल्लाह की वह़्य होती है और बन्दों के लिए उस का पैग़ाम (Message) होता है, जिसे आप बिना किसी रद्दोबदल के उन तक पहुँचाते हैं।

30-31 أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ۝ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ۝

मुशिरकीन-ए-मक्का कभी कहते हैं कि मुह़म्मद एक शायर हैं, जैसे अ़रब में बड़े-बड़े शोअ़रा गुज़र चुके हैं, यह भी चन्द सालों तक हमें अपनी शायरी सुनाता रहेगा, फिर अपनी उ़म्र को पहुँच कर मर जाएगा और क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी उन के बेवक़ूफ़ी की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि ठीक है, फिर तुम मेरी मौत का इन्तिज़ार करो और मैं भी तुम्हारे बारे में अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करता हूँ।

32-33 أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَٰذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

क़ुरैश के सरदार बड़ी अ़क्ल वाले माने जाते थे। वह समझते थे कि मुह़म्मद न काहिन (तांत्रिक) हैं, न मजनून (दीवाने) बल्कि वह वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं, लेकिन केवल घमण्ड व दुश्मनी की वजह से नबी करीम (सल्ल०) के बारे में बेहूदा बातें कहते थे, कभी उन्हें काहिन कहते और कभी उन्हें मजनून अर्थात अ़क्ल से खाली कहते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या उन की अ़क्ल व दानिश जो उन की सिफ़त बताई जाती है, उन्हें ऐसी ही बेहूदा बात करने का हुक्म देती है? फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नहीं, बात दरअसल यह है कि उन की सरकशी ह़द से बढ़ गई है और ह़क़ ज़ाहिर हो जाने के बावजूद केवल घमण्ड व दुश्मनी की वजह से वह ऐसी बातें करते हैं।

और अल्लाह ने फ़रमाया, उन की सरकशी तो बहुत ज़्यादा आगे बढ़ गई है, कहते हैं कि क़ुर्आन

मुह़म्मद का कलाम है, उस ने अपनी तरफ़ से गढ़ लिया है बल्कि बात इस से भी आगे जा चुकी है। दरअसल यह बेहूदा बातें वह इसलिए करते हैं कि वह काफ़िर हैं, न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न रसूल (सल्ल०) की नुबूव्वत की तस्दीक़ (verify) करते हैं, इसीलिए इस तरह़ का दोष लगाते हैं।

34 فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन मुश्रिकीन को चैलेन्ज किया है कि अगर वह अपने गुमान में सच्चे हैं कि क़ुर्आन मुह़म्मद (सल्ल०) का कलाम है, तो फिर उस जैसा कलाम लाकर दिखाएँ जो साहित्य में सबसे आगे हो। इसलिए कि क़ुर्आन अ़रबी ज़बान में है और उन का दावा है कि वह साहित्य की ह़दों को छोड़ रहे हैं।

35 أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीने मक्का के ख़िलाफ़ हुज्जत क़ायम करने के लिए एक ऐसा तरीक़ा अपनाया है जिस से उन्हें अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद का इक़रार कर लेना चाहिए वरना इन्कार करने पर हुज्जत क़ायम हो जाएगी कि उन का मुश्रिकाना यक़ीन दीन और अ़क़्ल सब के ख़िलाफ़ है।

संक्षेप में यह है कि उन का अ़क़ीदा इन्कारे तौह़ीद व रिसालत ऐसा है कि उन्हें अल्लाह ने नहीं पैदा किया और ऐसा दावा करना तीन ह़ालतों में से एक से ख़ाली नहीं है या तो यह कहें कि उन्हें किसी ने पैदा नहीं किया है, बल्कि ख़ुद वजूद में आ गये हैं और यह बात असम्भव (Impossible) है या यह कहें कि उन्होंने अपने आप को ख़ुद ही पैदा किया है, यह भी असम्भव है इसलिए कि ऐसा मुम्किन नहीं कि कोई अपने आप को पैदा करे।

जब यह दोनों सूरतें नामुम्किन हैं तो तीसरी बात साबित हो गई कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है और यह बात भी मालूम हो गई कि सिर्फ़ वही अकेला इ़बादत का ह़क़दार है, उस के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं ।

36 أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ

यानी उन्होंने आसमानों और ज़मीनों को पैदा नहीं किया है कि वह अल्लाह के शरीक बन जाएँ और यह बात बिल्कुल स्पष्ट (clear) है, लेकिन मुश्रिकीन 'यक़ीन' की नेअ़मत से मह़रूम हैं, इसीलिए उन्हें तौह़ीद बारी तआ़ला से मुतअ़ल्लिक़ शरई और अ़क़्ली दलायल से फ़ायदा ह़ासिल नहीं होता है।

37 أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ

मुश्रिकीने मक्का नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार करते थे और कहते थे कि अल्लाह ने मक्का व तायफ़ के बड़े-बड़े रईसों को छोड़कर मुह़म्मद को कैसे नुबूव्वत दे दी। इसी काफ़िराना बात को रद्द किया गया है कि क्या आप के रब की रह़मत के ख़ज़ाने उन के अख़्तियार में हैं कि वह जिसे चाहे दे और जिसे चाहे मह़रूम कर दे।

इसीलिए वह अल्लाह पर एतिराज़ करते हैं कि उस ने अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद (सल्ल०) को क्यों नुबूव्वत दे दी, हालांकि वह अल्लाह की निगाह में बड़ा ही हक़ीर (घृणित) व ज़लील हैं, उन के अख़्तियार में तो उन का अपना नफ़ा व नुक़्सान भी नहीं है। वह अपनी ताक़त के बलबूते पर अल्लाह की बादशाही और उस के अख़्तियारात पर क़ाबिज़ नहीं हो गए हैं कि ऐसी बात करते हैं, वह मोहताज और बेबस लोग हैं।

38 أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝

यानी क्या उन के पास कोई ऐसी सीढ़ी है जिस के ज़रिये वह आसमान तक पहुँच जाते हैं और फ़रिश्तों की वह बातें सुन लेते हैं जो उन्हें वह्य के ज़रिये मालूम होती हैं और इस तरह उन्हें ग़ैब (छुपा हुआ ज्ञान) की बातें मालूम हो जाती हैं?

ऐसी बात नहीं है और अगर वह इस का दावा करते हैं, तो अपनी सच्चाई पर दलील पेश करें और वह दलील कैसे पेश कर सकेंगे? ग़ैब की ख़बरें तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के पास हैं। वह किसी को भी ख़बर नहीं देता है सिवाय उस रसूल के जिसे वह अपने पैग़ाम के लिए चुन लेता है, फिर उसे जिन बातों को चाहता है ख़बर देता है और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं। जिन्हें उस ने अपनी तौहीद और दीने इस्लाम के सच्चाई की ख़बर दी है और मुश्रिकीने मक्का नादान, गुमराह और घमण्ड व दुश्मनी में मुब्तिला (Involve) हैं, जिन के पास आसमान से कोई ख़बर नहीं आती है तो भला किस की बात मानी जाए उन की या मुहम्मद (सल्ल०) की जिन के पास आसमान से वह्य आती है।

39 أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ۝

मुश्रिकीन-ए-मक्का से पूछा जा रहा है कि क्या तुम्हारे मुताबिक़ अल्लाह के बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे हैं? अल्लाह तआ़ला के ख़िलाफ़ यह कैसी ग़लत बात है कि तुम अपने लिए तो बेटा पसन्द करते हो और उस के लिए बेटियाँ बताते हैं। क्या रब्बुलू आ़लमीन की इस से भी बढ़कर कोई ऐ़बजोई हो सकती हैं?

40 أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝

यानी ऐ मेरे नबी! क्या आप उन तक मेरी बात पहुँचाने के बदले उन से कोई बदला तलब करते हो, जिस के बोझ के नीचे दबे जा रहे हैं और इस्लाम कुबूल करने से मअ़ज़ूर हैं। ऐसी कोई बात नहीं है, आप तो बिला मुआ़वज़ा (निःस्वार्थ भाव से) पूरी कोशिश कर रहे हैं कि वह इस्लाम में आ जाएँ बल्कि आप अपने पास से उन्हें माल देते हैं, ताकि उन के दिलों में ईमान पैदा हो जाए।

41 أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝

क्या मुश्रिकीने मक्का के पास ग़ैब की ख़बरें आती हैं, जिन्हें वह लिख लेते हैं और इस तरह़ उन्हें वह बातें मालूम हो जाती हैं जिन की रसूल (सल्ल०) को ख़बर नहीं होती और जिन की बुनियाद पर वह आप की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं?

ऐसी कोई बात नहीं है, वह तो बिल्कुल अन्पढ़ और गुमराह लोग हैं और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ग़ैब की ऐसी ख़बरें आती हैं जो उन के सिवा किसी के पास नहीं आती हैं। इसलिए उन का दावा झूठा है और नबी करीम (सल्ल०) और क़ुर्आने करीम अटल सत्य है।

42 اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ۝

क्या मुश्रिकीने मक्का आप में और आप पर नाज़िल किये हुए क़ुर्आन में ऐब लगाकर दीने इस्लाम और आप के ख़िलाफ़ कोई चाल चल रहे हैं? तो जान लें कि उन की साज़िश उन्हीं के गले का फंदा बन जाएगी। चुनाँचे ऐसा ही हुआ, काफ़िरों ने नबी करीम (सल्ल०) और दीने इस्लाम को नुक्सान पहुँचाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन उन्हें मुँह की खानी पड़ी और अल्लाह ने अपने रसूल की मदद की, उन के दीन को ग़ालिब बनाया और काफ़िरों को ज़लील व रुस्वा किया।

43 اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

क्या मुश्रिकीने मक्का का कोई दूसरा मअ़बूद (सल्ल०) है जो पुकारे जाने का हक़्दार हो, जिस से नफ़ा की उम्मीद लगाई जा सकती हो और जिस के नुक़्सान से डराया जा सकता हो? ऐसी कोई बात नहीं है। अल्लाह मुश्रिकों के शिर्क से पाक है, न उस की बादशाहत में उस का कोई शरीक है और न ही उस की एकता में और यही वह मक़्सद है जिस को साबित करने के लिए आयत नं० (35) से लेकर (43) तक बहुत से दलायल पेश किये गये हैं।

44 وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ۝

मुश्रिकीने मक्का की सरकशी ह़द से पार कर चुकी है, उन्होंने बातिल को अपने गले से इस तरह़ लगा लिया है कि ह़क़ की ताईद (Support) में चाहे कोई भी दलील पेश कर दी जाए उसे क़ुबूल नहीं करेंगे और घमण्ड व दुश्मनी से बाज़ नहीं आएँगे।

अगर खुली निशानी के तौर पर उन पर अ़ज़ाब के बड़े-बड़े टुकड़े भी बरसा दिये जाएँ तब भी यही कहेंगे कि यह तो बादल के टुकड़े हैं और इस निशानी से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा। उन काफ़िरों की दवा अ़ज़ाब के सिवा कुछ नहीं है।

45-46 فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا
وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! आप इन्हें क़ियामत के दिन तक इन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए और ख़ूब मज़ा उड़ाने दीजिए। क़ियामत के दिन इन्हें अपना अन्जाम मालूम हो जाएगा, तब इन की तमाम साज़िशें धरी की धरी रह जाएँगी और कोई इन की मदद के लिए नहीं आएगा।

47 وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

जो लोग कुफ़्र व शिर्क का अमल कर के अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला

क़ियामत से पहले दुनिया में भी अ़ज़ाब देता है और इस से मुराद (तात्पर्य) या तो अ़ज़ाबे क़ब्र है या क़ह़त साली (Drought) या वह हादसे जो उन की जान और माल को पहुँचते हैं, लेकिन उन में से अक्सर लोगों की समझ में यह बात आती नहीं कि इन जैसे अहले फ़िस्क़ व फ़ुजूर के बारे में हमेशा से अल्लाह की यही सुन्नत रही है, इसीलिए ठोकरें लगने के बावजूद अपने कुफ़्र व शिर्क पर जमे रहते हैं।

47-48 وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

कुर्आन करीम और नबी करीम (सल्ल०) के बारे में कुफ़्फ़ारे मक्का के तामाम आरोपों को दलायल के ज़रिये रद्द किया जा चुका है, तो अब अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि आप इन काफ़िरों की ज़्यादा परवाह न कीजिए और आप के रब की तरफ़ से आप पर जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे पूरे सब्र व मजबूती के साथ अदा करते रहिए और अपने बारे में अन्देशा न कीजिए। आप का अल्लाह आप की ह़िफ़ाज़त कर रहा है और जब रात में बेदार होइए तो अपने रब की तस्बीह़ बयान कीजिए।

इमाम अह़मद, बुख़ारी और अस्ह़ाबे सुनन ने उ़बादह बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत की है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो कोई रात को बेदार हो और कहे:-

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़्दहु लाशरीकलहु, लहुल् मुल्कु वलहुल् ह़म्दु, वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। सुब्ह़ानल्लाह, वल्ह़म्दु लिल्लाह, वला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर, वला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्लाह़ बिल्लाह" फिर अपने लिए दुआ़ करे, तो अल्लाह तआ़ला उस की दुआ़ क़ुबूल करता है और अगर उस के बाद वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े, तो उस की नमाज़ क़ुबूल हो जाती है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में आप (सल्ल०) को क़ियामुल् लैल (तहज्जुद की नमाज़) का हुक्म दिया गया है।

बाज़ लोगों ने حِينَ تَقُومُ से मुराद "حين تقوم إلى الصلوات الخمس" लिया है यानी पाँचों नमाज़ें पाबन्दी से अदा कीजिए और उन में अल्लाह की ख़ूब तस्बीह़ बयान कीजिए।

'इमाम मुस्लिम' ने अपनी किताब में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत नक़्ल की है कि आप (सल्ल०) शुरु नमाज़ में سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ पढ़ा करते थे।

इन ह़ज़रात ने अपनी इस राय के लिए आने वाली आयत नं० (49) पेश की है, जिस में अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को रात में बेदार होकर और आख़िरी ह़िस्से में अपने रब की तस्बीह़ बयान करने का हुक्म दिया है यानी इस से मालूम हुआ कि ऊपर वाली आयत नं० (48) में حِينَ تَقُومُ से मुराद पाँचों वक़्त की नमाज़ है।

मुजाहिद ने حِينَ تَقُومُ से मुराद हर मजलिस से उठा लिया है। मुस्नद अह़मद में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरवी है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मजलिस में बैठे और कस्रत से ऊँची आवाज़ में बात करे और उठने से पहले कहे:-

" سبحانك اللهم وبحمدك ،أشهد أن لا إله إلا الله استغفرك وأتوب إليك " तो अल्लाह तआला उस के उस मजलिस के गुनाहों को माफ़ कर देगा। इस ह़दीस को 'तिर्मिज़ी' और 'ह़ाकिम' ने भी रिवायत की है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि وَإِدْبَارَ النُّجُومِ यानी रात के बिल्कुल आख़िरी ह़िस्से में अल्लाह की तस्बीह़ बयान करने में फ़ज्र की नमाज़ भी दाख़िल है और 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' के नज़्दीक وَإِدْبَارَ النُّجُومِ से मुराद नमाज़ फ़ज्र से पहले की दो रकअ़तें हैं।

'सह़ीहैन' में 'ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से नक़्ल किया गया है कि नबी करीम (सल्ल०) फ़ज्र की दो रकअ़तों से ज़्यादा किसी नफ़्ल नमाज़ का एहतिमाम नहीं करते थे और 'इमाम मुस्लिम' की एक रिवायत में है कि फ़ज्र की दो रकअ़तें दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उस से बेहतर हैं।

सूरः नं० 53

सूर-ए-नज्म

सूरः नज्म का संक्षिप्त परिचय

नाम- इस सूरः का पहला शब्द النَّجْم है, यही इस का नाम है।

नाज़िल होने का ज़माना-

जम्हूर उ़ल्म-ए-तफ़्सीर के नज़्दीक पूरी सूरः मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि 'सूरतुन्नज्म' मक्का में नाज़िल हुई थी।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दीगर मुह़द्दिसीन ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत नक़्ल की है कि पहली सूरः जिस में 'सज्दः' नाज़िल हुआ था, सूरतुन्नज्म है। चुनांचे आप (सल्ल०) ने सज्दः किया और तमाम लोगों ने सज्दः किया, सिर्फ़ एक आदमी को मैंने देखा कि उस ने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर उस पर सज्दः कर लिया तो मैंने उस के बाद देखा कि वह शख़्स कुफ़्र की ह़ालत में क़त्ल कर दिया गया, वह शख़्स 'उमय्या बिन ख़लफ़' था।

कुछ रिवायतों में उस का नाम 'उ़त्बा बिन रबीआ़' बताया गया है।

कुछ मुह़द्दिसीन (अस्वद बिन यज़ीद, अबू इस्ह़ाक़ और ज़ुहैर बिन मुआ़विया) ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की इस रिवायात में इस बात की सराह़त कर दी गई है कि सूरः 'अल् नज्म' पहली सूरः है जिसे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के आ़म लोगों के सामने पढ़ी थी और जब आप (सल्ल०) ने आख़िर में सज्दः किया तो कुफ़्फ़ार भी सज्दः में चले गये सिर्फ़ एक शख़्स ने सज्दः नहीं किया जिसका ऊपर ज़िक्र आ चुका है।

आयत नं० 1 से 32 तक

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝ ذُوْ مِرَّةٍ ۭ
فَاسْتَوٰى ۝ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ
مَا رَاٰى ۝ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝
تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ۝ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۝ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۝ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ
لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰۗىِٕكَةَ تَسْمِيَةَ
الْاُنْثٰى ۝ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۝ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ڏ عَنْ ذِكْرِنَا
وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝

अनुवाद-

(1) क़सम है तारे की, जब वह नीचे आए (अर्थात डूबे), (2) तुम्हारे साथी (मुहम्मद) न गुमराह हुए और न बहके हैं; (3) और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं; (4) यह तो बस एक वह्य है, जो की जा रही है, (5) उनको ज़बर्दस्त शक्ति वाले ने सिखाया है। (6) ताक़तवर (अर्थात जिब्रईल) ने फिर वह (फ़रिश्ता असली सूरत में) नमूदार हुआ, (7) और वह ऊँचे किनारे (क्षितिज) पर थे; (8) फिर वह (फ़रिश्ता) क़रीब हुआ और आगे बढ़ा, (9) अब दो कमानों के बराबर या उससे भी ज़्यादा क़रीब हो गया। (10) तब 'उसने' अपने बन्दे की ओर वह्य (प्रकाशना) की, जो कुछ भी वह्य की, (11) उनके दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की। (12) क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जिसको वह अपनी आँखों से देखता है? (13) और उसने एक बार और भी इसको नाज़िल होते देखा है, (14) 'सिदरतुल मुन्तहा' (सातवें आसमान) के पास; (15) जिसके पास 'जन्नतुल्मावा' (ठिकाने वाली जन्नत) है (16) जबकि छा रहा था उस सिद्रा पर, (अर्थात बेरी पर नूर) जो छा रहा था; (17) निगाह न बहकी और न हद से आगे बढ़ी। (18) उन्होंने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं। (19) क्या तुम लोगों ने 'लात' और 'उज़्ज़ा' को देखा? (20) और वह जो तीसरी (देवी) मनाते हैं? (21) क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और 'उसके' लिए बेटियाँ? (22) अगर ऐसा है तो यह बड़ी बेइन्साफ़ी है। (23) वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए, अल्लाह ने उनके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा, ये लोग तो केवल गुमान के पीछे चल रहे हैं और उसके पीछे जो उनके मन की इच्छा होती है; हालाँकि उनके पास उनके 'रब' की ओर से हिदायत आ चुकी है। (24) क्या इन्सान वह कुछ पा लेगा जिसकी वह तमन्ना करता है? (25) और आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह

ही है। (26) और आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आएगी, मगर उसके बाद कि अल्लाह इजाज़त दे, जिसे चाहे और पसंद करे। (27) जो लोग आख़िरत को नहीं मानते वे फ़रिश्तों को देवियों के नाम की मिसाल (संज्ञा) देते हैं, (28) और उन्हें इसका कोई इल्म भी नहीं, वे केवल गुमान (अटकल) के पीछे चल रहे हैं, और गुमान हक़ के बारे में ज़रा भी फ़ायदा नहीं देता। (29) तो आप उसकी ओर से ध्यान हटा लीजिए, जिसने 'हमारी' नसीहत से मुँह फेरा और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ नहीं चाहा। (30) ऐसे लोगों के इल्म की सीमा यहीं तक है, आपका 'रब' उसे खूब जानता है जो 'उसकी' राह से भटका और 'वह' उसे भी खूब जानता है जिसने सीधी राह अपनायी। (31) और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है; और जो कुछ ज़मीन में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की 'वह' उन्हें उनके किये का बदला दे, और जिन लोगों ने अच्छे काम किये उन्हें अच्छा बदला दे। (32) जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और खुली बेहयाई से बचते हैं- बेशक तुम्हारे 'रब' के माफ़ी का दामन बहुत फैला हुआ है; 'वह' तुम्हें खूब जानता है, जबकि 'उसने' तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में (बच्चे) थे, तो अपने मन की पाकी और निखार का दावा न करो, 'वह' खूब जानता है कि कौन मुत्तक़ी (परहेज़गार) है?

आयत नं० 1 से 32 तक की व्याख्या

1-2 وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝

पहली आयत से आयत नं० (18) तक अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) के नुबूव्वत की तस्दीक़ फ़रमाई है और इस की शुरुआ़त उन सितारों की क़सम खाकर की है जो रात के आख़िर में गिरते नज़र आते हैं। बाज़ लोगों ने यहाँ النَّجْم से मुराद "ثريا" सितारा लिया है, लेकिन ज़्यादहतर मुफ़स्सिरीन की राय है कि इस से आ़म सितारे मुराद हैं।

नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत की सदाक़त पर सितारों की क़सम खाने में एक अ़जीब मुनासिबत यह है कि जिस तरह सितारे आसमान की ज़ीनत (beauty) हैं, उसी तरह वह्य इलाही से ज़मीन को ज़ीनत (beauty) मिलती है, इसलिए कि अगर अम्बिया के ज़रिये यह इल्म इलाही ज़मीन वालों को न मिलता तो ज़मीन अन्धेरी रात से भी ज़्यादा अन्धेरी होती।

इतनी बड़ी क़सम खाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे कुरैश को ख़िताब (address) कर के कहा कि तुम्हारे साथी यानी मेरे नबी मुहम्मद (सल्ल०) अपने रब की सीधी राह से भटक नहीं गये हैं।

इस में इशारा है कि ऐ अहले कुरैश! सीधी राह से भट्के हुए तो तुम हो और तुम मेरे नबी के तमाम ह़ालात से वाक़िफ़ हो, वह तुम्हारे दर्मियान पैदा हुए पले बढ़े, उन की सच्चाई, अमानत, पाक दामिनी और अच्छे अख़्लाक़ का होना सब को मालूम है, तुम्हें मालूम है कि उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला और जब चालीस साल की उ़म्र के बाद उन्होंने तुम्हें बताया कि उन पर अल्लाह की वह्य नाज़िल होती है, तो तुम ने उन का मज़ाक़ उड़ाया, उन को झुठला दिया और कुर्आन करीम के वह्य इलाही होने का इन्कार कर दिया।

3-4 وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝

मेरे नबी (सल्ल०) न सीधी राह से भटके हुए हैं और न इस क़ुर्आन को उन्होंने अपनी ओर से गढ़ लिया है और न दूसरे अल्लाह के हुक्मों को जिन्हें वह क़ुर्आन की तफ़्सीर के तौर पर बयान करते हैं अपनी इच्छा के मुताबिक़ लाते हैं, बल्कि वह सब अल्लाह की वह्य होती हैं।

जैसा कि अल्लाह ने सूरः निसा आयत नं० (113) में फ़रमाया हैः-

وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ "अल्लाह ने आप पर किताब व हिक्मत यानी क़ुर्आन व सुन्नत दोनों नाज़िल किया है"।

साहिबे 'फ़त्हुल् बयान' लिखते हैं यह आयत दलील है कि नबी करीम (सल्ल०) की सुन्नत वह्य होती थी, जो आप के दिल में डाल दी जाती थी।

5-7 عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝

हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को तअ़लीमात अल्लाह से मिलती थीं, जिसे जिब्रईल नबी करीम (सल्ल०) को सिखा देते थे। आयत में شَدِيدُ الْقُوَىٰ से मुराद अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक जिब्रईल (अ़लै०) हैं।

जैसा कि सूरः अल् तक्वीर पर आयात नं० (19/20) में आया हैः-

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝ "यक़ीनन यह एक बुर्जुग रसूल का क़ौल है, जो कुव्वत वाला है, अ़र्श वाले के नज़्दीक बुलन्द मर्तबः है"।

और वह फ़रिश्ता बड़ा ही साहिबे अ़क़्ल और साहिबे राय है, वह मुहम्मद (सल्ल०) को तअ़लीम देने के बाद आसमान में अपनी जगह पर लौट गया। बाज़ लोगों ने فَاسْتَوَىٰ का अर्थ यह बयान किया है कि वह फ़रिश्ता नबी करीम (सल्ल०) के पास अपनी असली शक्ल में आया, दहिया क़ल्बी की शक्ल में नहीं, जिन की शक्ल में आ़मतौर पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया करता था।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने فَاسْتَوَىٰ ۝ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝ का मतलब हसन, मुजाहिद और रबीअ़ बिन अनस से यह नक़्ल किया है कि जिब्रईल 'उफ़ुक़' की बुलन्दियों में ज़ाहिर हुए।

8-9 ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝

हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) फिर नबी करीम (सल्ल०) के क़रीब हुए ताकि उन तक अल्लाह की वह्य पहुचाएँ और आसमान की बुलन्दियों से उन की तरफ़ झुकें और उन से इतना क़रीब हो गये कि उन का दर्मियानी फ़ासला सिर्फ़ दो गज़ के बराबर या उस से भी कम रह गया।

उम्मुल् मोमिन हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा, इब्ने मसऊद, अबू ज़र और अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने यही तफ़्सीर बयान की है।

'इमाम बुख़ारी' ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को देखा कि उन के छः सौ पर (भुजाएँ) थे। 'ज़िहाक' ने माना है कि आप

(सल्ल०) जब अपने रब के बहुत ही क़रीब पहुँचे तो सज्दः में गिर गये। इस क़ौल के मुताबिक़ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ का मतलब यह होगा कि आप (सल्ल०) अपने रब से सिर्फ़ दो गज़ या उस से भी कम फ़ासले पर रह गये।

10 فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝

हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) जब नबी करीम (सल्ल०) के इतने क़रीब आ गये, तब उन्होंने आप (सल्ल०) तक अल्लाह की वह्य पहुँचाई। दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे जिब्रईल (अ़लै०) को वह्य की। तीसरा क़ौल यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दे मुहम्मद (सल्ल०) को वह्य की यानी बज़रिये जिब्रईल वह्य की।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत में “وحيى” को राज़ रखा गया है। यह नहीं बताया गया कि वह क्या बात थी जिस की वह्य की गई इसलिए बेहतर यही है कि अपनी तरफ़ से इस की तफ़्सीर न बयान की जाए अलबत्ता इतनी बात समझ में आती है कि वह कोई बड़ी ही बात थी जो बयान से बाहर है।

11-12 مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝ أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝

नबी करीम (सल्ल०) ने अपनी आँखों से देखा कि हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) उन के पास उन के रब की वह्य लेकर आए और उन के दिल ने भी इस की तस्दीक़ की और यक़ीन कर लिया कि यह अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते जिब्रईल हैं जो अल्लाह की वह्य लेकर आए हैं। यह कोई शैतानी ख़याल नहीं है यानी कान, आँख और दिल तीनों इस पर मुत्तफ़िक़ (agree) थे कि जिब्रईल हैं जो वह्य इलाही लेकर आए हैं।

बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि इस आयत से मुराद अल्लाह की वह अ़ज़ीमुश्शान निशानियाँ हैं जिन को नबी करीम (सल्ल०) ने मेअ़राज की रात में देखा था और जिन को उन के दिल ने भी यक़ीन कर लिया था।

बाज़ लोगों ने इस से यह समझा है कि नबी करीम (सल्ल०) ने मेअ़राज की रात में अल्लाह तआ़ला को देखा था और बात हुई थी, लेकिन अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत से मुराद जिब्रईल (अ़लै०) को अपनी असली शक्ल में देखना है। आप (सल्ल०) ने जिब्रईल (अ़लै०) को उन के असली रूप में दोबारा देखा था। पहली बार नुबूवत के कुछ ही दिनों के बाद आसमाने दुनिया के नीचे ‘उफ़ुक़’ की बुलन्दियों में देखा जिस का ज़िक्र इस आयत में आया है और जो आयात नं० (8/9) की तफ़्सीर में बयान किया जा चुका है यानी हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को आँखों से देखा और दूसरी बार शबे मेराज में सातवें आसमान पर देखा, जिस का ज़िक्र आयत नं० (13) की तफ़्सीर में आएगा।

यहाँ मुश्रिकीने मक्का से कहा जा रहा है कि मेरे नबी ने अपनी आँखों से जो कुछ देखा, उस में तुम क्यों शुब्हा करते हो और जो बात तुम्हारी समझ और तसव्वुर (कल्पना) से बाहर है, उस के बारे में तुम उन से क्यों झगड़ते हो।

‘इमाम बुख़ारी’ ने ‘इब्ने मसऊद’ (रज़ि०) से रिवायत की है कि आप (सल्ल०) ने हज़रत जिब्रईल

(अ़लै०) को देखा कि उन के छः सौ पर थे। ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को आँखों से देखना नबी करीम (सल्ल०) और दूसरे अम्बिया-ए-किराम के साथ ख़ास है। दूसरे लोग इस ह़क़ीक़त को नहीं समझ सकते हैं, उन्हें तो बस नबी करीम (सल्ल०) की बात पर यक़ीन कर के ईमान ले आना चाहिए कि वाक़ई आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत जिब्रईल को अपनी आँखों से देखा था।

13 وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰىۙ

नबी करीम (सल्ल०) ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को दूसरी बार 'शबे मेअ़राज' में सातवें आसमान पर देखा था। बाज़ लोगों ने इस का मतलब यह बयान किया है कि नबी करीम (सल्ल०) ने अल्लाह को अपने दिल की आँखों से, दूसरी बार 'शबे मेअ़राज' में देखा था, लेकिन अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक पहला क़ौल ही सही है और इस की ताईद (पुष्टि Support) ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) की उस ह़दीस से होती है जिसे 'मुस्लिम' ने रिवायत की है।

मैंने नबी करीम (सल्ल०) से पूछा, क्या आप ने अपने रब को देखा था? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक नूर था, अल्लाह को कैसे देख सकता"।

मशहूर 'ताबई मसरूक़' से 'ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने कहा कि जो शख़्स तुम से कहे कि मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने रब को देखा था, उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा आरोप लगाया। उन्होंने ह़ज़रत जिब्रईल को देखा था, उन की असली सूरत में आप (सल्ल०) ने उन्हें सिर्फ़ दो बार देखा था और दूसरी बार सिद्रतुल् मुन्तहा के पास, पहली बार 'अज्याद मक्का' में जब उन्होंने छः सौ परों के साथ उफ़ुक़ (आसमान) को ढ़ांक रखा था। **(तिर्मिज़ी, तफ़्सीर सूरः नज्म)**

14 عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى

سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى एक अ़ज़ीम दरख़्त है, जो सातवें आसमान पर पाया जाता है। **(मुस्लिम)**

एक सही रिवायत के मुताबिक़ यह दरख़्त छठे आसमान पर है और इस का नाम سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى इसलिए है कि ज़मीन से जो कुछ ऊपर चढ़ता है उस की इन्तिहा वही दरख़्त है, इसमें क्या है किसी को मालूम नहीं है यानी बेरी का वह दरख़्त उस जगह है जहाँ मख़्लूक़ात के इ़ल्म, शहीदों की रुहों और ज़मीन से ऊपर चढ़ने वाले तमाम आ़माल की इन्तिहा है यानी वह जगह तमाम आसमानों और ज़मीन के ऊपर है, जहाँ मख़्लूक़ात के बुलन्दी की अन्तिम सीमा है।

नबी करीम (सल्ल०) ने मेअ़राज की रात में इसी سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى के पास ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को देखा था, जिस के क़रीब शैतान नहीं फटक सकता था।

15-16 عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰىؕ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰىۙ

उस दरख़्त के पास एक जन्नत है जिस का नाम جَنَّةُ الْمَاْوٰى है, जिस में अल्लाह तआ़ला की तमाम नेअ़मतें पाई जाती हैं और जो उस के पसन्दीदा बन्दों के रुहों की जगह है।

नबी करीम (सल्ल०) ने देखा कि बेशुमार रुहें और फ़रिश्ते उस दरख़्त पर टूटे पड़ रहे थे और उस के इर्द-गिर्द मंडराते फिर रहे थे।

17 مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उस वक़्त जो कुछ दिखाया गया, उससे आप (सल्ल०) की नज़र न इधर उधर हुई और न यहाँ से ज़रा भी आगे बढ़ी यानी उतना ही किया जितने का उन्हें हुक्म दिया गया था और उसी पर सब्र किया जो उन्हें दिया गया।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला के साथ नबी करीम (सल्ल०) के अदब की तस्वीर खींची गई है कि आप इस मक़ाम पर अदब के साथ टकटकी लगाए रहे और जो कुछ उन्हें दिखाया गया उसे ही देखते रहें ज़रा भी किसी दूसरी तरफ़ आकर्षित नहीं हुए और न आप की आँखें इस तजल्ली से बाहर हुईं।

18 لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى۝

आप (सल्ल०) ने उस रात अपने रब की ऐसी अ़ज़ीम निशानियों को देखा जो सीमा से बाहर थीं। बाज़ लोगों के नज़्दीक अ़ज़ीम तरीन निशानी से मुराद 'सब्ज़ कपड़ा' है जिस ने उफ़ुक़ को ढ़ांक रखा था। बाज़ लोगों के नज़्दीक इस से मुराद हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) हैं जिन्होंने सब्ज़ लिबास में आसमान व ज़मीन के दर्मियानी दूरी को ढ़ांक रखा था और उन के छः सौ पर थे।

'सह़ीह़ मुस्लिम' वग़ैरह में यही है और कुछ मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) की राय है कि الْكُبْرٰى आयात की सिफ़त है और इस से मुराद अल्लाह की वह तमाम अ़ज़ीम तरीन निशानियाँ हैं जिन का आप (सल्ल०) ने उस रात سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى۝ की तरफ़ जाते हुए और वहाँ से लौटते देखा था।

19-20 اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى۝ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى۝

इन आयतों में दीने इस्लाम और नबी करीम (सल्ल०) की सच्चाई, वह्य इलाही और तौह़ीद का ज़िक्र किये जाने के बाद अब मुश्रिकीने मक्का के मूर्तिपूजा और उन के झूठे उपास्यों की हैसियत बयान की जा रही है कि वह तो मिट्टी और पत्थर की बनी हुई मूर्तियाँ हैं जिन के तुमने बहुत से (Diffrent) नाम रख लिए हैं और जो न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़्सान। क्या तुम अन्धे हो गये हो कि तुम उन्हें उस अल्लाह के बराबर समझते हो जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है?

इस में अल्लाह तआ़ला ने तीन मशहूर देवताओं के नाम लिए हैं, जो अहले अ़रब में बड़े मशहूर थे और जिन के वह बड़े अक़ीदतमन्द थे और अल्लाह के नामों से उन के नाम रखते थे। कहते थे कि अल्लाह से अल्लात "اللات" और अल् अ़ज़ीज़ से "العزى" अल्उज्ज़ा है, जो 'अल् उ़ज़्ज़ा' स्त्रीलिंग है और जो "العزيزة" के मअ़ने में है और अल् मन्नान "المنّان" से अल्मनात "المناة" है। इस तरह़ वह अपने इन देवताओं को अल्लाह का शरीक ठहराते थे और इन की पूजा करते थे।

'अल् सहाह़' में है कि "اللات" 'अल्लात' बनी सक़ीफ़ की एक मूर्ति का नाम था, जो तायफ़ में था और अल्उ़ज़्ज़ा "العزی" 'क़ुरैश' और 'बनी कनाना' की एक मूर्ति थी। 'मुजाहिद' कहते हैं कि यह ग़त्फ़ान में एक दरख़्त (पेड़) था, जिस की लोग अ़िबादत करते थे। नबी करीम (सल्ल०) ने ख़ालिद बिन वलीद को भेजकर उसे कटवा दिया था। बाज़ लोगों की राय है कि 'बतन नख़्ला' में एक शैतान था जो हर साल तीन मौसमों में आया करता था।

'ह़ज़रत सअ़ीद बिन जुबैर' का क़ौल है कि "العزی" अल्उ़ज़्ज़ा एक सफ़ेद पत्थर था जिस की यह लोग अ़िबादत करते थे। "مناة" 'मन्नात' 'बनी हिलाल' की मूर्ति का नाम था।

'इब्ने हिशाम' का ख़याल है कि वह 'हुज़ैल बिन ख़ुज़ाआ' की मूर्ति का नाम था। 'साह़िबे मुह़ासिनुल् तन्ज़ील' ने लिखा है कि वह मक्का और मदीना के दर्मियान फ़िद्या के पास तिकोना एक चट्टान थी, जिस की 'ख़ुज़ाआ' और 'औस व ख़ज़रज' वाले ज़माने जाहिलियत में तअ़ज़ीम करते थे और वहीं से ह़ज बैतुल्लाह के लिए तक्बीर कहना शुरु करते थे। 'इमाम बुख़ारी' ने ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से यही रिवायत नक़्ल की है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने लिखा है कि 'जज़ीर-ए-अ़रब' में इन मूर्तियों के अ़लावा भी झूठे देवता थे, जिन की अहले अ़रब ख़ान-ए-कअ़बः की तरह तअ़ज़ीम करते थे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इन मूर्तियों का ज़िक्र उन के ज़्यादा मशहूर होने की वजह से किया है।

21-22 أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝

तुम अ़द्ल व इन्साफ़ से कितने दूर हो कि अपने लिए तो बेटे पसन्द करते हो और लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते हो और जिन लड़कियों को तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते हो उन्हें अल्लाह के लिए साबित करते हो, कहते हो कि फ़रिश्ते और तुम्हारी यह देवियाँ अल्लाह की बेटियाँ हैं।

आयत का एक दूसरा मतलब यह भी बयान किया गया है कि 'लात' व 'उ़ज़्ज़ा' और 'मनात' जिन को तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो उन्हें स्त्रीलिंग (female) बताते हो, ह़ालांकि तुम स्त्रियों को कमतर समझते हो और पसन्द नहीं करते हो कि तुम्हारे घर बच्चियाँ पैदा हों, तो फिर यह कहाँ का इन्साफ़ है कि जिन झूठे देवताओं को तुम अल्लाह का शरीक बताते हो, उन्हें स्त्रीलिंग (femining) बताते हो।

23 إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ
وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝

तुम्हारे यह झूठे देवता जिन्हें तुम ने और तुम से पहले तुम्हारे पूर्वजों ने अल्लाह के नामों से जोड़ रखे हैं, उन में मअ़बूद (उपास्य) बनने का कोई भी गुण मौजूद नहीं है, तुम ने केवल अपनी तरफ़ से उन के ऐसे नाम रख दिये हैं जिन का ह़क़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है और जिन की अल्लाह ने कोई दलील नहीं नाज़िल की है। तुम अपने वहम व गुमान और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी करते हो, ह़ालांकि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट दलील आ चुकी है कि यह मूर्तियाँ इस लायक़ नहीं कि इन की

अ़िबादत की जाए। अ़िबादत तो सिर्फ़ उस अल्लाह के लिए ख़ास है जो हर चीज़ का ख़ालिक़ और आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ का मालिक है।

24-25 أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ۝ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝

मुश्रिकीने मक्का के लिए उन के रब की तरफ़ से नबी करीम (सल्ल०) के ज़रिये जो हिदायत आई, उस से उन्होंने मुँह फेर लिया और अपनी मनमानी तमन्नाओं से रिश्ता जोड़ लिया और इस बातिल ख़याल को अपने दिल में जगह दे दी कि उन के उपास्य उन के लिए सिफ़ारशी बनेंगे।

अल्लाह तआ़ला ने उन की बात को रद्द करते हुए फ़रमाया कि इस दुनिया में आदमी की मर्ज़ी और ख़्वाहिश के मुताबिक़ मामलात अन्जाम नहीं पाते हैं, बल्कि तमाम बातों का तअ़ल्लुक़ अल्लाह और उस की मर्ज़ी से है, इस लिए उन्होंने कैसे समझ लिया कि उन के झूठे उपास्य उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन की सिफ़ारिश करेंगे।

इन की यह बात बहुत बड़ी जुर्रत की है कि नबी करीम (सल्ल०) के ज़रिये आने वाले यक़ीन को छोड़कर अपने झूठे विचार की पैरवी कर रहे हैं और अल्लाह के क़ानून से आज़ाद होकर अपनी इच्छा की पैरवी कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने सूरः मूमिनून आयत नं० (71) में फ़रमाया हैः-

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ

"अगर दीने शरीअ़त उन की इच्छा के अनुसार हो जाती तो आसमान व ज़मीन और उस के दर्मियान की हर चीज़ दरहम-बरहम हो जाती"।

26 وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ۝

यहाँ मूर्ति पूजकों को कहा गया है कि वह अपने पत्थर के बने ज़लील व ह़क़ीर मअ़बूदों (उपास्यों) से कैसे सिफ़ारिश की उम्मीद लगाते हैं, जबकि अल्लाह के फ़रिश्तों का ह़ाल यह है कि वह अपने रब की मर्ज़ी और इजाज़त के बग़ैर किसी के लिए शफ़ाअ़त का कोई कलिमा अपनी ज़बान पर नहीं ला सकते हैं।

27-28 إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ۝ وَمَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ
إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝

'मुश्रिकीने मक्का' जो आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते हैं उन का एक बहुत बड़ा जुर्म यह है कि वह फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताते हैं।

आयत नं० (28) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अपनी ज़बान से एक ऐसी बात कहते हैं जिस का उन्हें कोई इ़ल्म नहीं है, इसलिए कि उन्होंने उन्हें न देखा है और न जाना है और न उन के पास अल्लाह की ओर से इस विषय में कोई ख़बर आई है। यह बात उन्होंने केवल अपने वहम व गुमान और जिहालत व गुमराही की बुनियाद पर कही है।

29 فَأَعْرِضْ عَن مَّن تَوَلَّىٰ عَن ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को नसीहत की कि आप इन काफ़िरों से अपने आप को अलग कर लीजिए जो हमारी याद से ग़ाफ़िल हैं और जिन का मक़्सद दुनियावी लज़्ज़तों से फ़ायदा उठाना है।

30 ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۚ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन काफ़िरों का इ़ल्म भी दुनियावी मक्सद के लिए हैं, इस के सिवा इन्हें कुछ भी मालूम नहीं है और जिस का मक्सद दुनिया और उस की लज़्ज़तें हों, उसे उस के ह़ाल पर ही छोड़ देना चाहिए।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप के रब को ख़ूब मालूम है कि ह़क़ की राह पर कौन है और गुमराही की वादियों में कौन भटक रहा है और वह क़ियामत के दिन हर एक को उस के अच्छे और बुरे आ़माल का बदला देगा।

31 وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝

आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है और दोनों के दर्मियान जितनी भी मख़्लूक़ात हैं सब उसी की हैं। वह जिस तरह़ चाहता है करता है, उस का क़ानून उस में लागू होता है और उस की शरीअ़त उन पर जारी होती है। वह हुक्म देता है और मना करता है और वह गुनहगार को सज़ा देता है और फ़रमाँबरदार को अच्छा बदला देता है और सब से अच्छा बदला अल्लाह की रज़ा और हुसूले जन्नत है।

32 اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۚ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝

उन अच्छे लोगों के गुण यह हैं कि वह उन वाजिबात को अदा करते हैं जिन का छोड़ना बड़ा गुनाह है और ह़राम कामों से भी बचते हैं। जैसे-

ज़िना, शराबनोशी, सूदख़ोरी, क़त्ल नफ़्स और इसी तरह़ के दूसरे बड़े-बड़े गुनाह। अल्बत्ता उन से कभी कभार बाज़ छोटे-छोटे गुनाह हो जाते हैं।

"لم" का लग़्वी मअ़ना "قليل وصغير" है। 'ज़ुजाज' का क़ौल है कि "لم" वह गुनाह है जिस का करना इन्सान से कभी कभार हो जाता है और उस पर इस्रार नहीं करता है। जम्हूर अहले इ़ल्म के नज़्दीक इस से मुराद छोटे गुनाह हैं। ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने इस की मिसाल देते हुए बताया कि जैसे बोसा लेना इशारा करना और देखना है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस का मतलब यह नक़्ल किया गया है कि आदमी गुनाह के क़रीब जाए और फिर तौबः कर ले।

इस क़िस्म के छोटे गुनाहों के करने से आदमी अच्छों की सफ़ (पंक्ति) से नहीं निकलता, बल्कि अल्लाह तआ़ला उन्हें माफ़ कर देता है इसलिए कि उस की रह़मत बहुत ही वसीअ़ (विस्तृत) है, जिस के

अन्दर वह अपने ऐसे तमाम बन्दों को ढ़ांक लेता है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः निसा आयत नं० (31) में फ़रमाया है:-

إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ

"अगर तुम उन बड़े-बड़े गुनाहों से जिन से तुम्हें मना किया गया है बाज़ रहोगे तो हम ज़रूर तुम्हारे (छोटे-छोटे) क़ुसूर माफ़ कर देंगे"।

नबी करीम (सल्ल०) की सही ह़दीस है, "पंचगाना नमाज़ें" और जुमअ़ से जुमअ़ तक और रमज़ान से रमज़ान तक, उन के दर्मियान के गुनाहों को मिटा देती हैं, जब तक आदमी बड़े गुनाहों से बचता रहे"।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ इन्सानों! तुम्हारा रब तुम्हारी कमज़ोरियों से उस वक़्त से ख़ूब वाक़िफ़ है जब उस ने तुम्हारे बाप आदम को मिट्टी से पैदा किया था और जब तुम अपनी माँओं के पेट में परवरिश पा रहे थे। वह जानता है कि तुम्हारे अन्दर नेकी करने के जज़्बे के साथ गुनाह करने का जज़्बा भी पाया जाता है।

जब गुनाह का मौक़ा मिलेगा तो तुम्हारा खिचाव उस की तरफ़ बढ़ जाएगा। इसीलिए वह अपने फ़ज़्ल व करम से तुम्हारे छोटे गुनाह माफ़ कर देता है और ख़ासतौर पर अपने उन बन्दों के छोटे गुनाहों को जो हर दम अपने मालिक की रज़ा की तलब में लगे रहते हैं और कभी कभार कोई छोटा मोटा गुनाह हो जाता है।

इसलिए लोगों! तुम अपनी पाकी न बयान करो और यह न कहो कि हम तो गुनाहों से बिल्कुल पाक साफ़ हैं। अल्लाह को तुम्हारे बयान किये बग़ैर ख़ूब मालूम है कि उस से डरने वाला कौन है।

'अह़मद' 'मुस्लिम' और 'अबूदाऊद' ने ह़ज़रत ज़ैनब बिन्त अबी सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि उन का नाम "بَرَّة" बर्रह यानी पाकीज़ह रखा गया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया,

"तुम लोग अपनी पाकी न बयान करो, अल्लाह को ख़ूब मालूम है कि पाकीज़ह कौन है। उस का नाम 'ज़ैनब' रखो"।

'सह़ीहैन' में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से मरवी है कि एक शख़्स ने किसी दूसरे की नबी करीम (सल्ल०) के सामने तअ़रीफ़ की, तो आप (सल्ल०) ने बार-बार फ़रमाया कि "तुम्हारा बुरा हो तुम ने अपने दोस्त की गर्दन काट दी, अगर किसी की तअ़रीफ़ करनी ज़रूरी हो तो यूँ कहो कि मैं फ़लाँ को ऐसा समझता हूँ और अल्लाह उसके ह़ाल से ख़ूब वाक़िफ़ है और मैं अल्लाह के इ़ल्म के होते हुए किसी की पाकी नहीं बयान करता हूँ। मेरा ख़याल है कि फ़लाँ आदमी ऐसा-ऐसा है"।

आयत नं० 33 से 62 तक

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي
وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ وَأَنَّ إِلَىٰ
رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾
وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾ وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾ وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾
وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾
هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ
وَلَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾ सज्दः

अनुवाद-

(33) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह फेरा, (34) और थोड़ा देकर (फिर हाथ) रोक लिया; (35) क्या उसके पास ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है कि वह उसे देख रहा है? (36) क्या उसे उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों (किताबों) में है? (37) और इब्राहीम की, जिन्होंने अपना कहना पूरा कर दिखाया, (38) यह कि 'कोई व्यक्ति दूसरे (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा;' (39) और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसके लिए उसने कोशिश की; (40) और यह कि उसकी कोशिश (बहुत जल्द) देखी जाएगी, (41) फिर उसको पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा; (42) और यह कि अन्त में पहुँचना तुम्हारे रब ही के पास है; (43) और यह कि 'वह' हँसाता और रुलाता है; (44) और 'वही' मारता और ज़िन्दा करता है। (45) और 'वही' है जिसने मर्द और औ़रत का जोड़ा पैदा किया, (46) एक नुत्फ़े (वीर्य) से, जब वह (रह़म में) टपकाई जाती है; (47) और यह कि दूसरी बार भी पैदा करना 'उसी' के ज़िम्मे है; (48) और यह कि 'वही' धनी और पूंजीपति बनाता है; (49) और यह कि 'वही' शेअ़रा (नामक तारे) का 'रब' है। (50) और यह कि 'उसी' ने अगले आ़द को तबाह किया; (51) और समूद को भी, कि किसी को बाक़ी न छोड़ा, (52) और इनसे पहले नूह़ की क़ौम को भी, निश्चय ही वे बड़े ज़ालिम और सरकश थे। (53) और 'उसी ने' उल्टी हुई बस्तियों को भी गिरा दिया, (54) फिर उन पर (पथराव का मेह) जो छाया सो छाया; (55) तो अपने रब की किन-किन निशानियों पर झगड़ेगा? (56) यह ख़बरदार करने वाले हैं उन ख़बरदार करने वालों में से जो पहले आ चुके हैं। (57) क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई, (58) अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे (कष्ट को) दूर कर दे? (59) क्या इस बात पर तुम आश्चर्य करते हो? (60) और हँसते हो और रोते नहीं; (61) और तुम ग़फ़्लत में पड़े हो। (62) तो अल्लाह के लिए सज्दः करो और ('उसी' की) इ़बादत करो।

आयत नं० 33 से 42 तक की व्याख्या

33-42 أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ

بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۝ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ
إِلَّا مَا سَعَىٰ ۝ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۝ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ۝ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ۝

'मुजाहिद' 'इब्ने ज़ैद' और 'मक़ातिल' का क़ौल है कि यह आयतें 'वलीद बिन मुग़ीरा' के बारे में नाज़िल हुई थीं। उस ने पहले इस्लाम को क़ुबूल कर लिया था, लेकिन कुछ मुशिरकीन ने उसे अपने पूर्वजों का दीन छोड़ने की ग़ैरत दिलाई तो इस्लाम से फिर गया और दोबारा मुश्रिकों में शामिल हो गया।

'इब्ने जरीर' की रिवायत है कि जिस शैतान क़ुरैशी ने उसे दीन से फिरने पर उभारा था, उस ने उस से कहा कि अगर तुम्हें क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है तो मुझे रोज़ाना इतना माल दो, मैं तुम्हारी तरफ़ से अ़ज़ाब का बोझ उठा लूँगा, चुनाँचे उस ने उसे रोज़ाना माल देना शुरु किया और फिर एक मुद्दत के बाद बन्द कर दिया।

उसी शैतान क़ुरैशी के बारे में अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (35) में फ़रमाया कि क्या उस के पास इ़ल्म ग़ैब (छुपा हुआ ज्ञान) है जिस के ज़रिये उसे मालूम है कि क़ियामत के दिन कोई किसी की तरफ़ से अ़ज़ाब झेल लेगा? यह उस का आरोप है।

क्या जो कुछ 'सुहुफ़े मूसा' यानी 'तौरेत' में और 'सुहुफ़े इब्राहीम' में आया है, उसे इस को ख़बर है? उन सहीफ़ों (ग्रन्थों) में तो यह है कि क़ियामत के दिन कोई किसी दूसरे का बोझ न उठा सकेगा और हर इन्सान को सिर्फ़ उस के अपने अ़मल का बदला मिलेगा।

जैसे- सूरः तूर आयत नं० (21) में आया है أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ "हम उन जन्नतियों के पास उन की औलाद को पहुँचा देंगे" और ह़दीस में आया है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अम्बिया और फ़रिश्तों की सिफ़ारिश क़ुबूल करेगा और यह भी आया है कि ज़िन्दा आदमी मुर्दा के लिए दुआ़ करेगा, तो अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल करेगा।

इस तरह दुआ़ और सद्क़ः का सवाब मुर्दा को पहुँचता है। इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब "الصحيح" में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब आदमी मर जाता है तो उस का अ़मल ख़त्म हो जाता है, सिर्फ़ तीन चीज़ों का उस को सवाब मिलता रहता है, नेक औलाद जो उस के लिए दुआ़ करे, सद्क़-ए-जारिया और वह इ़ल्म जिस से लोग नफ़ा ह़ासिल करें।

इसलिए कि ह़क़ीक़त में तीनों काम उस की कोशिशों का ही नतीजा हैं और उस के अ़मल का एक ह़िस्सा हैं। जैसा कि हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की इस ह़दीस में आया है जिसे 'नसई' ने रिवायत की है "कि सब से पाकीज़ह रोज़ी वह है जो आदमी की अपनी कमाई हो और उस का बेटा उस की कमाई है और सद्क़ः जारिया जैसे वक़्फ़ वग़ैरह उस के अपने अ़मल का ह़िस्सा है और जिस इ़ल्म को वह लोगों में फैलाता है वह भी उस के अ़मल का ह़िस्सा है।

43-46 وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۝ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝
مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۝

'सहायफ़ मूसा' और 'इब्राहीम' में यह भी आया है कि 'रब्बुल् आ़लमीन' वह है जिस ने इन्सान में 'हंसने और रोने' की ताक़त पैदा की है। या आयत का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने ही अहले जन्नत को जन्नत में भेज कर हँसाया और अहले जहन्नम को जहन्नम में डाल कर रुलाया या इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने दुनिया में जिसे चाहा ख़ुशी देकर हंसाया और जिसे चाहा ग़म देकर रोने पर मजबूर किया।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहा मौत के घाट उतार दिया और जिसे चाहा नुत्फ़ा (वीर्य) में ज़िन्दगी डाल कर पैदा किया और उसी ने नर व मादा को एक बूंद से पैदा किया, जो कूदता हुआ माँ के गर्भ में जाकर ठहर जाता है।

47-49 وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۝

वह क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात को दोबारा ज़िन्दा करेगा और वही जिसे चाहता है मालदार बनाता है और जिसे चाहता है फ़क़ीर व मोह़ताज बना देता है।

सूरः रअ़द आयत नं० (26) में आया है يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ "वह जिस के लिए चाहता है रोज़ी को बढ़ा देता है और जिस के लिए चाहता है घटा देता है"।

आयत का दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि वही मालदार बनाता है और वही जमा करने के लिए माल देता है और वही 'शेअ़रा' सितारे का रब है और इस आयत में 'ख़ुज़ाआ़' और उन लोगों की रद्द है जो उस सितारे की पूजा करते थे, वरना अल्लाह तआ़ला तो हर चीज़ का रब है यानी 'शेअ़रा' सितारा अल्लाह की मख़्लूक़ है जिसे लोग देवता समझ कर पूजने लगते हैं।

50-54 وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝ وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ
وَأَطْغَىٰ ۝ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۝ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ۝

वही है जिस ने 'आ़दे अव्वल' की क़ौम को हलाक कर दिया था। उन्हें "عاد اول" आदे अव्वल इसलिए कहा गया है कि उन का ज़माना क़ौमे समूद से पहले का है। बाज़ ने कहा कि इस से मुराद क़ौमे हूद है और आ़द आख़िर 'इरम' क़ौम को कहते हैं।

उसी ने 'क़ौमे समूद' को हलाक कर दिया यानी अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह़ 'क़ौमे आ़द' को हलाक कर दिया उसी तरह़ 'क़ौमे समूद' को भी हलाक कर दिया, दोनों क़ौमों में से किसी को नहीं छोड़ा और उसी ने इन दोनों क़ौमों से पहले क़ौमे नूह़ को हलाक कर दिया था, जो आ़द व समूद से भी ज़्यादा ज़ालिम और सरकश हो गये थे।

उसी ने 'क़ौमे लूत' की बस्तियों को उलट दिया था और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के हाथों ऊपर ले जाकर ज़मीन पर दे मारा था, फिर उन पर पत्थरों की बारिश कर के उन्हें ढ़ांक दिया था। जैसा कि सूरः अल् ह़िज्र आयत नं० (74) में आया हैः-

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ

यानी "हम ने उस शहर को उलट-पुलट कर दिया और उन लोगों पर कंकर वाले पत्थर बरसा दिये"।

55 فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾

अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिक व काफ़िर इन्सान को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि तुम अल्लाह की किन-किन नेअ़मतों में शक करोगे और किन-किन को झुठलाओगे और कहोगे कि यह नेअ़मतें अल्लाह की दी हुई नहीं हैं।

इसमें कुछ तो ज़ाहिरी तौर पर भी अल्लाह की नेअ़मतें हैं और कुछ अल्लाह का पिछली क़ौमों पर अ़ज़ाब था, लेकिन चूंकि उन से इन्सानों को नसीहत मिलती है इसलिए उन्हें भी नेअ़मत कहा गया है और उन्हें इसलिए भी नेअ़मत कहा गया है कि उन के ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने नाफ़रमानों से बदला लिया था और अम्बिया व नेक लोगों की मदद व ताईद (support) फ़रमाई थी।

56 هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾

इस आयते करीमा में نَذِيْرٌ से मुराद रसूलुल्लाह (सल्ल०) हैं और आयत का मतलब यह है कि मुहम्मद (सल्ल०) पिछले रसूलों की तरह तुम्हारे लिए एक रसूल हैं, जिन की बेअ़सत का मक़्सद तुम्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से डराना है। जिस तरह उन रसूलों ने अपनी क़ौमों को डराया था।

'इब्ने जुरैज' और 'मुहम्मद बिन कअ़ब' वग़ैरहुमा का यही क़ौल है। 'क़तादह' के नज़्दीक نَذِيْرٌ से मुराद कुर्आन करीम है और आयत का मतलब यह है कि लोगों! यह कुर्आन तुम्हें उसी अ़ज़ाब से डराता रहा है जिस से पिछली आसमानी किताबों ने क़ौमों को डराया था और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत का मतलब यह बयान किया है कि इन आयतों में पहले की सरकश क़ौमों की हलाकत के जो क़िस्से सुनाए गये हैं, उन से मक़्सूद उम्मते मुहम्मदिया को डराना है कि अगर उस ने भी अल्लाह की नाफ़रमानी की तो उस पर भी अ़ज़ाबे इलाही आ सकता है।

57-58 اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿۵۷﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿۵۸﴾

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को क़ियामत की ख़बर दी है, ताकि उस दिन के अ़ज़ाब से बचने की तैयारी करें। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने 'सूरः अल् क़मर' आयत नं० (1) में यूँ कहा है اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ कि "क़ियामत बिल्कुल क़रीब है" और उस का वक़्त अल्लाह के सिवा किसी को मालूम नहीं है। जैसा कि सूरः अल् अअ़राफ़ आयत नं० (187) में आया है:-

لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ

यानी "जब उस का वक़्त आ जाएगा तो वही इसे ज़ाहिर करेगा"। आयत नं० (58) का एक दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि जब वह दिन आ जाएगा तो अल्लाह के सिवा कोई उस की सख़्ती को टाल नहीं सकेगा।

59-61 أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۝ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ۝

मुश्रिकीने मक्का से कहा जा रहा है कि अल्लाह से तुम्हारी दूरी और क़ियामत के दिन की तैयारी से तुम्हारी ग़फ़्लत कितनी बढ़ चुकी है कि तुम क़ुर्आन को झुठलाते हो और उस का मज़ाक़ उड़ाते हो, हालांकि होना तो यह चाहिए था कि काफ़िरों और मुश्रिकों के लिए सज़ा सुन कर तुम रोते और तुम से जो गुनाह हुए हैं उन्हें याद कर के अपने रब के सामने दुआ़ करते। जैसा कि वह लोग करते हैं जो क़ुर्आन करीम के वह्य इलाही होने का यक़ीन रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (109) में उन के बारे में फ़रमाया हैः-

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا

“यानी जब उन के सामने क़ुर्आन की तिलावत की जाती है तो वह अपनी ठुड्डियों के बल रोते हुए सज्दे में गिर पड़ते हैं और यह क़ुर्आन उन की आ़जिज़ी और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ को बढ़ा देता है”।

سَامِدُونَ ‘सामिदून’ की तफ़्सीर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने ‘गाना’ किया है यानी कुफ़्फ़ारे मक्का जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़ुर्आन पढ़ते सुनते तो गाने लगते और खेल तमाशा करने लगते थे।

सुद्दी ने इस की तफ़्सीर “**يستكبرون**” ‘यस्तकबिरून किया है यानी जब लोग क़ुर्आन सुनते तो मारे घमण्ड के उन की गर्दनें अकड़ जाती थीं।

‘ह़ाफ़िज़ सियोती’ ने लिखा है कि इस आयत से साबित होता है कि क़ुर्आन करीम पढ़ते वक़्त रोना मुस्तह़ब (पसंदीदा) है और हंसना, गाना, खेल तमाशा और ग़फ़्लत में शामिल होना बुरा है।

62 فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ۝ सज्दः

मुश्रिकीने मक्का के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों से कहा है कि तुम उन की तरह न हो जाओ और अपने अल्लाह को सज्दः करो, इसलिए कि सज्दः ही अ़िबादत की अस्ल है, उसी के ज़रिये बन्दा अपने ख़ालिक़ व मालिक के सामने हक़ीक़ी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का इज़्हार करता है। अ़िबादत की यही वह कैफ़ियत है जिस में बन्दा अपने जिस्म का सब से इज्जतवाला अंग यानी अपनी पेशानी ज़मीन पर रख कर अपने रब के सामने दुआ़ करता है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने उन्हें आ़म अ़िबादत का हुक्म दिया, जो हर उस क़ौल व अ़मल को शामिल है जिसे अल्लाह तआ़ला पसन्द करता है।

चुनाँचे जब नबी करीम (सल्ल०) ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सामने इस सूरत की तिलावत की और आख़िर में सज्दः किया तो कुफ़्फ़ार (इन्कारी) भी सज्दः में गिर गये। जैसा कि इस सूरः की तफ़्सीर के शुरु में लिखा जा चुका है।

सूरः नं० 54

सूर-ए-क़मर

सूरः क़मर का संक्षिप्त परिचय

नाम– पहली आयत اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ۝ में शब्द الْقَمَرُ۝ आया है। यही इस सूरः का नाम रख दिया गया है।

ज़माना नुज़ूल– यह सूरः मक्की दौर में नाज़िल हुई है। इस में "شق القمر" (चाँद के टुकड़े होने का) वाक़िआ बयान किया गया है कि जो मुहद्दिसीन व मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक हिज्रत से लगभग पाँच साल पहले पेश आया था।

आयत नं० 1 से 22 तक

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ۝ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ۝ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ۝
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ۝ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ۝
خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ۝ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ۝ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ۝ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ
مُّنْهَمِرٍ۝ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ۝ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ۝ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ
كَانَ كُفِرَ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ۝
كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ۝ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ
مُّنْقَعِرٍ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ۝

अनुवाद–

(1) वह घड़ी (क़ियामत) क़रीब आ गई और चांद फट गया; (2) और अगर (काफ़िर) कोई निशानी देखते हैं तो टाल जाते हैं, और कहते हैं, "यह तो जादू है पहले से चला आ रहा है।" (3) और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले, और हर मामले के लिए एक निश्चित समय है। (4) और उनके पास उन (ऐतिहासिक घटनाओं) की ख़बरें पहुँच चुकी हैं जो झिंझोड़ने के लिए काफ़ी है। (5) इसमें पूरी हिकमत भी है, मगर डराना उनके कुछ काम नहीं आता! (6) तो उनसे रुख़ फेर लीजिए-जिस दिन पुकारने वाला उन्हें ऐसी चीज़ की ओर बुलाएगा जिसको यह पहचानेंगे भी नहीं; (7) नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे, जैसे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं; (8) उस पुकारने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे, और काफ़िर कहेंगे, "यह बड़ा सख़्त दिन है!" (9) इनसे पहले नूह़ की क़ौम ने भी झुठलाया था, उन्होंने 'हमारे' बन्दे को झूठा ठहराया और कहा, "यह तो दीवाना है, और उन्हें बुरी तरह झिड़का भी।" (10) तो उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा कि "मैं कमज़ोर हो गया हूं, 'तू' ही बदला ले।" (11) तब 'हमने' मूसलाधार पानी के दहाने आसमान से खोल दिये; (12) और ज़मीन से (पानी के) स्रोत बहा दिये, तो पानी उस काम के लिए मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था। (13) और 'हमने' उसे एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया; (14) वह 'हमारी'

निगाहों के सामने चल रही थी- यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी क़द्र नहीं की गई। (15) और 'हमने' उस (नौका) को एक निशानी बनाकर छोड़ दिया; तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (16) तो कैसा रहा 'मेरा' अ़ज़ाब और कैसा रहा 'मेरा' डराना? (17) और 'हमने' कुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (18) आ़द ने भी झुठलाया था, फिर कैसा रहा मेरा अ़ज़ाब और 'मेरा' डराना? (19) 'हमने' एक मन्हूस दिन जिसकी मन्हूसियत टलने वाली न थी, उन पर आँधी भेज दी, (20) वह लोगों को उखाड़ कर इस तरह फेंक रही थी कि जैसे उखड़े ख़जूर के तने हों। (21) तो देखो! कैसा रहा 'मेरा' अ़ज़ाब और (कैसा रहा) 'मेरा' डराना? (22) और 'हमने' कुर्आन को नसीहत लेने के लिए आसान बना दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला।

आयत नं० 1 से 22 तक की व्याख्या

1 اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانشَقَّ الْقَمَرُ

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने दो बातों की ख़बर दी है। एक तो यह कि क़ियामत क़रीब आ चुकी है और दूसरी यह कि चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया था और दोनों ही बातों की पुष्टि नबी करीम (सल्ल०) और सहीह अहादीस से होती है।

क़ियामत के बारे में तो अल्लाह तआ़ला ने दूसरी कई आयतों में भी ख़बर दी है।

सूरः नहल आयत नं० (1) में है:-

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ

"अल्लाह का हुक्म आ चुका है, बस तुम लोग इस की जल्दी न मचाओ"।

सूरः अल् अम्बिया आयत नं० (1) में आया है:-

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

"लोगों के हिसाब का वक़्त आ चुका है और वह गफ़्लत में पड़े दीने हक़ से मुँह फेर रहे हैं"।

'इब्ने जरीर' लिखते हैं कि इस आयते करीमा में लोगों के क़ुर्ब क़ियामत की ख़बर देकर नसीहत की गई है कि यह दुनिया जल्द ही फ़ना (Destroy) हो जाएगी, इसलिए क़ियामत की हौलनाकियों से निजात पाने की तैयारी करनी चाहिए।

'इमाम अहमद' ने 'इब्ने उ़मर' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि हम लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास बैठे थे और सूरज अ़स्र के बाद डूबने के क़रीब था। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया से गुज़र चुके हैं, उन की उ़म्रों के मुक़ाबिले में तुम्हारी उ़म्रें उतनी ही बाक़ी रह गई हैं जितना अभी दिन का हिस्सा बाक़ी रह गया है।

'इमाम अहमद' ने 'सुहेल बिन सअ़द' (रज़ि०) से रिवायत की है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं दुनिया में उस वक़्त मब्ऊ़स किया गया हूँ जिस वक़्त कि क़ियामत इतनी क़रीब है जितनी मेरी यह दोनों उंगलियाँ और आप (सल्ल०) ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली की तरफ़ इशारा किया।

दूसरी बात यानी "انشقاق قمر" के बारे में अक्सर उ़लमा-ए-उम्मत की राय है कि नबी करीम (सल्ल०) के मक्की दौर में हिज्रत से लगभग पाँच साल पहले नबी करीम (सल्ल०) के एक अ़ज़ीम मोअ़जिज़े के तौर पर चाँद दो टुकड़े होकर 'जबले ह़िरा' के दोनों तरफ़ हो गया था और बीच में पहाड़ आ गया था।

'क़ाज़ी अ़याज़' ने मुफ़स्सिरीन और अहले सुन्नत का इस पर इज्माअ़ (सहमति) नक़्ल किया है और 'इब्ने कसीर' ने लिखा है कि इस तरह़ की ह़दीसें 'मुतवातिर' हैं।

'इब्ने कस्तूर्बा' ने अपनी किताब "तावील मुख़्तलिफ़ अल् अह़ादीस" में लिखा है कि 'निज़ाम मोअ़तज़ली' ने इन अह़ादीस का बग़ैर दलील इन्कार किया है।

'जुमख़्शरी' 'बैज़ावी' और 'अबू अल् सऊद' ने 'अ़ता' से भी इस तरह़ का क़ौल नक़्ल किया है। निज़ाम ने कहा है कि चाँद क़ियामत के दिन फटेगा, इस राय की बुनियाद इन्कारे सुन्नत पर है।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दूसरे आइम्मा ह़दीस ने हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की है कि अहले मक्का ने आप (सल्ल०) से अपने नबी होने की निशानी का मुताल्बा किया, तो आप (सल्ल०) ने चाँद के दो टुकड़े कर के दिखा दिये, यहाँ तक कि लोगों ने ह़िरा पहाड़ को दोनों टुकड़ों के दर्मियान देखा।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दूसरे आइम्मा ह़दीस ने 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में चाँद दो टुकड़े हो गया था। एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर और दूसरा उस के नीचे आ गया था। आप (सल्ल०) ने लोगों से फ़रमाया, "देखो और गवाह रहो"।

और 'मुस्लिम व तिर्मिज़ी' ने हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की है कि इसी मोअ़जिज़े के बाद यह आयत اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانشَقَّ الْقَمَرُ नाज़िल हुई थी।

'इमाम अह़मद' 'तिर्मिज़ी' और 'ह़ाकिम' वग़ैरह ने 'ह़ज़रत जुबैर बिन मुअ़ज़्ज़म' (रज़ि०) से रिवायत की है कि हम लोग नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में थे कि चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा एक पहाड़ पर और दूसरा टुकड़ा दूसरे पहाड़ पर, तो लोग कहने लगे कि मुह़म्मद ने हम पर जादू कर दिया है। एक शख़्स ने कहा कि अगर उस ने तुम्हें जादू कर दिया है तो वह तमाम लोगों को जादू नहीं कर सकेगा यानी अगर तुम्हारे अ़लावा दूसरों ने भी चाँद के दो टुकड़े होते देखा है तो तुम्हारी बात सही नहीं होगी कि उस ने तुम पर जादू कर दिया है, बल्कि यह उस का मोअ़जिज़ा (चमत्कार) होगा।

2-3 وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝

इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में बयान फ़रमाया है कि जब उन्होंने इस मोअ़जिज़े को देख लिया तो बजाए इस के कि ईमान ले आते, घमण्ड में आकर उसे मानने से ही इन्कार कर दिया और कहने लगे कि यह तो बड़ा ही ज़बरदस्त जादू है, जो 'मुह़म्मद' ने हम पर कर दिया है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन्होंने उस की निशानियों का इन्कार कर दिया और अपनी इच्छा की पैरवी करते हुए ह़क़ से मुँह फेर लिया, लेकिन उन्हें जान लेना चाहिए कि अल्लाह का फ़ैसला अपने

अन्जाम को पहुँच कर रहता है, दीन ग़ालिब होकर रहेगा और अल्लाह उन की ज़रूर मदद फ़रमाएगा और उस के इन्कारियों को ज़रूर ज़लील व रुस्वा करेगा।

4-5 وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे मक्का या आ़म काफ़िरों के लिए क़ुर्आन करीम में पिछली कौमों के क़िस्से बयान कर दिये हैं, जो उन की नसीह़त के लिए काफ़ी हैं। अगर वह चाहते तो उन पर ग़ौर व फ़िक्र कर के नबी करीम (सल्ल०) और क़ुर्आन करीम पर ईमान ले आते और ग़फ़्लत व खेल तमाशा की ज़िन्दगी छोड़कर आख़िरत की फ़िक्र में लग जाते, लेकिन उन्हें इस की तौफ़ीक़ नहीं हो रही है। अल्लाह तआ़ला इस से ख़ूब वाक़िफ़ है कि वह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिस के लिए वह बद्बख़्ती लिख देता है उस के दिल पर मुहर लगा देता है, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता।

6-8 فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ
جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि अगर कुफ़्फ़ारे मक्का को बेहूदा बातों को छोड़कर आख़िरत की फ़िक्र नहीं हो रही है, तो आप उन्हें उन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए और उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए। जब उन्हें दोबारा ज़िन्दा कर के मैदाने मह़शर में ह़िसाब व किताब के लिए इकट्ठा किया जाएगा और वह घड़ी उन के लिए बड़ी ही मुश्किल होगी, उन की आँखें ज़िल्लत व रुस्वाई की वजह से नीचे झुकी होंगी और जब अल्लाह तआ़ला या फ़रिश्ता उन्हें पुकारेगा, तो वह अपनी क़ब्रों से टिड्डी दल की तरह़ निकल कर चारों तरफ़ फैल जाएँगे और तेज़ी के साथ पुकारने वाले की आवाज़ की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे और कुफ़्फ़ार अपने आ़माल को याद कर के और उस दिन के ह़क़ायक़ और मैदाने मह़शर की हौलनाकियों को देखकर कहेंगे कि यह तो बड़ा ही सख़्त दिन है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस बात की निस्बत काफ़िरों की तरफ़ करने से इस तरफ़ इशारा है कि वह दिन मोमिनों के लिए सख़्त नहीं होगा।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् मुदस्सिर आयात नं० (9/10) में फ़रमाया हैः-

فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝ "बस वह दिन बड़ा सख़्त दिन होगा, जो काफ़िरों पर आसान न होगा"।

9-10 كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝

आयत नं० (4) में जिन पिछली कौमों की ख़बरों का ज़िक्र आया है, उन्हीं में से बाज़ की तफ़्सील बयान कर के नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है। सब से पहले अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का ज़िक्र फ़रमाया कि अहले क़ुरैश से पहले 'क़ौमे नूह़' ने अल्लाह के रसूल को झुठलाया।

उन्होंने हमारे बन्दे 'नूह़' को झुठलाया, पागल कहा, गालियाँ दीं और तरह़-तरह़ की तक्लीफ़ों के ज़रिये उन्हें दअ़वत व तब्लीग़ से रोका।

हज़रत नूह़ (अ़लै०) जब अपनी क़ौम की हिदायत से बिल्कुल मायूस हो गए और कुफ़्र पर इस्रार और सरकशी ह़द से पार हो गई, तो उन्होंने उन के लिए बद्दुआ़ कर दी और अल्लाह से कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने अपनी सरकशी के ज़रिये मुझे हरा दिया और मुझे तब्लीग़-ए-रिसालत से सख़्ती के साथ रोक दिया है, अब तू ही इनसे निमट और इन पर अपना अ़ज़ाब भेज दे।

11-12 فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और उन की क़ौम को सज़ा देने के लिए आसमान से मूसलाधार बारिश के तमाम दरवाज़े खोल दिये और ज़मीन के हर गोशे से इस तरह़ पानी उबल पड़ा कि सारी ज़मीन पानी से भर गई और हर तरफ़ से पानी 'क़ौमे नूह़' को हलाक करने के लिए इकट्ठा हो गया।

13-14 وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) उस नाव पर सवार हो गए जो उन्होंने उसी दिन के लिए अल्लाह के हुक्म से चौड़े तख़्तों और बड़ी-बड़ी कीलों की मदद से बनाया था। वह कश्ती तूफ़ान में अल्लाह के ह़िफ़्ज़ व अमान में चलती रही और यह जो कुछ हुआ नाशुक्रों को उन के कुफ़्र का बदला देने के लिए हुआ।

इसलिए ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बेअ़सत उन के लिए अल्लाह की एक अ़ज़ीम नेअ़मत थी, जिस की उन्हें क़द्रदानी करनी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने नाशुक्री की तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह़ (अ़लै०) और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया और बाक़ी पूरी क़ौम को तूफ़ान के ज़रिये हलाक कर दिया।

15-16 وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे नूह़ की हलाकत के क़िस्से को आने वाली नस्लों के लिए इ़बरत बना दिया, जिस से लोगों को नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिए और सोचना चाहिए कि जब 'क़ौमे नूह़' ने अल्लाह से सरकशी की तो अ़ज़ाबे इलाही ने कैसे उन्हें गिरफ़्त में लिया, यही ह़ाल दूसरे काफ़िर व मुश्रिक क़ौमों का भी हो सकता है।

17 وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝

'क़ौमे नूह़' का वाक़िआ़ बयान करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि उस ने क़ुर्आन करीम को ह़िफ़्ज़ (याद) करना और उस से नसीह़त ह़ासिल करना आसान बना दिया है। क़ुर्आन करीम का यह भी एक मोअ़जिज़ा (चमत्कार) है कि वह आसानी से याद हो जाता है और इस में बयान की हुई मिसालों और किस्सों को सुनकर (जैसे क़ौमे नूह़ का क़िस्सा) आदमी सोचने पर मजबूर हो जाता है कि जो कोई

भी अल्लाह के ह़क़ में मुजरिम होगा, उस का अन्जाम हलाक की जाने वाली क़ौमों के जैसे हो सकता है और जो अम्बिया व सालिह़ीन की राह अख़्तियार करेगा उसे अल्लाह तआ़ला ग़ालिब करेगा और दुनिया व आख़िरत में अपनी बहुत सी नेअ़मतों से नवाज़ेगा।

इस तरह़ इस आयते करीमा में मुसलमानों को क़ुर्आन करीम पढ़ने, कस्रत से उस की तिलावत करने और उसे सीखने में जल्दी करने का शौक दिलाया गया है।

18-21 كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

यहाँ 'क़ौमे नूह़' के बाद 'क़ौमे हूद' का ज़िक्र किया गया है, जिसे 'क़ौमे आ़द' कहते हैं। उन लोगों ने भी अल्लाह के रसूल हज़रत हूद (अ़लै०) को झुठलाया और उन पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया और कहा कि अगर सच्चे हो तो फिर जिस अ़ज़ाब का हम से वादा करते हो, जल्दी ले आओ तो अ़ज़ाबे इलाही ने उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया और उस अ़ज़ाब को लोगों की तम्बीह (warning) का ज़रिया बना दिया, वह अ़ज़ाब तेज़ ठंडी हवा की शक्ल में था और वह दिन उन के लिए बड़ा बुरा साबित हुआ।

जिस दिन यह अ़ज़ाब उन पर मुसल्लत किया गया, वह हवा उस वक़्त तक चलती रही जब तक उन का एक-एक व्यक्ति हलाक न हो गया, वह उन के एक-एक व्यक्ति को ऊपर हवा में ले जाती यहाँ तक कि वह नज़रों से ओझल हो जाता और फिर वहाँ से उसे सर के बल गिरा देती, तो वह ज़मीन पर इतनी तेज़ गिरता कि उस का सर धड़ से अलग हो जाता।

इस तरह़ दुनिया वालों ने देख लिया कि अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन्हें किस तरह़ अपनी गिरफ़्त में ले लिया, किस तरह़ उस बद्तरीन अ़ज़ाब को लोगों की तम्बीह का ज़रिया बना दिया।

22 وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

'क़ौमे हूद' की हलाकत व बर्बादी का क़िस्सा क़ुर्आन करीम में बयान किये जाने के बाद दोबारा कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में बयान किये हुए वाक़िआ़त के ज़रिये नसीह़त ह़ासिल करने को आसान बना दिया है यानी जो कोई इन वाक़िआ़त में ग़ौर व फ़िक्र करेगा, वह अल्लाह की तौफ़ीक़ से गुनाहों से तौबः करके अपने रब की तरफ़ पलटेगा, तो है कोई जो इन वाक़िआ़त से नसीहत ह़ासिल करे?

आयत नं० 23 से 55 तक

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝
سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ
مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم
بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا
أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ
أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ
أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ۝ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ
بِقَدَرٍ ۝ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ
صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

अनुवाद-

(23) समूद ने भी चेतावनी करने वालों को झुठलाया; (24) फिर कहने लगे, ''एक अकेला आदमी, जो हम ही में से है, क्या हम उसके पीछे चलेंगे? तब तो हम गुमराह और पागलों में होंगे; (25) क्या हममें से इसी पर नसीहत उतरी है? (नहीं) बल्कि यह झूठा और घमंडी है;'' (26) ''तो अब कल को मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा और घमंडी है? (27) 'हम' ऊँटनी उनके लिए आज़माइश बनाकर भेजने वाले हैं, तो उनको देखते रहो और सब्र करो; (28) और उनको बता दो कि पानी उनके बीच बांट दिया गया है, हर एक को अपनी बारी के दिन पानी पर आना है।'' (29) मगर उन्होंने अपने साथी को बुलाया, और उसने आगे बढ़कर उसकी कूँचे काट दीं। (30) तो देखो! कैसा रहा 'मेरा' अज़ाब और (कैसा रहा) 'मेरा' डराना? (31) 'हमने' उन पर एक हौलनाक आवाज़ भेजी, तो वह बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह चूरा होकर रह गये। (32) और 'हमने' कुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (33) लूत की क़ौम ने भी चेतावनियों को झुठलाया था; (34) तो 'हमने' उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेज दी, सिवाय लूत के घर वालों के; 'हमने' उनको प्रातः काल के समय बचा लिया; (35) अपनी ख़ास नेअ़मत (कृपा) से, इस तरह 'हम' बदला देते हैं, जो शुक्र करते हैं। (36) और उन्होंने 'हमारी' पकड़ से ख़बरदार कर दिया था, मगर वे चेतावनियों के बारे में संदेह में पड़े रहे। (37) और उनसे उनके मेहमानों को ले लेना चाहा, तो 'हमने' उनकी आँखें अन्धी कर दीं, ''लो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!'' (38) और सुबह-सवेरे ही एक अटल अ़ज़ाब उन पर आ पहुँचा। (39) ''तो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!'' (40) और 'हमने' कुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (41) और (अगले) फ़िरऔ़न के पास भी चेतावनी सुनाने वाले

आए थे; (42) लेकिन उन लोगों ने 'हमारी' सारी निशानियों को झुठलाया, तो 'हमने' उनको पकड़ा जिस तरह एक ज़बर्दस्त; शक्ति- शाली पकड़ता है? (43) क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से अच्छे हैं या किताबों में तुम्हारे लिए कोई छुट्कारा लिखा हुआ है? (44) क्या यह लोग कहते हैं, हमारा गिरोह बड़ा मज़बूत है?'' (45) जल्द ही यह जत्था हारेगा और ये लोग पीठ फेर कर भागेंगे। (46) बल्कि इनसे अस्ल वादा (तो क़ियामत का) है और (क़ियामत की) घड़ी बड़ी सख़्त और कड़वी होगी। (47) बेशक मुजरिम लोग गुमराही और अक़्ल की ख़राबी में (पड़े हुए) हैं, (48) उस दिन यह अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे, ''अब चखो मज़ा आग (की लपट) का!'' (49) 'हमने' हर चीज़ को अन्दाज़े (योजना) के साथ पैदा की है। (50) और 'हमारा' हुक्म तो बस एक बार में पलक झपकने की तरह लागू हो जाएगा। (51) और 'हम' तुम्हारे जैसे लोगों को तबाह कर चुके हैं, फिर है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (52) और जो कुछ उन्होंने किया है, वह पन्नों में दर्ज हैं, (53) और हर छोटी और बड़ी बात लिख ली गयी है। (54) परहेज़गार बाग़ों और नहरों में होंगे। (55) सच्ची जगह में, एक बड़ी कुदरत वाले मालिक के पास।

आयत नं० 23 से 55 तक की व्याख्या

23-24 كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوٓا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّفِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ۝

'क़ौमे समूद' ने भी रसूलों को झुठलाया, इसलिए कि 'हज़रत सालेह़' (अ़लै०) को झुठलाना ऐसा था जैसे सभी अम्बिया को झुठलाना या उन निशानियों को झुठलाना जिन्हें पेश कर के हज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने उन्हें दअ़वते तौह़ीद दी थी।

उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम अपनी ही क़ौम के एक शख़्स को रसूल मान लें और पूरी क़ौम को छोड़कर उस की पैरवी करने लगें, अल्लाह के रसूल को तो इन्सानों से श्रेष्ठ अर्थात फ़रिश्ता होना चाहिए। इसलिए अगर हम 'सालेह़' की बात मान कर उस की पैरवी करने लगेंगे तो ह़क़ से दूर और दीवानों की टोली में आ जाएँगे।

25 ءَأُلْقِىَ ٱلذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝

यह लोग कहते हैं कि 'सालेह़' में कौन सी बड़ाई और ख़ूबी पाई जाती है कि अल्लाह ने हमारे बड़े-बड़े सरदारों और मालदारों को छोड़कर उसे अपना नबी बना लिया है। ऐसी कोई बात नहीं है, बल्कि वह बड़ा झूठा और घमण्डी है और उस के घमण्ड व ग़ुरूर ने इस पर उभारा है कि वह अपने आप को बड़ा ज़ाहिर कर दे और हमें अपनी पैरवी का हुक्म दे।

26 سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ ٱلْكَذَّابُ ٱلْأَشِرُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने उन की बात को रद्द करते हुए फ़रमाया कि कल जब यहाँ दुनिया में उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल होगा और फिर क़ियामत के दिन जहन्नम में डाल दिये जाएँगे तो उन्हें ख़ूब मालूम हो जाएगा कि झूठा, ह़क़ से एराज़ करने वाला और घमण्ड में शामिल होने वाला कौन था।

27 إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सालेह़ (अ़लै०) से कहा कि वह लोग आप से आप के नबी होने की निशानी का मुताल्बा करते हैं तो हम सख़्त चट्टान के बीच से एक ऊँटनी निकाल कर उन्हें दिखाते हैं, जो आप के सच्चाई की निशानी और उन की आज़्माइश का ज़रिया होगी, अर्थात अगर उन्होंने इस मोअ़जिज़े (चमत्कार) का इन्कार कर दिया तो उन के लिए बड़ी ख़तरनाक बात होगी, बस आप ऊँटनी ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार कीजिए और देखिए कि वह क्या करते हैं और अगर आप को उन से दअ़वत की राह में तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र कीजिए क्योंकि यह राह ही ऐसी है जिस का मुसाफ़िर बिना सब्र के आगे बढ़ नहीं सका।

28 وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, आप उन्हें यह बता दीजिए कि जिस कुएँ का पानी वह लोग पीते हैं अब वह उन के और ऊँटनी के दर्मियान बराबर-बराबर बाँट दिया गया है। एक दिन ऊँटनी पियेगी और दूसरे दिन वह लोग पियेंगे। हर बारी वाला सिर्फ़ अपनी बारी के दिन आएगा और अपने ह़िस्से का पानी पियेगा।

29-32 فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

उन्होंने अल्लाह के हुक्म से मुँह फेर लिया और 'क़िदार बिन सालिफ़' नामी शख़्स को ऊँटनी के क़त्ल कर देने पर उभारा, जो क़ौमे समूद का बड़ा ही बुरा इन्सान था। चुनाँचे उस ने पहले तीर से उस की पिन्डुली को ज़ख़्मी कर दिया, फिर उस पर तलूवार से ह़मला कर के उस के दोनों पांव को मज़ीद ज़ख़्मी कर दिया, फिर उसे ज़ब्ह़ कर दिया और इस तरह़ पूरी क़ौम अल्लाह के अ़ज़ाब की ह़क़्दार बन गई। जिस का ज़िक्र आयत नं० (31) में आया है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उन के दर्मियान ऐसी सख़्त चीख़ पैदा की कि उन के दिल बाहर आ गए और मर कर अपने घरों में ऐसे ढ़ेर हो गए जैसे बकरियाँ पालने वाला बाड़े में अपनी बकरियों के लिए सूखी घास का ढ़ेर लगाया करता है।

आयत नं० (32) में तीसरी बार कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में बयान किये हुए इन वाक़िआ़त के ज़रिये नसीह़त ह़ासिल करना आसान बना दिया है, तो कोई है जो इन वाक़िआ़त से नसीह़त ह़ासिल करे?

33-35 كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾

'क़ौमे लूत' ने भी रसूलों को झुठलाया इसलिए कि हज़रत लूत (अ़लै०) को झुठलाना ऐसा ही है जैसे सारे रसूलों को झुठलाना या उन निशानियों को झुठलाना, जिन्हें पेश कर के हज़रत लूत (अ़लै०) ने उन्हें

दअ़वते तौहीद दी थी।

पिछली कई सूरतों में 'क़ौमे लूत' का ज़िक्र आ चुका है कि यह लोग 'सुदूम' और 'उ़मूरिया' बस्तियों के रहने वालों में से थे, जिसमें मर्दों के साथ लवातत (Homosex) का गुनाह फैल गया था। अल्लाह ने उन्हें इस घृणित काम से तौबः करने और सही़ रास्ते पर चलने के लिए 'हज़रत लूत' (अ़लै०) को नबी बनाकर उन के पास भेजा, जो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के भाई 'हारान' के बेटे थे, लेकिन वह अपने गुनाहों पर जमे रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन बस्तियों को उलट दिया और फिर फ़रिश्ता या तेज़ हवा के ज़रिये उन पर पत्थरों की ऐसी बारिश कर दी कि वह सब के सब हलाक हो गए।

केवल हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, उन की दोनों बेटियाँ और चन्द वह लोग बच गए जो मुसलमान हो गए थे, यह लोग अल्लाह के हुक्म से रात के आख़िरी पहर में उन बस्तियों से निकल गए। उन मोमिनों पर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल व करम किया कि अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले उन्हें वहाँ से निकल जाने को कहा। अल्लाह तआ़ला हर ज़माने में अपने नेक और शुक्रगुज़ार बन्दों को उन के नेक आ़माल का इसी तरह़ बदला दिया करता है।

36-40 وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي
وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝

अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अचानक अ़ज़ाब में मुब्तिला नहीं किया, बल्कि 'हज़रत लूत' (अ़लै०) ने उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से बहुत डराया और पूरी कोशिश की कि वह राहे रास्त पर आ जाएँ, लेकिन उन्होंने हमेशा हज़रत लूत (अ़लै०) की बातों का मज़ाक़ उड़ाया और समझते रहे कि हज़रत लूत (अ़लै०) की बातों में कोई सच्चाई नहीं है और जिस अ़ज़ाब की वह धमकी दे रहा है उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है और उन का सब से बड़ा जुर्म यह था कि उन्होंने हज़रत लूत (अ़लै०) से माँग की थी कि वह उन्हें अपने कम उम्र ख़ूबसूरत मेहमानों के साथ बद्फ़ेअ़ली की इजाज़त दे दें। वह मेहमान दरअसल फ़रिश्ते थे, जो इन्सानों की शक्ल में मुजरिमों की आज़्माइश के तौर पर भेजे गये थे।

हज़रत लूत (अ़लै०) की बुढ़िया बीवी जो मुजरिमीन के साथ मिली हुई थी, दौड़ी हुई गई और मुजरिमीन को ख़ूबसूरत मेहमानों के आने की खबर दे दी, थोड़ी ही देर में तमाम मुजरिमीन हज़रत लूत (अ़लै०) के पास जमा हो गये और कहा कि वह अपने मेहमानों को उन के ह़वाले कर दें।

हज़रत लूत (अ़लै०) ने अल्लाह का वास्ता देकर उन से खुशामद की, कि वह उन के मेहमानों के साथ बद्फ़ेअ़ली का अमल कर के उन्हें ज़लील व रुस्वा न करें, लेकिन उन्होंने उन की एक न सुनी और ज़बरदस्ती उन के घर में दाख़िल होना चाहा तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अन्धा कर दिया और वह मेहमानों को न देख सके और अल्लाह ने उन से कहा कि अब तुम लोग मेरे अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

फिर सुबह़ के वक़्त एक कभी न टलने वाले अ़ज़ाब ने उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया, जिस की

वजह से दुनिया में ज़िल्लत व रुस्वाई की मौत मरे और बरज़ख़ में भी वह अ़ज़ाब उन पर मुसल्लत रहेगा, यहाँ तक कि उन्हें जहन्नम में पहुँचा देगा और अल्लाह तआ़ला उन से उस वक़्त कहेगा कि तुम लोग मेरे अ़ज़ाब का मज़ा चखते रहो।

अल्लाह तआ़ला ने चौथी बार कहा कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में बयान किये हुए इन वाक़िआ़त के ज़रिये नसीहत हासिल करने को आसान बना दिया है तो कोई है जो इन वाक़िआ़त से नसीहत हासिल करे?

और इस नसीहत से बन्दों को पिछले इन्कारियों की हलाकत की याद दिलाकर नसीहत हासिल करवाना है, ताकि आख़िरत की फ़िक्र से ग़ाफ़िल न हो जाएँ।

41-42 وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के पास हज़रत मूसा और हारून को नबी बनाकर भेजा, ताकि वह उन्हें आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले अल्लाह की तरफ़ बुलाएँ और अल्लाह ने उन्हें अपनी सच्चाई को साबित करने के लिए नौ निशानियाँ दीं, जिन का ज़िक्र पिछली सूरतों की तफ़्सीर में कई बार आ चुका है।

हज़रत मूसा और हारून ने एक-एक कर के वह तमाम निशानियाँ पेश कर दीं, लेकिन फ़िरऔ़न अपने घमण्ड व ग़ुरूर के नशे में उन सब का इन्कार करता चला गया और अल्लाह की वहदानियत और उस की बन्दगी का इक़रार करने की उसे तौफ़ीक़ नहीं हुई।

आख़िरकार अल्लाह तआ़ला ने उस की ऐसी सख़्त गिरफ़्त की जिस से दुनिया की कोई ताक़त उसे बचा न सकी, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला पर कौन ग़ालिब आ सकता है।

43 اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ۝

अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कहा है कि जिन क़ौमों का अभी ज़िक्र हुआ और जिन पर हमारा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, क्या तुम अहले कुफ़्र उन से बेहतर हो कि अपने आप को अल्लाह के अ़ज़ाब से मामून व महफ़ूज़ (safe) समझते हो या अल्लाह ने अपनी किसी आसमानी किताब में तुम्हारी बराअत (निजात) नाज़िल कर दी है कि तुम चाहे जो करते रहो तुम्हारी गिरफ़्त नहीं होगी?

वाक़िआ़ यह है कि दोनों ही बातें सही नहीं हैं बल्कि तुम्हें ढ़ील दी गई है, ताकि तुम अल्लाह की तरफ़ पलटो या फिर अल्लाह का अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल हो जाए।

44-46 اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ۝

अगर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस में मुब्तिला हैं कि उन की जमाअ़त इतनी ज़्यादा और ताक़तवर है कि कोई उन पर ग़ालिब नहीं आ सकता, तो सुन लें कि उन की हार होकर रहेगी चाहे वह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हों या

आ़म कुफ़्फ़ारे अ़रब, वह मैदाने जंग से पीठ फेर कर ऐसा भागेंगे कि मुड़कर भी नहीं देखेंगे।

और मामला यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाता है, बल्कि उन का अस्ल तो आख़िरत का दिन है, जो बड़ी ही कठिन घड़ी होगी और जिस के अ़ज़ाब से बचने की कोई सूरत नहीं होगी और जो दुनिया के अ़ज़ाब से बहुत ही ज़्यादा सख़्त होगा।

चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि वह 'मैदाने बद्र' में बद्तरीन शिकस्त से दो चार हुए और कुफ़्र व शिर्क के बड़े-बड़े सरदारान खत्म कर दिये गये।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह आयत नबी करीम (सल्ल०) के सच्चाई की दलील है इसलिए कि यह मक्का में नाज़िल हुई थी, जिस में इस तरह की ग़ैबी ख़बर दी गई थीं कि कुफ़्फ़ारे कुरैश को शिकस्त होगी और वह मैदाने जंग छोड़ कर भागेंगे और इस की तस्दीक़ 2 हि० में ग़ज़्व-ए-बद्र के ज़रिये हुई।

'इमाम बुख़ारी' ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने मैदाने बद्र में गिड़गिड़ा कर अपने रब से मुसलमानों की कामियाबी के लिए दुआ़ की, फिर अपने ख़ेमे से यही दोनों आयतें पढ़ते हुए निकले।

47-48 إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝

अल्लाह के जो सरकश बन्दे दुनिया में जरायम व गुनाहों का अ़मल करते हैं, वह दुनिया में ह़क़ की राह से भटके हुए हैं और आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम होगा, जिस की आग उन के जिस्मों में भड़क उठेगी और उस आग में उन्हें उन के चेहरों के बल घसीटा जाएगा, उन्हें नहीं मालूम होगा कि वह कहाँ ले जाये जा रहे हैं और उन की तक्लीफ़ बढ़ाने के लिए उन से कहा जाएगा कि अब जहन्नम की सख़्तियों और उसके अ़ज़ाब को झेलते रहो।

49 إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ۝

अल्लाह तआ़ला को अपनी मख़्लूक़ात को पैदा करने से पहले उन का पूरा इ़ल्म था और उन की तक़्दीर लिख दी थी। कोई चीज़ भी अल्लाह तआ़ला की पिछली तक़्दीर पर इ़ल्म के बग़ैर वजूद में नहीं आती। हर चीज़ का इ़ल्म उस के वाक़ेअ़ होने से पहले ही 'लौहे मह़फ़ूज़' में लिखी हुई है। इसी तक़्दीर इलाही में यह भी है कि वह मुजरिमीन को सज़ा देने के लिए जहन्नम पैदा करेगा और सालिह़ीन को उन के नेक आ़माल का बदला देने के लिए जन्नत पैदा करेगा, चुनाँचे उस ने जन्नत व जहन्नम पैदा किया और क़ुर्आने करीम में उन का ज़िक्र फ़रमाया।

इसी ह़क़ीक़त को अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल् फ़ुरक़ान आयत नं० (2) में यूँ बयान फ़रमाया है:-

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا

"उस ने हर चीज़ को पैदा कर के उस की एक तक़्दीर मुक़र्रर कर दी है"।

इमाम मुस्लिम, अह़मद, तिर्मिज़ी और 'इब्ने माजा' आदि ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि मुश्रिकीने कुरैश नबी करीम (सल्ल०) के पास आकर तक़्दीर के बारे में बह़स (debate) करने

लगे, तो इस सूरत की आयात नं० (47/ 48/ 49) नाज़िल हुईं।

50 وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝

जिस तरह़ अल्लाह की तक़्दीर उस के बन्दों में लागू होती रहती है, कोई चीज़ उसे रोक नहीं सकती, उसी तरह़ उस की मर्ज़ी भी उस की मख़्लूक़ात के सिल्सिले में लागू होती है, कोई चीज़ उसे रोक नहीं सकती।

अल्लाह तआ़ला ने इस आयते करीमा में यही बात बयान फ़रमाई है कि किसी चीज़ के वजूद में आने के लिए उस का एक हुक्म काफ़ी है, फिर वह चीज़ पलक झपकते वजूद में आ जाती है।

51-53 وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कहा कि हम ने इस से पहले तुम्हारे ही जैसे काफ़िरों को उन के जुर्मो की वजह से हलाक कर दिया था, तो क्या तुम में कोई है जो उन के इ़बरतनाक अन्जाम से नसीह़त ह़ासिल करे और वक़्त गुज़र जाने से पहले अपनी ह़ालत बदल ले, गुनाहों से तौबः कर ले और अपने असली मालिक के सामने सज्दः के लिए सर झुका दे?

आयत नं० (52) में अल्लाह तआ़ला ने उन की मज़ीद तम्बीह के लिए फ़रमाया कि लोगों के तमाम छोटे बड़े आ़माल फ़रिश्तों के ज़रिये नाम-ए-आ़माल में लिखे जा रहे हैं।

आयत नं० (53) में भी यही बात बतौर ताकीद कही गई है कि इन्सान का छोटे से छोटा अ़मल भी न ख़त्म होता है और न फ़रिश्ते उसे भूलते हैं।

सूरः कहफ़ आयत नं० (49) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا

“उस दिन मुजरिमीन कहेंगे, हाय हमारी ख़राबी, यह कैसी किताब है जिस ने कोई छोटा बड़ा (गुनाह) बग़ैर घेरे के बाक़ी ही नहीं छोड़ा है”।

‘इमाम अह़मद’ ने ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाया करते थे, ऐ आ़इशा! उन गुनाहों से बचो जिन्हें मामूली और ह़क़ीर जाना जाता है, अल्लाह की ओर से उन्हें रिर्काड करने वाले मौजूद हैं।

54-55 إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

अब यहाँ ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दी जा रहा है कि वह अल्लाह की बनाई जन्नतों में होंगे, जिन के आस-पास नहरें जारी होंगी और वह अपने मालिक और क़ादिरे मुत़्लक़ रब के पास, उस की बनाई जन्नत में होंगे जहाँ कोई बेहूदा और गुनाहों की बात नहीं करेगा यानी उन्हें अपने रब का क़ुर्ब (नज़्दीकी) और जन्नत का पाकीज़ा माह़ौल मिलेगा।

सूरः नं० 55

सूर-ए-रह्मान

सूरः रह़मान का संक्षिप्त परिचय

नाम-

इस सूरः का पहला शब्द الرَّحْمٰن है। यही इस का नाम रख दिया गया और इस का सबब साह़िबे मुह़ासिनुल् तन्ज़ील ने बताया है कि इस सूरः में अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मतों का ज़िक्र है, जिन का स्रोत अल्लाह तआ़ला की सिफ़त 'रह़मत' है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'क़ुर्तुबी' लिखते हैं कि यह सूरः मक्की है। ह़सन, उरवह बिन ज़ुबैर, इक्रिमा, अ़ता और जाबिर का यही क़ौल है। 'नुह़्ह़ास' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से और इब्ने मरदूविया ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत की है कि यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई थी।

'इमाम अह़मद' और 'इब्ने मरदूविया' ने 'अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज्रे अस्वद की तरफ़ रुख़ कर के आयत فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ पढ़ी और मुश्रिकीन आप की क़िरात को सुन रहे थे।

'इब्ने इस्ह़ाक़' ने 'उरवह बिन ज़ुबैर' से रिवायत की है कि यही वह सूरः है, जिसे 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु' ने अहले क़ुरैश को क़ुर्आन सुनाने के लिए मक़ामे इब्राहीम के सामने खड़े होकर पढ़ी थी और उन्होंने उन्हें मार-मार कर लहूलहान कर दिया था।

और क़ुर्आन करीम की यह अकेली सूरः है जिस में अल्लाह तआ़ला ने जिन्न व इन्स दोनों को मुख़ातब (सम्बोधित) कर के अपनी क़ुद्‌रतों और एह़सानात का ज़िक्र किया है और उन पर शुक्र करने का शौक़ दिलाया है।

आयत नं० 1 से 34 तक

الرَّحْمٰنُ ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا
وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ فِيْهَا فَاكِهَةٌ
وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖۚ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ
وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚۖ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ
ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا
مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

अनुवाद-

(1) रह़मान (जो बहुत मेहरबान) (2) उसी ने क़ुर्आन सिखाया, (3) उसी ने इन्सान को पैदा किया, (4) उसी ने 'उसको' बोलना सिखाया, (5) सूरज और चाँद एक हिसाब के पाबन्द हैं; (6) और सितारे और वृक्ष सज्दः करते हैं। (7) और 'उसी ने' आसमान को ऊँचा किया और मीज़ान (सन्तुलन या तराजू) रख दिया, (8) ताकि तुम तौलने में कमी ज़्यादती न करो; (9) और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल में कमी न करो। (10) और 'उसी' ने ज़मीन को ख़ल्क़त (सृष्टि) के लिए बिछाई, (11) कि उसमें स्वादिष्ट फल हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन पर ग़िलाफ़ होता है; (12) और अनाज है जिसमें भूसा होता है और खुशबूदार फूल होता है। (13) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (14) 'उसने' इन्सान को ऐसी मिट्टी से जो ठीकरे की तरह बजती थी पैदा किया; (15) और जिन्नों को 'उसने' आग के शोले से पैदा किया। (16) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (17) 'वही' दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का 'रब' (है)। (18) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (19) 'उसने' दो समुद्रों को मिलाया, कि आपस में मिले हुए हैं; (20) उनके बीच एक पर्दा है कि दोनों आगे बढ़ नहीं सकते। (21) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (22) इन दोनों (समुद्रों) से मोती और मूँगे निकलते हैं। (23) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (24) और 'उसी के' बस में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े हुए जहाज़। (25) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (26) ज़मीन पर जो भी है, फ़ना (नाशवान) होना है, (27) और तुम्हारे 'रब' की हस्ती बाक़ी रहने वाली है, (जो कि) अज़मत और इकराम (प्रतापवान, गरिमा) वाली है। (28) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (29) आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब 'उसी' से माँगते हैं, हर दिन वह

एक नई शान में है (अर्थात हर समय किसी न किसी काम में रहता है)। (30) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (31) ऐ दो भारी गिरोह! हम बहुत जल्द तुम्हारे लिए खाली हुए जाते हैं (अर्थात जल्द ध्यान देने वाले हैं)। (32) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (33) ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह! अगर तुम आसमानों और ज़मीन की सरहदों (सीमाओं) से निकल सकते हो, तो निकल जाओ; (मगर) तुम हरगिज़ नहीं निकल सकते बिना शक्ति के। (34) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

आयत नं० 1 से 34 तक की व्याख्या

1 اَلرَّحْمٰنُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की शुरुआत अपने नाम اَلرَّحْمٰنُ से की है, जो इस की रह़मतों, एह़सानात और बेहिसाब नेअ़मतों पर दलालत करता है और फिर उसने अपनी दीनी, दुनियावी और उख़्रवी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया है।

इन नेअ़मतों में अ़ज़ीम तरीन नेअ़मत क़ुर्आन करीम है, जिस में अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर रह़म करते हुए स्पष्ट रूप से उन तमाम बातों को बयान फ़रमा दिया है जिन से वह ख़ुश होता है या जिन से वह नाराज़ होता है, ताकि इन्सान अपने रब की ख़ुशी के काम करे और उन कामों से दूर रहे जिन से वह नाराज़ होता है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यहाँ अल्लाह तआ़ला के दूसरे नामों के बजाए اَلرَّحْمٰنُ के ज़िक्र करने से मुश्रिकीने मक्का का रद्द है, जो अल्लाह तआ़ला के उस नाम का इन्कार करते थे और उन के इस बुरे ख़याल की भी तर्दीद है कि मुह़म्मद (सल्ल०) को इस क़ुर्आने करीम की तअ़लीम कोई इन्सान देता है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह तो रह़मान का कलाम है जो उस ने अपने बन्दे और रसूल मुह़म्मद (सल्ल०) को सिखाया है।

2-13 عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝
وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝
وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

इन्सान को बयान करना सिखाया

यहाँ से सूरः रह़मान शुरु हो रही है। इस में अल्लाह तआ़ला ने अपनी दुनिया और अख़िरत की नेअ़मतों को बयान फ़रमाया हैं। इस में इक्तीस (31) बार فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ आया है। इस आयत के बार-बार आने से एक बहुत बड़ा शाब्दिक हुस्न पैदा हो गया है।

फ़ज़ाइले कुर्आन-

इन आयात में चन्द नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया, जो ईमानी, रुहानी और जिस्मानी ग़िज़ाओं से सम्बन्धित है।

पहले तो यह फ़रमाया कि रह़मान ने कुर्आन सिखाया। कुर्आन करीम अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेअ़मत है, जो मोमिनीन को अ़ता फ़रमाई। फिर उस के शब्द भी सिखाए और मतलब भी बताए उस के साहित्य को भी समझाया, उस का समझना और ह़िफ़्ज़ करना भी आसान फ़रमाया।

यह ज़मीन पर रहने वाले बेबस बन्दे जिन के अन्दर ख़ून ही ख़ून और ग़न्दग़ी भरी हुई है, उन्हें यह शर्फ़ अ़ता फ़रमाया कि अल्लाह का कलाम उन के दिलों में मह़फ़ूज़ (Safe) हो जाता है और ज़बानों पर जारी रहता है। उस के शब्द, कलिमात और अर्थ के बयान के सिल्सिले में सैंकड़ों किताबें लिखी जा चुकी हैं और अल्ह़म्दु लिल्लाह यह सिल्सिला बराबर जारी है। कुर्आन अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया और अपने बन्दों को सिखाया, फिर उस के सिखाने का तरीक़ा भी अ़ता फ़रमाया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने ह़िफ़्ज़ कुर्आन की नेअ़मत दी, फिर उस ने किसी दूसरी नेअ़मत की वजह से किसी के बारे में यह समझना, कि उस को जो नेअ़मत दी गई है वह उस नेअ़मत से अफ़्ज़ल (best) है जो मुझे दी गई है तो उस ने सब से बड़ी नेअ़मत की नाक़द्री की। **(अल् सिराज अल् मुनीर शरह़ अल् जामेअ़ अल् सग़ीर पेज नं० 270 भाग 4)**

ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ

"कि तुम में से सब से बेहतर वह है जो कुर्आन सीखे और सिखाए"।

(रवाहुल् बुख़ारी पेज नं० 752 भाग 2)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

اَشْرَافُ اُمَّتِیْ حَمَلَةُ الْقُرْاٰنِ وَاَصْحَابُ اللَّیْلِ

यानी मेरी उम्मत में सब से ज़्यादा शरीफ़ लोग वह हैं जो कुर्आन के उठाने वाले हैं और रातों को जागने वाले हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 110)**

कुर्आन मजीद अल्लाह तआ़ला की किताब भी है और अल्लाह तआ़ला का कलाम भी। यह मुसलमानों की कितनी बड़ी सआ़दत है कि उन के दिलों में अल्लाह तआ़ला का कलाम है जो उन की ज़बानों पर जारी है, छोटे-छोटे बच्चे बेतकल्लुफ़ रवानी के साथ पढ़ते हैं।

जिस दिल में कुर्आन नहीं है वह बड़ा मह़रूम है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

اِنَّ الَّذِیْ لَیْسَ فِیْ جَوْفِهٖ شَیْءٌ مِّنَ الْقُرْاٰنِ كَالْبَیْتِ الْخَرِبِ

बिलाशुब्हा जिस दिल में कुर्आन का कुछ ह़िस्सा भी नहीं वह वीरान घर की तरह़ है।

(तिर्मिज़ी, व दारमी वक़ाल अल् तिर्मिज़ी ह़दीस सह़ी कमा फ़ी मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 186 भाग 1)

बयान करने की नेअ़मत

خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को पैदा फ़रमाया, उसे बड़ी-बड़ी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाईं। उन्हीं नेअ़मतों में से यह भी है कि उसे इ़ल्म दिया, बोलने की ताक़त दी, बात करने का तरीक़ा बताया। कुर्आन करीम के शब्द और अर्थ के साथ अह़काम व मसायल बयान करने और दूसरों को उस के मतलब बताने और कुर्आन मजीद के अ़लावा भी एक दूसरे से बोलने और बात करने और लिखने और समझाने की कुद्रत दी। फिर एक ही भाषा नहीं इसे बहुत सी भाषाएँ सिखाईं और लहज़े बताये, एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करने की योग्यताएँ दीं। فَسُبْحَانَهُ مَا أَعْظَمَ شَأْنَهُ

चाँद और सूरज एक ह़िसाब से चलते हैं-

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ (चाँद और सूरज के लिए जो रफ़्तार तय कर दिये हैं वह उन्हीं के मुताबिक़ चलते हैं) अपनी रफ़्तार में आज़ाद नहीं हैं। जैसे चाहें चलें जिधर को चाहें चलें और जब चाहें चलें और जब चाहें रुक जाएँ यह उन के अख़्तियार से बाहर है। सूरः यासीन में फ़रमायाः-

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا
أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

(और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है यह अन्दाज़ा तय किया हुआ है उस का जो ज़बरदस्त इ़ल्म वाला है और चाँद के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि एक वक़्त ऐसा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी, न सूरज की मजाल है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है और दोनों एक-एक दायरे (परिधि) में तैर रहे हैं।

नज्म और दरख़्त सज्दः करते हैं

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ और बिना तने वाला और तना वाला दरख़्त (जो खड़ा रहता है) यह सब अल्लाह तआ़ला के हुक्म के फ़रमाँबरदार हैं। जिस तरह़ सज्दः करने वाला अपने ख़ालिक़ के लिए ख़ुशी से सज्दः करता है, उसी तरह़ यह दोनों अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार हैं। पानी कद्दू, तरबूज़, ख़रबूज़ा की बेल को अल् नज्म फ़रमाया और दूसरे छोटे-बड़े दरख़्त जो अपनी सियाक़ अर्थात पिन्डुली पर खड़े होते हैं (जिन में मोटे दरख़्त भी होते हैं और पतले भी) इन सब को शजर से संज्ञा दी। 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' और 'ह़ज़रत इब्ने ज़ुबैर' (रज़ि०) से इसी तरह़ मरवी है।

आसमान की बुलन्दी

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا (और अल्लाह तआ़ला ने आसमान को बुलन्द किया।)

यहाँ चाँद और सूरज के बाद आसमान की बुलन्दी का ज़िक्र फ़रमाया और बताया कि आसमान की जो बुलन्दी है यह उसे उस के पैदा करने वाले ने अ़ता फ़रमाई है। जब आसमान की बुलन्दी उस के पैदा

करने वाले की दी हुई है तो दूसरी मख़्लूक़ के बारे में समझ लेना चाहिए कि जिस किसी को जो बुलन्दी मिली है या मिल सकती है, वह अल्लाह़ तआ़ला की की तरफ़ से है।

इन्साफ़ के साथ वज़न करने का हुक्म

وَوَضَعَ الْمِيزَانَ और अल्लाह तआ़ला ने तराज़ू को रख दिया اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ताकि तौलने में सरकशी यानी नाफ़रमानी न करो (अ़द्ल पर क़ायम रहो ऐसा न करो कि दूसरों से अपने ह़क़ में ज़्यादा तौलवाओ और दूसरों के लिए तौलो तो डंडी मार दो और घटा कर तौलो) जैसा कि सूरः 'अल् तत़फ़ीफ़' के शुरु में तौलने वालों की ज़्यादती को बयान फ़रमाया है। सूरः अल् अन्आ़म और सूरः बनी इस्राईल में भी हुक्म है कि नाप और तौल को इन्साफ़ के साथ क़ायम करो।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ (और ज़मीन को रख दिया लोगों के नफ़ा के लिए।)

और ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने बिछौना बना दिया उसे नर्म बना दिया, ताकि उसे खोद सकें, ह़ौज़ व तालाब बना सकें, उस पर इमारतें खड़ी कर सकें, मुर्दे दफ़्न कर सकें, दरख़्त लगा सकें, खेती कर सकें। घोड़े दौड़ाएँ, बेचारी ज़मीन बेज़ुबान है कुछ भी इन्कार नहीं करती, इसीलिए सूरः मुल्क में उसे ذَلُوْلًا बताया है। इस के अ़लावा भी ज़मीन में से बनी आदम के बहुत से फायदे और नफ़े हैं। इस को शब्द للانام में ज़ाहिर फ़रमाया, इस के बाद बाज़ फायदों का ख़ुसूसी ज़िक्र फ़रमाया।

فِيهَا فَاكِهَةٌ इस में मेवे हैं और खजूरें भी।

اَكمام، كم का बहुवचन है फलों पर जो खोल होता है उसे كم कहा जाता है इस से एक तो फल की ह़िफ़ाज़त होती है दूसरे ख़ुद यह खोल भी काम आते हैं।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ और ज़मीन में दाने हैं (गेहूँ, जौ आदि) जो इन्सानों की ग़िज़ाएँ बनते हैं और उन दानों पर भी खोल चढ़ते हैं जिन को अलग किया जाता है, उन दानों को इन्सान खाते हैं और उन के ऊपर खाल यानी भूसा होता है, उसे ह़ैवान खाते हैं।

وَالرَّيْحَانُ इस का एक अनुवाद तो ख़ुशबूदार नबात किया गया है और बाज़ ह़ज़रात ने इस का अनुवाद फूल किया है और 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' ने फ़रमाया कि इस से रिज़्क़ मुराद है।

كل ريحان فى القران فهو رزق

यह सब लिखने के बाद 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि रिज़्क़ को 'रेह़ान' इसलिए कहा गया है कि इस से राह़त मिलती है, ज़मीन से निकलने वाली जिन नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया उन में वह चीज़ें भी हैं जिन में ग़िज़ा और लज़्ज़त है और वह चीज़ें भी हैं जिन में केवल ग़िज़ाइयत है और वह चीज़ें भी हैं जो चौपायों के काम आते हैं। इन नेअ़मतों का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ सिवाय जिन्नों और इन्सानों के तुम अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे। ऊपर जो नेअ़मतें ज़िक्र हुई हैं उन से दोनों लोग फ़ायदा उठाते हैं।

14-16 خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

इन्सान को मिट्टी से और जिन्नात को आग से

यह तीन आयतों का तर्जुमः है। पहली आयत में इन्सान की पैदाइश का ज़िक्र है, जिस में यह बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को मिट्टी से पैदा फ़रमाया यानी सय्यदना आदम (अ़लै०) जो सब से पहले इन्सान हैं और सब इन्सानों के बाप हैं उन का पुतूला मिट्टी से बनाया, यह मिट्टी थी उस में पानी मिला दिया गया तो 'तीन' यानी सनी हुई मिट्टी बन गई। फिर उस से पुतूला बनाया गया और वह सूख गया तो صَلْصَالٍ हो गया जैसा कि 'फख़्ख़ार' होता है।

'फख़्ख़ार' उस चीज़ को कहते हैं जो कीचड़ वाली मिट्टी से बनाई गई हो, जब वह सूख जाए तो उस में उंगली मारने से आवाज़ निकलती है, उसी आवाज़ वाली मिट्टी को صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ फ़रमाया। ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की तख़्लीक़ पर मुख़्तलिफ़ (Diffrent) दौर गुज़रे थे उस की तफ़्सील के लिए सूरः ह़िज्र के तीसरे रुकूअ़ की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

जिन्नात की पैदाइश

जिन्नात का जो सब से पहला बाप था, उस के बारे में फ़रमाया, जान्न को ख़ालिस आग से पैदा फ़रमाया। बाज़ उल्मा का कहना है कि जैसे ह़ज़रत आदम (अ़लै०) हैं, ऐसे ही जान्न 'अबू अल् जिन्न' यानी जिन्नात का बाप है और बाज़ उल्मा का कहना है कि इब्लीस शैतान तमाम जिन्नात का बाप है वल्लाहु आ़लम ।

अर्थात इन्सान मिट्टी से और जिन्नात आग से पैदा किये गए और हर एक अपने-अपने अस्ल माद्दह (Material) की तरफ़ मन्सूब है। अल्लाह तआ़ला ने जिस को जिस तरह़ पैदा फ़रमाना चाहा पैदा फ़रमा दिया, यह अल्लाह तआ़ला की बड़ी नेअ़मत है और इस नेअ़मत के साथ और बहुत सी नेअ़मतें हैं।

इन नेअ़मतों का तक़ाज़ा है कि इन्सान और जिन्नात अपने पैदा करने वाले के शुक्रगुज़ार हों और नेअ़मतों की क़द्र करें, इसीलिए आख़ीर में फ़रमाया فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (सो तुम दोनों इन्सान और जिन्न अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।)

17-28

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا
بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ
عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٨﴾

उसी का हुक्म चलता है

इन आयात में भी अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत को बयान फ़रमाते हुए उस की नेअ़मतें ज़िक्र की गई हैं। पहली बात तो यह कि वह दोनों 'मश्रिकों' और दोनों 'मग़्रिबों' का रब है, उसी ने दोनों मश्रिक़ों (पूर्वी

दिशा) और दोनों मग़्रिबों (पश्चिमी दिशा) को पैदा फ़रमाया, चाँद और सूरज को मुक़र्रर फ़रमाया जो अपनी तय शुदा रफ़्तार पर चलते हैं। मश्रिकैन (पूरब) से उदय होते हैं और मग़रिबैन (पश्चिम) में छुप जाते हैं उन के उदय होने और डूबने से रात और दिन होता है और दिन में दिन के काम और रात में रात के काम अन्जाम पाते हैं, रात और दिन के आगे पीछे जाने में इन्सानों और जिन्नातों के लिए बड़े फ़ायदे हैं, इसलिए आख़ीर में फ़रमाया कि ऐ जिन्नों और इन्सानों! तुम अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।

दो मश्रिक़ व दो मग़्रिब

दो मश्रिक़ और दो मग़्रिब का क्या मतलब है? इस बारे में साह़िबे रुहुल् मआ़नी ने उ़लमा-ए-तफ़्सीर के चन्द कौल (कथन) लिखे हैं। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) और ह़ज़रत इक्रिमा (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि मश्रिक़ैन से गर्मी और सर्दी के दोनों मश्रिक़ और मग़्रिबैन से सर्दी और गर्मी के दोनों मग़्रिब मुराद हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) का एक क़ौल यह नक़्ल किया गया है कि मश्रिकैन से मश्रिक़ अल् फ़ज्र (प्रातः) और मश्रिक़ अल् शफ़क़ (सायँ) मुराद हैं और मग़्रिबैन से मग़्रिब अश्शम्स और मग़्रिब अल् शफ़क़ (साँय) मुराद हैं।

इस के बाद समुद्रों का ज़िक्र फ़रमाया कि दोनों समुद्रों को अल्लाह तआ़ला ने जारी फ़रमाया जो आपस में मिलते हैं यानी नज़रों के सामने मिले हुए हैं और ह़क़ीक़त में उन के दर्मियान एक क़ुदरती आड़ है, जिस की वजह से यह दोनों अपनी जगह छोड़कर दूसरे की जगह नहीं लेते। उन दोनों समुद्र में एक मीठा है और एक नमकीन, दोनों समुद्रों से लोग फ़ायदा ह़ासिल करते हैं, उन का शुक्र लाज़िम है कि जिन्नात और इन्सान दोनों फ़रीक़ शुक्र अदा करें।

फिर फ़रमाया कि उन दोनों समुद्रों से لؤلؤ लू-लू और मरजान निकलते हैं, उन दोनों के फ़ायदे भी ज़ाहिर हैं जिन से लोग फ़ायदा उठाते हैं, उन से फ़ायदा उठाने वालों पर शुक्र लाज़िम है।

लू-लू لؤلؤ और मरजान में क्या फ़र्क़ है?

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया, लू-लू لؤلؤ से छोटे मोती और 'मरजान' से बड़े मोती मुराद हैं और ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि 'मरजान' से सुर्ख़ रंग के मूंगे मुराद हैं और लू-लू لؤلؤ छोटे और बड़े दोनों क़िस्म के मोतियों को शामिल है। **(साह़िबे अल् रूह़)**

दो समुद्रों जो आपस में मिलते हैं और एक दूसरे पर ज़्यादती नहीं करते उन में एक मीठा समुद्र और दूसरा नमकीन। इस के लिए सूरः फ़ुर्क़ान के तीसरे रुकूअ़ में लिखा जा चुका है।

इस के बाद कश्तियों (नाव) का ज़िक्र फ़रमाया कि ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की तरह समुद्रों में मालूम होते हैं, यह सब अल्लाह तआ़ला ही की मर्ज़ी से क़ायम हैं। वही अपनी क़ुद्रते कामिला से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। समुद्र की लहरें और तेज़ हवाओं के ह़मलों से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है, यह कश्तियाँ बड़े-बड़े वज़नदार सामान और इन्सानों की ज़रुरियात को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। जिसे सूरः बक़रः

(**आयत नं० 164**) में यूँ फ़रमाया है:-

وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ

(और उन कश्तियों में जो समुद्रों में वह चीज़ें लेकर चलती हैं जो इन्सानों को नफ़ा देती हैं, अ़क़्लमन्दों के लिए निशानियाँ हैं। अल्लाह तआ़ला ने कश्तियाँ बनाने का तरीक़ा भी इल्हाम फ़रमाया, फिर उन को समुद्र में जारी करने और उन में माल लादकर ले जाने का तरीक़ा बताया है। यह सब फ़ायदे और मुनाफ़ेअ़ की सूरतें हैं, यह कश्तियाँ लाखों इन्सानों की ज़रुरियाते ज़िन्दगी को इधर से उधर पहुँचाती हैं, लिहाज़ा फ़ायदा उठाने वालों पर लाज़िम है कि अल्लाह का शुक्र अदा करें और उस की नेअ़मतों की नाशुक्री न करें।

ज़मीन पर जो कुछ है सब फ़ना होने वाला है

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ज़मीन पर जो भी कुछ है इन्सान, जिन्नात, हैवानात और हर नफ़ा या नुक़्सान की चीज़ समुद्र व ख़ुश्की, बहार व पेड़, पहाड़ और उन के अ़लावा जो कुछ भी है सब फ़ना होने वाला है और ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप के रब की ज़ात बाक़ी रहने वाली है, उस की ज़ात ज़ुल् जलाल भी है और ज़ुल् इक्राम भी है।

अ़ल्लामा क़ुर्तुबी लिखते हैं:-

الجلال عظمة الله وكبرياءه यानी जलाल से अल्लाह की अ़ज़्मत और बड़ाई मुराद है और अल् इक्राम के बारे में लिखा है कि ای هو أهل لان يكرم عما لا يليق به من الشرک यानी अल्लाह तआ़ला इस का हक़्दार है कि उस का इक्राम किया जाए और उस के लायक़ जो चीज़ नहीं है जैसे- शिर्क, उस से बचा जाए।

यह तर्जुमः और तफ़्सीर उस सूरत में है कि इक्राम 'मस्दर मब्नी' 'लिलूमजहूल' लिया जाए और बाज़ ह़ज़रात ने इस को 'मब्नी लिलूफ़ेअ़ल' लिया है और मअ़ना यह लिया है कि अल्लाह तआ़ला की ही यह सिफ़त है कि वह इनूआ़म फ़रमाए यानी अपनी मख़्लूक़ पर रह़म और करम फ़रमाए। यह मअ़ना सूरः फ़ज्र की आयत فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ से सम्बन्धित है।

सूरः फ़ज्र की आयत में أَكْرَمَهُ भी फ़रमाया और وَنَعَّمَهُ भी फ़रमाया है:-

जो बाब तफ़ओ़ील से है और सूरः बनी इस्राईल (**आयत नं० 83**) में फ़रमाया:-

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ इस में 'बाब अफ़आ़ल' से शब्द 'अनूआ़म' निकला है। 'शरह़ अल् जामेअ़ अल् सग़ीर' में लिखा है कि इक्राम इनूआ़म से बना है क्योंकि अनूआ़म कभी गुनाहगारों पर भी होता है और इक्राम सिर्फ़ उन लोगों का होता है जिन से कभी नाफ़रमानी न हो।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बाज़ एतिबारात से हर इन्सान मुकर्रम है, इन्सान का वजूद ही उस के लिए बहुत बड़ी चीज़ है, फिर इन्सान को बहुत से इकरामात से नवाज़ा है जिसे وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ में बयान फ़रमाया है।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इन्सान को जो भी नेअ़मत मिले वह इनूआ़म तो है ही इक्राम भी है, यह बात अलग है कि इन्सान कुफ़्र, फ़िस्क़ व फ़ुजूर अख़्तियार कर के उस नेअ़मत को अपने लिए ज़िल्लत

का ज़रिया बना ले। यह दुनिया का मामला है और आख़िरत में जो भी नेअ़मतें मिलेंगी वह अहले ईमान ही को मिलेंगी, वहाँ अहले ईमान ही इ़ज़्ज़त वाले व मुकर्रम होंगे, काफ़िर को मौत के वक़्त से ज़िल्लत घेर लेती है और वह हमेशा-हमेश ज़लील ही रहेगा, मौत के बाद उस के लिए न इनआ़म है न इक्राम, वहाँ का इनआ़म व इक्राम अहले ईमान ही के लिए ख़ास है।

29-34

يَسْـَٔلُهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِى شَأْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِأَىِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ
لَكُمْ أَيُّهَ ٱلثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾ فَبِأَىِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾ يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ إِنِ ٱسْتَطَعْتُمْ
أَن تَنفُذُوا۟ مِنْ أَقْطَارِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ فَٱنفُذُوا۟ ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِأَىِّ
ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾

इन आयात में अल्लाह तआ़ला की सिफ़त (गुण) इन्सान और जिन्नात की बेबसी बयान फ़रमाई और यह भी बयान फ़रमाया कि इस दुनिया में जो कुछ करते हो यह न समझो कि अ़मल करने में आज़ाद हो, आ़माल की पूछगछ होगी। बदला का दिन आने वाला है, तुम्हारे ह़िसाब व किताब के लिए हम जल्द ही फ़ारिग़ होंगे यानी तुम्हारा हिसाब करेंगे। (मख़्लूक़ के समझाने के लिए ऐसा फ़रमाया।)

ह़िसाब व किताब की ख़बर देकर पहले से आगाह फ़रमाना यह अल्लाह की अ़ज़ीम नेअ़मत है, इसीलिए फ़रमाया कि जिन्न व इन्स अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।

इस के बाद इन्सानों और जिन्नों की बेबसी बयान फ़रमाई कि तुम दोनों जमाअ़तों को अगर यह कुद्रत ह़ासिल है कि आसमानों और ज़मीन की हुदूद (सीमा) से निकल सको तो निकल जाओ और याद रखो! कि निकल जाना बिना ताक़त व क़ुव्वत और ज़ोर के नहीं हो सकता और तुम में यह ताक़त नहीं है। जिस तरह़ क़ियामत से पहले बेबस हो, उसी तरह़ क़ियामत क़ायम होने के वक़्त भी बेबस होगे, यह न समझना कि क़ियामत क़ायम हुई तो हम गिरफ़्त से बच जाएँगे और मालिक की सीमा से बाहर चले जाएँगे। इस बात को जानते हुए कैसे इन्कार करते हो और गुनाहों पर क्यों जमे हुए हो? तुम्हें पहले बता दिया गया है कि क़ियामत क़ायम होगी, ह़िसाब होगा, यह पहले से बता देना भी इनआ़म अ़ज़ीम है, इस नेअ़मत का शुक्र अदा करो, सो तुम अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।

आयत नं० 35 से 78 तक

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ
الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝
يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا مِن كُلِّ
فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ كَأَنَّهُنَّ
الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مُدْهَامَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ لَمْ
يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

अनुवाद-

(35) तुम दोनों पर आग के शोले (अग्नि ज्वाला) और धुएं वाला अंगारा छोड़ दिया जाएगा, तो तुम अपना
बचाओ न कर सकोगे। (36) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को
झुठलाओगे? (37) तो जब आसमान फट जाएगा और चमड़े की तरह़ लाल हो जाएगा। (38) तो (ऐ जिन्नों
व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (39) तो उस दिन न किसी इन्सान
से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा और न किसी जिन्न से। (40) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने
'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (41) मुजरिम अपने चेहरों से पहचान लिए जाएँगे और
उन्हें माथे के बल और पैर पकड़ कर घसीटा जाएगा। (42) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की
कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (43) यह वही जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ ठहराते रहे। (44)
वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगा रहे होंगे। (45) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने
'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (46) और जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़ा होने से
डरा, उसके लिए दो बाग़ हैं। (47) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों
को झुठलाओगे? (48) दोनों बहुत घनी डालियों वाले होंगे; (49) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब'
की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (50) इन में दो स्रोत जारी होंगे। (51) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों)
तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (52) उनमें हर मेवे की दो क़िस्में होंगी। (53)

तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (54) ऐसे बिछौनों
पर तकिया लगाए बैठे होंगे जिनके स्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों में फल क़रीब (झुके हुए) होंगे।
(55) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (56) इनमें निगाह
बचाए रखने वाली औ़रतें (हूरें) होंगी, जिनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने छुआ
होगा। (57) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (58)
जैसे वे लाल (याक़ूत) और मरजान (मूँगा) हैं। (59) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन
सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (60) भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या हो सकता है? (61) तो (ऐ
जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (62) और इन दोनों के अ़लावा
दो बाग़ और भी हैं। (63) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को
झुठलाओगे? (64) दोनों ख़ूब गहरे हरे; (65) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी
नेअ़मतों को झुठलाओगे? (66) इनमें दो स्रोत होंगे जोश मारते हुए। (67) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम
अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (68) इनमें स्वादिष्ट फल और खजूर और अनार
हैं; (69) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (70) इनमें
भली और सुन्दर औ़रतें होंगी। (71) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों
को झुठलाओगे? (72) हूरें खेमों में रहने वाली। (73) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन
सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (74) उनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न
ने। (75) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (76) वे
हरे रेशमी गद्दों और नफ़ीस (असाधारण) कालीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे; (77) तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों)
तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे? (78) बड़ा ही बरकत वाला नाम है आप के
'रब' का जो बड़ी रोअ़ब (प्रतापवान) और इ़ज़्ज़त वाला है।

आयत नं० 35 से 78 तक की व्याख्या

35-45

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَإِذَا
انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن
ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

क़ियामत के दिन मुजरिमों की ख़ास पहचान

इन आयात में क़ियामत के दिन का ह़ाल बताया गया है और मुजरिमों का दोज़ख़ में दाख़िला और वहाँ जो उन की बद्ह़ाली होगी उस का ज़िक्र फ़रमाया है। इन ह़ालात की पहले से ख़बर देना भी नेअ़मत

है, ताकि लोग कुफ़्र और बद्‌आ़मालियों से बचें और क़ियामत के दिन बद्‌ह़ाली और दोज़ख़ के दाख़िले से बचें, इसलिए हर आयत के ख़त्म पर فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ फ़रमाया।

पहले तो यह फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो तुम दोनों पर आग के शोले फेंके जाएँगे और धुवां भी फेंका जाएगा। यह धुवां भी आग ही से निकला हुआ होगा, चूंकि इस में रौशनी न होगी इसलिए उसे 'नह़ास' यानी 'धुवें' से संज्ञा दी गई। इस के सख़्त गर्म होने में तो कोई शक नहीं।

सूरः अल् मुर्सलात (**आयत नं० 30 से 34**) में फ़रमाया हैः-

اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۙ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ؕ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ۚ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ؕ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝

"चलो एक सायबान की तरफ़ जिस की तीन शाखें हैं जो साया वाला नहीं है और न वह गर्मी से बचाता है, बेशक वह दोज़ख़ बड़े-बड़े अंगारे फेंक रहा है। जैसे बड़े-बड़े मह़ल होंगे यानी वह काले-काले ऊँट हैं, उस रोज़ झुठलाने वालों के लिए ख़राबी होगी। सूरः अल् मुर्सलात की आयात में बता दिया कि दोज़ख़ से जो धुवां निकलेगा बज़ाहिर एक सायबान (टेन्ट की तरह़) मालूम होगा, दुनिया में जो तम्बू (टेन्ट) होते हैं वह धूप और सर्दी से बचने के लिए बनाए जाते हैं, लेकिन वह धुवां अन्धेरा और सख़्त गर्म होगा उस धुवें से बच न सकोगे, न कोई शख़्स अपनी मदद कर सकेगा और न किसी दूसरे की।

फिर आसमान के फट्‌ने का ज़िक्र फ़रमाया कि जब वह फट जाएगा तो रंगत के एतिबार से ऐसा सुर्ख़ हो जाएगा जैसे लाल रंग का चमड़ा होता है। सूरः फ़ुरक़ान (**आयत नं० 25**) में फ़रमायाः-

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا

(और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट पड़ेगा और बकसरत (extremely) फ़रिश्ते उतारे जाएँगे।)

यह क़ियामत का दिन होगा जिस में आ़माल का हिसाब होगा।

फिर फ़रमाया उस दिन किसी इन्सान और जिन्न से उस के जुर्म के बारे में नहीं पूछा जाएगा। (मुजरिम से सवाल कभी हाल जानने (Investigation) के लिए होता है क्योंकि पूछने वाले को पूरी तरह़ सूरतेह़ाल मालूम नहीं होती और कभी उसे बताने और जताने के लिए होता है कि तुम ने ऐसा-ऐसा किया।

अल्लाह तआ़ला तो सब कुछ जानता है हर चीज़ की हमेशा से उसे ख़बर है, वह बन्दों को पैदा फ़रमाने से पहले ही उन के ह़ालात से बाख़बर है। जो भी मुजरिमीन क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होंगे उसे अपने इ़ल्म में लाने के लिए पूछने की कोई ज़रूरत नहीं।

इस आयत में इसी विषय को बयान फ़रमाया गया है कि मुजरिमों से उन के आ़माल का सवाल इसलिए न होगा कि अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में उन का जुर्म आ जाए।

सूरः क़सस की (**आयत नं० 78**) وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ में भी यही बात बताई गई है और दूसरी क़िस्म का पूछना जो इक़्रार करने और जताने के लिए होता है, क़ियामत के दिन उस का होना जिसे सूरः

अल् अअ़राफ़ (**आयत नं० 6**) की आयते करीमा فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ में बयान फ़रमाया है।

फिर फ़रमाया कि मुजरिमों को उन के निशानियों से पहचाना जाएगा। उन निशानियों का ज़िक्र फ़रमाते हुए सूरः बनी इस्राईल (**आयत नं० 97**) में फ़रमायाः-

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا

(और हम क़ियामत के रोज़ उन को अन्धा, गूंगा और बहरा कर के मुँह के बल चलाएँगे।)

सूरः ताहा में फ़रमाया (और हम उस रोज़ मुजरिम लोगों को इस ह़ालत में जमा करेंगे कि उन की आँखें नीली होंगी, चुपके-चुपके आपस में बातें करते होंगे) काफ़िरों का चेहरों के बल चलना, फिर अन्धा गूंगा और बहरा होना और आँखें नीली होना यह सब उन के पहचान की निशानी होगी, उन के ज़रिये काफ़िरों को पहचान लिया जाएगा और उन के क़दम और पेशानी के बाल पकड़ कर गुहड़ी सी बनाकर दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा।

जब जहन्नम में डाला जाने लगेगा तो उन से कहा जाएगा कि यह वह जहन्नम है जिसे मुजरिम झुठलाते थे, जब दोज़ख़ में यह डाल दिये जाएँगे तो मुख़्तलिफ़ (diffrent) क़िस्म के अ़ज़ाबों में मुब्तिला (Involve) किये जाएँगे। यह लोग दोज़ख़ के और खौलते हुए पानी के दर्मियान चक्कर लगाते होंगे।

जहन्नम तो आग ही आग है और आग के अ़लावा भी इस में तरह़-तरह़ के अ़ज़ाब हैं। इन ही अ़ज़ाबों में से عَذَابُ الْحَمِيْم यानी गर्म पानी का अ़ज़ाब भी है, गर्म पानी उन के सरों पर भी डाला जाएगा। जैसा कि सूरः ह़ज (**आयत नं० 19**) में फ़रमायाः-

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ

"और पीने के लिए पानी तलब करेंगे तो गर्म पानी दिया जाएगा"।

जैसा कि सूरः अल् कहफ़ (**आयत नं० 29**) में फ़रमाया وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ

"और अगर फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उन की फ़रियाद रसी की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह़ होगा, वह चेहरों को भून डालेगा"।

और सूरः मुह़म्मद (**आयत नं० 15**) में फ़रमायाः-

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ

(और उन को गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उन की आंतों को काट डालेगा।)

और सूरः अल् मोमिन (**आयत नं० 71, 72**) में फ़रमायाः-

يُسْحَبُوْنَ ۙ فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۚ

(वह लोग गर्म पानी में छोड़े जाएँगे फिर उन्हें आग में जलाया जाएगा।)

यहाँ सूरः रह़मान में फ़रमायाः-

يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ (वह दोज़ख़ के और सख़्त गर्म पानी के दर्मियान चक्कर लगाएँगे।)

मुफ़स्सिरीन ने इस का मतलब यह बताया है कि कभी उन्हें आग में डालकर अ़ज़ाब दिया जाएगा और कभी गर्म पानी के अ़ज़ाब में मुब्तिला किया जाएगा।

सूरः अल् साफ़्फ़ात की आयत (नं० 68) ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ से मालूम होता है कि पानी पिलाने के लिए उन्हें गर्म पानी की जगह ले जाया जाएगा, फिर वापस 'जह़ीम' यानी आग की जगह वापस लौटा दिया जाएगा। बाज़ उ़लमा ने आयत के ज़ाहिरी शब्द लेकर यह कहा है कि 'ह़मीम' यानी गर्म पानी की जगह 'जह़ीम' से बाहर होगी।

लेकिन चूंकि इस से यह लाज़िम आता है कि जहन्नम में जाने के बाद फिर निकलना हो, इसलिए दूसरे उ़लमा ने फ़रमाया कि गर्म पानी की जगह भी दोज़ख़ ही के अन्दर होगी। गर्म पानी पीकर वापस अपने ठिकाने पर लाए जाएँगे जो आग ही में होगा जहन्नम से बाहर जाना मुराद नहीं है वल्लाहु अ़ालम।

शब्द اٰنٍ का सीग़ा है जो حميم की सिफ़त है उस का माद्दह اَنْيٌ है। मुफ़स्सिरीन ने इस का तर्जुमः बताते हुए लिखा है قد انتهٰى حره यानी वह आख़िरी ह़रारत को पहुँच चुका होगा।

46-61

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ
فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۗ وَجَنَى
الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ
قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ

अहले तक़्वा की दो जन्नतें

इन आयात में अहले जन्नत के कुछ इनआ़मात का ज़िक्र फ़रमाया और हर नेअ़मत बयान करने के बाद فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ फ़रमाया है कि ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।

पहले रुकूअ़ में दुनियावी जन्नतों का ज़िक्र फ़रमाया और तीसरे रुकूअ़ में आख़िरत की जन्नत का ज़िक्र किया और दूसरे रुकूअ़ में जिन्नात और इन्सानों के अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया जिस में क़ियामत के दिन और उस के बाद दोज़ख़ में मुजरिमीन मुब्तिला होंगे।

इन आयात में पहली बात तो यह फ़रमाई कि जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा उस के लिए दो बाग़ होंगे, जन्नत ख़ुद बहुत बड़ा बाग़ है, फिर उस बाग़ में अलग-अलग बाग़ होंगे जो आ़माल के हिसाब से जन्नतियों को दिये जाएँगे।

जो ह़ज़रात गुनाहों से बचते हैं, आख़िरत के दिन के ह़िसाब से डरते हैं, उन के लिए ख़ुशख़बरी है कि उन में से हर शख़्स को दो बाग़ मिलेंगे आख़िरत का ख़ौफ़ इन्सान से गुनाहों को छुड़ा देता है और फ़रमाँबरदारी और अ़िबादात पर लगाए रखता है।

सूरः नाज़िआ़त (आयत नं० 40,41) में फ़रमायाः-

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝

(और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिशों से रोका सो उस का ठिकाना जन्नत होगा।)

ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) ने आयते करीमा وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ तिलावत की, फिर फ़रमाया कि दो जन्नतें सोने की हैं जो पहले लोगों के लिए हैं और दो जन्नतें चाँदी की हैं जो उन लोगों के लिए होंगी जो उन के ताबेअ़ (अधीन) होंगे। **(रवाहु 'अल् ह़ाकिम फ़िल् मुस्तदर')**

ऊपर की दोनों जन्नतों की तीन सिफ़ात बयान फ़रमाईं।

पहले यह कि उन में जो पेड़ होंगे उन की शाख़ें ख़ूब ज़्यादा होंगी जो हरी-भरी होंगी देखने में ख़ूब अच्छी और फैली होंगी, ज़ाहिर है कि जब शाख़ें और टहनियाँ ख़ूब ज़्यादा होंगी तो फल भी ख़ूब ज़्यादा होंगे।

दूसरी सिफ़त यह बताई कि उन दोनों बाग़ों में दो स्रोत जारी होंगे, यह स्रोत तेज़ी के साथ बहते होंगे, देखने से आँखें लुत्फ़ अन्दोज़ होंगी, अहले जन्नत के चश्मों का ज़िक्र सूरतुल् दहर और सूरः अल् तत्फ़ीफ़ में भी फ़रमाया गया है।

सूरः अल् दहर में एक स्रोत का नाम सल्सबील बताया है और सूरः अल् तत्फ़ीफ़ में एक स्रोत का नाम तस्नीम बताया गया है। सूरः अल् दहर **(आयत नं० 5, 6)** में यह भी फ़रमाया हैः-

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝

(जो नेक हैं वह ऐसी शराब से पियेंगे जिस में काफ़ूर की आमेज़िश होगी यानी ऐसे चश्मे (स्रोत) से जिस से अल्लाह के ख़ास बन्दे पियेंगे जिस को वह बहका कर ले जाएँगे।)

मुत्तक़ियों की दोनों बाग़ों की तीसरी सिफ़त (गुण) यह बयान फ़रमाई कि उन में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी। एक क़िस्म जानी पहचानी होगी जिसे दुनिया में देखा होगा और दूसरी क़िस्म अन्जानी होगी जिसे पहले नहीं जानते थे।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि एक क़िस्म 'रुतब' यानी ताज़ा और दूसरी क़िस्म 'याबिस' यानी सूखी होगी और लज़्ज़त में दोनों बराबर होंगी और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया गया है कि दुनिया में जितने भी फल हैं मीठे और कड़वे सब जन्नत में मौजूद होंगे यहाँ तक कि 'ह़न्ज़ल' भी होगा और जो फल यहाँ कड़वा था वहाँ मीठा होगा। **(रुहुल् मआ़नी पेज नं० 117 भाग 37)**

परहेज़गारों के बिस्तर-

परहेज़गारों की नेअ़मतें बयान करते हुए उन के बिस्तरों और बीवियों का भी ज़िक्र फ़रमाया, बिस्तरों के बारे में फ़रमाया कि यह लोग अपने बिस्तरों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिस के अन्दर का कपड़ा इस्तबरक़ (दबीज़ रेशम) का होगा।

दुनिया में जो बिस्तर बिछाए जाते हैं उन में एक अस्तर (खोल) ऊपर का और एक अस्तर नीचे का होता है। ऊपर वाला नक़्श व निगार और ख़ूबसूरत होता है और नीचे नक़्श व निगार वाला नहीं होता

क़ीमतन भी ऊपर वाले की बनिस्बत नीचे वाल घटिया होता है। आयत में अहले जन्नत के बिस्तरों के नीचे वाले हिस्से के बारे में बताया कि वह दबीज़ यानी मोटे रेशम के होंगे।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि तुम्हें जन्नत के बिस्तरों के नीचे वाले अस्तरों के बारे में बताया गया है कि वह दबीज़ यानी मोटे रेशम के होंगे, इसी से समझ लो कि ऊपर वाले अस्तर कैसे अच्छे और आरामदेह होंगे। **(रवाहु अल् हाकिम)**

हज़रत सअ़ीद बिन जुबैर (रह०) से सवाल किया गया कि अन्दुरुनी बिस्तर इस्तबरक़ के होंगे, ऊपर के बिस्तरों का क्या हाल होगा तो उस के जवाब में सूरः 'अलिफ़ लाम मीम सज्दः' की आयत नं० (17) तिलावत फ़रमाईः-

فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّآ اُخۡفِیَ لَهُمۡ مِّنۡ قُرَّةِ اَعۡیُنٍ

(किसी नफ़्स को मालूम नहीं कि उन के लिए आँखों की ठंडक में से क्या कुछ छिपाया गया है।)

मतलब यह था कि उस के बारे में देखे बग़ैर कुछ नहीं कहा जा सकता, जन्नत में देखकर ही पता चलेगा कि वह कैसे हैं?

दोनों जन्नतों के फल क़रीब होंगे-

وَجَنَى الۡجَنَّتَيۡنِ دَانٍ (और दोनों जन्नतों के फल क़रीब होंगे।)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि औलिया अल्लाह जन्नत में होंगे और जब चाहेंगे खड़े होकर फल तोड़ लेंगे और अगर बैठे-बैठे तोड़ना चाहेगें तो तोड़ लेंगे और लेटे-लेटे तोड़ना चाहेगें तो भी तोड़ लेंगे, हर हाल में दरख़्त उन के क़रीब आ जाएँगे। **(रुहुल् मआ़नी)**

قوله جنى هو ما يُجتنىٰ من الثمار بالالف المقصورة اصله ياءٌفى آخره، ودانٍ

اسم فاعل من دنا يدنو.

अहले जन्नत की बीवियाँ-

इस के बाद अहले जन्नत की बीवियों का ज़िक्र फ़रमाया। यह बीवियाँ दुनिया वाली भी होंगी और हूरे अ़ीन भी होंगी जिन से वहाँ निकाह किया जाएगा, उन सब का हुस्ने जमाल भी बहुत ज़्यादा होगा, वह अपनी आँखों को नीचे रखेंगी, अपने शौहरों के अ़लावा किसी को ज़रा सी नज़र भी उठा कर न देखेंगी।

لَمۡ يَطۡمِثۡهُنَّ اِنۡسٌ قَبۡلَهُمۡ وَلَا جَآنٌّ

(उन के जन्नती शौहरों से पहले कभी किसी इन्सान या जिन्न ने उन को अपने काम में इस्तेमाल नहीं किया होगा, वह बिल्कुल 'बाकिरह' यानी कुंवारी होंगी, किसी मर्द ने उन्हें हाथ तक न लगाया होगा और हर मर्तबः मर्द जब उन के पास जाएँगे तो कुंवारी ही पाएँगे।

क़ाला साहिबे अल् रुह़

واصل الطمث خروج الدم ولذلک يقال للحيض طمث ثم اطلق على جماع

الابكار لما فيه من خروج الدم ثم عمم لكل جماع و هو المروى هنا عن عكرمة و الى الاول ذهب الكثير، و قيل ان التعبير به للاشارة الى انهن يوجدن ابكاراً كلما جومعن

(पेज नं० 199 भाग 27)

फिर उन बीवियों का हुस्न व जमाल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ (यानी वह 'याकूत' हैं और 'मरजान' हैं, यह दोनों मोतियों की क़िस्में हैं मरजान का ज़िक्र गुज़र चुका है।

ह़ज़रत 'क़तादह' ने फ़रमाया कि यहाँ याक़ूत की सफ़ाई और لؤلؤ लू लू की सफ़ेदी से संज्ञा दी गई है।

एक क़ौल यह भी है कि चेहरे की सुर्ख़ी को 'याक़ूत' से और बाक़ी जिस्म को मोतियों की सफ़ेदी से संज्ञा दी गई है। ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि सब से पहली जमाअ़त (गिरोह) जो जन्नत में दाख़िल होगी उन की सूरतें ऐसी होंगी जैसे चौदहवीं रात का चाँद होता है, फिर जो दूसरी जमाअ़त (गिरोह) जन्नत में दाख़िल होगी उन के चेहरे ऐसे रौशन होंगे जैसे कोई ख़ूब रौशन सितारा आसमान में नज़र आता हो, उन में से हर शख़्स के लिए हूरे ऐ़न में से दो बीवियाँ होंगी उन की पिन्डुलियों के अन्दर का गूदा हुस्न की वजह से हड्डी और गोश्त के बाहर से नज़र आएगा।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 461 भाग 1)

'सुनन तिर्मिज़ी' की रिवायत में यूँ है कि हर बीवी पर सत्तर जोड़े होंगे उस की पिन्डुली का गूदा बाहर से नज़र आएगा। (मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 497)

ऊपर दो बीवियों का ज़िक्र है जो कम से कम हर शख़्स को दी जाएँगी और उन के अ़लावा जितनी ज़्यादा जिस को मिलें वह मज़ीद अल्लाह तआ़ला का करम होगा।

ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि सब से कम दर्जे के जन्नती को अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर (72) बीवियाँ दी जाएँगी।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 499 तिर्मिज़ी)

मुल्ला अ़ली क़ारी (रह़०) मिरक़ात शरह़ मिश्कात में लिखते हैं कि दुनिया वाली औ़रतों में से दो बीवियाँ और हूरे अ़ीन से सत्तर बीवियाँ मिलेंगी। (वल्लाहु आ़लम बिल् सवाब)

एह़सान का बदला एह़सान-

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ

(क्या एह़सान का बदला एह़सान के अ़लावा है) यानी जिस बन्दे ने अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारी, अच्छे अ़मल किये, अल्लाह पर यक़ीन रखा, शिर्क से बचा, ईमान लाया, आ़माले सालिह़ा में लगा रहा, उस का बदला अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक अच्छा ही है। अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत नसीब फ़रमाएगा और वहाँ की नेअ़मतों से नवाज़ेगा जिन का ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है।

ह़दीस शरीफ़ में जो एह़सान के बारे में ان تعبد الله كانك تراه فان لم تكن تراه فانه يراك फ़रमाया है।

(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० (27) भाग (1) में है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया कि एह़सान क्या है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, एह़सान यह है कि तू अल्लाह की इस तरह़ अ़िबादत करे जैसे कि तू उसे देख रहा हो सो अगर तू उसे नहीं देख रहा तो वह तुझे देख रहा है।)

62-78

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُدْهَآمَّتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ
وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ
حِسَانٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

दूसरे दर्जे की जन्नतों का ज़िक्र-

पिछली आयात में दो जन्नतों का ज़िक्र फ़रमाया, अब यहाँ से दूसरी दो जन्नतों का ज़िक्र शुरु हो रहा है। यह दोनों जन्नतें पहली दो जन्नतों से मर्तबः और फ़ज़ीलत में कम होंगी, यह जिन बन्दों को दी जाएँगी वह अपने ह़ालात और अ़ामाल के एतिबार से उन ह़ज़रात से कम दर्जे के होंगे जिन को पहली दो जन्नतें दी जाएँगी। सिफ़ते ईमान से सब जुड़े होंगे, आइन्दा सूरः वाक़िआ़ में साबिक़ीन अव्वलीन और अस्ह़ाबे यमीन जन्नत में जाने वाली दो जमाअ़तों का ज़िक्र फ़रमाया है।

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि पहली दो जन्नतें साबिक़ीन अव्वलीन के लिए और बाद वाली दो जन्नतें (जिन का यहाँ ज़िक्र हो रहा है) अस्ह़ाबे यमीन के लिए होंगी (जो दर्जे के एतिबार से साबिक़ीन अव्वलीन से कम होंगे।)

शब्द مُدْهَآمَّتٰنِ की तह़क़ीक़-

مُدْهَآمَّتٰنِ (यह दोनों जन्नतें बहुत गहरे सब्ज़ रंग वाली होंगी) यह कलिमा शब्द اِدْهِيْمَامٌ इस्म फेअल मुवन्नस का तस्निया (द्वचन) है जो शब्द دُهْمَةٌ से बना है। **دهمت** सियाही को कहते हैं, जब हरियाली बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है तो काले रंग की तरफ़ मायल हो जाती है इसलिए مُدْهَآمَّتٰنِ फ़रमाया, जिस का तर्जुमः सब्ज़ गहरे रंग का किया गया है। क़ुर्आन मजीद में यही एक आयत है जो कलिमा वाह़िद पर शामिल है।

ख़ूब जोश मारने वाले दो चश्मे-

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ (उन दोनों बाग़ों में ख़ूब जोश मारते हुए दो चश्मे (स्रोत) होंगे।)

"ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि यह दोनों चश्मे (स्रोत) अहले जन्नत पर ख़ैर और बरकत निछावर करते रहेंगे"।

ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) और ह़ज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि

यह चश्मे (स्रोत) अहले जन्नत के घरों में ख़ुशबुओं की चीज़ें पहुँचाते रहेंगे, जैसे बारिश की छींटें होती हैं और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि इन दो चश्मों से जोश मारता हुआ पानी जारी होगा जो बराबर जारी रहेगा। **(मुआलिमुल् तन्ज़ील)**

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ

(उन दोनों में मेवे, खजूरें और अनार होंगे।)

यह सब चीज़ें वहाँ की होंगी दुनिया की चीज़ों पर क़यास (कल्पना) न किया जाए बाद वाली दो जन्नतों की नेअ़मतों के ज़िक्र में भी हर आयत के बाद فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ फ़रमाया है। इन आयात में खाने की चीज़ों का ज़िक्र था, उस के बाद बीवियों का ज़िक्र है, उन की ख़ूबी और ख़ूबसूरती बयान करते हुए भी हर आयत के ख़त्म पर فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ फ़रमाया है।

जन्नती बीवियों का ज़िक्र-

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ (उन चारों जन्नतों में अच्छी और ख़ूबसूरत औ़रतें होंगी।) मुआलिमुल् तन्ज़ील में ह़ज़रत इब्ने सल्मा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से नक़्ल किया गया है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! خَيْرَاتٌ حِسَانٌ का मतलब क्या है। आप (सल्ल०) ने बताया خيرات الاخلاق حسان الوجوه यानी वह अच्छे अख़्लाक़ वाली ख़ूबसूरत चेहरों वाली होंगी। फ़रमाया حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ (वह हूरें होंगी जो ख़ेमों में महफ़ूज़ होंगी) यह ख़ूबसूरत औ़रतें पर्दों में छिपी हुई होंगी।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अहले जन्नत की औ़रतों में से अगर कोई औ़रत ज़मीन की तरफ़ झांक ले तो ज़मीन व आसमान के दर्मियान जितनी जगह है उस सब को रौशन कर दे और सब को ख़ुशबू से भर दे और फ़रमाया कि उस के सर का दुपट्टा सारी दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उन सब से बेहतर है।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 495 बुख़ारी)**

जन्नत के ख़ेमों के बारे में ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा जन्नत में मोमिन के लिए एक ही मोती से बनाया हुआ ख़ेमा होगा जो अन्दर से ख़ाली होगा उस की चौड़ाई (और एक रिवायत में है कि उस की लम्बाई) साठ मील की मुसाफ़त तक होगी, उस के हर किनारे पर उस के घर वाले होंगे जिन्हें दूसरी ओर वाले देख लेंगे। मोमिन बन्दा अपने घर वालों के पास आता-जाता रहेगा। मोमिनीन के लिए दो जन्नतें ऐसी होंगी जिन में बर्तन और उन के अ़लावा जो कुछ है सब चाँदी का होगा और दो जन्नतें सोने की होंगी जिन के बर्तन और जो कुछ उन में है सब सोने के होंगे। अहले जन्नत और उन के रब के दीदार के दर्मियान सिर्फ़ एक पर्दा होगा यह सब कुछ जन्नते अ़द्न में होगा। **(रवाहुल् बुख़ारी व मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 495)**

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ

(उन से पहले किसी इन्सान या जिन्न ने उन हूरों को इस्तेमाल न किया होगा।)

बीवियों की ख़ूबी और उन के हुस्न व जमाल बयान करने के बाद फ़रमायाः-

مُتَّكِـِٔينَ عَلٰى رَفۡرَفٍ خُضۡرٍ وَّعَبۡقَرِيٍّ حِسَانٍ

(उन जन्नतों में दाख़िल होने वाले लोग सब्ज़ रंग के नक़्श व निगार वाले ख़ूबसूरत बिस्तरों पर तकिया लगाये हुए होंगे।)

शब्द عَبۡقَرِيٍّ की व्याख्या में एक क़ौल (कथन) के मुताबिक़ इस का तर्जुमः नक़्श व निगार वाला किया गया है।

'साहिबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' लिखते हैं कि हर वह चीज़ जो उ़म्दा और बढ़िया फ़ख़्र के क़ाबिल हो अहले अ़रब उसे 'अ़बक़री' कहते हैं। इसी एतिबार से रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के बारे में फ़रमाया **فلم ارَعبقريا يفرى فريه**

تَبٰرَكَ اسۡمُ رَبِّكَ ذِى الۡجَلٰلِ وَالۡاِكۡرَامِ

(बड़ा बरकत है आप के रब का नाम जो अ़ज़्मत और एह़सान वाला है।)

यह सूरः रह़मान की आख़िरी आयत है जो अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और इक्राम के बयान पर ख़त्म हो रही है। इसकी व्याख्या पहले रुकूअ़ के ख़त्म पर भी अल्लाह तआ़ला की सिफ़त "ज़ुल् जलाले वलइक्राम" में बयान फ़रमाई है, वहाँ इस की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

नोट-

1- सूरः रह़मान में इक्तीस जगह (31) فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ फ़रमाया है। इस के बारे में बार-बार पढ़ने से एक कैफ़ियत मह़सूस होती है, ईमानी ग़िज़ा भी मिलती है और तिलावत करने वाले और तिलावत सुनने वाले पर एक ख़ास कैफ़ियत तारी हो जाती है। इसीलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस को 'उरुसुल् क़ुर्आन' यानी 'क़ुर्आन की दुल्हन' फ़रमाया है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 189)**

ज़ीनत

2- فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ में जिन्नात और इन्सान दोनों जमाअ़तों को ख़िताब फ़रमाया है और बार-बार याद दहानी की है कि तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने इन-इन नेअ़मतों से नवाज़ा है, सो तुम अपने रब की किन-किन नेअ़मतों को झुठलाओगे।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) बाहर तशरीफ़ लाए। आप (सल्ल०) ने अपने सह़ाबा को सूरः रह़मान अव्वल से आख़िर तक पढ़कर सुनाई, यह लोग ख़ामोशी से सुनते रहे।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैंने इस सूरः को 'लैलतुल् जिन्न' में जिन्नातों को पढ़कर सुनाया वह जवाब देने में तुम से अच्छे साबित हुए। मैं भी जब فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ पढ़ता था तो वह जवाब में यूँ कहते थे لَا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ "ऐ हमारे रब! हम आप की किसी भी नेअ़मत को नहीं झुठलाते आप ही के लिए सब तअ़रीफ़ है"। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

अल्लाह तआ़ला ने सब को हर तरह़ छोटी बड़ी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं, उन नेअ़मतों का इक़रार करना और शुक्रगुज़ारी करना यानी वह आ़माल अख़्तियार करना जिन से नेअ़मतें देने वाला राज़ी न हो

यह नेअ़मतों की क़द्रदानी है। नेअ़मतों का इन्कार कर देना कि मुझे नहीं मिली अल्लाह तआ़ला ने मुझे नहीं दी, मैंने अपनी कोशिशों से ह़ासिल की हैं या ऐसा तरीका अपनाए जिस से यह ज़ाहिर होता हो कि यह नेअ़मतों का इक़रार नहीं है यह सब नेअ़मतों का झुठलाना है, नेअ़मत का इन्कार भी इस सिल्सिले की एक कड़ी है।

3- ऊपर की आयत से यह तो स्पष्ट हो गया कि जिन्नात भी मुख़ातब और पाबन्द हैं। सूरः अल् ज़ारियात (**आयत नं० 56**) में स्पष्ट तौर पर फ़रमाया है:-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ और मैंने जिन्न और इन्स को सिर्फ़ अपनी अ़िबादत के लिए पैदा किया)

और जिस तरह़ इन्सानों पर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें हैं जिन्नात पर भी हैं यानी इन्सानों को फ़ज़ीलत ह़ासिल है क्योंकि इन्सान 'ख़लीफ़तुल्लाह फ़िल् अर्ज़' (ज़मीन का ख़लीफ़ा) है।

दोनों लोगों के पास अल्लाह तआ़ला की हिदायत आईं और अल्लाह तआ़ला के रसूल आए दोनों जमाअ़तें अल्लाह के अह़काम की पाबन्द हैं (यानी यह मस्ला इख़्तिलाफ़ी है कि जिन्नात में भी रसूल आए थे या नहीं, बनी आदम की तरफ़ जो रसूल भेजे गये थे वही जिन्नात की तरफ़ मब्अ़ूस थे या उन में भी रसूल मब्अ़ूस हुए।)

अल्बत्ता इस बात को सब लोग मानते हैं कि 'ख़ातिमुन्नबीय्यीन' मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) रसूल 'अल् सक़लैन' हैं यानी रहती दुनिया तक के लिए आप ही अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और जिस तरह़ आप इन्सानों की तरफ़ मब्अ़ूस हुए उसी तरह़ आप जिन्नातों की तरफ़ भी मब्अ़ूस किये (भेजे) गये।

सूरः रह़मान की आयात से ऐसा ही मालूम होता है और सूरः अल् अह़क़ाफ़ (**आयत नं० 31**) में है कि जिन्नात आप की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और वापस होकर उन्होंने अपनी क़ौम से जाकर कहा:-

يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ

(ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह के दाअ़ी की बात मानो और उस पर ईमान लाओ, वह तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से पनाह देगा।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) कई बार जिन्नात के रहने की जगह तशरीफ़ ले गये जिस का ह़दीस में ज़िक्र मिलता है।

यह तो मालूम हो गया कि जिन्नात अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पाबन्द हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपनी अ़िबादत का हुक्म दिया उन की तरफ़ रसूल भी भेजे, उन में मोमिन भी हैं और काफ़िर भी, काफ़िरों के लिए जहन्नम है चाहे इन्सान हों या जिन्नात हों।

जैसा कि सूरः अलिफ़-लाम-मीम सज्दः (**आयत नं० 13**) में फ़रमाया है:-

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

(और अगर हम को मन्ज़ूर होता तो हम हर शख़्स को इस की हिदायत फ़रमाते, लेकिन मेरी यह बात तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इन्सान दोनों से भर दूँगा।)

ह़ज़रात मुह़द्दिसीन और मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने यह सवाल उठाया है कि मोमिन जिन्नात पर इतनी

मेहरबानी होगी कि सिर्फ़ दोज़ख़ से बचा लिये जाएँगे या उन्हें जन्नत में भी दाख़िल किया जाएगा।

सूरः रह़मान की आयातें जिन में अहले जन्नत की नेअ़मतें बताई गई हैं उन में बार-बार जो فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ फ़रमाया है। इस से मालूम हो रहा है कि जिन्नात भी जन्नत में जाएँगे।

'अहकामुल् मरजान' (शेख़ बद्रुद्दीन शिब्ली ह़न्फ़ी रह़०) ने चौबीसवें बाब में इस सवाल को उठाया है और चार क़ौल लिखे हैं। पहला क़ौल यह है कि मोमिन जिन्नात जन्नत में दाख़िल होंगे और इसी को तर्जीह़ दी है।

وقال وعليه جمهور العلماء و حكاه ابن حزم في الملل عن ابن ابی ليلى
و ابی یوسف و جمهور الناس قال و به نقول

दूसरा क़ौल यह है कि जिन्नात जन्नत में दाख़िल न होंगे उस के बाहर दरवाज़ों के क़रीब ही रहेंगे। इन्सान उन्हें देख लिया करेंगे वह इन्सानों को न देखेंगे। इस क़ौल के बारे में लिखा है:-

و هذا القول ماثور عن مالک و الشافعی و احمد و ابی یوسف و محمد حكاه ابن
تیمیه فی جواب ابن مری و هو خلاف ماحکاه ابن حزم عن ابی یوسف

तीसरा क़ौल यह है कि वह अअ़राफ़ में रहेंगे और इस बारे में उन्होंने एक ह़दीस भी नक़्ल की है।

चौथा क़ौल खामोशी का है, जिस का मतलब यह है कि हम अपनी तरफ़ से इस का कोई फ़ैसला नहीं करते। वल्लाहु आ़लम

सूरः रह़मान के पहले रुकूअ़ के ख़त्म पर और तीसरे रुकूअ़ के ख़त्म पर अल्लाह तआ़ला की सिफ़त ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِکْرَامِ बयान फ़रमाई है।

अल्लाह तआ़ला अ़ज़्मत वाला और इक्राम वाला है यानी अपने बन्दों के साथ एह़सान का मामला फ़रमाता है और इनुआ़म से नवाज़ता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया है:-

الظوا بيا ذالجلال والاكرام यानी या ज़ल् जिलालि वल् इक्राम में लगे रहो इस को पढ़ते रहो और इस के ज़रिये दुआ़ करते रहो। **(रवाहु अल् ह़ाकिम फ़िल् मुस्तदरक वक़ाल सह़ीह़ पेज नं० 499 भाग 1)**

ह़ज़रत सौबान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते थे तो तीन बार इस्तिग़्फ़ार करते और यह दुआ़ करते थे اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ **(रवाहु मुस्लिम)**

अनुवादः "ऐ अल्लाह! तू ब-सलामत है और तेरी ही तरफ़ से सलामती मिलती है या जल्जलालि वल् इक्राम"।

"ह़ज़रत मआ़ज़ बिन जबल (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक शख़्स को यह कहते हुए सुना يَاذَاالجلال والاكرام (ऐ अ़ज़्मत वाले और बख़्शिश वाले) आप ने यह सुनकर फ़रमाया कि तेरी दुआ़ क़ुबूल कर ली गई लिहाज़ा तू सवाल कर"। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ बैठा हुआ था कि एक

शख़्स नमाज़ पढ़ रहा था उस शख़्स ने नमाज़ के बाद यह शब्द अदा किये।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنَّ لَکَ الْحَمْدَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَا
ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ.

“ऐ अल्लाह! बेशक मैं आप से इस बात का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि बिलाशुब्हा आप के लिए सब तअ़रीफ़ है कोई मअ़बूद आप के सिवा नहीं है। आप बहुत ज़्यादा देने वाले हैं, आसमानों और ज़मीन को बिला मिसाल पैदा फ़रमाने वाले हैं। ऐ अज़्मत वाले! ऐ अ़ता फ़रमाने वाले! ऐ ज़िन्दा! ऐ क़ायम रखने वाले”!

यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

“इस शख़्स ने अल्लाह के उस बड़े नाम के ज़रिये दुआ़ की है कि जब इस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला से सवाल किया जाता है तो वह अ़ता फ़रमा देता है”। **(रवाहु अबू दाऊद)**

सूरः नं० 56

सूर-ए-वाक़िअः

सूरः वाक़िअ़ः का संक्षिप्त परिचय

नाम– इस सूरः की पहली आयत में मौजूदा शब्द **'अल् वाक़िअ़ः'** ही इस का नाम रख दिया गया है, जो क़ियामत के दिन का नाम है। चूंकि यह सूरः क़ियामत में होने वाले वाक़िआ़त के बयान से भरी है, इसीलिए इस का नाम **'अल् वाक़िअ़ः'** यानी क़ियामत का दिन रख दिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

ह़सन, इक्रिमा, जाबिर और अ़ता आदि के नज़्दीक यह सूरः मक्की है। 'इब्ने मरदूविया' और 'बैहक़ी' ने 'दलायल' में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सूरः अल् वाक़िअ़ः मक्का में नाज़िल हुई थी।

'तिर्मिज़ी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप बूढ़े हो गए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मुझे हूद, अल् वाक़िअ़ः, अल् मुरसिलात, अ़म्म यतसाअलून और इज़श्शमसु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया है। तिर्मिज़ी ने इसे (ह़सन ग़रीब) कहा है।

और इमाम अह़मद ने जाबिर बिन समुरह (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तुम्हारी ही तरह़ नमाज़ पढ़ते थे, लेकिन आप (सल्ल०) की नमाज़ हल्की होती थी और आप (सल्ल०) नमाज़े फ़ज्र में **"अल् वाक़िअ़ः"** और इसी जैसी सूरते पढ़ते थे।

इस सूरत की फ़ज़ीलत में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की यह रिवायत नक़्ल की जाती है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो शख़्स हर रात सूरः अल् वाक़िअ़ः की तिलावत करता रहेगा, उसे कभी मोह़ताजी लाह़िक़ नहीं होगी" इसे 'अबू यअ़ला' और 'बैहक़ी' ने अपनी किताब 'शुअ़बुल् ईमान' में रिवायत की है।

आयत नं० 1 से 40 तक

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ فَكَانَتْ
هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝٦ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝٧ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ مَا أَصْحٰبُ
الْمَشْـَٔمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝١٠ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ۝١٤
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ
مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝١٩ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝٢٠ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٢١ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝٢٢ كَأَمْثَالِ
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝٢٣ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٤ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا ۝٢٥ إِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝٢٦ وَأَصْحٰبُ
الْيَمِيْنِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝٢٧ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝٢٨ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝٢٩ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝٣٠ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝٣١ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝٣٢
لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝٣٣ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝٣٤ إِنَّآ أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَآءً ۝٣٥ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝٣٦ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝٣٧ لِّأَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ۝٣٨ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝٣٩ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ۝٤٠

अनुवाद-

(1) जब घटित होने वाली (घड़ी) घटित हो जाएगी, (2) उसके घटित होने में कुछ भी झूठ नहीं (3) किसी को पस्त करने वाली किसी को ऊँचा करने वाली; (4) जब धरती थरथरा कर काँप उठेगी (5) और पहाड़ टूट-टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे; (6) तो वे बिखरे हुए धूल (के ज़र्रे के रूप में) हो कर रह जाएँगे; (7) और तुम लोगों की तीन क़िस्में हो जाएँगी; (8) तो दाहिने (हाथ) वाले, तो दाहिने वालों का क्या कहना (अर्थात भाग्यशाली लोग)! (9) और बाएँ (हाथ) वाले तो बाएँ वाले, क्या (बुरे लोग) हैं! (अर्थात दुर्भाग्यशाली)। (10) और जो आगे बढ़ जाने वाले तो आगे बढ़ जाने वाले ही हैं; (11) वही (अल्लाह के) क़रीबी हैं, (12) नेअ़मत की जन्नतों में; (13) वे बहुत से अगले लोगों में से होंगे, (14) और पिछलों में से कम ही होंगे- (15) जड़ाऊ तख़्तों के ऊपर (16) तकिया लगाए आमने-सामने होंगे, (17) उनके पास लड़के जो हमेशा नौजवान रहेंगे, उनके आस-पास फिरेंगे। (18) उनके पास आबख़ोरे (जग) और शुद्ध पीने (की चीज़) से भरे प्याले लिए फिर रहे होंगे (19) इससे न तो उनके सर में दर्द होगा और न उनकी बुद्धि में ख़राबी आएगी; (20) और स्वादिष्ट फल जो उनको अच्छे लगेंगे, (21) और परिन्दों का गोश्त जो वे चाहें; (22) और बड़ी आंखों वाली हूरें; (23) जैसे छिपाए हुए मोती हों (24) यह सब उसके बदले में उन्हें मिलेगा, जो कुछ वे करते रहे; (25) उसमें न कोई बकवास बात सुनेंगे और न गुनाह की बात, (26) सिवाय 'सलाम-सलाम' की पुकार के; (27) और दाहिनी ओर वाले, तो इन दाहिनी ओर वालों का क्या कहना? (अर्थात सौभाग्य लोग) (28) वे (वहाँ होंगे जहां) बिना काँटो के बेर, (29) और गुच्छेदार केले; (30) और दूर तक फैले हुए साए (छाँव), (31) और बहता हुआ पानी, (32) और ज़्यादा से ज़्यादा फल (के बाग़ों) में, (33) (जो) न कभी टूटने (ख़त्म होने) वाला होगा, और न उस पर कोई रोक टोक होगी। (34) और ऊँचे बिछौने होंगे; (35) बेशक, 'हमने' इन (हूरों) की एक खास सृष्टि बनाई; (36) तो 'हमने' उन्हें कुंवारियाँ बनाया, (37) प्यारी और समान अवस्था (हम उम्र) वाली (38) दाहिने ओर वालों (अर्थात भाग्यशाली लोगों) के लिए, (39) (यह) अगले लोगों में से भी बहुत से होंगे, (40) और पिछलों में से भी बहुत से।

आयत नं० 1 से 40 तक की व्याख्या

1-7 اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۝
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا ۝ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝

क़ियामत के दिन के ह़ालात

इस सूरः में क़ियामत के बाद जो फ़ैसले होंगे और उन के बाद जो अहले ईमान को इनूआमात मिलेंगे और अहले कुफ़्र जो अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे उस की कुछ तफ़्सीलात बयान की गई हैं, दर्मियान में अल्लाह तआ़ला की दीनी और दुनियावी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया है।

इर्शाद फ़रमाया कि जब क़ियामत क़ायम होगी तो उस का कोई झुठलाने वाला न होगा। आज तो दुनिया में बहुत बड़ी संख्या में लोग उस के होने के इन्कारी हैं। जब वह आ ही जाएगी जिस की ख़बर अल्लाह तआ़ला की किताबों और रसूलों ने दी है, उसे नज़र से देख लेंगे और झुठलाने वाले परेशान ह़ाल अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे, उस दिन मान लेंगे और رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا कहेंगे।

क़ियामत की यह ख़ास सिफ़त होगी कि वह خَافِضَةٌ और رَّافِعَةٌ यानी पस्त करने वाली भी और बुलन्द करने वाली होगी।

बहुत से लोग जो दुनिया में ऊँचे थे, बादशाह थे, अमीर थे, मन्त्री थे, क़ौमों के सरदार थे, मदरसा, स्कूल जमाअ़त और खानकाह के ज़िम्मेदार थे, माल की वजह से अहले दुनिया उन्हें बड़ा समझती थी, लेक़िन यह लोग काफ़िर, मुश्रिक, मुनाफ़िक़ या कम से कम फ़ासिक़ थे यह लोग क़ियामत के दिन बुरे ह़ाल में होंगे।

उस दिन की गिरफ़्त दुनिया वाली सारी बड़ाई को ख़ाक में मिला देगी और बहुत से वह लोग जो दुनिया में ह़क़ीर और कमज़ोर समझे जाते थे, दुनिया वालों के नज़्दीक उन की कोई ह़ैसियत न थी लेकिन ईमान वाले थे, मुत्तक़ी और परहेज़गार आ़माले सालिह़ा से लैस थे, क़ियामत उन्हें बुलन्द कर देगी बहुत बड़ी तअ़दाद में यह लोग बिना ह़िसाब जन्नत में चले जाएँगे और बहुतों से आसान ह़िसाब होगा और बहुतों से थोड़ा बहुत ह़िसाब होकर छुट्कारा हो जाएगा।

वहाँ अम्बिया, शोहदा और उ़लमा की सिफ़ारिशें काम दे जाएँगी।

इस के बाद क़ियामत के ज़लज़ले का ज़िक्र फ़रमायाः-

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا (जबकि ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा।)

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا (और पहाड़ बिलकुल रेज़ह-रेज़ह कर दिये जाएँगे।)

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا (फिर वह परागन्दह गुबार हो जाएँगे।)

قوله اذا رجت قال المفسرون اذا ثانية بدل من الاولى و قيل ظرف لخافضة رافعة
على التنازع ذكره صاحب الكمالين بل اقرب ان يقال اذا الثانية كالشرط و قوله

تعالیٰ ورجت عطف علیه و کنتم وجزاء ہ محذوف ای تنقسمون وتتابون حسب ایمانکم و اعمالکم

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً (और ऐ लोगों! क़ियामत के दिन तुम तीन क़िस्मों में होगे। इन तीनों क़िस्मों का ज़िक्र आगे आयात में आ रहा है।

اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ इस में दो क़िस्में बयान फ़रमाईं। पहली 'साबिक़ीन' जिन्हें 'मुक़र्रबीन' फ़रमाया, दूसरी आ़म मोमिनीन जिन्हें 'अस्ह़ाबुल् यमीन' फ़रमाया, तीसरे तमाम कुफ़्फ़ार जो 'अस्हाबुश्शिमाल' होंगे।

8-40 فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ وَ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ؕ
وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚ اُولٰٓىِٕكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ ۙ وَقَلِیْلٌ
مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ؕ عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ مُّتَّكِـِٕیْنَ عَلَیْهَا مُتَقٰبِلِیْنَ ۝ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُوْنَ ۙ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِیْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ۙ لَّا یُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا یُنْزِفُوْنَ ۙ
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا یَتَخَیَّرُوْنَ ۙ وَلَحْمِ طَیْرٍ مِّمَّا یَشْتَهُوْنَ ؕ وَحُوْرٌ عِیْنٌ ۙ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ
الْمَكْنُوْنِ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝ لَا یَسْمَعُوْنَ فِیْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِیْمًا ۙ اِلَّا قِیْلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَ اَصْحٰبُ الْیَمِیْنِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْیَمِیْنِ ؕ فِیْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ وَّطَلْحٍ
مَّنْضُوْدٍ ۙ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ وَّفَاكِهَةٍ كَثِیْرَةٍ ۙ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ لِّاَصْحٰبِ
الْیَمِیْنِ ؕ۠ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ ۙ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ؕ

क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होने वालों की तीन क़िस्में

इन आयात में 'अस्ह़ाबुल् मैमना' की दोनों क़िस्में यानी 'मुक़र्रबीन' और आ़म मोमिनीन का ज़िक्र फ़रमाया है और उन के इनआ़मात बताए हैं। फ़रमाया فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ (सो दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं दाहिने हाथ वाले।)

وَ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ

(और बाएँ हाथ वाले क्या ही बुरे हैं बाएँ हाथ वाले) पहली क़िस्म के लोगों को اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ (दाहिने हाथ वाले) किस एतिबार से फ़रमाया?

इस के बारे में 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने दो क़ौल लिखे हैं:-

पहला यह कि इन ह़ज़रात के आ़माल नामे दाहिने हाथ में दिये जाएँगे। दूसरे यह कि जब यह ह़ज़रात जन्नत में जाने लगेंगे तो मैदाने ह़श्र से हट कर दाहिने हाथ को चल देंगे।

'साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' ने तीसरा क़ौल यह लिखा है कि जब सुल्बे आदम (आदम की पीठ) से निकाले गए तो यह लोग उन के दाहिने तरफ़ से थे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मैंने उन्हें जन्नत के लिए पैदा किया है और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि यह शब्द يُمن (अर्थात मुबारक) से लिया गया है और

मतलब यह है कि यह हज़रात मुबारक हैं, उन की ज़िन्दगियाँ अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी में गुज़री होंगी, उन के मुक़ाबिले में 'अस्हाबुल्मश्अमः' को समझ लिया जाए।

इन बातों में से हर बात का मुक़ाबिल ज़ेहन में ले आना चाहिए (यानी अस्हाबे 'अल् मश्अमति' के आमाल नामे उन के बाएँ हाथ में दिये जाएँगे और जब उन को दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएँगे तो मैदाने हश्र से बाएँ तरफ़ ले जाया जाएगा जिधर दोज़ख़ होगी।

इस के बाद साबिक़ीन (यानी आगे बढ़ने वालों) की नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया। 'अस्हाबुल् मैमना' की 'वजह तस्मिया' बयान करते हुए जो 'सिफ़ात' बयान की गई है उन के एतिबार से यह हज़रात मुक़र्रबीन भी 'अस्हाबुल् मैमना' ही हैं, लेकिन आमाल में बढ़ जाने की वजह से उन को 'साबिक़ीन' का लक़ब दिया गया, उन के इनआ़मात भी ख़ूब बड़े-बड़े बताए इस एतिबार से मैदाने हश्र में हाज़िर होने वालों की दो क़िस्में ('अस्हाबे अल् मैमना' और 'अस्हाबे अल् मश्अमा' के अलावा तीसरी क़िस्म यही 'मुक़र्रबीन' की जमाअ़त होगी।)

साबिक़ीन अव्वलीन

साबिक़ीन के बारे में फ़रमायाः-

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ (और आगे बढ़ने वाले वह आगे बढ़ने वाले हैं जो ख़ास क़ुर्ब रखने वाले हैं।)

जिन हज़रात को 'साबिक़ीन' का लक़ब दिया गया, उस सबक़त से कौन सी सबक़त मुराद है? इस बारे में बहुत से अक़्वाल हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से वह हज़रात मुराद हैं जिन्होंने हिज्रत की तरफ़ पहेल की और हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से इस्लाम क़ुबूल करने की तरफ़ बढ़ने वाले मुराद हैं। हज़रत इब्ने सीरीन (रह०) ने फ़रमाया कि इस से वह हज़रात मुराद हैं जिन्होंने क़िब्लतैन की तरफ़ नमाज़ पढ़ी।

'हज़रत रबीअ़ बिन अनस' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से वह हज़रात मुराद हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातों पर अ़मल करने में आगे बढ़े और हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया जो हज़रात पाँचों नमाज़ों की तरफ़ पहेल करते हैं 'अल् साबिक़ून' से वह हज़रात मुराद हैं और 'हज़रत सअ़ीद बिन जुबैर' (रज़ि०) ने फ़रमाया जो हज़रात तौबः की तरफ़ और नेक आमाल की तरफ़ बढ़ते हैं वह हज़रात 'साबिक़ून' हैं।

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ **(सूरः हदीद-21)** और फ़रमाया اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ **(सूरः मूमिनून-61)** इस आयत में कोई टकराव नहीं है, सब से ज़्यादा जामेअ़ क़ौल 'हज़रत सअ़ीद बिन जुबैर' (रज़ि०) का है जो दूसरी बातों को भी शामिल है।

"साबिक़ीन अव्वलीन" के लिए सबसे बड़ा इनआ़म-

हज़रात साबिक़ीन (पहलो) के बारे में اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ फ़रमाया, क़ुर्ब इलाही से बढ़कर कोई नेअ़मत

नहीं, साथ ही فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ भी फ़रमाया कि यह लोग नेअ़मत वाले बाग़ीचों में होंगे, फिर उन ह़ज़रात की तअ़दाद बताते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝

यानी यह जो पहले करीबी बन्दे होंगे उन का एक बड़ा गिरोह उन लोगों में से होगा और थोड़े से लोग बाद वालों में से होंगे। मालूम हुआ कि पहली उम्मतों में से अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) 'साबिक़ीन अव्वलीन' ज़्यादा होंगे जिन्हें ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ फ़रमाया और उम्मते मुह़म्मदिया में से भी जमाअ़त 'साबिक़ीन' में से होगी, लेकिन यह लोग संख्या में पहली उम्मतों के 'साबिक़ीन' से कम होंगे (कि कम तअ़दाद भी बहुत ही बड़ी तअ़दाद होगी, क्योंकि उन को पिछली उम्मतों के एतिबार से थोड़ा फ़रमाया है) यह भी समझ लिया जाए कि पिछली उम्मतों में अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को मिलाकर 'साबिक़ीन अव्वलीन' की तअ़दाद इस उम्मत के 'साबिक़ीन अव्वलीन' से ज़्यादा होने से पूरी उम्मते मुह़म्मदिया (जिस में अ़वाम व ख़वास सब हैं) का तअ़दाद में कम होना लाज़िम नहीं आता।

ह़ज़रत बुरैदा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नतियों की 120 सफ़ें (क़तार) होंगी जिन में अस्सी (80) इस उम्मत की होंगी और 40 तमाम उम्मतों को मिलाकर होंगी। **(मिश्कात)**

'साबिक़ीन अव्वलीन' की नेअ़मतें-

साबिक़ीन अव्वलीन की मज़ीद नेअ़मतें बयान करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ (यह ह़ज़रात ऐसे तख़्तों पर होंगे जो बुने हुए होंगे।)

क़ुर्आन करीम में केवल शब्द مَّوْضُوْنَةٍ है किस चीज़ से बने हुए होंगे उस का ज़िक्र नहीं है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि सोने के तारों और जवाहरात से उन की बनावट होगी।

مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ (उन तख़्तों पर तकिया लगाए हुए आमने-सामने होंगे।)

अहले जन्नत का तख़्तों पर बैठना इस तरह़ होगा कि कोई किसी की पुश्त नहीं देख पाएगा।

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ

(उन के पास ऐसे लड़के, जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, यह चीज़ें बराबर आमदो रफ़्त किया करेंगे।)

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ

(आबख़ोरे और ऐसा जामे शराब जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा) पहले तो सेवकों के बारे में फ़रमाया कि वह लड़के होंगे, हमेशा लड़के ही रहेंगे और हमेशा ख़ादिम बने रहेंगे, न उन्हें मौत आएगी और न बुढ़ापा। وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ को सूरः तूर में غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ फ़रमाया है।

यह وِلْدَانٌ अहले जन्नत के पास छोटे बड़े बर्तनों में पीने की चीज़ें लेकर आएँगे। اَكْوَابٍ अकवाब, कवब का बहुवचन है गोल मुँह का प्याला जिस में पकड़ने का कड़ा न हो तो उसे कोब कहा जाता है

और اَبَارِيْقَ 'अबरीक़' की जमअ़ (बहुवचन) है उन से वह बर्तन मुराद हैं जिन में टोटियाँ लगी हुई हों, उन पीने की चीज़ों में शराब भी होगी, जिस का सूरः मुह़म्मद की आयत (नं० 15) خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ

में ज़िक्र फ़रमाया है। शब्द 'ख़म्र' से किसी को नशा आने का अन्देशा न हो इस शुब्हा को दूर करते हुए لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ फ़रमाया (न उस से उन को दर्दे सर होगा और न अ़क़्ल में फ़ुतूर आएगा।)

पीने की चीज़ों के बाद खाने की चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ (और मेवे जिन को वह पसन्द करेंगे।)

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ (और परिन्दों का गोश्त जो उन को पसन्द होगा।)

खाने की चीज़ों के ज़िक्र के बाद अहले जन्नत की बीवियों का ज़िक्र फ़रमायाः-

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ (और उन के लिए गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वाली औ़रतें होंगी जैसे पोशीदा रखा हुआ मोती हो।)

शब्द हूर हूरा की जमअ़ है (जिस का अर्थ है गोरी सफ़ेद रंगत वाली औ़रत और **अ़ीन, अ़ैना** का बहुवचन है जिस का अनुवाद है बड़ी आँखों वाली औ़रत। इन दो शब्दों में जन्नती औ़रतों की ख़ूबसूरती बयान फ़रमाई गई है, फिर उनके रंग की सफ़ाई बयान करते हुए كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ फ़रमाया यानी वह छुपे हुए मोतियों की तरह़ होंगी।

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (यह उन के आ़माल के बदले में मिलेगा।)

नागवार कलिमात न सुनेंगे-

दुनिया में देखा जाता है कि इन्सान अच्छे ह़ाल में हो और जमाल भी हो, बीवियाँ भी हों और औलाद भी, लेकिन तक्लीफ़ देने वाली, आराम में ख़लल डालने वाली, कानों को तक्लीफ़ देने वाली आवाज़ें भी आ रही हैं और बाज़ मर्तबः इन्सान उन को नागवार आवाज़ें बन्द करने पर ताक़त भी नहीं होती।

जन्नत में ऐसा न होगा वहाँ कोई नागवार बात और बक्वास बात नहीं सुनेंगे। इसी को फ़रमाया لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا (वहाँ न बक्बक सुनेंगे और न कोई बेहूदा बात।)

اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا (बस सलाम ही सलाम की आवाज़ आएगी।)

यह सलाम अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भी होगा जैसा कि सूरः यासीन (आयत नं० 58) में फ़रमाया سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ और आपस में भी सलाम करेंगे।

सूरः यूनुस (आयत नं० 10) में फ़रमाया تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ और फ़रिश्ते भी सलाम के साथ मुलाक़ात करेंगे।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ (यानी हमेशा बसलामत रहेंगे और सलाम पेश किया जाता रहेगा।)

अस्ह़ाबुल् यमीन की नेअ़मतें-

इस के बाद اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ की नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमायाः-

وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ (और दाहिने हाथ वाले क्या ही ख़ूब हैं दाहिने हाथ वाले।)

فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ (वह उन बाग़ों में होंगे जहाँ बेख़ार बेरियाँ होंगी) "सिद्र" को शब्द "मख़्दूद" के साथ फ़रमाया यानी उन के दरख़्तों में कांटे नहीं होंगे जैसा कि दुनिया वाली बेरियों में कांटे होते हैं।

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन एक अअ़राबी हाज़िरे ख़िद्मत हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन में एक ऐसे दरख़्त का ज़िक्र फ़रमाया है जो तक्लीफ देने वाला है। आप ने फ़रमाया, वह कौन सा दरख़्त है अ़र्ज़ किया, वह "सिद्र" बेरी का दरख़्त है उस में काँटे होते हैं।

इस के जवाब में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ फ़रमाया है यानी वह बेरी के दरख़्त ऐसे होंगे जिन में काटे न लगे हुए होंगे, अल्लाह उस के हर कांटे को काट देगा और हर कांटे की जगह फल लगा देगा। इस में ऐसे फल लगेंगे कि एक फल फटेगा तो उस से बहत्तर (72) रंग के फल निकल आएँगे एक रंग दूसरे रंग से अलग होगा।

(रवाहु अल् ह़ाकिम फ़िल् मुस्तदरक वक़ाल सह़ीह़)

दूसरी नेअ़मत बयान करते हुए وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ फ़रमाया (यानी वहाँ तह-ब-तह लगे हुए केले होंगे) केलों का मज़ा और मिठास और खास कैफियत़ जो यहाँ दुनिया में है दुनिया वाले इस से वाक़िफ़ हैं। आख़िरत के केलों में जो मज़ा होगा वह तो अहले दुनिया की कल्पना से बाहर है। तीसरी नेअ़मत बयान करते हुए फ़रमायाः-

وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ कि अस्ह़ाबुल्यमीन ख़ूब ज़्यादा फैलाव वाले साया में होगे। जन्नत का साया सरासर आराम देने वाला होगा और साया भी असली होगा, झूठा साया न होगा जैसा कि दुनिया में धुवें का साया होता है। इसीलिए सूरः निसा (**आयत नं० 57**) में फ़रमायाः-

وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا

और हम उन्हें गहरे साये में दाख़िल करेंगे, यह साया चूंकि आरामदेह होगा इसलिए इस में ज़रा भी गर्मी और सर्दी न होगी।

सूरः दहर (**आयत नं० 13**) में फ़रमायाः-

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا

(इस ह़ालत में कि वह वहाँ मसहरियों पर तकिया लगाए होंगे, न वहाँ गर्मी होगी और न सर्दी।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि बिलाशुब्हा जन्नत में एक ऐसा दरख़्त है कि सवारी पर चलने वाला सौ साल तक चलता रहे, मगर उस की दूरी को काट न सकेगा। **(रवाहुल् बुख़ारी)**

मज़ीद फ़रमाया وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ कि 'अस्ह़ाबुल्यमीन' को भी नेअ़मत दी जाएगी।

'साहिबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' लिखते हैं कि यह पानी बराबर ज़मीन पर जारी होगा इस में खुदी हुई नहरें, नदी नाले बने हुए न होंगे जहाँ चाहेंगे यह पानी पहुँच जाएगा, डोल और रस्सी की ज़रुरत न होगी।

(पेज नं० 140 भाग 4)

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ और 'अस्ह़ाबुल्यमीन' ख़ूब ज़्यादा मेवों में होंगे यह मेवे हमेशा रहेंगे,

कभी ख़त्म न होंगे और कभी भी कोई रुकावट नहीं डाली जाएगी, जब चाहेंगे खाएँगे जितना चाहेंगे खाएँगे।)

हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती आदमी जब भी जन्नत में कोई फल तोड़ेगा तो उस की जगह दूसरा फल लग जाएगा। **(मज़मउज्ज़वायद पेज नं० 414 भाग 10)**

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ (और अस्हाबुल्यमीन बुलन्द बिस्तरों पर होंगे।)

बूढ़ी मोमिनात जन्नत में जवान बना दी जाएँगी

इस के बाद जन्नती औ़रतों का ज़िक्र फ़रमाया, वहाँ जो बीवियाँ मिलेंगी उन में हूरे ऑ़न भी होंगी जो एक मख़्लूक़ है और दुनिया वाली औ़रतें जो ईमान पर वफ़ात पा गईं वह भी अहले जन्नत की बीवियाँ बनेंगी और दुनिया वाली औ़रतों में वह भी होंगी जो दुनिया में बूढ़ी हो चुकी थीं और वह भी होंगी जो शादीशुदा या बेशादी शुदा या छोटी उ़म्र में वफ़ात पा गईं थीं, यह सब जन्नत में अहले ईमान की बीवियाँ होंगी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अहले जन्नत में से जो भी छोटा बड़ा वफ़ात पा गया होगा, क़ियामत के दिन सब को जन्नत में तीस साल की उ़म्र वाला बना दिया जाएगा, उन की उ़म्र कभी उस से आगे न बढ़ेगी। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 499)**

बूढ़ी मोमिन औ़रतें जिन्होंने दुनिया में वफ़ात पाई थी जन्नत में दाख़िल होंगी तो जवान होंगी तीस साल की होंगी। इसी को फ़रमाया हैः-

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝ لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

(हम ने औ़रतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हम ने उन को ऐसा बनाया है कि वह कुवांरियाँ हैं, महबूबा हैं, हमउ़म्र हैं, यह सब चीज़ें दाहिने वालों के लिए हैं) जन्नती औ़रतें हुस्न व जमाल वाली भी होंगी, महबूबात भी होंगी और हमउ़म्र भी होंगी।

एक बूढ़ी सहाबिया औ़रत का क़िस्सा

'शमाइले तिर्मिज़ी' में है कि एक बूढ़ी औ़रत रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! दुआ़ कीजिए अल्लाह तआ़ला मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ फ़लाँ की माँ! जन्नत में बुढ़िया दाख़िल न होंगी।

यह सुनकर वह बूढ़ा रोती हुई वापस चली गई, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जाओ उन से कह दो कि जन्नत में जब वह दाख़िल होंगी तो बुढ़िया न होंगी (यानी जन्नत में बुढ़ापा बाक़ी न रहेगा दाख़िल होने से पहले ही जवान बना दिया जाएगा) अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हैः-

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝ (हम ने उन औ़रतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हम ने उनको ऐसा बनाया कि वह कुवांरियाँ हैं।)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला के फ़रमान إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝ की तफ़्सीर करते हुए इर्शाद फ़रमाया किः-

"जिन औ़रतों को अल्लाह तआ़ला नये तौर से ज़िन्दगी देंगे उन में वह औ़रतें भी होंगी जो दुनिया

में आँख से खराब यानी चिपड़ी थीं और जिन की आँखों में मैल और कीचड़ भरे रहते थे।

(रवाहुल् तिर्मिज़ी फ़ी तफ़्सीर सूरः वाक़िअ़ः)

चिपड़ी उस औ़रत को कहा जाता है जिस की आँखें पूरी तरह़ न खुलें और आ़मतौर से आँसू बहते रहते हों।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ (अस्ह़ाबुलयमीन का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।)

आयत नं० 41 से 74 तक

وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۝ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوْا
قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۝ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۝ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ أَوَ اٰبَآؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۝ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ إِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ
أَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۝ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۝ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ
الْحَمِيْمِ ۝ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۝ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝ أَفَرَءَيْتُمْ مَّا
تُمْنُوْنَ ۝ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝ عَلٰٓى أَنْ نُّبَدِّلَ
أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ أَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَأَنْتُمْ
تَزْرَعُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطٰمًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ إِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝
أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝ ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝
أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

अनुवाद-

(41) और बाईं ओर वाले, क्या ही बुरे बाईं ओर वाले होंगे? (42) गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे, (43) और काले धुएँ के साए में होंगे, (44) (जो) न ठंडा होगा और न फ़ायदेमन्द, (45) यह लोग इससे पहले खुशहाल थे, (46) और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे, (47) और कहते थे, ''क्या जब हम मर जाएँगे, और मिट्टी, और हड्डियाँ हो कर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में उठाए जाएँगे? (48) और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी?'' (49) कह दीजिए, ''बेशक अगले और पिछले भी; (50) (सब) एक निश्चित दिन के समय पर जमा किये जाएँगे; (51) फिर ऐ पथभ्रष्टो, और झुठलाने वालो! (52) तुम जक़्क़ूम (थूहर नामक) वृक्ष से खाओगे, (53) इसी से पेट भरोगे (54) तो इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, (55) पियोगे भी तो प्यासे ऊँट की तरह;'' (56) यह बदला दिये जाने के दिन उनकी पहली मेहमानी होगी! (57) 'हमने' तुमको पैदा किया, तो तुम सच क्यों नहीं मानते? (58) तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ (नुत्फ़े) तुम टपकाते हो? (59) क्या तुम इसे आकार (पैदा कर) देते हो या 'हम' हैं आकार देने वाले? (60) 'हमने' तुम्हारे बीच मौत मुक़र्रर की है और 'हम' आ़जिज़ (असमर्थ) नहीं हैं, (61) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएँ और तुम्हें ऐसी ह़ालत में उठा खड़ा करें, जिसे तुम जानते भी नहीं; (62) और तुम तो पहली पैदाइश को जानते हो, तो फिर तुम ध्यान क्यों नहीं देते? (63) क्या तुमने देखा! जो कुछ तुम खेती करते हो? (64) तो क्या तुम उसे उगाते हो या 'हम' उसे उगाते हैं? (65) अगर 'हम' चाहें तो उसे चूर-चूर कर दें, और तुम बातें बनाते रह जाओ, (66) कि ''हम तो तावान में पड़ गये, (67) बल्कि हम हैं ही मह़रूम (वंचित)।'' (68) क्या तुमने उस पानी को देखा! जिसे तुम पीते हो? (69) क्या तुमने उसको बादल से उतारा है, या

उतारने वाले हम हैं? (70) अगर 'हम' चाहें तो खारा कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते? (71) क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो? (72) क्या तुमने उस वृक्ष को पैदा किया है, या उसके पैदा करने वाले 'हम' हैं? (73) 'हमने' ही तो इसको याद दिलाने और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए बनाया है; (74) तो आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) कीजिए।

आयत नं० 41 से 74 तक की व्याख्या

41-56 وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ فِیْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِیْمٍ ۙ وَّ ظِلٍّ مِّنْ یَّحْمُوْمٍ ۙ لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِیْمٍ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِیْنَ ۚۖ وَ كَانُوْا یُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِیْمِ ۚ وَ كَانُوْا یَقُوْلُوْنَ ۙ۬ اَىِٕذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِیْنَ وَ الْاٰخِرِیْنَ ۙ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ۬ اِلٰى مِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ؕ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَیُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ فَشٰرِبُوْنَ عَلَیْهِ مِنَ الْحَمِیْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِیْمِ ؕ هٰذَا نُزُلُهُمْ یَوْمَ الدِّیْنِ ؕ

अस्ह़ाबुश्शिमाल का अ़ज़ाब

इन आयात में अस्ह़ाबुश्शिमाल के अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया, जिन्हें शुरु सूरः में अस्ह़ाबुल् मश्अमा फ़रमाया था। इर्शाद फ़रमायाः-

وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ (और बाएँ जानिब वाले कैसे ही बुरे हैं बाएँ जानिब वाले।)

فِیْ سَمُوْمٍ (यह लोग सख़्त गर्म ज़हरीली हवा में होंगे) وَّ حَمِیْمٍ (और ख़ूब ज़्यादा सख़्त गर्म पानी में होंगे।)

وَّ ظِلٍّ مِّنْ یَّحْمُوْمٍ (और ऐसे साये में होंगे जो यह़मूम का साया होगा।)

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि یَّحْمُوْمٍ से दुख़ान अस्वद यानी काला धुवां मुराद है, यह 'ज़िल् मम्दूद' के मुक़ाबिले में बयान फ़रमाया है। 'अस्ह़ाबुल् यमीन' बहुत बड़े लम्बे चौड़े गहरे साये में होंगे और اَصْحٰبُ الشِّمَالِ सख़्त गर्म काले धुवें में होंगे।

لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِیْمٍ (यह धुवां न ठंडा होगा न खुश बख़्श होगा।)

दुनिया में काफ़िरों की ऐ़श परस्ती-

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِیْنَ (इस से पहले यह लोग जब दुनिया में थे बड़ी खुशह़ाली में रहते थे) यानी दुनिया की खुशह़ाली ने इन्हें तबाह व बर्बाद किया और अ़ज़ाब का ह़क़्दार बना दिया। यह अपने माल व दौलत और ऐ़श व आराम में मस्त थे, ईमान क़ुबूल नहीं करते थे, अपने मालिक और ख़ालिक़ की तरफ़

रुजूअ़ नहीं होते थे, इन्होंने दुनिया वाले ऐश व आराम ही को सब कुछ समझा, लिहाज़ा आज अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुए।

قال صاحب الروح المعنی انهم عذبوالانهم کانوا فی الدنیا مستکبرین عن قبول ماجاء هم به رسلهم من الایمان بالله عزوجل وما جاء منه سبحانه و قیل :هوالذی اقرفته النعمة ای ابطرته واطغته([illegible])

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ (और यह लोग बड़े गुनाह पर इस्रार किया करते थे) यानी शिर्क और कुफ़्र पर इस्रार करते थे और यूँ कहते थे कि हम ईमान क़ुबूल नहीं करेंगे और यह हमेशा कुफ़्र पर जमे रहे।

इन लोगों को तौहीद कुबूल करने से भी सख़्त इन्कार था और क़ियामत क़ायम होने को भी सख़्ती से इन्कार करते थे। इसीलिए इस के बाद फ़रमायाः-

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۥ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ

(और वह कहते थे कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम (फिर) उठाए जाएँगे?)

इस बात को कहने से उन का मतलब क़ियामत का मज़ाक भी था और इन्कार भी) वह यूँ भी कहते थे कि اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ (क्या हमारे पहले के बाप दादे भी उठाए जाएँगे।)

उन के कहने का मतलब यह था कि क़ियामत की ख़बर देने वाले अगर यूँ कहते कि तुम मरोगे और मरते ही ज़िन्दा कर दिये जाओगे तो कोई बात भी थी। मुम्किन था कि हम उसे मान लेते, लेकिन यह तो यूँ कहते हैं कि तुम भी उठाए जाओगे और तुम्हारे बाप-दादे भी, यह तो हमारी समझ में नहीं आया।

قال فی الروح والمعنی ایبعث ایضاآباء نا علی زیاده الاثبات یعنون انهم اقدم فبعثهم ابعد وابطل

क़ियामत का इन्कार करने वालों का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۙ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۥ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝

(आप फ़रमा दीजिए कि बेशक पहलों और बाद वालों को तय शुदा मालूम दिन की तरफ़ जमा किये जाएँगे।)

यानी क़ियामत ज़रूर आएगी। अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में जो वक़्त मुक़र्रर है उसी वक़्त में आएगी, सब शुरु से आख़ीर तक उस वक़्त जमा होंगे। उस दिन बन्दों की पेशी होगी, ईमान वालों को जन्नत दी जाएगी और अह्ले कुफ़्र व शिर्क दोज़ख़ में जाएँगे, जहाँ तरह़-तरह़ के अ़ज़ाब हैं उन अ़ज़ाबों में से एक ज़क़्क़ूम भी है।

इर्शाद फ़रमायाः-

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ

(फिर ऐ गुमराहों झुठलाने वालों! तुम ज़क़्क़ूम के दरख़्त से ज़रूर खाओगे।)

जो सख़्त कड़वा बद्‌मज़ा और देखने में बहुत बद्‌सूरत होगा فَمٰلِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ (बावजूद यह कि वह बहुत ज़्यादा बद्‌मज़ा होगा, फिर भी भूक की शिद्दत की वजह से उस में से खाओगे और ख़ूब पेट भर कर खाओगे।)

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۝ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۝

(फिर उस ज़क़्क़ूम के दरख़्त पर ख़ूब गर्म खौलता हुआ पानी पियोगे और यह पानी उस तरह ख़ूब ज़्यादा पियोगे जैसे प्यासे ऊँट दुनिया में पानी पीते हैं।) هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ (यह बदला दिये जाने वाले दिन में उन की मेहमानी होगी।)

57-74

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ
الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ
وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝
ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝
اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا
تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

आदम की पैदाइश

इर्शाद फ़रमाया نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ हम ने तुम को पैदा किया (जबकि तुम कुछ भी न थे) सूरः दहर (**आयत नं० 1**) में है لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا सो तुम क्यों तस्दीक नहीं करते? मौत के बाद उठाए जाने और क़ियामत क़ायम होने पर क्यों ईमान नहीं लाते?)

जिस ज़ात ने तुम्हें वजूद बख़्शा उस की क़ुद्‌रत के क्यों इन्कारी हो रहे हो और यह बात क्यों कह रहे हो कि दोबारा पैदा नहीं हो सकते?

जैसे इस को पहली बार पैदा करने पर क़ुद्‌रत थी, ऐसे ही उसे अब दोबारा पैदा करने पर क़ुद्‌रत है और यह बात समझने की है कि जब उस ने तुम्हें पैदा फ़रमाया, ज़िन्दगी बख़्शी, अपने रसूल भेजे, तुम्हें अ़मल करने का अख़्तियार दिया तो उन आ़माल की जज़ा व सज़ा दिये जाने के लिए एक वक़्त मुक़र्रर होना चाहिए।

इसी बदला मिलने वाले दिन को क़ियामत का दिन कहा जाता है, तुम्हें इस बात की ख़बर दी जा रही है और उस पर ईमान लाने को कहा जा रहा है, तो तुम उस के मानने के इन्कारी हो रहे हो, हालांकि आ़माल के बदले के बारे में यह समझ में आने वाली बात है।

इन्सान की पहली पैदाइश मिट्टी से हुई थी, उस के बाद पैदाइश का सिल्‌सिला वीर्य के ज़रिये होता

रहा है, मर्दों की मनी (वीर्य) औ़रतों के गर्भाशय में पहुँचती है उस से ह़मल (गर्भ) क़रार पाता है। उसी को फ़रमायाः-

اَفَرَءَيۡتُمۡ مَّا تُمۡنُوۡنَ ۞ ءَاَنۡتُمۡ تَخۡلُقُوۡنَهٗۤ اَمۡ نَحۡنُ الۡخٰلِقُوۡنَ

(तुम यह बताओ कि जिस वीर्य को तुम रह़मों (गर्भों) में पहुँचाते हो उस मनी से तुम आदमी बनाते हो या हम बनाते हैं।

(यानी ماء مهين (घटिया पानी) सो जो जीती जागती तस्वीर वजूद में आ जाती है उसे कौन पैदा करता है, कभी तो ह़मल (गर्भ) टिकता नहीं और कभी रुक कर अधूरा बच्चा गिर जाता है, कभी पेट ही में मर जाता है, कभी लूला, लंगड़ा, अन्धा, बहरा, गूंगा पैदा होता है और आ़म तौर से अच्छी ह़ालत में बच्चे पैदा होते हैं। यह सब किस के करने से हैं क्या इन में तुम्हारा कोई दख़ल है? अर्थात किसी का कोई दख़ल नहीं है सिर्फ़ अल्लाह ही की क़ुद्रत व अख़्तियार से सब कुछ वजूद में आता है।

जब सब कुछ करने वाले अल्लाह हैं, तुम सब उस की मख़्लूक़ हो, उसकी भेजी हुई हिदायत को क्यों क़ुबूल नहीं करते? उस के रसूलों और किताबों को क्यों नहीं मानते?

इस के बाद मौत का ज़िक्र फ़रमाया, इर्शाद फ़रमायाः-

نَحۡنُ قَدَّرۡنَا بَيۡنَكُمُ الۡمَوۡتَ

(कि हम ने तुम्हारे दर्मियान मौत को मुक़द्दर कर दिया है।)

वह अपने मुक़र्ररह वक़्त पर आएगी। यह मौत का मुक़द्दर करना और उस के वक़्त का मुक़र्रर फ़रमाना और हर एक को उसके मुक़र्ररह वक़्त पर मौत दे देना यह सब अल्लाह तआ़ला ही के अख़्तियार में है, कोई भी शख़्स मौत से नहीं बच सकता और वक़्त मुक़र्रर से आगे उस की ज़िन्दगी नहीं बढ़ सकती।

وَمَا نَحۡنُ بِمَسۡبُوۡقِيۡنَ

और हम इस बात से बेबस नहीं हैं कि तुम्हें हलाक कर दें और तुम्हारी जैसी दूसरी मख़्लूक़ तुम्हारे बदले में पैदा कर दें और हम इस से भी बेबस नहीं कि हम तुम्हें उन सूरतों में पैदा कर दें जिन्हें तुम नहीं जानते यानी हम तुम्हें मौजूदा सूरतों के अ़लावा दूसरी सूरतों में पैदा करने पर क़ुद्रत रखते हैं।

وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ النَّشۡاَةَ الۡاُوۡلٰى

(और तुम्हें अपनी पहली पैदाईश का इ़ल्म है) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें पैदा फ़रमाया जब कि तुम कुछ भी न थे فَلَوۡلَا تَذَكَّرُوۡنَ (सो तुम क्यों नसीह़त ह़ासिल नहीं करते?)

जिस ने पहली बार पैदा फ़रमाया वह दोबारा भी पैदा फ़रमा सकता है। पहली पैदाइश के बाद उस की क़ुद्रत ख़त्म नहीं हो गई जैसी थी वैसी ही है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने (आयत नं० 15) में फ़रमायाः-

اَفَعَيِيۡنَا بِالۡخَلۡقِ الۡاَوَّلِ ؕ بَلۡ هُمۡ فِىۡ لَبۡسٍ مِّنۡ خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ

(क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गये, बल्कि यह लोग नये सिरे से पैदा करने के बारे में शुब्हा में हैं।)

खेती उगाने की नेअ़मत-

أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ इन पाँच आयात में खेती का ज़िक्र फ़रमाया, जो आ़म इन्सानों की ज़िन्दगी का ज़रिया है। इर्शाद फ़रमायाः-

कि तुम जो खेती करते हो यानी हल या ट्रैक्टर चला कर ज़मीन को नर्म करते हो, फिर उस में बीज डालते हो, उस के बारे में यह बताओ कि बीज डालने के बाद खेती को कौन उगाता है? तुम उगाते हो या हम उगाते हैं? यानी तुम तो बीज डालकर अलग हो जाते हो, अब खेती का उगाना हमारा काम है, उगाएँ या न उगाएँ हमें अख़्तियार है?

फिर अगर खेती निकल भी आई तो उस में दाने निकलने तक उस का बढ़ना ज़रूरी नही, पहले भी तबाह हो सकती है और अगर खेती पूरी हो गई, बालीं निकल आईं तो ज़रूरी नहीं कि तुम उस से नफ़ा ह़ासिल कर सको, हम चाहें तो इस सब को चूरा कर दें। फिर तुम तअ़ज्जुब करते हुए रह जाओ (हाय यह क्या हुआ, इस मर्तबः तो) हम को महंगा ही पड़ गया, बल्कि हम बिल्कुल ही मह़रूम कर दिये गये यानी बीज भी ख़र्च हुआ मेह़नत भी बेकार गई और ग़ल्ला भी कुछ न मिला।

बारिश बरसाने की नेअ़मत-

أَفَرَءَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ इन तीन आयात में पानी की नेअ़मत का ज़िक्र है और इर्शाद फ़रमाया कि बताओ यह पानी जो तुम पीते हो तुम ने इसे बादल से उतारा है या हम उतारने वाले हैं। (ज़ाहिर है कि पानी को बादल से उतारने में तुम्हारा कोई हाथ नहीं। जब बारिश नहीं होती तो आसमान की तरफ़ देखा करते हो और नाउम्मीद हो जाते हो, तो अल्लाह तआ़ला बारिश बरसा देता है।

जैसा कि सूरः शूरा (आयत नं० 28) में हैः-

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ

(और अल्लाह वही है जो लोगों के नाउम्मीद होने के बाद बारिश भेजता है और अपनी रह़मत को फैला देता है।)

फ़रमाया कि यह पानी जो हम ने बादल से उतारा है अगर हम चाहें तो उसे कड़वा बना दें अगर हम ऐसा कर दें तो तुम कुछ नहीं कर सकते, मीठा पानी पीते हो तुम्हारे जानवर पीते हैं, उस से नहाते धोते हो। तुम पर उस के पीने पिलाने और दूसरे इस्तेमाल में लाने का शुक्र अदा करना लाज़िम है।

आग भी नेअ़मत है-

इस के बाद आग का ज़िक्र फ़रमाया, इन्सानों के खाना पकाने और बहुत से कामों में आग इस्तेमाल होती है, जो अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ़मत है। इर्शाद हैः-

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ

(सो फिर आग के बारे में बताओ जिस को तुम जलाते हो।)

ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ

(उस के दरख़्त को तुम ने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं।)

نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ

(हम ने उस को याद दहानी की चीज़ और मुसाफ़िरों के फ़ायदे की चीज़ बनाया है।)

इन आयात में यह बता दिया कि यह आग जिसे तुम जलाते हो यह भी तो हमारी ही पैदा की हुई है। बताओ उस का दरख़्त किस ने पैदा किया है तुम ने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं?

अहले अ़रब बाज़ दरख़्तों (पेड़ों) से आग ह़ासिल किया करते थे, इसलिए उस का ज़िक्र फ़रमायाः-

(सूरः यासीन के ख़त्म पर اَلَّذِیْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ में इस का ज़िक्र हो चुका है। दरख़्तों के अ़लावा पत्थरों से भी आग पैदा होती थी (जिन्हें पुराने ज़माने में चक़माक़ कहते थे।)

बहरह़ाल जिस ज़रिये से भी पैदा हो, आग इन्सानों के लिए नेअ़मत है, आग के दरख़्त के ज़िक्र में अल्लाह तआ़ला के क़ुद्‌रत की तरफ़ भी इशारा है कि पेड़ हरा भरा होता है, उस के अन्दर पानी होता है, आग और पानी दोनों एक दूसरे के उल्टा हैं फिर भी अल्लाह तआ़ला उस में से आग निकाल देता है।

आग बड़ी नेअ़मत है उस से नफ़ा ह़ासिल होता है। अगर आग न होती तो कच्चा आटा लिए बैठा रहता इन्सान, कच्चा सालन ही खाते, बताओ यह मिठाईयाँ केक, बिस्किट और तरह़-तरह़ की चीज़ें कैसे बनाते, उस नेअ़मत को याद करो और नसीह़त ह़ासिल करो और उस आग से आख़िरत की आग की तरफ़ भी ज़ेहन ले जाओ वह तो इस से बहुत ज़्यादा गर्म है। कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों से बचो।

قال فی معالم التنزيل تذكرة للنارالكبرى اذاراها الراى ذكر جهنم قاله عكرمة ومجاهد،
وقال عطاء موعظة يتعظ بها المومن.

मुसाफ़िर के लिए नेअ़मत-

आख़िर में फ़रमाया وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ यानी आग को हम ने मुसाफ़िरों के लिए नफ़ा का ज़रिया बना दिया। मुसाफ़िर जब कहीं जंगलों में ठहरते हैं तो आग जला लेते हैं, रोटी सालन भी पकाते हैं और सर्दी में तापते भी हैं, उसे देखकर दरिन्दे भी भागते हैं और जो रास्ता भूल गए हों वह भी जलती हुई आग देखकर उन के क़रीब आ जाते हैं।

बहुत सी नेअ़मतों के ज़िक्र के बाद फ़रमाया فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ (सो ऐ मुख़ातब! अपने अ़ज़ीमुशान परवरदिग़ार की तस्बीह़ बयान कर) जिस अल्लाह की ओर से यह नेअ़मतें मिली हैं वह हर ऐब से पाक है, वह अ़ज़ीम है, उसकी पाकी बयान करना लाज़िम है।

आयत नं० 75 से 96 तक

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِیْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا
الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۝ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ۝
فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ۝ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ۝ فَلَوْلَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ
مَدِيْنِيْنَ ۝ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ۝ وَاَمَّاۤ اِنْ
كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ
حَمِيْمٍ ۝ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ۝ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

अनुवाद-

(75) तो नहीं, 'मै' क़सम खाता हूँ सितारों के डूबने की जगहों की, (76) और यह बहुत बड़ी क़सम है, अगर तुम जानो; (77) कि यह इज़्ज़त वाला क़ुर्आन है, (78) एक सुरक्षित किताब में दर्ज (अंकित) है, (79) इसको नहीं छूते मगर पाक-साफ़ लोग, (80) यह सारे संसार के 'रब' की ओर से उतारा गया है; (81) तो क्या तुम इससे सुस्ती करते हो? (82) और अपना हिस्सा यही रखते हो कि (इसे) झुठलाते हो। (83) भला जब जान हलक़ तक पहुँचती है? (84) और तुम उस समय देख रहे होते हो, (85) और 'हम' तुमसे ज़्यादा उससे क़रीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते हो; (86) तो अगर तुम किसी के अधीन नहीं हो (तो क्यों नहीं); (87) उस जान को लौटा लेते, अगर तुम सच्चे हो। (88) तो अगर वह (अल्लाह के) क़रीबियों में से हैं; (89) तो उसके लिए राहत, ख़ुशबू और नेअ़मत के बाग़ हैं। (90) और अगर वह दाहिने (हाथ) वालों में से है; (91) तो "सलामती है तेरे लिए कि तू दाहिने (हाथ) वालों में से है।" (92) और अगर वह झुठलाने वाले, गुमराह लोगों में से हुए; (93) तो मेहमानी गर्म पानी से होगी, (94) और उसका दाख़िला जहन्नम में होगा, (95) यह हक़ बात यक़ीन के लायक़ है। (96) आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए।

आयत नं० 75 से 96 तक की व्याख्या

75-82

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝
فِیْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَفَبِهٰذَا
الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۝ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ۝

क़ुर्आन रब्बुल् आ़लमीन की तरफ़ से है

अल्लाह तआ़ला ने इन आयात में क़ुर्आन करीम की अ़ज़्मत बयान फ़रमाई है। "मवाक़े अल् नुजूम" की क़सम खाकर फ़रमाया कि बिलाशुब्हा क़ुर्आन करीम है यानी इ़ज़्ज़त वाला है, उ़म्दह चीज़ है, बन्दों को

नफ़ा देने वाला है (और) मह़फ़ूज़ किताब में है।

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि इस से 'लौहे़ मह़फ़ूज़' मुराद है। जैसा कि सूरः बुरूज के ख़त्म पर फ़रमाया।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝

(बल्कि वह कुर्आन मजीद है, लौहे़ मह़फ़ूज़ हैं) वह लौहे मह़फ़ूज़ में मह़फ़ूज़ है, उस में बदलाव और तब्दीली नहीं होती।

بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ से क्या मुराद है। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि इस से आसमान के सितारों के डूबने की जगहें मुराद हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमााया कि नुजूम से 'नुजूमुलु् कुर्आन' मुराद हैं। नुजूम 'नज्म' का बहुवचन है, जो सितारा के अर्थ में भी आता है और किस्त पर जो चीज़ दी जाए उस की थोड़ी-थोड़ी अदाएगी को भी 'नज्म' कहते हैं।

मतलब यह हुआ कि थोड़ा-थोड़ा कुर्आन मजीद जो नाज़िल हो रहा है, जिसे फ़रिश्ते 'लौहे़ मह़फ़ूज़' से लेकर आते हैं, उन 'नुजूम' और किस्तों की क़सम खाकर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि यह कुर्आन जो किस्तों में नाज़िल हो रहा है किताब मह़फ़ूज़ में मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) है। उस किताब मह़फ़ूज़ तक इन्सान और जिन्नात पहुँच नहीं सकते, इसलिए उन्हें हस्तक्षेप का अख़्तियार नहीं है।

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ मतलब यह है कि 'मवाक़ेअ़ अल् नुजूम' की क़सम अ़ज़ीम क़सम है। अगर इल्म वाले होते तो उस की अ़ज़्मत को जान लेते। फिर जवाब में फ़रमाया कि إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ 'मवाक़ेअ़ नुजूम' की क़सम खाकर फ़रमाया कि यह किताब जो तुम पढ़ते हो, कुर्आन करीम है।

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ

जो किताब मह़फ़ूज़ में लिखा हुआ है इस से लौहे़ मह़फ़ूज़ मुराद है। जैसा कि सूरः अल् बुरुज में फ़रमायाः-

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝ इस 'लौह़' तक शयातीन नहीं पहुँच सकते और बदलाव और तब्दीली से मह़फ़ूज़ है।

لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ

(इसे सिर्फ़ पाकीज़ा बन्दे छूते हैं) उन पाकीज़ा बन्दों से फ़रिश्ते मुराद हैं। ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से ऐसा ही नक़्ल किया गया है।

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ (कुर्आन करीम रब्बुलु् आ़लमीन की तरफ़ से नाज़िल किया गया है) बन्दों का फ़रीज़ा (कर्तव्य) है कि कुर्आन पर ईमान लाएँ उस का ह़क़ अदा करें, उस को याद करें, पढ़ें और पढ़ाएँ लेकिन बहुत से लोग अर्थात कुर्आन की तरफ़ से बेरुख़ी और बेपरवाही करते हैं और उसे यूँ ही सरसरी बात समझते हैं जबकि होना तो यह चाहिए था कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाते कि उस ने अपना कलाम नाज़िल फ़रमाया।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ शब्द مُّدْهِنُونَ का तर्जुमः साहिबे रुहुलु् मआनी ने مُتَهَاوِنُون किया है, जिस

का यह मतलब है कि तुम क़ुर्आन को मामूली चीज़ समझते हो। फिर लिखा है कि यह शब्द **'अद्हान'** से बना है। चमड़े को तेल वग़ैरह लगाकर जो नर्म करते हैं उस को **'अद्हान'** कहते हैं। यहाँ बतौरे इस्तिआ़रह (संज्ञा) यह शब्द लाया गया है और यह बताया है कि क़ुर्आन करीम की तरफ़ जो तवज्जोह होनी चाहिए तुम्हारे अन्दर नहीं है और "यूँ ही सरसरी बात समझते हो"।

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ

इस का एक अनुवाद और मतलब तो वही है जो ऊपर बयान किया गया कि तुम्हें नुज़ूले क़ुर्आन की नेअ़मत पर शुक्र करना चाहिए था। शुक्र के बजाए तुम ने झुठलाने ही को अख़्तियार कर लिया। अब तुम्हारा नसीब यही रह गया है कि तुम झुठलाया करो। इस सूरः में رِزْقَكُمْ का अर्थ **شکرتم** या बमअ़ना **حظکم** लिया जाएगा।

قال صاحب الروح وقيل معنى الآية وتجعلون شكركم لنعمة القرآن انكم تكذبون به ويشير الى ذلک ما رواه قتاده عن الحسن بئس ما اخذالقوم لانفسهم لم يرزقوا من كتاب الله تعالىٰ الا التكذيب

यह उस सूरत में है जबकि فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ से लेकर وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ तक तमाम आयात का तअ़ल्लुक़ नुज़ूले क़ुर्आन मजीद ही से हो।

'सहीह़ मुस्लिम' पेज नं० 59 भाग 1 में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि (एक मर्तबः) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में बारिश हुई तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आज सुबह़ कुछ लोग शुक्र करने वाले हुए और कुछ लोग इन्कारी हुए जिन लोगों ने यूँ कहा कि यह बारिश अल्लाह की रह़मत से हुई है वह लोग शाकिर हुए और जिन लोगों ने यूँ कहा कि फ़लाँ-फ़लाँ सितारा के टूटने यानी नीचे आने की वजह से बारिश हुई वह लोग काफ़िर हुए। इस पर فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ से وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ तक आयात नाज़िल हुई।

इस ह़दीस से मालूम होता है कि وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला जो बारिश नाज़िल फ़रमाता है वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ का सबब बनती है, उस का शुक्र अदा करने के बजाए तुम अल्लाह की नेअ़मत को झुठलाते हो यानी बारिश की नेअ़मत को सितारों की तरफ़ जोड़ते हो, अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत नहीं मानते।

अ़ल्लामा नव्वी (रह़०) ने शरह़ मुस्लिम में 'शेख़ अबू उ़मर इब्ने अल् सलाह़' से नक़्ल किया है कि 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) का यह मतलब नहीं है कि पाँचों आयात सितारों ही के बारे में नाज़िल हुईं, (जिन के डूबने को अहले अ़रब बारिश का ज़रिया समझते थे) क्योंकि पूरी आयात की तफ़्सीर इस की पुष्टि नहीं करती।

बात यह है कि बारिश के बारे में आयाते करीमा وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ नाज़िल हुई और बाक़ी आयात में दूसरे विषय बयान किये गये हैं, चूंकि सब आयात एक वक़्त में नाज़िल हुई थीं इसलिए ह़ज़रत

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने उन सब की तिलावत की।

'साहिबे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि आयत की यह तफ़्सीर कि तुम क़ुर्आन की नेअ़मत का शुक्र अदा करने के बजाए झूठ को अख़्तियार करते हो।

क़ुर्आन करीम में जो नेअ़मतें बयान की गई हैं उन को सामने रखकर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना लाज़िम था, लेकिन तुम शुक्र के बजाए झुठलाने और इन्कार करने में लगे हुए हो, उसी नाशुक्री में यह बात भी है कि बारिश होती है तो तुम उसे सितारों की तरफ़ जोड़ देते हो, ह़ालांकि क़ुर्आन करीम में बताया गया है कि तुम्हारा अ़क़ीदा सही़ अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है, बारिश बरसाने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है और कोई नहीं।

क़ुर्आन मजीद को पढ़ने और छूने का तरीक़ा-

لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ जो फ़रमाया (जिस का तर्जुमः यह है कि उसे सिर्फ़ पाकीज़ह बन्दे ही छूते हैं) चूंकि यह صيغہ ख़बर है, इसलिए मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने इस से फ़रिश्ते मुराद लिए हैं और मतलब यह है कि फ़रिश्ते गुनाहों से पाक हैं वही लौहे महफ़ूज़ तक पहुँच सकते हैं और उस के विषयों को जान सकते हैं और बाज़ ह़ज़रात ने لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ को ख़बर मानकर अलू अम्र लिया है और इस से यह साबित किया है कि यह क़ुर्आन मजीद जो तुम्हारे पास लिखा हुआ मौजूद है उस को सिर्फ़ वही लोग छुएँ जो ह़दसे अस़्ग़र (बिना वुज़ू) और ह़दसे अक्बर (नापाक़ी) दोनों से पाक हों। आयते करीमा में जो कलिमात हैं वह नहीं के अर्थ में हों, क्योंकि हदीस से भी बिना तहारत (पाक़ी) क़ुर्आन मजीद छूने की मनाही साबित है।

मुवत्ता इमाम मालिक में है:-

عن عبدالله ابی بکر بن حزم ان فی الکتاب الذی کتبه رسول الله ﷺ لعمروبن حزم ان لایمس القرآن الا طاهراً

"ह़ज़रत उ़मर व बिन ह़ज़्म (रज़ि०) को जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यमन का गवर्नर बना कर भेजा तो उन्हें बहुत सी बातों की नसीह़त फ़रमाई और जो बातें लिखकर दीं उन में यह भी थी कि कोई शख़्स क़ुर्आन को न छुए मगर इस ह़ालत में कि पाक हो।

(وبسط الکلام علی الحدیث الزیلعی فی نصب الرایة وقال روی من حدیث عمرو بن حزم ومن حدیث عمرو من حدیث حکیم بن حزام ومن حدیث عثمان بن ابی العاص ومن حدیث ثوبان)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया لا یمس القرآن الاطاهر पाक होने में ह़दसे अस़्ग़र और ह़दसे अक्बर दोनों से पाक होना मुराद है। क़ुर्आन मजीद को नापाकी की ह़ालत में ऐसे जुज़दान और ग़िलाफ़ से छू सकते हैं जो उस से अ़लैहि़दा होता रहता है, जिल्द के साथ जिसे अलग करना मुम्किन न हो छूना जायज़ नहीं है।

ह़ालते हैज़ (माहवारी) और निफ़ास (बच्चे की पैदाइश के बाद आने वाला खून) में क़ुर्आन मजीद को

छूना जायज़ नहीं है, अल्बत्ता बेवुज़ू क़ुर्आन अगर याद हो तो पढ़ सकते हैं। अगर देखकर पढ़ना चाहे और वुज़ू न हो तो किसी कपड़ा या किसी चीज़ से पन्ना पलट कर पढ़ सकते हैं और हालते हैज़ व निफ़ास और हदसे अक्बर में क़ुर्आन मजीद को पढ़ना भी जायज़ नहीं है।

हज़रत अली (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जनाबत (नापाकी) के अलावा कोई चीज़ क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने से रोकने वाली न थी (हैज़ व निफ़ास भी जनाब (नापाकी) के हुक्म में हैं क्योंकि उस से भी ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है।)

83-95

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ۝ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن
لَّا تُبْصِرُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ فَأَمَّآ إِن
كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ۥ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ
الْيَمِينِ ۝ فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّآلِّينَ ۝
فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝

मौत के वक़्त रुह़ को रोकना

इन आयात में पहले तो इन्सानों की बेबसी ज़ाहिर फ़रमाई गई है जो मौत के वक़्त ज़ाहिर होती है, दूसरे इन्सानों की तीनों जमाअतों का अ़ज़ाब व सवाब बयान फ़रमाया जिन का पहले रुकूअ़ में ज़िक्र था।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को पैदा फ़रमाया और उन्हें बहुत से आमाल करने का हुक्म दिया और बहुत से को मना फ़रमाया, ताकि बन्दों की फ़रमाँबरदारी और नाफ़रमानी का इम्तिहान लिया जाए।

सूरः मुल्क (आयत नं० 2) में फ़रमायाः-

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَوٰةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ

(मौत और जिन्दगी को पैदा फ़रमाया, ताकि वह आज़्माए कि तुम में अच्छे अ़मल वाला कौन है।)

इस तरह ज़िन्दगी के बाद मौत भी ज़रूरी है और इन दोनों में से बन्दों को किसी के बारे में कुछ भी अख़्तियार नहीं। अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दगी दी, वही मौत देगा, उस ने दोनों का वक़्त मुक़र्रर और मुक़द्दर फ़रमा दिया है, किसी को अख़्तियार नहीं कि जो ख़ुद से पैदा हो जाए या वक़्त मुक़र्ररह से पहले मर जाए।

अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले के ख़िलाफ़ और उस की मर्जी के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता।

इर्शाद फ़रमायाः-

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ۝

कि जब मरने वाले की रुह़ हलक़ को पहुँच जाती है तो तुम वहाँ मौजूद होते हो और उसे ह़सरत की आँखों से टकटकी लगाए देखा करते हो, उस पर तरस खाते हो और तुम्हारी आरज़ू होती है कि उसे मौत न आए और हम तुम्हारे मरने वाले के ज़्यादा क़रीब होते हैं (क्योंकि तुम उस की सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत

को देखते हो और हम उस की अन्दुरुनी (Internal) ह़ालत को भी जानते हैं) लेकिन तुम नहीं समझते और अपने ख़याल में सच्चे हो कि तुम्हें आ़माल का बदला दिया जाने वाला नहीं हैं तो मरने वाले की मौत को रोक कर दिखा दो।

अल्लाह तआ़ला ने हर एक की मौत का वक़्त मुक़र्रर (Fix) फ़रमाया है, वह अपने फ़रिश्ते भेजता है जो रुह़ निकालते हैं। ह़ाज़िरीन बेबस हैं कुछ नहीं कर सकते, जिस तरह़ यहाँ बेबस हैं उसी तरह़ उस वक़्त भी बेबस होंगे जब अल्लाह तआ़ला आ़माल का बदला देने के लिए जिस्मों में रुहें डालेगा, यह बेबस बन्दे न दुनिया में किसी मरने वाले की रुह़ को वापस कर सकते हैं, न क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दगी को रोक सकते हैं।

यह दोबारा ज़िन्दा होना और पहली ज़िन्दगी के आ़माल का बदला दिया जाना अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है, तुम क़ियामत और दोबारा ज़िन्दा होने और आ़माल का बदला दिये जाने के इन्कारी हो और इस इन्कार की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं है। अगर तुम्हें मौत से बचने की क़ुद्रत होती तो यह कहने का भी मौक़ा था कि हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे और बदले के लिए पेशी न होगी। जब इसी दुनिया में अपनी बेबसी देख रहे हो तो दोबारा ज़िन्दा होने का और क़ियामत की पेशी का इन्कार किस बुनियाद पर कर रहे हो, जबकि अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि तुम सब को मरना है और आ़माल की जज़ा मिलनी है।

मुक़र्रबीन और सालिह़ीन का इनआ़म-

इस के बाद फ़रमायाः-

فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ۙ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝

“कि क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होने वाले बन्दों में जो मुक़र्रबीन होंगे वह बड़े आराम में होंगे उन को रिज़्क़ मिलता रहेगा और नेअ़मतों वाली जन्नत में दाख़िला होगा”।

وَأَمَّا إِن كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

और जो बन्दे ‘अस्ह़ाबे यमीन’ होंगे उन से कहा जाएगा कि ‘ऐ अस्ह़ाबे यमीन’! तुम्हारे लिए सलामती हो।

झुठलाने वालों का अ़ज़ाब-

यहाँ काफ़िरों व मुश्रिकों का अ़ज़ाब बयान फ़रमायाः-

وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝

और जो शख़्स झुठलाने वाले गुमराहों में से होगा (यह ‘अस्ह़बुश्शिमाल’ में से होगा उस के लिए सख़्त खौलता हुआ गर्म पानी होगा, जिस का दूसरे रुकूअ़ में ज़िक्र हुआ) और दहकती हुई आग में दाख़िल होगा।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ “बेशक यह तह़क़ीक़ी बात है”।

96

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

यह आयत 'सूरतुल् वाक़िअः' की आख़िरी आयत है। इस से पहला रुकूअ़ भी इन्हीं शब्दों पर ख़त्म हुआ है। अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें दुनियावी और आख़िरत की बयान करने और काफ़िरों को तम्बीह फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया कि आप अपने रब की तस्बीह़ बयान कीजिए जो अ़ज़ीम है, हर ऐ़ब और हर कमी से पाक है, उस की तरफ़ से जो बताया गया है सब सही है। यूँ तो हमेशा ही अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ बयान की जाए और उस की ह़म्द व सना में लगे रहें, लेकिन जिन मौक़ो में ख़ास तौर से 'तस्बीह़' और 'तम्ह़ीद' का खुसूसी एहतिमाम करने को फ़रमाया गया है उन मौक़ों में ख़ासतौर से इस का ख़याल रखना चाहिए।

'ह़ज़रत उ़क्बा बिन आमिर' (रज़ि०) से रिवायत है कि जब فسبح باسم ربك العظيم नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया اجعلوها فی رکوعکم कि इसे अपने रुकूअ़ में मुक़र्रर कर लो (यानी रुकूअ़ में سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ कहा करो)

फिर जब سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی नाज़िल हुई तो फ़रमाया कि इसे अपने सज्दे में पढ़ने के लिए मुक़र्रर कर लो (यानी सज्दः में سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहा करो।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 82)**

नोट- 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स हर रात को सूरः वाक़िअः पढ़ ले उसे कभी भी फ़ाक़ा न होगा यानी तंगदस्ती न होगी, ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) अपनी लड़कियों को हुक्म देते थे कि रोज़ाना हर रात को इस सूरः को पढ़ा करें।
(बहैकी शुअ़बुल् ईमान पेज नं० 492 भाग 2)

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) के मर्ज़ वफ़ात में ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी (रज़ि०) अ़यादत (बीमारी में देखने) के लिए तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने पूछा فَمَا تَشْتَهِیْ (यानी आप क्या चाहते हैं) फ़रमाया رَحْمَةَ رَبِّیْ

(यानी अपने रब की रह़मत चाहता हूँ।)

फिर ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने फ़रमाया मैं आप के लिए किसी डाक्टर (मुआ़लिज) को बुला दूँ? फ़रमाया اَلطَّبِیْبُ اَمْرَضَنِیْ मुझे तबीब (Doctor) ही ने बीमार किया है यानी तबीब ह़क़ीक़ी अल्लाह तआ़ला ही है उसी ने मुझे बीमारी दी है उस के सिवा किस तबीब (Doctor) को बुलाओगे।

फिर ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मैं आप के लिए कोई तोह़फ़ा भेज दूँ, फ़रमाया मुझे कोई ज़रुरत नहीं। ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने फ़रमाया क़ुबूल कर लीजिए फिर अपने घरवालों के लिए छोड़ दीजिएगा।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया, मैंने उन्हें एक चीज़ सिखा दी है उसे पढ़ते रहेंगे तो कभी मोह़ताज न होंगे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मैंने सुना है कि من قرء الواقعة كل ليلة لم يفتقر (जो शख़्स रात में सूरः वाक़िअ़ः पढ़ लेगा, वह कभी मोह़ताज न होगा।)
(अल् बैहक़ी फ़ी शुअ़बुल् ईमान पेज नं० 491 भाग 2)

علمو انسائکم سورة الواقعة فانها سورة الغنی

(कि अपनी औ़रतों को सूरः वाक़िअ़ः सिखाओ, क्योंकि वह ग़नी (यानी मालदारी) लाने वाली सूरः है।)
(कन्ज़ुल् आ़माल पेज नं० 592 भाग 1)

सूरः नं० 57

सूर-ए-ह़दीद

सूरः ह़दीद का संक्षिप्त परिचय

नाम– आयत नं० (25) में وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ आया है। इसी से इस सूरः का नाम सूरः ह़दीद है।

नाज़िल होने का ज़माना–

'कुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः तमाम लोगों के नज़्दीक मदनी है।

'इमाम अह़मद', 'तिर्मिज़ी' और 'बैहक़ी' ने शुअ़बुल् ईमान में 'अ़रबाज़ बिन सारिया' (रज़ि०) से रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) सोने से पहले मुसज्जात (अल् ह़दीद, अल् ह़श्र, अल् सफ़, अल् जुमअ़ और अल् तग़ाबुन) पढ़ा करते थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस में एक आयत है जो हज़ार आयतों से अफ़्ज़ल है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने लिखा है कि यह वह आयत هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ है।

आयत नं० 1 से 11 तक

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ
اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۚ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ
مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ
بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۚ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(1) अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं सारी चीज़ें जो आसमानों, और ज़मीन में हैं, और 'वही' ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है। (2) आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, 'वही' ज़िन्दा करता है और मारता है, और 'वह' हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (3) 'वही' अव्वल (पहला) भी है और आख़िर भी, ज़ाहिर भी और पोशीदा भी, और 'वह' हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। (4) 'वही' है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर जा ठहरा (विराजमान हुआ), 'वह' जानता है जो चीज़ भी ज़मीन में दाख़िल होती है और उससे निकलती है, और जो कुछ आसमान से उतरती है, और जो कुछ उसमें चढ़ती है; 'वह' तुम्हारे साथ है, जहां कहीं भी हो, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है। (5) आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है और सारे मामले 'उसी' की ओर लौटते हैं; (6) ('वही') रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में, दाख़िल करता है और 'वह' सीनों में छिपी बात तक को जानता है। (7) ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उसमें से खर्च करो जिसका 'उसने' तुम्हें नायब (अधिकारी) बनाया है; तो तुममें से जो लोग ईमान लाए और खर्च करते रहे, उनके लिए बड़ा बदला है। (8) और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, ह़ालांकि रसूल तुम्हें अपने 'रब' पर ईमान लाने की दअ़वत दे रहे हैं और 'वह' तुमसे अ़हद (प्रतिज्ञा) ले चुके है, अगर तुम मोमिन हो। (9) 'वही' है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतार रहा है, ताकि तुम्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला है। (10) और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च न करो, हालांकि आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही के लिए है? तुम में से जिन लोगों ने (मक्का की) फ़त्ह़ (विजय) से पहले ख़र्च किया और लड़े वे (आपस में एक-दूसरे के) बराबर नहीं हैं, वे तो दर्जे में उनसे बढ़ कर हैं, जिन्होंने बाद में खर्च किया और बाद में लड़े;

और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है, और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है। (11) कौन है, जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? अच्छा क़र्ज़, कि 'वह' उसके लिए उसको दो गुना कर दे; और उसके लिए इज़्ज़त वाला बदला है।

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1 سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

आसमानों और ज़मीन में जितने ह़ैवानात, नबातात (पेड़-पौधे) और जमादात (बेजान चीज़े) हैं सब अल्लाह की पाकी और बड़ाई बयान करते हैं और इस बात का इज़्हार करते हैं कि वह ज़ात बरह़क़ हर क़िस्म के साझी और औलाद आदि से पाक है, वह अकेला और हर क़िस्म की अ़िबादत का तन्हा ह़क़्दार है। रुबूबियत, उलूहियत, इ़ल्म, क़ुद्‌रत और मख़्लूक़ात की तद्‌बीर में उस का कोई शरीक नहीं है।

आसमानों और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात अपने-अपने रब की पाकी बयान करते हैं, कोई अपनी ज़बान से तस्बीह़ पढ़ता है। जैसे फ़रिश्ते, जिन्न व इन्स और किसी का आकार व ह़ालत से मालूम है कि उस का ख़ालिक़ तमाम ऐबों व नुक़्स से पाक है। जैसे आसमान व ज़मीन, दरख़्त, नबातात (पेड़-पौधे) और पहाड़ आदि भी तस्बीह़ पढ़ते हैं, लेकिन हम उसे समझ नहीं पाते हैं।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (44) में फ़रमाया हैः-

وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ

कि "हर चीज़ अपने ख़ालिक़ की तस्बीह़ बयान करती है, लेकिन तुम उन की तस्बीह़ को समझ नहीं पाते हो" और सूरतुल् अम्बिया आयत नं० (79) में फ़रमाया हैः-

وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُودَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ

कि "हम ने 'दाऊद' के लिए पहाड़ों को कब्ज़े में कर दिया था जो उन के साथ तस्बीह़ पढ़ा करते थे"।

पहाड़ तो अपनी ज़ाहिरी ज़बान से तस्बीह़ नही पढ़ते, लेकिन मक़्सद यह है कि उन की पैदाइश इस बात पर दलालत करती है कि उन का ख़ालिक़ तमाम ऐबों व नुक़्स से पाक है, इसलिए मालूम हुआ कि वह पहाड़ अपनी ज़बाने क़ाल से दाऊद (अ़लै०) के साथ तस्बीह़ पढ़ते थे, जिसे वह समझते थे।

आयत में अल्लाह की दो सिफ़ात الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ बयान हुई हैं, जिन का मतलब यह है कि वह बड़ा ताक़तवर है जो आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) है और उस ने तमाम मौजूदात को अपनी जानी बूझी ह़िक्मत के मुताबिक़ बनाया है, जिस से कोई भी चीज़ मुँह नहीं मोड़ सकती है।

2 لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

आसमानों और ज़मीन में जितनी चीज़ें पाई जाती हैं, उन सब का मालिक अल्लाह है, वह जिस तरह़ चाहता है करता है, उस के सिवा किसी की मर्ज़ी नहीं चलती है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वही जिसे चाहता है ज़िन्दगी देता है, जिसे चाहता है मौत देता है

और जिसे चाहता है अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो चाहता है अ़ता करता है, वह हर चीज़ पर मुकम्मल क़ुद्रत रखता है। यह असम्भव है कि वह किसी चीज़ को चाहे और वह वजूद में न आए वह किसी को मारना चाहे और उसे मौत न आए या किसी को ज़िन्दा रखना चाहे और कोई उसे मार दे।

3 هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

वह आसमानों और ज़मीन के हर मौजूद से पहले था, उसी ने हर चीज़ को ईजाद किया है और जब हर चीज़ फ़ना (Destroy) हो जाएगी तो सिर्फ़ उसी की ज़ात रह जाएगी। वह हर चीज़ के ऊपर है, कोई चीज़ उस के ऊपर नहीं है और उस का वजूद दलायल के ज़रिये बिल्कुल ज़ाहिर है और उस की ज़ात इन्सानों की आँखों और अ़क़्लों से छुपी हुई है, कोई उस की ज़ात के भेद को नहीं पा सकता है और वह हर चीज़ के भेद से वाक़िफ़ है।

'इमाम अह़मद' 'मुस्लिम' 'तिर्मिज़ी' 'इब्ने अबी शैबा' और 'बैहक़ी' ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक ख़ादिमा की ज़रूरत का ज़िक्र किया, तो आप (सल्ल०) ने उन्हें नसीह़त की कि वह यह दुआ़ पढ़ा करें:

"اللّهم رَب السماوات السبع ورب العرش العظيم وربّنا ورب كل شئی، منزل التوراة والِانجيل والفرقان، فالق الحب والنوی، أعوذبک من شرکا شئی أنت اٰخذ بنا صيته.أنت الأوّل فليس قبلک شئی، وأنت الاٰخر فليس بعدک شئی، وأنت الظاهر، فليس فوقک شئی، وأنت الباطن فليس دونک شئی اقض عنا الدين، وأغننا من الفقر"

इस मुबारक दुआ़ में नबी करीम (सल्ल०) ने इस आयत की बड़ी उ़म्दह तफ़्सीर फ़रमा दी है कि तू ही अव्वल है, कोई तुझ से पहले नहीं और तू ही आख़िर है कोई तेरे बाद नहीं और तू ही ज़ाहिर है कोई तुझ से ऊपर नहीं और तू ही बातिन है कोई तुझ से ज़्यादा पोशीदा नहीं।

4 هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

इस आयत की तफ़्सीर के लिए दोबारा सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (54) सूरः यूनुस आयत नं० (3) सूरः फ़ुरक़ान आयत नं० (56) व (59) और सूरः अल् सज्दः आयत नं० (4) की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

ऊपर की आयतों की तरह यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि उस ने आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ को छः दिनों में पैदा किया, फिर अ़र्श पर 'मुस्तवा' हो गया यानी अपनी तमाम मख़्लूक़ात के ऊपर (ऐसा 'इस्तवा' जो उस के जलाल के लायक़ है।)

वह अपनी उन तमाम मख़्लूक़ात की तअ़दाद को जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होती हैं। बारिश के क़त्रात (बूंदे) हैवानात, दाने, मुर्दों के जिस्म और दूसरी तमाम चीज़ें जो ज़मीन की तहों में हैं, अल्लाह तआ़ला को उन सब का इ़ल्म है।

वह उन तमाम दानों, फलों और फूलों की तअ़दाद और अ़मल (actvities) को भी जानता है जो ज़मीन से बाहर निकलती हैं और उसे उन तमाम चीज़ों की तअ़दाद की भी ख़बर है जो आसमानों से नाज़िल होती हैं। जैसे बारिश, बर्फ़, ओले, मख़्लूक़ की तक़्दीर व क़िस्मत, उन की रोज़ी और वह तमाम अह़कामे इलाही जिन्हें फ़रिश्ते लेकर उतरते हैं और जो उस के हुक्म से ज़मीन में लागू होते है।

इसी तरह़ उसे वह तमाम चीज़ें मालूम हैं जो ज़मीन से आसमान की तरफ़ चढ़ती हैं। जैसे फ़रिश्ते जो मुख़्तलिफ़ दुनियावी ज़िम्मेदारियों के लिए पाबन्द हैं, बन्दों के अच्छे और बुरे आ़माल, रुहें मज़्लूम की आह और बन्दों की दुआ़एँ।

अल्लाह का इ़ल्म आसमानों और ज़मीन में होने वाली तमाम चीज़ों को शामिल है, एक ज़र्रह बराबर भी कहीं उस से छुपा नहीं है। वह अपने इ़ल्म के ज़रिये हर जगह अपने बन्दों के साथ है, समन्दर के जिस कोने में भी हों, वह उन के आ़माल व ह़रकात और उन से मुतअ़ल्लिक़ हर चीज़ से वाक़िफ़ है, जब ही तो वह उन्हें रोज़ी पहुँचाता है, उन की देख-भाल करता है और जब उन की ज़िन्दग़ी के दिन पूरे हो जाते हैं तो उन्हें मौत के घाट उतार देता है।

5 لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

आयत नं० (2) की तफ़्सीर में गुज़र चुका है कि आसमानों और ज़मीन में जितनी चीज़ें पाई जाती हैं, उन सब का मालिक अल्लाह तआ़ला है। वह उन में जिस तरह़ चाहता है करता है और तमाम मख़्लूक़ात के मामलात का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ अल्लाह से है, वही उन की तद्बीर करता है, उसी के फ़ैसले उन पर लागू होते हैं, कोई नहीं जो उस के फ़ैसलों को बदल सके।

6 يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

वही रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है यानी एक को छोटा कर के उस के समय को दूसरे में दाख़िल करता है तो कभी दिन छोटा होता है और रात लम्बी हो जाती है और कभी रात छोटी हो जाती है तो दिन बड़ा हो जाता है। उस के सिवा कोई नहीं जो इस निज़ामे इलाही में ज़र्रह बराबर भी दख़ल (Interfare) दे सके।

तफ़्सील के लिए सूरः आले इ़मरान आयत नं० (27) सूरः ह़ज आयत नं० (61) सूरः लुक़्मान आयत नं० (29) और सूरः फ़ातिर आयत नं० (13) की तफ़्सीर देखी जा सकती है।

वह अ़ल्लामुल् ग़ुयूब अपने बन्दों के सीनों में छुपे हुए भेदों को ख़ूब जानता है, वह उन तमाम ख़ैर व शर से भी वाक़िफ़ है जिन के कर गुज़रने की इन्सान नियत करता है।

7 اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

इस आयते करीमा में बन्दों को अल्लाह और उस के रसूल पर ऐसा ईमान लाने का हुक्म दिया गया है जिस का असर उन के अ़मल में ज़ाहिर हो और अल्लाह के अ़ता किये गये माल व दौलत से उस की राह में ख़र्च करना नफ़्स पर भारी न गुज़रे।

इन्सान के पास जो माल होता है, उस में जायज़ तौर पर ख़र्च करने के लिए वह अल्लाह की ओर से ख़लीफ़ा और नायब होता है यानी माल का हक़ीक़ी मालिक अल्लाह है और इन्सान को उस में ख़र्च करने के लिए ख़लीफ़ा बनाया गया है।

या यह कि माल किसी और का होता है और उस के दुनिया से गुज़र जाने के बाद उस का मालिक उस के वरसा बन जाते हैं। दोनों ही सूरतों में मक़्सूद इन्सान को अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने पर उभारना है कि वह अल्लाह का ही दिया हुआ माल है, इसलिए उस की राह में ख़र्च करने में बुख़्ल से काम न ले।

आयत के आख़िर में ऐसे अहले ईमान और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों को बड़ा इन्आ़म यानी जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई है।

8 وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

इन्सान से तम्बीह के तौर पर कहा जा रहा है कि नबी करीम (सल्ल०) की बेअ़सत और नुज़ूले कुर्आन के ज़रिये कुफ़्र व शिर्क पर बाक़ी रहने के तमाम रास्ते बन्द हो गए अब ईमान लाने से कोई चीज़ रुकावट नहीं है, फिर क्या वजह है कि तुम लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं लाते हो? जबकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) हर तरीक़े से तुम को समझाते हैं और हर मुम्किन कोशिश करते हैं कि तुम लोग अपने रब पर ईमान ले आओ और अल्लाह तआ़ला ने तुम से अ़हद भी लिया था कि जब उस के आख़िरी रसूल दुनिया में तशरीफ़ लाएँगे तो तुम उन पर ईमान ले आओगे, फिर क्या वजह है कि तुम ईमान नहीं लाते हो?

وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ का दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि "अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़क़्ल दी है और एक अल्लाह पर ईमान लाने के बेशुमार दलायल क़ायम कर दिये हैं और तुम्हारी फ़ित्रत में ख़ालिक़ व राज़िक़ पर ईमान लाने की तमन्ना रख दी है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आकर तुम्हारी इस फ़ित्रत को जगा दिया है, फिर क्या वजह है कि तुम ईमान लाने से गुरेज़ करते हो?"

9 هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को ईमान की दअ़वत देने के लिए जब नबी करीम (सल्ल०) को भेजा तो इस दअ़वत को पहुँचाने और इस की ताईद (support) करने के लिए बहुत से मोअ़जिज़ात दिये, जिन में सब से बड़ा और अहम मोअ़जिज़ा (चमत्कार) कुर्आन करीम था, ताकि लोग उन मोअ़जिज़ात को देखकर और कुर्आन करीम को सुनकर ईमान ले आएँ और कुफ़्र व शिर्क की ज़ुल्मतों से निकल कर नूरे ईमान

से अपने दिलों को रौशन कर लें और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के लिए बड़ा ही मेहरबान और रह़म करने वाला है, इसीलिए उस ने उन की ह़ालत पर रह़म करते हुए उन की हिदायत के लिए किताब भेजी और रसूल भेजा, ताकि वह ईमान की दौलत से सरफ़राज़ होकर जन्नत के हक़्दार बनें और जहन्नम की आग को अपने आप पर ह़राम कर लें।

10 وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ
مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا
وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि चूंकि इस सूरः में अस्ल विषय अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने का शौक दिलाना है, इसीलिए कई आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तलिफ़ तरीके से 'इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में ख़र्च करना) उस की अहमियत और उस का अज्र अ़ज़ीम बयान फ़रमाया है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को तम्बीह की है जो मोह़ताजी के डर से अल्लाह की राह में ख़र्च करने से मुँह मोड़ते हैं, ह़ालांकि यह माल उस ने दिया है जो आसमान व ज़मीन के ख़ज़ानों का मालिक है, उस के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं है और उसी ने सूरः सबा आयत नं० (39) में फ़रमाया हैः-

وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

"तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, अल्लाह उस का पूरा-पूरा बदला देगा और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है"।

इसलिए अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने से कत्राना, कुव्वते ईमानी के ख़िलाफ है।

आयत के दूसरे ह़िस्से में जिस की शुरुआत لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ से होती है अल्लाह ने उन लोगों की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है, जिन्होंने फ़तेह़ मक्का या सुलह़ हुदैबिया से पहले अल्लाह की राह में ख़र्च किया और जिहाद किया, ताकि ह़क़ की आवाज़ बुलन्द हो।

इन 'साबिक़ीन अव्वलीन' के बराबर वह लोग नहीं हो सकते जिन्होंने फ़तेह़ मक्का के बाद अल्लाह की राह में ख़र्च किया और उस वक़्त जिहाद किया जबकि इस्लाम को कुव्वत व ग़ल्बा ह़ासिल हो चुका था।

इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने सूरः तौबः आयत नं० (100) में यूँ बयान फ़रमाया हैः-

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

"जो मुहाजिरीन और अन्सार साबिक़ और मुक़द्दम (शुरु में आगे बढ़ने वाले) हैं और जितने लोग इख़्लास के साथ उन के फ़रमाँबरदार हैं, अल्लाह उन सब से राज़ी हुआ और वह सब उस से राज़ी हुए और अल्लाह ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं, जिन में वह हमेशा रहेंगे यही बड़ी कामियाबी है"।

और बुख़ारी व मुस्लिम ने फ़ज़ायल-ए-सह़ाबा में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि मेरे सह़ाबा को गाली न दो, अगर तुम में का कोई शख़्स उ़हद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करेगा तो उन का मुद (माप) आधे मुद (माप) के बराबर भी नहीं होगा। **(बुखारी व मुस्लिम)**

'ह़ाफ़िज़ सियोती' ने लिखा है कि यह आयत दलील है कि सह़ाबा-ए-किराम के अलग-अलग दर्जे (पद) थे और उन में जो लोग जितना पहले इस्लाम लाए उसी एतिबार से उन को फ़ज़ीलत ह़ासिल है। यह आयत इस की भी दलील है कि लोगों को उन के दर्जे के अनुसार मक़ाम मिलना चाहिए।

और सह़ाबा-ए-किराम में इस फ़र्क़ के बावजूद अल्लाह तआ़ला ने सब को जन्नत का वादा किया है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने وَكُلًّا وَعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى इसीलिए फ़रमाया है, ताकि कोई यह न समझे कि बाद के सह़ाब-ए-किराम किसी तअ़रीफ़ के लायक़ नहीं हैं, बल्कि अल्लाह की निगाह में तमाम सह़ाब-ए-किराम तअ़रीफ के लायक हैं।

'इब्ने कसीर' लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़तेह़ मक्का से पहले ख़र्च करने वालों और जिहाद करने वालों का अज्र व सवाब बाद के सह़ाब-ए-किराम के मुक़ाबिले में इसलिए ज़्यादा रखा है कि उन्होंने तंगी और परेशानी के ज़माने में भी अल्लाह की राह में ख़र्च किया था।

'नसई' ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि सह़ाबा का एक दिरहम दूसरों के एक लाख से ज़्यादा अहमियत रखता है और यह बात सब अहले ईमान जानते हैं कि 'ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़' (रज़ि०) इस आयत में फ़ज़ीलत के सब से ज़्यादा ह़क़्दार थे, इसलिए उन्होंने अल्लाह की रज़ा के लिए अपना पूरा माल ख़र्च कर दिया था।

11 مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۟

मुफ़स्सिर 'अबू अल् सऊद' लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने पहले अपनी राह में ख़र्च करने का हुक्म दिया, फिर उन लोगों की तम्बीह की जो कंजूसी की वजह से उस की राह में ख़र्च नहीं करते, फिर उस की राह में ख़र्च करने वालों के दर्जे बताए और अब इस आयत में एक ख़ास अन्दाज़ में अल्लाह की राह में ख़र्च करने की रग़बत दिलाई जा रही है कि जो शख़्स उस की राह में ख़र्च करेगा यानी वह उसे क़र्ज़ देगा, जिस का बदला उसे ज़रूर मिलना है।

आयत قَرْضًا حَسَنًا में इस तरफ़ इशारा है कि ख़र्च करने वाले की नियत अच्छी हो, अल्लाह की राह में सब से अच्छा माल ख़र्च करे और कोशिश करे कि सब से अच्छी जगह ख़र्च करे।

बाज़ लोगों का ख़याल है कि आयत से मक़्सूद जिहाद के लिए ख़र्च करना है और बाज़ कहते हैं कि इस से मक़्सूद अपने बच्चों पर ख़र्च करना है।

'इब्ने कसीर' कहते हैं कि सही़ बात यह है कि आयत का मतलब आ़म है यानी हर भलाई के काम में ख़र्च करना मक़्सूद है। आयत के दूसरे हि़स्से का मतलब यह है कि जो अल्लाह की राह में अपना बेहतरीन माल खुलूसे नियत के साथ ख़र्च करेगा, अल्लाह उसे एक के बदले कई गुना देगा और बहुत उ़म्दह बदला देगा और अल्लाह तआ़ला की ओर से उसे जो बदला मिलेगा वह कई गुना ज़्यादा और उ़म्दह होगा।

आयत नं० 12 से 19 तक

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۲ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ
ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝۱۳ يُنَادُوْنَهُمْ
اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ۝۱۴ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝۱۵ اَلَمْ
يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ
عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝۱۶ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝۱۷ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝۱۸
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝۱۹

अनुवाद-

(12) उस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे-आगे और उनके दाहिने ओर दौड़ रहा होगा; ''आज तुम्हारे लिए खुशख़बरी है जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा रहना है, यही बड़ी कामियाबी है।'' (13) उस दिन मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्द और मुनाफिक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे, ''थोड़ा रूको, हमारा इन्तिज़ार करो, कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ फ़ायदा उठा लें!'' कहा जाएगा, ''अपने पीछे लौट जाओ, और रोशनी तलाश करो,'' इतने में उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा होगा, उसके अन्दर का ह़ाल यह होगा कि उसमें रह़मत होगी और उसके बाहर की ओर अ़ज़ाब होगा। (14) वे उन्हें पुकार कर कहेंगे, ''क्या हम तुम्हरे साथ नहीं थे।'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं? मगर तुमने तो अपने आप को फित्ने में डाला, और इन्तिज़ार करते रहे, और शक में पड़े रहे, और झूठी तमन्नाओं ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और उस धोखेबाज़ (शैतान) ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखे में डाल रखा था, (15) तो आज न तुमसे कोई फ़िदिया (मुक्ति-प्रतिदान) क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने इन्कार किया, तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा दोस्त है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।'' (16) क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए, और 'उसके' उतारे हुए हक़ के आगे झुक जाएँ; और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको (उनसे) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गयी, तो उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें से अक्सर नाफ़रमान ही हैं। (17) जान लो! कि अल्लाह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है; 'हमने' अपनी निशानियां तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दी हैं, ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो। (18) सद्क़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औ़रतें, और वे जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, उसको उन्हें दो गुना कर के दिया जाएगा, और उनके लिए

इज़्ज़त वाला बदला है। (19) और जो लोग अल्लाह और 'उसके' रसूल पर ईमान लाए, वही अपने रब के यहाँ सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद हैं, उनके लिए उनका बदला भी होगा और नूर भी; और जिन लोगों ने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, वही जहन्नम वाले हैं।

आयत नं० 12 से 19 तक की व्याख्या

12 يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

इस आयत में अल्लाह तआला ने ईमान की फ़ज़ीलत बयान करते हुए बताया है कि क़ियामत के दिन किस तरह 'ईमान' ईमान वाले की रहनुमाई करता हुआ उन्हें जन्नत तक पहुँचा देगा।

अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब (address) कर के फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन आप देखेंगे कि मोमिन मर्दों और औरतों का नूर उन के आगे और दाएँ तरफ़ आ जाएगा और उन्हें धीरे-धीरे जन्नत तक पहुँचा देगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) और 'क़तादह' आदि ने यहाँ نُوْرٌ से हक़ीक़ी और हिस्सी नूर मुराद लिया है और कहा है कि उस दिन हर शख़्स का नूर उस के अमल के मुताबिक़ होगा, किसी का पहाड़ की तरह, किसी का खजूर के दरख़्त की तरह, किसी का एक आदमी के क़द के बराबर और किसी का उस से भी कम यहाँ तक कि बाज़ का नूर सिर्फ़ उस के दोनों क़दमों के दर्मियान होगा।

'ज़िहाक' 'मक़ातिल' और 'इब्ने जरीर' आदि का ख़याल है कि इस से नूर की संज्ञा देना है यानी ईमान और अच्छे आमाल का सवाब, जो अहले जन्नत के सामने आकर उन की निजात का ज़रिया बनेगा और उन के दाएँ हाथ में उन का नाम-ए-आमाल होगा और फ़रिश्ते हर ओर से आ-आकर उन्हें उन जन्नतियों को खुशख़बरी देंगे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, उन जन्नतों में वह हमेशा के लिए रहेंगे, उस से कभी नहीं निकाले जाएँगे और न उस की नेअमतें कभी ख़त्म होंगी और एक मोमिन के लिए इस से बढ़कर और क्या कामियाबी हो सकती है।

13 يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें जब मोमिनों के आगे और दाएँ नूर देखेंगे और देखेंगे कि वह नूर उन्हें जन्नत की तरफ़ ले जा रहा है और वह अपने पैदा करने वाले की तारीकियों (अंधेरो में) में डूबे हुए होंगे तो अहले जन्नत को पुकारेंगे और कहेंगे कि थोड़ा एक नज़र हमारी तरफ़ देख लो, ताकि तुम्हारे नूर की रौशनी हमारी तरफ़ भी हो जाए और हम भी उस तरफ़ चल पड़ें जिधर तुम जा रहे हो।

'इब्ने जरीर' ने "انظرونا" का अर्थ "انتظرونا" किया है अर्थात जब अहले जन्नत तेज़ी के साथ जन्नत की ओर जा रहे होंगे, तो मुनाफ़िक़ीन कहेंगे कि थोड़ा हमारा इन्तिज़ार कर लो और हमारे लिए भी

सिफ़ारिश कर दो, ताकि हम भी तुम्हारे साथ चले जाएँ। उन की यह बात सुनकर फ़रिश्ते उन्हें धुत्कारेंगे और कहेंगे कि जाओ, वहाँ नूर ढूंढो जहाँ से हमें मिला है यानी मैदाने महशर में या यह मतलब है कि यह तो ईमान का नूर है जो दुनिया में हमें मिला था, इसलिए तुम दुनिया में वापस जाकर वहाँ से यह नूर हासिल करो या यह मतलब है कि पीछे जाओ और अपने लिए कोई और नूर तलाश करो।

इस बात-चीत के बाद मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान एक मोटी दीवार होगी जो मुनाफ़िक़ों को मोमिनों के नूर से बिल्कुल दूर कर देगी और उन का अंधेरा गहरा हो जाएगा, फिर उस दीवार में एक दरवाज़ा जन्नत की ओर खुलेगा जिस से अहले ईमान जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे और मुनाफ़िक़ीन उन्हें हसरत भरी निगाहों से देखते रह जाएँगे। उस दरवाज़े के अन्दर जन्नत और उस की नेअ़मतें होंगी और उस के बाहर जिधर मुनाफ़िक़ीन होंगे, वहाँ घटाटोप तारीकी होगी और जहन्नम का अ़ज़ाब होगा।

14 يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ
حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝

जब मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान मोटी दीवार आ जाएगी, तो मुनाफ़िक़ीन हस्रत के साथ फिर अहले ईमान को पुकारेंगे और कहेंगे, क्या हम तुम्हारी ही तरह के मोमिन नहीं थे? तुम्हारी मस्जिदों में नमाज़ नहीं पढ़ते थे और तुम्हारी ही तरह दूसरे नेक आ़माल नहीं करते थे, फिर आख़िर आज हमारा यह हश्र क्यों हो रहा है?

तो मोमिनीन उन्हें जवाब देंगे कि हाँ, तुम दुनिया में हमारे साथ थे, देखने में हमारी ही तरह के मोमिन थे और नेक आ़माल करते थे, लेकिन हक़ीक़त में न तुम मोमिन थे, न ही तुम्हारी नियत सही थी और न तुम्हारे आ़माल में इख़्लास था, तुम लोग कुफ़्र व निफ़ाक़ की बीमारी में मुब्तिला (Involve) रहे और अपनी इच्छाओं की बन्दगी करते रहे और हमेशा नबी करीम (सल्ल०) और मोमिनों के लिए बुरा ही सोचते रहे और झूठी तमन्नाओं से अपने आप को धोका देते रहे कि हमें भी अल्लाह तआ़ला माफ़ कर देगा और मुख़्लिस मुसलमानों की तरह हम भी जन्नत में चले जाएँगे।

وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ

इसका एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि तुम (मुनाफ़िक़) यही तमन्ना करते रहे कि एक दिन मुसलमान ज़रूर कमज़ोर हो जाएँगे और तुम इसी धोके में पड़े रहे, यहाँ तक कि मौत ने तुम्हें आ दबोचा और तुम्हें तौबः की तौफ़ीक़ नहीं मिली या मतलब, यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की मदद की, अपने दीन को ग़ालिब किया और तुम्हारी तमन्ना ख़ाक में मिल गई कि मुसलमान कमज़ोर हो जाएँगे और अल्लाह के हिल्म और उस की ओर से मोहलत दिये जाने का तुम ने ग़लत मतलब निकाला, शैतान के बहकावे में आ गए और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर डटे रहे यहाँ तक कि मौत आ गई।

15 فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوَاكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

आयत नं० (15) में मोमिनों ने अपनी बात जारी रखते हुए फ़रमाया कि ऐ मुनाफ़िक़ों! आज अगर

तुम ज़मीन भरकर भी सोना पेश करोगे ताकि तुम्हारी जान आग के अज़ाब से बच जाए तो ऐसा नहीं होगा और आज तुम्हारे साथ यही अन्जाम काफ़िरों का भी होगा और तुम सब का ठिकाना जहन्नम होगा, तुम सब को जहन्नम लपेट लेगी, जो तुम सब के लिए बड़ा ही बुरा ठिकाना होगा।

16 أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝

यह आयत मोमिनों के बारे में नाज़िल हुई थी और इस से मक़्सूद ईमान वालों को यह बताना है कि जब उन के सामने क़ुर्आन करीम की तिलावत की जाए या अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र आए तो ईमान का तक़ाज़ा यह है कि उन के दिलों में ख़ौफ पैदा हो।

'ह़सन बसरी' (रह़०) कहते हैं कि सह़ाब-ए-किराम अल्लाह की निगाह में मह़बूब तरीन लोग थे और वह अल्लाह को सब से ज़्यादा याद करने वाले थे और उन के दिलों पर क़ुर्आन सुनकर बहुत ज़्यादा ख़ौफ तारी हो जाता था, इस के बावजूद अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में इस आयत में कहा है कि ज़िक्रे इलाही से उन के दिलों पर जैसा होना चाहिए ख़ुशूअ़ तारी नहीं होता तो फिर आम मुसलमानों को तो और ज़्यादा डरते रहना चाहिए और क़ुर्आन सुनकर ज़्यादा एहतिमाम करना चाहिए।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत में ذِكْر से मुराद अल्लाह तआ़ला का नाम या क़ियामत के दिन उस का वादा है और وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ में "حق" से मुराद क़ुर्आन करीम है। बाज़ ने "ذكر" और "حق" दोनों से क़ुर्आन करीम मुराद लिया है।

आयत के दूसरे ह़िस्से وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ में मोमिनों को यहूद व नसारा की तरह़ हो जाने से मना किया गया है, जिन के लिए अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम की तरह़ तौरेत व इन्जील नाज़िल फ़रमाया, लेकिन उन किताबों से उन का रिश्ता कमज़ोर होता गया और वह अम्बिया की तअ़लीमात को छोड़ते गए जिस का नतीजा यह हुआ कि उन के दिलों से ख़ौफ जाता रहा, उन में सख़्ती पैदा हो गई और उन्होंने तौरेत व इन्जील को बदल डाला और उन के अह़काम पर अ़मल करना छोड़ दिया।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि इस आयते करीमा में मोमिनों को यहूद व नसारा की तरह़ हो जाने से मना फ़रमाया गया है, जिन्होंने मामूली दुनियावी फ़ायदों के लिए अल्लाह की किताब को बदल दिया, उसे पीठ पीछे डाल दिया, इन्सानों की बातों को दीन और अपने उ़लमा को उपास्य बना लिया जिस का नतीजा यह निकला कि उन के दिल सख़्त हो गए और अल्लाह के कलाम को बदल देना उन की आ़दत बन गई। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को किसी भी मामले में उन की तरह बनने से रोका है।

अल्लाह तआ़ला ने यहूद की इसी ह़ालत को बयान करते हुए सूरः अल् माइदा आयत नं० (13) में फ़रमाया हैः-

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ

"फिर हम ने उन की वादा ख़िलाफी की वजह से उन पर लअ़नत भेज दी और उन के दिल सख़्त

कर दिये (जिस के नतीजे में) वह अल्लाह के कलाम में तब्दीली करने लगे और उन्हें जो नसीह़त की गई थी उस का बड़ा ह़िस्सा भुला बैठे"।

17 اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

जिस तरह़ अल्लाह तआ़ला मुर्दा ज़मीन में बारिश के क़त्रों के ज़रिये ज़िन्दग़ी डाल देता है, उसी तरह़ वह क़ियामत के दिन मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने और दुनिया में सख़्त दिलों को दलायल के ज़रिये नर्म करने और उन्हें रास्ते पर लाने की क़ुद्रत रखता है। वह इस पर क़ुद्रत रखता है कि इन्सानों के बन्द दिलों के दरवाज़े खोल दे और उन में ईमान व हिदायत का नूर दाख़िल कर दे, उन की सख़्ती को नर्मी से और गुमराही को हिदायत से बदल दे, वह जो चाहे करे, जिसे चाहे हिदायत दे दें।

18 اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝

ऊपर लिखा जा चुका है कि इस सूरः का विषय अल्लाह की राह में ख़र्च करने का शौक दिलाना है। चुनाँचे इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग ख़ूब सद्क़ः करते हैं चाहे वह मर्द हों या औ़रतें वह ख़ैर और भलाई के बहुत से कामों में अपना माल खुलूसे नियत के साथ अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं, अल्लाह तआ़ला उन्हें उन के आ़माल का कई गुना बढ़ाकर बदला देता है। कभी दस गुना से सात सौ गुना तक, बल्कि कभी उस से भी ज़्यादा बढ़ा कर देता है और सब से बड़ा बदला उन्हें आख़िरत में 'जन्नत' देगा, जिस के ऐ़श व आराम और जिस की नेअ़मतों का कोई इस दुनिया में तसव्वुर भी नहीं कर सकता है।

19 وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ
وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝

आयात नं० (18/19) में उम्मते मुस्लिमा के तीन तरह़ के लोगों का ज़िक्र आया है। पहली क़िस्म का ज़िक्र ऊपर आ चुका है यानी वह लोग जो इख़्लास के साथ अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उन का बदला भी बयान किया जा चुका और दूसरी क़िस्म के लोग वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और ईमान का मतलब अहले सुन्नत के नज़्दीक यह है कि दिल से ईमान लाया जाए और ज़बान से उस ईमान का इक़रार किया जाए और फिर दिल, ज़बान और अअ़ज़ा (अंगों) के अ़मल के ज़रिये उस की तस्दीक़ की जाए।

उम्मते मुह़म्मदिया के ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला ने सिद्दीक़ का लक़ब दिया है।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने 'सिद्दीक़' की परिभाषा में यह लिखा है कि जिस ने एक सकेण्ड के लिए भी अल्लाह और उस के रसूल को न झुठलाया हो। इस एतिबार से इस लक़ब के ह़क़्दार ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, आले फ़िरऔ़न के मर्द मोमिन और वह मर्द मोमिन हुए जिन का ज़िक्र सूरः यासीन में आया है और तीसरी क़िस्म के लोग वह हैं जो अल्लाह की राह में शहीद हुए उन्हें उन के रब की ओर से अज्र ख़ास और

नूर मिलेगा, जो उन के साथ ख़ास होगा। इब्ने अ़ब्बास, इब्ने जरीर और इब्ने कसीर आदि की यही राय है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत में وَالشُّهَدَآءُ और الصِّدِّيقُونَ दोनों को अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाने वालों का लक़ब क़रार दिया है, इस राय के मुताबिक़ उम्मते मुह़म्मदिया के तमाम मुख़्लिस अहले ईमान सिद्दीक़ीन और शोहदा हैं और उन्हें उन के रब की तरफ़ से ख़ास बदला और नूर मिलेगा।

आयत के पहले ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों और उन के अच्छे अन्जाम का ज़िक्र फ़रमाया और दूसरे ह़िस्से وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا में उन बद्‌बख़्तों का ज़िक्र किया जिन्होंने कुफ़्र की राह अख़्तियार की और अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उन का अन्जाम यह बताया कि उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

मुफ़स्सिर 'अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान सअ़दी' (रह़०) लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने यहाँ अपने चार क़िस्म के बन्दों का ज़िक्र किया है। मुतसद्दिक़ीन, सिद्दीक़ीन, शोहदा और अहले जहन्नम और सूरः फ़ातिर आयत नं० (32) में पाँचों क़िस्म "مقتصدون" का ज़िक्र है और जिन्होंने वाजिबात अदा किये, जो हराम से बचे रहे, लेकिन उन से अल्लाह और उस के बन्दों के ह़क़ में कुछ कोताहियाँ हुईं, इन लोगों का अन्जाम अल्लाह तआ़ला ने जन्नत बताया है अगरचे उन में से बाज़ को उन के बाज़ गुनाहों की वजह से सज़ा भी मिलेगी।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar Muhammad Sarwar Farooqui S/o. Mohd Haneef Farooqui S/o. Abdul Qayyum Farooqui S/o. Mahmood Ali Farooqui S/o. Ramzan Ali Farooqui S/o. Imam Baksh Farooqui S/o. Khairat Ali Farooqui S/o. Nisar Ahmad S/o. Muhammad Ali S/o. Athar Ali S/o. Abdul Hafeez S/o. Jalaluddin S/o. Mohd Suleman S/o. Allauddin S/o. Mohd Ishaq S/o. Nabiullah S/o. Khwaja Bakarullah S/o. Abdullah Yamni S/o. Abdul Aziz Yamni S/o. Salim S/o. Abdullah S/o. Sayyedna Umar Farooque Raziallahu Anhu.**

Educational Background.

Basic	:	Intermediate,
Higher Education	:	**M.A.**
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia).
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Shastri, Acharya**
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	Qur'an and Fiqah, Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Rafiq Ilmi	:	***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,* Lucknow,** U.P. (India)
Director	:	***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	:	**Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml*** lucknow, U.P. (India)
Manager	:	***Universal Peace Foundation*** lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी द्वारा लिखित अहम हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/8)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/16)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़-20x30/32)	100 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	180 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)	400 रू.
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)	400 रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)	400 रू.
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)	400 रू.
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)	400 रू.
12. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	250 रू.
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	180 रू.
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)	150 रू.
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)	120 रू.
17. जन्नत के ह़ालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	100 रू.
18. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	90 रू.
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
20. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	200 रू.
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले ह़स्ना की रौशनी में)	50 रू.
23. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था	100 रू.
25. अज़ान क्या है?	30 रू.
26. आओ नमाज़ की ओर	40 रू.
27. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
28. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.
29. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
30. उ़मरह का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	25 रू.
31. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)	70 रू.
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
35. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	40 रू.
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
38. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर	30 रू.
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
40. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
41. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी	60 रू.
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में	20 रू.
45. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
46. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	20 रू.
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?	40 रू.
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध	40 रू.
52. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त	40 रू.
53. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

54. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)	500 रू.
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	160 रू.
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
58. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.
59. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
60. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
62. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
64 ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	50 रू.
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	50 रू.
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़	90 रू.

नाम	मूल्य
68. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में	40 रू.
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.
70. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	70 रू.
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	70 रू.
73. क़ियामत तक के फ़ित्ने (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोशनी में)	40 रू.
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	30 रू.
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	100 रू.
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	80 रू.
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	80 रू.
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद (क़ुर्आन व ह़दीस की रोश्नी में)	60 रू.
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	40 रू.
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	30 रू.
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	30 रू.
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	80 रू.
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)	30 रू.
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.

नाम	मूल्य
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
107. कुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
108. आ़माल सालिहा (भाग-1)	100 रू.
109. आ़माल सालिहा (भाग-2)	100 रू.
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	100 रू.
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत	100 रू.
112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
115. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	90 रू.
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	150 रू.
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	60 रू.
120. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
121. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
122. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
124. अ़ीदैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
128. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल	40 रू.
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
136. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल	60 रू.
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
144. मुहर्रम की हक़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त	25 रू.
145. नबियों व सहाबा का ज़रिया-ए-मआ़श	25 रू.
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ	25 रू.
147. सहाबियात के अहम वाक़िआ़त	25 रू.
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़वाज मुतह्हरात	25 रू.
149. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
150. ग़ैर अ़रबी रस्मुलख़त (फ़ॉन्ट) में क़ुर्आन की इशाअ़त	12 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी की अ़रबी पुस्तकें

151. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्हज़ारात अल्मुख़्तलह	60 रू.
152. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह	40 रू.
153. नुब्जतु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	40 रू.
154. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह	120 रू.
155. अस्बाब तह्बतुल् अअ़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	120 रू.
156. अल् फ़ितन अल् वाक़िअः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अहादीस अल् शरीफ़ा	100 रू.
157. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा	150 रू.
158. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	140 रू.
159. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	100 रू.
160. ज़िक्र मुहम्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	80 रू.
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा	80 रू.
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी की अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुहम्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
164. मुहम्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम	40 रू.
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यूमेनिटी	40 रू.
168. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अहादीस (लेखक- हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	60 रू.
170. क़ादियानियत नुबूवते मुहम्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक- इमामे हरम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह०)	40 रू.
171. दारे अरक़म का एहसान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी रह०)	30 रू.

नाम		मूल्य
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)		30 रू.
173. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)		20 रू.
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)		20 रू.
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)		30 रू.
176. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)		30 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा लिखित दीगर पुस्तकें

177. दो सौ मआ़शरती मसायल	उर्दू	80 रू.
178. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द अव्वल)	// //	500 रू.
179. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द दोम)	// //	500 रू.
180. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द सोम)	// //	500 रू.
181. तारीख़-ए-इस्लाम	// //	500 रू.
182. क़ससुल् अम्बिया	// //	500 रू.
183. मजमुआ़ अह़ादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	200 रू.
184. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	20 रू.
185. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
186. सीरत-ए-सह़ाबा	// //	200 रू.
187. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	500 रू.
188. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
189. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
190. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	50 रू.
191. ईदैन व जुमअः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
192. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
193. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
194. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
195. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
196. निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
197. तलाक़ व इ़द्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
198. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
199. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
200. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
201. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
202. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
203. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	50 रू.
204. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
205. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.

नाम		मूल्य
206. तर्बियत, रज़ाअत व अक़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	उर्दू	40 रू.
207. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	80 रू.
208. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
209. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
210. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
211. इ़ल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
212. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
213. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
214. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
215. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
216. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
217. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
218. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
219. इस्लाह़-ए-मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
220. औ़रतों के मख़्सूस मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
221. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
222. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
223. रमज़ान,रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	// //	60 रू.
224. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
225. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
226. रुयतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.